॥ श्री. ॥

मोतियों का खजाना।

आठवां हिस्सा।

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

अनुवादित

और

प्रकाशित।

PRINTED BY

PANNA LAL ROY,—*Manager*

AT THE LAHARI PRESS, BENARES CITY

प्रथम बार १००]   १९१९   [मूल्य ॥=) आ०

॥ श्रीः ॥



मोतियों का खजाना।

आठवां हिस्सा।

पहिला बयान।

नाटक घर।

कौएट मौएट क्रोटो ने मैडम विलफोर्ट से थियेटर देखने जाने का जो बहाना किया उस के ठीक मालूम होने का यह भी एक कारण था कि वास्तव में उस रोज एक प्रसिद्ध नाटक का खेल होने वाला था और पैरिस के सब मुखिया और 'फैशनेबुल' लोग वहां इकट्ठे होने को थे। अलबर्ट मारकर्फ का थियेटर में निज का एक बाक्स * था ही, इसके इलावे उसकी जान पहिचान इतनी बढ़ी चढ़ी थी कि वह एक दर्जन और बाक्सों में भी जब चाहे जा सकता था। उसके दोस्तों में से ब्यूट-

* ऊंचे दर्जे के थियेटरों में रईसों और अमीरों के लिये पांच छः या आठ आदमियों के बैठने लायक छोटी छोटी सजी हुई कोठड़ियें बना दी जाती हैं जिसमें वे अपने दोस्तों और लेडियों के साथ बैठ कर गपशप और हंसी दिल्लगी के साथ आराम में तमाशा भी देख सकें। इन्हीं को बाक्स कहते हैं॥

नाड का एक बाक्स उसके पासही में था और च्यूशेम्प एक प्रसिद्ध अखबार का सम्पादक होने के कारण जब चाहे वहां जा सकता था। लूसियेन डिब्रे को भी उस दिन बाक्स मिल गया था जो वास्तव में एक मन्त्री का था पर मन्त्री ने आने की इच्छा न होने के कारण उसे डिब्रे के सपुर्द कर दिया था। डिब्रे ने वह अलबर्ट के पिता कौण्ट मारकर्फ के अर्पण किया परन्तु मरियम ने थियेटर जाने की इच्छा प्रगट न की इस कारण कौन्ट मारकर्फ ने वह बाक्स दङ्गली के सपुर्द कर दिया और मैडम दङ्गली से कहला भेजा कि सम्भवत: वह भी किसी समय उसी बाक्समें आवेगा। दङ्गली की स्त्री और लड़की मुफ्त का बाक्स पा बहुत ही प्रसन्न हुईं क्योंकि मुफ्त में मिली कीमती चीज और किसी को उतना खुश नहीं करती जितना किसी अमीर को। दङ्गली तो मन्त्री के बाक्स में जा नहीं सकता था क्योंकि वह उसके विपक्षि दल में था पर उसकी स्त्रियों के जाने में कोई आपत्ति न थी इसलिये मैडम दङ्गली और उसकी लड़की यूजिनी नाटक में जाने की तैयारी करने लगी। परन्तु लेडियां बिना किसी मर्द के अकेले थियेटर नहीं जा सकतीं, अस्तु मैडम दङ्गली ने लूसियेन को अपने साथ चलने को कहला भेजा और समय पर वह आ भी गया। अगर बैरोनेस और दङ्गली की लड़की अकेले तमाशा देखने जाती तो लोग उंगली उठाते पर यदि मिस दङ्गली अपनी मां और अपनी मां के प्रेमिक के साथ थियेटर

देखने जाय तो कोई कुछ नहीं कहेगा। खैर क्या किया जाय, दुनिया का कायदा ही ऐसा है॥

जिस समय पहिला पर्दा उठा उस समय थियेटर-घर करीब करीब बिल्कुल खाली थे था क्योंकि पैरिस की सभ्य बातों में एक यह कायदा भी था कि किसी नाटक के पहिले दृश्य में रहना फैशन विरुद्ध समझा जाता था। अस्तु पहिला सीन यों ही बीत जाता था और जो लोग मौजूद भी रहते थे वे नये आने जाने वालों को देखने और बातें करने में ही फँसे रहते थे। बाक्सों के दरवाजों के खुलने और बन्द होने और बातचीत का इतना शोर होता था कि स्टेज पर क्या हो रहा है यह कुछ सुनाई भी नहीं पड़ सकता था॥

अलबर्ट और शेटूरेनाड एक साथ खड़े बातें कर रहे थे। अलबर्ट ने एक बाक्स खुलते देख शेटू से कहा, "वह देखो पहिली पंक्ति के बाक्स में कौएटेस जीला बैठ रही हैं॥"

शेटू०। कौन काउण्टेस जीला?

अल०। बैरन! कौएटेस जीला को नहीं जानते!!

शेटू०। ओह, ठीक है, वह तुम्हारी सुन्दर वेनीशियन औरत?

अल०। हां वही॥

शेटू०। तुम्हारी उसकी जान पहिचान है?

अल०। हां रोम में फ्रान्सिस ने मेरा उससे परिचय करा दिया था॥

शेटू०। तो आज तुम मेरा उसका परिचय करा दो॥

अल०। बड़ी खुशी से॥

पास की सीटों के कुछ आदमी जो स्टेज पर का उम्दा गाना सुनने की कोशिश कर रहे थे इन दोनों की बातचीत से घबड़ा कर बोले, "चुप रहो।" मगर दोनों दोस्तों ने उधर ध्यान ही नहीं दिया। शेटू ने कहा, "कौण्टेस जीला आज 'चेम्पडी मार्स' की घुड़दौड़ में भी थी॥"

अल०। हां! मैं तो घुड़दौड़ का खयाल ही भूल गया, क्या तुमने कुछ लगाया था?

शेटू०। हां, जरा सा, एक हजार रुपया, मैंने 'नाटिलस' (घोड़े) पर लगाया था और वही जीता॥

अल०। मगर आज तो और भी कई दौड़ें थीं॥

शेटू०। हां एक घुड़दौड़ "जाकीक्लब" की तरफ से थी जिसमें सोने का प्याला इनाम में अव्वल घोड़े को मिलता है। हां! सुना तुमने!! वहां एक विचित्र बात हुई!!

अल०। सो क्या?

तमाशाइयों ने फिर चिल्ला कर कहा, 'चुप' मगर कौन सुनता है॥

शेटू०। यह प्याला एक ऐसे घोड़े और सवार ने जीता जिसका पहिले कोई नाम भी नहीं जानता था॥

अल०। सचमुच?

शेटू०। हां जी, इस घुड़दौड़ में शामिल घोड़ों में

से एक घोड़ा 'वस्पा' नाम का भी "जाव" सवार की मातहती में शामिल था जिस पर किसी ने कुछ खयाल ही नहीं किया था। जब दौड़ का वक्त आया तो एक तुम्हारी मुट्ठी के बराबर का लड़का एक उम्दे अबलक पर चढ़ कर आ पहुंचा। लड़का इतना हलका था कि मुनासिब वजन करने के लिये बहुत सा बोझा उसकी जेबों में डालना पड़ा तब कहीं वजन पूरा हुआ। मगर यह सब होने पर भी वह घोड़ा सब में तेज निकला यहां तक कि 'एरियल' और 'बारबेर' को भी उसने एक दम पिछाड़ दिया। सोने का प्याला उसी सवार को मिला॥

अल०। और क्या यह पता नहीं लगा कि वह घोड़ा और सवार किसके थे॥

शेटू०। नहीं कुछ नहीं॥

अल०। और तुम कहते हो कि घोड़े का नाम . .

शेटू०। वस्पा दर्ज किया गया था॥

अल०। तब मैं तुमको बता सकता हूं कि वह घोड़ा किसका था॥

"चुप रहो!!" इस बार तमाशबीनों ने चिल्ला कर और इतनी कड़ाई से कहा कि दोनों को समझना पड़ा कि उन्हीं से कहा जा रहा है। उन्होंने घूम कर पीछे देखा कि किसने यह कहा मगर कोई कहने का जिम्मा लेने वाला दिखाई न पड़ा अस्तु लाचार हो दोनों ने थियेटर की तरफ मन लगाया। इसी समय नन्ही के बाक्स का दरवाजा खुला और वैरोनेस दाञ्जी उसकी

लड़की और डिन्नें आ कर बैठे॥

शेट०। देखो वाईकौएट * तुम्हारे कुछ दोस्त लोग आये हैं जरा देखो तो सही॥

अलबर्ट ने घूम उधर देखा जिधर शेटू इशारा कर रहा था और उसी समय बैरोनेस ने नाज के साथ अपनी पड्डी हिलाई। अलबर्ट ने उसे सलाम किया। दंगली की लड़की यूजिनी से साहब सलामत न हुई। उसने तो अपनी बड़ी २ आंखें स्टेज की तरफ घुमाना भी व्यर्थ समझा हुआ था॥

शेटू०। मेरे दोस्त! मैं नहीं समझ सकता कि तुम मि०दंगली की बेटी के साथ व्याह करने में क्या आपत्ति देखते हो? यह जरूर है कि तुम्हारी तरह उसका घराना ऊँचा नहीं है, और वह जरा नीचे दर्जे की है मगर तुम्हें इन बातों का ज्यादा खयाल भी तो नहीं है। देखने में तो यूजिनी बहुत सुन्दर है॥

अल०। सुन्दर अवश्य है पर वह सुन्दरता मेरे पसंद की नहीं है, मेरा मन उसकी बनिस्बत कुछ अधिक कोमल, सुकुमार और नाजुक सुन्दरता चाहता है॥

शेटू०। ओह! तुम नौजवान लोग कभी सन्तुष्ट नहीं नहीं होते। भला अब तुम चाहते क्या हो? तुम्हारे बाप मां ने तुम्हारे लिये एक ऐसी लड़की चुनी है जो अधिकारी

* कौएट का लड़का या छोटा भाई फ्रान्स में, वाईकौएट, कहलाता है।

डायेना *।' का मुकाबिला करती है पर फिर भी तुम्हें सन्तोष नहीं है॥

अल०। यही बात जो तुमने अभी कही मेरा दिल खट्टा कर देती है। यूजिनी सचमुच 'शिकारी डायेना' से इतना मिलती जुलती है कि उससे दिल हट जाता है। मुझे ऐसी मर्दानी सुन्दरता पसन्द नहीं कोई नाजुक कमसिन नाजनीन होती तो मुझे दिल से पसन्द थी मगर शिकार पसन्द डायना से मुझे डर लगता है॥

वास्तव में 'यूजिनी' पर एक निगाह डालने ही से मालूम हो सकता था कि अलबर्ट जो कुछ कहता है ठीक है। यूजिनी सुन्दर तो अवश्य थी पर वह सुन्दरता–कड़ाई लिये 'मर्दानी' सुन्दरता थी। बाल काले और घुंघराले मगर कड़े–आंखों की पुतली काली और भवें भी काली ही मगर पतली और कमान की तरह गोलाई लिये हुए थीं और उनमें एक भारी ऐब यह था कि ऐसा भाव उस के चेहरे पर हरदम बना रहता था मानो गुस्से से भरी है। मुंह यों तो सुन्दर परन्तु कुछ बड़ा और होंठ बहुत ही ज्यादा लाल थे जो उसके स्वभाविक पीले चेहरे पर और भी लाल मालूम होते थे। दांत छोटे और मोती

* यूनान रोम और मिसर के धर्म ग्रन्थों की एक देवी जो सदा कुमारी रहा करती थी। उसका मुख्य मन्दिर 'एफीसिया' में कहीं था और अपने भक्तों में वह 'प्रभा' की देवी मानी जाती थी। तस्वीरों में यह एक बहुतही सुन्दर औरत बनाई गई है जो सखियों के साथ सदा घोड़ा और कुत्तों को लिये शिकार खेला करती थी॥

की तरह साफ थे। मुंह के भाव से कड़ाईही जाहिर होती थी और इसमें एक भारी मदद उस बड़े मस्से से मिलती थी जो ठीक होंठ के बगल में था और जिस के कारण उसके चेहरे से टपकने वाले स्वतन्त्रता, उद्धता और निर्भयता के भाव और भी स्पष्ट हो जाते थे। उसका बाकी शरीर भी इस चेहरे के अनुकूल ही था और उसे देखते ही "शिकारी डायना" की तस्वीर आंखों के सामने आ जाती थी जैसा की शेट्रू ने कहा था॥

बैरोनेस दङ्गली के अपने बाक्स में बैठने के कुछ ही देर बाद पर्दा गिर गया और एक एक्ट खतम हो गया। कुछ देर की छुट्टी होगई और लोग इधर से उधर घूमने फिरने और बातचीत करने लगे। मारकर्फ और शेट्रू पर्दा गिरते ही उठे। मैडम दंगली ने समझा कि शायद वे दोनों उसी से मिलने आ रहे हैं मगर उसका खयाल गलत था क्योंकि तुरत ही उसने उन दोनों को अपने सामने वाले बाक्स में देखा जिसमें काउण्टेस जोला बैठी हुई थी॥

कौण्टेस जोला अलबर्ट को देख बहुत ही प्रसन्न हुई। अलबर्ट से उसने हाथ मिलाया और अलबर्ट ने अपने दोस्त शेट्रेनाड से उसका परिचय करा दिया। तीनों में बातचीत होने लगी॥

अलबर्ट०। शेट्रू ने अभी मुझ से कहा है कि आप आज घुड़दौड़ देखने गई थी॥

कौण्टेस०। हां हां, (शेट्रू से उत्सुकता के साथ) क्या

आप भी गये थे ?

शेटू०। जी हां॥

कौएटेस०। तब तो आप शायद यह बता सकेंगे कि 'जाकीक्लब' का सोने का प्याला किसके घोड़े ने जीता ?

शेटू०। नही मैडम ! मैं खुद इस बात के जाना चाहता हूं। अलबर्ट शायद उसे जानते हैं॥

अल०। क्या आप उसका नाम जाना चाहती हैं ?

कौएटे०। हां, क्या आप जानते हैं ? क्योंकि एक विचित्र, अच्छा वह कौन है जिसके घोड़े ने पहिला इनाम पाया ?

अल०। आप कोई बात कहने के थीं क्योंकि आपने कहा—"क्योंकि एक विचित्र . "

कौएटेस०। हां, एक विचित्र बात आज हुई। आप भी सुन ही लीजिये मुझे वह सुन्दर घोड़ा और उसका छोटा सवार कुछ ऐसा पसन्द आगया था कि मैं मनही मन मना रही थी कि वही जीते। से जैसे ही वह घोडा सब के आगे निकला मैं खुशी में भर कर जोर से ताली बजाने लगी। खैर रेस खतम होने बाद जब मैं अपने होटल के लौटी तो मुझे यह देख बड़ाही ताज्जुब हुआ कि वही छोटा सवार मेरे दरवाजे पर खड़ा है। मैंने समझा कि शायद उस घोड़े का मालिक भी उसी होटल में टिका होगा—मगर मेरे ताज्जुब को कोई हद्द न रहा जब मैंने अपने कमरे में घुसते ही वह सोने का प्याला जो जाकीक्लब की तरफ से उस घोड़े के इनाम मिला

तरफ बँट गया॥

मेट०। नहीं नहीं यह बात नहीं है, तुम कौएट के दोस्त हो इससे ऐसा कहते हो नहीं तो वास्तव में लोगों के दिल से कौएट का ध्यान उतर नहीं गया बल्कि बढ़ता जाता है। उसका यहां आने के साथ ही पहिला काम तो यह हुआ कि एक जोड़ी घोड़ों की जिनकी कीमत तीस हजार थी उसने मैडम दङ्गली को नजर कर दी। दूसरे उस आश्चर्य जनक रीति से मैडम बिलफोर्ट की जान बचाई और अब घुड़दौड़ की सबसे भारी बाजी "जाकीक्लब" का प्याला उसने जीत लिया! मारकर्फ चाहे जो कुछ कहे—पर वास्तव में कौएट इस समय सभों की निगाहों पर चढ़ा हुआ है॥

अलबर्ट०। ठीक है होगा, मगर वह तो देखो रूस के राजदूत का बाक्स किसने लिया है!!

काउएटेस०। कौन बाक्स॥

अल०। वह पहिली पंक्ति का, दोनों खम्भों के बीच वाला।

का०। हां है तो सही, मगर अभी थोड़ी देर हुई तब तो वह खाली था। (पहिले विषय पर लौट कर) खैर तो तुम समझते हो कि मेरे पास सोने का प्याला भेजने वाला कौएट आफ मौएट क्रीटो ही था?

अल०। बेशक॥

का०। मगर मैं तो उसे जानती नहीं, मेरा तो इरादा है कि उसे लौटा दूं॥

अल०। नहीं नहीं ऐसा भूल के भी न करना, इस प्याले को लौटा दोगी तो वह कोई दूसरा इससे भी कीमती हीरे या मोती को खोखला करके बनाया हुआ भेज देगा। उस आदमी का यही ढङ्ग ही है॥

इसी समय दूसरा ऐक्ट शुरू होने की घण्टी बजी, अलबर्ट अपने बाक्स में लौटने को उठा। काउण्ट ने पूछा, "क्या फिर आओगे?"

अल०। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं दूसरी छुट्टी में यह पूछने को आऊं कि आप टिकी कहां हैं और क्या मैं पैरिस में आपका कोई काम कर सकता हूं॥

काउ०। देखो मेरा पता नं० २२ रोडीरिवोली है और मैं हर शनिवार को अपने दोस्तों से मिलने को तैयार रहती हूं सो अब आपलोग कोई बहाना नहीं कर सकते॥"

अलबर्ट और फ्रान्सिस ने काउन्टेस को सलाम किया और उस से बिदा हो अपनी जगह पर लौटे। उन्होंने देखा कि इस समय सभी आदमियों की निगाह उसी राजदूत के बाक्स की तरफ लगी हुई हैं। काली पोशाक पहिने हुए एक आदमी अभी वहां आया था जिसके साथ पूर्वी ढङ्ग की पोशाक पहिरे एक औरत भी थी। औरत कम उम्र और बड़ी सुन्दर थी और उसकी भड़कीली और बेशकीमती पोशाक ने सभों की निगाह अपनी तरफ खींच ली थी॥

अल०। हैं! यह तो मौण्ट क्रीटो अपनी ग्रीक के

के साथ दिया। अलबर्ट ने कहा, "शायद वह आप ही यहां आवे मुझे बुलाने की शायद जरूरत न पड़े॥"

मैडम०। तो तुम उसके पासही क्यों नहीं चले जाते॥

अल०। मेरी उस ग्रीक औरत से कौएट ने अभी तक मुलाकात नहीं कराई है। इस तरह जाना शायद उसे बुरा लगे। खैर मैं उधर जाता हूं। अगर मुलाकात हो गई तो ठीक ही है॥"

अलबर्ट मैडम के बाक्स से निकला और कौउएट के बाक्स के पास उस समय पहुंचा जब वह बाहर निकल कर अली से कुछ कह रहा था। अलबर्ट को देख उसने उस से हाथ मिलाया और बातें करने लगा। अली ने बाक्स का दरवाजा बन्द कर दिया और बाहर खड़ा हो गया, और उसकी विचित्र सूरत देखने के लिये आदमियों ने चारो तरफ से अली को घेर लिया॥

कौएट०। पैरिस के लोग भी बड़े विचित्र हैं देखो न अली को किस तरह घेरा हुआ है जैसे पहिले कभी कोई हबशी पैरिस में आया ही न हो॥

अल०। मगर इस बात का असल सबब यह है कि वह आपका नौकर है जो इस समय पैरिस में सबसे मशहूर आदमी हो रहे हैं॥

कौएट०। सो क्या? मैं क्या पैरिस में इतना मशहूर होगया हूं?

अल०। क्यों नहीं! आप ऐसे घोड़े नजर करते हैं जिनकी कीमत तीस हजार है। ऐसी औरतों की जान

बचाते हैं जो पेरिस भर में सुन्दर और सतबे वाली है। ऐसे घोड़े घुड़दौड़ मे भेजते हैं जो जाकीक्लब का इनाम चुटकी बजातेमें जीत लेते हैं, और फिर इनाम का प्याला पा उसकी कदर करना तो दूर उसे तुरत ही जो सुन्दर औरत पहिले दिखाई पड़ी उसी की नजर कर देते हैं। भला फिर भी आप मशहूर न होंगे?

कौएट०। तुम्हारे सिर में ये वाहियात बातें किसने भर दी?

अल०। आप ही ने और किसने? क्या वह घोड़ा आपका नही था जिसने बाजी मारी?

कौएट०। तुम कैसे समझते हो?

अल०। आपने घोड़े का नाम वफ़ा रक्खा॥

कौएट०। ओह! बेशक चूक हो गई। खैर यह तो कहो क्या तुम्हारे पिता थियेटर देखने नहीं आते?

अल०। आज आवेंगे। वैरोनेस दङ्गली के बाक्स में उनसे मिलने का उन्होंने वादा किया हुआ है? हां लगे हाथ यह भी कह दूं कि मैडम दङ्गली आप से मुलाकात करने को व्यग्र हैं! या यह समझिये कि आपको अपने बाक्स में बैठे हुए दूसरों को दिखाने के लिये व्यग्र हैं॥

कौएट०। वह नौजवान लड़की दङ्गली की बेटी है?

अल०। जी हां?

कौएट०। तब तो मैं मुबारकबादी देता हूं॥

अल०। (मुसकुरा कर) इस बारे में मैं फिर कभी बातें

करूँगा। यह कहिये आपको यहां का नाटक और गाना पसन्द आया?

कौएट०। हां अच्छाही है मगर यहां शोरगुल बहुत रहता है। गाने इत्यादि के लिये शान्ति और निराला चाहिये। अगर आपको गाना सुनने का शौक हो तो कभी मेरे पास आइयेगा॥

अल०। आपका मतलब शायद उस "हैदरी" से है जिसके गजल की एक तान मैं रोम में सुन चुका हूं॥

कौएट०। हां, वह बेचारी देश से निकाली लड़की कभी कभी गाकर अपना मन बहलाती है॥

इसी समय पुन: परदा उठने की सूचना देने वाली घण्टी बजी। काउण्ट अपने बाक्स की तरफ घूमा। अलबर्ट ने विदा होते हुए उससे पूछा, "अच्छा तो मैं बैरोनेस से क्या कह दूं?"

कौएट०। कह दीजिये कि दूसरी छुट्टी में मैं जरूर उनके दर्शन करूँगा। कौण्टेस जीला से भी यथायोग्य कह देना॥

खेल फिर शुरू हुआ और इसी समय अलबर्ट का पिता कौएट मारकर्फ मैडम दङ्गली के बाक्स में पहुंचा। मामूली साहब सलामत के बाद उसने भी मैडम के बगल की एक कुर्सी दखल कर ली और तमाशे और तमाशबीनों पर निगाह दौड़ाने लगा।

यद्यपि उसके आने का पता और किसी को न लगा मगर कौएट मौएट क्रीटो की तेज निगाहों ने जरूर उसे

देख लिया। हैदरी का इधर बिल्कुल ही ध्यान न था वह स्टेज के सीन में एकदम लवलीन थी॥

तीसरा दृश्य भी समाप्त हुआ और पुनः कुछ देर की छुट्टी हुई। कौण्ट मैडम के बाक्स में पहुंचा जो उसे देख बहुत ही प्रसन्न हुई और बोली, "ओह काउण्ट! मैं आपका इन्तजार ही कर रही थी जिसमें जुबानी उन धन्यवादों को दूं जो चीठी द्वारा नहीं दिये जा सकते॥"

कौण्ट ने मुस्कुराते हुए कहा, "धन्यवाद! किस के लिये क्या उस मामूली बात के लिये!! मैडम मैं सच कहता हूं कि मैं उस बात को बिल्कुल भूलही गया था॥

मैडम०। मगर तो क्या इस बात को भी भूल गए कि दूसरे दिन उन्ही घोड़ों से आपने मैडम विलफोर्ट की जान बचाई॥

कौण्ट०। इस बार मैं आपकी बात नहीं मंजूर कर सकता क्योंकि इस काम का करने वाला मैं नही बल्कि मेरा गुलाम "अली" था॥

कौण्ट मारकर्फ०। क्या वह भी अलीही था जिसने मेरे लड़के की जान डाकुओं के हाथ से बचाई!

मौण्ट क्रीटो०। (कौण्ट की तरफ घूम कर और दोस्ताने के तौरपर हाथ मिला कर) हां इस बार आप की बात मुझे मंजूर करनी और धन्यवाद स्वीकार करने होंगे। मगर इस बात के लिए आप पहिले ही धन्यवाद दे चुके और मैं ले चुका हूं और अब बार बार उसका जिक्र करने की आवश्यकता नही (मैडम से) आप दया कर

अपनी बेटी से तो मुझे परिचित करा दीजिये *॥

मैडम०। ओह आप अजनबी नहीं हैं कम से कम, आपका नाम तो इन्हें अच्छी तरह मालूम है (यूजिनी की तरफ घूम कर कर) यूजिनी (कौण्ट की तरफ घूम) कौण्ट आफ मौण्ट क्रीटो ॥

कौण्ट ने यूजिनी को सलाम किया जिसका जवाब उसने जरा सा सिर हिला कर दिया और तब कहा— "कौण्ट महाशय! आपके साथ एक बहुत सुन्दर युवा औरत है? क्या वह आपकी लड़की है?"

यूजिनी के इस ढिठाई भरे सवाल ने कौण्ट को ताज्जुब में डाल दिया पर उसने कहा, "नहीं, वह एक बदकिस्मत ग्रीक है और इस समय मैं ही उसका वली हूं॥"

यूजिनी०। उसका नाम क्या है?

कौण्ट०। हैदरी॥

कौण्ट के पासही खड़ा मारकर्फ इन बातों को गौर से सुन रहा था। उसकी निगाह हैदरी की तरफ घूम गई और यकायक उसके मुंहसे निकल गया-'ग्रीक! हैदरी!!' जिसे सुन मैडम ने उससे कहा, "कौण्ट मारकर्फ! आप तो बहुत दिनों तक ग्रीस में 'अली तबलिन' के दर्बार रह चुके हैं! क्या वहां आपने इससे सुन्दर औरत देखी

* यूरोप में यह कायदा है कि जब तक दो अजनबी आदमियों को कोई तीसरा एक दूसरे से सामना करा और नाम बता परिचित करा नहीं देता तब तक वे लोग दोस्ती नहीं कायम कर सकते चाहे एक दूसरे को जानते हों॥

है।"

मौएट क्रीटो०। (मारकर्फ की तरफ घूम कर) क्या वास्तव में आप 'जनीना' में रह चुके हैं?

मारकर्फ०। जी हां मैंने अलीतबलिन के दर्बार में बहुत दिन नौकरी की है। मेरी जो कुछ दौलत है वह मैंने उस प्रसिद्ध अलबानियन सरदार की मेहरबानी से ही पाई है॥

मैडम०। मगर वह तो देखो! यह क्या!

मारकर्फ०। कहां कहां?

मौएट क्रीटो०। (मारकर्फ के कन्धे पर हाथ रख इशारे से बताते हुए) वह देखो मेरे बाक्स में!

जिस समय मारकर्फ की निगाह कौएट के बाक्स की तरफ घूमी उसी समय हैदरी ने जिसकी निगाहें मौएट क्रीटो को चारो तरफ खोज रही थी-इस तरफ देखा। मारकर्फ के बगल ही में जिसे काउएट ने पकडा हुआ था उसे मौएट क्रीटो की सूरत दिखाई दी। देखने के साथही हैदरी की अजीब हालत होगई। उसने एक दफे झुक कर इस तरफ देखा मानों किसी बात का निश्चय किया चाहती है और तब उसके मुँह से एक हलकी चीख निकलगई जिसके साथही वह बेसुध होकर अपनी कुरसी पर उठँग गई। चीख की आवाज अली के कान में पड़ी जो दर्वाजे पर पहरा दे रहा था वह तुरत दरवाजा खोल भीतर गया कि क्या मामला है॥

यूजिनी ने चौंककर कौएट से कहा, "कौएट साहब

वह देखिये उस लड़की को क्या होगया। मैं समझता हूं वह बेहोश हो गई है॥

कौ०। हां कदाचित् ऐसा ही है। हैदरी का स्वभाव बड़ा ही कोमल है और उसकी प्रकृति तो ऐसी है कि तेज फूल की खुशबू से ही वह बेसुध हो जाती है। खैर कोई चिन्ता की बात नहीं—मेरे पास इसकी अनमोल दवा मौजूद है॥

मुस्कुराते हुए कौण्ट ने जेब से एक शीशी निकाल कर दिखाई और तब मैडम और यूजिनी को सलाम कर तथा मारकर्फ और डिब्रे से हाथ मिला वह उस बाक्स के बाहर निकल हैदरी की तरफ चला॥

हैदरी होश में आ गई थी पर बड़ी ही बदहवास हो रही थी। कौण्ट को देखते ही उसने इसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "आप अभी अभी किस आदमी से बात कर रहे थे?"

कौण्ट०। उसका नाम कौण्ट मारकर्फ है। उसका कथन है कि वह तुम्हारे पिता के दर्बार में रह चुका है, और उसके पास जो कुछ दौलत है वह तुम्हारे पिताही की दी हुई है॥

हैदरी०। (गुस्से से) पाजी! बदमाश!! उसी ने तो मेरे पिता को तुर्कों के हाथ में बेच दिया! जिस दौलत का वह घमण्ड करता है वह इस निमकहरामी की कीमत में उसे मिली है! क्या आपको यह बात नहीं मालूम॥

कौण्ट०। मैंने एपिरस में इस बात की कुछ सुनगुन

पाई थी-खैर जब तुम शान्त होगी तो किसी समय वह हाल मुझे सुनाना ॥

हैदरी०। हां हां मैं सुनाऊंगी पर इस समय मेरी प्रार्थना है कि आप यहां से चले चलें। मुझे ऐसा मालूम होता है मानो अब मैं और कुछ देर तक यदि उस भयानक आदमी के सामने रही तो मेरी जान चली जायगी॥

हैदरी को हाथ का सहारा दे कौंएट ने उठाया। उसने अपने मोती से टंके हुए दुशाले को ओढ़ा और कौंएट के हाथ का सहारा लिए हुये बाक्स के बाहर निकल गई॥

दूसरा बयान।

दर की घड़ा बतरी।

इस घटना के पांच या छः दिन बाद अलबर्ट अपने दोस्त डिब्रे को साथ लिये कौंएट आफ मौंएट क्रीटो से मिलने उसके "चेम्पस एलिसीज" वाले मकान मे गया जिसने इतने थोड़े ही समय में वह राजमहलों की सी शानशौकत अख़्तियार करली थी जो कौंएट अपनी बेशुमार दौलत की मदद से जब और जहां चाहे कर सकता था। अलबर्ट तो कौंएट से मुलाकात करनेही आया था मगर डिब्रेके आने का सिर्फ यही मतलब न था वह मैडम दङ्गलो का भेजा हुआ आया था जिसने कौंएट के अनगिनती रुपयों की बड़ी बड़ी बातें सुनी थी और अगर

अपनी नहीं तो डिक्रे की ही आंखों से देख कर समझा चाहती थी कि वास्तव में क्या बात है और काउण्ट के घर की क्या हालत है। मौण्टक्रीटो डिक्रे की चलती फिरती बातें और इधर उधर दौड़ती और बेशकीमती चीजों और सामानों का मुआइना करती हुई आंखों से ही उसके आने का सबब समझ गया मगर उसने अपने भाव या बातचीत से ऐसा जाहिर न होने दिया। उसने दोनों को बड़ी खातिर से लिया और अपने खास कमरे में ले जाकर बैठाया और बातचीत करने लगा। अलबर्ट तो बैठा रहा मगर डिक्रे थोड़ी देर बाद उठ खड़ा हुआ और कमरे में चारो तरफ घूम घूम कर उन बेशकीमती तस्वीरों पोशाकों और हथियारों को देखने लगा जो जगह बजगह कायदे के साथ लगे हुए थे॥

कौण्ट०। (अलबर्ट से) आपकी इधर मि० दङ्गली से मुलाकात हुई?

अल०। (लम्बी सांस लेकर) हां रोज ही होती है॥

कौण्ट०। (मुस्कुरा कर) क्यों यह सांस क्यों?

अल०। शादी की बातचीत पक्की होती जाती है॥

कौण्ट०। मगर आपकी उस दिन की बातचीत से तो मैं समझा था कि इस मामले में अभी देर लगेगी॥

अल०। हां, मैं तो यही चाहता था पर लक्षण वैसे नजर नहीं आते। मेरे पिता और मि० दङ्गली ने स्पेन में एकसाथही फौज में काम किया था—मेरे पिता सिपाही थे। मि० दङ्गली कमसरियट के एक क्लर्क। वहीं दोनों

आदमियों की वर्तमान अवस्था की एक साथ ही नींव पड़ी थी और अब वे दोनों ही यह शादी कर के उसे मजबूत कर दिया चाहते हैं ॥

कौएट०। तो अच्छा ही है यूजिनी दङ्गली बहुत ही सुन्दर हैं। मैंने उन्हें उस दिन थियेटर में देखा था ॥

अल०। (लम्बी सांस ले कर) हां मगर वह सुन्दरता मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। इसके सिवाय वह इतनी अमीर है कि मुझे डर लगता है ॥

कौएट०। (हँस कर) वाह यह खूब सबब निकाला। क्या आप स्वयम् रुपै वाले नहीं हैं?

अल०। मेरे पिता की आमदनी आजकल पचास हजार रुपये साल की है। अगर मेरी शादी हो गई तो वे शायद दस या बारह हजार मुझे दे देंगे ॥

कौएट०। बेशक यह भारी रकम नहीं कहला सकती और सो भी पैरिस में मगर फिर दुनिया में दौलत ही सब चीज भी तो नहीं है। ऊँचा घराना, नेकनाम, भी तो कुछ है। आपका नाम मशहूर है, आपका कुल ऊँचा है। घराना प्रसिद्ध है, मेरी समझ में तो यह शादी बड़ी ही अच्छी है। यूजिनी आपको अमीर करेगी। आप उसे उच्च कुल की कर देंगे ॥

अलबर्ट ने चिन्ता के साथ गरदन हिला कर कहा, "सिर्फ यही बात नहीं है, एक बात और भी है ॥"

कौएट०। वो क्या?

अल०। यह शादी मेरी मां को भी पसन्द नहीं है।

मैं नहीं कह सकता कि क्या बात है पर मेरी मां को दङ्गली से न जाने क्यों कुछ नफरत सी है ॥

कौण्ट०। (कुछ बनावटी आवाज से) हो सकता है। आपकी मां एक कुलीन सम्भ्रान्त कुल की हैं। आप की शादी एक नीचे घराने में करने से उन्हें स्वभावतः ही आपत्ति हो सकती है ॥

अल०। मैं नहीं कह सकता कि यही बात है या कोई और! पर यह निश्चय है कि यदि यह शादी हो गई तो मेरी मां बड़ी ही दुःखी होंगी। मगर शादी के रुकने के भी कोई लक्षण नजर नहीं आते। आज डेढ़ महीना हुआ सब बातों को तै करने के लिये एक कमेटी होने वाली थी पर उस समय मेरी तबीयत इतनी खराब हो गई......

कौण्ट०। (मुस्कुरा कर) सचमुच या......

अलबर्ट०। सच्ची ही समझिये, शायद फिक्र के मारे, कि सभों को लाचार हो वह मामला दो महीने के लिये टाल देना पड़ा। मगर वह दो महीना भी हफ्ते भर बाद समाप्त हुआ चाहता है! ओह काउण्ट!! आप नहीं जानते कि इस बात ने मुझे कितनी बड़ी हैरानी में डाल दिया है। अगर मैं शादी से इन्कार करता हूं तो मेरे पिता को भारी नैराश्य होगा ॥

कौण्ट०। (कंधा हिला कर) तो ब्याह कर लीजिये॥

अल०। और यदि मैं शादी कर लूँ तो मेरी मां बड़ी ही दुःखी होंगी ॥

कौण्ट०। तो शादी से इन्कार कर दीजिये॥

अलबर्ट०। मैं भारी तरद्दुद में पड़ गया हूं, बहुत सोचने पर भी यह नही निश्चय कर सकता कि इस समय क्या करना उचित है। कांउण्ट! क्या आप मुझे मदद नही देंगे! क्या आप मुझे मुनासिब सलाह नही देंगे! मैं तो समझता हूं कि अपनी मां को दुःखी करने की बनिस्बत अपने पिता को निराश करने की जोखिम उठाना मुझे पसन्द होगा॥

कौण्ट ने इस नौजवान की आखिरी बात सुन कर अपना चेहरा घुमा लिया। इसमें कोई सन्देह नही कि इस बात ने उस पर कोई गहरा असर किया था। उसकी निगाह डिब्रे की तरफ गई जो कमरे के दूसरे सिरे पर एक पैन्सिल और कागज हाथ में लिये बैठा हुआ था। कौण्ट ने यह देख कहा, "क्या साहब! आप क्या कर रहे हैं? क्या इस तस्वीर की नकल उतार रहे हैं?"

डिब्रे०। नही नही मैं तस्वीर नही बना रहा बल्कि हिसाब जोड़ रहा हूं॥

कौण्ट०। हिसाब!!

डिब्रे०। जी हां हिसाब ही! (अलबर्ट से) यह तुम्हारे भी कुछ मतलब की बात है—मैं जोड रहा हूं कि आजकल में हेटी * के सरकारी कागज की दर में जो चढ़ा

* हेटी—यह वस्ट इन्डीज का एक टापू है, यहां प्रजा तन्त्र राज्य है। जिस तरह हिन्दुस्तान की सरकार प्रामेसरी नोट निकाल कर कर्ज लेती है उसी तरह और और सरकारें भी कर्ज लिया करती हैं और उन्हीं कागजों को सरकारी

उतरी हुई है उसमें मि० दङ्गली की कोठी ने क्या मुनाफा उठाया। तीन दिन के भीतर २०६ से उसका भाव ४०८ होगया। धूर्त महाजन ने २०६ के भाव में बहुत सा कागज खरीदा था। उन्हें कम से कम तीन लाख रुपये का मुनाफा हुआ होगा॥

अलबर्ट०। यह क्या है उन्हें तो इससे भी भारी भारी मुनाफे हो चुके हैं; पार साल स्पेन के सरकारी कर्जे में उन्हें दस लाख मिला था॥

डिब्रे०। हां, बेशक मि० दङ्गली भाग्यवान हैं। इसी हेटी के कागज को उन्होंने कल ४०६ के भाव मे वेच दिया और तीन लाख फटकार दिया अगर एक रोज और ठहरते तो उसका भाव २०५ हो गया था। तीन लाख के मुनाफे के बदले बीस पचीस हजार पल्ले के चले जाते?

मौरएट क्रीटे०। मगर यकायक हेटी के कागज की दर ४०८ से २०५ हो जाने का कारण! क्षमा कीजियेगा मगर इन सब व्यापारी बातों मे मेरा कोई दखल नहीं है॥

अल०। इसका सबब यह है कि एक खबर के बाद दूसरी खबर आती है और दोनों में बहुत फर्क रहता है॥

मौरएट०। मैं देखता हूं कि मि० दङ्गली को एक दिन में तीन लाख कमाने और गँवाने का अभ्यास पड़ा हुआ है। बेशक वे बहुत अमीर होगे॥

डिब्रे०। नही, वे स्वयम् यह जूआ नही खेलते। यह

कागज कहते हैं। इनको दर व्यापारी या दलाल लोग, आवश्यकतानुसार घटाया बढ़ाया करते हैं॥

मैडम दङ्गली की कार्रवाई है। इन मामलों में बेशक मैडम हिम्मतवर हैं॥

अल०। मगर लूशियेन! तुम्हारे ही ज़िम्मे तो इन खबरों का आना जाना है * और तुम यह भी जानते हो कि इन खबरों पर बहुत विश्वास नही करना चाहिये। फिर क्यों नही तुम यह जूआ रोकते॥

लूशियेन डिब्रे०। भला मैं क्या कर सकता हूं जब मि० दङ्गली ही कुछ नही कर सकते और फिर यह तो तुम जानते ही हो कि मैडम दङ्गली कैसी दबग औरत है। क्या कोई उसके काम में दखल देने की हिम्मत कर सकता है?

अल०। आह! अगर मैं तुम्हारी जगह होता ..

डिब्रे०। तो क्या करते?

अल०। मैं उन्हे ऐसी शिक्षा देता कि वे हमेशा के लिये सुधर जाती॥

डिब्रे०। शिक्षा? कैसी शिक्षा?

अल०। तुम मन्त्री के सेक्रेटरी हो और तुम्हें सब बातों की खबर रहती है। तुम्हारे मुंह से निकलने वाली बातों को सरकारी कागजों के दलाल और महाजन लोग अमृत के बूंद की तरह समझते हैं तुम मैडम का लाख दो लाख का नुकसान करा दो, बस वह सुधर जायगी।

* उस ज़माने में बिजली से तार खबरों का आना जाना आरम्भ नहीं हुआ था इशारों से या दूतों द्वारा अन्दरूनी और विदेशी खबरें आती जाती थी और यह सब काम सरकार के जिम्मे था॥

उसके साथ नहीं तो कम से कम उसके भावी दामाद के साथ तो यह उपकार हो जायगा॥

डिब्रे०। (कुछ उखड़े स्वर के साथ) मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा॥

अल०। मगर यह तो बिल्कुल साफ है। किसी दिन मैडम को एक ऐसी खबर सुनाओ जिसका सिर्फ तुम्हें ही पता है। जैसे उसे कह दो कि "हेनरी चौथा कल गेब्रियेल के मकान पर गया था।" सरकारी कागज की दर यह खबर सुनतेही चढ़ेगी और मैडम भी मुनासिब इन्तजाम करेगी मगर दूसरे दिन जब व्यूशेम्प अपने अखबार में लिखेगा कि "कल जो खबर उडी थी कि बादशाह गेब्रियेल के मकानपर दिखे थे यह बिल्कुल झूठ है हम ठीक ठीक कह सकते हैं कि बादशाह कल अपने महल के बाहर नही निकले।" बस यह खबर सुनतेही दर एकदम गिर जायगी और मैडम का नुकसान हो जायगा॥

लूशियेन यह सुन कुछ मुस्कुराया। मौएट क्रीटो चाहें ऊपर से इस बातचीत की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा था पर वास्तव में वह बड़े गौर से इन बातों को सुन रहा था। लूशियेन के ढंग से मालूम हो रहा था कि अलबर्ट की बातों ने उसे बेचैन कर दिया है और उस की मुस्कुराहट के नीचे घबराहट छिपी हुई है; वह थोड़ी ही देर बाद उठ खड़ा और कौएट से विदा मांगने लगा। कौएट ने उससे विदा होते हुए उसके कान में धीरे से कुछ कहा जिसके जवाब में उसने कहा, "बहुत अच्छा का-

उएट मुझे आपकी बात मंजूर है।" काउंएट फिर अल-बर्ट के पास लौट आया॥

कौएट०। मैं आप से एक बात कहा चाहता हूं। मि० दंगली मेरे महाजन हैं, मि० विलफ़ोर्ट अपने को मेरा अहसानमन्द मानते हैं; आपके पिता भी ऐसा ही सोचते हैं, अस्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरे ऊपर दावतों, न्योतों और जलसों का पहाड़ आ गिरेगा परन्तु मैं नहीं चाहता कि इस बात में किसी के पीछे रहूं अस्तु मैं स्वयं अपने दोस्तों की एक दावत किया चाहता हूं। उसमें मि० और मैडम दङ्गली और मि० और मैडम विल-फ़ोर्ट आपके पिता, आपकी मां, और शायद मिस यूजिनी को भी नेवता देना पड़े। परन्तु जैसा कि आपके कहने से मालूम होता है आपकी मां और यूज़िनी की मां में ज्यादा प्रेम नहीं दीखता अस्तु वे दोनों मेरे मकान में टेबुल पर एक दूसरे को सामने सामने पावेंगे तो कमसे कम आपकी मां मुझपर अवश्य रुष्ट होंगी और मैं यह कदापि चाहता नहीं कि उनकी निगाहों से गिर जाऊं॥

अल०। बेशक मेरी मां बैरोनेस दङ्गली का साथ पसन्द नहीं करेंगी॥

कौएट०। और अगर मैं आपकी मां को न्योता न दूं तो यह भी ठीक न होगा। अस्तु मैं चाहता हूं कि या तो आप पहिले ही से न्योता नामन्जूर करने का कोई बहाना सोच बैठें और या फिर न्योता मंजूर करें और आने की तकलीफ उठावें। देखिये मैं आपसे साफ साफ

सकता था कि आप मुझे भोजन का नेवता देंगे॥

अल०। शायद !!

काउण्ट०। अच्छा तो सुनिये, बैपटिस्टिन ! आज सुबह मैंने तुम्हें लेबोरेटरी में क्या कहा था ?

बैप०। हुजूर ने कहा था कि "पांच बजने के बाद किसी को आने न देना। सिर्फ मेजर बारटोलोमियो केवेलकन्टी और उसके लड़के अगर आवें तो आने देना जिनसे मुझे जरूरी काम है॥"

काउ०। सुना आपने-मेजर केवेलकन्टी ! इटाली के रईसों में से अव्वल दर्जे के ! और उनके लड़के ! आप ही की उमर के एक नौजवान जिन्हें वाईकौण्ट की पदवी भी है और जो अपने पिता के करोड़ों रुपयों की मदद से पैरिस की सोसाइटी में प्रवेश किया चाहते हैं। मेजर अपने लड़के को मेरे सपुर्द करने यहां ला रहे हैं। आपने समझा !! यही काम मुझे है !!

अल०। जी हां ठीक है, क्या यह मेजर केवेलकन्टी आपके कोई पुराने दोस्त हैं ?

कौण्ट०। नहीं नहीं ! ये मेजर इटली के एक बड़े प्राचीन घराने के अमीर, नम्र और उदार आदमी हैं। मेरी इनकी मुलाकात सफर में हुई थी और अब उन्होंने यहां आने का हाल मुझे लिखा है। सफर में जो थोड़ी देर की मित्रता अजनबी लोगों से हो जाती है उस पर लोग एक तरह से अपना दावा मान बैठते हैं। बस मेरी उनकी दोस्ती भी ऐसी है॥

अल०। ठीक है, अच्छा तो अब मैं चलूँ ! हमलोग रविवार को लौटेंगे। हां सुनिये तो मेरे पास फ्रान्सिस की एक चीठी आई है ॥

काउएट०। हां ! क्या वे अभी इटली का ही आनन्द ले रहे हैं ?

अलबर्ट०। हां उसने लिखा है कि काउएट के बिना यहां का सब आनन्द फीका हो रहा है ॥

काउंएट०। ओ हो ! तब शायद मेरे बारे में उनकी पहिले जो राय थी वह बदल गई ॥

अल०। नहीं ! वह अभी तक आपको कोई अद्भुत और अभेद्य आदमी समझता है ॥

काउंएट०। वह नौजवान भी एक दिलचस्प आदमी है—मैंने जब उसे देखा उसी समय से न जाने क्यों उसकी तरफ बार बार मेरा ध्यान जाने लगा—अच्छा वह उन्हीं जनरल किसनल का लड़का है न जो बेदर्दी के साथ १८१५ में मार डाला गया था * ॥

अल०। हां उसे नेपोलियन के तरफदारों ने मार डाला था आपने शायद सुना ही होगा। उसकी (फ्रान्सिस की) शादी मि० विलफोर्ट की लड़की से होने वाली है ॥

काउंएट०। क्यों सचमुच !!

अल०। (हँसते हुए) हां, मगर हम दोनों दोस्त

* दूसरा हिस्सा तीसर और चौथे बयान में इसी जनरल किसनल का जिक्र आया है ॥

इस मामले में एक सा हैं क्योंकि मेरी तरह फ्रान्सिस की भी इच्छा इस शादी के बिल्कुल खिलाफ है। खैर काउएट! अब मैं आपका और समय बर्बाद नहीं किया चाहता॥

अलबर्ट के जाने बाद काउएट ने अपनी घण्टी तीन दफे बजाई, बर्टू शियो हाजिर हुआ॥

काउ०। बर्टू शियो! मैं शनीवार को अपने आटविल के मकान में कुछ दोस्तों की दावत किया चाहता हूं॥

आटविल का नाम सुन बर्टू शियो कुछ चौंक गया। मगर काउएट ने उधर कुछ खयाल न करके कहा, "मैं चाहता हूं कि सब इन्तजाम बहुत ही ठीक रहे। आटविल का मकान बहुत सुन्दर है—कम से कम वह ऐसा बनाया जा सकता है॥

बर्टू०। मगर हुजूर फिर भी वहां बहुत काम करने वाला है क्योंकि पड़दे वगैरह सब पुराने हो गये हैं....

काउ०। तो उन सभों को बदलवा दो, सिर्फ उस सोने वाले कमरे को ज्यों का त्यों रहने दो जो लाल रेशम से मढ़ा है। उसमें किसी तरह का कोई भी फर्क मत करो। बागीचे को भी ज्यों का त्यों रहने दो, हां सामने जो नजरबाग है उसे जिस तरह पर और जैसे चाहो सजा सकते हो, और बाकी चीजों को भी जिस तरह चाहो सजाओ॥

बर्टू०। बहुत अच्छा हुजूर मैं अपने भरसक कोई

बात उठा न रक्खूँगा—मगर भोजन की निस्बत हुजूर कुछ बता दें।

काउण्ट०। बर्टू शियो! मैं देखता हूं कि जब से तुम पैरिस आए हो तुम्हारा दिमाग कुछ खराब हो गया है; अब क्या मैं मामूली मामूली बातें भी तुम्हे समझाया करूँगा!!

बर्टू०। (डर कर अदब से) हुजूर कम से कम यह तो बता सकते हैं कि कौन कौन और कितने महाशय भोजन करने आवेंगे।

काउण्ट०। मैं खुद नहीं जानता! और तुम्हें भी जानने की जरूरत नहीं। ल्यूकलस ल्यूकलस * के साथ ही खायगा॥

बर्टू शियो ने अदब से सलाम किया और कमरे के बाहर चला गया॥

* ल्यूकलस—राम का एक प्रसिद्ध महापुरुष लगभग दो हजार बरस पहिले हुआ था। इसकी दौलत शौकीनी और अमीरी मशहूर थी।

तीसरा बयान।

मेजर कैवेलकन्टी।

सात अभी अभी बजा था कि कौएट के आलीशान महल के फाटक पर एक किराए की गाड़ी रुकी और उसमें से एक आदमी उतरा। सवारी के उतरतेही गाड़ी तो इस तरह चल दी मानों इस काम पर उसे खुद ही शर्म आ गई हो मगर वह आदमी जो उसमें से उतरा था दर्वाजे के पास आया और दरबान से बोला, "क्या इस मकान का नम्बर ३० है? क्या कौएट आफ़ मौएट क्रीटो इसी में रहते हैं?" दरबान के "हां" कहने पर वह आदमी भीतर आ गया और दरवाजा बन्द कर मकान की तरफ़ बढ़ा॥

इस आदमी की उम्र लगभग बावन वर्ष के होगी, मामूली ढङ्ग का इटली देश के पुराने फैशन का कोट नीला पतलून और मामूली जूता उसके पैर में था। टोपी भी किसी पुराने ही जमाने की थी और पोशाक का बाकी सामान नेकटाई दस्ताना वगैरह भी इसी जोड़ी का था। इसकी सुफ़ेद बड़ी बड़ी मोछों और छोटे पतले माथे तथा पोशाक की मदद से बैपटिस्टिन इस इटा-लियन को तुरतही पहिचान गया जिसे उसके आने की सूचना लग चुकी थी अस्तु इस आदमी के महल की सीढ़ियां चढ़ने के साथ ही उसके आने की इत्तला कौएट को मिल गई और कुछही देर बाद इस अजनबी ने अपने

को एक छोटे मगर सूफियाने कमरे में कौएट के सामने खड़ा पाया । इसको देखते ही कौएट मुस्कुराता हुआ अपनी जगह से उठा और बोला, "आइये महाशय आइये ! मैं आपकी राह ही देख रहा था ॥"

अजनबी०। क्या वास्तव में ! क्या हुजूर को मेरे आने की खबर लग चुकी थी !!

कौएट० । हां हां, बेशक ॥

अजनबी०। और आप इस समय मेरी ही राह देख रहे थे ॥

कौएट०। जी हां, ठहरिये मैं सब सन्देह दूर कर देता हूं । आप ही का नाम न "सारक्विस बारटोलोमियो केवेलकन्टी है !"

अजनबी०। हां हां, बारटोलोमियो केवेलकन्टी ॥

कौएट० । आस्ट्रिया की फौज के मेजर ?

अज०। क्या मैं मेजर था ?

कौएट०। हा हां, जिस रुतबे पर आप थे उसे यहां मेजर ही कहते हैं ॥

अज० । जी हां, हां, ठीक है, मैं...

कौएट० । आप अपनी इच्छा से यहां नहीं आए बल्कि किसी ने आपको मेरे पास भेजा है ?

अजनी० । जी हां, जी हां ॥

कौएट० । आप को एबी 'बसूनी' ने भेजा है और आप उनकी चीठी भी लाये हैं ?

अज० । जी हां ॥

कौएट०। अच्छा तो वह चीठी मुझे दीजिये॥

अजनबी ने एक चीठी दी जिसे कौएट पढ़ने लगा। मेजर साहब की निगाह एक बार तो इस कमरे के चारो तरफ ताज्जुब के साथ घूम गई मगर फिर कौएट पर आ कर रुक गई जो चीठी पढ़ता हुआ कह रहा था, "ठीक है ठीक है! मेजर केवेलकन्टी, फ्लारेन्स के पुराने घराने के रईस! पांच लाख रुपै साल की आमदनी!" कौएट ने चीठी पर से निगाह उठा कर मेजर की तरफ देखा, "पांच लाख! बेशक यह मामूली आमदनी नहीं है॥"

मेजर०। क्या पांच लाख?

कौ०। बेशक, एबी बसूनी को यूरोप के सब रईसों की ठीक ठीक आमदनी का पता है और जब उसने यह लिखा है तो बेशक ठीक ही लिखा होगा॥

मेजर०। पांच लाख! सचमुच मुझे इसका गुमान भी न था कि मेरी आमदनी इतनी है?

कौएट०। इसका सबब यह है कि आपका नौकर आपको लूट लेता है॥

मेजर०। बेशक यही बात होगी—(गम्भीरता के साथ) मैं उसे जरूर निकाल दूंगा॥

कौएट ने फिर चीठी पढ़ना शुरू किया—"और जिन को केवल एक ही दुःख है और वह यह कि उनके एक प्यारे लड़के का बहुत दिनों से पता नहीं है॥"

मेजर०। जी हां, प्यारा लड़का, बहुत दिनों से...

कौएट०। (पढ़ता हुआ) जिसको पांच बरस की ही उमर में किसी ने चुरा लिया॥

मेजर०। जी हां, चुरा लिया, पांच बरस....

कौएट०। आह! कैसे दुःख की बात है—(पढ़ता हुआ) परन्तु मैंने उन्हें विश्वास दिलाया है कि आप उस बिछुड़े हुए लड़के का पता लगा सकते हैं जिनको वे पन्द्रह बरसों से खोज रहे हैं॥

मेजर ने कौएट की तरफ चिन्ता की दृष्टि से देखा। कौएट ने कहा, "निःसन्देह मैं ऐसा कर सकता हूं॥"

मेजर ने सन्तोष की सांस ली और तब कहा, "तो यह चीठी अन्त तक ठीक है॥"

काउएट०। अवश्य—क्या आपको कुछ सन्देह था?

मेजर०। नहीं भला पादड़ी बसूनी की तरह शान्त परोपकारी और महात्मा आदमी पर भी क्या सन्देह किया जा सकता है? परन्तु अभी आपने पूरी चीठी नहीं पढ़ी!!

काउएट०। हां ठीक है नीचे कुछ और भी लिखा है (पढ़ते हुए) मेजर केवेलकन्टी को यहां से रुपया वगैरह ले जाने के तरद्दुद से बचाने के खयाल से और सफर खर्च के लिये मैं उन्हें दो हजार की एक हुण्डी देता हूं और वे अड़तालीस हजार रुपये भी जो मैं अभी तक आपसे पाने वाला हूं—आप उन्हें ही दे दें॥

मालूम होता है कि मेजर को इस आखिरी बात का ही सबसे ज्यादा तरद्दुद था क्योंकि वह गौर से काउएट

के इशारे से वैपटिस्टिन ने थाली मेजर के पास ही रख दी जो बड़े स्वाद के साथ शराब में बिस्कुट डुबा डुबा कर खाने लगा॥

कौएट०। तो आप "लुक्का *" के रहने वाले हैं॥

मेजर०। जी हां !!

कौएट०। आपको सभी तरह का सुख था पर एक उस खोए हुए लड़के की बदौलत वह सब सुख मिट्टी हो रहा था॥

मेजर०। जी हां बेशक--सब सुख मट्टी होगया था॥ (आस्मान की तरफ आंख उठा मेजर ने एक लम्बी सांस ली)

कौएट०। अच्छा तो मैं जानना चाहता हूं कि यह खोया हुआ लड़का कौन था क्योंकि मैंने तो सुना है कि आपने अभी तक शादी नही की !!

मेजर०। जी हां लोगों में यही बात मशहूर थी और मैं........

कौएट०। ठीक है, और आप भी यही मशहूर करते रहे। मैं समझता हूं शायद जवानी में कोई ऐसी बात हो गई थी जिसे आप दुनिया से छिपाया चाहते थे।

मेजर के चेहरे पर काउएट की पहली बात ने जो घबराहट छाई थी उसे इस बात ने दूर कर दिया परंतु उसने थोड़ी देर के लिये अपना सिर झुका लिया जो कि या तो अपने चेहरे का भाव ठीक करने के लिये या

* मध्य इटली का एक प्रान्त और उसकी राजधानी।

या अपनी कल्पना शक्ति को सहायता पहुंचाने के लिये हो। फिर भी वह नीचेही से कौण्ट के ऊपर गहरी निगाहें डाल रहा था जिसके चेहरे से स्वाभाविक मुस्कुराहट के साथ उत्सुकता टपक रही थी॥

मेजर०। जी हां मैं इस बात को दुनिया की निगाहों से छिपाया चाहता था॥

कौण्ट०। अवश्यही यह अपने कारण नहीं क्योंकि आदमी को इन सब बातों की परवाह नहीं रहती॥

मेजर०।(मुस्कुराहट के साथ सिर हिलाकर) बेशक यह बात मेरे कारण नहीं थी॥

कौण्ट०।-बल्कि उस बेचारी मां के लिये थी?

मेजर०। जी हां, जी हां, बेचारी मां के लिये-उस लड़के की बेचारी मां के लिये—(मेजर ने अफसोस से सिर हिलाया और एक तीसरा बिस्कुट उठाया)॥

काउण्ट०। आप और शराब लीजिये—मैं देखता हूं कि इस जिक्र ने आप पर बहुत गहरा असर किया है॥

काउण्ट ने एक गिलास शराब का भरा। मेजर "बेचारी मां...." अफसोस के साथ कहता हुआ वह गिलास उठाकर पी गया मगर इसके साथही वह यह भी देखा चाहता था कि क्या उसकी इच्छा शक्ति इतनी प्रबल नहीं है कि आंख की नसों पर प्रभाव डाल कर दो बूंद आंसू गिरा सके!!

कौण्ट०। वह इटाली के एक प्रसिद्ध घराने की थी?

मेजर०। जी हां—फीसोल घराने की॥

कौरट०। उनका नाम..... .....

मेजर०। क्या आप नाम भी जानना चाहते हैं ?

कौ०। नही इसकी कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि मैं पहिले ही से उनका नाम जानता हूं॥

मेजर०। (स्वस्थ होकर) ओह कौरट महोदय सभी बातें जानते हैं !!

कौरट०। उनका नाम 'ओलिवा कार्सिनारी' था !

मेजर०। ओलिवा कार्सिनारी !!

कौरट०। वे मारशोनेस थीं ?

मेजर०। जी, मारशोनेस *॥

कौरटेस०। और आपने उनके घराने के विरोध करने पर भी अन्त मे उनके साथ बिवाह करही लिया॥

मेजर०। जी हां॥

कौरट०। तो आप अवश्यही वे सब कागजात साथ लाए होंगे ?

मेजर०। कागजात ! कैसे ?

कौरट०। आपकी ओलिवा कार्सिनारी के साथ शादी होने का सर्टिफिकेट और आपके लड़के के पैदा होने का रजिस्टर !

मेजर०। मेरे लड़के के पैदा होने का रजिस्टर ?

कौरट०। जी हां, ऐंड्रिया केवेलकन्टी की पैदाइश का रजिस्टर ! आपके लड़के का नाम ऐंड्रिया केवेल-

* किसी मारक्विस की स्त्री या विधवा अथवा वह औरत जिसे अपने घराने से मारक्विस की बराबरी की रुतबा हो।

फन्टी ही था तो ?

मेजर० । जी हां, मैं ऐसा ही समझता हूं ॥

कौएट० । 'ऐसाही समझता हूं' क्या ?

मेजर० । बात यह है कि इस घटना को इतने दिन हो गये कि मैं ठीक ठीक नही कह सकता !!

कौएट० । ठीक है ठीक है ? अच्छा तो आप वे सब कागज़ात अपने साथ लाए हैं ॥

मेजर० । नहीं कौएट महाशय, मैंने उनकी कोई ज़रूरत नहीं समझी इसी से उन्हें अपने साथ लाया भी नही ॥

कौएट० । यह तो बड़े अफ़सोस की बात है ॥

मेजर० । क्या वे इतने ज़रूरी थे ?

कौएट० । उनके बिना किसी तरह काम ही नहीं चल सकता !!

मेजर० । (घबड़ाहट के साथ सिर पर हाथ फेर कर) काम ही नही चल सकता !!

कौएट० । बेशक ! अगर किसी ने यह सन्देह किया कि आपकी शादी ओलिवा के साथ हुई ही नहीं—या एन्ड्रिया आपका लड़का ही नही है तो ?

मेजर० । बेशक यह सन्देह लोग कर सकते हैं ॥

कौएट० । और ऐसा होने से आपके लड़के को बड़े तरद्दुद में पड़ना होगा ॥

मेजर० । हां उसके स्वार्थ की हानि होगी ॥

कौएट० । इसके कारण सम्भव है कि उसका ब्याह

ही न हो सके ॥

मेजर० । आ ! हाँ !!

कौएट० । कारण यह है कि फ्रान्स में इन सब बातों का बड़ा खयाल रक्खा जाता है । इटाली की तरह यहां किसी पादड़ी के पास चले जावें और सिर्फ यह कह देने से कि "हम दोनों एक दूसरे को चाहते हैं । आप हमारा व्याह कर दें ।" काम नहीं चल सकता । यहां शादी एक कानूनी कारवाई मानी गई है और शादी के पहिले सब तरह के कागज पत्र पेश करना जरूरी है जो आपकी पैदाइश वगैरह साबित कर सके ॥

मेजर० । यह तो बड़े दुर्भाग्य की बात है, क्योंकि वे कागज तो मेरे पास नहीं हैं ?

कौएट० । भाग्यवश वे कागज मेरे पास हैं ॥

मेजर० । आपके पास !!

कौएट० । हां !

मेजर० । वे कागज आपके पास मौजूद हैं ?

कौएट० । जी हां ॥

मेजर के दिल में यह खयाल उठ खड़ा हुआ था कि शायद उसकी इसकी भूल के सबब से उन अड़तालीस हजार की प्राप्ति में भी कुछ बाधा आ जाय और इतना लम्बा सफर व्यर्थ हो परन्तु कौंउएट की बात ने उसे सन्तोष दिया और उसने स्वस्थ हो कहा, "यह बहुत ही अच्छा हुआ । नहीं मैं तो उन कागजों को बिल्कुल ही भूल गया था ॥"

काउएट०। बेशक बेशक, आदमी कितनी चीजों का खयाल रक्खे कुछ न कुछ भूल हो ही जाती है, मगर भाग्यवश पादड़ी बसूनी को यह ध्यान आ गया और उसने उन कागजों का भी बन्दोवस्त कर लिया॥

मेजर०। पादड़ी बड़ाही बुद्धिमान आदमी है॥

काउएट०। बेशक वह होशियार है॥

मेजर०। अवश्य, अच्छा तो उसने वे कागज आपके पास भेज दिये?

काउएट०। हां यह देखिये॥

मेजर के चेहरे से काउएट के दिखाये कागज देख प्रसन्नता टपकने लगी, काउएट ने एक कागज उठा के कहा, "यह देखिये, यह आपकी और ओलिवा कार्सिनारी की शादी का सार्टिफ़िकेट है। शादी मौएटकर्टिनी के गिरजे में हुई थी। यह वहां के पादड़ी का दस्तखत है॥"

मेजर०। (आश्चर्य से) बेशक है, बेशक है!!

काउएट०। और यह देखिये एड्रिया क्रेवेलकन्टी की पैदाइश का रजिस्टर और बपतिस्मा का सर्टिफिकेट है जो "सेरावेजा" में हुआ था, वहां के पादड़ी का इस पर दस्तखत है॥

मेजर०। ठीक बिल्कुल ठीक!!

काउएट०। इन कागजों को आप रखिये, इन्हें अपने लड़के को दे दीजिये जो अवश्य इन कागजों को हिफाजत से रक्खेगे॥

मेजर०। बेशक बेशक ये कीमती कागज हैं अगर ये खो गये तो बेशक इनकी नकल मिलने में बहुत तरद्दुद होगा॥

काउण्ट०। बेशक॥

मेजर०। इनका मिलना करीब करीब असम्भव के होगा॥

काउण्ट०। मुझे प्रसन्नता है कि आप इन कागजों की कीमत समझते हैं॥

मेजर०। बेशक बेशक मैं इन्हें अमूल्य समझता हूं॥

काउण्ट०। अच्छा, अब उस नौजवान की मां के विषय में........

मेजर०। (चिन्ता के साथ) मां के बारे में......!

काउण्ट०। ओलिवा कार्सिनारी के........

मेजर०। जी जी....क्या उनकी भी जरूरत पड़ेगी?

मेजर के आगे मुश्किल पर मुश्किल उठती ही आती थी!!

काउण्ट०। नहीं नहीं—और फिर वह तो........!!

मेजर०। जी हां वह तो ..!

काउण्ट०। मर न गई?

मेजर०। जी हां, अफसोस! अफसोस!!

काउण्ट०। मुझे यह बात मालूम थी, उन्हें मरे आज दस बरस हो गये॥

"और मैं अभी तक उनका गम मना रहा हूं।" मेजर ने अपने जेब से रूमाल निकाला और पारी पारी

से पहिले दाईं तब बाईं आंख पोंछी ॥

काउण्ट० । (दिलासे के साथ) क्या कीजियेगा! हम लोग सभी एक न एक दिन मरेंगे । किसका कहां तक अफसोस किया जाय! परन्तु मि० केवेलकन्टी! मैं समझता हूं कि आपका फ्रान्स में लोगों से यह कहना कि आपके लड़के को लोग चुरा ले गये थे मुनासिब न होगा क्योंकि ऐसी बातों पर यहां वाले कम विश्वास करते हैं । आपने अपने लड़के को विद्या प्राप्त करने के लिये बाहर भेज दिया था और अब उसकी शिक्षा समाप्त कराने लिये उसे पेरिस ला रहे हैं। यही कारण है कि आप "रगियो" के बाहर निकले हैं जहां आप अपनी स्त्री के मरने के बाद से अब तक बराबर रहते आये हैं । यह काफी है ॥

मेजर० । बहुत अच्छा ॥

काउ०। अगर कोई सवाल करे कि आपका लड़का आपसे अलग क्यों रहा? तो कोई मास्टर आपके दुश्मनों के भड़काने में आकर ...

मेजर० । कासिनारी घराने वाले!

कौण्ट० । हां, कासिनारी के बहकाने में पड़ कर वह मास्टर आपके लड़के को कहीं भगा ले गया था जिस में आपका घराना आगे न चल सके ॥

मेजर० । बेशक बेशक क्योंकि वह मेरा इकलौता लड़का था ॥

काउण्ट० । ठीक है, अच्छा तो मैं समझता हूं कि

अब ये सब बातें जो बहुत दिनों के बाद आज स्मरण में आई हैं जल्दी भूली न जायँगी!!

मेजर०। भला यह कभी भूली जा सकती हैं!!

काउएट०। साथ ही आप यह भी समझ गये होंगे कि मैं आपको कोई खुशखबरी भी सुनाया चाहता हूं॥

मेजर०। बहुत ही अच्छी खुशखबरी?

काउएट०। मैं देखता हूं कि पिता के हृदय की तरह पिता की आंखें भी भुलाई नहीं जा सकतीं, आप शायद वह भेद समझ गये या शायद किसी ने आपको खबर दे दी हो कि वह यहां आ गया है॥

मेजर०। कौन यहां आ गया?

काउएट०। आपका लड़का! एन्ड्रिया!!

मेजर०। ओह मैंने अन्दाज से समझ लिया? तो वह यहां मौजूद है?

काउएट०। हां, और मैं जाकर उसे यहां भेजता हूं॥

मेजर०। आप उसे यहां लावेंगे!! ओह मैं देखता हूं कि आप मेरे लिये बड़ा कष्ट उठा रहे हैं और खुद अपने हाथों से मेरे लड़के को मेरे अर्पण किया चाहते हैं?

काउएट०। नहीं नहीं मैं बाप और बेटे के मिलन के बीच में नहीं आया चाहता! पर कोई घबराहट की बात नहीं है यदि प्रकृति और खून ने जोश नहीं दिलाया तो भी आप उसे पहिचानने में भूल न कर सकेंगे! वह इस दर्वाजे से आवेगा—एक नौजवान खूबसूरत आदमी है, मगर आप खुद ही देख लेंगे॥

मेजर०। जी हां! बहुत अच्छा!! (रुककर) हां ठीक याद आया मुझे एबी वसूनी ने सिर्फ दो ही हजार रुपया देकर यहां भेज दिया था जो सफर में खर्च होगया..

काउण्ट०। और अब आपको रुपयों की जरूरत है अच्छा यह लीजिये, आपके हिसाब में से यह आठ हजार मैं आपको फिलहाल देता हूं॥

मेजर की आंखें चमकने लग गईं। उसने वह रकम अपने जेब में रखते हुए कहा, "क्या मैं आपको इसकी रसीद दे दूं?"

काउण्ट०। क्या जरूरत? मैं जब बाकी का चालीस हजार आपको दे दूं तो पूरी रकम की रसीद दे दीजियेगा ईमानदार आदमियों के बीच मे इस सब की कोई जरूरत नहीं॥

मेजर०। ठीक है ईमानदार आदमी......

काउण्ट०। अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं एक बात और कहूं॥

मेजर०। क्या? क्या?

काउण्ट०। आप इस किस्म की पोशाक पहिनना छोड़ दें। यद्यपि इटली में यह पोशाक चल सकती है मगर यहां यह जरा तुच्छ दृष्टि से देखी जाती है। मैं समझता हूं कि पैरिस के लिये फैशनेबुल कपड़े आप के सन्दूक में अवश्य होगे॥

मेजर०। सन्दूक? मेरे पास तो सिर्फ एक वेग है॥

काउण्ट०। हो सकता है, प्रायः सिपाहियों को

ज़्यादा असबाब लेकर सफर करना अच्छी नहीं लगता॥

मेजर०। जी हां जी हां इसी सबब से तो मैं......

काउएट०। मगर आप बुद्धिमान आदमी हैं इस लिये आपने अपना असबाब आगेही भेज दिया है और वह होटल "प्रिन्सेज" में पहुंच भी गया है जहां आप टिकेंगे॥

मेजर०। तो इस असबाब में......?

काउएट०। आपके ट्रंक वगैरह सभी कुछ हैं जिनमें आप यहां पहिनने के लायक उम्दी पौशाक, अपनी वर्दी और वे तमगे भी पाइयेगा जो अपनी बहादुरी से लड़ाई के मैदान में पाये हैं और जिन्हें आप मौके पर अवश्य लगाइयेगा क्योंकि यद्यपि यहां वाले तमगों की हँसी उड़ाते हैं फिर भी उनका पहिनना पसन्द करते हैं॥

मेजर०। ठीक है ठीक है॥

मेजर खुशी के समुद्र में उतरा रहा था, काउएट की एक एक बात उसे प्रसन्न कर रही थी॥

काउएट०। अच्छा तो अब आप अपने खोए हुए "एन्ड्रिया" को पाने के लिये प्रस्तुत हो जायँ—

यह कहता हुआ काउएट उठ खड़ा हुआ और मेजर को सलाम कर एक पर्दा हटा भीतर चला गया॥

चौथा बयान।

एन्ड्रिया फेवेलकन्टी।

काउएट ने बगल वाले कमरे में पहुंच कर जिसे बेपटिस्टिन ने "नीला कमरा" कहा था एक नौजवान को बैठा पाया जो थोड़ी ही देर पहिले एक किराये की गाडी से वहां पहुंचा था। इस नौजवान के पहिचानने में भी बेपटिस्टिन को तरद्दुद नहीं करना पडा था क्योंकि काउएट ने उसके सुन्दर चेहरे, छोटी छोटी लाल दाढी, सुन्दर काली आंखों और लम्बे कद का पूरा हाल उससे कह दिया था। जब काउएट कमरे में आया उस समय वह एक कोच पर अधलेटासा पडा था पर काउएट को देखते ही उठ खड़ा हुआ और बोला—"काउएट आफ मौएट क्रीटो आप ही हैं?"

काउएट ने कहा, "जी हां और आप शायद वाई-काउएट एन्ड्रिया केवेलकन्टी हैं?"

वाई-काउएट ने सलाम करके कहा, "जी हां॥"

का०। आपके पास मेरे नाम की कोई चीठी है?

वाई०। जी हां, मगर मैंने उसका जिक्र इस लिये नहीं किया क्योंकि मुझे चीठी लिखने वाले का नाम कुछ विचित्र मालूम हुआ॥

काउएट०। सिंदबाद जहाजी?

एन्ड्रिया०। जी हा, और मैंने अभी तक सिवाय अलिफलैला के और कही किसी सिंदबाद को नहीं

देखा॥

काउण्ट०। हां यह उसी वंश का एक रईस अङ्गरेज है, उसका नाम लार्ड विलमोर है॥

एन्डि०। हां तो ठीक है। वह शायद वही अङ्गरेज है जिसे मैंने.. देखा... .

काउण्ट०। अच्छा तो आप कृपा करके अपना कुछ हाल कहिये॥

एन्डू०। (बड़ी फुर्ती से जिससे मालूम होता था कि उसकी स्मरण शक्ति बहुत तेज है) हां हां सुनिये—मैं एन्डूया केवेलकन्टी—मेजर बारटोलोमियो केवेलकन्टी का लड़का हूं, वही मशहूर केवेलकन्टी घराना जिसकी आजकल भी आमदनी पांच लाख रुपये सालकी है। मैंने इस उम्र में ही बहुत कुछ दुःख उठाये हैं, पांच बरस की उम्र में मेरे मास्टर ने मेरे साथ दगा की और मुझे चुरा कर दुश्मनों के सपुर्द कर दिया, पन्द्रह वर्ष तक मैं अपने पिता की सूरत देख न सका मगर जब से मैंने होश सम्हाला तभी से अपने पिता की खोज में लगा हुआ हूं। परन्तु अभी तक उनका कुछ पता न पाया, आखिरकार मुझे आपके उन दोस्त महाशय की चीठी मिली जिसमें मुझे पैरिस आने को और आपसे अपने पिता का हाल दरियाफ़ करने को कहा गया था॥

मौण्ट क्रीटो नौजवान को उदासी के साथ मिले सन्तोष की निगाहों से देख रहा था। एन्डूया की बात सुन उसने कहा, "आपने जो कुछ कहा वह बड़ा विचित्र

हाल है और आपने बहुत अच्छा किया जो मेरे दोस्त की इच्छानुसार किया, क्योंकि इस समय आपके पिता सचमुच यहां मौजूद हैं और आपको खोज रहे हैं॥"

काउण्ट ने देखा कि इन शब्दों को सुनतेही एन्ड्रिया जो अभी तक बडी गम्भीरता के साथ बातें कर रहा था, एक दम चौंक पडा—"मेरा बाप! क्या वह यहां है?"

काउण्ट०। बेशक, आपके पिता मेजर बारटोलोमियो केवेलकन्टी यहीं हैं॥

भय के वे चिन्ह जो एन्ड्रिया के चेहरे पर दौड गये थे काउण्ट की यह बात सुनते ही दूर होगये और उसने स्वाभाविकता के साथ कहा, "हां हां ठीक है— तो क्या वे यहां हैं?"

काउण्ट०। जी हां बल्कि मैं अभी अभी उनसे बात करता हुआ आ रहा हूं। उन्होंने अपने दुःख, रञ्ज और अफसोस का जो हाल बयान किया उसे सुन मुझे बडा ही खेद हुआ। वे बहुत दिनों से व्यर्थ की खोज में लगे हुए थे पर आपका कहीं पता न पा सके थे। आखिरकार उन्हें एक चीठी मिली जिसमें लिखा था कि "अगर आप बहुत सा रुपया दें तो हमलोग आपके खोये हुए लड़के का पता बता सकते हैं।" आपके पिता ने एक सायत की भी देर न की और चीठी के मुताबिक रुपया और इटली में आने के लिये एक परवाना सरहद पर भेजवा दिया। आप शायद फ्रान्स के दक्षिणी किसी प्रान्त में थे?

एन्ड्रूया०। (हिचकिचाहट के साथ) जी हां॥

का०। और एक गाड़ी आपको 'नीस' में मिलने को थी!

एन्ड्रूया०। जी हां, मैं उसी पर नीस से जेनेवा, टूरिन, ब्यूवोसिन होता हुआ पैरिस आया॥

काउएट०। तब तो आपने अपने पिता को अवश्य देखा होगा क्योंकि वे भी ठीक उसी रास्ते से आये हैं॥

एन्डिया०। कदाचित् मेरे पिता राह में मुझे दिखे हों पर अवश्य ही मेरी सूरत पहिले से बहुत कुछ बदल गई है इससे शायद वे पहिचान न सके हों!!

काउएट०। ओह! क्या अपना खून भी कहीं छिप सकता है?

एन्ड्रूया०। हां ठीक है—मेरा उधर ध्यान नहीं गया॥

का०। खैर! अब आपके पिता को एकही बात का तरद्दुद हो रहा है और वह यह कि इतने दिन आपने न जाने किस तरह और किसकी सोहबत में बिताये। आपके स्वभाव में तो परिवर्तन नहीं आ गया, आपकी चाल चलन में कोई खराबी तो नहीं आ गई, अर्थात् क्या अब भी आप उस रुतबे और पद के लायक हैं जो आपके पिता की बदौलत आपको मिलने वाला है?

एन्ड्रूया०। (कुछ डरकर) मैं समझता हूं कि मेरे बारे मे कोई गलत खबर . .

काउएट०। मैंने अपने दोस्त विलमोर की जुबानी

पहिले पहिल आपका जिक्र सुना था। जहां तक मैं समझता हूं उसने आपको किसी बेमौके पर देखा था पर कैसे और कब यह मालूम नही क्योंकि मैंने पूछा नहीं। विलमोर ने मुझसे कहा कि उस नौजवान अर्थात् आपके बारे में उसे कुछ कौतूहल सा हो गया है और वह उसे अपने पहिले मर्तबे तक पहुचाया चाहता है। अस्तु वह आपके पिता की खोज में लगा और उनका पता लगा भी लिया क्योंकि इस समय वे यहां हैं। इसके बाद उसने आपके आने की खबर मुझे दी और आपके भविष्य के बारे में और भी कुछ बताया—लार्ड विलमोर विचित्र आदमी है और साथ ही अमीर इतना है कि अपनी सब अद्भुत इच्छाएं पूरी कर सकता है–साथ ही मैंने उसके कहे मुताबिक काम करने का वादा भी किया है—अस्तु आप नाराज न होइयेगा अगर मैं आपके वली की हैसियत से पूछूं कि आपके ऊपर पडने वाली मुसीबतों ने जिनपर आपका कोई चारा न था आपको उस दुनिया के लायक रक्खा है या नही जिसमें आप की दौलत और आपका नाम आपको शीघ्र ही मशहूर कर देने वाला है?

एन्ड्रि०। काउंएट महाशय! आप विश्वास रखिये कि मैं सब तरह से उस पद और रुतबे के योग्य हूं क्योंकि जिन्होंने मुझे रुपये की लालच से चुराया था वे साथ ही यह भी खयाल रखते थे कि मेरी उचित शिक्षा और दीक्षा में किसी तरह की कमी पड़ने न पावे। उन्होंने

मुझे कुछ कुछ उन पुराने ज़माने के गुलामों की तरह रक्खा था जिनके सौदागर उन्हें इसलिये विज्ञान, व्याकरण, वैद्यगी या वेदान्त की शिक्षा देते थे जिसमे उनकी कीमत ज्यादा वसूल हो–(मौएट क्रीटो यह सुन मुस्कुरा उठा) फिर भी यदि मेरे में कोई ऐसी कमी या बात दिखाई पड़े जो उस रुतबे के लायक नहीं है, प्रचलित फैशन के खिलाफ है, या वर्तमान शिष्टाचार के विरुद्ध है तो वे उन मुसीबतों का खयाल करके जो लड़कपने ही से मुझपर पड़ने लगीं माफ करने के लायक हैं॥

काउएट०। खैर वाइ-काउएट! अब आप अपने मालिक हैं और जो चाहे कर सकते हैं मगर फिर भी मैं आपको यह सलाह दूंगा कि आप अपने जीवन की उन पिछली घटनाओं का जिक्र किसी से न करें क्योंकि यदि यहां वालों को आपका असली और पिछला हाल मालूम हो जायगा तो वे आप पर कुछ सन्देह की निगाह डालने लगेंगे। इस किस्म की घटनाएं और कहानियें किताबों में ही अच्छी लगती हैं उन आदमियों के मुंह में नहीं जो उनमें पड़ चुका है चाहे वह आपकी तरह विभूषित ही क्यों न हो। अस्तु अगर आप यह सब हाल दूसरों पर प्रगट कर देंगे तो वे आपको एक खोया हुआ लड़का नहीं समझेंगे बल्कि कोई उचक्का समझेंगे जो उनको धोखा देने के लिये आया है॥

नौजवान का चेहरा काउएट की बातें सुन कुछ पीला पड़ता जाता था, फिर भी उसने अपने को सम्हाल कर

कहा, "बेशक बेशक, काउण्ट महोदय! आपका कहना ठीक है! यह बहुत स्वभाविक है!!"

का०। आपको एक सीधा और साफ रास्ता अपने लिये चुन लेना चाहिये—अच्छे दोस्त बनाने चाहियें, अच्छी आदतें डालनी चाहिये और लोगों के दिलों पर अच्छा प्रभाव डालने की चेष्टा करनी चाहिये। मैं आपकी इस बारे में मदद करता और आपको अच्छी राय देता पर मुझे खुद अपने दोस्तों पर भरोसा नहीं है और इसलिये मैं कोई ऐसा काम नहीं किया चाहता जिसमें जमाना मेरे ऊपर उँगली उठा सके॥

एन्ड्रिया०। मगर फिर भी अपने दोस्त लार्ड विलमोर की खातिर से आपको मेरे साथ,

काउण्ट०। हां हां मैं आपकी मदद जरूर करूंगा मगर फिर भी विलमोर ने मुझसे यह बात छिपाई नहीं थी कि आपकी युवावस्था अशान्त थी। (एन्ड्रिया की सूरत देखकर) नहीं नहीं मैं आपसे कोई भेद की बात नहीं पूछा चाहता और न दूसरों ही पर जाहिर किया चाहता हूं—बल्कि यही सबब था कि आपके पिता भी 'लुक्का' से यहां बुला लिये गये—अब आप अपने पिता से मुलाकात कीजिये जो यद्यपि कुछ कड़े मिजाज के हैं पर फिर भी बहुत अच्छे आदमी हैं और आप उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न होइयेगा॥

एन्ड्रिया०। आपकी बात सुन मैं बहुत सन्तुष्ट हुआ क्योंकि बात यह है कि मेरा उनका साथ इतने दिन से

छूटा हुआ है कि एक तरह पर मैं उन्हें बिल्कुल ही भूल गया हूं॥

काउएट०। और फिर दुनिया की निगाह में दौलत सब ऐबों को छिपा लेती है॥

एन्ड्रिया०। तो क्या मेरे पिता वास्तव में बहुत अमीर हैं?

काउएट०। ओह वे करोडपति हैं, उनकी आमदनी पांच लाख रुपये साल की है॥

एन्ड्रिया०। (कुछ चिन्ता के साथ) तो मैं समझता हूं कि वे मुझे

काउएट०। हां हां वे आपको पचास हजार रुपया साल उस समय तक देते रहेगे जब तक आप पैरिस में रहेंगे॥

एन्ड्रिया०। ऐसी हालत में मैं हमेशा पैरिस ही में रहा करूंगा॥

काउएट०। आप घटनाक्रम नहीं बदल सकते— आदमी सोचता है ईश्वर करता है!!

एन्ड्रिया०। (लम्बी सांस लेकर) हां सो तो हई है मगर फिर भी जब तक मुझे पैरिस में रहने का मौका मिलेगा तब तक के लिये तो वह रकम मुझे बराबर मिला करेगी जो अभी आपने कही?

काउएट०। हां हां!!

एन्ड्रिया०। क्या मैं वह रकम अपने पिता से पाया करूंगा?

काउण्ट०। हां मगर लार्ड विलमोर उसके ज़ामिन हैं। उन्होंने आपके पिता की इच्छा से यहां की मशहूर और मातबिर कोठी 'इङ्गली' के साथ आपके नाम से खाता खोल दिया है और मिस्टर इङ्गली आपको हर महीने पांच हज़ार रुपया दे दिया करेंगे ॥

एन्ड्रिया०। ठीक है, अच्छा तो क्या मेरे पिता पैरिस में अभी कुछ दिनों तक रहा चाहते हैं ?

काउण्ट०। बस थोड़े ही दिन क्योंकि उनकी फौजी नौकरी उन्हें दो या तीन हफ्ते से ज्यादा की छुट्टी एक बार में नहीं देती ॥

एन्ड्रिया०। (इस बात से मन ही मन प्रसन्न होकर) आह मेरे प्यारे पिता !!

काउण्ट०। (मानों उसने इस बात का दूसरा ही अर्थ समझा) अब आप अपने पिता से मिलने को व्यग्र हो रहे हैं अस्तु मैं आपकी प्रसन्नता को रोका नहीं चाहता। आप इस बगल वाले कमरे में जाइये जहां आपके पिता आपकी राह देख रहे हैं ॥

एन्ड्रिया ने कौण्ट को सलाम किया और तब बगल वाले कमरे के अन्दर चला गया। उसके जाते ही काउण्ट दीवार के पास गया। वहां उसने एक खटका दबाया जो देखने में एक तस्वीर मालूम होती थी पर खटका दबने से एक बगल में घसक गई जिससे उस जगह एक छोटा छेद बन गया जिसकी राह उस दूसरे कमरे में जो कुछ हो रहा था देखा जा सकता था। काउण्ट इसी राह से

उधर का हाल देखने लगा॥

एन्ड्रिया ने ऊंची आवाज में कहा—"ओह मेरे पिता! क्या वास्तव मे तुम ही हो?"

मेजर ने यह सुन गम्भीरता से कहा, "प्यारे बच्चे! कैसे हो?"

एन्ड्रिया०। (दरवाजे की तरफ देखते हुए) इतने दिनों के बाद आपका दर्शन करने से मुझे कितनी खुशी हुई!! क्या आप मुझे गले से नहीं लगायेंगे?

मेजर०। क्यों नहीं बेटा! यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो क्यों नही!!

दोनों आदमी नाटक के पात्रों की तरह एक दूसरे से गले मिल गये अर्थात् हर एक ने अपना सिर दूसरे के कन्धे पर रख दिया॥

एन्ड्रिया०। अब हमलोग पुनः मिल गये!!

मेजर०। पुनः!!

एन्ड्रिया०। अब कभी अलग न होना पड़ेगा!!

मेजर०। नही बेटा उस बारे में तो मैं समझता हूं कि अब तुम फ्रान्स में रहने के ऐसे आदी होगये होगे कि इसी को अपने देश की तरह समझने लगे होगे॥

एन्ड्रिया०। अवश्य पैरिस छोड़ने में मुझे कष्ट तो होगा॥

मेजर०। और मैं लुक्का छोड़ नहीं सकता—मुझे शीघ्र ही इटली लौटना पड़ेगा॥

एन्ड्रिया०। मगर प्यारे पिता! इटली लौटने के

पहिले आप वे सब कागजात तो मुझे दे जायँगे जो मेरा कुल और कुटुम्ब साबित कर सकें।

मेजर०। बेशक बेशक उसी लिये तो मैं यहां आया ही हूं। तुमको खोजने में मुझे इतना कष्ट उठाना पड़ा है कि अब मैं फिर से वह खोज शुरू करने लायक नहीं रहा अब तुम्हें वे कागज दे मैं चला जाऊंगा।

एन्डिया०। वे कागजात कहां हैं?

मेजर०। यह लो॥

एन्डिया ने—जैसा कि होना वास्तविक था—बड़ी व्यग्रता के साथ उन कागजों को खोला और पढ़ा। उसके ढङ्ग से मालूम होता था कि उसे उन कागजो में कोई अद्भुत बात दिखाई दे रही है। जब वह दोनों कागज पढ़ चुका तो उसने एक विचित्र मुस्कुराहट के साथ मेजर की तरफ देखा, और तब साफ टस्कनी भाषा में कहा, "तो क्या अब इटली में जेलखाने नहीं हैं?"

मेजर ने तन कर कहा, "क्या! क्या कहते हो! इस सवाल से तुम्हारा क्या मतलब है?"

एन्डिया०। ऐसे कागजात जब इतनी लापरवाही के साथ बनाये जा सकते हैं तो और क्या समझा जाय! मेरे प्यारे पिता! कानून में इससे आधे के लिये भी वे तुम्हें पाँच बरस के लिये लाद देंगे!!

मेजर०। (शान बनाये रखने के ढङ्ग से) तुम बक क्या रहे हो?

एन्डिया०। (मेजर का हाथ दोस्ताने के तौर पर

उधर का हाल देखने लगा ॥

एन्ड्रिया ने ऊंची आवाज में कहा—"ओह मेरे पिता ! क्या वास्तव में तुम ही हो ।"

मेजर ने यह सुन गम्भीरता से कहा, "प्यारे बच्चे ! कैसे हो ।"

एन्ड्रिया० । (दरवाजे की तरफ देखते हुए) इतने दिनों के बाद आपका दर्शन करने से मुझे कितनी खुशी हुई !! क्या आप मुझे गले से नहीं लगायेंगे ।

मेजर० । क्यों नहीं बेटा ! यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो क्यों नही !!

दोनों आदमी नाटक के पात्रों की तरह एक दूसरे से गले मिल गये अर्थात् हर एक ने अपना सिर दूसरे के कन्धे पर रख दिया ॥

एन्ड्रिया० । अब हमलोग पुनः मिल गये !!

मेजर० । पुनः !!

एन्ड्रिया० । अब कभी अलग न होना पड़ेगा !!

मेजर० । नही बेटा उस बारे में तो मैं समझता हूं कि अब तुम फ्रान्स में रहने के ऐसे आदी होगये होगे कि इसी को अपने देश की तरह समझने लगे होगे ॥

एन्ड्रिया० । अवश्य पैरिस छोड़ने में मुझे कष्ट तो होगा ॥

मेजर० । और मैं लुक्का छोड़ नहीं सकता—मुझे शीघ्र ही इटली लौटना पड़ेगा ॥

एन्ड्रिया० । मगर प्यारे पिता ! इटली लौटने के

पहिले आप वे सब कागजात तो मुझे दे जायँगे जो मेरा कुल और कुटुम्ब साबित कर सकें ।

मेजर० । बेशक बेशक उसी लिये तो मैं यहां आया ही हूं । तुमको खोजने में मुझे इतना कष्ट उठाना पड़ा है कि अब मैं फिर से वह खोज शुरू करने लायक नहीं रहा अब तुम्हें वे कागज दे मैं चला जाऊंगा ।

एन्ड्रिया० । वे कागजात कहां हैं ?

मेजर० । यह लो ॥

एन्ड्रिया ने—जैसा कि होना वास्तविक था—बड़ी व्यग्रता के साथ उन कागजों को खोला और पढ़ा । उसके ढङ्ग से मालूम होता था कि उसे उन कागजों में कोई अद्भुत बात दिखाई दे रही है । जब वह दोनों कागज पढ़ चुका तो उसने एक विचित्र मुस्कुराहट के साथ मेजर की तरफ देखा और तब साफ टस्कनी भाषा में कहा, "तो क्या अब इटली में जेलखाने नहीं हैं ?"

मेजर ने तन कर कहा, "क्या ! क्या कहते हो ! इस सवाल से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

एन्ड्रिया० । ऐसे कागजात जब इतनी लापरवाही के साथ बनाये जा सकते हैं तो और क्या समझा जाय ! मेरे प्यारे पिता ! फ्रान्स में इससे आधे के लिये भी वे तुम्हें पाँच बरस के लिये लाद देंगे !!

मेजर० । (शान बनाये रखने के ढङ्ग से) तुम बक क्या रहे हो ?

एन्ड्रिया० । (मेजर का हाथ दोस्ताने के तौर पर

एन्ड्रिया ने चीठी पढ़ी और कहा, "मैंने भी ऐसी ही चीठी पाई थी॥

मेजर०। किससे? पादड़ी बसूनी से?

एन्ड्रिया०। नहीं, एक अंगरेज लार्ड विलमोर से जिसने अपना नाम "सिन्दबाद जहाजी" रक्खा है॥

मेजर०। और जिसके बारे में तुम उसी तरह कुछ भी नहीं जानते जिस तरह मैं एबी बसूनी के?

एन्ड्रिया०। नहीं, इस जगह मैं तुमसे आगे हूं। मैं एक बार उसे देख चुका हूं॥

मेजर०। कहां?

एन्ड्रिया०। सो मैं नहीं बताया चाहता॥

मेजर०। अच्छा उस चीठी में लिखा क्या था?

एन्ड्रिया०। लो देखो॥

"तुम बहुत गरीब हो, दुखी हो, तुम्हारा भविष्य बिल्कुल अन्धकारमय है—क्या तुम दुनिया में कुछ नाम पैदा किया चाहते हो? क्या दुनिया में अमीर बना चाहते हो (वाह! मानो इन सवालों का भी दो जवाब हो सकता है!!) जेनिस के पास एक गाड़ी खड़ी मिलेगी उसपर सवार हो और टूरिन, चेम्ब्रे, व्यूवोसिन होते हुए पैरिस में पहुंचो। वहां नं० ३०, चेम्प्स एलीसीज में काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो के पास २६ मई को शाम सात बजे जाओ और अपने पिता को उनसे मांगो। तुम मारक्विस केवेलकन्टी और ओलिवा कार्सिनारी के लड़के हो। तुम्हारे पिता तुम्हें जरूरी कागजात देंगे जिससे तुम अपने असली नाम से दुनिया में मशहूर हो सको। तुम्हें पचास हजार रुपया साल मिला करेगा जिसमें तुम अपने रुतबे के माफिक रह सको। मैं इस चीठी के साथ पाँच हजार की एक हुण्डी भेजता हूं और काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो के नाम की भी एक चीठी

देता हूं जिसमें वे तुम्हें पहिचान सकें ॥"

—सिन्दबाद जहाजी ।

मेजर ने चीठी पढ़ कर कहा, "हूं ! ठीक है !! तो तुम काउएट से मिल चुके हो। ?"

एण्ड्रिया०। हां मैं अभी अभी उसीके पास से आ रहा हूं ॥

मेजर०। मगर आखिर यह भेद क्या है इसे भी कुछ समझे ?

एण्ड्रिया०। कुछ नहीं, बिल्कुल नहीं ॥

मेजर०। जरूर कोई न कोई इस मामले में उल्लू बना है ॥

एण्ड्रि०। जरूर ! मगर हम दोनों में से कोई नहीं। अस्तु हमलोगों को अपना अपना पार्ट शुरू से आखिर तक करते जाना चाहिये फिर जो होगा देखा जायगा ॥

मेजर०। बेशक मेरे प्यारे बेटे !!

एण्ड्रिया०। जरूर प्यारे पिता !!

मौण्टक्रीटो ने यह मौका उन दोनों के पास लौटने को मुनासिब समझा। उसके आने की आहट पाते ही दोनों बाप बेटे एक दूसरे के गले लग गये ॥

काउएट०। मारक्विस ! मैं देखता हूं कि आपने उस प्यारे लड़के को पा आपकी आशा भङ्ग नहीं हुई है जिसे भाग्यवश बहुत दिनों के बाद आपने पाया है ॥

मेजर०। ओह मेरी प्रसन्नता का तो कोई ठिकाना नहीं है ॥

काउण्ट० । (एन्ड्रिया से) और आपका दिल क्या कह रहा है ?

एन्ड्रि० । मैं अपनी खुशी को सम्हाल नहीं सकता !!

मेजर० । केवल एक यही बात मुझे दुःख दे रही है कि मुझे पैरिस बहुत जल्द छोड़ देना पड़ेगा !!

काउण्ट० । फिर भी मारक्विस ! मैं समझता हूं कि आप मेरे कुछ दोस्तों से मुलाकात करके तब जाइयेगा ॥

मेजर० । जरूर जरूर !!

का० । (एन्ड्रिया से) अच्छा वाई-काउण्ट ! अब अपने तरद्दुद का हाल अपने पिता से कह दीजिये ॥

एन्ड्रिया० । कैसा ?

काउण्ट० । यही द्रव्याभाव का ॥

एन्ड्रिया० । हां हां, ठीक ठीक; इस बात की तो मुझे बहुत तकलीफ है !!

काउण्ट० । मारक्विस ! आपने सुना ! आपके लड़के कहते हैं कि रुपये के बिना उन्हें बहुत तकलीफ है ॥

मेजर० । हां कहते हैं, तो ?

का० । तो आपको उन्हें कुछ रुपया देना चाहिये !!

मेजर० । मैं ! रुपया दूं !!

काउण्ट० । हां ! आप दीजिये (एन्ड्रिया की तरफ बढ़ के और नोटों का एक पुलिन्दा उसके हाथ में देके) आपके पिता आपको यह रुपया देते हैं ॥

एन्ड्रिया० । (खुश होकर) क्या मेरे पिता दे रहे हैं ?

काउण्ट० । हां हां, आपने अभी रुपये की तकलीफ

बताई है तो ?

एन्ड्रिया०। तो क्या मैं इसे अपनी आमदनी में से एक हिस्सा समझूं ?

काउण्ट०। नहीं नहीं यह तो अलग है, यह आप को फुटकर खर्च के लिये दिया जा रहा है ॥

एन्ड्रिया०। आह मेरे प्यारे पिता !!

काउण्ट०। चुप चुप! वे यह नहीं चाहते कि तुम जान जाओ कि यह रुपया वे खुद दे रहे हैं ॥

एन्ड्रिया०। (बण्डल जेब में रखते हुए) ठीक है ठीक है मैं समझता हूं ॥

काउण्ट०। अच्छा महाशयो अब मैं आप दोनों को सलाम करता हूं ॥

दोनों०। तो अब कब हमलोग आपके दर्शन कर सकेंगे ?

काउण्ट०। शनिवार को—शनिवार को मैं अपने आटविल वाले मकान में कुछ दोस्तों की दावत करने वाला हूं जिनमें आपके महाजन मि० डङ्गली भी होंगे। मैं उनसे आप लोगों का परिचय करा दूंगा क्योंकि आप लोगों को अपना अपना रुपया उन्हीं की मारफत मिलेगा। मैं उम्मीद करता हूं मारक्विस कि आप अपनी पूरी फौजी पोशाक वर्दी तमगे आदि से लैस रहेंगे और आप वाई-काउण्ट ! आप भी सूफियानी मगर सादी पोशाक में रहेंगे क्योंकि आप एक अमीर आदमी हैं ! बेपटिस्टिन आपको पैरिस के नामी दर्जियों का पता

बता देगा और अगर आपको कोई फिटन या गाड़ी घोड़े की जरूरत हो तो उसके मिलने का भी ठीक पता बता देगा॥

दोनो०। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, आने का समय क्या है?

काउण्ट०। साढ़े छः बजे—नम्बर २८ रो फान्टेन, आटविल—में आप लोग मुझसे मिलियेगा॥

"अवश्य" कहके दोनों ने काउण्ट को बड़े अदब से सलाम किया और बिदा हुए। काउण्ट एक खिड़की के पास गया जहां से उसने दोनों को हाथ में हाथ मिलाये जाते देखा, उसने आप ही आप कहा, "वे दोनों खुश जा रहे हैं! अफसोस की बात है कि दोनों सचमुच एक दूसरे के रिश्तेदार नहीं हैं?" तब थोड़ी देर तक उदासी के साथ कुछ सोचने बाद उसने कहा, "मैं देखता हूं घृणा द्रोह से भी ज्यादा दुःखद और जी बिगाड़ देने वाली है—चलो मारल के यहां चलें॥"

पांचवां बयान।

मुलाकात की जगह।

हम अपने पाठकों को यहां से हटा कर दूसरी जगह ले चलते हैं। पाठक मि० विलफोर्ट के बागीचे के पिछवाड़े वाले उस छोटे खेत को भूले न होंगे और न उन तख़्तों से बड़े दर्वाजे को ही भूले होंगे जिनके दरारों के बीच में से कितनी ही बार प्रेमियों की ललचौंही निगाहों ने दूसरी तरफ देखा था॥

इस समय भी वहां एक प्रेमी मौजूद है जो तख़्तों के दरारों से दूसरी तरफ देख रहा है। पाठक समझ ही गये होंगे कि यह मैक्समिलियन मारल है॥

मारल देर से यहां बैठा हुआ है क्योंकि वेलेंटिन ने मिलने का जो समय बताया हुआ है उससे कहीं देर हो चुकी है और वह घबड़ा कर तरह तरह की बातें सोच रहा है कि उसकी प्रेमिका ने आने में देर क्यों की ? मगर इसमें वेलेंटिन का कसूर न था क्योंकि उससे तथा उसकी सौतेली मा से मिलने के लिये मि० दङ्गली की स्त्री और लड़की आई हुई थी और वह लाख इच्छा होने पर भी यकायक उन दोनों को छोड़ नहीं सकती थी हां जब उसने देखा कि अब बहुत ही देर हो रही है तो इतना अवश्य किया कि यूजिनी को साथ ले बागीचे की सैर के बहाने उसी जगह ले आई जहां मारल दरवाजे के दूसरी तरफ से देख रहा था जिसमें उसका

प्रेमी यह समझ जाय कि यह देरी वेलेण्टिन की किसी गफलत से नहीं हुई है। वेलेण्टिन के साथ यूजिनी को देख मारल भी देरी का सबब समझ गया और शान्ति के साथ यूजिनी के विदा होने की राह देखने लगा। जब तक वे दोनों लड़कियें मारल की निगाहों के सामने रहीं तब तक वह उन दोनों का मिलान करता रहा—एक सुन्दर, नाजुकवदन और कोमल दूसरी भी सुन्दर मगर कड़ी निगाह वाली और कठोर प्रकृति की, मुलायमियत का नाम नहीं॥

आखिर दङ्गली की स्त्री विदा हुई और यूजिनी भी वेलेण्टिन से विदा हुई। वेलेण्टिन उसे थोड़ी दूर तक पहुंचाने गई और जब लगभग आधी घड़ी बाद वह अकेली आती हुई नजर पड़ी तो मारल का दिल खुशी से नाच उठा॥

इधर उधर देख कर जब वेलेण्टिन ने निश्चय कर लिया कि कोई उसे देख नहीं रहा है तो वह फाटक के पास आई और मारल से बोली—"तुम्हें राह देखनी पड़ी मगर इसमें मेरा कसूर न था॥"

मारल०। हां मैंने यूजिनी को देखा—मगर मैं नहीं जानता था कि तुम दोनों में इतनी गहरी दोस्ती है॥

वेलेण्टिन०। यह तुमसे किसने कहा कि मेरी उसकी गहरी दोस्ती है?

मारल०। तुम दोनों के रङ्ग ढङ्ग ने॥

वेले०। नहीं, दिली दोस्ती तो हममें नहीं है पर फिर

भी कभी कभी कुछ गुप्त बातें हो जाती हैं। वह मुझसे कह रही थी कि अलवर्ट मारकर्फ के साथ शादी करना उसे बिल्कुल पसन्द नहीं है और मैं कह रही थी कि फ्रान्सिसएपिनी के साथ शादी होने से मैं बड़ी दुखी होऊंगी ॥

मारल०। ओह वेलेण्टिन !!

वेलेण्टिन०। क्योंकि उस आदमी का जिक्र करते हुए जिसे मैं नहीं चाहती मुझे उस आदमी का ध्यान आ जाता है जिसे मैं प्यार करती हूं ॥

मारल०। प्यारी वेलेण्टिन !, तुम कैसी अच्छी हो, तुम में एक ऐसा गुण है जो यूजिनी में कभी नहीं आ सकता—यह वह मोहक शक्ति है जो स्त्रियों के लिये वही है जो खुशबू फूल के लिये और स्वाद फल के लिये है क्योंकि लोग सिर्फ सुन्दरता के लिये ही इन्हें नहीं चाहते ॥

वेले०। तुम प्रेम के सबब से ऐसा कहते हो !

मारल०। नहीं यह बात नहीं है—मैं सच कह रहा हूं—अच्छा यह तो बताओ.

वेले०। क्या ?

मारल०। क्या यूजिनी को अलबर्ट से शादी करना इसलिये नापसन्द है कि वह किसी दूसरे को चाहती है ?

वेलेण्टिन०। मैंने तुमसे कहा न कि मेरी उसकी कोई गहरी दिली दोस्ती नहीं है ॥

मारल०। नहीं नहीं तुम मुस्कुरा रही हो जरूर

तुमने यह बात दरियाफ़ कर ली है-बताओ बताओ॥

वेलेण्टि०। उसने कहा कि वह किसी को भी नहीं चाहती, उसे शादी के नाम ही से घृणा है-वह किसीके बन्धन में नहीं रहा चाहती, स्वतन्त्रता से दिन बिताया चाहती है !!

मारल०। वाह वाह !! अच्छा हां, कल मैं अलबर्ट से मिला था॥

वेले०। तो ?

मारल०। फ्रान्सिस से उसकी बड़ी दोस्ती है॥

वेले०। हां है तो, तब ?

मारल०। फ्रान्सिस ने अलबर्ट को लिखा है कि वह थोड़े ही दिनों में पेरिस लौटेगा !!

यह सुनने के साथही वेलेण्टिन बेचैन होगई, उस-का दिल तेजी से धड़कने लगा और उसने फाटक का थामना लेकर मुश्किल से अपने को सम्हाला॥

वेलेण्टि०। तुम्हारा कहना शायद ठीक है, क्योंकि थोडी ही देर हुई मेरी मां ने मुझसे कहला भेजा है कि "मुझसे मिलना, तुम्हारी जायदाद के सम्बन्ध में कुछ बातें करनी हैं।" मैं समझती हूं शायद यही खबर देने को बुलाया होगा। मगर नही यह बात नही हो सकती मैडम विलफोर्ट मेरी शादी की खबर अपने मुंह से मुझे नही देंगी॥

मारल०। क्यों ?

वेले०। ऊपर से चाहे वह जो कहें मगर उन्हें मेरी

शादी ही पसन्द नहीं है ॥

मारल०। क्यों से क्यों! क्या उन्हें तुम्हारा फ्रांसिस ग्रिफिन से ब्याह करना नापसन्द है?

येले०। नहीं उन्हें किसी खास आदमी से चिढ़ नहीं है बल्कि वे शादी ही नापसन्द करती हैं ॥

मारल०। जब शादी से उन्हें इतनी घृणा है तो खुद क्यों ब्याह किया!

येले०। तुम समझते नहीं मैक्समिलियन! अगर मैं शादी कर लूंगी या कहीं चली जाऊंगी तो मेरा धन भी तो मेरे साथ चला जायगा! यही वे नहीं चाहतीं। परन्तु जब तक आकर मैंने किसी कान्वेण्ट में जाने का इरादा किया तो ऊपरी तौर से दिखाने के लिये जरूरी समझ उन्हों ने मुझे रोका मगर भीतर ही भीतर इससे खुश हो गई, क्योंकि अगर मैं कान्वेण्ट जाती तो मेरा धन पीछे रह जाता उसके मेरे पिता वारिस बनते और उनसे एडवर्ड को मिलता। इसी से मेरे कन्वेण्ट जाने पर ये खुश थीं और उनके समझाने से मेरे पिता भी राजी हो गये थे-मैं जो नहीं गई वह सिर्फ अपने दादा के कारण, जिनको घर भर में केवल मैंही चाहती हूं या घर में जो अकेले मुझे प्यार करने वाले हैं। उन्हे जब मैंने अपना विचार कहा तो, मैक्समिलियन! मैं नहीं कह सकती कि उनके चेहरे पर क्या क्या भाव आये! जबान बन्द होने पर भी उनकी आंखों ने मुझपर कैसी धिक्कार की दृष्टि डाली। मेरी बात सुन उनके आंसू

तुमने यह बात दरियाफ़ कर ली है—बताओ बताओ॥

वेलेण्टि०। उसने कहा कि वह किसी को भी नहीं चाहती, उसे शादी के नाम ही से घृणा है—वह किसीके बन्धन में नहीं रहा चाहती, स्वतन्त्रता से दिन बिताया चाहती है !!

मारल०। वाह वाह !! अच्छा हां, कल मैं अलबर्ट से मिला था॥

वेले०। तो ?

मारल०। फ्रान्सिस से उसकी बड़ी दोस्ती है॥

वेले०। हां है तो, तब ?

मारल०। फ्रान्सिस ने अलबर्ट को लिखा है कि वह थोड़े ही दिनों में पेरिस लौटेगा !!

यह सुनने के साथही वेलेण्टिन बेचैन होगई, उसका दिल तेजी से धड़कने लगा और उसने फाटक को थामना लेकर मुश्किल से अपने को सम्हाला॥

वेलेण्टि०। तुम्हारा कहना शायद ठीक है, क्योंकि थोड़ी ही देर हुई मेरी मां ने मुझसे कहला भेजा है कि "मुझसे मिलना, तुम्हारी जायदाद के सम्बन्ध में कुछ बातें करनी हैं।" मैं समझती हूं शायद यही खबर देने को बुलाया होगा। मगर नहीं यह बात नहीं हो सकती मैडम विलफोर्ट मेरी शादी की खबर अपने मुंह से मुझे नहीं देंगी॥

मारल०। क्यों ?

वेले०। ऊपर से चाहे वह जो कहें मगर उन्हें मेरी

शादी ही पसन्द नहीं है ॥

मारल०। क्यों से क्यों! क्या उन्हें तुम्हारा क्रान्सिस रूपिनी से व्याह करना नापसन्द है?

वेले०। नहीं उन्हे किसी खास आदमी से चिढ़ नही है बल्कि वे शादी ही नापसन्द करती हैं ॥

मारल०। जब शादी से उन्हें इतनी घृणा है तो खुद क्यों व्याह किया!

वेले०। तुम समझते नहीं मैक्समिलियन! अगर मैं शादी कर लूगी या कहीं चली जाऊंगी तो मेरा धन भी तो मेरे साथ चला जायगा! यही वे नहीं चाहतीं। परसाल जब तङ्ग आकर मैंने किसी कन्वेण्ट में जाने का इरादा किया तो ऊपरी तौर से दिखावे के लिये जरूरी समझ उन्हों ने मुझे रोका मगर भीतर ही भीतर इससे खुश हो गईं, क्योंकि अगर मैं कन्वेण्ट जाती तो मेरा धन पीछे रह जाता उसके मेरे पिता वारिस बनते और उनसे एडवर्ड को मिलता। इसी से मेरे कन्वेण्ट जाने पर वे खुश थीं और उनके समझाने से मेरे पिता भी राजी हो गये थे-मैं जो नही गई वह सिर्फ अपने दादा के कारण, जिनको घर भर में केवल मैंही चाहती हूं या घर मे जो अकेले मुझे प्यार करने वाले हैं। उन्हे जब मैंने अपना विचार कहा तो, मैक्समिलियन! मैं नही कह सकती कि उनके चेहरे पर क्या क्या भाव आये! जबान बन्द होने पर भी उनकी आंखों ने मुझपर कैसी धिक्कार की दृष्टि डाली। मेरी बात सुन उनके आंसू

कहने लगे—मैक्समिलियन! भला फिर भी मैं जा सकती थी! मैं उनके पैरों पर गिर पड़ी और बोली—"माफ करो! दादा जी!! मैं तुम्हें छोड़ कहीं न जाऊंगी।" मेरी बात सुन मुंह से तो बोल न सके पर धन्यवाद की दृष्टि से आकाश की तरफ देखा। ओह मैक्समिलियन! मैं बहुत दुःख उठाती हूं मगर मुझे ऐसा मालूम हुआ मानों मेरे दादा की वह एक नजर ही सबके बदले के लिये काफी थी॥

मारल०। प्यारी वेलेण्टिन! तुम औरत नहीं देवी हो!! मैं तुम्हारी तारीफ नहीं कर सकता! मगर यह तो कहो कि आखिर तुम्हारी मां को तुम्हारे रुपयों का इतना लोभ क्यों है कि वे तुम्हें शादी तक नहीं करने दिया चाहतीं!!

वेले०। इसलिये कि मैं बहुत अमीर हूं, मुझे अपनी मां की जायदाद मिली, अपने नाना नानी की मिलेगी और मेरे दादा भी मुझी को अपना रुपया दे जायँगे। उधर एडवर्ड को कुछ नहीं है क्योंकि उसकी मां गरीब है उसके नाना नानी गरीब हैं। मैडम अपने लड़के को हद्द से ज्यादा चाहती हैं और उसे किसी बात की कमी होने देना नहीं चाहती॥

मारल०। तो क्यों नही तुम अपना आधा रुपया उस बेचारे गरीब लड़के को दे देतीं! किसी तरह शान्ति तो हो॥

वेले०। मैं तैयार हूं, मगर अपनी जुबान पर खुद यह

बात क्योंकर ला सकती हूं खास कर जब कि मैडम इस मामले में ऊपर से बड़ी ही निरपेक्ष बनी हुई हैं॥

मारल०। हां से तो है; मगर तो क्या किसी दूसरे से इस मामले में हमलोग राय नही ले सकते? अभी तक तुम्हारे इस प्रेम को एक स्वर्गीय पदार्थ की तरह मैं अपनी छाती के अन्दर छिपाये रहा हूं कोई यहां तक कि मेरी बहिन भी नहीं जानती कि मैं तुम्हे प्यार करता हूं। पर यदि तुम आज्ञा दो तो मैं अपने एक नये दोस्त से सब हाल कहूं और उससे कुछ राय लूं॥

वेले०। (चौंक कर) नया दोस्त? कौन नया दोस्त?

मारल०। एक विचित्र और अद्भुत आदमी॥

वेले०। विचित्र और अद्भुत! कौन? कितने दिन से तुम्हारी उसकी दोस्ती हुई?

मा०। सिर्फ आठ दस दिन से, मगर इसी बीच में मेरा उसपर ऐसा भाव होगया है मानो वह मेरा कल्याणकारी देवता हो। उसकी सूरत देखते ही मेरे दिल में श्रद्धा और भक्ति जाग जाती है। मुझे ऐसा मालूम होने लगता है मानों मेरा जो कुछ उपकार होने वाला है सब इसी आदमी के हाथों होगा। मैं नहीं कह सकता कि क्यों, पर मेरे दिल में ऐसी ही बातें उठती हैं॥

वेले०। (उदासी के साथ) तुम अपने इस नये दोस्त को मुझे दिखाना॥

मारल०। तुम उसे जानती हो॥

वेले०। मैं उसे जानती हूं?

मारल०। हां यह वही है जिसने तुम्हारी सैतेली मां और एडवर्ड की जान बचाई थी॥

घेले०। काउण्ट आफ सौएंट क्रीटो!

मारल०। हां वही॥

घेले०। नहीं नहीं, काउण्ट हमारा दोस्त नहीं हो सकता! वह मैडम का और इस घर का इतना भारी दोस्त है कि हमलोगों का दोस्त वह कदापि नहीं हो सकता। मैडम उसे देवता की तरह मानती हैं, पिता उसकी इज्जत करते हैं और कहते हैं कि अभी तक कभी उन्होंने ऐसी विचित्र बातों को ऐसी खूबी के साथ कहने वाला आदमी नहीं देखा—एडवर्ड यद्यपि उसके पीले चेहरे और काली आंखों से डरता है पर फिर भी जब उसके आने की खबर सुनता है उसके पास दौड़ जाता है क्योंकि वह हमेशा उसके लिये एक न एक नायाब चीज लाया करता है। नहीं नहीं मैक्समिलियन! काउण्ट मेरे घराने का इतना भारी दोस्त है कि वह हमलोगों का दोस्त कभी नहीं हो सकता॥

मैक्स०। मैं नहीं कह सकता कि क्या बात है, मगर फिर भी यह मैं जरूर कहूंगा कि मैं उसे दिल से प्यार करता हूं और जब वह मेरे सामने हँसता है तो मेरा दिल आप से आप उसकी तरफ खिंच जाता है। क्या तुम्हारे सामने वह उस तरह कभी नहीं हँसा!

घेले०। मेरे सामने! नहीं कभी नहीं, वह तो मेरी तरफ निगाह उठा के देखता भी नहीं—बल्कि मैं तो

समझती हूं कि यह मुझसे बचाव करता है। तुम कहते हो कि यह तुम्हें प्यार करता है? मगर इसका सबूत? तुम्हारे ऐसे फौजी अफसर की, तुम्हारी लम्बी तलवार और खड़ी मूछों की, लोग इज्जत कर सकते हैं पर वेही लोग मुझ ऐसी गरीब दुखिया को पैर के नीचे कुचल देने में भी कुछ परवाह नही रखते ॥

मैक्स० । नही वेलेण्टिन! तुम भूलती हो!!

वेले० । नही मैं ठीक कहती हूं। काउण्ट ने एकही निगाह में देख लिया कि मैं दुखिया हूं! मैं अपने घर में कोई ताकत नहीं रखती! मैं किसी का कुछ भला बुरा नही कर सकती! मैं उसके मतलब की नही हूं! मैं उसकी निगाहों में पड़ने लायक नहीं हूं। वह समझ गया कि मैं 'नहीं' से भी कम हूं अस्तु इसी से वह मुझपर कुछ ध्यान नहीं देता। कौन कह सकता है कि कभी ऐसा मौका भी आ जाय कि मैडम को खुश करने की नीयत से वह भी औरों की तरह मुझे क्लेश पहुंचाने लग जाय! (यह देख कर कि उसकी बातों का मारल पर विचित्र असर हो रहा है) माफ करो मैक्समिलियन! अगर मैंने कोई ऐसी बात कह दी है जिससे तुम्हें दुःख पहुंचा है तो मुझे माफ करो—मगर मेरे दिल में जो है मैं साफ साफ कहती हूं ॥

मैक्स० । (लम्बी सांस लेकर) खैर वेलेण्टिन! इस बहस को बढ़ाने की जरूरत नही, मैं उससे इस बारे में कुछ न कहूंगा!!

सिधाई और ताकत को देखतेही मैं इसपर जी जानसे लट्टू होगया मगर जब दाम पूछा तो मालूम हुआ साढ़े चार हजार रुपया! अब बताओ मैं क्या करता! लाचार ठण्ढी सांस लेकर रह गया और घर लौट आया। उसी शाम को मेरे कई दोस्त, शेट्रेनाड, ड्रिब्रे वगैरः मुझसे मिलने आ गये और सभों ने मुझसे ताश खेलने को कहा। तुम जानती ही हो मुझे जूए पासे से शौक नहीं है पर ऐसे मौके पर क्या करता! मैं अपने घर में था और मेरे दोस्त मेहमान जोर देते थे लाचार खेलना शुरू किया। उसी समय काउण्ट वहां आ पहुंचा और वह भी खेल में शरीक हो गया। वेलोग हारने लगे और मैं जीतने लगा! मुझे शर्म के साथ कहना पड़ता है कि उस रात मैंने पांच हजार रुपया जीता! दोस्त लोग चले गये–मैं अपनी खुशी को अब ज्यादा रोक नहीं सकता था मैं आधी रात का समय होने पर भी उठा और तुरंत उस घोड़े वाले के पास पहुंचा। साढ़े चार हजार उसके सामने फेंका और तुरंत जीन कस उसपर सवार हो बाहर निकल आया। सौदागर ने मुझे पागल समझा होगा, पर मैं क्या करूं मैं तो घोड़े पर लट्टू हो रहा था। रातों रात मैंने दूर दूर तक का चक्कर लगाया और इसकी चाल की खूबी देखी, लौटती समय काउण्ट के मकान के पास से आते हुए मैंने उसकी छाया एक खिड़की के पर्दे पर देखी। वेलेण्टिन! मैं तुमसे सच कहता हूं कि मुझे पूरा विश्वास है कि काउण्ट इस बात को जान गया

था कि मेरी इच्छा वह घोड़ा लेने की है और इसी से उसने जान बूझ कर खुद हार कर मुझे उसके खरीदने लायक रुपया जिताया था !!

वेले०। मैक्समिलियन ! तुम अगर इस तरह की अनहोनी बातें सोचा करोगे तो जरूर पागल हो जाओगे। यह दुनिया ऐसी कल्पनामय और अद्भुत नहीं है जैसी तुम सोचते हो—मगर वे लोग मुझे पुकार रहे हैं—मैं जाती हूं, जाती हूं॥

मैक्स०। भला अपनी एक उँगली ही इस छेद की राह इधर निकाल दो कि मैं उसे चूम लो लूँ॥

वेले०। क्या मेरे ऐसा करने से तुम्हे खुशी होगी?

मैक्स०। आह ! खुशी !!

वेलेंटिन किसी ऊंची चीज पर चढ़ गई और तब उसने एक उँगली ही नहीं बल्कि समूचा हाथ फाटक के उस तरफ बढ़ा दिया। नौजवान प्रेमी ने खुशी की एक चीख मारी और तब आवेग के साथ उस हाथ को चूम लिया। वह हाथ तुरत ही दूसरी तरफ चला गया और तब मारल ने वेलेंटिन को मकान की तरफ लपके जाते हुए देखा, मानो अपनी इस शोखी पर वह आप ही डर गई हो !!

नहीं सका कि उसकी बात ने नैाटीर पर क्या असर किया अस्तु वह फिर बोला, "मैं समझता हूं कि वह बात आपके भी पसन्द होगी। बात यह है कि हमलोग वेलेण्टिन के ब्याह की तैयारी कर रहे हैं !!"

इस बात ने भी नैाटीर के चेहरे में किसी तरह का फर्क नहीं डाला। मानों उसका चेहरा मोम का बना हुआ था जिसपर किसी तरह का उद्वेग या चिन्ता भाव प्रगट ही नहीं हो सकता॥

विलफोर्ट ने फिर कहा, "शादी तीन महीने बाद होगी॥"

नैाटीर की आंखें इसपर भी पहिले ही की तरह स्थिर और गंभीर बनी रहीं। अब मैडम विलफोर्ट बोली, "हमलोगों ने समझा था कि आप वेलेण्टिन की शादी की खबर पाकर खुश होंगे क्योंकि एक तो उसकी उम्र उन्नीस वर्ष की होगई है दूसरे भाग्य से लड़का भी बहुत अच्छा रईस, अमीर, भला आदमी और ऊंचे घराने का मिल गया है—मगर आप उसे जरूर जानते होंगे—क्योंकि उसका नाम 'बैरन फ्रान्सिस किसनल एपिने' है॥"

विलफोर्ट इस बीच में गौर के साथ अपने पिता की सूरत देख रहा था—उसने देखा कि 'फ्रान्सिस किसनल एपिने' यह नाम सुनने के साथ ही बूढ़े की आंखों में आग की चिनगारी सी निकलने लगी और उसके चेहरे से यह भाव मालूम होने लगा मानों अगर बोलने की

ताकत होती तो वह क्रोध से चिल्ला उठता। विलफोर्ट अपने पिता के इस भाव का कारण पूरी तरह से समझता था और जानता था कि नैाटीरे और जनरल किनल (फ्रान्सिस के पिता) के बीच में हद्द दर्जे की गहरी राजनैतिक दुश्मनी थी और यही सबब नैाटीर के क्रोधित होने का है पर फिर भी उसने इस बात पर कुछ ध्यान न दे कहा, "मैं जानता हूं कि आप वेलेण्टिन को बहुत प्यार करते हैं और उसका साथ छोड़ना पसन्द न करेंगे अस्तु हमलोगों ने ऐसा प्रबन्ध किया है कि शादी के के बाद भी वेलेण्टिन आपके साथ ही रहे। फ्रान्सिस ने आपको अपने साथ रखना मंजूर कर लिया है और आप उसके मकान में उतने ही आराम से रह सकते हैं जितना यहां बल्कि तब आपकी खिदमत करने वाले एक की जगह दो हो जायँगे॥"

नैाटीर की आंखें भयानक हो रही थीं। इसमें संदेह नहीं कि कुछ उग्र बातें उसके दिमाग में दौड़ रही थीं जिन्हें वह किसी तरह बयान नहीं कर सकता था और जिन्हों ने उसके चेहरे को एकदम पीला और गले को घोंट सा दिया था। विलफोर्ट ने इस बात को समझ कर भी नहीं समझा और एक खिड़की खोलते हुए कहा, "यहां बड़ी गर्मी है, पिता की तबीयत घबरा रही है॥"

मेडम विलफोर्ट० । इस शादी में बैरन फ्रान्सिस और उनके घराने की भी पूरी सम्मति है। और फिर बैरन फ्रान्सिस के कुटुम्ब में सिवाय एक बूढ़े चाचा के

और है ही कौन-उनके पिता तो सन् १८१५ में मार ही डाले गये !!

विल०। वह खून भी बड़ा ही विचित्र हुआ! अभी तक पता न लगा कि जनरल किसनल को किसने मारा (नोटीर ने यह बात सुन इतनी कोशिश की कि उसके चेहरे से एक प्रकार की हँसी प्रगट होने लगी) मगर इस मौके पर वे लोग भी, जिन्होंने यह हत्या की और जिनके ऊपर कभी न कभी इस दुनिया में या उस दुनिया में उस पाप का बदला गिरेगा—अगर हमारी जगह होते और अगर उन्हें एक लड़की होती तो अवश्य फ्रान्सिस को दे वह कलङ्क की कालिमा हटाने की कोशिश करते॥

बहुत उद्वेग रहने पर भी नोटीर ने अपने को शान्त किया। उसकी आंखें स्थिर रूप से विलफोर्ट के चेहरे पर पड़ी जिनमें से यह भाव निकल रहा था—"ठीक है मैं तुम्हारी बात समझता हूं।" विलफोर्ट भी अपने पिता का मतलब समझ गया मगर कन्धा हिला कर लापरवाही जाहिर करने बाद अपनी स्त्री से इशारे में बोला, "चलना चाहिये॥"

दोनों उठे। मैडम ने चलते हुए नोटीर से कहा—"क्या आपके पास मन बहलाने के लिये मैं एडवर्ड को भेज दूं!"

नोटीर ने कई दफे अपनी पलकें खोलीं और बन्द कीं—मैडम समझ गई कि उसे यह बात मंजूर नहीं है क्योंकि उन लोगों में यह पहिले ही से निश्चय हो चुका

था कि अगर नैाटीर के किसी बात के जवाब में 'हां' कहना होता था तो वह अपनी आंख के एक दफे बन्द करता था और अगर 'ना' कहना होता था तो कई दफे पलकें झपकाता था। अगर वेलेण्टिन की जरूरत समझता था तो अपनी दाहिनी आंख बन्द करता था और बोरिस की जरूरत होने पर सिर्फ बाईं। अस्तु मैडम की बात के जवाब में कई दफे उसने पलक झपकाई, इस पूरी इन्कारी ने मैडम की तबीयत खट्टी करदी और वे कुछ क्रोध के साथ होठ चबाने लगीं मगर फिर तुरत ही अपने के सम्हाल कर बोली, "तो क्या वेलेण्टिन के भेज दूं?" बूढ़े ने आग्रह के साथ अपनी आंख बन्द की और अपनी इच्छा प्रगट की। विलफोर्ट और मैडम बूढ़े के सलाम कर विदा हुए और उनके जाने के कुछ ही देर बाद वेलेण्टिन ने कमरे में पैर रक्खा॥

अपने दादा पर एक निगाह डालते ही वेलेण्टिन समझ गई कि उसका मन इस समय उद्वेग से भरा हुआ है और वह बहुत कुछ कहा चाहता है। वह लपक कर बूढ़े के पास पहुंची और घबराहट के साथ बोली— "दादा! क्या हुआ? क्या हुआ? तुम गुस्से से भरे हो? क्या मामला है?"

बूढ़े ने आंख बन्द कर "हां" कहा। वेलेण्टिन ने पूछा, "किस पर? पिता पर? नहीं, मां पर? नहीं, तब किस पर मुझपर?"

बूढ़े ने "हां" कहा, वेलेण्टिन घबरा कर बोली—

"तुम्हें मुझपर गुस्सा है? बाबा! मैंने क्या बिगाड़ा? क्या आज दिन भर आई नहीं इससे? तब किस बात पर! क्या कोई मेरा जिक्र तुमसे करता था?"

बूढ़े ने उत्सुकता से "हां" कहा, वेलेण्टिन ने सोचते हुए कहा, "किसने मेरा जिक्र किया? ओह मेरे पिता और मैडम अभी अभी यहां से गये हैं! जरूर उन्हों ने कुछ कहा होगा! क्या कहा? मैं अभी जाकर पूछती हूं॥

बूढ़े ने आंख के इशारे से कहा, "नहीं, नहीं॥"

वेलेण्टिन फिर सोचने लगी—उन लोगों ने क्या कहा होगा (पास जा आंख नीचे कर धीरे से) क्या मेरी शादी के बारे में तो कुछ नहीं कहा?

बूढ़े ने गुस्से के साथ बताया "हां॥"

वेलेण्टिन०। ओह! मैंने अभी तक उस बात का कोई जिक्र तुमसे नहीं किया इससे तुम्हें गुस्सा आया है! मगर बाबा! बात यह हुई कि उन लोगों ने मुझसे मना कर दिया था कि अपने दादा से इसका जिक्र न करना। इसी से बाबा मैं तुमसे कुछ कह न सकी, माफ करो॥

मगर वेलेण्टिन को सन्तोष देने की कोई बात उन आंखों में दिखाई न पड़ी, वे आंखें मानों कह रही थीं—"तुम्हारी चुपपी के सिवाय और भी कोई बात मुझको दुःख दे रही है॥"

वेले०। तो वह क्या बात है? क्या तुम समझते हो कि शादी हो जाने पर मैं तुम्हें छोड़ दूंगी? नहीं नहीं

मैं बराबर तुम्हें अपने साथ रक्खूँगी॥

बूढ़े की आंखों से बड़े प्यार की चमक निकलने लगी। वेलेंटिन ने कहा—"तुम मुझे प्यार करते हो इससे क्या तुम समझते हो कि इस ब्याह से मुझे तकलीफ होगी?"

बूढ़ा०। हां॥

वेले०। क्या तुम मि० फ्रान्सिस को नहीं चाहते?

बूढ़ा०। नहीं, नहीं, नहीं॥

वेले०। और यह शादी तुम्हे पसन्द नहीं है?

बूढ़ा०। नहीं!!

वेलेण्टिन यह सुनते ही बूढ़े के पैरों के साथ लपट कर कातर भाव से बोली, "बाबा मुझे खुद यह शादी पसन्द नहीं, मैं मि० फ्रान्सिस को बिल्कुल नहीं चाहती (बूढ़े की आंखों से बड़ी प्रसन्नता जाहिर होने लगी) जब मैं कन्वेन्ट में जाने लगी थी तो तुम मुझपर कैसा गुस्से हुए थे? (बूढ़े की आंखों में आंसू दिखाई देने लगे) पर बाबा! उस समय मैं इसी शादी से बचने के लिये वह किया चाहती थी जिसने मुझे बिल्कुल निराश सा कर दिया है! बाबा! क्या तुम मेरी मदद नहीं कर सकते! क्या तुम मेरी जान इस भयानक फंदे से नहीं छुड़ा सकते? क्या हम दोनों मिलकर भी कुछ नहीं कर सकते—नहीं नहीं मेरी भूल है। अब तुममें उन लोगों की कार्रवाई रोकने की सामर्थ नहीं है, तुम मेरी बनिस्बत भी कमजोर हो। मेरी तरह तुम भी असमर्थ हो। तुम अब केवल

मेरे दुःखों के साथ सहानुभूति कर सकते हो और कुछ नहीं !!"

इन शब्दों के साथ ही नौटीर की आंखों में कुछ विचित्र भाव आ गया—मानों वे कहने लगीं—तू भूलती है ! मैं अब भी बहुत कुछ कर सकता हूं॥

वेले०। बाबा ! क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो !

बूढ़े ने "हां" कहा और तब अपनी आंख ऊपर की तरफ उठाई। वेलेण्टिन समझ गई कि उसे किसी चीज की जरूरत है। उसने पूछा, "बाबा ! क्या तुम्हें कोई चीज चाहिये ?" इतना कह उसने एक एक करके उन चीजों का नाम लेना शुरू किया जिनकी वह नौटीर के लिये इस मौके पर जरूरत समझ सकती थी मगर नौटीर सब के जवाब में "न" ही कहता गया, आखिर उसने "क, ख" से लेकर सब अक्षरों का नाम पुकारना शुरू किया, जब वह "न" पर पहुंची तो नौटीर ने इशारा किया॥

वेले०। तुम्हें जिस चीज की ज़रूरत है वह "न" से शुरू होती है। अच्छा—न, ना, नी, नू, नो.........

"नो" पर फिर नौटीर ने उसे रोका—वेलेण्टिन ने फिर पूछा, "क्या वह चीज "नो" से शुरू होती है ?" नौटीर ने "हां" कहा, वेलेण्टिन लपक कर एक डिक्शनरी (कोष) ले आई और उसमें 'नो' अक्षर निकाल कोष नौटीर के आगे रख हरएक शब्द पर एक एक करके उँगली दौड़ाने और नौटीर की तरफ देखने लगी।

'नोटरी' शब्द पर जब उसकी उँगली पहुंची तो नौटीर ने इशारे से उसे रोका । वेलेंटिन ने ताज्जुब से पूछा, "क्या ! क्या आपको नोटरी * चाहिये ?" नौटीर ने "हां" कहा ॥

वेले० । तो क्या मैं नोटरी को बुलवा भेजूं !

नौटीर० । हां ॥

वेले० । पिता को भी इस बात की खबर दूं !

नौटीर० । हां ॥

वेलेंटिन ने एक नौकर को बुलाया और हुक्म दिया "पिता से जाकर कहो कि बाबा इसी समय कुछ कहा चाहते हैं ।" नौकर के चले जाने पर वेलेंटिन ने कहा, "बाबा ! अब तो तुम खुश हुए ! बेशक हुए—ओह, तुम्हारी इच्छा जानना क्या सहज था !"

थोड़ीही देर बाद विलफोर्ट वहां आ पहुंचा जिसके पीछे पीछे बेरिस भी था । विलफोर्ट ने अपने पिता से पूछा, "आप क्या चाहते हैं ?"

वेले० । बाबा एक नोटरी को बुलाकर उससे कुछ कहा चाहते हैं ॥

विल० । नोटरी ! (नौटीर से) क्या आप नोटरी चाहते हैं ? क्यों, किस लिये ?

* नोटरी—फ्रान्स देश का एक सरकारी अफसर जिसे लोगों की शिकायत, इच्छा या वसीयत आदि सुनने, इजहार लिखने आदि का अख़्तियार रहता है । नोटरी की दस्तखत मोहर का कागज कानूनन ठीक समझा जाता है ॥

नौटीए ने कोई जवाब नहीं दिया—विलफोर्ट ने फिर पूछा—"नाटरी बुला कर क्या कीजियेगा। क्या हमलोगों को कुछ नुक्सान पहुंचाने की इच्छा है?"

बूढ़े की आंखें स्थिर रहीं, मानों वह अपने निश्चय को बदला नहीं चाहता॥

यह हाल देख बोरिस ने कहा, "जब मि० नौटीर की इच्छा नोटरी से कुछ कहने की है तो क्यों नहीं नोटरी बुलाया जाय! मैं अभी उसे बुलाने जाता हूं।" बोरिस बड़ा पुराना नौकर था और नौटीर के सिवाय और किसी को अपना मालिक नहीं मानता था। बोरिस की बात सुन नौटीर की भी आंखों ने दृढ़ता पूर्वक कहा, "बेशक, बेशक!!"

विलफोर्ट०। खैर जब आपकी ऐसी ही इच्छा है तो नोटरी को आने दीजिये मगर मैं उससे आपकी हालत बयान करके कहदूंगा कि आप अब कुछ करने या कहने लायक नहीं हैं॥

बोरिस०। खैर देखा जायगा, पहिले मैं बुला तो लाऊं॥

फर्मांबर्दार नौकर नोटरी को बुलाने चला गया॥

सातवाँ बयान॥

॥ वसीयत ॥

विलफोर्ट एक कुर्सी पर बैठ गया और नौटीर का इशारा पा वेलेण्टिन भी वहीं मौजूद रही। थोड़ी ही देर बाद बेरिस नोटरी को लिये हुए लौटा। सलाम आदि के बाद विलफोर्ट ने नोटरी से कहा, "महाशय! आप मि० नौटीर की इच्छानुसार यहाँ बुलाये गये हैं मगर जैसा कि आप खुद देख रहे हैं मिस्टर नौटीर को लकवे ने अधमुआ कर डाला है यहाँ तक कि वे बोल भी नहीं सकते, हमलोगों को खुद भी उनका मतलब समझने में बड़ी दिक्कत उठानी पड़ती है।" यह बात सुन नौटीर ने वेलेण्टिन के ऊपर ऐसी प्रार्थना की निगाह डाली कि वह अपने को रोक न सकी और बोल उठी, "परन्तु महाशय! मैं अपने दादा का मतलब पूरा पूरा समझती हूँ॥"

बेरिस०। बेशक, और यही मैं नोटरी साहब से रास्ते में भी कह चुका हूं॥

नोटरी०। (पहिले विलफोर्ट और तब वेलेण्टिन की तरफ देखकर) मगर बात यह है मेरे ऐसा अफसर सिर्फ उसी वक्त ऐसे काम में हाथ डाल सकता है जब उसे पूरी तरह विश्वास हो जाय कि उसने लिखाने वाले का पूरा पूरा मतलब समझ लिया—जब मि० नौटीर बोल ही नहीं सकते तो मुझे क्योंकर विश्वास हो कि

मुमकिन होगा ॥

वेलेंटिन और नौटीर दोनों ही ने यह बात सुनी, बूढ़े की लाचारी की निगाह देख वेलेंटिन को कहना पड़ा—"नहीं महाशय ! मैं आज छः बरस से बाबा के साथ हूं और कभी भी मैंने उनकी कोई इच्छा समझने में भूल नहीं की, आप खुद उनसे पूछ देखें ॥"

नोटरी० । (नौटीर से) क्या यह बात ठीक है ?

नौटीर० । हां ॥

नोटरी० । तो बताइये कि आपने मुझे किस लिये बुलाया है ?

वेलेंटिन ने पुनः क, ख, इत्यादि एक एक अक्षर पुकारना शुरू किया । जब वह "व" पर आई तो बूढ़े की आंखो ने उसे रोका । नोटरी ने भी कहा, "बेशक मि० नौटीर जो बात चाहते हैं वह "व" से शुरू होती है ।" वेलेंटिन ने "ठहरिये" कह कर फिर 'व' 'वा' इत्यादि कहना चाहा पर बूढ़े ने उसे 'व' ही पर रोक दिया । वेलेंटिन ने तब डिक्शनरी (कोष) उठाया और 'व' अक्षर बूढ़े के आगे रख एक २ शब्द पर उंगली रखना शुरू किया । "वसीयत" शब्द पर जब वह पहुंची तो बूढ़े की निगाहों ने उसे रोका । नोटरी ने चौंक कर कहा, "वसीयत !! इसमें कोई शक नहीं कि मि० नौटीर अपना वसीयतनामा लिखाया चाहते हैं ॥"

बूढ़े की आंखो ने कहा, "हां, हां, हां ॥"

नोटरी ने विलफोर्ट की तरफ घूम के कहा, "वास्तव

में यह विचित्र बात है !!" विलफोर्ट ने कहा, "हां है, और आगे चलकर और भी विचित्र होगी क्योंकि बिना वेलेंटिन की सहायता के यह वसीयत बनाई नहीं जा सकती और वेलेंटिन का इस विषय में इतना स्वार्थ है कि मैं नहीं समझता कि उसका ऐसे मामले में मध्यस्थ बनना कहां तक मुनासिब होगा॥"

बूढे की आंखों ने कहा, "नहीं, नहीं॥"

विल०। क्या ! क्या वेलेंटिन का आपकी वसीयत में कोई स्वार्थ नहीं है !

नोटरी०। नहीं॥

नोटरी को यह सब बातें आश्चर्य में डाल रही थीं। उसने अपने मन ही मन निश्चय कर लिया कि इस विचित्र मामले को अवश्य हाथ में लेना चाहिये—उसने कहा, "घण्टा भर पहिले जो बात मुझे असंभव मालूम होती थी वह अब बिल्कुल सम्भव हो गई है, मैं यह वसीयतनामा बनाने को तैयार हूं और यह कानूनन ठीक भी होगा बशर्ते कि सात गवाहों के सामने पढ़ा जाय और उनके दस्तखत इसपर हो जायें। यद्यपि इसमें मामूली से कुछ देर तो अवश्य ही लगेगी परन्तु (विलफोर्ट की तरफ देखकर) आपकी मदद से यह काम बेशक ठीक ठीक हो जायगा—क्योंकि अवश्य ही आपको इनकी जायदाद वगैरह का सब हाल मालूम होगा। मैं अपने एक साथी नोटरी को और बुला लाता हूं क्योंकि दो की मदद से यह काम ठीक और जल्दी होगा (बूढ़े से)

क्या यह आपको मंजूर है॥"

बूढ़े की आंखों ने खुशी के साथ कहा, "हां॥"

आधे घंटे के अन्दर ही एक दूसरा नोटरी भी आ पहुंचा। विलफोर्ट ने अपनी स्त्री को भी बुला लिया मगर वह दिल ही दिल में घबराहट के साथ सोच रहा था, "आखिर मेरे पिता चाहते क्या हैं?"

एक नोटरी ने एक मामूली वसीयत पढ़कर सुनाई और कहा, "वसीयतनामा लिखने का कायदा यही है, इसी ढङ्ग पर सब वसीयतें होती हैं॥"

बूढ़ा०। हां॥

पहिला नो०। जब आदमी कोई वसीयत बनाता है तो प्रायः वह किसी के पक्ष या विपक्ष में होती है॥

बूढ़ा०। हां॥

नोटरी०। क्या आप को अपनी दौलत का ठीक अन्दाजा है?

बूढ़ा०। हां॥

नोटरी०। मैं कुछ रकमें सुनाता हूं जब मैं उस रकम पर पहुंचूं जो आपकी दौलत के लगभग है तो मुझे रोकिये॥

बूढ़ा०। हां॥

इस सवाल जवाब में एक प्रकार की विचित्रता और गम्भीरता थी—शरीर और आत्मा के बीच में यह लड़ाई हो रही थी। कमरे में मौजूद लोग आश्चर्य के साथ नोटीर को घेरे हुए सोच रहे थे कि देखें किसकी

ज्ञीत होती है। एक नोटरी टेबुल पर लिखने का सामान ले बैठ गया—दूसरा सवाल करने लगा॥

"क्या आपकी जायदाद एक लाख की है? दो लाख की? तीन लाख की? पांच लाख की? सात लाख की, आठ लाख की, नौ लाख की?" इस रकम पर बूढ़े की तेज आंखों ने उसे रोक दिया। नोटरी ने पुनः पूछा, "क्या आपकी जायदाद नौ लाख रुपे की है?"

नैाटीर०। हां॥

नोटरी०। जमीन इलाका है?

नैाटीर०। नहीं॥

नोटरी०। सरकारी कागज?

नैाटीर०। हां॥

नोटरी०। वह कागज आप ही के पास हैं?

नैाटीर की निगाह बोरिस पर पड़ी, बूढ़ा नौकर तुरत कमरे के बाहर चला गया और थोड़ी देर में एक सन्दूकड़ी हाथ में लिये लौटा। नैाटीर की आज्ञा पा नोटरी ने इस सन्दूकड़ी को खोला। अन्दर से नौ लाख रुपै की कीमत के सरकारी कागज निकले। दूसरे नोटरी ने आश्चर्य से कहा, "बेशक मि० नैाटीर का कहना ठीक है, इसमें कोई शक नहीं है कि शरीर के खराब हो जाने पर भी दिमाग दुरुस्त है॥"

पहिले ने। "इस

के सूद की यो

होगी

बूढ़े की आंखें स्थिर रूप से वेलेण्टिन के हाथ पर पड़ीं। उसने कहा, "मेरा हाथ ?"

बूढ़ा०। हां॥

सब कोई चौंककर आश्चर्य से बोले, "वेलेण्टिन का हाथ !!" विलफोर्ट ने नोटरियों से कहा, "आप देखते हैं कि मेरे पिता का दिमाग वास्तव में खराब हो रहा है॥"

यकायक वेलेण्टिन ने कहा, "ओह मैं समझी, आप का मतलब मेरी शादी है !!"

"हां, हां," बूढ़े ने वेलेण्टिन पर कृतज्ञता भरी दृष्टि डाली कि उसने उसका मतलब ठीक समझ लिया॥

वेले०। आप इसलिये हमलोगों से रंज हैं कि आप को यह शादी पसन्द नहीं है॥

बूढ़ा०। हां॥

विल०। यह तो पागलपन की बात है॥

नोटरी०। नहीं नही महाशय! यह बात नहीं है बल्कि मैं खूब समझ गया कि मि० नैाटीर की इच्छा क्या है और उनके दिमाग में क्या क्या बातें दौड़ रही हैं। (नैाटीर से) आप नहीं चाहते कि आपकी पोती मि० फ्रान्सिस एपिने से शादी करें ?"

बूढ़ा०। नहीं !!

नोटरी०। और आप इसी लिये मिस वेलेण्टिन को

नैाटीर०। हां॥

नोटरी०। अगर यह शादी न होती तो वही आप की वारिस होतीं॥

नैाटीर०। हां॥

कमरे में गहरा सन्नाटा छा गया। दोनों नोटरी आपस में कुछ सलाह कर रहे थे। वेलेण्टिन कृतज्ञता की नजर अपने दादा पर डाल रही थी। विलफोर्ट क्रोध और रंज से कुढ़ा हुआ अपने होंठ चबा रहा था॥

आखिर विलफोर्ट ही ने पहिले पहिल सन्नाटा तोडा और कहा, "मैं समझता हूं कि इस मामले का सब दारमदार मेरे ही हाथ मे है, मैं जिसे चाहूं उसे अपनी लडकी का हाथ पकडा सकता हूं। यह मेरी इच्छा है कि वेलेण्टिन मि० फ्रान्सिस एपिने से शादी करे—और उसे करना ही होगा॥"

वेलेण्टिन रोती हुई एक कुर्सी पर गिर पडी, नोटरी ने मि०नैाटीर से पूछा, "अगर मि० विलफोर्ट यह शादी तोडना मंजूर न करें तो आप अपनी दौलत किसे दिया चाहते हैं?"

बूढे ने कोई जवाब न दिया, नोटरी ने पूछा, "क्या इस घर के किसी आदमी को?"

नैाटीर०। नहीं॥

नोटरी०। क्या खैरात कर दिया चाहते हैं?

नैाटीर०। हां॥

नोटरी ने विलफोर्ट की तरफ देखा, उसने कहा—

"मैं अपने पिता का स्वभाव अच्छी तरह जानता हूं-वे जो निश्चय एक बार कर लेते हैं उसे नहीं छोड़ते। खैर लाचारी है। मेरे घर के ये रुपये इस घर को छोड़ कहीं चले जायँ मगर मैं यह शादी नही रोकूगा-पिता जिसे और जहां चाहे अपनी दौलत दे दें॥"

यह कह विलफोर्ट कमरे के बाहर चला गया। उस की स्त्री भी उसके साथ चली गई॥

उसी रोज यह वसीयत नामा लिखा गया। नौटीर ने उसे मंजूर किया और उस पर सात गवाहों के दस्तखत भी हो गये॥

आठवां बयान।

टेली ग्राफ।

जब मि० विलफोर्ट और उसकी स्त्री नौटीर के कमरे के बाहर आये तो उन्हे पता लगा कि कौएट मौएट क्रीटो उनसे मिलने के लिये आया हुआ है और देर से बैठा है मैडम बहुत ही बेचैन और घबराई थीं इस लिये वे तो अपने कमरे में चली गई मगर विलफोर्ट जिसे अपने ऊपर ज्यादा भरोसा था कौएट से मिलने चला गया॥

यद्यपि विलफोर्ट ने अपने को बहुत सम्हाला पर फिर भी चिन्ता और क्रोध के भाव को पूरी तरह से दूर न कर सका था अस्तु साहब सलामत के बादही कौएट ने उससे पूछा, "आज क्या मामला है मि० विलफोर्ट!

आपके चेहरे से उदासी प्रगट हो रही है ?"

बिलफोर्ट ने हँसी प्रगट करने की कोशिश करते हुए कहा, "जी हां आज कुछ ऐसी ही बात हो गई॥"

कौण्ट०। क्या क्या ? क्या कोई भारी मुसीबत आप पर आपड़ी ?

बिल०। नही नही, सिर्फ थोड़े रुपयों का नुक्सान हो गया और कुछ नही ! एक मामूली बात !!

कौण्ट०। ठीक है ठीक है, आप ऐसे ऊँचे दिल और दिमाग वालों के लिये रुपये पैसे की हानि कोई बात नही है तिस पर से आपकी दौलत भी कोई मामूली नही है॥

बिल०। यद्यपि नौलाख रुपया कोई मामूली रकम नहीं है पर फिर भी मुझे उसका नुक्सान उतना नही सता रहा है जितना इस बात का खयाल कि मेरी इस बद-किस्मती का या जो कुछ भी कहिये—कारण एक बूढा आदमी है जो लडकों से भी गयी गुजरी हालत में हो रहा है॥

कौण्ट०। वह कौन आदमी है ?

बिल०। और कोई नही खास मेरे पिता !!

कौण्ट०। मि० नोर्टीर ! मगर मैंने तो सुना है कि लकवे ने उनकी तमाम ताकत नष्ट कर डाली है॥

बिल०। बेशक उनकी शारीरिक शक्ति का नाश अवश्य होगया है पर दिमागी ताकत ज्यों की त्यों बनी है। अभी अभी मैं उन्हे छोड़ता हुआ आ रहा हूं और

इस समय वे अपना वसीयतनामा लिखा रहे हैं ॥

कौ०। मगर इसके लिये तो उन्हें बोलना चाहिये !!

विल०। उससे भी बढ़ कर ! उन्होंने अपना मतलब समझा दिया !!

कौएट०। मगर यह कैसे सम्भव है !!

विल०। उन तीक्ष्ण आंखों की सहायता से जो कि अभी तक सांघातिक हानि पहुंचाने योग्य बनी हुई हैं॥

मैडम विलफोर्ट०। (कमरे में आती हुई) नहीं नहीं आप इस मामूली वात को बहुत बढ़ाकर समझ रहे हैं ॥

काउएट ने उठ कर मैडम को सलाम किया, मैडम ने वड़ी मुस्कुराहट से जवाब दिया और वैठने को कहा, कौएट ने पूछा, "मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसी क्या अकथनीय मुसीवत आप लोगों पर आ गिरी.. .."

विलफोर्ट०। अकथनीय ! अवश्य ही अकथनीय !!

मैडम०। मगर फिर भी यह आपके हाथ में है कि उस आफत को जब चाहें हटा सकें ॥

विल०। नही सो नहीं होसकता ! यद्यपि मैं जानता हूं कि मैं कोई बहुत वड़ा आदमी नहीं हूं और न दुनिया मेरे इशारे पर नाचती है पर फिर भी इतना मैं, अवश्य चाहता हूं कि मेरे घराने पर मेरी राय और हुकूमत बनी रहे। मैं नहीं चाहता कि एक बूढ़े की मूर्खता और एक लड़की की सनक में पड़ कर उस मनसूबे को छोड़ दूं जिसे वांधनू बरसों से बांधता चला आया हूं। बैरन एपिने मेरा

दिली दोस्त था और उसके लड़के और मेरी लड़की के व्याह से बढ़ कर उत्तम बात कोई हो ही नहीं सकती ॥

मैडम०। मगर वेलेण्टिन भी तो दिल ही दिल में इस शादी के खिलाफ है मुमकिन है कि उन दोनों ने आपस में मिल कर यह चाल चली हो ॥

विल०। नहीं, नौ लाख की रकम छोड़ना मामूली नहीं है ॥

मैडम०। वह तो दुनिया ही छोड़ने को तैयार है परसाल कन्वेण्ट में जाने को तैयार थी !!

विल०। खैर जो कुछ भी हो, यह शादी रुकने की तो नहीं ॥

मैडम०। अपनी पिता की भी इच्छा के विरुद्ध !!

मौण्टक्रीटो ऊपरी मन से इस बातचीत की तरफ ध्यान नहीं दे रहा था पर वास्तव में वह बड़े गौर से इन स्त्री पुरुष की बातें सुन रहा था ॥

विल०। मैडम, पिता की इज्जत दो सबबों से की जाती है, एक तो यह कि उसने हमको जन्म दिया, दूसरा यह कि वह हमारा मालिक है जिसका हुक्म बजाना चाहिये मगर इस मौके पर पिता के विषय में बड़ी श्रद्धा होने पर भी मैं उनका कहा नहीं मान सकता क्योंकि उनका यह विरोध क्रोध का है, वे फ्रान्सिस के पिता के दुश्मन थे और उस दुश्मनी का खयाल अभी तक उन्हें बना हुआ है। इसीलिये इस बारे में मैं उनका हुक्म मानना जरूरी नहीं समझता। मैं रुपे का नुकसान बर-

दाश्त कर लूँगा पर अपना निश्चय नहीं बदलूँगा। मुझे विश्वास है कि मेरी बेटी का व्याह फ्रान्सिस एपिने से होने से उसे सुख होगा, दूसरे मुझे अधिकार है जिसे चाहूं अपनी बेटी सौंपूँ॥

इतना कह विलफोर्ट ने कौएट की सहानुभूति पाने की इच्छा से उसकी तरफ देखा। कौएट ने कहा, "क्या आपके पिता इस कारण वेलेण्टिन को खारिज कर रहे हैं कि उनकी शादी मि० फ्रान्सिस एपिने से तै हुई है॥"

विल०। जी हां, यही कारण है!!

काउएट०। मैं फ्रान्सिस एपिने को जानता हूं-वही तो जनरल किसनल के लड़के!!

विल०। हां हां वही॥

काउ०। मगर वह तो बड़ा बुद्धिमान और सुशील नौजवान है, आपके पिता को उससे घृणा करने का क्या कारण मिल गया! कोई राजनैतिक कारण तो नहीं है?

विल०। हां यही बात है फ्रान्सिस के पिता और मेरे पिता में पहिले जमाने में गहरी दुश्मनी थी क्योंकि एक नेपोलियन के पक्ष में था दूसरा राजा (लूई) के पक्ष में॥

काउ०। ठीक है ठीक है अब मैं समझ गया। मैंने सुना है कि जनरल किसनल एक विद्रोहियों की सभा में गये थे मगर वहां से लौटने पर किसी ने उन्हें मार डाला॥

विलफोर्ट ने यह सुन डर की निगाहों से कौएट की तरफ देखा॥

काउ० । तो क्या मैंने गलत सुना है ॥

विल० । नहीं नहीं, आपने जो कहा सो ठीक है, जेनरल किसनल को दूसरे पक्ष वाले अपने मेल का समझ अपनी सभा में ले गये थे मगर अपनी भूल मालूम होने पर श्रीर यह जान कि नेपोलियन का नौकर होने पर भी वह दिलही दिल लूई के खैरखाह हैं उन्होंने उसे मार डाला । इसी पुश्तैनी दुश्मनी को दूर करने की नीयत से ही तो मैं यह ब्याह किया चाहता हूं जिसमें दोनों घराने एक हो कर दोस्ती श्रीर रिश्ते के सम्बन्ध से गुथ जायँ ॥

काउ० । ठीक है आपका खयाल बहुत ऊँचा है। जमाने को इसकी तारीफ करनी चाहिये-मिस नोटीर विलफोर्ट का मैडम फ्रान्सिस एपिने बनना बड़ा ही उत्तम होगा ॥

विलफोर्ट यह बात सुन कांप उठा श्रीर इस नीयत से काउएट के चेहरे की तरफ गैार से देखने लगा कि उस के दिली भाव को समझे जिनके कारण उसने ये शब्द कहे पर काउएट का चेहरा देख उसके मन की बात जानना असम्भव था। उसकी मुस्कुराहट के भीतर से किसी बात का समझ लेना मुश्किल था ॥

का० । मगर मैं नही समझ सकता कि यदि किसी कारण से आपके पिता वेलेएिटन से रंज भी हो गये तो एडवर्ड को क्यों नहीं अपना वारिस बना देते आखिर उसने तो कुछ नही बिगाड़ा ॥

मैडम०। हां देखिये तो ! क्या एडवर्ड उनका पोता नहीं है ! उनके लिये तो जैसी वेलेण्टिन वैसा एडवर्ड ! और फिर वेलेण्टिन को तो अपने नाना नानी की जायदाद मिलेगी, वह अमीर है और एडवर्ड बेचारा बिल्कुल गरीब !!

यह तीर निशाने पर लगता देख कौण्ट चुप हो रहा और फिर कुछ न बोला !!

विल०। कौण्ट महाशय ! अपनी घरू बातों का दुखदाई हाल मैं आपसे कहां तक कहूंगा मगर फिर भी यह कहनाही पड़ेगा कि चाहे मेरे पिता की जायदाद किसी के पास ही क्यों न जाय मगर मैं मि० फ्रान्सिस एपिने से वेलेण्टिन की शादी करूँगा ही। इसके सिवाय मैंने दहेज में जो रुपये देने की बात कही थी उसमें अपने पिता के रुपयों का भी ज़िक्र कर दिया था क्योंकि मुझे विश्वास था कि वह रकम जरूर उसे मिलेगीही पर अब जो मेरे पिता देने से इन्कार करते हैं तो भी मैं वह रकम अपने पास से दूंगा और अपनी जबान झूठी न करूँगा चाहे मुझे कङ्गाल ही क्यों न हो जाना पड़े ॥

मैडम०। तो आप क्यों नही मि० एपिने को इस बात की सूचना देदेते जिसमें यदि वे चाहें तो इस शादी से फिर सकें ॥

विल०। नहीं नहीं वह ठीक न होगा—लड़की की शादी की बात लग कर यदि शादी टूट जाय तो इसमें लड़की के नाम पर धब्बा लगता है और फिर यदि अब

यह शादी रुक जायगी जो फिर वह अफवादें जिन्हें मैं दबाना चाहता था हूं है उडने लग जायँगी ॥

काउ० । वेशक-बल्कि मैं तो राय दूंगा कि आपको इस काम का फैसलाही कर डालना चाहिये। मैंने सुना है कि मि०एपिने आने वाले हैं, बस उनके आतेही सब तै कर डालिये ॥

विल० । (खुश हो कर) बस जब आपकी राय हो गई तो ठीक है, मैं खुद यही चाहता था। अस्तु अब सब कोई आज की घटना को यही समझें कि मानों हुई ही नही । हमारे इरादों में कोई फर्क नही पडा है ॥

काउ० । वेशक और दुनिया अन्याई होने पर भी आपके इस निश्चय की तारीफ करेगी, खुद मि० एपिने अपने को भाग्यवान समझेंगे कि उन्हें ऐसे रिश्तेदार मिले जो अपनी बात कायम रखने के लिये भारी से भारी दुःख उठा सकते हैं ॥

यह कह काउण्ट उठ खड़ा हुआ—मैडम ने जिसके चेहरे का रङ्ग काउण्ट की बातों से कुछ उतर सा गया था मानों वह उन्हें पसन्द नही करती पूछा, "क्या आप चले ? इतनी जल्दी ?"

काउ० । जी हां, मैं तो सिर्फ आपको अपने वादे का स्मरण कराने के लिये आया जो मेरी शनीवार की ज्याफत के विषय मे आप लोगों ने किया था !!

मैडम० । क्या हम लोग भूल जाते ॥

काउ० । नही नही पर फिर भी मुझे गुमान हुआ

कि मि० विलफोर्ट के बहुत से और जरूरी काम रहा करते हैं॥

मैडम०। नहीं नहीं, जब वे आप से वादा कर चुके तो जरूर आवेंगे॥

विल०। आपकी यह ज्याफत आपके चेम्पस एली-सीज वाले मकान ही में तो है?

काउ०। जी नहीं, शहर के बाहर मगर बहुत ही नजदीक में॥

विल०। शहर के बाहर! कहां पर?

काउ०। आटविल में॥

विल०। आटविल में!! हां ठीक है, मैडम को जब मैडम डङ्गली के घोड़े ले भागे थे तब आपने वहीं उन्हें बचाया था! अच्छा तो आप आटविल के किस हिस्से में रहते हैं?

काउण्ट०। रो डि ला फन्टेन में॥

विल०। (चौंक कर) रो डि ला फन्टेन में!!

काउ०। जी हां नम्बर २८ में॥

विल०। नम्बर अट्ठाईस में! ओ हो तो क्या आप ही ने रईस मीरां का मकान खरीदा है?

काउण्ट०। क्या वह रईस मीरां का था?

मैडम०। हां, और क्या आपको विश्वास होगा...

काउ०। क्या विश्वास?

मैडम०। आप उस मकान को अच्छा समझते हैं?

काउ०। मैं तो उसे बहुत पसन्द करता हू॥

मैडम०। मगर मेरे पति उसे बिल्कुल नापसन्द करते हैं ॥

बिल०। हां मुझे आटबिल पसन्द नहीं है ॥

काउ०। मगर आप अपनी इस नफरत को यहां तक न ले जाइयेगा कि मेरी दावत ही नामंजूर कर दें ॥

बिल०। नहीं नहीं मैं अपने भरसक जरूर आऊँगा॥

बिलफोर्ट की आवाज कुछ भर्राई हुई थी और वह मुश्किल से अपने को सम्हाले हुए था॥

काउ०। नहीं जनाब सो नहीं हो सकता आप वादा कर चुके हैं और मैं शनिवार को छः बजे आप की राह देखूंगा। अगर आप नहीं आवेंगे तो मैं समझ लूंगा कि उस मकान मे जो बीस वर्ष तक बन्द पड़ा रहा जरूर कोई भयानक दुर्घटना हो चुकी है जिससे आप वहां आते हिचकते हैं ॥

बिल०। नहीं नहीं नहीं, वह बात नहीं है—मैं जरूर आऊँगा ॥

काउ०। धन्यवाद ! अच्छा अब आज्ञा दीजिये ॥

मैडम०। हां आप जाया चाहते थे जब इस बात ने आपको रोक दिया मगर आप शायद किसी जरूरी काम से जा रहे हैं ॥

काउ०। जी जरूरी तो नहीं है पर फिर भी मैं ऐसी जगह जा रहा हूं जिसे देखने की मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी मगर डर-झिझक और आश्चर्य से हिम्मत नहीं होती थी ॥

मैडम०। डर झिझक और आश्चर्य !! ऐसी कौन सी चीज ?

काउ०। मैं तार घर देखने जा रहा हूं॥

मैडम०। वाह वाह, वह भी क्या कोई डर या आश्चर्य की चीज है !!

काउ०। जी हां मैं तो बेशक उसे ऐसाही समझता हूं। प्रायः मैं पहाड़ियों पर इन लम्बे लम्बे हाथ पांव की तरह फैले हुए लक्कड़ों को तरह २ से हिलता हुआ देखा करता और आश्चर्य किया करता था कि आखिर इनका मतलब क्या है। क्या अद्भुत खबर वे ले या दे रहे हैं या किस प्रकार के इशारे कर रहे हैं। मेरे ध्यान में वह तार भूत प्रेत पिशाच सभी कुछ था (हँस कर) खैर जो कुछ भी हो आज मैं हिम्मत करके उसे देखने चला हूं॥ *

मैडम०। तो आप कौन सा तारघर देखने चले हैं?

काउ०। कुछ ठीक नहीं, जहां चला गया! आजकल किधर से सबसे ज्यादा खबरें आ जा रही हैं?

विल०। स्पेन वाली लाइन से, उसका सबसे नजदीकी स्टेशन 'बेयोन' सडक पर है। अगर आपको जानाही है तो फिर जल्दी कीजिये क्योंकि दो घण्टे में

* आज कल के जमाने की तरह बिजली से तार खबर उन दिनो आती जाती न थी। ऊचे ऊचे टीलो या पहाडियो पर बुर्ज बना बना कर उस पर काठ के तरह के लकड लगा और उन्हीं को हिला डुला कर इशारे से खबरें भेजी जाती थीं जैसा कि आज कर झडियो के इशारे से खबरें भेजी जाती हैं॥

अँधेरा हो जायगा तो फिर आप कुछ भी देख न सकेंगे॥

काउएट० ओहो तब तो मैं अभी जाता हूं। अच्छा शनिवार सन्ध्या छः बजे !! याद रखियेगा !!

विलफोर्ट के महल के दरवाजे पर काउएट को वे दोनों नोटरी मिले जो नौटीर का वसीयतनामा लिख कर और आपस ही में एक दूसरे के होशियारी की तारीफ करते हुए जा रहे थे॥

नौवां बयान।

चूहे दूर करने का उपाय।

उसी रोज नहीं बल्कि दूसरे दिन सुबह को कौएट टेलीग्राफ देखने निकला। आप पास के कई तार घरों को छोड़ता हुआ वह "लीनास" नामक गाँव में चला गया जहां का निराले में पड़नेवाला तारघर एक ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ था। नीचे से एक पगडण्डी पहाड़ी के ऊपर तारघर तक चली गई थी जिसपर काउएट चढ़ने लगा॥

ऊपर पहुंच कर काउएट को एक प्रकार के पेड़ों की चारदीवारी मिली जिसमें एक मामूली बांस का दरवाजा लगा हुआ था। काउएट ने इसे खोला और अपने को एक आठ हाथ चौड़े और बारह हाथ लम्बे बाग में पाया। बागीचे के दूसरी तरफ वही बुर्ज था जिसपर

टेलीग्राफ की लम्बी लम्बी बाहें लटक रही थीं॥

इस जरा से बागीचे के अन्दर ही चलने के लिये बनी लाल कङ्कड़ों से पटी सड़क, फूलों के पौधे, फलों के पेड़ और सुन्दर फूलों से भरी लताएं मौजूद थीं। बीस गुलाब के पेड़ थे जिसमें एक भी सूखी पत्ती नजर नहीं आती थी और एक बैर के पेड़ में गिनती के मगर खूब पक्के फल लगे दिखाई पड़ रहे थे जिन्हें देख काउण्ट मन ही मन सोच रहा था—या तो इस तारघर का नौकर अपने हाथ से अपने बागीचे की परवरिश करता है या कोई माली रखता है॥

यही सोचता हुआ वह बैर के पेड़ के आगे बढ़ाही चाहता था कि एक बूढ़े आदमी से उसकी टक्कर होगई जो उसी जगह झुका हुआ नीचे की सूखी पत्तियें और बैर अपनी झोली में रख रहा था। काउण्ट को देख वह चिहुंक कर खड़ा हो गया और घबराहट में उसकी झोली के फल और पत्ते जमीन पर गिर पड़े॥

काउण्ट०। ओह माफ करना मैंने तुम्हारे काम में हर्ज डाल दिया। तुम अपने बैर चुन रहे हो, चुन लो मेरे सबब से अपने काम में हर्ज न करो॥

बूढ़ा०। जी हां जी हां, मैं चुन लेता हूं। अभी दस बाकी हैं कुल इक्कीस हुई थीं उनमें से ग्यारह यह हैं—बारह तेरह चौदह पन्द्रह सोलह सत्रह अट्ठारह—हैं तीन और कहां गईं! अभी कल ही मैंने इक्कीस गिनी हैं!! जरूर इक्कीस थीं! तो तीन कहां गईं? जरूर यह

बुढ़िया सीमन के पाजी लड़के का काम है मैंने कल उसे इसी जगह घूमते देखा भी था। पाजी नालायक !! बागीचे के फल चोरी करना सीखा है आगे चलकर न जाने क्या करेगा॥

काउण्ट०। बेशक यह अफसोस की बात है मगर वह भी आखिर लड़का ही तो है॥

बूढ़ा०। हां सो तो है मगर बात तो दुखदाई है— परन्तु महाशय आप शायद कोई अफसर हैं जिनका मैं समय नष्ट कर रहा हूं॥

का०। बल्कि मैं तो देखता हूं कि खुद ही तुम्हारा समय नष्ट कर रहा हूं क्योंकि मैं तो सिर्फ मुसाफिर हूं घूमता फिरता इधर आ निकला॥

बूढा०। जी कुछ नहीं, मेरा समय बहुमूल्य नहीं है पर फिर भी सरकार का है। मैं सिर्फ बीस मिनट के लिये यहां आ गया क्योंकि मेरे जोड़ीदार ने इशारा कर दिया कि बीस मिनट के लिये खाली है। दस मिनट बीत चुके और दस मिनट के बाद फिर मुझे अपने ठिकाने पहुंच जाना होगा। मगर महाशय, कहीं मेरे बेर चूहे तो नही खा गये !!

का०। सम्भव है चूहे ही खा गये हों- क्या तुम्हारे बाग में चूहे हैं ?

बूढा०। ओह कुछ न पूछिये। पर साल मेरे उस पेड़ मे चार सेब हुए उनमें से तीन खा गये, वह देखिये इधर वाले पेड़ में एक ही अनार हुआ था उसका भी आधा

खा गये। मैंने वैसा अनार फिर कभी नहीं खाया, बड़ा ही मीठा था॥

काउरट०। क्या तुम वह अनार खा गये !!

बूढ़ा०। जी हां क्या करता, आधा ही खाना पड़ा। मगर अबकी वैसा नहीं होने पावेगा, मैं रात रात भर जाग कर पहरा दूंगा देखूँ अबकी कम्बख़्त कैसे खा जाते हैं—और फिर दुष्ट चूहे सब से अच्छे फल पर ही दाँत मारते हैं इस पाजी लड़के की तरह जो मेरे तीन सब से अच्छे बेर तोड़ ले गया॥

औरट क्रौटो ने काफी देख लिया था। जिस प्रकार हर एक फल का कोई कीड़ा होता है उसी प्रकार हर एक मनुष्य के चित्त में कोई न कोई आशा इच्छा या शौक बना रहता है। इस बूढ़े का शौक मालीपना था। इस थोड़ी सी जगह में वह पूरे बाग का सुख उठाया चाहता था। अस्तु काउरट ने बेर पेड़ से सूखी पत्तियां तोड़ना शुरू कर दिया जिससे बूढ़े का दिल उसकी तरफ खिंच गया॥

बूढ़े ने अपने बेर तोड़े, सूखी पत्तियें इकट्ठा कर एक कोने में डालीं और बाग की सफाई की। इस बीच में काउरट उससे तरह तरह की बातें करता जाता था। थोड़ी देर बाद बूढ़े ने काउरट से पूछा—"क्या आप तारघर देखने आये हैं ?"

काउरट०। हां अगर कोई मनाही न हो तो ?

बूढ़ा०। नहीं कोई मनाही तो नहीं है। (एक धू

घडी की तरफ देखकर) मेरी छुट्टी के बीस मिनट बीत चले अब मुझे अपनी जगह पर जाना होगा—अगर चाहें तो आप भी चलिये ॥

काउएट० । हां हां चलो ॥

आगे आगे बूढ़ा और उसके पीछे काउएट उस बुर्ज में पहुंचे । बुर्ज मे कुल तीन मंजिल थी और हर एक मे आने जाने के लिये काठ की सीढी थी। नीचे की मंजिल में बूढे का कुछ सामान फरसा कुदाली वगैरह था, बिचली मंजिल मे उसके सोने और खाना पकाने का इन्तजाम था और सब से ऊपर की मंजिल में वह जगह थी जहां बैठकर तार के इशारे देखे और दूसरी तरफ वाले तारघर को बताये जा सकते थे । यहां लोहे के दो मुठ्ठे लगे हुए थे जिनके घुमाने से बाहर को बने हुए लकड़ी के टुकड़े तरह तरह से हिलते और बँधे हुए इशारे से खबर लेते देते थे । सामने एक खिड़की थी जिसमे दूर की एक दूसरी पहाडी पर बना हुआ तारघर दिखाई देता था । बूढ़े ने यह सब काउएट को दिखाया ॥

काउएट० । यह सब चीज है तो बड़ी ही दिलचस्प मगर तुम्हें कठिन तो जरूर होगा ॥

बूढा० । जी हां, दिन भर बैठे बैठे उधर देखना पड़ता है कब क्या खबर आ जाय ॥

का० । मैंने सुना है कि तुमलोग खुद उन खबरों को नही समझते सकते जो आती जाती रहती हैं ॥

बूढा० । जी हां इतनी ही तो कुशल है क्योंकि ऐसा

होने से फिर हमारे ऊपर किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं रहती। खास तरह के इशारे एक तरफ से हमें हुए और हमने दूसरी तरफ उन्हें बढ़ा दिया। बस काम खतम॥

काउण्ट०। तुमने उन इशारों को कभी समझने की कोशिश नहीं की?

बूढ़ा०। जरूरत?

काउण्ट०। अच्छा तुम्हें तनखाह क्या मिलती है?

बूढ़ा०। चालीस रुपया महीना॥

काउण्ट०। यह तो बहुत कम है॥

बूढ़ा०। हां पर फिर हमें रहने की जगह भी तो मुफ़्त मिलती है॥

काउण्ट ने कुछ निराशा के साथ मनही मन कहा, "क्या वास्तव में इस आदमी के दिल में कोई आकांक्षा ही नहीं है! फिर मेरा काम कैसे होगा?" थोड़ी देर बाद उसने फिर पूछा, "यह सब काम सीखने में क्या बहुत समय लगता है?"

बूढ़ा०। नहीं मगर कुछ समय तक शागिर्दी करनी पड़ती है वह बड़ी बुरी। शागिर्दी करके इशारे वगैरह समझने पड़ते हैं॥

काउण्ट०। कैसे इशारे?

बूढ़ा०। यही कुछ बँधे हुए खास खास इशारे जैसे "तैयार हो जाओ" "आध घंटे की छुट्टी" वगैरह॥

काउण्ट०। वह देखो क्या तुम्हारा जोड़ीदार तुम्हें

कुछ इशारा कर रहा है॥

बूढ़ा०। हां ठीक है यह पूछता है कि क्या तुम तैयार हो?

काउण्ट०। और तुम जवाब देते हो?

बूढ़ा०। हां एक इशारे से जो उसे तो कहता है कि मैं तैयार हूं और इस तरफ वाले दूसरे जोड़ीदार को बताता है कि तैयार हो जाओ॥

काउण्ट०। वाह वाह बड़ी कारीगरी है। अब कोई खबर आवेगी?

बूढ़ा०। हां पांच मिनट में॥

काउण्ट ने मन ही मन कहा, "पांच ही मिनट में मुझे अपना काम पूरा करना चाहिये॥"

काउण्ट०। तुम्हे बगीचे के काम से बड़ा शौक है?

बूढ़ा०। हां बड़ा॥

काउण्ट०। मगर तुम्हारा बगीचा बड़ा छोटा है? अगर तुम्हें दो बिगहे का एक बागीचा मिल जाय तो क्या करो?

बूढ़ा०। दो बिगहे का? तब तो मैं उसे स्वर्ग बना डालूं॥

काउण्ट०। तुम्हारी तनखाह भी बहुत कम है॥

बूढ़ा०। बस किसी तरह गुजर हो जाती है॥

काउण्ट०। अगर कोई खबर देना भूल जाओ तो?

बूढ़ा०। भूल जाऊं तो दस रुपया जुर्माना॥

काउण्ट०। ओहो! चौथाई आमदनी गायब!

अच्छा अगर कुछ की कुछ खबर देदो तब ?

बूढ़ा०। तब तो नौकरी भी जाय और पेन्शन भी। पचीस बरस की नौकरी के पूरा होने पर पन्द्रह रुपया महीना पेन्शन मिलती है वह भी चली जाय! अस्तु मैं ऐसी भूल कभी करने का नहीं॥

काउएट०। अगर उसके बदले में तुम्हें पन्द्रह हजार रुपया मिले तब ?

बूढ़ा०। पन्द्रह हजार!!

काउएट०। हां हां॥

बूढ़ा०। पन्द्रह हजार रुपया! महाशय आप मुझे डरा रहे हैं!!

काउएट०। धत्॥

बूढ़ा०। मुझे ललचाते हैं!!

का०। बेशक, पन्द्रह हजार रुपया! सोचो जरा!!

बूढ़ा०। आप मुझे देखने दीजिये मेरा जोड़ीदार क्या कहता है!!

काउएट०। नहीं बल्कि तुम इसे देखो॥

बूढ़ा०। यह क्या है?

काउएट०। हजार हजार के पन्द्रह नोट!!

बूढ़ा०। ये किसके हैं?

काउएट०। तुम्हारे॥

बूढ़ा०। (काँपती आवाज से) मेरे!!

काउएट०। हां तुम्हारे!!

बूढ़ा०। ओह मेरा साथी इशारा कर रहा है!!

काउण्ट०। करने दो इशारा॥

बूढा०। महाशय! आपने मेरा ध्यान बँटा दिया, अब मुझे जुर्माना होगा!!

काउण्ट०। सिर्फ दस रुपया!!

बूढ़ा०। मेरा साथी जल्दी मचा रहा है!!

काउण्ट०। मचाने दो, तुम यह लो!!

काउण्ट ने पन्द्रह हजार के नोट उसे दे दिये, बूढ़े ने काँपते हाथों से उन्हें लिया। काउण्ट ने कहा, "मगर इतने से तुम्हारा काम न चलेगा!!"

बूढ़ा०। मेरी नौकरी तो रहेगी?

का०। नही नौकरी भी जायगी क्योंकि तुम कोई दूसरा ही इशारा अपने आगे वाले को दोगे॥

बूढ़ा०। आप क्या कहते हैं! आप किया क्या चाहते हैं?

काउण्ट०। सिर्फ एक दिल्लगी!!

बूढ़ा०। नही नही॥

काउण्ट०। लो यह लो॥

बूढ़ा०। यह क्या है?

काउण्ट०। दस हजार के नोट, वह पन्द्रह और यह दस मिला कर पचीस हजार हुए, इसमे से पांच हजार का तुम एक बड़ा बगीचा खरीद लो बाकी बीस हजार का सूद एक हजार रुपया साल मिलेगा उससे चैन से गुजारा करना न किसी की नौकरी न जुर्माना! पाच हजार में तो तुम्हें दस बिगहे का बागीचा मिल

जायगा ॥

बूढ़ा०। दस बिगहे का !!

काउण्ट०। हां और साथ में अस्सी रुपया महीना फिर स्वतन्त्रता !!

बूढ़ा०। हे परमेश्वर !!

का०। लो लो देरी न करो !!

बूढ़े ने कांपते हाथों से ये नोट भी ले लिये और कहा, "मुझे करना क्या होगा ?"

काउण्ट ने एक कागज उसके आगे रक्खा जिसपर तीन इशारे क्रम से बने हुए थे। काउण्ट ने कहा, "बस ये ही इशारे तुम अपने आगे वाले को भेज दो, देखो कोई मुश्किल काम नहीं है॥"

बूढ़ा०। जी हां पर. . .

का०। बस यह कर दो और दस बिगहे का बगीचा और अस्सी रुपया महीना तुम्हारा हो जायगा। पचासों सेव अनार मिलेंगे, चूहे भी तुम्हारा फल न खा सकेंगे। खूब पक्के पक्के बैर खाना !!

काउण्ट बाजी मार ले गया, काँपते हाथों से और माथे से पसीने की बूंदें गिरती हुई बूढ़े ने वे ही इशारे जो कागज पर लिखे थे क्रमानुसार अपने आगे वाले साथी को कर दिये। उसके पीछे वाला जोड़ीदार ताज्जुब के साथ घवड़ाता ही रह गया कि आज बूढ़े को क्या होगया है और इशारे उलटे पुलटे क्यों भेज रहा है मगर उसकी तरफ किसी ने ध्यान ही न दिया। उधर

बाईं तरफ के तार वाले ने वह खबर ज्यों की त्यों मन्त्री तक पहुंचा दी॥

मौण्ट क्रीटो ने कहा, "अब तुम अमीर हो?"

बूढ़ा बोला, "हां मगर किस बदौलत!!"

मौण्ट क्रीटो ने गम्भीरता से कहा, "मेरे दोस्त मैं तुम्हें पश्चात्ताप में नहीं डाला चाहता अस्तु सुन लो कि तुमने कोई खोटा काम नहीं किया है, तुमने विधाता की इच्छानुसार ही किया है॥"

इस तार के मन्त्री तक पहुंचने के पांच ही मिनट बाद डिग्ले ने अपनी गाड़ी कसवाई और बड़ी हड़बड़ाहट में महाजन डङ्गली के घर पहुंचा। बैरोनेस बैठी थी जिससे उसने पूछा, "क्या तुम्हारे पति के पास स्पेन के प्रामेसरी नोट भी हैं?"

बैरोनेस ने जवाब दिया, "बेशक! और साठ लाख रुपये के!!"

डिग्ले०। तो उनसे कहो कि जो दाम मिले उतने ही पर उसे बेच डाले॥

बैरो०। क्यों? क्यों?

डिग्ले०। क्योंकि स्पेन का कैदी बादशाह छूट गया और अपने मुल्क में पहुंच गया। स्पेन की वर्तमान सरकार के प्रामेसरी नोटों की अब कुछ कीमत न रहेगी॥

बैरो०। (घबड़ा कर) क्या वास्तव में! तुम्हे कैसे मालूम?

डिग्ले ने गर्दन फेर कर कहा, "अह! मुझसे पूछती

पढ़ने योग्य पुस्तकें।

परिणाम—

एक अति उत्तम सामाजिक उपन्यास है। दुष्कर्मों और सुकर्मों दोनों का परिणाम इस "परिणाम" में देखिये— ।।।)

प्रभात सुन्दरी—

हिन्दू धर्म के कट्टर विरोधी 'काला पहाड़' का नाम आपने भी सुना होगा, कहा जाता है किसी समय में वह हिन्दू ही था। घटना क्रम से किस तरह वह मुसलमान हुआ और उसके कर्मों का क्या फल हुआ यह इसमें पढ़िये— ।।।)

महारानी पद्मावती—

वीर रस का अद्भुत नाटक हुआ है, अलाउद्दीन ने जब चित्तौड़ पर चढ़ाई की थी और जब चित्तौड़ के सब राजपूत लड़ाई के खेत में और सब स्त्रियां चिता की आग में काम आई थीं तब का हाल लिखा गया है— ।)

मदालसा—

पौराणिक घटना के आधार पर लिखा गया है— ।)

मीराबाई—

प्रसिद्ध भक्त की जीवनी— ≈)

मोतियों का खजाना—

फ्रान्सीसी लेखक एलेकजेण्डर ड्यूमस का नाम आपने भी सुना होगा उसकी सर्वोत्तम पुस्तक 'दि कौण्ट आफ मौण्ट क्रिस्टो' हुई है। यह मोतियों का खजाना उसी पुस्तक का अनुवाद है। हम जोर दे कर कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा में इससे रोचक और विचित्र घटना पूर्ण उपन्यास कम ही पाये जायँगे— ४)

रणवीर—

रेनाल्ड साहब के—"उमरपाशा" का अनुवाद। प्रसिद्ध पुस्तक

॥ श्रीः ॥



मोतियों का खजाना।

नैावां हिस्सा।

पहिला बयान।

भूत।

पहिली निगाह में ग्राटविल वाले मकान में कोई ऐसी बात दिखाई नहीं पड़ती थी जैसा कि कोई मशहूर कैाएट ग्राफ मैाएट क्रीटो के मकान के बारे में सोचता पर मकान की बाहरी सादगी खास कैाएट के ही हुक्म से ज्यों की त्यों रक्खी गई थी ग्रैार भीतर जातेही उस काया पलट का पता लगता था जो बर्टूशियो ने तीन ही दिन में वहां कर दी थी। दरवाजा खुलते ही सीन एकदम बदल जाता था। सामने का छोटा मैदान जो पहिले बिल्कुल खाली था इस समय बड़े बड़े ग्रैार लह-लहाते हुए सायदार पेड़ों से भरा हुआ था ग्रैार उन पत्थरों के बजाय जो पहिले वहां लगे थे ग्रैार जिनके बीच में से घास बाहर निकल पडी थी ग्रब हरी हरी दूब का सुन्दर रमना था जो कि ग्राज ही लगाई गई

और उसने मैडम को हाथ का सहारा दिया। बैरोनेस ने उसका हाथ कुछ इस ढङ्ग पर पकड़ा जिसपर और किसी का ध्यान तो नहीं पड़ा मगर काउण्ट ने जिसकी तेज निगाह सब पर पड़ रही थी अवश्य गौर किया और देखा कि एक छोटा पुर्जा मैडम ने आसानी से डिक्के के हाथ में दे दिया। जिस सहूलियत के साथ यह काम हुआ उससे काउण्ट समझ गया कि ऐसी कार्रवाई इन दोनों से हुआ ही करती है॥

अपनी स्त्री के पीछे मि० दङ्गली भी गाड़ी से उतरे जिनका चेहरा इस तरह पीला हो रहा था माना अपनी गाड़ी नहीं बल्कि क़ब्र के बाहर आ रहे हों। मैडम दंगली की एक निगाह मकान के सामने के हिस्से, मैदान और बाग पर पड़ी और एक तरह का उद्वेग उसकी सूरत से प्रगट होने लगा जिसे यद्यपि उसने तुरत ही छिपा लिया मगर काउण्ट की तेज नजरों ने उसे देख ही लिया॥

काउण्ट ने उसे बड़ी इज्जत से लिया और साहब सलामत के बाद ही मैडम दङ्गली ने मारल की तरफ घूमकर कहा, "महाशय! यदि आप मेरे दोस्त होते तो मैं जरूर पूछती कि क्या आप अपना घोड़ा बेचेंगे?"

मारल इस सवाल पर मुस्कुराया मगर उसके दिल से एक आह सी निकल पड़ी और उसने इस निगाह से काउण्ट की तरफ देखा मानो इस आफत से छुटकारा मांगता हो। मौण्ट क्रीटो उसका मतलब समझ गया और तुरत ही मैडम से बोला, "आह मैडम! आपने यह

बात मुझसे क्यों न कही ? मैं जरूर आपकी इच्छा पूरी करता मगर मुझे अफसोस है कि मि० मारल ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने इस शर्त पर अपने उस घोड़े को लिया है जो बहुत ही बदमाश यद्यपि तेज है कि छः महीने के अन्दर उसे सीधा कर देंगे । इस लिये अब वे अगर अपना घोडा आपके हाथ बेच दें तो उनके दोस्त जरूर कहेंगे कि वे हार मान कर उसे निकाल रहे हैं और अपनी शर्त पूरी नहीं कर सकते ! और यह एक ऐसी बात है जिसे स्पाही पलटन का कप्तान एक सुन्दर औरत की इच्छा पूरी करने के लिये भी नहीं कर सकता जो मेरी समझ मे तो दुनिया का सबसे भारी फर्ज है ॥"

मारल ने कृतज्ञता की नजर काउण्ट पर डालते हुये कहा, "मैडेस ! आप अब मेरी लाचारी समझ गई होंगी ॥"

मि०डब्ली०। मगर तुम्हारे पास तो खुद ही बहुत से घोडे हैं !!

वैरोनेस ऐसी बातों को चुपचाप नहीं सुना करती थी पर आज न जाने क्यों तरह दे गई और ऐसा भाव बना लिया मानो सुना ही नहीं, काउण्ट को उस की इस सिधाई पर ताज्जुब मालूम हुआ मगर उसने किसी तरह इसे प्रगट न किया और मैडम से बातें करता हुआ कमरे की चीजें उसे दिखाने लगा । दर्वाजे के दोनो तरफ दो चीनी मिट्टी के बड़े भारी २ बरतन थे जिनमें समुद्री पौधे लगे हुए थे, मैडम उन्हें देख ताज्जुब में डूब कर

बोली, "श्रोह ! इतने भारी भारी बरतन ! इनमें तो बड़े से बड़ा पेड़ लगाया जा सकता है !! ये बरतन बने कहां !!"

कौएट०। मैडम ! ये सब आज कल के नाजुक और सूफियाने जमाने की चीजें नहीं हैं, ये एक दूसरेही युग की कारीगरी है !!

मैडम०। कब की ? कहां की ?

कौ०। मैं ठीक ठीक तो नहीं कह सकता पर इतना मैंने सुना है कि चीन के एक बादशाह ने एक भट्ठी बनवाई थी जिसमें इस तरह के बारह बरतन तपाये गये थे। दो तो बहुत आंच के सबब फूट गये और बाकी दस घटना-वश समुद्र में डूब गये। समुद्र ने उन्हें बालू मिट्टी पेड़ और लताओं से ढांक दिया और छोटी मछलियों ने इन्हें अपना घर बनाया। दो सौ बरस तक ये इसी तरह दबे रहे क्योंकि वह बादशाह जिसने इन्हें बनवाया था मारा गया। दो सौ बरस के बाद पुराने कागजों में इन बरतनों के बनने और डूबने का हाल मिला और इनके निकालने की कोशिश हुई। गोतेखोर नीचे समुद्र में उतरे और बहुत मुश्किल से इनका पता लगा। इसमें से केवल तीन बचे थे बाकी टूट गये थे। मैं ऐसी चीजों का शौकीन हूं इसलिये ये बरतन मैंने ले लिये जिन पर शायद भयानक और अद्भुत जीवों ने अपनी हरी आंखें डाली होंगी या कमजोर मछलियों ने जिनमें छिप कर अपने दुश्मनों से रक्षा पाई होगी॥

इधर दङ्गली जिसे पुरानी चीजों से कोई शौक नहीं था किसी दूसरे ही खयाल में डूबा हुआ एक उम्दे नारंगी के पेड़ की कलियों को तोड़ रहा था। नारंगी हो चुकने पर उसने दूसरे पेड़ पर हाथ डाला पर यह एक कंटीला पौधा था और हाथ डालते ही एक कांटा ऐसा चुभा कि चौंक कर दंगली ने हाथ हटा लिया और इस तरह चिहुंका मानों नींद से उठा हो। मौण्ट क्रीटो ने उससे कहा, "आपके पास तो कीमती तस्वीरों का बहुत ही उम्दा ज़खीरा है इस लिये मैं अपनी तस्वीरों की तारीफ नही कर सकता पर तौ भी यह देखिये दो होब्बेमा, एक पालपाटर, एक मीरिस, एक रैफेल, एक वानडाइक एक जटवरन और दो तीन मुरिल्लो की बनाई तस्वीरें हैं जो देखने लायक हैं॥

डिब्रे०। ठहरिये! होब्बेमा की यह तस्वीर तो मैंने कहीं देखी है॥

कौण्ट०। हां!!

डिब्रे०। हां यह सरकारी अजायबघर में रखने के लिये पसन्द की गई थी॥

कौण्ट०। वहां तो मैं समझता हूं होब्बेमा की बनाई कोई तस्वीर नही है॥

डिब्रे०। नहीं पर फिर भी उन्होंने लेने से इन्कार किया॥

शेटू रेनाड०। क्यों?

डिब्रे०। तुम्हें नही मालूम!! क्योंकि सरकार के

कौन हैं ?"

कौएट ने कहा, " आपने सुना-केवेलकन्टी ॥"

दंगली० । मगर कुछ और परिचय ?

कौ० । आप शायद इटली वालों को नही जानते ! ये केवलकन्टी बादशाहों की औलाद और शाही घराने मे से हैं ॥

दंगली० । इनके पास रुपया है ?

कौएट० । बेहिसाब !!

दंगली० । ये क्या करते हैं ?

कौएट० । बस उसे खर्च करने की कोशिश किया करते हैं, मगर आपको तो इनसे वास्ता पड़ने वाला है और मैंने खास करके आप से उनका परिचय करा देने के लिये ही इन्हें यहां बुलाया है ॥

दंगली० । ये लोग फ्रान्सीसी भाषा बहुत साफ बोलते हैं ॥

कौएट०। हां लड़के ने यही शिक्षा पाई है, मारसेलीज या उसके आस पास के किसी स्कूल में, आप उसे बड़ा उत्साही पाइयेगा ॥

मैडम दंगली०। उत्साही ? किस विषय में ?

कौएट० । फ्रान्सीसी लेडियों के विषय में ! उसने निश्चय किया है कि पेरिस की ही किसी लेडी से शादी करेगा ॥

दंगली० । (तुच्छता से) बड़े ऊँचे दिमाग हैं ?

मैडम ने अपने पति पर ऐसी निगाह डाली जो दूसरे

मैाकों पर उठते हुये तूफान की सूचना कही जा सकती थी पर फिर उसनें अपने के रोका। काउएट ने मैडम से पूछा, "मि० दंगली आज कुछ सोच में पड़े हैं क्या सरकार उन्हें अपने मंत्रिदल मे तो शामिल नहीं किया चाहती ?"

मैडम०। नहीं बल्कि मैं तो समझती हूं कि उन्होंने कुछ लेन देन किया है और उसमें घाटा हो गया है॥

वैपटिस्टिन ने 'मिस्टर और मैडम बिलफोर्ट' के आने की इत्तला दी और इन दोनों ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा। मि० विलफोर्ट की सूरत से उद्विग्नता प्रगट हो रही थी और जब कैाएट ने उससे हाथ मिलाया तो उसने देखा कि विलफोर्ट का हाथ कांप रहा है। कैाएट ने अपनी निगाह मैडम दंगली पर डाली जो मैडम विलफोर्ट के गले लगा रही थी और मि० विलफोर्ट से मुस्कुरा कर कुछ कह रही थी। उसने दिलही में कहा, "औरतें ही भेद छिपाना जानती हैं॥"

थोड़ी देर बाद कैाएट ने बर्टूशियो के एक कमरे से दूसरे में जाते देखा। वह उसके पास पहुंचा और बोला, "क्या है ?"

बर्टू०। हुज़ूर ने अभी तक यह नहीं बताया कि मेह-मान कितने हैं॥

कैाएट०। हां ठीक है, अच्छा गिन लो॥

बर्टू०। क्या सब आ चुके हैं ?

कैाएट०। हां॥

बर्ट्शियो ने कमरे के अन्दर निगाह की जिसका दर्वाजा खुला हुआ था। यकायक वह चौंक पड़ा, कौएट ने पूछा, "क्या है ?"

बर्ट्०। वह औरत ! वह औरत !!

कौएट०। कौन ?

बर्ट्०। वही सफेद पोशाक वाली सुन्दर औरत, बहुत से हीरों वाली !!

कौएट०। मैडम दंगली ?

बर्ट्शियो०। मैं नाम तो नहीं जानता पर है यह वही औरत ॥

कौएट०। कौन ?

बर्ट्०। वही बागीचे वाली, जिसे पेट था, जो बगीचे में टहलती हुई राह देख रही थी ॥

बर्टशियो की सूरत पीली पड़ गई और रोंएं खड़े हो गये थे। कौएट ने पूछा, "किसकी राह देख रही थी ?"

बर्ट्शियो ने जवाब न दे कर विलफोर्ट की तरफ इशारा किया और टूटे फूटे शब्दों मे कहा, "वह, वह, क्या आपने देखा, वह आदमी ?"

कौएट०। मिस्टर विलफोर्ट ? मोस्योरर ? हां हां मैं उन्हें देख रहा हूं ॥

बर्ट्०। तो क्या मैंने उसे नहीं मारा ?

कौएट०। बर्ट्शियो ! मैं देखता हूं तुम पागल हो रहे हो !!

बर्ट्० । तो क्या वह मरा नहीं ?

कौएट०। जब तुम्हारी आंखों के सामने मौजूद है तो मरा कैसे ? या तो तुम्हारा जख्म ठीक ठिकाने पर नहीं लगा और या यह सब तुम्हारे मन की कल्पना भर है। तुम बदले का खयाल करते हुए सो गये होगे और सपने में तुमने वह सब देखा होगा, खैर जो कुछ भी हो, ठढे होवो और गिनो। मिस्टर और मैडम विलफोर्ट दो मिस्टर और मैडम दंगली चार, शेटूरेनाड डिब्रे, मारल सात, मेजर केवेलकन्टी आठ ....''

बर्ट्० । आठ ?

कौएट०। ठहरो तुम तो बड़ी जल्दी में पड़े हुये हो, मेरे एक मेहमान को छोड़े ही जाते हो ? जरा बांएँ हट कर देखो ! एन्ड्रिया केवेलकन्टी, वह नौजवान जो तस्वीर देख रहा है, देखो अब घूमा !!

अगर कौएट की कड़ी निगाह बर्ट्शियो पर न होती तो इस बार वह जरूर चिल्ला उठता, फिर भी उसने कहा, "वेन्डेटो ! वेन्डेटो !!"

कौएट ने कड़ाई से कहा, "बर्ट्शियो ! साढ़े छः बजा !! मैंने भोजन के लिये यही समय कहा था और राह देखना मुझे पसन्द नहीं।" कौएट अपने मेहमानों के पास लौट आया और बर्ट्शियो बड़ी मुश्किल से दी ही बांह का सहारा लेता हुआ रसोईघर तक पहुंचा॥

पांच मिनट के बाद भोजन करने के कमरे का बड़ा दरवाजा खुला और बर्ट्शियो ने कांपती हुई आवाज

में कहा, "भोजन तैयार है ॥"

सब कोई उठ खड़े हुए, काउण्ट ने मैडम विलफोर्ट को सहारा दिया और विलफोर्ट से कहा, "क्या आप मैडम दंगली का साथ देंगे ॥"

विलफोर्ट ने बैरोनेस का हाथ पकड़ लिया और सब कोई भोजन के कमरे में पहुंचे ॥

दूसरा बयान ।

ज्याफत ।

इसमें कोई शक नहीं कि भोजन के कमरे में पहुंच कर सब मेहमानों के दिल में एकही खयाल पैदा हुआ, हर एक अपने २ दिल में पूछने लगा कि वह किस तरह इस अद्भुत आदमी के पास आगया जिसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता था फिर भी जिसके पास से हटना कोई पसन्द नही करता था। काउण्ट की बेहिसाब दौलत पर आदमियों का शक करना मुनासिब था और न लेडियों का ऐसे घर में आना मुनासिब था जहां कोई औरत उनकी खातिर करने वाली न हो पर इस समय और इस विचित्र मनुष्य के सामने औरत मर्द सभों ही का विचार, नियम और परहेज छूट गया, आश्चर्य और कौतूहल ने सभों के दिल मे जगह कर ली और टेबुल के सामने बैठते ही सभों को मालूम हो गया कि कौण्ट ने

यह दावत उनकी भूख मिटाने के वास्ते नहीं दी है बल्कि ताज्जुब बढ़ाने के लिये॥

दुनिया भर के स्वादिष्ट और अलभ्य फल सोने चांदी के बरतनों में लदे हुए थे, विचित्र और सुन्दर चिड़ियायें, अपने अद्भुत रंगीन परों समेत तश्तरियों में सजी हुई थीं। बड़ी बड़ी भारी रङ्गीन और विचित्र मछलियें बड़े बड़े थालों मे रक्खी हुई थीं। एशिया चीन और पुर्तगाल की रङ्गीन शराबें विचित्र बोतलों में भरी हुई थीं जिनकी अद्भुत और तरह तरह की शकलें मानों उनके जायके को और भी बढ़ा रही थीं। मतलब यह कि सब तरह के सामान मेहमानों के आगे इस तरह सजे हुए थे कि खाना तो दूर, देखने ही से आश्चर्य होता था॥

मौएट क्रीटो ने सभों का आश्चर्य देखा और हँसते हुये कहा, "महाशयो! जब आदमी के पास कुछ धन हो जाता है तो उसके लिये दुनिया की गैर जरूरी चीजे ही फिर जरूरी रह जाती हैं। मामूली चीजों की फिर उसे जरूरत नही रह जाती और तब वह ऐसी चीज की खोज में पड़ जाता है जो विचित्र अद्भुत या अप्राप्य है। अब आप सोचिये कि दुनिया मे सबसे विचित्र अद्भुत या अप्राप्य चीज क्या है? वही जो मिल न सके! वही जिसे हम लोग पा न सकें! मेरी जिन्दगी का भी अब एक यही लक्ष है और मैं अलभ्य की ही खोज में लगा रहता हूं। मैं अपनी इच्छाओं को दो चीजों की सहा-

यता से पूरी करता हूं-अपनी इच्छा और अपना धन ! कुछ बातों मे मुझे भी वैसा ही शौक है जैसा मि० दङ्गली को एक नई रेल लाइन खोलने में, मि० विलफोर्ट को किसी मुजरिम को सजा दिलाने में, मि० डिब्रे को एक रियासत को शान्त करने में, और मि० मारल को एक ऐसे घोड़े को काबू में करने में जिस पर कोई चढ़ नहीं सकता ! जैसे यह देखिये आपके सामने ये दो मछलियें हैं, एक तो सेटपीटर्सबर्ग* से भी पचास कोस आगे से आई है और दूसरी नेपल्स† के पास से। क्या एक ही दस्तरखान पर इन दोनो का देखना एक तमाशे की बात नहीं है ?"

दङ्गली० । ये कौन सी मछलियां हैं ?

काउण्ट०। मि० शेटू रेनाड रूस मे रह चुके हैं और मेजर केवेलकन्टी इटली निवासी है। ये दोनों महाशय इन मछलियों के नाम जानते होंगे ॥

शेटू० । यह तो स्टर्लेट है ॥

केवेल० । और यह लम्पे है ॥

काउण्ट०। ठीक है-अच्छा मि० दङ्गली ! अब आप इन महाशयों से पूछिये कि ये कहां मिलती हैं ॥

शेटू० । स्टर्लेट मछलियां सिर्फ वोल्गा‡ में ही

* सेंटपीटर्सबर्ग—रूस की राजधानी ॥

† नेपल्स—इटली का एक बहुत पुराना और मशहूर शहर ॥

‡ वोल्गा—रूस के दक्खिन पूरब के हिस्से में एक नदी है जो

मिलती हैं ॥

केवेल०। और इतनी बड़ी बड़ी लम्मे सिर्फ फुसारो झील* में ही पैदा होती हैं ॥

क्ाउण्ट० । बेशक, एक वोल्गा से आई है दूसरी फुसारो से ॥

यह सुनते ही सब मेहमान बोल उठे, "असम्भव !!" काउण्ट यह सुन मुस्कुरा उठा ॥

का०। बस यही दिल्लगी तो मुझे खुश करती है। मैं भी नीरो † की तरह असम्भव की खोज में हूं। ये मछलियें जो स्वाद में शायद मामूली मछलियो से कम ही होंगी आप लोगों को इसलिये अपूर्व मालूम हो रही हैं कि इनका यहां मिलना असम्भव समझा जाता है। फिर भी ये आपके सामने हैं ॥

दङ्गली० । मगर ये मछलियें यहां आईं कैसे ?

काउण्ट०। बड़े सहज में, हरएक के लिये एक बड़ा बरतन लिया गया। वोल्गा वाली मछली में उसी नदी का जल और पेड़ पौधे डाल कर वह मछली रक्खी गई

कास्पियन सागर में गिरती है। यह पैरिस से लगभग १८०० मील के फासले पर है ॥

* फुसारो झील—इटली की एक बडी और मशहूर झील। यह पैरिस से लगभग ६०० मील पर है ॥

† नीरो—यह रोम के बादशाहों में से एक था अपनी क्रूरता के लिये प्रसिद्ध था पर कुछ लोग इसे भारी विद्वान और खोजी बल्कि फिलासफर कहते हैं। लगभग १८०० वर्ष पहिले हुआ ॥

और एक गाड़ी पर लादकर बारह दिन में यहां पहुंचाई गई। इसी तरह फुसारो की मछली वहीं के जल और पैाधों के बीच मे पड़ी पड़ी यहां पहुंची। दोनों यहां पहुंचने तक जीती थीं, मेरे बावरची ने एक को दूध और दूसरी को शराब में डालकर मारा। मि० दङ्गली! क्या आपको अब भी विश्वास नहीं होता!!

दंगली०। फिर भी विश्वास होना बड़ा कठिन है!!

काउण्ट ने यह सुन कहा, "बेपटिस्टिन! उन दूसरे बरतनों में जो लम्प्रे और स्टर्लेट अभी तक जीती हैं उन्हें मँगवाओ।" हुक्म के साथ ही चार नौकर दो बड़े बड़े देग उठा कर ले आये जिनमें से हरएक मे एक एक उसी तरह की मछली सांस ले रही थी जैसी कि दस्तर-खान पर पड़ी थी। मेहमान लोग ताज्जुब के साथ देखने लगे, दंगली ने पूछा, "इनसे की दो दो मँगाने की क्या जरूरत थी?"

काउण्ट ने लापरवाही से कहा, "शायद एक मर जाय!!"

दंगली०। आप भी विचित्र आदमी हैं! फिलास-फर लोग ठीक कहते हैं कि रुपया होना बहुत अच्छी बात है॥

मैडम दंगली०। सिर्फ रुपया नही दिमाग भी होना चाहिये!!

काउण्ट०। नही मैडम! इसमें मेरी कोई तारीफ नही है, पुराने जमाने में ग्रीक और रोम के लोग ऐसा

कुछ दिन ऐसे ही पड़ा रहता तो जरूर खँडहर हो जाता अस्तु मैंने इसे बेच डाला॥"

काउण्ट०। खास करके इसका एक कमरा तो बड़ा ही भयानक था॥

डिब्रे०। क्यों भयानक क्यों?

का०। अब मैं क्या बताऊं कि क्यों! कुछ जगहें ही ऐसी होती हैं जो उदास और भयानक मालूम होती हैं, जहां जाने ही से चित्त की वृत्ति बदल जाती है। ठहरिये, हमलोगों का भोजन तो अब समाप्त होही चुका है चलिये मैं आप लोगों को वह जगह दिखाऊं, इसके बाद बगीचे में कहवा पीयेंगे॥

काउण्ट ने सभों की तरफ देखा, मैडम विलफोर्ट उठ खड़ी हुई, काउण्ट भी उठा, बाकी के लोग भी उठ खड़े हुए, केवल विलफोर्ट और मैडम दंगली अपनी जगह पर पत्थर की मूर्ति की तरह बैठे रह गये। मैडम दंगली ने कहा, "सुना तुमने!" विलफोर्ट ने कहा— "लाचारी है चलना पड़ेगा॥"

सब कोई उठकर चले गये थे सिर्फ काउण्ट दर्वाजे के पास रुका हुआ इन दोनों की राह देख रहा था। जब ये दोनों भी कमरे के बाहर होगये तो वह सभों के पीछे पीछे चला मगर विलफोर्ट की हालत देख कौण्ट के चेहरे पर एक ऐसी हँसी दिखाई पड़ी कि जिसे विलफोर्ट देखता तो कोसों दूर भाग जाता॥

सब कमरों और बहुत ही खूबसूरती और अमीरी

के साथ सजी हुई जगहों को देखते हुए मेहमान लोग उस कोठड़ी तक पहुंचे जो लाल बनात से मढ़ी हुई थी। और कमरों का तो सजाव नया कर दिया गया था मगर इसका ज्यों का त्यों था, दूसरे इसमें अभी तक रोशनी भी नहीं की गई थी केवल यही दोनों बातें इस कोठड़ी को मातमी जाहिर करने को बहुत थीं॥

मैडम विलफोर्ट देखते ही बोली, "वेशक भयानक जगह है!" और लोग भी तरह तरह की बातें करने लगे सिर्फ मैडम दंगली और विलफोर्ट चुप थे॥

का०। देखने ही से जगह मातमी मालूम होती है, ये लाल पर्दे मानों खून से रंगे लगते हैं, ये दोनो पुरानी तस्वीरें मानों यह कह रही हैं—"हमने देखा है!!"

विलफ़ोर्ट यह सुन पीला पड़ गया, मैडम दङ्गली तो यहां तक बेचैन हुई कि एक चौकी पर बैठ गई जो दरवाजे के बगल में रक्खी हुई थी॥

मैडम विलफोर्ट ने यह देख हँसकर कहा—"तुम बड़ी हिम्मतवर हो, तुम उसी जगह बैठ गईं जहां शायद वह भयानक बात हुई है!" सुनते ही मैडम दंगली चिहुंक कर उठ खड़ी हुई॥

काउण्ट०। सिर्फ यही नही यहां एक गुप्त दर्वाजा और सीढ़ी भी है॥

इतना कह काउण्ट ने पर्दा हटा कर वह सीढ़ी भी दिखा दी जो बागीचे मे चली गई थी। सब कोई ताज्जुब के साथ इस पुरानी और डरावनी सीढ़ी को देखने

लगे। काउएट बोला, "क्या आप गुमान कर सकते हैं कि इन्हीं सीढ़ियों की राह कोई पापी हाथ में उस लाश को लिये नीचे उतरा होगा जिसे वह यद्यपि ईश्वर की तो नहीं पर फिर भी मनुष्यों की निगाहों से छिपाया चाहता था !!"

बेटू०। बेशक यह सीढ़ी मुजरिमों के लिये ही बनी हुई मालूम होती है ॥

मैडम दंगली की बुरी हालत हो रही थी, उसकी सूरत पागलों की सी हो गई थी और चेहरा पीला हो रहा था। बड़ी मुश्किल से विलफोर्ट का सहारा लिये हुए वह खड़ी थी जो खुद भी बेचैन हो रहा था। उसकी यह हालत देख डिब्रे घबड़ा कर बोला :—

डिब्रे०। हैं मैडम ! आप क्या बीमार हो रही हैं ! आपका चेहरा एकदम सुफेद हो रहा है ॥

मैडम०। नहीं नहीं कुछ नहीं, मुझे हवा चाहिये, यहां बेहद गर्मी है !!

मैडम विलफोर्ट०। असल बात यह है कि काउएट ऐसी ऐसी भयानक बातें कह रहे हैं कि हम लोगों का कलेजा कांपने लगा है ॥

काउएट०। सचमुच क्या मैडम मेरी बातें सुन डर गई हैं ?

मैडम दंगली०। नहीं नहीं, पर आप ऐसी ऐसी भयानक बातें सोचते हैं और आपके कहने का ढंग ऐसा है कि ये बातें सच मालूम होती हैं !!

का०। नहीं नहीं यह तो अपना अपना सोचने का ढंग है आप भयानक बातें न सोच अच्छी बातें सोचिये, इस कमरे को किसी शान्त और प्रसन्न कुटुम्ब का सोने का कमरा समझिये, इस पलंग को किसी सुन्दर बालक का जन्मस्थान मानिये और इस सीढ़ी को उन डाकूरों और नौकरों के लिये समझिये जो उस तुरत के पैदा हुए लड़के के मां की सेवा करने को आ जा रहे हैं अथवा जिसकी राह एक प्रसन्न पिता अपने प्यारे बच्चे को गोद में लिये नीचे उतरता है ॥

मैडम दंगली पर काउण्ट की इन बातों का असर और भी भयानक हुआ। उसके मुंह से एक हलकी चीख निकली और वह बेहोश हो गई। विलफोर्ट ने उसको सम्हालते हुए कहा—"मैडम बीमार हो गई हैं इन्हें किसी दूसरी जगह ले चलना चाहिये ॥"

काउण्ट०। ओह मैं अपनी दवा की शीशी भूल आया !!

मैडम विल०। मेरे पास है लीजिये ॥

मैडम विलफोर्ट ने एक शीशी निकाली और यह कहकर काउण्ट के हाथ में दे दी, "आपका नुसखा पा मैंने यह दवा बना डाली, मुझे इससे बहुत फ़ायदा भी हुआ ॥"

मैडम दंगली दूसरे कमरे में ले जाकर एक कोच पर लिटा दी गई। काउण्ट ने उस लाल दवा की दो एक बूंद उसकी जबान पर डाली, तुरत उसे होश आ

मि० विलफोर्ट! मैं ठीक कहता हूं न?

विलफोर्ट की आवाज में अब कुछ दम ही नहीं रह गया था, उसने बड़ी मुश्किल से कहा, "हां॥"

मौण्ट क्रीटो ने देखा कि वे दोनों आदमी जिनके लिये उसने यह सीन तैयार किया था अब और नहीं बर्दाश्त कर सकेंगे, अब और आगे बढ़ना मुनासिब नहीं यह सोच उसने कहा, "खैर अब इन दुःखदाई बातों को जाने दीजिये, कहवा तैयार है। चलिये॥"

मैडम दंगली एक कुर्सी पर बदहवासी के साथ गिर गई, काउण्ट ने मैडम विलफोर्ट से कहा, "मैं देखता हूं एक वार फिर आपकी शीशी की जरूरत पड़ेगी॥"

जब तक काउण्ट शीशी लेकर पहुंचे उसके पहिले ही विलफोर्ट ने झुक कर मैडम दंगली के कान में कहा, "मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात कहनी है! मुझसे कल जरूर मिलना॥"

मैडम ने पूछा, "कहां?" विलफोर्ट ने कहा, "मेरे आफिस में! वही सब से मुनासिब जगह होगी।" मैडम बोली, "मैं जरूर आऊंगी॥"

मैडम विलफोर्ट दवा की शीशी लिये हुए आई मगर बैरोनेस ने कहा—"नहीं अब मैं बहुत अच्छी हूं तुम्हे तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं॥"

तीसरा बयान।

भियमङ्ग।

सब से पहिले मैडम विलफोर्ट ने पैरिस लौटने का इरादा जाहिर किया और तब मैडम दंगली भी उठ खड़ी हुई। अपनी स्त्री की मर्जी समझ विलफोर्ट काउएट से विदा हुआ। उसकी स्त्री ने वैरोनेस को भी अपने साथ ले लिया और तीनों आदमी काउएट से विदा हो चले गये। मारल, डिब्रे और शेटू रेनाड अपने अपने घोड़ों पर रवाना हुए और अब सिर्फ दंगली, मेजर और उनके लड़के रह गये॥

काउएट की तेज निगाहों ने विलफोर्ट और मैडम दंगली का सब वर्ताव देखा था अस्तु उसने इस प्रवन्ध में किसी तरह की बाधा न डाली। दंगली मेजर की बातों में इतना फँसा हुआ था कि उसे अपने चारों तरफ क्या हो रहा है इसकी खबर ही न थी अस्तु जब उसने अपने को अकेला पाया तो लाचार काउएट से विदा हुआ। मेजर को अपनी गाड़ी में उसने चढ़ा लिया। एन्ड्रिया की गाड़ी दरवाजे पर मुस्तैद थी वह उसपर चढ़ कर जा सकता था। इन दोनों बाप बेटों ने कौएट से सुन ही लिया था कि उनका सब रुपया महाजन दंगली ही देंगे अस्तु इन दोनो ने महाजन को खुश रखने में किसी तरह की कसर न की, उधर दगली भी देख चुका था कि काउएट ने इन लोगों की बहुत आवभगत की

में जा बैठा और एन्ड्रिया ने टमटम हांकी ॥

अगर दिन का समय होता तो नौजवान और फेशे-नेबुल एन्ड्रिया के बगल में इस बेहूदे आदमी को देख लोग जरूर ताज्जुब करते जो इस समय टमटम के मुला-यम गद्दों पर आराम से पड़ा हुआ था। एन्ड्रिया टमटम हांकता हुआ गांव के बाहर आ गया तब उसने एक निगाह चारो तरफ डाली और जब किसी को न देखा तो गाड़ी रोक दी और बाहें मोड़ अपने साथी की तरफ कड़ी निगाह से देख कहा, "हां अब बताओ कि तुम मुझे तङ्ग करने कहां से आ पहुंचे ?"

अजनबी०। वेन्डेटो ! तुमने मुझे बड़ा धोखा दिया, मुझसे तो अलग होते समय कहा कि पीडमाएट और टस्कनी जाऊंगा और चले आये पैरिस !!

एन्ड्रिया० । तो तुम्हारा क्या बिगड़ा ?

अज० । नही नही मेरा तो और काम बन गया॥

एन्ड्रिया०। काम बन गया ! क्या तुम मुझे दबाया धमकाया चाहते हो ? सो न होगा कदरू !!

कदरू०। नाराज न हो, मैं तुम्हारा साथी रह चुका हूं और तुम्हें लड़के की तरह मैंने प्यार किया है ॥

एन्ड्रिया० । तब ? उससे क्या ?

कदरू० । जल्दी न करो जल्दी न करो !!

एन्ड्रिया० । आखिर कुछ कहो भी तो !!

कदरू० । मैं तो समझता था कि जेल से छूट कर तुम कहीं भीख मांगते होगे या दियासलाई बेचते होगे

यहां यकायक तुम्हें देखता हूं कि साईस भी है टमटम भी है बढ़िया कपड़े भी हैं !!

एन्ड्रिया०। तो तुम्हे जलन पैदा हो गई ?

कदरू०। नहीं नहीं मुझे तो बड़ी खुशी हुई, इतनी खुशी कि मैं तुम्हें मुबारकबादी देने से रुक न सका और लाचार मौका देख तुम्हें रोकना ही पड़ा ॥

एन्ड्रि०। और खूब अच्छा मौका चुना! मेरे नौकर के सामने !!

कदरू०। तो करता क्या बेटा! तुम्हारे पास तेज घोड़ा, हलकी टमटम, तुम खुद बड़े फिसलने वाले, एक दफे हाथ से छटको तो फिर कहां तुम्हारा पता लगे ?

एन्ड्रिया०। मैं अपने को छिपाता तो नहीं ॥

कदरू०। भाग्यवान हो! मैं भी अगर यह कहने लायक होता !! मुझे तो अपने को सभों से छिपाना पड़ता है !! मैं तो समझता था कि तुम मुझे पहिचानोगे नहीं मगर तुमने

एन्ड्रिया०। (गर्म होकर) खैर खैर तुम चाहते क्या हो सो बोलो ?

कदरू०। बेटा बेन्डेटो! तुम मुझे प्यार की नजर से नहीं देखते! मगर होशियार मैं कहीं । न हो जाऊं !!

इस बात ने एन्ड्रिया को नर्म कर दिया और शान्ति के साथ टमटम को फिर हांकते हुए कहा, नहीं कदरू! हम तुम तो दोस्त न हैं। तुम बूढ़े

जिद्दी हो मैं नौजवान और अपने मन की करने वाला हूं, हमलोगों के वीच में डर और धमकी नहीं चलनी चाहिये। क्या इसमें मेरा कसूर है कि जो किस्मत तुमसे नाराज है वह मुझपर प्रसन्न हो गई है ?

कदरू०। क्या तुम्हारी किस्मत तुमपर खुश हुई है ? क्या यह सब घोड़ा गाड़ी कपड़े मंगनी के नहीं हैं ? वाह वाह यह तो और भी अच्छा है !!

कदरू की आंखें हिर्स से चमकने लगीं ॥

एन्ड्रिया०। यह तुम्हें पहिले ही से मालूम होगा। तुम्हारी तरह अगर मैं भी लाल रूमाल बांधे और फटा कोट पहिने होता तो तुम मुझे न पहिचानते !!

कदरू०। वाह वेन्डेटा क्या तुम मुझे ऐसा समझते हो ? और फिर जब तुम मुझे मिल गये तो क्या मैं भी तुम्हारी तरह नहीं हो सकता ? तुम्हारे पास दो कोट हों तो एक मुझे दे देना मैं तुम्हें अपनी आधी रोटी दे दिया करता था ! ओह तुम्हारी भूख भी कैसी तेज थी ! क्या अब भी वैसी ही है ?

एन्ड्रिया०। हां है तो ॥

कदरू०। तुम उस शाहजादे के पास कहां से पहुंच गये ?

एन्ड्रिया०। वह शाहजादा नहीं है सिर्फ काउण्ट है मगर तुम जरा उससे अलग ही रहना ॥

कदरू०। नहीं नहीं मैं तुम्हारी जमा पर हाथ नहीं मारा चाहता, तुम्हारा काउण्ट तुम्हारे ही पास रहे

(डरावनी हँसी के साथ) मगर इसके लिये तुम्हें मुझे भी कुछ देना चाहिये ॥

एन्ड्रिया० । खैर क्या चाहते हो ?

कदरू० । पचास रुपये महीने पर मैं किसी तरह गुजर कर सकता हूं ॥

एन्ड्रिया० पचास रुपये

कदरू०। मगर गरीबी के साथ, हां सौ रुपये महीने मे मैं खुशी से रह सकता हूं ॥

एन्ड्रिया० । (कुछ अशर्फियें जेब से निकाल और कदरू के हाथ मे रख कर) अच्छा लो यह दो सौ रुपये हैं इन्हें लो, और हर पहिली तारीख को मेरे स्टिवार्ड से इतना ही ले लिया करो ॥

कदरू० । (अशर्फी लेकर) ठीक है, मगर मैं तुम्हारे नौकर से लेने की बेइज्जती नहीं वर्दाश्त कर सकता ॥

एन्ड्रिया० । खैर तुम मुझी से लिया करो, कम से कम जबतक मुझे मेरी तनखाह मिलती रहेगी तब तक तुम भी पाते रहोगे ॥

कदरू०। बेशक बेशक ! मैं कहता था तुम बड़े अच्छे आदमी हो, भला तुम ऐसा नही करोगे तो कौन करेगा। मगर यार यह तो कहो कि आखिर तुम्हारी किस्मत यकायक ऐसी पलट कैसे गई ?

एन्ड्रिया० । यह जानने की तुम्हें जरूरत ?

कदरू० । क्या तुम्हें अब भी मेरा विश्वास नही ?

एन्ड्रिया० । नहीं नही, खैर तो सुनो कि मुझे मेरा

बाप मिल गया है ॥

कद्रू०। क्या कहा? बाप? सचमुच!!

एन्ड्रिया०। जब तक मुझे रुपया मिला जाता है तब तक तो सचमुच का ही . ...

कद्रू०। ओहो! उसका नाम क्या है?

एन्ड्रिया०। मेजर केवेलकन्टी!!

कद्रू०। किसने उसे खोज दिया?

एन्ड्रिया०। काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो ने, जिसके मकान से निकलते तुमने मुझे देखा॥

कद्रू०। तो तुम मुझे भी कुछ बनवा दो बाप नहीं दादा ही सही॥

एन्ड्रिया०। अच्छा मैं कोशिश करूंगा मगर अब तुम क्या करने का इरादा करते हो?

कद्रू०। मैं?

एन्ड्रि०। हां तुम, जब तुमने मेरे मामलों में दखल दिया है तो अब मैं तुम्हारे बारे में कुछ जानूंगा!!

कद्रू०। हां हां, मैं किसी निराले मुहल्ले में कोई कोठड़ी ले लूंगा; साफ कपड़े पहिनूंगा, किसी सराय में खा लिया करूंगा और इज्जतदार नानबाई बना बैठा रहूंगा॥

इन्ड्रिया०। सचमुच अगर तुम ऐसा ही करो तो बड़े सुख से रहो! अच्छा अब तुम टमटम से उतरो और जहां जाना हो चल दो!!

कद्रू०। वाह खूब कही!!

एण्ड्रिया०। क्यों ?

कदरू०। जरा सोचो तो सही, कैदियों का सा लाल रूमाल बांधे, फटा कोट फटी जूती पहिने और जेब में अपनी रकम के अलावे तुम्हारे दो सौ भरे जब मुझे कोई पुलिस वाला देखेगा तो क्या कहेगा ? जरूर चोर उचक्का समझ कर पकड़ लेगा ! मुझे कहना पड़ेगा कि फलाने ने यह रुपया मुझे दिया है, जांच होगी, तुमपर भी आंच आवेगी और मैं जो बिना नोटिस दिये टूलोन (काला पानी) से भागा हूं फिर वही नम्बर १०६ हो जाऊंगा, इज्जतदार नानवाई बनने का शौक मन ही में रह जायगा—नही नही बेटा ! सो नही होगा !!

एण्ड्रिया ने गुस्से से दांत पीसा, उसका हाथ कोट के पाकेट में चला गया और एक पिस्तौल के घोड़े को छूने लगा, उधर कदरू भी बेखबर न था, एण्ड्रिया का ढङ्ग देख उसने भी अपना हाथ पीठ के पीछे किया और एक लम्बा छुरा अपने कपड़ों में से निकाल लिया जिसे वह हमेशा अपने साथ रखता था। वास्तव में ये दोनों दोस्त एक दूसरे के लायक थे। एण्ड्रिया का हाथ तुरत जेब से से बाहर आ गया। कदरू का छुरा भी कपड़ो मे छिप गया॥

एण्ड्रिया०। अच्छा तो मैं तुम्हे पैरिस लिये चलता हूं मगर सरहद के सिपाही तुम्हे मेरे साथ देख जरूर शक करेंगे॥

कदरू०। देखो मैं उसका बन्दोबस्त कर लेता हूं॥

साईस का ओवरकोट उसी जगह पड़ा हुआ था जिसे कद्रू ने पहिन लिया और तब एन्ड्रिया की टोपी उतार सिर पर रख लिया। अब वह साईस मालूम होने लगा॥

एन्ड्रिया०। मगर क्या मैं नंगे सिर रहूंगा?

कद्रू०। इतनी तेज हवा बह रही है तुम्हारी टोपी उड़ गई॥

एन्ड्रिया०। वाह, खैर चलो!!

कद्रू०। चलो न मैं तुम्हें रोकता हूं?

एन्ड्रिया ने टमटम हांकी, दोनों आदमी पैरिस की सरहद के भीतर पहुंच गये और किसी ने शक न किया। एक चौमुहानी पर पहुंच एन्ड्रिया ने गाड़ी रोकी, कद्रू उतर पड़ा और एक तरफ चला॥

एन्ड्रिया०। अजी वह कोट और मेरी टोपी तो देते जाओ॥

कद्रू०। क्या तुम चाहते हो मैं ठंढ में मर जाऊं? तुम नौजवान हो मगर मैं तो अब बूढ़ा न हो गया हूं॥

इतना कहता हुआ कद्रू एक तरफ चल दिया। एन्ड्रिया ने एक ऊंची सांस ली और कहा, "अफसोस! इस दुनिया में कोई पूरा सुखी नहीं हो सकता!!"

तीसरा बयान ।

एक वैवाहिक दृश्य ।

एक चौमुहानी पर पहुंच कर तीनों नौजवान अलग अलग हो गये अर्थात् मारल और शेटू रेनाड अपने २ घर की तरफ चले गये मगर डिव्रे अपने घर न जा उस सड़क पर घूमा जिधर मि० दङ्गली का मकान था और ठीक उस समय दरवाजे पर पहुंचा जब मि० विलफोर्ट की गाड़ी अपने मालिकों को उतार कर बैरोनेस को घर पहुंचाने आई और दरवाजे पर रुकी ही थी। डिव्रे ने घर के जानकार आदमियों की तरह अपने घोड़े की लगाम एक नौकर के हाथ में देदी और तब गाडी का दरवाजा खोल बैरोनेस को सहारा दे उतारा। दोनों आदमी मकान के अन्दर पहुंचे और निराशा होने पर डिव्रे ने मैडम दंगली से पूछा, "आज तुम बहुत घबड़ा और बदहवास हो गई थी, क्या मामला था ?"

मैडम० । आज सुबह ही से मेरी तबीयत कुछ नाराज थी ॥

डिव्रे० । नही नहीं, यह बात कभी नहीं थी, जब तुम काउएट के घर में घुसी थीं तो बहुत प्रसन्न थी, वहा जाकर ही तुम्हे कुछ हो गया। मि० दंगली अवश्य कुछ क्रोधित से और बिगड़े हुए मालूम होते थे मगर तुम्हें तो उनकी नाराजी खुशी की कोई परवाह नहीं, आखिर फिर बात क्या है ? जरूर किसी ने तुम्हें कुछ रञ्ज

पहुंचाया है, मुझे बताओ—तुम अच्छी तरह जानती हो कि मेरे सामने तुम्हे कोई रञ्ज नहीं पहुंचा सकता॥

मैडम०। नहीं नहीं लूथियेन! यह सब कुछ नहीं सिर्फ तुम्हारा खयाल है और रहा मेरे पति की बिगड़ेदिली सो उसकी तो मुझे परवाह ही नहीं रहा करती॥

डिब्रे औरतों के स्वभाव से खूब परिचित था, वह जानता था कि नाजुक और खूबसूरत औरतों को कभी कभी ऐसा हो ही जाया करता है अस्तु ज्यादा जिद्द करना मुनासिब न समझ वह चुप हो रहा। मैडम उसे लिये हुए अपने कमरे में पहुंची, वहां उसकी मजदूरनी 'कर्नेली' मौजूद थी जिससे उसने पूछा, "मेरी लड़की क्या कर रही है?"

कर्नेली०। बाजा बजाती थीं अभी अभी सोई हैं॥

मैडम०। मगर अभी तो पियानो बज रहा है॥

कर्नेली०। वह उनकी सखी मैडम "आर्मिली" बजा रही हैं-वे बिछौने पर पड़ी हैं॥

मैडम०। अच्छा मेरे कपड़े बदलो॥

डिब्रे एक कोच पर पड गया और मैडम अपनी लौंडी को लिये भीतर के एक कमरे में अपनी पोशाक उतारने चली गई। थोड़ी देर बाद भीतर ही से उन्होने डिब्रे से कहा—"डिब्रे! तुम तो शिकायत करते थे न कि यूजिनी तुमसे बात भी नही करती!!"

डिब्रे०। (मैडम के खूबसूरत कुत्ते से खेलते हुए) केवल मैंही नही अलबर्ट भी यही शिकायत करता था॥

मैडम०। मगर मैं तो समझती हूं कि वह एक दिन तुम्हारे आफिस में पहुंचेगी ॥

डिब्रे०। मेरे आफिस में?

मैडम०। अजी तुम्हारे मन्त्री के ॥

डिब्रे०। क्यों? किस लिये?

मैडम०। थियेटर में एक जगह पाने की दरखास्त लेकर! यूजिनी को नाचने गाने का बड़ा शौक है! मैंने तो किसी नौजवान फैशनेबुल लड़की को ऐसा गाने का शौकीन देखा ही नहीं ॥

डिब्रे०। (मुस्कुरा कर) अच्छी बात है। यद्यपि उनकी विद्या के लायक देने की सामर्थ तो नहीं है तौ भी अगर वे आपकी और वैरन की आज्ञा से आवेंगी तो हम लोग जरूर उन्हें एक जगह देने की कोशिश करेंगे ॥

मैडम ने अपनी लौंडी को बिदा किया और तब एक तरह की बहुत ही बारीक रेशमी पोशाक पहिरे वे कोठड़ीके बाहर निकलीं और डिब्रे के पास बल्कि उस से सटकर बैठ गईं। मगर उसका ध्यान फिर भी दूसरी ही ओर लगा हुआ था। डिब्रे कुछ देर तक गौर से उसकी सूरत देखता रहा और तब उसका हाथ पकड़ कर बोला, "हरमिन! जरूर तुम्हें कोई चिन्ता है, तुम सच सच मुझसे बतातीं क्यों नहीं?"

मैडम ने कहा, "कुछ नहीं" मगर फिर भी उठकर एक शीशे में अपना मुंह देखने लगीं। चेहरे से तरद्दुद

साफ जाहिर हो रहा था, देखकर बोली, "आज मेरी सूरत बड़ी खराब हो रही है !!"

लूशियन हँसकर उठा और इस बात को काटने के लिये आगे बढ़ा ही था कि कमरे का दरवाजा खुला और यकायक मिस्टर दंगली आते दिखाई पड़े। डिब्रे फिर अपनी जगह बैठ गया। मैडम ताज्जुब की निगाहों से अपने पति को देखने लगीं। महाजन ने अपनी स्त्री और डिब्रे दोनों ही से 'गुड इवनिङ्ग' कहा॥

शायद मैडम यह समझी कि दंगली ने दिन में जो कड़ी बातें उनसे कही हैं उसीके लिये माफी मांगने आये हैं। अस्तु अपने पति के सलाम का जवाब दिये बिना ही शानदारी के साथ वे डिब्रे की तरफ घूमकर बोलीं, "मि० डिब्रे ! मुझे कुछ पढ़कर सुनाओ॥"

डिब्रे मि० दङ्गली के यकायक इस तरह बेमौके आने से कुछ बेचैन हो गया था पर जब उसने मैडम का ढंग देखा तो निश्चिन्त हो गया। उसने एक किताब उठाई मगर महाजन ने रोक कर कहा, "मैडम ! रात के ग्यारह बज चुके हैं, तुम और जागोगी तो बीमार पड़ जाओगी ! मि० डिब्रे का मकान भी यहां से दूर पड़ता है॥"

डिब्रे को काठ मार गया, कुछ इस लिये नहीं कि दंगली की आवाज में कड़ाई या शोखी थी, नहीं बल्कि इस लिये कि आज पहिले पहिल उसने इसे अपनी स्त्री की इच्छा का बाधक होते देखा था। बैरोनेस भी ताज्जुब में आ गईं और उन्होंने एक बड़ी ही कड़ी नि-

गाह बैरन पर डाली पर वे एक अखबार में शेयरों की दर देख रहे थे इससे यह कड़ी निगाह बिल्कुल व्यर्थ गई ॥

मैडम०। नहीं नहीं मि० डिब्रे ! मुझे सोने की कोई भी इच्छा नही है, मुझे तुमसे हजारों बातें कहनी हैं, और तुम्हें सुनना ही पडेगा चाहे तुम्हें खड़े ही खड़े क्यों न नींद आ जाय !!

डिब्रे ने कहा, "मैं हुक्म बजाने के। हाजिर हूं॥"

दंगली०। मि० डिब्रे ! आप मैडम दंगली की नादानी में पड अपनी नींद खराब न करें, वे बातें आप कल भी सुन सकते हैं मगर आज की रात तो मैंही अपने कब्जे में रक्खूँगा और कुछ जरूरी बातें अपनी स्त्री से कहूंगा ॥

अबकी दफे का वार ऐसा सच्चा और ठीक बैठा कि जिसने डिब्रे और मैडम दोनों ही के। डगमगा दिया। दोनों ने एक दूसरे से निगाह मिलाई मानों इस जबरदस्ती से बचाने के लिये मदद मांगी मगर मालिक मकान की ही बात रही और पत्नि तथा प्रेमी के। पति से दबना ही पड़ा ॥

दंग०। मि०डिब्रे ! आप यह न समझें कि मैं आपको बाहर निकाल रहा हूं, नहीं नही, मगर एक बात ऐसी आ पड़ी है कि मुझे अपनी स्त्री से इसी समय कुछ कहना जरूरी हे। गया है। इस तरह का मौका इतना कम पड़ा करता है कि मुझे विश्वास है कि आप कभी

बुरा न मानेंगे ॥

डिब्रे ने कुछ कहा और तब दोनों को सलाम कर वह मन ही मन यह कहता हुआ कमरे के बाहर निकल गया—"ताज्जुब की बात है कि वे ही खसम जिनका हमलोग मजाक उड़ाया करते हैं कितनी जल्दी हम लोगों को दबा लेते हैं !!"

लूशियन के जाते ही दंगली कोच पर बैठ गया और विचित्र चेहरा बना कर कुछ सोचता हुआ कुत्ते से खेलने लगा मगर कुत्ता इसे उतना प्यार नहीं करता था जितना डिब्रे को अस्तु उसने दंगली को काटलिया। चिहुंककर उसने उसकी गर्दन पकड कर उसे दूर फेंक दिया। वह पें पें करता हुआ एक कुर्सी के नीचे जा छिपा ॥

मैडम० । रोज तो तुम सिर्फ गुस्ताख ही रहते थे आज बेरहम भी हो रहे हो, उन्नति कर रहे हो !!

दंगली० । क्योंकि आज मेरा मिजाज रोज से भी खराब है ॥

मैडम० । तो मैं क्या करूं ? अपनी बदमिजाजी अपने साथ रक्खो या अपने क्लर्कों पर निकालो जिन्हें तनखाह देते हो !!

दंगली० । नहीं अपना गुस्सा मैं अपने आफिस वालों पर नहीं निकाल सकता क्योंकि मेरे क्लर्क जितना मुझसे पाते हैं उससे कहीं ज्यादा काम करते हैं, फिर वे ईमानदार हैं और मेरी दौलत के पैदा करने वाले हैं इससे मैं उनपर रञ्ज नहीं हो सकता, गुस्सा मुझे उन पर

आता है जो मेरा रुपया उडाते हैं, मेरा खाना खाते हैं और मेरे घोड़ो पर चढ़ते हैं !!

मैडम०। और ऐसे लोग हैं कौन जो आपका रुपया खाते हैं ?

दंगली०। बताता हूं, बताता हूं, घबड़ाओ मत! ऐसे लोग वे हैं जो एक घटे के अन्दर मेरा सात लाख रुपया उड़ा देते हैं !!

बहुत कोशिश करने पर भी यह बात सुन मैडम का चेहरा पीला पड़ गया और आवाज कांपने लगी मगर फिर भी अपने को सम्हालते हुए उसने कहा—"मैं आपकी बात नहीं समझी !!"

दंगली०। नहीं बल्कि बहुत अच्छी तरह समझी हो, फिर भी लो सुन लो कि मुझे स्पेनिश कागजो की बदौलत सात लाख रुपये का घाटा हुआ है ॥

मैडम०। (मुँह बिगाड कर) तो क्या मैं तुम्हारे घाटे नफे की जिम्मेदार हूं ?

दंगली०। क्यों नही ?

मैडम०। क्या मेरी गलती से तुम्हें सात लाख का घाटा हुआ है ?

दंगली०। कम से कम मेरी गलती से नहीं !!

मैडम०। (कड़ाई के साथ) देखो मैं तुमसे कई बार कह चुकी हूं कि रुपये पैसे का मामला मेरे सामने मत उठाया करो, न तो अपने पहिले पति के यहां और न अपने बाप मां के यहां ही मैंने इन झगड़ों में दखल दिया॥

दंगली०। बेशक ऐसा ही होगा क्योंकि दोनों ही कङ्गाल थे !!

मैडम०। यहां सुबह से शाम तक मेरे कानों में सिर्फ रुपयों की ही झनझनाहट सुनाई पड़ा करती है जिन्हें लोग बार बार गिना ही किया करते हैं और जिसके सबब से मेरे कान बहरे हुए जाते हैं, उससे खराब आवाज एक ही और सुनाई पड़ती है और वह तुम्हारे बोलने की आवाज है॥

दंगली०। सचमुच ! ताज्जुब है ! क्योंकि मैं तो समझता था कि तुमको मेरे मामलों से बड़ा शौक है॥

मैडम०। भला यह बात तुम्हे कैसे सूझी ?

दंगली०। तुम्हीं ने सुझाया॥

मैडम०। मैंने ? कैसे ? कब ?

दंगली०। हां हां सुनो, पिछले फरवरी के महीने में तुमने सपना देखा कि एक जहाज 'हेवर' बन्दर में आया है और उसके द्वारा मेरी एक डूबी हुई रकम मुझे मिलने वाली है। तुम्हारे सपने कैसे सच्चे उतरा करते हैं सो मैं जानता हूं अस्तु सुनतेही मैंने उस हेश्यिन कर्ज के और भी कागज खरीद लिये और चार लाख रुपये का फायदा किया जिसमें से एक लाख मैंने तुम्हें दिया, तुमने जैसे और जो चाहा उस रुपये से किया, मुझसे उससे वास्ता नहीं। खैर उसके बाद मार्च में जब रेलें खुलने की बातें हो रही थीं और सरकार से ठीका लेने के लिये तीन कम्पनियों ने दरखास्त दी हुई थी तो तुम्हारे मन

में निश्चय हो गया कि-(तुम्हारा मन ऐसे मामलों में कितना सच्चा है सो मैं जानता हूं)-वह ठेका 'साउदर्न' नामक कम्पनी के मिलेगा। मैंने उस कम्पनी के जितने शेयर मिल सके खरीद लिये और जब ठीके की बात जाहिर हुई और उन शेयरों की कीमत तिगुनी हो गई तो उन्हें बेच दस लाख रुपये का मुनाफा किया। इसमें से अढ़ाई लाख तुम्हारे जेब खर्च के लिये दिया गया॥

मैडम०। (गुस्से से कांपती हुई) आखिर अपने मतलब पर तो आओ !!

दङ्गली०। घबराइये मत! मैं मतलबही पर आरहा हूं॥

मैडम०। शुक्र है !!

दङ्गली०। अप्रैल में तुम मंत्री के यहां नेवते में गई। वहां तुमने स्पेन के मामले की कुछ गुप्त बात चीत सुनी। मैंने कुछ स्पेनिश कागज खरीद लिये, वहां का राजा निकाल बाहर किया गया और मेरे कागजों ने मुझे छः लाख का मुनाफा कराया। इसमें से डेढ़लाख तुम्हे दिया गया। तुमने अपनी मर्जी मुताबिक उसे खर्च किया। वह तुम्हारी जमा थी इससे मैं कुछ पूछ नही सकता फिर भी इस साल तुम्हें पांच लाख रुपये कुल मिले !!

मैडम०। मिले, तब ?

दङ्गली०। हां हां सुनिये, बस इसके बाद ही सब मामला उलट जाता है। इस बात के तीन दिन बाद मि० डिब्रे से कुछ राज नीति की बाते करते करते तुम्हे मालूम

हो जाता है स्पेन का राजा वहां लौटने ही वाला है। बस मैं अपने शेयर बेचने लगता हूं, घबड़ाहट फैलने लगती है और मुझे अपने शेयर बेचने नहीं बल्कि लुटाने पड़ते हैं। तब दूसरे ही दिन पता लगता है कि वह खबर गलत थी, और इस गलत खबर ने मुझे सात लाख का नुकसान पहुंचा दिया !!

मैडम०। तब ?

इंगली०। तब ? तब यह कि मेरे मुनाफे का चौथाई जब आपने लिया तो मेरे नुकसान में से चौथाई के देनदार भी आप हैं, सात लाख का चौथाई पौने दो लाख होता है ॥

मैडल०। ओह यह सब फजूल बात है, मैं नहीं समझ सकती कि मि० डिब्रे का नाम इस मामले में क्यों शामिल किया जाता है ?

इगली०। इस लिये कि अगर वे रुपये आपके पास नहीं हैं तो जरूर आपके दोस्तों के पास होंगे—और मि० डिब्रे आपके गहरे दोस्तों में से हैं ॥

मैडम०। बेशर्म !!

इंगली०। चिल्लाइये मत मैडम !! यहां नाटक रचने की जरूरत नहीं, नहीं तो मुझे कहना पड़ेगा कि मैं यहीं से मि० डिब्रे को उन पांच लाख रुपयों की जो इस साल आपने उसे दिलाये हैं खुशी मनाते और मन में यह कहते देख रहा हूं कि "वाह ! मैंने भी क्या तर्कीब निकली है–मुनाफा हो तो मेरा नुकसान हो तो तेरा !!"

मैडम०। (गुस्से से भर कर) दुष्ट! क्या तुम्हें पहिले से इन मामलों की खबर नही थी जो इस समय मुझपर ऐब लगाने आये हो?

दगनी०। मैं यह कब कहता हूं कि नहीं थी? मैं तो सिर्फ यही कहता हूं कि तुम आज चार बरस से, जब से हम दोनो ने पति पत्नि का सम्बन्ध छोडा— मेरा बर्ताव देखती आई हो, क्या मैंने कभी कोई खराबी की? हमारी तुम्हारी लडाई होने के कुछ ही दिन बाद तुम्हें उस गवैये से गाना सीखने का शौक हुआ जिसने 'इटली थियेटर' में नाम पैदा किया था, साथ ही मुझे उस मशहूर लंडन की नाचने वाली से नाचना सीखने की इच्छा हुई, इन दोनो शौकों ने मेरा एक लाख खर्च करा दिया मगर मैं कुछ बोला नही क्योंकि एक भले आदमी और उसकी स्त्री को ठीक गाने और नाचने की शिक्षा होनी ही चाहिये और साथही घर में शान्ति भी रहनी ही चाहिये। खैर तुम बहुत जल्दी ही गाने से घबडा गई और तुम्हे राजनीति सीखने की इच्छा हुई, तुमने मन्त्री के सेक्रेटरी से यह विषय पढ़ना शुरू किया मैं भी तब तक कुछ न बोला जब तक तुम अपने पास से खर्च करती रही पर अब मैं देखता हूं तुम मेरे जेब में भी हाथ डालने लगी हो और तुम्हारी यह पढ़ाई मुझे एकदिन में सात लाख का नुक्सान पहुचा सकती है, तो अब वह बात नही हो सकती, या तो राजनीतिज्ञ मुफ्त में पढाया करे नही तो मेरे घर के अन्दर पैर न रक्खे—समझा!!

मैडम०। अब तुम सभ्यता की हद के भी बाहर हो रहे हो॥

दंगली०। तो तुम भी अब भीतर नहीं रह गई हो।! तुमने भी वह कहावत पूरी की है "जैसा खसम वैसी जोरू!!"

मैडम०। बेइज्जती!!

दंगली०। ठीक है मगर इसपर गर्म होने की जरूरत नहीं शान्ति के साथ सुनो—मैंने कभी तुम्हारी भलाई छोड़ और किसी लिये तुम्हारे मामलों में दखल नहीं दिया, तुम भी मेरे साथ वैसाही बर्ताव करो, मेरे कैश-बक्स से तुम्हे कोई वास्ता नहीं है अपने के साथ जो चाहे करो मगर मेरे बक्स को न छेड़ो। और फिर इसका ही क्या सबूत कि यह मंत्री की चाल नहीं है और उसने मुझे बर्बाद करने के लिये ही यह कार्रवाई नही की है?

मैडम०। क्यों नहीं!!

दंगली०। क्यों नहीं क्या? कभी पहिले भी ऐसी बात हुई है? तार की खबर और गलत आवे! दो इशारे और एक दूसरे से बिल्कुल उल्टा? बेशक इसमें मन्त्री की ही शैतानी है!!

मैडम०। मगर आपको शायद नहीं मालूम कि जिस आदमी ने यह गलती की वह नौकरी से छुड़ा दिया गया! उसपर तो मुकद्दमा चलने वाला था मगर वह डर के मारे भाग गया—यह सिर्फ गलती है और कुछ नहीं॥

दंगली०। हां क्यों नहीं—मेरा तो सात लाख का नुक्सान हो गया तुम कहती हो गलती है ?

मैडम०। तो मैं क्या करूं ? अगर तुम समझते हो कि यह सब डिब्रे ने किया है तो तुम डिब्रे से जाकर बात करो मुझे इसमें क्यों घसीटते हो ?

दंगली०। मैं डिब्रे को क्या जानूं ? तुम उससे राय लेती हो, तुम उसकी राय पर चलती हो, तुम यह सब जूआ खेलती हो ! क्या मैं खेलता हूं ?

मैडम०। मगर जब तुम्हें इस जूए से फायदा होता है.......

दंगली०। औरतें भी कैसी बेवकूफ होती हैं ! तुम समझती हो कि तुम्हारी अनीतियों का हाल मुझे नहीं मालूम ! तुम्हारी और साथिनें चाहे ऐसा सोचें और समझें कि उनके पति उनकी कार्रवाइयों को नहीं जानते पर मैं वैसा नहीं हूं। मैं देखता रहता हूं और बराबर देखता रहता हूं—इस सोलह बरस के बीच में तुम्हारे दिल के अन्दर का कोई विचार तो चाहे छिपा रह गया हो मगर उसके सिवाय तुम्हारा कोई काम, कोई कर्तव मुझसे छुटने नहीं पाया है। तुम तो अपनी चालाकी पर खुश होती होगी कि मुझे खूब उल्लू बनाया मगर वास्तव में बात क्या है सो जानती हो ? तुम्हारी कार्रवाइयों की बदौलत अब तुम्हारा कोई दोस्त—मि० विलफोर्ट से लेकर डिब्रे तक—कोई भी ऐसा नहीं है जो मुझसे डरता न हो, मुझे घर का मालिक समझता

न हो, कोई भी मेरे सामने आंख उठा कर नहीं देख सकता, तुम मुझे और चाहे जो कुछ बनाओ मगर मैं बेवकूफ नही बना चाहता और सब से बढ़कर तो यह कि मैं बर्बाद नहीं हुआ चाहता !!

जब तक विलफोर्ट का नाम नहीं आया था तब तक तो बैरोनेस चुपचाप और शान्त यद्यपि क्रोधित थीं मगर यह नाम सुनते ही मानों उनपर बिजली का सा असर हो गया। वह चौंक कर उठ खड़ी हुई और इस तरह दंगली की तरफ बढ़ी मानों उसके दिल के अन्दर से वह भेद छीन लिया चाहती है जिससे वह अनजान था अथवा जिसकी मदद से वह अपनी और कार्रवाइयों की तरह से कोई बेहूदी कार्रवाई किया चाहता था। मैडम के मुँह से बेतहाशा निकला, "विलफोर्ट! विलफोर्ट से तुम्हें क्या!"

दंगली ने पीछे हटकर कहा, "मेरा कहना यह है कि मि०नारगोन-तुम्हारे पहिले पति-ने जब दस महीने के सफर से लौटकर देखा कि तुम्हें छः महीने का गर्भ है और यह भी देखा कि प्रोक्योरर के मुकाबिले में वह कुछ भी नही कर सकता तो उसने रंज और गुस्से से जान दे दी। मैं कठोर हूं--मुझे इस बात का घमण्ड है और इसी के सबब से रोजगार में मुझे फायदा भी हुआ है-अच्छा तो मि० नारगोन ने तुम्हारी जान लेने के बदले अपनी जान क्यों दे डाली? सिर्फ इसी लिये कि उसके पास रुपया नहीं था, इसके बखिलाफ मेरे पास रुपया

है और मेरा रुपया ही मेरी जान है। डिब्रे ने मेरा सात लाख का नुक्सान किया है अस्तु या तो वह अपने हिस्से की नुक्सानी अदा करे या पौने दो लाख के लिये दिवालिया हो जाय और जैसे और दिवालिये करते हैं-चल दे। जब उसकी खबर ठीक रहती है तब तो वह बड़ा अच्छा आदमी है मगर जब इसका उल्टा होता है तो दुनिया में पचासों उससे अच्छी राय देने वाले पड़े हैं॥

मैडम दंगली की अजीब हालत हो गई, उसके मुँह से कोई आवाज नहीं निकली, वह एक कुर्सी पर गिर गई और उसकी आंखों के आगे आज की उस दावत का हाल घूम गया। वे भयानक और दुखद घटनाएं उसकी निगाहों के सामने घूमने लगीं जिसने कुछ ही दिनों में उसकी इस शान्त गृहस्थी को दुखदाई और कलङ्कमई बातों से भर दिया था॥

दंगली ने अपनी स्त्री की तरफ देखा भी नहीं। उसने चुपचाप कमरे के बाहर निकल उसका दरवाजा बन्द कर दिया और अपने स्थान को लौट गया॥

चौथा बयान ।

शादी के विचार ।

मि० डिग्ने रोज आफिस जाती समय मैडम दंगली से मिलने आते थे पर इस बात के दूसरे दिन मामूली समय पर उनकी गाडी महाजन के फाटक पर नहीं रुकी बल्कि उसे समय मैडम ने अपनी गाड़ी कसवाई और कहीं चली गईं । दंगली छिप कर यह सब देखता रहा था । मैडम के जाने बाद उसने अपने नौकर को उनके लौटने की खबर देने का हुक्म दिया और तब अपने कमरे में लौट वह उस रोज की आई हुई चीठियें पढ़ने लगा, मगर इन चीठियों ने उसके रञ्ज को घटाया नहीं बल्कि बढाया ही । इसी बीच में मेजर केवेलकन्टी भी उससे मिलने और अपना रुपया लेने आये जिनसे वह अपना दिली रञ्ज छिपा बड़ी मुलायमियत से मिला॥

दो बज गये पर फिर भी मैडम न लौटीं तब दंगली उठा और चेम्बर (मन्त्री सभा) को गया जहां उसने सरकार और मन्त्रियों के खिलाफ एक कड़ा लेकचर दे अपने दिल का उबाल निकाला । वहां से भी बिदा हो वह काउण्ट मौरएट क्रौटो से मिलने उसके मकान पर गया । काउण्ट उस समय किसी काम में था परन्तु उसने कहला भेजा कि मैं अभी आता हूं अस्तु दंगली उसके बैठने के कमरे में चला गया । उसी समय उसने एक पादड़ी को देखा जो कमरे के अन्दर आया मगर उसे

देख एक मामूली सलाम कर दूसरा दर्वाजा खोल भीतर की तरफ चला गया। इसके थोड़ी ही देर बाद मौएट क्रौटो ने उसी दर्वाजे की राह कमरे में पैर रक्खा जिसके अन्दर वह पादड़ी चला गया था ॥

मौएट०। माफ कीजियेगा बैरन! आपको बैठना पड़ा, मगर मेरे एक दोस्त पादड़ी वसूनी आ गये जिन्हें आपने भी शायद देखा होगा। उन्हीं से बात करने में देर हो गई। मगर आपकी सूरत से उदासी टपक रही है क्या मामला है?

दंगली०। इधर कुछ दिनों से मेरी बदकिस्मती का ही दौर दौरा है, सिवाय बुरी खबरों के कोई अच्छी खबर मैंने सुनी ही नही ॥

मौएट०। क्या सचमुच! क्या किसी की दर फिर गिरी?

दंगली०। नहीं, उसका तो मैंने कुछ दिन के लिये इलाज कर दिया, आज का तरद्दुद मुझे एक दिवाले के कारण है ॥

मौएट०। दिवाला? अच्छा उस 'जेकोपो मेनफ्रेडी' का तो नहीं?

दंगली०। हां वही, मगर देखिये मेरा उसका बरसों से लेन देन चल रहा था, कभी किसी तरह का तरद्दुद नही पड़ा! हर साल लाखों रुपये का लेन देन होता था! अब इस समय जब मेरा दस लाख रुपया उसकी तरफ निकलता है तो सुनता हूं कि उसने दिवाला बोल दिया!

आज तीस तारीख है, मैंने उसके एजेन्ट के पास उसकी हुण्डियें भेजीं तो मालूम हुआ कि वह गायब हो गया!! स्पेनिश कागजों वाला मामला तो हुआ ही अब इसे लेकर तो यह महीना मेरे लिये बड़ा बुरा गुजरा!!

मौएट०। तो आपका उस स्पेन के मामले में भी नुक्सान हुआ?

इंगली०। हां, सिर्फ सात लाख रुपया॥

मौएट०। मगर आप ऐसा चालाक क्योंकर धोखा खा गया?

इंगली०। यह मेरी स्त्री की गलती से हो गया। उसे सपना हुआ कि 'डान करलोज' (स्पेन का निकाला हुआ बादशाह) पुनः अपने मुल्क में पहुंच गया। उसे सपनों पर विश्वास है, उसके सपने प्रायः ठीक उतरते भी हैं और उन्हीं के जोर पर वह ऐसे जूए खेल जाया करती है, उसका अपना रुपया इन मामलों में लगता है और घाटा नफा भी उसी का होता है पर फिर भी आप सोचिये कि स्त्री का जब सात लाख का नुक्सान हो गया तो उसके पति को ही तो वह रकम निकालनी पड़ती है। मगर क्या आपने यह खबर नहीं सुनी?

मौएट०। हां मैंने कुछ सुना तो जरूर था पर मेरा इस घाटे नफे और चढ़ा उतरी में कुछ दखल नहीं है, मेरी समझ ही में ये बातें नहीं आतीं॥

इंगली०। तो क्या आप यह सब नहीं करते?

मौएट क्रीटो०। मुझे अपनी आमदनी सम्हालनी

ही मुश्किल होती है यह सब झगड़ा कौन करे, मगर हां मगर यह स्पेनिश मामला क्या सिर्फ सपना ही था? मैंने किसी अखबार में भी तो शायद कुछ देखा था?

दंगली० । क्या आप भी अखबारों पर विश्वास करते हैं!

मौएट क्री० । बिल्कुल ही नहीं, मगर फिर भी मैं समझता था कि 'मैसेजर' कुछ ठीक होगा क्योंकि वह तार की खबरें छापता है ॥

दंगली०। हां यही तो ताज्जुब है क्योंकि वह खबर वास्तव में तार की खबर थी !!

मौएट० । तो आपको इस महीने में लगभग सत्तह लाख का घाटा हुआ ॥

दंगली० । लगभग नहीं ठीक सत्तह लाख !!

मौएट० । (सहानुभूति से) बेशक तीसरे दर्जे के अमीरों के लिये यह बड़ी भारी मुसीबत है ॥

दंगली० । (कुछ दबे हुए स्वर से) तीसरे दर्जे के अमीर !! इसका क्या मतलब ?

मौएट० । मैं अमीरों को तीन दर्जे में बांटता हूं— पहिला दर्जा, दूसरा दर्जा और तीसरा दर्जा—पहिले दर्जे के अमीर तो वे हैं जिनकी दौलत उनके हाथ के नीचे है जैसे खान, जमींदारी, मकान इत्यादि और सो भी फ्रान्स, आष्ट्रिया या इङ्गलैण्ड में और जिसकी कीमत लगभग दस करोड़ के होती है। दूसरे दर्जे के अमीर वे जिन्होंने कल कारखानों से, तिजारत से, अथवा कम्प-

नियों से पांच करोड़ की पूंजी अर्थात् पन्द्रह लाख रुपये साल की आमदनी कायम कर ली है और अन्त में तीसरे दर्जे में मैं उन्हें मानता हूं जिन्होंने चुटफुट काम करके कुछ मूल धन इकट्ठा कर लिया है और जिनकी बढ़ती दूसरों की इच्छा अथवा भाग्य पर है, जिसे एक दिवाला डगमगा सकता है या जिसे तार की एक खबर अस्तव्यस्त कर सकती है अर्थात् वे लोग जिनकी वास्तविक या बनावटी जमा पूंजी कुल मिला कर करोड़ डेढ़ करोड़ के लगभग होती है, मैं समझता हूं आपकी अवस्था भी ऐसी ही है॥

दंगली०। हां है तो ऐसी ही !!

मौरट०। तो जैसा यह महीना आपका बीता है वैसे वैसे छः महीने में आपकी कोठी की तो एक दम नैराश्यावस्था आ जाय !!

दंगली०। (पीला होकर) आप भी कैसी कैसी बातें सोचते हैं !!

मौरट०। (उसी स्वर में) तीसरे दर्जे के महाजनों के लिये उनकी पूंजी वैसी ही है जैसा सभ्य आदमी के लिये चमड़ा—तरह तरह के कपड़ों और पोशाकों से बदन का चमड़ा ढांक कर रक्खा और बनाया जाता है। जिस तरह मर जाने के बाद चमड़ा रह जाता है उसी तरह ऐसे महाजनों के रोजगार बन्द कर देने पर केवल उनका मूल धन ही बचा रह जाता है जो पचास साठ लाख से ज्यादा नहीं होता क्योंकि तीसरे दर्जे वालों के

रुपये जितने मालूम होते हैं वास्तव में उसके चौथाई के लगभग ही होते हैं। रेल के इञ्जिन की तरह जो भाफ और धूए से घिरा हुआ चौगुना बडा और भयानक मालूम होता है इन अमीरों की दौलत भी चौगुनी मालूम पडा करती है। आपको अभी अभी करीब करीब बीस लाख का घाटा होचुका है जिससे आपका मूलधन और साथ ही साथ आपकी धाक भी जरूर कम पड गई होगी। अर्थात् आपके चमड़े में नश्तर लग गया और खून निकल गया है। ऐसी ऐसी तीन चार घटनाएं और हो जांय- बदन में तीन चार नश्तर और लग जांय-तो बस मौत समझिये। बैरन! आपको इधर ध्यान देना चाहिये, यह मामूली बात नहीं है—क्या आपको रुपये की जरूरत है? क्या मैं कुछ उधार दूँ?

दंगली०। आप भी कैसे बुरे हिसाबिये हैं? (शान्त होकर) मगर आप नहीं सोचते कि अगर एक आध नश्तर से मेरा खून निकल जाता है तो मैं और पैदा भी तो करता हूं, स्पेन के मामले में हार हो गई तो क्या हुआ हिन्दुस्थान और मेक्सिको में तो फतह हो रही है। घाटा होता है तो नफा भी तो होता है॥

कौण्ट०। ठीक है ठीक है, मगर फिर भी जख्म तो बना ही हुआ है जरा सी ठेस लगते ही फट जायगा!!

दङ्गली०। नहीं नहीं, मेरा नाश होने के पहिले तीन तीन रियासतों का नाश होना होगा॥

कौन०। यह हो चुका है!!

दङ्गली०। दुनिया की पैदावार रुक जानी चाहिये॥

कौ०। सो भी हो चुका है, सात वरस वाला अकाल भूल गये?

दङ्ग०। समुद्र को अपनी जगह छोड़ देनी चाहिये॥

कौएट०। तो ठीक है तब मैं आपको मुबारकबादी दूंगा क्योंकि यदि आपको नुक्सान पहुंचाना इतना असंभव है तो फिर आप तीसरे नहीं बल्कि दूसरे दर्जे के अमीर हैं॥

दङ्गली०। (फीकी हँसी हँस कर) मैं समझता हूं कि मैं उस प्रतिष्ठा के लायक हूं। (विषय बदल कर) मगर हां यह तो कहिये कि केवेन्लकन्टी के साथ मैं क्या करूँ?

कौएट०। अगर उनकी हुन्डी वगैरह ठीक है तो रुपया दे दें॥

दङ्गली०। कागज पत्र तो सब बहुत ठीक हैं, आज सवेरे वे बसूनी की एक हुण्डी ले कर आये थे जिस पर आपका दस्तखत था, मैंने उसी समय चालीस हजार उन्हें गिन दिये॥

कौएट ने सिर हिलाया मानों स्वीकार किया॥

दंगली०। मगर सिर्फ इतनाही नहीं, उन्होंने अपने लड़के के नाम से एक खाता भी खोल दिया है॥

कौएट०। लड़के को वे क्या देते हैं?

दंगली०। पांच हजार रुपया महीना॥

कौएट०। बस! सचमुच वह बड़ा सूम है, इतने में भला एक नैाजवान का गुजर कैसे हो सकता है॥

दंगली० । मगर फिर यदि लड़के को कभी कुछ ज्यादा की जरूरत.....

का० । कभी मत दीजियेगा! बूढ़ा कभी नही देगा! आप इन रईसों को नही जानते! बड़े मक्खीचूस होते हैं, अच्छा यह खाता किस बङ्क ने खोला है?

दंगली० । फेज़ी! फ्लारेन्स का सब से मातबर महाजन!!

कौएट० । मैं ज्यादा तो नहीं कह सकता, पर होशियार रहियेगा॥

दंगली० । तो क्या आप को इन केवेलकन्टी पर विश्वास नहीं है!

कौएट०। ओह मेरा न पूछैं—मैं उनके दस्तखत पर एक करोड़ दे दूंगा—मैं उन दूसरे दर्जे के अमीरों की बाबत कह रहा था॥

दंगली०। मगर इतने अमीर होने पर भी वे बड़े सादे मिजाज के हैं, मैं तो उन्हें सिवाय एक मेजर के और कुछ न समझता!!

कौएट०। पहिले पहिल वे जब आये तब आपने नहीं देखा उस वक्त तो और भी वेहूदी हालत थी मगर ये इटालियन सभी ऐसे होते हैं॥

दंगली०। परन्तु लड़का तो अच्छा है॥

कौएट०। हां उसकी तालीम वगैरह अच्छी हुई है॥

दंगली०। (लापरवाही से) अच्छा ये लोग तो आपस ही में शादी करते हैं न जिसमें दौलत बाहर न जाय?

कौएट०। हां मामूली तौर पर तो ऐसा ही होता है पर यह केवेलकन्टी वैसा नहीं है, मैं तो समझता हूं वह अपने लड़के को शादी ही की नीयत से यहां लाया है ॥

दंगली० । सचमुच ?

कौएट० । जरूर ॥

दंगली० । अच्छा इन सभों के पास कितना रुपया होगा ?

कौएट० । यह कोई नहीं जानता ! कुछ कहते हैं कि अरबों हैं कुछ कहते हैं कि ये सब बिल्कुल खुख हैं–जो कुछ हो ॥

दंगली० । मगर फिर भी आप क्या समझते हैं ?

कौ० । मेरी अपनी समझ तो यही है कि इन सभों के पास करोड़ों रुपये हैं जो ये सब जमीन में गाड़ कर रखते हैं और सिवाय अपने बड़े लड़के के जिसका भेद ये किसी को नहीं बताते । तभी तो इन सभों की शकल वैसी बनी रहती है—पीले, सूखे हुए, जैसी इटली की अशर्फियें होती हैं !!

दंगली०। जरूर ऐसाही है, तभी इन लोगों के पास जमीन जमीदारी जरा भी नहीं है ॥

कौएट० । हां या बहुत ही कम, मैं केवेलकन्टी के लुक्का वाले महल के सिवाय और तो किसी जायदाद को नहीं जानता ॥

दंगली० । तो उनका एक महल है !!

कौएट०। हां मगर उसे किराए पर दे आप मामूली

मकान में रहते हैं--अजी ये सब के सब बड़े सूम हैं !!

दंगली०। (हंस कर) आपकी उनकी पटती नहीं क्या ?

कौण्ट०। ओह मैं तो उन्हें जानता भी नहीं, मेरी तो पादरी बसूनी की बदौलत जान पहिचान होगई। बसूनी आज सुबह ही जिक्र करता था कि केवेलकन्टी अपना धन इटली में गड़ा रखना नहीं चाहता जो एक मृत जाति हो रही है बल्कि चाहता है कि फ्रान्स या इंगलैण्ड में ला कर उसे और बढ़ावे। मगर यह सब मैं सुनी हुई कहता हूं--मैं खुद कुछ नहीं जानता !!

दंगली०। कोई हर्ज नहीं फिर भी मैं आपको धन्यवाद दूंगा कि आपने ऐसा मुअक्किल मेरे पास भेजा--ऐसे ऐसे रईसों के ग्राहक रहने से कोठी की इज्जत बढ़ती है--हां यह तो कहिये अगर ऐसे अमीर अपने लड़कों की शादी करते हैं तो उनको कुछ दौलत भी देते हैं ?

कौण्ट०। इसका कुछ ठीक नहीं है अगर लड़के ने उनकी मर्जी मुताबिक शादी की तो लाखों ही दे देते हैं अगर बर्खिलाफ की तो दमड़ी नहीं देते। अगर एन्ड्रिया ने अपने बाप की इच्छानुसार शादी की तो मुमकिन है वे उसे पचीस या तीस लाख रुपये दे डालें !! जैसे अगर उसने किसी महाजन की लड़की से शादी की तो शायद लड़के के ससुर को कारबार में कुछ मदद कर दें मगर फिर अगर मर्जी के खिलाफ शादी हुई तो बस होगया बापराम अपनी ताली सम्हालते चल देते हैं और लड़के

राम तास या जूआ खेल गुजारा करते हैं !!

दंगली०। तो फिर ये लोग किसी राजा या बाद-शाह की लड़की से शादी करते होंगे !!

कौएट०। नहीं नहीं, यह कोई जरूरी नहीं है कभी कभी बहुत मामूली घरानों में भी शादी कर लेते हैं—आप एन्ड्रिया की शादी का इरादा कर रहे हैं जो इतने मगर क्या सवाल कर रहे हैं ?

दंगली०। सचमुच ! ऐसा सौदा हो जाय तो बड़ा अच्छा हो—क्योंकि मैं सौदागर तो हुई हूं !!

कौएट०। तो आप अपनी लड़की के बारे में तो नहीं सोच रहे हैं ! क्या आप चाहते हैं कि अलबर्ट बेचारे एन्ड्रिया का गला काट डाले !!

दंगली०। ऊंह ! अलबर्ट को बड़ी परवाह ही तो पड़ी है !!

काउएट०। मगर आपके लड़की की बातचीत तो उससे लग चुकी है !!

दंगली०। हां मि० मारकर्फ से इस विषय पर मेरी कुछ बातचीत तो जरूर हुई है मगर मैडम मारकर्फ और अलबर्ट.....

काउएट०। तो क्या आप समझते हैं कि यह शादी ठीक नहीं होगी ? यूजिनी के पास बहुत धन होगा खास करके अगर तारघर और कुछ गलती न कर बैठे !!

दंगली०। नही मैं खाली दौलत ही को नही कहता, हां यह तो कहिये ...

काउण्ट०। क्या ?

इंगली०। आपने उन सभों को अपनी ज्याफत में क्यों नहीं बुलाया ?

का०। मैंने न्योता तो दिया था पर मैडम मारकर्फ कुछ बीमार थीं और समुद्र किनारे जाया चाहती थीं इससे उन्होंने मंजूर न किया॥

दंगली०। समुद्री हवा मैडमको जरूर फायदा करेगी क्योंकि लड़कपन मे वे समुद्र किनारे रह चुकी हैं॥

मौएट क्रीटो ने इस बात को सुनी अनसुनी कर दिया और कहा—"अलबर्ट अगर अमीर नहीं है तो क्या हुआ उसका नाम और घराना तो अच्छा है !!"

दंगली०। तो मेरा क्या खराब है ?

काउण्ट०। नही नहीं मगर फिर भी वह घराना पांच छः सौ वर्ष पुराना है॥

दंगली०। मैं आप से एक बात कहूं ?

काउण्ट०। क्या ?

दंगली०। मैं मारकर्फ से ज्यादा इज्जतदार हूं क्योंकि यद्यपि बैरंन की उपाधि मुझे बीस पचीस वर्ष हुए ही मिली तब भी मेरा असली नाम दंगली है—मगर मारकर्फ का यह नाम ही नहीं है उसका असल नाम कुछ और ही है। और काउण्ट की पदवी भी बिल्कुल बनावटी है॥

काउण्ट०। नहीं नही ! ऐसा नहीं हो सकता !!

दंगली०। सुनिये तो—मेरी उसकी जान पहिचान

आज तीस बरस से है। आप तो जानते ही हैं कि यद्यपि मैंने अपने पद की शान खूब रक्खी है तथापि अपनी पैदाइश को मैं नहीं भूला हूं॥

का०। यह या तो भारी घमण्ड या बड़ीही नम्रता का लक्षण है॥

दंगली०। खैर, तो जब मैं एक क्लर्क था तो मारकर्फ एक मछुआ था। उस समय उसका नाम फरनन्द था!!

काउण्ट०। फरनन्द!!

दंगली०। हां फरनन्द मण्डेगू! मैं उससे बहुत सी मछलियां खरीद चुका हूं भला उसका नाम नहीं जानूंगा!!

काउण्ट०। तो जब वह मछुआ है तो आप अपनी लड़की उसे देने का विचार क्यों कर रहे हैं?

दंगली०। क्योंकि हम दोनों ही बराबरी के कंगाल के रुतबे से उठकर आजकल के रुतबे पर पहुंचे हैं। इस लिये दोनों बराबर ही हैं—फिर भी उसके बारे में कुछ ऐसी बातें कही जाती हैं जो मेरे बारे में कहने की कोई हिम्मत न करेगा!!

काउण्ट०। सो क्या?

दंगली०। ओह कुछ नहीं॥

का०। अच्छा यह कुछ ग्रीस के सम्बन्ध की बात तो नही है? मैंने इस नाम का जिक्र वहां सुना था॥

दंगली०। अली पाशा के सम्बन्ध में?

काउण्ट०। हां हां कुछ उसी मामले में॥

पांचवां बयान।

प्रोक्योरर का आफिस।

बैरन को अपने घोड़े तेजी से दौड़ाते छोड़ हम बैरोनेस दंगली के साथ चलकर देखते हैं कि उन्हों ने दोपहर को घर से बाहर निकल क्या किया॥

मैडम की गाड़ी 'पान्ट नोफ' महल्ले में पहुंच रुकी और मैडम जो एक बहुत ही सादी पोशाक पहिने हुए थीं उतर पडीं। कुछ दूर पैदल चल वह पास ही की एक गली में पहुंचीं और वहां उन्होंने एक किराये की गाड़ी बुलाई। गाड़ीवान् को 'रो हार्ले' चलने को कह मैडम गाड़ी में बैठ गईं। गाड़ी के चलते ही उन्होंने अपने पास से एक काली जाली निकाली और उसे अपनी टोपी के साथ इस तरह टांक लिया कि उनका चेहरा बिल्कुल छिप गया यहां तक कि जब वे अपने बताये ठिकाने पर गाड़ी से उतरीं तो कोई उनकी जान पहिचान वाला भी उन्हें देख कर यकायक पहिचान नहीं सकता था॥

मैडम गाड़ी वाले को विदा कर उस बड़ी इमारत में पहुंचीं जहां बहुत से वकीलों, मैजिस्ट्रेटों और बारिष्टरों के साथ ही साथ प्रोक्योरर मि० विलफोर्ट का भी आफिस था। इस समय काम काज का वक्त होने के सबब से बहुत से आदमी प्रोक्योरर के मुलाकात के कमरे में उससे मिलने के लिये आकर बैठे हुए थे पर मैडम को

वहां रुकने की जरूरत न पड़ी क्यों कि इसके पहुंचतेही एक नौकर ने अदब से पूछा, "क्या आपही के साथ प्रोक्योरर साहब ने मुलाकात का वादा किया था ?" और मैडम के "हां" कहने पर वह इन्हें साथ लिये सीधा विलफोर्ट के कमरे की तरफ बढ़ा॥

विलफोर्ट कागजों मिसलों और बहसों आदि से लदे हुए एक बहुत भारी टेबुल के सामने दर्वाजे की तरफ पीठ किये बैठा लिख रहा था। नौकर ने कमरे का दर्वाजा खोला, "आइये मैडम" कहके मैडम को भीतर किया और तब दर्वाजा बन्द कर बाहर निकल गया, तब तक विलफोर्ट अपनी जगह से हिला बल्कि घूमा तक नहीं मगर जैसे ही नौकर के पैरों की आहट बन्द हुई वैसेही वह लपक कर उठा और दर्वाजे की कुण्डी उसने भीतर से बन्द कर दी, पर्दा भी गिरा दिया और तब एक गहरी निगाह चारो तरफ और कोनों में डाली कि कही कोई छिपा हुआ तो नही है। जब उसे निश्चय हो गया कि अब कही से कोई उसकी कार्रवाइयों को देख या बातों को सुन नही सकता तो वह निश्चिन्त हुआ और मैडम को एक कुर्सी पर बैठा उसके सामने बैठ गया॥

विल०। मैडम ! आज एक लम्बे जमाने के बाद मुझे तुमसे अकेले मे मिलने का मौका मिला, मगर अफसोस है कि यह समय भी दुखदाई बातचीत में ही काटना पड़ेगा॥

मैडम०। यद्यपि इसमें कोई सदेह नही कि आपको

बनिस्बत मेरे लिये वह बात बहुत ज्यादा दुखदाई होगी तथापि आपके कहते ही मैं आ गई ॥

विलफोर्ट ने दुखी स्वरों में, मानों अपने आपसे कहा "तो क्या यह ठीक है कि आदमियों के सब काम अपना चिन्ह छोड़ जाते हैं ! क्या वास्तव में हमलोग बालू के उस कीड़े की तरह हैं जो जहां जाता है अपने रास्ते का निशान छोड़ता जाता है !!"

मैडम०। विलफोर्ट ! मेरे आवेग की तरफ ध्यान दो और ऐसी बातें न छेडो ! जब जब मैं तुम्हारे इस कमरे को, मिसलों से लदे टेबुल को और तुम्हें देखती हूं तो मुझे यही मालूम होता है कि मैं कोई अपराधी हूं और भयावने जज के सामने सजा पाने के वास्ते लाई गई हूं ॥

विलफोर्ट ने सिर झुका कर लम्बी सांस ली और कहा, "और मैं समझता हूं कि मेरी जगह यहां जज की कुर्सी पर नहीं है बल्कि मुजरिमों के कटघरे में है ॥"

मैडम० । तुम! तुम ऐसा सोचते हो ?

विल०। हां, मैंही !!

मैडम० । मैं समझती हूं कि तुम अपनी सिधाई और सचाई के सबब से उस मामूली गलती को बहुत बढ़ाकर मानते हो। जिस रास्ते के निशान का तुम जिक्र करते हो उसे सभी उत्साही नौजवान छोड जाते हैं। फिर भी कुछ न कुछ पश्चात्ताप रह ही जाता है और उसी के लिये हम औरतों को बाइबिल में उस फाहिशा औरत की कहानी मिलती है कि जिसमें पढ़कर संतोष

तो पा सकें। कमसे कम मैं अपने नैाजवानी के दिनों के बारे में जब सोचती हूं तो यही मालूम होता है कि ईश्वर ने मेरे दुःखों पर ध्यान दे कृपा कर मेरे दुष्कर्मों को क्षमा कर दिया है। मगर तुम मर्दों को इन बातों से क्या! जिन्हें जमाना माफ करता है श्रोर जिन्हें कलंक उलटा नामवरी देता है॥

विल०। तुम जानती हो मैं कपटी नहीं—कम से कम बेसबब मैं धोखा नही देता। अगर मेरी भृकुटियों से कड़ाई जाहिर होती है तो इस कारण कि बहुत सी मुसीबतों की छाया उनपर पड़ी हुई है मेरा कलेजा पत्थर है तो इसलिये कि जिसमें पड़ने वाली चोटों को बर्दाश्त कर सके। मगर नैाजवानी मे मैं ऐसा नहीं था अपनी शादी की रात को जब भारसेलीज में रेवुल के सामने बैठा था उस समय ऐसा नही था बस उस समय के बाद ही से सब कुछ बदल गया है, अब मैं आपत्ति सहने का अभ्यासी होगया हूं श्रोर उनको कुचल सकता हू जो मेरे रास्ते में अपनी इच्छा या भाग्य की प्रेरणा से पड़ कर रुकावट डाला चाहते हैं। प्रायः ऐसा होता है जिस चीज को पाने की जितनी ज्यादा इच्छा होती है उतना ही उसके मिलने में वे लोग रुकावट डालते हैं जिनसे हम वह वस्तु लिया या छीना चाहते हैं, इसीसे मनुष्य की बहुत सी गलतियें उसके सामने जरूरत के रूप में आती हैं श्रोर जब वह गलती हो चुकती है डर से घबराहट से या उत्तेजना से, तो पीछे सूझता है कि

श्रोह फलाने दुष्कर्म को तो बचा सकते थे, तब सूझता है कि उस काम को वैसे नहीं ऐसे करना चाहिये था। मगर ऐसा पश्चात्ताप सिर्फ मर्दों को ही होता है श्रौरतों को नहीं होता श्रौर इसका सबब शायद यही है कि श्रौरतों पर श्राने वाली मुसीबतें उनकी लाई हुई नहीं हैं बल्कि उनके ऊपर मर्दों द्वारा लाई हुई हैं। प्रायः सदाही श्रौरतों की गलतिये दूसरों के गुनाह से होती हैं॥

मैडम०। फिर भी यह तो तुम्हें मानना ही होगा कि गलती चाहे मेरी ही हो पर फिर भी कल मुझे उसकी भयानक सजा मिल गई॥

विल०। (सहानुभूति से हाथ दबा कर) जरूर जरूर तुम दो बार बदहवास हो गईं मगर....मगर....

मैडम०। क्या?

विल०। तुमसे कहना जरूरी है, खैर तो अपने कलेजे को काबू में करो श्रौर सुनो क्योंकि उस बात का वहीं अन्त नहीं हुआ॥

मैडम०। क्या क्या? अभी कुछ श्रौर बाकी है??

विल०। हां, तुम गुजरे हुए को देखती हो जो बहुत ही बुरा है मगर अब आने वाले की तरफ ख्याल करो जो उससे भी कहीं ज्यादा भयानक श्रौर दुःखदाई है। क्या तुम सोचती हो कि ऐसी बात जो एक जमाना हुआ गुजर चुकी आज यकायक हमलोगों को परेशान करने के लिये—शर्म में डुबा देने के लिये—क्यों कर पैदा हो गई!!

मैडम० । (जिसका कलेजा विलफोर्ट की बात सुन धड़कने लगा था) इत्तिफाक से ओर क्या ?

विल० । नहीं नहीं मैडम वह इत्तफाक नहीं था। दुनियां में इत्तफाक से कोई बात नहीं होती—

मैडम० । नहीं नहीं—क्या यह इत्तफाक की बात नही थी कि कौन्ट के नौकर ने उसके लिये वही मकान लिया और क्या यह इत्तफाक ही से नहीं हुआ कि उसी पेड को खोदने की जरूरत पडी जिसके नीचे मेरा वह बेचारा लडका जिसका मैं मुंह भी देख न सकी थी गाडा गया था !!

विल० । नहीं, नहीं—वह इत्तफाक नहीं था—पेड़ों के नीचे कुछ नही था, कहीं से किसी लड़के की लाश नहीं निकली,नही नहीं रोने चिल्लाने की जगह नही है मैडम ! डरसे कांपने का मौका है !!

मैडम० । (बेचैनी से) क्या ? तुम्हारा मतलब क्या है ?

विल० । मेरा मतलब यह है कि कौन्ट को उस पेड के नीचे खोदने से न कोई सन्दूक मिला न लडका क्यों कि दोनों में कोई भी वहां नही था !!

मैडम० । (कांपती हुई) क्या वहां कुछ नही था !!

विल० । नही नही हजार दफे नही—वहां कुछ नही था !!

मैडम० । तो क्या तुमने मेरे बेचारे लडके को वहां नही गाडा था ? तब क्यों तुमने मुझे धोखा दिया ! क्यों ?

किस लिये? बताओ?

विल०। बताता हूं बताने ही के लिये मैंने तुम्हें बुलाया है तो उस दुःखदाई भेद को सुनो जिसे आज बीसवर्ष से केवल मैंही अकेला अपनी छाती के अन्दर छिपाये हुए था—मैंने लड़के को वहीं गाड़ा था! वहीं, उसी जगह!!

मैडम०। हे परमेश्वर! तब फिर वह क्या हुआ?

विल०। सुनो न मैं कहता हूं—तुम्हें वह भयानक रात याद होगी जब उस लाल कमरे में तुम प्रसव के कष्ट से छटपटा रही थीं और मैं भी घबराहट और बेचैनी के साथ लड़का होने की राह देख रहा था, आखिर वह लड़का हुआ और मैंने उसे गोद में ले कर उसे स्थिर और बेसांस देख मुरदा समझा (मैडम इतना सुन चौंक पड़ी पर विलफोर्टने उसे इशारे से रोका) हां तो हमलोगों ने उसे मुरदा समझा और मैं उसे एक बक्स में रख गाड़ने के लिये उसी डरावनी सीढ़ी की राह बाग मे उतरा। जल्दी जल्दी मैंने एक गड्ढा खोद उस बेचारे लड़के की लाश का सन्दूक उसमें गाड़ा मगर अभी मैं मिट्टी भर कर गढ़ा बराबर करही रहा था कि उस कार्सिकन का हमला मुझ पर हुआ, मैंने एक चमक देखी और दूसरे ही सायत में एक भयानक तकलीफ मेरी छाती में हुई जिससे मैं बेजान हो गिर गया, मैं तो समझा कि अब जान गई पर किसी तरह होश आने पर मैं घसिटता हुआ सीढ़ियों तक पहुंचा जहां तुम अपने दुःख को भूल

मुझे देखने आई थीं। हम लोगों को लाचारी के साथ यह बात छिपानी ही पड़ी थी। तुम बड़ी हिम्मत के साथ अपने घाव को ले अपने घर गईं और मैं किसी तरह अपने घर पहुंचा—मेरी चोट का सबब एक डूयेल बताया गया। तीन महीने तक मैं मौत से लड़ाई लड़ता रहा, आखिर किसी तरह डाक्टरों ने मुझे कुछ अच्छा किया और हवा बदलने के लिये जाने का हुक्म दिया। मैं छः महीने तक बाहर ही बाहर घूमता रहा और इस बीच में मुझे तुम्हारी कोई खबर न लगी आखिर जब मैं पैरिस लौटा तो मुझे पता लगा कि तुमने बिधवा होकर मि० दगली से शादी कर ली !!

बीमारी भर मुझे उस लाश का ही ध्यान रहा था, रात को सोते में भी मैं उस लड़के का पीला चेहरा ही देखा करता था जो मानो कब्र से निकल कर भयानक आखों से सब कुछ देखता हो। अस्तु पैरिस में लौटने पर भी पहिला खयाल मुझे उसी का हुआ। पता लगाया तो मालूम हुआ कि तब से उस मकान मे कोई रहा नही है पर महीने भर के लगभग हुआ वह एक आदमी को किराये दिया गया है। मैं उन लोगों से जाकर मिला जिन्होंने मकान लिया था और यह कह के कि अपनी मृत स्त्री की जायदाद दूसरों के कब्जे में देना मेरा दिल कबूल नही करता, मैंने उन्हे मुहमांगा रुपया देकर वह मकान फिर अपने कब्जे में किया और तब एक दिन मैं उसके अन्दर गया। उस समय पांच बजा होगा मैं उसी

किस लिये ? बताओ ?

विल०। बताता हूं बताने ही के लिये मैंने तुम्हें बुलाया है लो उस दुःखदाई भेद को सुनो जिसे आज बीसवर्ष से केवल मैंही अकेला अपनी छाती के अन्दर छिपाये हुए था—मैंने लड़के को वहीं गाड़ा था! वहीं, उसी जगह !!

मैडम०। हे परमेश्वर ! तब फिर वह क्या हुआ ?

विल०। सुनो न मैं कहता हूं—तुम्हें वह भयानक रात याद होगी जब उस लाल कमरे में तुम प्रसव के कष्ट से छटपटा रही थीं और मैं भी घबराहट और बेचैनी के साथ लड़का होने की राह देख रहा था, आखिर वह लड़का हुआ और मैंने उसे गोद में ले कर उसे स्थिर और बेसांस देख मुरदा समझा (मैडम इतना सुन चौंक पड़ी पर विलफोर्टने उसे इशारे से रोका) हां तो हमलोगों ने उसे मुरदा समझा और मैं उसे एक बक्स में रख गाड़ने के लिये उसी डरावनी सीढ़ी की राह बाग में उतरा। जल्दी जल्दी मैंने एक गड्ढा खोद उस बेचारे लड़के की लाश का सन्दूक उसमें गाड़ा मगर अभी मैं मिट्टी भर कर गढ़ा बराबर करही रहा था कि उस कार्सिकन का हमला मुझ पर हुआ, मैंने एक चमक देखी और दूसरे ही सायत में एक भयानक तकलीफ मेरी छाती में हुई जिससे मैं बेजान हो गिर गया, मैं तो समझा कि अब जान गई पर किसी तरह होश आने पर मैं घसिटता हुआ सीढ़ियों तक पहुंचा जहां तुम अपने दुःख को भूल

मुझे देखने आई थीं। हम लोगों को लाचारी के साथ यह बात छिपानी ही पडी थी। तुम बडी हिम्मत के साथ अपने घाव को ले अपने घर गई और मैं किसी तरह अपने घर पहुंचा—मेरी चोट का सबब एक डूयेल बताया गया। तीन महीने तक मैं मौत से लडाई लड़ता रहा, आखिर किसी तरह डाक्टरों ने मुझे कुछ अच्छा किया और हवा बदलने के लिये जाने का हुक्म दिया। मैं छः महीने तक बाहर ही बाहर घूमता रहा और इस बीच में मुझे तुम्हारी कोई खबर न लगी आखिर जब मैं पैरिस लौटा तो मुझे पता लगा कि तुमने बिधवा होकर मि० इंगली से शादी कर ली !!

बीमारी भर मुझे उस लाश का ही ध्यान रहा था, रात को सोते में भी मैं उस लडके का पीला चेहरा ही देखा करता था जो मानो कब्र से निकल कर भयानक आंखों से सब कुछ देखता हो। अस्तु पैरिस में लौटने पर भी पहिला खयाल मुझे उसी का हुआ। पता लगाया तो मालूम हुआ कि तब से उस मकान में कोई रहा नही है पर महीने भर के लगभग हुआ वह एक आदमी को किराये दिया गया है। मैं उन लोगों से जाकर मिला जिन्होने मकान लिया था और यह कह के कि अपनी मृत स्त्री की जायदाद दूसरों के कब्जे में देना मेरा दिल कबूल नही करता, मैंने उन्हें मुहमांगा रुपया देकर वह मकान फिर अपने कब्जे में किया और तब एक दिन मैं उसके अन्दर गया। उस समय पांच बजा होगा मैं उसी

के चतुर से चतुर अफसर खोज लगाने को भेजे लेकिन उसका कुछ पता न लगा कि वह लड़के को ले कहां और किधर गई !!

मैडम०। कुछ नहीं ?

विल०। बिल्कुल नहीं, अस्तु इसी से मैं कहता हूं कि जब मौरट क्रीटो एक ऐसे लड़के का जिक्र करता है जिसकी लाश उसने खोद के निकाली तो बस समझ लो कि हमलोग मारे गये क्योंकि किसी न किसी तरह जरूर उसे हमारे भेद का पता लग गया॥

मैडम०। नहीं नहीं॥

विल०। जरूर ऐसा ही है, क्या तुमने उसकी आखें नहीं देखीं जब वह हम दोनों से बातें करता था ?

मैडम०। नहीं मैंने खयाल नहीं किया॥

विलफोर्ट०। उनसे घृणा साफ झलकती थी, फिर खाते वक्त का ही सोचो, उसने हम लोगों के आगे जो कुछ रक्खा उसमें से खुद कुछ नहीं खाया !!

मैडम०। हां यह तो मैंने देखा कि वह अपने लिये अलग ही एक तश्तरी में से लेकर खाता था॥

विल०। तो बस समझ लो ! जरूर हमारा भेद अब दूसरों तक पहुंच गया !!

मैडम०। (कांप कर) हे भगवान !!

विल०। तुमने कभी किसी से हमारे प्रेम का हाल तो नहीं कहा ?

मैडम०। नहीं किसी से नहीं, कभी नहीं॥

विल०। किसी डायरी वगैरह में तो नही लिखा?

मैडम०। नही, मेरी जिन्दगी ऐयाशी में बीती है मैं उसे स्वयम् ही भूला चाहती हूं॥

विल०। सोते में बोलने की आदत तो नही है?

मैडम०। नहीं, तुम तो जानते ही हो कि मेरी नींद कैसी गहरी होती है!!

विलफोर्ट का चेहरा पीला हो गया था, मैडम ने कुछ देर उसकी तरफ देख पूछा, "तब?"

विल०। अब नये सिरे से मेहनत करने का जमाना आ गया! मुझे पता लगाना पड़ेगा कि यह काउण्ट कौन है? कहां से आया? क्यों आया? और क्यो वह हमारे सामने जमीन से निकाले हुए लड़के की लाश का जिक्र करता है? एक हफ्ते के अन्दर मैं इन बातों का पता लगा लूंगा!!

विलफोर्ट ने इन बातों को ऐसे स्वर में कहा कि अगर कौण्ट वहां मौजूद होता तो कांप जाता! विलफोर्ट उठ खड़ा हुआ, उसने मैडम के कांपते हुए हाथ को दबाया और अदब के साथ दरवाजे तक उसे पहुंचा दिया। मैडम एक किराये की गाड़ी पर सवार हो उस जगह पहुंचीं जहां अपनी गाड़ी छोड़ गई थी। कोचवान कोचबक्स सो रहा था जिसे जगा वे सवार हुईं और अपने घर पहुंचीं॥

छठवां बयान।

बाल नाच।

जिस दिन मैडम दंगली विलफोर्ट से मिलीं उसी दिन अलबर्ट अपनी मां के साथ पैरिस लैाटा, घर पर पहुंचते ही उसने कपड़े बदले और काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो से मिलने को रवाना हुआ॥

काउण्ट ने मुस्कुराहट के साथ अलबर्ट से हाथ मिलाया, कुशल मङ्गल और सफर का हाल पूछा और अपने पास बैठाया। अलबर्ट ने बैठते ही पूछा, "कहिये क्या खबर है?" काउण्ट ने हँसकर कहा, "भला आप मुझ अजनबी और परदेसी से खबर पूछते हैं!!"

अल०। हां हां सो तो है पर फिर भी आपने कुछ न कुछ मेरे लिये जरूर किया होगा॥

काउण्ट०। (बनावटी बेचैनी के साथ) क्या आप मेरे सपुर्द कोई काम कर गये थे?

अल०। लोग कहते हैं कि प्रेमियों और हितेच्छुओं के संदेसे बिना किसी जरिये के दूर दूर तक पहुंच जाया करते हैं। ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ है क्योंकि ट्रेपोर्ट में ही मुझे ऐसा भास हुआ था कि आप कुछ मेरे लिये कर रहे हैं॥

का०। सम्भव है लेकिन अगर कोई ऐसा सन्देसा आप को मिला तो वह बिना मेरी जानकारी के गया होगा क्योंकि जानते में तो मैंने कोई काम आपका नहीं

किया ॥

अल०। तब भी कुछ न कुछ !!

काउण्ट०। और तो कुछ नहीं सिर्फ मि० दङ्गली ने मेरे यहां भोजन किया था ॥

अल०। हां यह तो मुझे मालूम है क्योंकि उनकी मुलाकात से बचने के लिये ही तो मैं और मेरी मां बाहर चले गये थे ॥

काउण्ट०। उनके साथ मि० एन्ड्रिया केवेलकन्टी भी थे ॥

अल०। कौन एन्ड्रिया? आपका इटालियन शाहजादा?

काउण्ट०। इतना बढ़ो मत, वह तो अपने को सिर्फ वाईकाउण्ट कहता है !!

अल०। वाई-काउण्ट कहता है! तो क्या वास्तव में है नहीं?

का०। अब यह मैं क्या जानूं? वह ऐसा ही कहता है इससे मैं भी कहता हूं और बाकी के लोग भी कहते हैं ॥

अलवर्ट०। आप भी विचित्र आदमी हैं, खैर और कौन कौन था?

काउण्ट०। एन्ड्रिया के बाप, मि० दंगली, मैडम दंगली, मिस्टर और मैडम विलफोर्ट, मि० डिब्रे, मि० मारल और मि० शेटू रेनाड ॥

अल०। मेरा भी कोई जिक्र आया था?

काउएट०। नहीं कुछ नहीं॥

अल०। तो बहुत ही बुरा, क्योंकि अगर मेरा जिक्र किसी ने नहीं उठाया तो जरूर मेरे बारे में लोग सोचते होंगे !!

काउएट०। तो इससे क्या? कुछ मिस दंगली तो यहां सोचने वालों में थी ही नहीं! हां शायद उन्होंने अपने घर पर आपके बारे में कुछ सोचा हो तो हो॥

अल०। नहीं उस बात से आप बेफिक्र रहिये, और फिर उन्होंने अगर सोचा भी होगा तो ठीक उसी तरह जिस तरह मैं उनके बारे में सोचा करता हूं॥

काउएट०। खूब! मालूम होता है आप दोनों एक दूसरे से नफरत करते हैं!!

अल०। बात यह है कि मिस यूजिनी को अपनी स्त्री के स्वरूप में मैं नहीं देखा चाहता! अगर वे मेरी रखेली बनें तो मैं बहुत खुश होऊं, मगर पत्नी! जिन्दगी भर के लिये साथी!! इसके तो खयाल ही से मैं कांप जाता हूं॥

काउएट०। जिनके साथ आपका व्याह होने वाला है उनके बारे में आपका यह खयाल!! मैं तो उनमें कोई खराबी नहीं पाता! आपका खुश होना भी बड़ा ही कठिन मालूम होता है॥

अल०। बेशक क्योंकि मैं कभी कभी असम्भव की इच्छा किया करता हूं॥

काउएट०। सो क्या?

अलबर्ट०। मैं अपने लिये वैसी ही स्त्री चाहता हूं जैसी मेरे पिता को मिली॥

मौण्ट क्रीटो यह सुन पीला पड़ गया और उसने एक गहरी निगाह अलबर्ट पर डाली। कुछ देर बाद उसने कहा, "तो क्या आप अपने पिता को भाग्यवान समझते हैं?"

अलबर्ट०। बेशक—आपने तो मेरी मां को देखा है—अभी तक सुन्दर, अभी तक प्रसन्न बदन, अभी तक फुर्तीली, बातचीत मे होशियार, मिलनसार, चतुर!! यही तो सबब है कि संसार में एक ऐसी औरत को देखते हुए किसी दूसरी औरत से शादी करने की मेरी इच्छा ही नहीं होती! और तिसपर खास कर मि० दगलो की लड़की से!! मैंने तो इस फन्दे से बचने की बहुत कुछ कोशिश की यहां तक कि फ्रान्सिस एपिने से कहा कि तुम मिस यूजिनी से शादी कर लो मगर उसने भी मंजूर न किया॥

का०। वाह क्या कहना है, जिस चीज को आप खुद नहीं पसन्द करते उसे औरों को दे रहे हैं॥

अलबर्ट ने मुस्कुरा दिया और कहा, "हां यह तो मैंने कहा ही नहीं कि फ्रान्सिस बहुत जल्दी ही यहां लौटने वाला है—मगर आप तो शायद फ्रान्सिस से नफरत करते हैं?"

काउण्ट०। मैं फ्रान्सिस से नफरत करता हूं? यह आप से किसने कहा! मैं हरएक को प्यार करता हूं॥

अल० । उस हरएक में शायद मैं भी शामिल हूं ॥

काउण्ट०। देखो हमारे धर्म में सब को प्यार करने को कहा गया है—मैं भी सभों को ही प्यार करता हूं, सिर्फ बहुत ही थोड़े आदमी ऐसे हैं जिनसे मैं नफरत करता हूं—खैर तो क्या मिस्टर फ्रान्सिस पैरिस लौट रहे हैं ?

अल० । हां क्योंकि मि० विलफोर्ट ने उन्हें बुलाया है। आपको तो मालूम ही होगा कि उनकी लड़की से फ्रान्सिस की शादी होने वाली है । रङ्ग ढङ्ग से मालूम होता है कि यह शादी बहुत ही जल्दी होगी क्योंकि मिस्टर विलफोर्ट इसके लिये बहुत जल्दी कर रहे हैं। फ्रान्सिस भी अभी से अपनी गृहस्थी और बाल बच्चों का सपना देख रहा है। सिर्फ मैंही बदकिस्मत हूं ॥

का० । क्यों ? क्या इस लिये कि यूजिनी से शादी करना आपको पसन्द नहीं ?

अलवर्ट० । हां, मैं लाख सोचता हूं पर कोई ऐसी तर्कीब भी नहीं सूझती जिससे मैं इस आफत से बच सकूं ॥

का० । चुपचाप बैठे रहिये और देखिये क्या होता है, शायद मि० दङ्गली ही शादी से इन्कार कर दें ॥

अल० । वाह !!

काउण्ट०। नहीं नहीं, लोग आपके साथ जबर्दस्ती नहीं करेंगे। अच्छा ठीक ठीक कहिये, क्या आप यह शादी नहीं चाहते ?

अल०। नहीं बिल्कुल नहीं–अगर किसी तरह रुक जाय तो मैं एक लाख रुपया देने को तैयार हूं॥

काउण्ट०। तो फिर बेफिक्र रहिये, मि० दंगली भी यही चाहते हैं श्रौर वे इसके लिये दो लाख खरचने में राजी हैं॥

अल०। क्या? क्या वे शादी से हटा चाहते हैं!! मगर फिर इसका कोई सबब होगा?

का०। बस यही तो!! आपका घमंड श्रौर स्वार्थ इसी बात से जाहिर हो गया। दूसरे के ऊपर आप कुल्हाड़ा चलावे मगर दूसरा आपको सूई भी न लगावे॥

अल०। मगर फिर भी मिस्टर दंगली को......

का०। आप ऐसा दामाद पा खुश होना चाहिये–यही तो? मगर उनकी पसन्द खराब है—वे आजकल किसी श्रौर पर मोहित हो गये हैं॥

अलबर्ट०। सो कौन है?

काउन्ट०। यह आप खुद समझिये श्रौर सोचिये॥

अल०। ठीक है मैं समझ गया, अच्छा मेरी मां–नही नही मेरे पिता-एक बाल नाच का जलसा किया चाहते हैं॥

काउण्ट०। बाल! आजकल के दिनों में?

अल०। क्या हर्ज है, गर्मियों के नाच फैशनेबुल होते हैं॥

काउण्ट०। अगर न भी हों तो आपकी मां के सिर्फ इच्छा करने ही से हो सकते हैं। अच्छा यह बाल होगा

कब ?

अल० । शनिवार को, आप कृपा कर हमारी तरफ से केवेलकन्टी को न्योता दे दीजियेगा ॥

का०। मेजर साहब तो उस समय तक चले जायँगे॥

अल० । क्या हर्ज है लड़के ही को सही ॥

काउण्ट० । मगर मैं उसे जानता ही नहीं, दूसरों की तरफ से न्योता क्योंकर दे सकता हूं ॥

अल० । आप उसे जानते नहीं !!

का० । मेरे दोस्त पादड़ी वसूनी ने अपनी चीठी दे उसे मेरे पास भेजा था, पादड़ी बहुत अच्छा आदमी है मगर मुमकिन है वह इस मामले में धोखा खा गया हो, और फिर शायद मैं खुद ही आपके जलसे में शामिल न हो सकूँ ॥

अल० । क्यों क्यों सो क्यों ?

काउण्ट० । एक तो आपने अभी तक मुझे न्योता ही नही दिया, दूसरे शायद कोई जरूरी काम निकल आवे ॥

अल० । आपको न्योता देने तो मैं इस समय आया ही हूं बाकी रहा जरूरी काम सो अगर मैं एक बात कहूं तो शायद फिर आपको कोई उज्र न रह जायगा ॥

काउण्ट० । सो क्या ?

अल० । मेरी मां ने अपनी तरफ से खास तौर पर कहा है कि आप जरूर आवें ॥

काउण्ट० । आपकी मां ने !!

अल०। हां, आपको शायद नहीं मालूम कि इन चार दिनों में मेरी मां केवल आप ही के विषय में बातें करती रही, सचमुच ही आप कोई विचित्र आदमी हैं नहीं तो मेरी मां आपके बारे में इतना आश्चर्य कभी नहीं प्रगट करतीं ॥

काउण्ट०। आश्चर्य? सो कैसा?

अल०। वे बराबर ताज्जुब करती हैं कि आप इतने नौजवान अभी तक क्योंकर हैं—सच तो यह है कि जिस प्रकार कौन्टेस जीला आपको 'लार्ड रथवेन' समझती थी उसी तरह मेरी मां आपको 'केलियोस्ट्रो' * अथवा 'कौण्ट सेन्ट जरमेन' † समझती हैं क्योंकि आपमें दोनों ही के गुण हैं ॥

काउण्ट का चेहरा अलबर्ट की बात सुन कर कुछ चिन्ताग्रस्त सा हो गया—मगर अलबर्ट का उस तरफ कोई खयाल न गया—उसने कहा, "अच्छा तो आप शनीवार को आवेंगे तो?"

* केलियोस्ट्रो—इटली का एक धूर्त आदमी था। इसका असली नाम गिवसेप वालसेमो था। बातचीत में बड़ा ही तेज और चालाक था। एक हीरे का हार चुराने के अपराध में इसे जन्म कैद होगया था, जेल ही में मर गया ॥

† कौण्ट सेन जरमेन—हंगरी का एक बाजीगर, यह कहा करता था कि मेरे पास अमृत और पारस पत्थर है। यह अपने को और आदमियो से बहुत ऊंचा और बड़ा समझता था ॥

का०। जरूर क्योंकि काउन्टेस ने बुला भेजा है॥

अलबर्ट जाने के लिये उठता हुआ बोला, "आप नाचते हैं न?" *

काउण्ट०। कभी नहीं, यह सब नौजवानों के लिये है, चालीस से ऊपर उम्र वालों के लिये नहीं। क्या मैडम नाचती हैं?

अल०। नहीं वह भी नहीं नाचतीं। यह भी अच्छा ही है क्योंकि वे आपसे बहुत कुछ बातें कहा चाहती हैं॥

काउण्ट०। सचमुच!!

अल०। हां, और आप पहिले आदमी हैं जिनके विषय में मेरी मां को कौतूहल हुआ है॥

काउण्ट ने अलबर्ट को दरवाजे तक पहुंचा दिया मगर जब वह हाथ मिला जाने लगा तो कहा, "हां, यह तो कहिये मि० एपिने कब तक आवेंगे?"

अल०। यही छः सात दिन में॥

काउण्ट०। और शादी कब होगी?

अल०। बस लड़की के नानी और नाना रईस मीरां के यहां पहुंचते ही॥

काउण्ट०। ठीक है, अच्छा तो फ्रान्सिस को आप

* यूरोपीय मुल्कों में नाचना गाना किसी खास पेशे या फिरके का काम नहीं है सभी रईस भले आदमी और औरत नाचना गाना और बजाना जानते हैं और प्राय जलसों में नाचते गाते हैं॥

मेरे पास जरूर लाइयेगा, हालांकि आप समझते हैं कि मुझमें उनमें प्रेम नहीं है फिर भी मैं सच कहता हूं कि उन्हें देखकर बहुत खुश होऊंगा ॥

अल० । मैं जरूर लाऊंगा ॥

अलवर्ट चला गया, मौएट क्रीटो अपनी जगह पर लौटने के लिये घूमा तो उसकी निगाह बर्टूशियो पर पड़ी, उसने इशारे से पूछा, "क्यो !"

बर्टू० । वह मि० विलफोर्ट के दफ़्र मे गई थी ॥

काउण्ट० । कितनी देर तक ठहरी ?

बर्टू० । लगभग डेढ़ घंटा ॥

काउण्ट० । वहां से ?

बर्टूशियो० । सीधे घर लौट आई ॥

काउण्ट० । ठीक है–अच्छा बर्टूशियो अब तुम उस जायदाद की खोज में जाओ जो कि नारमंडी में समुद्र किनारे लेने को मैंने तुमसे कहा हुआ है ॥

बर्टूशियो० । जो हुक्म ॥

बर्टूशियो ने सलाम किया, और उसी रोज वह पैरिस के बाहर चला गया ॥

आठवां बयान।

जांच।

मिस्टर विलफोर्ट ने मैडम दंगली से जो वादा किया था उसे पूरा किया क्योंकि उसी दिन उन्हों ने पुलिस के बड़े अफसर को लिख कर काउण्ट के बारे में पूछा। अफसर ने दो रोज की मोहलत मांगी और दो दिन बाद विलफोर्ट को उसकी चीठी मिली जिसमें लिखा था:—

"उस आदमी के बारे में जो कौण्ट आफमौण्टक्रीटो कहलाता है अभी बहुत मालूम नहीं हुआ पर उसके दो गहरे दोस्तों का पता लगा है—एक तो लार्ड विलमोर है जो कि परदेसी रईस है और कभी कभी पैरिस में दिखाई देता है और दूसरा इटालियन पादड़ी वसूनी है जिसने पूरबी मुल्कों में बहुत नाम पैदा किया है॥"

इस चीठी को पा विलफोर्ट ने इन दोनों–विलमोर और वसूनी के बारे में अच्छी तरह जांच करने का हुक्म दिया—दूसरे दिन उसे ये बातें मालूम हुईं:—

"पादड़ी वसूनी जो अभी एक महीना हुआ पैरिस में था, सेन्ट सलपिस मुहल्ले के एक दोमंजिले मकान में अकेला रहता है, मकान के नीचे की मंजिल में खाने का और बैठने का कमरा है और ऊपर सोने का और पढ़ने का कमरा है। सभी कमरे बड़ीही सादगी के हैं कहो किसी तरह की सजावट नहीं है हां पढ़ने के कमरे में

बहुत सी कीमती किताबें और हाथ के लिखे कागज हैं और पादड़ी जब तक यहां रहता है उन्ही किताबों में गर्क रहता है, उसका सिर्फ एकही नौकर है और यदि कोई उससे मिलने आता है तो वह पहिले एक छेद में से उस आदमी की शक्ल देख लेता है अगर कोई अनजान या मालिक को नापसन्द आदमी हुआ तो कह देता है कि पादड़ी साहब नही हैं—और लोगों को विश्वास भी हो जाता है क्योंकि पादड़ी प्रायः दूर दूर के मुल्कों में सफरही करता रहता है। पादड़ी के हुक्म से कुछ खैरात बराबर वह नौकर उसी छेद की राह बांटा करता है॥

"लार्ड विलमोर 'फान्टेन सेन्ट जार्ज' में रहता है। यह उन अङ्गरेजों में से है जो इधर उधर सफर करने में ही बहुत सी दौलत खर्च कर दिया करते हैं। उसने वह मकान किराये पर ले रक्खा है मगर इसमें वह दिन के कुछ ही घंटे बिताता है। उसमे एक विचित्रता यह है कि वह फ्रान्सीसी भाषा बिल्कुल नही बोलता, पर उसे लिख बहुत अच्छा सकता है॥"

जिस दिन ये सब बातें मोक्येरार को मालूम हुईं उसके दूसरे दिन एक आदमी सेन्ट सलपिस मुहल्ले में पहुंचा और एक दरवाजे का कुण्डा खटखटाने लगा। नौकर ने दरवाजा खोला और इसके पूछने पर जवाब दिया, "पादड़ी साहब घर पर नही हैं॥"

आ०। इस जवाब से मुझे सन्तोष नही हो सकता,

क्योंकि मैं ऐसे आदमी के पास से आया हूं जिसके लिये सभों को घर पर मौजूद रहना होता है, तुम पादड़ी साहब से कहो.........

नौकर०। मैं कह चुका हूं कि पादड़ी साहब घर पर नहीं हैं॥

आदमी०। अच्छा तो जब वे आवें तो उन्हें यह चीठी दे देना मैं फिर आऊंगा, क्या आज शाम को आठ बजे वे यहां रहेंगे?

नौकर०। हां अगर कोई काम न करते रहे तो जरूर आप से मिलेंगे॥

आदमी०। अच्छा तो मैं उस वक्त आऊंगा॥

शाम को आठ बजे वही आदमी गाड़ी पर से उतरा और पुनः उसने पादड़ी के मकान का कुण्डा खटखटाया, दरवाजा तुरत खुल गया और जिस अदब के साथ नौकर ने उसे सलाम किया उससे अजनबी को मालूम हो गया कि उसकी चीठी ने मुनासिब असर किया है॥

अजनबी०। क्या तुम्हारे मालिक हैं?

नौकर०। हां, वे आपकी राह देख रहे हैं॥

नौकर ने अजनबी को ऊपर की मञ्जिल के उस कमरे मे पहुंचा दिया जहां एक टेबुल पर बहुत सी किताबें सामने रक्खे पादड़ी वसूनी एक तेज लम्प की रोशनी में कुछ पढ़ रहे थे। लम्प पर शेड रक्खा हुआ था जिससे कमरे मे कुछ अन्धकार था मगर अजनबी को पादड़ी की सूरत, उसकी विचित्र पोशाक और ऊंची टोपी—

जैसी अगले जमाने के विद्वान लोग पहिना करते थे— साफ दिखाई पड़ी। उसने सलाम करके पूछा, "क्या मैं पादड़ी वसूनी साहब के सामने खड़ा हूं?"

पादड़ी०। जी हां महाशय, क्या आप ही पुलिस के अफसर के भेजे हुए आदमी हैं?

अज०। जी हां॥

पादड़ी०। आप उन आदमियों में से हैं जो पैरिस की खबरदारी के लिये हैं?

अजनबी ने इसके जवाब में कुछ हिचकिचाहट और शर्म के साथ कहा, "हां॥"

पादड़ी ने अपना बड़ा चश्मा आंखों पर लगाया और एक कुर्सी की तरफ बता कर कहा, "मैं आपकी सेवा के लिये तैयार हूं।" पादड़ी के स्वर से ही मालूम पड़ता था कि वह इटालियन है॥

अजनबी ने कुछ हिचकिचाहट के साथ शुरू किया, "जिस लिये मैं आपके पास भेजा गया हूं वह एक गुप्त बात है। आपकी सचाई और नेकनीयती मशहूर है इसी लिये मैं चाहता हूं कि आप मेरी बातों का ठीक ठीक जवाब दें॥"

पादड़ी०। अगर वे बातें मेरे धर्म या मेरे विवेक के विरुद्ध नहीं होंगी तो मैं अवश्य उत्तर दूंगा क्योंकि आप जानते हैं कि मैं पादड़ी हूं और पादड़ियों को बहुत से गुप्त भेद अपना पाप छुडाने की नीयत से लोग बता देते हैं जो कि केवल ईश्वर ही के लिये होते हैं

मनुष्य के कानों के लिये नहीं ॥

अजनबी०। इससे आप बेफिक्र रहिये मैं ऐसी कोई बात नहीं पूछूँगा ॥

"तो ठीक है" कहकर पादड़ी ने लम्प पर के शेड को अपनी तरफ से दबा इस अजनबी की तरफ उठा दिया जिससे बहुत ही तेज रोशनी आकर इसके चेहरे पर पड़ने लगी और पादड़ी का चेहरा अँधेरे में पड़ गया ॥

अज०। क्षमा कीजियेगा पादड़ी साहब! पर इस तेज रोशनी से मेरी आंखों को तकलीफ होती है ॥

पादड़ी०। (शेड फिर पहिले की तरह करके) खैर आप पूछिये क्या पूछते हैं?

अज०। मैं एकदम मुख्य बात ही पर आ जाता हूं। क्या आप काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो को जानते हैं?

पादड़ी०। आपका मतलब शायद मि० जक्कोन से है?

अज०। जक्कोन? तो क्या उनका नाम मौण्ट क्रीटो नहीं है?

पादड़ी०। मौण्ट क्रीटो किसी आदमी का नहीं-एक जायदाद बल्कि एक पहाड़ी टापू का नाम है ॥

अज०। खैर इस बहस से कोई मतलब नहीं जब कि आप कहते हैं कि मौण्ट क्रीटो और जक्कोन से एक ही आदमी का मतलब है तो मैं भी उन्हें जक्कोन ही कहूंगा अस्तु आप इन महाशय जक्कोन को जानते हैं?

पादड़ी०। हां बहुत अच्छी तरह से ॥

अज०। वह कौन है ?

पादड़ी०। माल्टा के एक जहाज बनाने वाले का लड़का है ॥

अज०। जी हां मशहूर तो यही है पर फिर भी आप जानते हैं कि पुलिस यकायक सब उड़ती हुई बातों पर विश्वास नहीं करती ॥

पादड़ी०। (हँसकर) मगर जब वह उड़ती हुई खबर सच है तो सभी को उसपर विश्वास करना होगा चाहे पुलिस हो चाहे कोई और ॥

अज०। तो क्या जो आप कहते हैं वह ठीक है ?

पादड़ी०। इस सवाल का क्या मतलब ?

अजनबी०। नहीं नहीं पादड़ी साहब आप यह न समझिये कि मैं आपकी सचाई पर शक करता हूं पर मेरा मतलब यह है कि आपको कोई धोखा तो नहीं हुआ ?

पादड़ी०। मैं उसके बाप को जानता था और जब वह छोटा था तो मैं उसे खिलाया करता था ॥

अज०। तब फिर वह कौंएट क्योंकर कहलाता है ?

पादड़ी०। आपको शायद मालूम है कि पदवियें बिका करती हैं ॥

अज०। इटली में ?

पादड़ी०। सभी जगह ॥

अज०। और उसकी दौलत जो लोग कहते हैं कि

बेइन्तहा है ... .

पादड़ी०। बेशक बेइन्तहा ही कहना चाहिये॥

अज०। क्या आप कुछ कह सकते हैं कितनी है?

पादड़ी०। हां हां, डेढ़ और दो लाख रुपये साल के बीच मे है॥

अज०। मैंने तो सुना है कि पचास लाख है!

पादड़ी०। दो लाख रुपये साल की आमदनी का मूल पचास लाख होता है॥

अज०। नहीं नहीं पचास लाख रुपया साल?

पादड़ी०। यह बात गलत है॥

अज०। क्या आप उस टापू "मौण्ट क्रीटो" को जानते हैं?

पादड़ी०। हां, मैं क्या जो कोई समुद्री रास्ते से रोम, नेपल्स या पालर्मो से फ्रान्स आया होगा उसीने देखा होगा क्योंकि वह रास्ते में पड़ता है॥

अज०। मैंने सुना है वह बड़ी अच्छी जगह है॥

पादड़ी०। पहाड़ी है॥

अज०। तो काउण्ट ने पहाड़ी क्यों खरीदी?

पादड़ी०। इटली में काउण्ट होने के लिये किसी जायदाद का होना जरूरी है॥

अजनबी०। आप मि० जक्कोन की जवानी के हाल जानते हैं॥

पादड़ी०। कौन? बाप के?

अज०। नही नही बेटे के, इस काउण्ट के?

पादड़ी०। नही ठीक ठीक नहीं जानता क्योंकि उस जमाने में मेरा उसका साथ छुट गया था। शायद उस समय वह जहाजी फौज में भरती हो गया था॥

अजनबी०। अच्छा तो आप उसके बारे में क्या क्या जानते हैं?

पादड़ी०। वह बड़ा दयालू आदमी है, हमारे पोप ने उसे एक ऊंचा रुतबा दिया है जो सिर्फ बादशाहों को ही दिया जाता है, श्रोर भी कई पूरबी राज्यों से उसे पदवियें श्रोर रुतबे मिले हैं। वह बराबर घूम घूम कर लोगों का उपकार करता रहता है॥

अज०। उसके किसी दोस्त को आप जानते हैं?

पादड़ी०। जो उसे जानता है वही उसका दोस्त हो जाता है॥

अज०। अच्छा कोई दुश्मन?

पादड़ी०। सिर्फ एक॥

अज०। सो कैान?

पादड़ी०। लार्ड विलमोर॥

अज०। वह कहां है?

पाद०। आजकल तो पैरिस ही में है॥

अज०। क्या वह मुझे काउएट के बारे में कुछ बता सकता है?

पादड़ी०। हां बहुत कुछ क्योंकि दोनों आदमी हिन्दुस्तान में कुछ समय तक एक साथ रह चुके हैं॥

अज०। वह कहां रहता है?

खड़ी थी। गाड़ी ने सीधे उसे मि० विलफोर्ट के मकान पर पहुंचा दिया॥

एक घंटे बाद गाड़ी फिर मँगवाई गई और इस वार वह फान्टेन सेन्ट जार्ज के नम्बर ५ के मकान के सामने रुकी जहां लार्ड विलमोर रहते थे। अजनबी ने लार्ड विलमोर से चीठी भेजकर समय ठीक कर लिया था और दस बजे आने का हुक्म पाया था, इस समय दस बजने में दस मिनट बाकी थे अस्तु नौकर ने एक कमरे में अजनबी को बैठाते हुए कहा, "लार्ड विलमोर इस समय नहीं हैं पर ठीक दस बजे अवश्य आवेंगे॥"

कमरे की घड़ी ने जैसे ही दस बजाना शुरू किया वैसे ही लार्ड विलमोर ने कमरे में पैर रक्खा। यह एक लांबे कद का आदमी था जिसके सिर के बाल और घनी दाढ़ी कुछ लाली लिये हुए और सफेदी पर आ रही थी, अङ्गरेजी ढंग की पोशाक और चाल ढाल उसे साफ अङ्गरेज बता रही थी। आते ही उसने कहा, "महाशय! आप जानते हैं मैं फ्रान्सीसी भाषा नहीं बोलता॥"

अज०। जी हां मैं जानता हूं कि आप हम लोगों की भाषा में वात करना पसंद नहीं करते॥

विलमोर०। मगर आप उसमें बोल सकते हैं क्योंकि मैं उसे समझ अच्छी तरह सकता हूं॥

अज०। और मैं अंगरेजी अच्छी तरह समझ सकता है अस्तु आपको कुछ विशेष कष्ट न उठाना पड़ेगा॥

विलमोर ने ठेठ अंगरेजी ढंग से कहा, "वाह वाह॥"

अब वह सवालों का सिलसिला जारी हुआ जिसका रंग ढंग पादड़ी से किये हुए सवालों ही का सा था, पर लार्ड विलमोर काउण्ट के दुश्मन की हैसियत से अपने जवाबों में उतनी रुकावट नहीं रखता था जितनी वसूनी ने की थी। उसने जक्कोन के लड़कपन और नैाजवानी का सब हाल अजनबी से कह सुनाया। किस तरह वह जहाजी हुआ, फिर किस तरह हिन्दुस्थान के एक राजा की फौज में भरती हो गया और अगरेजों के बखिलाफ लड़ा, किस तरह उससे (विलमोर से) उसकी लड़ाई हुई और किस तरह वह कैद करके वहां से लैाटाया गया पर रास्ते में से जहाज पर से कूद कर भाग गया और ग्रीस पहुंचकर वहां की फौज में भरती हो गया—यह सब हाल विलमोर ने अजनबी को कह सुनाया और बाद में यह भी कहा कि वही ग्रीस में ही जक्कोन को चांदी की एक खान का पता लग गया और उसी खान की बदौलत उसकी वह बेइन्तहा दौलत है जिसकी आमदनी पन्द्रह लाख रुपये साल के लगभग होगी मगर जो खान के बन्द होते ही मिट जा सकती है॥

अज०। मगर क्या आप कह सकते हैं कि उसके पैरिस आने का क्या सबब है?

विलमे०। वह यहां की रेलों में कुछ हिस्सा लिया चाहता है। उसने एक नये तरह का 'तार' निकाला है जिससे खबर बहुत अच्छी तरह से भेजी जा सकती है, उसे वह यहां जारी किया चाहता है॥

अज० । वह साल में खर्च क्या करता होगा ?

विलमोर० । पांच छः लाख से ज्यादा नही, बड़ा भारी सूम है ॥

अवश्य ही विलमोर ने यह बात काउण्ट के साथ दुश्मनी होने के सबब से कही थी, वह काउण्ट में और कोई ऐब न पा सकने पर उसे सूमड़ेपन का दोषी बनाया चाहता था ॥

अज० । क्या आपने उसके आटविल वाले मकान को देखा है ?

विल० । हां हां ॥

अज० । आप उसके बारे में क्या जानते हैं ?

विल० । क्या आपका मतलब यह है कि उसने उसे क्यों खरीदा ?

अज० । हां ॥

विलमोर० । जक्कोन समझता है कि उस मकान के आस पास में कोई ऐसा झरना है जिसका पानी दवा का गुण रखता है । अस्तु वह कई बार उस जमीन और बागीचे को खूब गहरा खुदवा चुका है । अभी तक उसे वह सोता नही मिला है अस्तु अब वह आस पास की और जमीन भी खरीद कर उसे भी खुदवावेगा, मैं उससे नफरत करता हूं और मनाता रहता हूं कि उसकी रेल, उसका तार और उसका झरना, जिसमे वह बहुत रुपया खर्च कर रहा है उसे चौपट कर डाले, और अवश्य कर डालेगा ॥

अज०। आपसे उससे दुश्मनी क्योंकर हुई ?

विल०। जब वह इङ्गलैण्ड में था तो मेरे एक दोस्त की औरत को बहका कर ले भागा था॥

अज०। तो आपने बदला क्यों नहीं लिया ?

विल०। मैं तीन बार उससे डूयेल लड चुका। एक दफे तो उसने मेरी बांह तोड दी, दूसरी दफे छाती में तलवार घुसेड़ दी और तीसरी दफे तो यह देखिये मेरा गला ही काट चुका था॥

इतना कह लार्ड विलमोर ने अपना कालर हटा अजनबी को गले का एक भयानक जख्म दिखाया जो अभी बहुत पुराना नही होने पाया था—और कहा, "इसी से मेरी उसकी दुश्मनी बढ़ती जाती है और वह जरूर मेरे हाथों अपनी जान देगा॥"

अज०। मगर इस तरह से तो मालूम होता है कि आप उसे कभी न मार सकेंगे॥

विल०। हो हो!! मैं आजकल पिस्तौल चलाने का मुहावरा कर रहा हूं, ग्रिसियर मुझे सिखाने आता है॥

इतना ही वह अजनबी जानना चाहता था, बल्कि इतना ही उस अङ्गरेज को मालूम था, अस्तु अजनबी लार्ड विलमोर को सलाम कर उससे विदा हुआ। विलमोर ने जब मकान के दरवाजे के बन्द होने की आवाज सुनी तो एक दूसरे कमरे में चला गया जहां उसने अपने लाल बाल और वह नकली जख्म का दाग तथा एक नकली चेहरा अलग कर दिया और अब साफ काउण्ट

आफ मौएट क्रीटो की सूरत दिखाई देने लगी॥

यद्यपि मि० विलफोर्ट को वसूनी और लार्ड विलमोर से बातें कर वास्तव में कोई बात नहीं मालूम हुई थी तथापि उनका शक बहुत कुछ दूर हो गया और उस जलसे वाली रात के बाद आज पहिले पहिल उनको गहरी और बेफिक्री की नींद आई॥

नौवां बयान।

बाल का जलसा।

धीरे धीरे जूलाई का वह शनिवार आ पहुंचा जिस दिन काउण्ट मारकर्फ के घर "बाल" का जलसा होने वाला था। काउण्ट का बड़ा महल और सामने का बाग इस समय रोशनी से जगमगा रहा था और बहुत से नौकर इधर उधर दौड़ धूप कर रहे थे॥

मरियम जिस समय नौकरों को मुनासिब हुक्म देकर अपने कमरे में लौटी उस समय कई मेहमान आ चुके थे और कई आ रहे थे। मैडम दंगली का इरादा पहिले इस दावत में आने का नहीं था पर फिर मि० विलफोर्ट की मर्जी पाकर जिससे आज सुबह हवा खाती समय मुलाकात हो गई थी उसने आने का निश्चय कर लिया। इस समय जैसे ही मरियम ने अपने कमरे में पैर रक्खा उसकी निगाह दूसरे दरवाजे से आती हुई मैडम दंगली पर पड़ी और उसने अलबर्ट को बैरोनेस की

अगवानी को भेजा॥

साहब सलामत के बाद अलबर्ट ने बैरोनेस को एक कुर्सी पर बैठाया और खुद इधर उधर देखने लगा। बैरोनेस यह देख मुस्कुरा कर बोली—"क्या तुम मेरी बेटी की खोज में हो?

अल०। अवश्य! क्या आपने ऐसी क्रूरता तो नहीं की कि उन्हें साथ न लाई हो?

बैरो०। नहीं नहीं वह आई है पर रास्ते में मि० विलफोर्ट की लडकी के मिल जाने से उसके साथ होगई है। मगर यह तो कहो

अल०। क्या?

बैरोनेस०। क्या काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो यहां नहीं आवेंगे?

अल०। (मुस्कुराते हुए) सत्रह!!

बैरोनेस०। सो क्या?

अल०। मैं देखता हूं कि काउण्ट आजकल सब की जुबान पर है। आज सोलह आदमी यही सवाल मुझसे कर चुके हैं और आप सत्रहवीं हैं! मैं काउण्ट को मुबारकबादी दूंगा॥

बैरो०। और क्या तुमने सभों को वैसाही जवाब दिया है जैसा मुझको?

अलबर्ट०। ओह ठीक है मैं जवाब देना भूल गया, खातिर जमा रखिये काउण्ट अवश्य आवेगा॥

बैरो०। और उसकी वह ग्रीक शाहजादी? क्या

वह भी आवेगी ?

अल० । नहीं, काउण्ट के घर में उसका क्या पद है यह अभी ठीक ठीक मालूम नहीं हुआ ॥

वैरो० । अच्छा अब तुम मुझे छोड़ मैडम विलफोर्ट के पास जाओ जो बड़ी देर से तुम्हारा ध्यान आकर्षित किया चाहती हैं ॥

अलबर्ट वैरोनेस को सलाम कर मैडम विलफोर्ट के पास गया जिसके होंठ उसे देखते ही कुछ कहने के लिये खुले । अलबर्ट मुस्कुराता हुआ बोला, "मैं बाजी लगा कर कह सकता हूं कि आप जो कहा चाहती हैं वह मुझे मालूम है ॥"

मैडम विल० । मैं क्या कहा चाहती हूं ?

अल० । अगर मैं ठीक ठीक कह दूं तो आप मंजूर कर लेंगी ?

मैडम० । हां ॥

अलबर्ट० । अच्छा तो आप पूछा चाहती हैं कि काउण्ट मौण्ट क्रीटो यहां आवेगा या नहीं ?

मैडम० । गलत बिल्कुल गलत, मैं उसकी बात नहीं सोच रही थी । मैं तुमसे पूछा चाहती थी कि फ्रान्सिस की इधर तुमने कोई खबर पाई है ?

अल० । हां कल ही मुझे उसकी चीठी मिली है ॥

मैडम० । क्या कहता है ?

अल० । कि चीठी के साथ ही वह खुद भी रवाना हुआ है ॥

मैडम०। ठीक है, अच्छा अब मौरट का हाल कहो॥

अल०। आप बेफिक्र रहें वह अवश्य आवेगा॥

मैडम०। क्या तुम जानते हो कि मौरट क्रीटो के अलावे उसका और भी एक नाम है?

अल०। नहीं मुझे तो नहीं मालूम॥

मैडम०। मौरट क्रीटो तो उसके एक टापू का नाम है, उसके घराने का नाम कुछ और ही है॥

अल०। मैंने वह कभी नहो सुना॥

मैडम०। मुझे मालूम है, उसका नाम "जक्लोन" है॥

अल०। हो सकता है॥

मैडम०। वह माल्टा का रहने वाला है॥

अल०। यह भी मुमकिन है॥

मैडम०। उसका बाप एक जहाजी था॥

अल०। आपको ये बातें जोर से कहनी चाहियें, सभी कोई सुनने को तैयार हो जायेंगे॥

मैडम०। उसने हिन्दुस्तान में नौकरी की, फिर थिसली आया वहां उसने एक खान का पता लगाया, अब यहां आटविल में एक तरह के मुफीद पानी के झरने का कारखाना खोलने आया है॥

अलबर्ट०। सचमुच यह तो आपने विचित्र खबर सुनाई है। क्या मैं इसे औरों से भी कह सकता हूं?

मैडम०। कह सकते हो मगर जरा होशियारी के साथ! एकदम से सब भेद मत खोल देना और यह भी किसी से न कहना कि मैंने तुमसे कहा है॥

अल० । क्यों ?

मैडम० । यह एक भेद की बात है जिसका अभी अभी पुलिस ने पता लगाया है ॥

अल० । अच्छा तो यह खबर पुलिस. ....

मैडम० । हां पुलिस के सदर आफिस से उठी है, पैरिस ऐसी दौलत देखकर ताज्जुब में आ गया था इसी से पुलिस ने कुछ जांच की है ॥

अल० । वाह वाह ! तब तो बस इतनी ही कसर और रह गई है कि काउण्ट के ऊपर बहुत अमीर होने का इलजाम लगा कर उसे गिरफ़ार कर लिया जाय !!

मैडम० । अगर उसकी सफाई के सबूत इतने मज़बूत न होते तो सचमुच ऐसा ही किया जाता ॥

अलबर्ट० । बेचारा काउण्ट ! क्या उसे अपने इस खतरे का हाल मालूम है ?

मैडम० । जहां तक मैं समझती हूं नहीं ॥

अलबर्ट० । तब उसे खबरदार कर देना मुनासिब होगा, उसके आते ही मैं यह हाल उससे कहूंगा ॥

इसी समय एक नौजवान ने मैडम विलफोर्ट के सामने आ उसे सलाम किया । अलबर्ट ने मारल को देख उससे हाथ मिलाया और मैडम से कहा, "ये मेरे दोस्त मि० मैक्समिलियन मारल स्पाही पलटन के कप्तान हैं और हमारे बड़े दिलेर अफसरों में से हैं ॥"

मैडम ने बड़ी लापरवाही के साथ मुंह मोड़ कर कहा, "हां मैं इन महाशय को काउण्ट मौण्ट क्रीटो

के मकान पर देख चुकी हूं॥"

इस जवाब ने और इससे भी बढ़कर इसके कहने के ढङ्ग ने बेचारे मारल का दिल ठंढा कर दिया पर इसका एक बदला भी उसे तुरत ही मिल गया। दरवाजे की तरफ निगाह घुमाते ही उसने एक सुन्दर और भोले चेहरे को देखा जिसकी आंखें स्थिर रूप से उसके चेहरे पर पड़ रही थीं और जिसने उसे देखते ही हाथ का फूलों का गुलदस्ता अपने होठों तक उठाया॥

मारल वेलेण्टिन के इस इशारे को बहुत अच्छी तरह समझ गया और उसने भी उसी भाव से अपना रूमाल अपने होठों तक पहुंचा उसका जवाब दिया। एक सायत के लिये इन दोनों प्रेमियों का दिल एक पूरे कमरे की दूरी पर होने पर भी एक साथ मिल गया और और वे अपने आप को बिल्कुल ही भूल गये, बल्कि एक दूसरे के आगे दुनिया को ही भूल गये। वे और भी देर तक इसी तरह एक दूसरे में मग्न रहते और कोई उनके इस भाव को न लखता पर काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो ने उसी समय कमरे में पैर रक्खा। हम पहिले ही कह आये हैं कि कौण्ट जहां जाता वहां ही सभों का ध्यान अपनी तरफ खींच लेता था। इसका कारण उसकी पोशाक न थी जो यद्यपि सादी पर बहुत ही सूफियानी थी, यह उसके पीले चेहरे की बदौलत था, उसके लम्बे घुँघराले काले बालों और चेहरे के भाव के कारण था। बहुत से आदमी उससे सुन्दर हो सकते थे पर कोई ऐसा

कभी नहीं हो सकता या जिसका चेहरा उससे ज्यादा भावमय हो। उसकी सूरत, उसकी बातचीत, उसका ढङ्ग, उसका बर्ताव सभी कुछ विचित्रता रखता या लेकिन पैरिस की दुनिया कुछ ऐसी है कि इन सब पर कोई ध्यान भी न देता यदि इनके पीछे बेहिसाब दौलत से मढ़ी एक अद्भुत कहानी न होती॥

काउएट इस भीड़ और बहुत सी तेज निगाहों के बीच से होता हुआ सीधा मैडम मारकर्फ की तरफ बढ़ा जिसने एक बड़े शीशे में उसको आते हुए देख लिया था। जैसे ही काउएट उसके पास पहुंचा वह मुस्कुराहट के साथ उसकी तरफ घूमी और काउएट ने अदब के साथ उसे सलाम किया। अवश्य ही मरियम सोचती थी कि काउएट उससे कुछ कहेगा और उधर काउएट समझता या कि मरियम उससे कुछ बोलेगी पर दोनों में से कोई भी न बोला और उसे एक और सलाम कर काउएट अलबर्ट की तरफ घूमा जिसने बड़ी खातिर से उसे लिया। दोनों कुछ बातें करते हुए इधर उधर घूमने लगे॥

का०। तुम्हारे पिता नहीं दिखाई देते, वे कहां हैं?

अलबर्ट०। वह देखिये वे जो पांच छः आदमी एक साथ खड़े बातें कर रहे हैं उन्हीं में हैं॥

काउएट०। हां ठीक है, अच्छा वे लोग कौन हैं जो आपके पिता से बातें कर रहे हैं?

अल०। ये पैरिस के प्रसिद्ध महापुरुषों में से हैं।

कोई विद्वान है, कोई चित्रकार है, कोई वैज्ञानिक है, कोई रासायनिक है। वह देखिये जो सूखे चेहरे वाला लम्बा आदमी है वह बड़ा भारी विद्वान माना जाता है। उसने पैरिस के पास ही कहीं एक नये प्रकार के कीड़े का पता लगाया है जिसके लिये उसे भारी उपाधि मिली है। वह नीले कोट वाला आदमी जो है उसने भी बड़ा नाम पैदा किया है, फ्रान्स की एकेडेमी का मेम्बर बनाया गया है॥

काउण्ट०। अच्छा!! उसने क्या काम किया है?

अल०। काम! जहां तक मैं समझता हूं वह चूहों की खोपडी में आलपिने खोंसता है और कुत्तों की अंतड़ियें खींच खींच कर देखा करता है॥

का०। भला! क्या इसी काम के लिये वह एकेडेमी का मेम्बर बनाया गया है?

अलबर्ट०। नहीं उसका सबब तो यह है कि उसके लिखने का ढंग बहुत अच्छा है॥

का०। क्या कहना है! वे चूहे और कुत्ते तो यह सुन बड़े ही प्रसन्न होते होगे जिनके सिर यह फोड़ता है या अंतडियें निकालता है। अच्छा वह उसके बगल वाला आदमी?

अलबर्ट०। यह काउण्ट का साथी है बड़ा प्रसिद्ध वक्ता है, जब मन्त्री सभा में यह प्रश्न उठा था कि सब लार्ड लोग एक ही किस्म की वर्दी पहिन कर सभा में आया करें तो उसने उसका घोर विरोध किया था।

पहिले लिबरल दल वाले उससे नाराज थे पर उसकी इस कार्रवाई से अब खुश हो गये हैं, सुनते हैं अब वह लार्ड भी बनाया जायगा ॥

काउण्ट०। हां! मगर उसमें लार्ड होने लायक कोई खासियत है!

अलबर्ट०। क्यों नहीं! उसने दो तीन मजाक के नाटक लिखे हैं, पांच छः लेख अखबारों में छपा चुका है और पांच बरस से बराबर मन्त्री-दल की ही तरफ से वोट देता आया है ॥

का०। शाबाश वाई-काउण्ट! तुम भी बड़े अच्छे गाइड हो, अब कृपा कर एक दया मुझपर करना कि इन महात्माओं में से किसी से भी मुझको परिचित न कराना ॥

इसी समय किसीने काउण्ट की बाँह पकड़ी, उसने घूमकर देखा और इंगली को पा मुस्कुरा कर कहा— "आह बैरन आप हैं!!"

इंगली०। आप मुझे क्यों बार बार बैरन कहते हैं!! मैं तो कह चुका हूं कि मुझे यह सब झूठी पदवी और रुतबे पसन्द नहीं हैं। (अलबर्ट से) मगर वाई-काउण्ट तुम तो अपनी पदवी पसन्द करते हो?

अल०। अवश्य! आप अगर बैरन न भी रहें तो भी 'लखपती' अवश्य रहेंगे मगर मैं अपनी पदवी खोकर तो कुछ भी न रह जाऊंगा॥

काउण्ट०। मगर मुश्किल तो यह है न कि 'बैरन'

'काउएट' आदि की तरह लखपती की पदवी किसी के साथ जन्म भर के लिये नहीं रहती। जैसे फ्राङ्कफोर्ट के प्रसिद्ध लखपती महाजन "फ्राङ्क एण्ड फुलमैन" जिन का अभी अभी दिवाला निकला है॥

दंगली०। (पीला पड़ कर) सचमुच!!

का०। हां, मुझे आज शाम ही को यह खबर मालूम हुई है। मेरा भी उनकी कोठी में बहुत सा रुपया जमा था पर पहिले से पता लग जाने से मैंने निकाल लिया॥

दंगली०। ओह! मुझे तो उनसे दो लाख रुपया पाना है॥

का०। तब तो बुरी हुई, अब तो आपके ये दो लाख भी उन.... ..

दंगली०। चुपचुप, उसका जिक्र न कीजिये (धीरे से) और खास कर इस नौजवान केवेलकन्टी के सामने। इतना कह वह एन्ड्रिया की तरफ घूमा जो उसकी तरफ आ रहा था॥

अलबर्ट अपनी मां के पास चला गया था, दंगली एन्ड्रिया के साथ बातें कर रहा था अस्तु काउएट कुछ देर के लिये अकेला रह गया। कमरे में गर्मी बेहद बढ गई थी और नौकर लोग बरफ, शर्बत, कुलफी इत्यादि सुन्दर सुन्दर रकाबियों में लिये मेहमानों को दे रहे थे। काउएट के पास भी एक नौकर यह सब लाया मगर माथे पर पसीने की बूंदें होने पर भी काउएट चौंक कर पीछे हट गया। उसने उन ठंढी चीजों में से कुछ न लिया।

मरियम यह देख रही थी। उसने जलपान की थाली को भी बिना कौएट के छूए,जाते देखा,और उस भाव को भी लक्ष्य किया जिससे कौएट उस थाली से हटा था। उसने अलबर्ट से कहा, "देखा तुमने!"

अल०। क्या?

कौन्टेस०। कि काउएट हम लोगों के साथ भोजन करने का न्योता कभी मंजूर नहीं करता!!

अल०। मगर उसने मेरे साथ मेरे घर में तो भोजन किया है॥

कौन्टेस०। परन्तु तुम्हारा घर कौएट मारकर्फ का घर तो नहीं है। वह जब से यहां आया है तब से मैं उसे देख रही हूं॥

अल०। तो?

कौन्टेस०। उसने अभी तक किसी खाने की चीज में हाथ नहीं लगाया है॥

अल०। काउएट बड़ा परहेजी है!!

कौन्टेस के होठों पर एक गमगीन हँसी दिखाई पड़ी, उसने कहा, "अच्छा तुम उसके पास जाओ और अबकी जो भोजन की कोई थाली उसके सामने लाई जाय तो उसे कुछ लेने के लिये जोर दो॥"

अल०। मगर मां यह क्यों?

कौन्टेस०। मेरे कहने से॥

अलबर्ट तुरत मौएट क्रीटो के पास पहुंचा। इसी समय एक नौकर पुनः खाने की ठण्ढी और स्वादिष्ट

चीजों से भरी हुई एक रकाबी लिये हुए सामने आया। मरियम ने देखा कि अलबर्ट काउंट से कुछ लेने के लिये जोर दे रहा है मगर वह बराबर इन्कार ही करता है। लाचार अलबर्ट अपनी मां के पास लौट आया जिसका चेहरा बहुत ही पीला हो रहा था। उसने कहा, "देखा तुमने! उसने कुछ नहीं खाया !!"

अल०। मगर मां नही खाया तो नहीं सही, तुम्हें इसका रञ्ज क्यों हो रहा है !!

कौन्टेस०। तुम जानते हो अलबर्ट कि औरतें कुछ विचित्र तबीयत की होती हैं! मैं बडी ही खुश होती यदि वह मेरे मकान में कुछ भी खा लेता! शायद उसे ये चीजें पसन्द न आई हो जो उसके सामने लाई गईं?

अल०। नहीं सो नही हो सकता, मैंने इटली में उसे सब कुछ खाते देखा है॥

कौन्टेस०। तो शायद उसे गर्मी न मालूम होती हो क्योंकि वह गर्म मुल्कों में रह चुका है॥

अल०। नही सो भी नही है क्योंकि अभी अभी वह वेहद गर्मी की शिकायत करता था और यह भी कहता था कि मौसिम तो साफ है बाहर बागीचे में बहुत आराम होगा॥

मरियम चौंक कर बोली, "ठीक है, मैं ऐसा ही करती हूं, बाहर बागीचे में ही मेहमानो के भोजन का इन्तजाम किया जायगा और साथ ही मुझे यह भी पता लग जायगा कि काउण्ट का परहेज यों ही था या किसी

कारणवश॥

मरियम अपने पति के पास पहुंची जो कई आदमियों के साथ खड़ा बातें कर रहा था। उसने मारकर्फ से कहा, "काउण्ट! इन लोगों को यहां गर्मी में और मत रोको, बाहर बागीचे में यहां से बहुत ठंढा है और मैं समझती हूं कि सभों को यहां घुटने की बनिस्वत बागीचे की ठंढी हवा बहुत पसन्द आवेगी॥"

सभों ने खुशी खुशी मरियम की बात मंजूर कर ली। मरियम मौण्ट क्रीटो की तरफ घूमी और बोली—"काउण्ट! क्या आप अपना हाथ मुझे देंगे!"*

कौण्ट इन मामूली शब्दों को सुनकर भी यकायक चौंक सा गया और तब उसने एक गहरी निगाह मरियम के चेहरे पर डाली। यद्यपि यह एक पल के लिये ही थी पर मरियम को काउण्ट की यह निगाह बरसों तक की सी मालूम पड़ी; उस एक निगाह ही से बहुत सी बातें सूचित होती थीं॥

मौण्ट क्रीटो ने मरियम को हाथ का सहारा दिया और दोनों सीढ़ी से उतर नीचे बाग में आये। उनके पीछे २ एक दूसरे दरवाजे की राह और भी सब मेहमान बागीचे में उतर आये॥

---

* यूरोपीय सभ्य समाज में यह कायदा है कि कोई भला आदमी आते जाते या सीढी अथवा गाडी से चढती उतरती समय जान पहिचान की लेडी को हाथ का सहारा देता है॥

दसवां बयान।

नमक—रोटी।

मैडम मारकर्फ कौंउण्ट के हाथ का सहारा लिये हुए एक गुञ्जान रास्ते से चली। काउण्ट से उसने कहा, "कमरे में बड़ी गर्मी थी—थी न ?"

काउण्ट०। जी हां बड़ी शिद्दत की, आपने बहुत अच्छा किया जो हम लोगों को बागीचे में ले आई। (कौण्टेस का हाथ कांपता पाकर) मगर आपको शायद यहां ठंढ मालूम हो रही है ?

कौण्टेस ने इसका कोई जवाब न दे कहा, "आप जानते हैं कि मैं आपको कहां ले चली हूं ?"

का०। नहीं, पर आप देखती हैं कि मैं किसी तरह की रुकावट भी नहीं डालता॥

कौण्टेस०। मैं आपको उस ग्रीन हाउस* में ले जा रही हूं॥

काउण्ट ने सवाल की नजर मरियम पर डाली पर उसने कोई जवाब न दिया अस्तु वह भी चुप रहा। दोनों उस मकान में पहुचे जिसके अन्दर तरह तरह के सुन्दर और स्वादिष्ट फूल और फल इस जूलाई महीने में भी

* ग्रीन हाउस—ऐसा मकान जिसमें दूसरे दूसरे मुल्कों के फूल और फल बनावटी तर्कीबों से गर्मी पहुचा कर रक्खे जाते हैं। प्रायः सर्द मुल्कों में गर्म मुल्कों के पेड़ रखने के लिये इनकी जरूरत पड़ती है॥

बनावटी गर्मी की मदद से पककर तैयार हो रहे थे। मरियम ने काउण्ट की बांह छोड़ दी और एक अंगूरों का गुच्छा तोड़ उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा, "हमारे ये अंगूर आपके सिसली और साइप्रस के अंगूरों का मुकाबला तो नहीं कर सकते पर फिर भी यहां के ठण्ढे मौसिम को देखते हुए अच्छे ही हैं।" मरियम के होठों पर मुस्कुराहट थी मगर उसका भाव कुछ ऐसा उदास था कि देखनेवाला उन सुन्दर आंखों में आंसू की झलक पा सकता था॥

काउण्ट ने सिर हिलाया और पीछे हट गया॥

मरियम ने कांपती आवाज में कहा, "क्या? क्या आप इन्कार करते हैं?"

का०। माफ कीजियेगा मैडम! पर मैं अंगूर कभी नहीं खाता॥

मरियम ने एक लम्बी सांस ली और गुच्छा गिरा दिया। एक उम्दा शफ़ालू जिसे इस बनावटी गर्मी ने पकाया था बगल की दीवार से लटक रहा था। मरियम ने इसे तोड़ा और कहा, "अच्छा इसे खाइये॥"

काउण्ट ने फिर सिर हिलाया॥

मरियम ने यह देख करुणा-पूर्ण स्वर में कहा—"फिर? फिर इन्कार? सचमुच काउण्ट आप मुझे दुःख पहुंचा रहे हैं!!"

कुछ देर के लिये सन्नाटा हो गया। शफ़ालू भी अंगूरों की तरह जमीन पर गिर गया॥

मरियम ने दीनता भरे स्वर में कहा—"काउएट! अरब में एक सुन्दर रीति है कि एक ही छत के नीचे एक साथ जो नमक और रोटी खा लेते हैं वे सदा के लिये एक दूसरे के दोस्त हो जाते हैं॥"

का०। हां मैडम मैं जानता हूं, पर हमलोग इस समय फ्रान्स मे हैं अरब में नही और फ्रान्स में चिरस्थाई मित्रता वैसी ही दुष्प्राप्य है जैसी रोटी और नमक खाने की रीति॥

मरियम ने उद्वेग के साथ काउएट की बांह पकड़ कर कहा, "पर हमलोग दोस्त हैं! हैं न?"

काउएट का चेहरा एकदम पोला और तब सुर्ख हो गया। उसकी आंखें ऐसी हो गई मानों चौंधियां रही हों। उसने कहा, "अवश्य हमलोग दोस्त हैं! न होने का कारण?"

यह जवाब उससे कही दूसरा था जिसके पाने की मरियम को आशा थी। उसने काउएट की बांह छोड़ दी और मुंह घुमा कर एक गहरी सांस ली जो आह की तरह थी। दोनों ने टहलना शुरू किया मगर कुछ देर चुप रहकर कौंटेस ने फिर कहा, "काउएट! क्या यह सच है कि आपने बहुत कुछ देखा है, बहुत सफर किया है, और बड़ा कष्ट उठाया है?"

का०। हां मैडम! मैंने बहुत दुःख उठाया है!!

मरियम०। पर अब आप सुखी हैं?

का०। बेशक, क्योंकि अब कोई मेरे मुंह से उसको

शिकायत नहीं सुनता है॥

मरि०। क्या आपके आजकल के सुख ने आपका दिल कुछ नर्म किया है?

का०। मेरी वर्तमान प्रसन्नता मेरी पिछली दुर्गति के बराबर ही है॥

मरियम०। आपने ब्याह किया है न?

का०। (कांप कर) मैंने ब्याह किया? यह आपसे किसने कहा?

मरियम०। किसी ने कहा नहीं फिर भी लोगों ने आपके साथ थियेटर में एक सुन्दर औरत को देखा है॥

का०। वह एक लौंडी है जिसे मैंने कुस्तुनतुनियां में खरीदा था और जो एक बादशाह की लड़की है। मैंने उसे पाल लिया है क्योंकि इस संसार में ऐसा कोई नहीं जिसे मैं प्यार करूं॥

मरियम०। तब क्या आप अकेले हैं?

का०। हां, अकेला हूं॥

मरियम०। बहिन नहीं? भाई नहीं? बाप नहीं?

का०। कोई नहीं॥

मरियम०। जब संसार में ऐसा कोई नहीं जिससे आप प्रेम कर सके तो फिर आप रहते किस तरह हैं?

का०। मैडम! इसमें मेरी गलती नही है। माल्टा में मैं जब था तो एक युवती को प्यार करता था और उसके साथ ब्याह ही करने वाला था कि लड़ाई छिड़ गई और मैं उसमें पड़ गया। मैं समझता था कि वह

मुझे इतना प्यार करती है कि मेरे लौटने की राह देखे या मेरे मरने पर मेरी कब्र के साथ सच्ची बनी रहे, पर जब मैं लौटा उसके पहिले ही उसने दूसरे से शादी कर ली थी। इस दुनिया में बहुत से नौजवानों के साथ ऐसा ही होता है पर कदाचित मेरा दिल औरों से कुछ कमजोर होगा क्योंकि मुझे बड़ा ही दुःख हुआ। उससे भी ज्यादा जितना औरों को होता॥

कौन्टेस चलते चलते रुक गई मानो उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही है। फिर उसने कहा, "और आपके दिल में अभी तक वह प्रेम बना हुआ है क्योंकि मनुष्य एकही दफे प्यार कर सकता है! क्या आपने फिर उसे कभी देखा था?"

का०। कभी नहीं॥

मरियम०। कभी नही?

का०। मैं फिर कभी उस मुल्क ही में नहीं गया जहां वह रहती थी॥

मरियम०। कहां? माल्टा में?

का०। हां॥

मरियम०। क्या वह माल्टा में रहती है?

का०। हां मैं तो यही समझता हूं॥

मरियम०। परन्तु यद्यपि उसने आपको बहुत कष्ट पहुंचाया तो भी आपने उसे क्षमा कर दिया है!

का०। हां उसे मैंने माफ कर दिया है॥

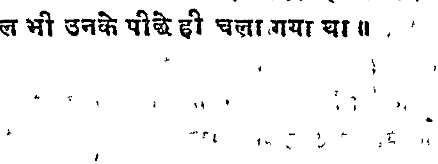
मरियम०। उसे? सिर्फ उसे? तो क्या आप अब

अलबर्ट ने ताज्जुब के साथ कहा, "क्या मेरी मां के साथ आपकी बनी नहीं ?"

का० वाह ! आपने क्या सुना नहीं कि अभी अभी आपकी मां ने मुझे अपना दोस्त कहा है ?

सब फिर कमरे में लौट आये। वेलेन्टिन अपनी मां और बाप के साथ चली गई थी। कहना व्यर्थ है कि मारल भी उनके पीछे ही चला गया था ॥

॥ नौवां हिस्सा समाप्त ॥



॥ श्रीः ॥

मोतियों का खजाना ।

दसवां हिस्सा ।

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

अनुवादित

और

प्रकाशित ।

LAHRI PRESS DEVAKI NANDAN KHATRI BENARES CITY

PRINTED BY

PANNA LAL ROY

AT THE LAHARI PRESS, BENARES CITY

प्रथम बार १०००] १९२० ई० [मूल्य ॥=) आ०

॥ श्रीः ॥



मोतियों का खजाना।

दसवां हिस्सा।

पहिला बयान।

मैडम मोरा।

मि० विलफोर्ट के मकान पर सचमुच एक दुखदाई घटना होगई थी॥

अपनी स्त्री और लड़की के 'बाल' (नाच) में चले जाने के बाद विलफोर्ट अपने कमरे में चला गया जहां उसके टेबुल पर कागजों का एक ऊंचा ढेर लगा हुआ था पर इस समय वह यहां काम करने की नीयत से नहीं आया था बल्कि कुछ सोच विचार करने आया था। नौकरों को यह हुक्म दे कि बिना कोई बहुत ही जरूरी काम आये वह कदापि छेड़ा न जाय और कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर, वह उन भयानक और दुखदाई घटनाओं की तरफ अपना ध्यान दौड़ाने लग गया जिन्होंने उसके दिल और दिमाग को रञ्ज और दुःख के साथ साथ कष्टकर विचारों से भर दिया था। कुछ

देर तक सोच विचार करने बाद उसने अपने टेबुल का एक दराज खोला और उसके अन्दर के एक गुप्त खाने में हाथ डाल उसने एक कागजों का पुलिन्दा निकाला। इन कागजों में जिन्हें वह एक एक करके बड़े गौर से देखने लगा उसने अपने हाथ से और गुप्त भाषा में उन लोगों के नाम लिख रक्खे थे जो उसके रुपये, वकालत अथवा गुप्त प्रेम के कारण उसके दुश्मन बन चुके थे। अब चूंकि वह उनसे डरने लग गया था, उनकी संख्या उसे बहुत ज्यादा मालूम होती थी पर पहिले कई दफे वह उनका नाम पढ़ पढ़ कर उस मुसाफिर की तरह मुस्कुरा उठा था जो पहाड़ की ऊंची चोटी पर पहुंच नीचे की तरफ दूर—बहुत दूर—पर उन गारों, नालों, पत्थरों, नोकीली झाड़ियों और भयानक दर्रों को देखता है जिन्हे वह पार कर चुका और अब सही सलामत अपने स्थान पर पहुंच गया है॥

जब विलफोर्ट उस लिस्ट के सब नामों को अच्छी तरह पुनः पुनः पढ गया तो उसने सिर हिलाया और धीरे से कहा—"नहीं, इनमें से कोई मेरा दुश्मन ऐसा नहीं है जो शान्ति, दृढ़ता और सब्र के साथ इतने दिनों तक रुका रहे और अब मौका पाकर मेरे उस गुप्त भेद के बोझ से मुझे दवाने का साहस करे। अवश्य ही यह कहानी उस कार्सिकन ने किसी पादड़ी से मरते वक्त कही है और उस पादड़ी से काउण्ट मौण्ट क्रीटो ने उसे सुन पाया है। पर इस काउण्ट, इस मलाह के लड़के

जक्कोन, इस थिसली की खान के मालिक, को भला क्या पड़ी थी जो वह इस दुखदाई भयानक घटना के उथल पुथल करने में लग गया! खैर जो कुछ भी हो, काउण्ट के दोस्त और दुश्मन—एवी बसूनी और लार्ड विलमोर, दोनों ही की बातों से कोई ऐसा कारण नहीं मालूम होता जिससे उसका और मेरा किसी मामले में सामना होना प्रगट होता हो॥"

इसी समय विलफोर्ट को उसके दरवाजे पर एक गाडी के रुकने, कुछ आदमियों के उतरने और तब किसी बूढ़े स्वर के रोते हुए धीरे धीरे सीढ़ियां चढने की आहट मिली। उसने चौंक कर अपने कमरे का दरवाजा खोला और सामने ही अपनी पहिली स्त्री की मां अर्थात् रईस मीरा की स्त्री को खुले बालों, पीले चेहरे और रञ्ज और गम के कारण सूजी हुई आंखों के साथ रोते हुए खड़े पाया। विलफोर्ट को देखते ही उस बेचारी बूढ़ी लेडी ने हिचकियां लेते लेते कहा, "ओह विलफोर्ट! बडी भारी आफत आगई! रईस मीरा अब इस संसार में नहीं हैं॥"

इतना कहते कहते मैडम मीरां बदहवासी के साथ कमरे के अन्दर आ सब से नजदीक की कुर्सी पर बैठ बल्कि गिर गई और विलफोर्ट घबड़ाये हुए स्वर से दो कदम पीछे हटकर बोला, "हैं! रईस मीरा की मृत्यु होगई? नहीं नहीं!!"

मैडम मीरां ने भर्राये गले से कहा, "हां उनकी मौत

ऐसी ही अचानक हुई जिसपर विश्वास करना मुश्किल है। हम दोनों एक हफ्ता हुआ एक साथ अपने घर से रवाना हुए। यद्यपि मेरे पति की तबीयत कुछ खराब थी पर अपनी प्यारी वेलेंटिन का देखने की उम्मीद ने उनमें जोश पैदा कर दिया था। मारसेलीज तक हम लोग मजे में चले आये पर वहां पहुंचने के थोड़ी ही देर बाद उन्होंने दो चार टिकियां उस मिठाई की खाई जो वे प्रायः खाया करते थे और उसके बाद ही ऐसी गहरी नींद में सो गये कि जिससे मुझे ताज्जुब मालूम हुआ। बड़ी देर बाद जब मैंने लाचार हो उन्हें उठाना चाहा तो देखा कि उनका चेहरा बड़ा ही लाल हो गया है, गले और माथे की नसें फूल आई हैं और बड़ी तेजी से धमक रही हैं तथापि अँधेरा हो जाने के कारण मैंने उन्हें जगाना मुनासिब न समझा और सोने दिया। पर थोड़ी ही देर बाद मैंने गला खरखराने और घोंघियाने की आवाज सुनी जो कि तकलीफ से भरी हुई थी। मैं घबड़ा गई, गाड़ी रुकवा कर रोशनी में उन्हें देखा, दवा वगैरह सुंघाई पर सब व्यर्थ हुई और मैं एक लाश के साथ बैठी हुई 'एन' पहुंची॥"

विलफोर्ट ताज्जुब से मुंह खोले यह सब सुन रहा था, उसने कहा—"एन पहुंच कर आपने डाक्टर को बुलाया?

मैडम०। हां पर उसकी जांच ने भी यही बताया कि रईस के बदन में अब जान नहीं है॥

विल०। कम से कम उसने यह तो कहा होगा कि वह किस बीमारी से मरे?

मैडम०। हां, उसने कहा कि मारक्विस की मौत दिल की धडकन बन्द हो जाने से हुई है॥

विल०। तब आपने क्या किया॥

मैडम०। वे अपनी जिन्दगी ही में यह इच्छा प्रगट कर गये थे कि अगर कभी वे पैरिस के बाहर मर जायँ तो भी उनकी लाश यही लाकर उनके खानदान के मकबरे में गाड़ी जाय अस्तु मैंने उनकी लाश को ताबूत में बन्द करवा दिया है और वह दो तीन रोज तक यहां आ जायगी॥

विलफोर्ट ने अफसोस भरे हुए स्वर में कहा, "ओह मां! इस उम्र मे तुम्हे यह दुःख झेलना पड़ा!!"

मैडम०। ईश्वर की सहायता से मैंने इसे बर्दाश्त कर लिया, फिर यदि मैं मर जाती तो मारक्विस जरूर मेरे लिये वही करते जो मैं अब उनके लिये करती हूं। अब मैं रो नहीं सकती, मेरी आंखों में आंसू नही बचे। मेरे पति ने जब से मुझे छोडा तब से मैं बेहोश सी होगई हू। अच्छा वेलेण्टिन कहां है? मैं उसे देखा चाहती हू॥

विलफोर्ट ने यह सोच कर कि अगर यह कहूंगा कि वह बाल में गई है तो मुनासिब न होगा कहा—"वह अपनी मा के साथ कही गई है मैं उसे अभी बुलवा देता हूं। आप तब तो मेरे कमरे में चल कर आराम करे॥"

विलफोर्ट ने बूढी लेडी को सहारा देकर उठाया

ग्रौर ग्रपने कमरे में पहुंचा दिया। इसके बाद उसे मजदूरनियों के सपुर्द कर वह वेलेण्टिन को बुलाने के लिये निकला। जब वह काउण्ट मारकर्फ के कमरे में पहुंचा तो उसकी घबराई ग्रौर परेशान हालत देखते ही वेलेण्टिन चौंकी ग्रौर उसके पास ग्राकर बोली—"क्यों बाबा क्या हुग्रा?"

विलफोर्ट ने माथे पर हाथ फेरते फेरते कहा—"तुम्हारी नानी ग्रभी ग्राई हैं॥"

वेलेण्टिन०। ग्रौर नाना!

विलफ़ोर्ट ने इसका कोई जवाब न दे वेलेण्टिन का हाथ पकड़ लिया क्योंकि वह जानता था कि यह ग्रपने नाना को बहुत ही प्यार करती है। वेलेण्टिन उसके ढङ्ग से समझ गई कि उसके नाना पर कोई दुर्घटना ग्राई है। यह सोचने के साथ ही वह चक्कर खाकर गिरने लगी मगर विलफोर्ट ने उसे सम्हाला ग्रौर उठाये हुए गाडी तक ले ग्राया। मैडम विलफोर्ट भी यह कहती कहती ग्राकर गाडी में बैठ गईं—"कैसे ताज्जुब की बात है! भला, किसने ऐसी ग्रनहोनी बात सोची भी होगी?"

गाड़ी जब घर के दरवाजे पर पहुंची तो वेलेण्टिन होश में ग्रा चुकी थी। वह ग्रपने पिता का सहारा लेकर उतरी। सीढ़ियां चढ़कर ग्रन्दर पहुंची ही थी कि नोटीर का नौकर बोरिस वहां पहुंचा ग्रौर उसने धीरे से कहा—"मिस्टर नौटीर ग्रापको देखा चाहते हैं।"

वेलेण्टिन ने कहा—"मैं अभी नानी के पास से होकर आती हूं ॥"

बूढ़े बोरिस ने मैडम मीरां को आते और अपनी दुःख की कहानी कहते देखा था। यह जानते ही कि बूढ़े रईस मीरां की मौत हो गई वह अपने मालिक के पास दौड़ गया क्योंकि वास्तव में बूढ़े आदमियों को इस बात से ज्यादा और कुछ नही डराता जब कि वे देखते हैं कि मौत ने कुछ देर के लिये उनपर से अपना पहरा हटा किसी दूसरे बूढ़े को अपने चङ्गुल मे फंसाया है। नैाटीर ने जो इस घर का शोर गुल और रोने की आवाज सुन सुन घबरा रहा था बोरिस को देखते ही इशारा किया, "क्या है?"

बोरिस ने कहा, "बड़े अफसोस की बात हुई है! मैडम मीरां अभी अकेली आई हैं रास्ते में उनके पति की मौत हो गई जो उनके साथ आ रहे थे ॥"

रईस मीरां और नैाटीर में कोई भारी दोस्ती न थी तो भी एक बूढे की मौत दूसरे बूढ़े पर गहरा असर करती ही है। नैाटीर ने कुछ देर के लिये अपना सिर झुका लिया और गहरी चिन्ता में डूब गया। इसके बाद सिर उठा कर बोरिस की तरफ देखा और एक आंख बन्द की ॥

बोरिस०। मिस वेलेण्टिन को बुलाऊं?

नैाटीर०। (इशारे में) हां ॥

बोरिस०। मगर वे तो बाल में गई हुई हैं, मिस्टर

विलफोर्ट उन्हें बुलाने गये हैं। जब आवेंगी तो आपके पास भेज दूंगा॥

नोटीर ने "अच्छा" कहा और इसी सबब से बोरिस ने वेलेण्टिन के आते ही उसे नोटीर का संदेसा दिया मगर उस कोमलहृदया लडकी ने सब से पहिले अपनी दुःखिनी बूढ़ी नानी के पास जाना ही उचित समझा जिसके पास वह उस समय तक बैठी रही जब तक कि दुःख अफसोस और गम के बोझ से बिल्कुल ही सुस्त हो वह बूढी लेडी बदहवासी की नीद सो न गई। तब वेलेण्टिन अपने दादा के पास पहुची जो अभी तक बैठा उसकी राह देख रहा था। वेलेण्टिन अपनी आंखों में आंसू भरे हुए उसके पास जाकर बैठ गई जिसने उसकी तरफ ऐसी सहानुभूति और प्रेम की दृष्टि से देखा कि उसकी आंखों से पुनः आंसू गिरने लगे। बूढा नोटीर उसे उसी तरह देखता रहा जिसे देख वेलेण्टिन ने कहा, "हां बाबा मैं समझती हूं! तुम कहते हो कि नाना मर गये तो क्या अब भी तुम्हारा दादा बैठा हुआ है॥"

बूढ़े की निगाहों ने जाहिर कर दिया कि उसका यही मतलब था अस्तु वेलेण्टिन फिर बोली, "ओह! यदि ऐसा भी न होता तो मेरी क्या दशा होती!!"

वेलेण्टिन बहुत देर तक नोटीर के पास बैठी रही जो इशारों ही में उसे सन्तोष और दिलासा देता रहा आखिर जब वह सोने के लिये उठी उस समय बहुत रात जा चुकी थी और घर में सन्नाटा छाया हुआ था। वह

जाकर बिछौने पर पड़ रही पर गम चिन्ता और दुःख ने उसे सोने न दिया और वह सुबह बहुत सवेरे ही उठ गई। उठते ही वह अपनी नानी के पास गई मगर उसकी सूरत देखते ही चौंक पड़ी क्योंकि कल की बनिस्बत आज उसने उस बूढ़ी लेडी को बहुत सुस्त और कमजोर पाया। वह घबरा कर बोल उठी, "नानी! क्या तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है!"

मैडम मीरां ने कहा, "हां बेटी, मेरी तबीयत ठीक नहीं है और मैं इस बात की राह देख रही थी कि तुम आ जाओ तो तुम्हारे पिता को बुलवाऊं॥"

वेलेण्टिन०। बाबू जी को !!

मैडम०। हां, मैं उनसे कुछ बात किया चाहती हूं, उन्हें जल्दी बुलाओ॥

यद्यपि वेलेण्टिन नहीं समझ सकी कि उसकी नानी उसके पिता से क्या बातें किया चाहती है परन्तु उसने कुछ पूछना भी उचित न समझा और विलफोर्ट को बुलाने को आदमी भेजा। थोड़ी ही देर में वह आ पहुंचा और मैडम को सलाम कर एक कुर्सी पर बैठ गया। मैडम ने साथ ही कहा, "आपने अपनी एक चीठी में वेलेण्टिन की शादी के बारे में लिखा था कि कहीं तै हुई है॥"

विलफोर्ट०। जी हां, इसकी शादी मि० फ्रान्सिस एपिने से तै हो चुकी है॥

मै०। यह नौजवान उन जनरल एपिने का लड़का

है न जिसे नेपोलियन के लौटने के कुछ ही दिन पहिले साजिश करने वालों ने मार डाला था ?

विल०। जी हां॥

मैडे०। तो वह आपके घराने से शादी करने को तैयार है ?

विल०। जी हां, हमलोगों के विचारों का अन्तर अब पहिले की तरह गम्भीर नहीं रह गया है, फिर वह बहुत ही छोटा था जब उसका बाप मारा गया दूसरे वह मि० नैाटीर को बहुत कम जानता है और इसी से उनके साथ यदि प्रसन्नता से नही मिलेगा तो रंज भी न होगा॥

मैडे०। खैर तो आप लोगों की समझ में यह ब्याह बहुत मुनासिब है ?

विल०। जी हां॥

मैड०। अच्छा तो फिर आप लोग जल्दी ही इस काम को कर डाले क्योंकि अब मेरी जिन्दगी बहुत ही कम है॥

विल०। (चौंक कर) सो क्या से क्या ?

मैडम०। हां मैं ठीक कहती हूं, मैं अब थोड़े ही दिनों की मेहमान हूं अस्तु चाहती हूं कि अपनी प्यारी वेलेन्टिन की शादी अपने सामने ही कर जाऊं क्योंकि उस बेचारी की मां के मरजाने पर जिसे तुम इतनी जल्दी भूल गये . .....

विल०। मैडम ! मुझे लाचार होकर दूसरी शादी

करनी पड़ी क्योंकि वेलेन्टिन के लिये एक मां का होना जरूरी था ॥

मैडम० । सौतेली मां कभी मां नहीं होती जनाव! खैर इससे अब कोई झगड़ा नहीं है मुझे अब वेलेण्टिन से काम है ॥

विल० । जैसा आपका हुक्म है वही होगा । मि० एपिने के यहां आते ही... .. ..

वेले०। प्यारी मां ! क्या तुम ऐसे गमी के मौके पर मेरा व्याह कराया चाहती हो ?

बूढी ने यह सुन कुछ कड़ाई से कहा, "बेटा ! यह सब फजूल और कमजोर दिल वालों के ख्याल हैं। मैं खुद अपनी मां के मरते ही व्याही गई थी पर उससे यह नहीं कहा जा सकता कि मेरी जिन्दगी दुःख से बीती !

विल० । तो भी ऐसी भारी गमी ...

बूढी० । तो भी क्या ? मैं कह न रही हूं कि मेरी जिन्दगी अब बहुत ही थोड़ी है, अस्तु मरने के पहिले मैं अपने दामाद को देखा चाहती हूं, मैं उससे कहूंगी कि मेरी वेलेण्टिन को बराबर सुख के साथ रक्खे, मैं देखूंगी कि उसके दिल के अन्दर मेरा हुक्म मानने की इच्छा है या नहीं जिसमें अगर वह मेरी इच्छा के बर्खिलाफ कुछ करे तो मैं मरकर भी फिर उठूं और उसे राह पर लाऊं ॥

बूढी लेडी की बातों के ढङ्ग से मालूम होता था कि उसका दिमाग फिर बहकने लगा है अस्तु विलफोर्ट ने

शान्ति के ढङ्ग पर कहा, "मां यह सब फजूल ख्याल तुम मत करो! मुर्दा एक दफे कब्र में दब जाने पर फिर वहीं रहता है उठता नहीं॥"

मैडम०। नहीं महाशय आपका यह सोचना गलत है। अभी कल रात को ही मैंने एक प्रेतात्मा देखी है। यद्यपि मेरी आंखें बन्द थीं और मैं कोशिश करके भी उन्हें खोल नहीं सकती थी. तौभी मैंने साफ देखा कि मेरे कमरे के उस कोने से जिधर मैडम विलफोर्ट के कमरे में जाने के लिये एक दरवाजा है, एक आत्मा पैदा हुई और मेरे चारो तरफ फिरने लगी॥

वेलेण्टिन यह सुनतेही डर से चीख उठी। विलफोर्ट बोला—"आपको बुखार की गर्मी थी और कोई बात नहीं है॥"

मैडम०। ओह आप भलेही शक करें पर मुझे पूरा विश्वास है। दूसरे मुझे और भी सबूत मिला। उस आत्मा ने मेरा पानी का गिलास हटाया वही जो उस टेबुल पर रक्खा है॥

वेले०। मां! तुम सपना देखती होगी!!

मैडम०। सपना! नहीं, मेरे घण्टी बजाने के लिये हाथ बढ़ाते ही आत्मा गायब हो गई उसी समय दाई रोशनी लिये वहां आई मगर उसे कुछ दिखाई नहीं पड़ा क्योंकि वह वास्तव में मेरे पति की आत्मा थी और सिर्फ मुझे ही दिखने और मुझे ही बुलाने के लिये आई थी। अस्तु जब वे मुझे देखने के लिये आ सकते

हैं तो मैं क्यों नही अपनी बेटी की रक्षा के लिये लौट सकती!

विल०। नही मां तुम इन दुःखदाई विचारों मे न पड़ो अभी तुम्हारी बहुत जिन्दगी है और तुम हम-लोगों के साथ बहुत दिन......

मैडम०। नही नही नहीं, कभी नहीं, अब मैं कुछ ही दिन की मेहमान हूं। अच्छा मि० एपिने कब आते हैं!

विल०। आज ही कल में आने वाले हैं॥

मैडम०। बहुत ठीक, अच्छा तो जैसेही वे आवें वैसे ही मुझे खबर देना—और इस बीच में एक नोटरी को बुलाओ जिसमें मैं इस बात का पक्का इन्तजाम करदूं कि मेरी सब जायदाद वेलेण्टिनही को मिले॥

वेले०। ओह मां इसकी तुम्हें क्या जल्दी पड़ी है—तुम पहिले डाक्टर को देखो क्योंकि तुम्हारा बदन एक दम जल रहा है॥

मैडम०। डाक्टर! मैं बीमार नहीं हूं, मुझे नोटरी की जरूरत है, नोटरी बुलाओ नोटरी॥

यह कहती हुई बूढ़ी लेडी बेचैनी के साथ अपने बिछौने पर करवट बदलने लगी॥

लाचार विलफोर्ट नोटरी को बुलवाने के लिये कमरे के बाहर निकला और वेलेण्टिन अपनी नानी के पलङ्ग के बगल में बैठ गई। यह बेचारी लड़की इस समय खुद बीमार मालूम पड़ती थी, उसके गाल लाल हो रहे थे, सांस लेने में रुकावट पड़ रही थी और कलेजे की धड़-

वेले० । मैं अभी उनके पास न जाऊंगी, उन्होंने आपको बुलाने से मुझे रोक दिया था, दूसरे मेरी तबीयत भी बेचैन होरही है, मैं जाकर कुछ देर बाग में राहलूंगी तो तबीयत ठिकाने होगी ॥

डाक्टर ने प्यार से वेलेण्टिन का हाथ दबाया और मैडम को देखने चला गया उधर वेलेण्टिन बगीचे के तरफ बढ़ी । पाठक जानते ही हैं कि बगीचे का कौनसा स्थान उसे सबसे ज्यादा प्रिय था । कुछ देर इधर उधर घूमने और कुछ फूल तोड़ कर सूंघने बाद वह धीरे २ उसी पिछवाड़े वाले फाटक की तरफ़ बढ़ी । थोड़ी दूर ही होगी कि उसने किसी को अपना नाम पुकारते सुना चौंक कर इधर उधर देखने लगी—फिर आवाज आई और इस बार साफ मालूम होगया कि मैक्समिलियन उसे पुकार रहा है ॥

दूसरा बयान।

वादा।

वह सचमुच मारलही था जो एक छेद की राह वेलेण्टिन को देख उसे पुकार रहा था। वेलेण्टिन को यह आशा न थी कि इस वेमौके मारल को वहां पावेगी अस्तु उसे वहां देख वह तेजी के साथ फाटक के पास पहुंची और बोली, "तुम इस वक्त यहां?"

मारल ने उदासी के साथ कहा, "हां मैं इस समय बुरी खबर सुनने और सुनाने आया हूं॥

वेलेण्टिन ने लम्बी सांस लेकर कहा, "यद्यपि बद-किस्मती का प्याला लबालब भर गया है फिर भी सुनाओ अब तुम्हे क्या सुनाना है॥"

मारल ने अपने उद्वेग को छिपाने की कोशिश करते हुए कहा, "वेलेण्टिन कृपा कर शान्ति के साथ जो कुछ मैं कहूं सो सुनो, तुम्हारी शादी कब तै हुई है?"

वेलेण्टिन०। तुमसे मुझे कुछ छिपाना नही है सब सुन लो, आज सुबह यह विषय उठा था, मेरी नानी जिन्हे मैं सोचती थी कि मेरी मदद करेगी, उल्टा मेरे खिलाफ हो गई हैं, वे चाहती हैं कि यह शादी जहां तक जल्द हो सके हो जाय, अब सिर्फ मि० एपिने के आने की राह देखी जा रही है उनके आने के दूसरे दिन सब तै हो जायगा॥

नैाजवान के कलेजे को छेदती हुई एक आह निक-

ली, उसने गमगीन आंखों से वेलेण्टिन को देखते हुए कहा, "तब फिर समझो कि अब हमलोगों के कत्ल में ज्यादा देर नही है क्योंकि आज मि० एपिने यहां पहुंच गये॥"

यह सुनते ही वेलेण्टिन के मुंह से एक चीख निकल पड़ी॥

मारल०। आज मैं काउण्ट औारट क्रोटो के घर पर था जब मुझे इसका पता लगा। अलबर्ट मारकर्फ उसे लेकर काउण्ट के पास आया था, फ्रान्सिस एपिने का नाम सुनते ही तो मुझे बिजली सी मार गई, मुझे फिर कुछ होश नही रहा कि क्या हुआ—मेरी मानों जान निकल गई। दस मिनट बाद मैं उठा और सीधा यहीं आया॥

कुछ देर तक रुक कर मैक्समिलियन बोला, वेलेण्टिन! अब हमलोगों के लिये बहुत खतरनाक मौका आगया है। इस समय चुप चाप बैठ कर रंज और अफसोस करने का मौका नही है, उन्हे उन दूसरे लोगों के लिये छोड़ो जिन्हें शान्ति के साथ दुःख उठाने और अपना आंसू पीने की आदत है, मगर हम दोनो वैसे हैं नही और वैसा करने वाले नही। बताओ! तुम्हारा क्या इरादा है, मुसीबत के आगे सिर झुकाना या हिम्मत के साथ उसका मुकाबला करना? बताओ! क्योंकि इस समय यही पूछने के लिये मैं आया हूं॥

वेलेण्टिन कांप उठी, अपने बाप, अपनी नानी,

अपने सारे कुटुम्ब के बर्खिलाफ होने का उसे कभी ध्यान भी नही उठा था। वह बोली, "मैक्समिलियन! तुम कह क्या रहे हो? मुसीबत का मुकाबला? क्या तुम मुझे अपने पिता का हुक्म न मानने, अपनी मरती हुई नानी की इच्छा के विरुद्ध, अपने पूरे कुटुम्ब की मर्जी के खिलाफ चलने को कह रहे हो? नहीं नहीं मैक्समिलियन तुम्हारा यह मतलब कदापि नही हो सकता, जैसा तुमने कहा—मैं अपने आसू पिऊंगी पर अपने पिता को दु:ख दू या बूढी नानी के अन्तिम क्षणों को दुःखदाई बनाऊं, सो नही हो सकता॥

मारल ने शान्ति से कहा, "हां तुम ठीक कहती हो? मिस वेलेण्टिन! तुम्हारे विचारो के लिये मैं तुम्हारी तारीफ करता हू॥"

वेले०। मिस! मिस वेलेण्टिन! मैक्समिलियन, तुम मुझसे परायों की तरह बात करने लगे!! मेरी मुसीबत में तुम भी मेरे से दूर होने लगे?

मैक्स०। हा क्योंकि मेरा स्वार्थ मुझे अन्धा बना रहा है॥

मैक्समिलियन का ढङ्ग, उसकी कांपती हुई आवाज भर्राया गला, पीला चेहरा, सभी जाहिर कर रहा था कि वह कैसी नाउम्मीदी के साथ यह कह रहा है। वेलेण्टिन बोली, "अच्छा तो बताओ तुम्ही बताओ, मैं क्या करूं? मुझे राय दो॥"

मैक्स०। मैं तुम्हें राय दू? मेरी राय तुम मानोगी?

वेले०। (ऊँची सांस लेकर) हां अगर वह मानने लायक हुई॥

मैक्स०। मैं स्वतन्त्र हूं और तुम्हारा और अपना पोषण करने लायक रुपया भी मेरे पास है। तुम मेरी स्त्री बनो। मैं कसम खाता हूं कि बिना तुम्हारे साथ व्याह किये तुम्हारे बदन को हाथ न लगाऊँगा, तुम मेरे साथ मेरी बहिन के पास चलो जो तुम्हारी बहिन होने लायक है। हमलोग एलजियर्स, इङ्गलेण्ड, अमेरिका या जहां तुम कहो चले चलेंगे और जब तक तुम्हारा घराना हमें माफ न कर देगा तब तक यहां न लोटेंगे॥

वेलेण्टिन ने अपना सिर हिला कर कहा, मैं डरती थी कि तुम यही पागलों की सी सलाह दोगे, और मैं तुमसे भी ज्यादा पागल होऊंगी अगर मैं यह न कहूं, "असम्भव असम्भव॥"

मैक्स०। तब तुम चुपचाप सिर झुका कर वह सब सह लोगी जो किस्मत तुम्हारे ऊपर लावे?

वेले०। हां, अगर मैं मर भी जाऊं तैा भी?

मैक्स०। तब तुम्हारी कल मि० फ्रान्सिस एपिने से जरूर सगाई हो जायगी? केवल उस झूठे भड़वे और शिष्टाचार की सगाई नही बल्कि खास तुम्हारी मर्जी की सगाई?

वेले०। ओह मैक्समिलियन, तुम फिर वही कहते हो? तुम फिर मेरे कलेजे के घाव मे अपना कटार एंठते

है ? तुम्ही कहो अगर तुम्हारी बहिन से ऐसी बात कही जाती तो ?

मैक्समिलियन ने गम की हँसी हँसकर कहा, "मिस ! मैं स्वार्थी हूं और स्वार्थी की ही तरह यह नही सोचता कि जमाना अगर मेरी हालत में होता तो क्या करता बल्कि यही सोचता हूं कि अब मैं क्या करूं। तुमसे मेरी जान पहिचान हुए सालभर हो गया। पहिले ही दिनसे मेरे मनमें तुम्हें अपनाने की आशा और इच्छा हुई थी एक दिन तुम ने भी स्वीकार किया कि तुम मुझसे प्रेम करती हो, उसी दिन से मेरी सब आशाये तुम्हारे ही में एकत्र हो गई। तुमही मेरी जीवन थी, तुम्हारे सिवाय मुझे और कुछ नही जरूरी था। पर अब वह उलट गया किस्मत मेरे खिलाफ हो गई। मैं स्वर्ग पाने की आशा में था और मुझे उससे हाथ धोना पडा। खैर यह रोज ही हुआ करता है कि जुआडी सिर्फ वही नही हार बैठता जो उसके पास है बल्कि उसे भी गवांदेता है जो उसके पास नही ॥

मारल ने ये बातें बड़ी शान्ति के साथ कही। वेलेण्टिन ने अपने गमको उस पर जाहिर न होने देने की कोशिश करते हुए एक गहरी निगाह उस पर डाली और तब पूछा, "तो अब तुम क्या किया चाहते हो ?"

मैक्स०। ईश्वर से यह प्रार्थना करते हुए कि यह तुम्हारी जिन्दगी को इतना शान्त, आनन्दमय और व्याप्त बनावे कि उसमें मेरा एक ध्यान भी न रह सके-

मैं तुमसे विदा मांगता हूं ॥

वेलेण्टिन के मुंह से एक आह निकली—मैक्समिलियन ने कहा, "वेलेण्टिन ! विदा; सलाम ॥"

वेले० । (छेदमें से हाथ बढ़ा उसका कपड़ा पकड़ कर रोकते हुए) ठहरो ठहरो कहां जा रहे हो ॥

मैक्स० । मैं ऐसा काम करने जा रहा हूं जो हर एक ईमान्दार के करने लायक है और जिससे तुम्हारे खान्दान मे और किसी तरह का तरद्दुद न बढ़ेगा ॥

वेले० । क्या क्या ?

मैक्समिलियन गमके साथ मुसकुराया—वेलेण्टिन ने फिर पूछा, "तुम क्या करने जा रहे हो ?"

मैक्स० । क्या तुम्हारा इरादा बदला ?

वेले० । नहीं, कभी नही ॥

मैक्स० । तब बन्दगी ॥

कह कर मैक्समिलियन फिर घूमा मगर वेलेण्टिन ने पुनः उसे रोका और आंसू भरी हुई आंखों से बिनती के साथ हाथ जोड़ती हुई बोली—पहिले बताओ तुम कहां जा रहे हो ?

मैक्समिलियन लौटा । वेलेण्टिन के उदास चेहरे को देखता हुआ बोला, "वेलेण्टिन ! दुनिया में मैं अकेला हूं ! मेरी बहिन का ब्याह हो चुका । वह सुखी है, और कोई मेरे है नही ! तुम्हारे पाने की आशा नहीं ! ऐसी हालत में मेरी जिन्दगी बिल्कुल बेकार है ! मगर मैं अभी नहीं मरूंगा, मैं तब तक ठहरा रहूंगा

जब तक तुम्हारी शादी नहीं हो जाती—क्योंकि संभव है कि इस बीच में कोई ऐसी घटना हो जाय-जिससे हमलोगो की जानें बचजांय। फ्रान्सिस मर जाय! या औरही कुछ हो जाय! उस आदमी को जिसकी मौत का दिन मुकर्रर हो चुका है वह असम्भव भी सम्भव मालूम हुआ करता है जिससे उसकी जान बच सके! अस्तु मैं भी अपनी यन्त्रणा के उतने दिन काटूंगा और जब तुम गिरजा के बाहर आजाओगी तो किसी घने जङ्गल मे, किसी पहाडी नाले में, किसी भयानक नदी मे, मैं अपनी इस जिन्दगी का खातमा कर दूगा जरूर कर दूगा॥"

वेलेण्टिन काप उठी, उसने मैक्समिलियम को छोड दिया, दो बड़ी बूदे आखों से निकल उसके गालो पर गिर पडी। पर नौजवान स्थिर और दृढ़ता के साथही उसके सामने खडा रहा॥

वेले०। तुम अपनी जान नहीं दोगे? कहो! तुम अपनी जान नहीं दोगे!!

मैक्स०। नही बल्कि जरूर दूंगा, दुनिया के सबसे भारी ईमान्दार आदमी अपने पिताकी कसम खाता हूं कि जरूर दूंगा। पर तुम्हारा इसमे कोई हर्ज नही तुम ने अपना कर्तव्य किया। तुम्हारी आत्मा को शान्ति रहेगी॥

वेलेण्टिन अपने घुटनो पर गिर पडी और अपने जलते हुए कलेजे को दबा कर बोली, "मैक्समिलियन!

मेरे दोस्त! उस दुनिया के मेरे पति! मेरी विनती मानो! जो मैं कहती हूं सो तुम करो दुःख उठाते हुए जीते रहो, कदाचित् हम दोनो कभी एक हो सकें॥

मैक्स०। वेलेण्टिन! विदा!!

वेलेण्टिन ने आकाश की तरफ हाथ ऊंचा कर दिल को भेदने वाले शब्दों में कहा, "हे परमेश्वर! मैंने आज्ञाकारी लडकी बने रहने की बहुत कोशिश की, प्रार्थना की, भीख मांगी, रोई, पर वह कुछ नहीं सुनता! अब मुझे दोष न देना! (आंसू पोंछ कर दृढ़ता के साथ) अच्छा मैक्समिलियन! मैं तैयार हूं, अफसोस करती हुई अब मैं न मरूंगी, शर्म करती हुई चाहे मर जाऊँ! तुम अपनी जान मत दो! मैं अब तुम्हारी ही रहूंगी, कब? किस वक्त? किस दिन? क्या अभी, बोलो! आज्ञा दो! मैं तैयार हूं॥"

मारल जो कई कदम जा चुका था लौटा, खुशी के मारे पीला चेहरा हो गया था। उसका दिल धड़कने लगा था, वेलेण्टिन की तरफ हाथ बढ़ा कर उसने कहा वेलेण्टिन! तुम ऐसा न कहो! मुझे ही मरने दो! मैं तुम्हे जबर्दस्ती अपनाना नही चाहता! क्या तुम दया के कारण ऐसा कह रही हो? मेरी जान बचाने की इच्छा से ऐसा कहती हो? नहीं तब मेरा मरना ही भला॥"

वेले०। नहीं मैक्समिलियन! तुम्हारे सिवाय अब मेरा कोई नहीं! मैं सभों को यहा तक कि अपने निःसहाय दादा को भी छोड़देने को अबतैयार हो चुकी हूं॥

मैक्स०। नहीं वेलेण्टिन ! उन्हें मत छोडो, तुमने कहा है कि वे तुमसे प्रेम करते हैं, यह घर छोड़ने के पहिले सब हाल उनसे कह दो, उनकी रजामन्दी को ईश्वरी कृपा समझो ! हम दोनों का ब्याह होते ही उन्हें अपने साथ बुला लो ! एक की जगह उनके दो बच्चे हो जायँगे ! मैं बहुत जल्दी ही उनसे बात करने का ढङ्ग सीख लूंगा ! ओह वेलेण्टिन ! तुम निश्चय रक्खो कि हमारे लिये निराशा नही बल्कि सुख और प्रसन्नता का मैदान साफ हो रहा है॥

वेले०। तुम मेरे पिता को नही जानते इससे ऐसा कहते हो, वह बड़े ही कठोर हैं। अच्छा मैक्समिलियन सुनो ! अगर मैं चालाकी खुशामद या मिनती किसी तरह से इस शादी को रोक सकी तो क्या तब तक तुम ठहरोगे ?

मैक्समि०। जरूर अगर तुम फ्रान्सिस से शादी न करने की कसम खाओ॥

वेले०। मैं अपनी मां की कसम खाती हूं॥

मैक्समि०। तो मैं अपने पिता की कसम खाता हूं कि जब तक तुम कहोगी ठहरा रहूंगा॥

वेले०। अच्छा तो अब तुम मुझपर विश्वास करो और इस बीच में कभी मुझसे मिलने की कोशिश न करो। कल उस कागज पर दस्तखत होने वाला है। अगर आज से कल के बीच में मैं इसे न रोक सकूंगी तो तुम्हारा साथ दूंगी॥

मैक्स०। मुझे कैसे पता लगेगा ?

वेले०। हमारे नोटरी मि० डिशैम्प को जानते हो?

मैक्स०। हां॥

वेले०। उन्हीं से तुम्हें सब पता लगेगा और मैं भी तुम्हें लिखूंगी। मगर अब तुम यहां मत आना क्योंकि कोई देख लेगा तो सब भंडा फूट जायगा॥

मैक्स०। अच्छा, मैं एक गाड़ी का इन्तजाम कर रखता हूं जिसपर सवार हो हमलोग भाग सकेंगे, बस समय मालूम हो जाना चाहिये॥

वेले०। अच्छा तो कल तक के लिये बिदा॥

मैक्स०। तुम चीठी लिखोगी ?

वेले०। जरूर॥

इतना कह वेलेण्टिन ने अपना हाथ बढ़ाया जिसे उस नौजवान ने प्रेम के साथ चूम लिया। इसके बाद वेलेण्टिन तेजी के साथ वहां से चली गई और थोड़ी देर बाद मारल भी लौट गया॥

उस दिन का बाकी हिस्सा और दूसरा दिन भी बीत गया मगर मैक्समिलियन को वेलेण्टिन का कोई हाल मालूम न हुआ। उसकी घबराहट बढ़ने लगी और तीसरे दिन दोपहर को वह मि० डिशैम्प के पास जाने को तैयार हुआ मगर उसी समय डाकिये ने उसको एक छोटा लिफाफा दिया जिसे हाथ में लेते ही उसके दिल की धड़कन ने बता दिया कि यह चीठी उसकी प्यारी वेलेण्टिन की है। उसने जल्दी से लिफाफा खोल चीठी

पढ़ी, यह लिखा था :—

"रोने, मिन्नत करने और प्रार्थना करने का कोई असर नहीं हुआ। कल दो घण्टे तक में गिरजाघर में प्रार्थना करती रही पर ईश्वर भी वैसा ही निठुर निकला जैसा मेरे लोग। आज शाम को कागज पर दस्तखत होने का निश्चय हो गया है। मेरा सिर्फ एक वादा और एक दिल है, वह वादा तुम्हारे साथ है, वह दिल तुम्हारा है। आज रात को नौ बजे फाटक पर॥

तुम्हारी—

वेलेण्टिन।

"पुन

मेरी नानी की हालत और भी खराब हुई जा रही है। कल बहुत बक झक करती थी, आज तो बिलकुल पागल सी हो गई हैं। मैक्स-मिलियन! तुम मेरे ऊपर दया रखना जिसमें मैं अपनी नानी को इस हालत में छोड जाने का दुःख भूल सकूं। दादा नौटीर से यह सब हाल छिपाया जा रहा है॥"

मैक्समिलियन ने इस चीठी को पढ़ा, दुबारा पढ़ा कई बार पढ़ा। यह उसकी प्रेमिका की पहिली चीठी थी पर कैसे मौके पर लिखी गई थी !!

किस तरह से मैक्समिलियन ने वह दिन बिताया यह कहना असम्भव है। उसके लिये वे कई घण्टे मानों कई वर्ष हो गये थे। हजारों दफे सोचता था—ऐसा करूँगा वैसा करूँगा इस तरह सीढ़ी लगाऊंगा इस तरह वेलेण्टिन को दीवार के इस पार लाऊंगा यो गाड़ी पर बैठाऊंगा वगैरह ही वह सोचता रहा जिसका नतीजा यह निकला कि इस समय वक्त से एक घण्टा पहिले अर्थात् आठ ही बजे हम मैक्समिलियन को उस खेत

में दो सीढ़ियों के साथ इसलिये तैयार बैठे पाते हैं कि वेलेण्टिन की आवाज सुनाई पड़े और वह उसे दीवार के इसे पार उतार उस गाड़ी तक पहुंचावे जो पास ही पेड़ों की झुरमुट में खड़ी थी॥

साढ़े आठ बजा और तब नौ भी बजा, मैक्समिलियन ने उठकर सीढ़ी दीवार के साथ लगाई बल्कि एक पैर डंडे पर रख खडा हो गया। एक मिनट बीती दो मिनट दस मिनट यहां तक कि आधा घण्टा बीत गया! मैक्समिलियन का दिल धडकने लगा, घडी में साढ़े नौ बज गया! अभी तक वेलेण्टिन आई क्यों नही, कहां रह गई, कहीं पकड तो नहीं गई या गम और दुःख से बेहोश ही तो नहीं होगई। मैक्समिलियन कांपने लगा, क्या सुख के इतने पास पहुंच कर भी वह उसे पा न सकेगा! इतनी तैयारी करने पर भी वेलेण्टिन से मिल न सकेगा!!

दस भी बजा, यहां तक कि साढ़े दस भी बज गया, अब तो मैक्समिलियन की हालत बिल्कुल ही खराब होगई। "कही उसकी तबीयत तो खराब नही होगई! या वह यहां तक आते आते रास्ते में तो नहीं बेहोश होगई!" इत्यादि सोचते हुए मारल का दिल कांप उठा, वह अपने को रोक न सका और वेलेण्टिन का पता लगाने के लिये वह सीढ़ियां चढ़ दूसरी तरफ, विलफोर्ट के बागीचे के अन्दर कूद पड़ा॥

एक पेड़ की आड़ में खड़ा हो मारल चारो तरफ

देखने लगा। हरतरफ अंधेरा, हर तरफ सन्नाटा था, कहीं कोई रोशनी नहीं थी, सामने के आलीशान महल में भी कहीं कोई रोशनी नहीं सब सन्नाटा, कहीं से किसी तरह की आवाज नहीं, आखिर यह मामला क्या है? क्या आज इस बागीचे और महल में कोई आदमी हई नहीं! मैक्समिलियन ने धड़कते हुए कलेजे पर हाथ रख अपना पैर आगे बढ़ाया॥

थोड़ा ही आगे गया होगा कि उसे किसी की आहट सुनाई पड़ी, वह रुक गया, क्या यह वेलेण्टिन ही तो नहीं आ रही है, बड़े गौर से वह चारो तरफ देखने लगा। थोड़ी ही देर में फिर आवाज आई, अब मालूम हुआ कि एक नहीं बल्कि दो आदमी उसी तरफ आरहे हैं। मैक्समिलियन कुछ चौंक कर थोड़ा पीछे हट गया, वे दोनों आने वाले भी आगे बढ़े यहां तक कि मैक्समिलियन से बहुत थोड़ी दूरी पर रह गये। इसी समय मारल के पीछे की तरफ से बादलों में छिपा हुआ चन्द्रमा बाहर आया और उसकी एक किरण सामने के दोनों आदमियों और उनके पीछे की तरफ पड़ी। यह देख मारल का कलेजा जोर से उछल पड़ा कि वे दोनों विलफोर्ट और उसके डाक्टर थे। दोनों आदमी उसी जगह खड़े होगये और विलफोर्ट ने एक ठंढी सांस लेकर कहा, "डाक्टर! सचमुच हमारे घराने पर किसी का शाप पड़ा है! ओह क्या भयानक मौत! कैसी भयानक दुर्घटना! वह बेचारी मर गई!! ओफ!"

मैकसमिलियन के माथे पर मानों वर्फ गिर पड़ी उसके दांत कटकटाने लगे। इस घर में कौन मर गया! कैसी दुर्घटना हो गई?

विलफोर्ट के जवाब में डाक्टर ने कहा, "मिस्टर विलफोर्ट! मैं तुम्हे दिलासा देने के लिये यहां नही आया हूं बल्कि .. "

विल०। बल्कि क्या!

डाक्टर०। बल्कि यह बताने कि उस दुर्घटना के पीछे एक इससे भी भयानक भेद छिपा हुआ है॥

विल०। हे परमेश्वर! अब और क्या!

डाक्टर०। क्या हमलोग अकेले हैं?

विल०। हां, इधर कोई कभी नहीं आता मगर क्यों? किस लिये?

डाक्टर०। क्योंकि मुझे एक भयानक भेद प्रगट करना है, अच्छा इस वेन्च पर बैठ जाओ॥

विलफोर्ट वेञ्च पर बैठ बल्कि गिर गया। डाक्टर उसके सामने खड़ा रहा। मारल अपने हाथ से कलेजा दबाये दम रोके खड़ा था। डाक्टर से विलफोर्ट ने कहा, "बोलो डाक्टर! मैं सब कुछ सुनने को तैयार हूं, वार करो॥"

डाक्टर ने सहानुभूति के साथ विलफोर्ट के कंधे पर हाथ रक्खा और तब धीमे स्वर में कहा, "विलफोर्ट! मैडम मीरां यद्यपि बूढी होगई थी फिर भी कुछ समय पहिले तक उनकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी थी॥

विल०। हां, सिर्फ पति के गम ने ही उनकी जान ली॥

डाक्टर०। नही, यद्यपि कभी कभी गम आदमी की जान ले सकता है पर इतनी जल्दी से नही! गम घंटे दो घंटे या दिन दो दिन में नही मार सकता॥

विलफोर्ट ने कुछ जवाब न दिया केवल सिर उठा डाक्टर की तरफ देखा॥

डाक्टर०। तुम उस वक्त मौजूद थे जब मैडम मीरां की जान निकली॥

विल०। हा, तुमने मुझसे मौजूद रहने को कहा था॥

डाक्टर०। तुमने देखा कि उनकी जान किस तरह से गई?

विल०। हां बिल्कुल मिर्गी की तरह के तीन हमले हुए थे, तीसरे ने उनकी जान ली—आपने उसे मिरगी ही बताया भी॥

डाक्टर०। हां मिरगी बताया क्योंकि उस समय और लोग वहा मौजूद थे पर अब हम अकेले हैं अस्तु अब सच कहने मे कोई हर्ज नही कि उन्हें जहर दिया गया!!

विलफोर्ट यह सुनते ही चौंक कर उठा और तब फिर बदहवास की तरह अपनी जगह पर गिर गया—उसका चेहरा जर्द हो गया और दम घुटने लगा। मारल भी मनही मन बोल उठा—मैं यह सपना देख रहा हूं क्या?

डाक्टर०। सुनो, मैंने बहुत गौर से मैडम मीरां की

बीमारी देखी—यहां तक कि केवल मुझे यही निश्चय नहीं है कि उन्हें जहर दिया गया बल्कि मैं यह भी बता सकता हूं कि किस कारी जहर ने उनकी जान ली। उन्हें जरूर ब्रूसीन दिया गया है ॥

विलफोर्ट ने डाक्टर का हाथ पकड़ उद्वेग के साथ कहा—डाक्टर ! जो तुम कहते हो वह असम्भव है। ऐसा कभी हो ही नही सकता कि मेरे घर में और खास मेरी सास को जहर दिया जाय ! बताओ, कहो, मुझे समझाओ और दिखाओ दो कि जो कुछ तुम कह रहे हो वह तुम्हारा भ्रम है ॥

डाक्टर ने सिर हिलाया और कहा—"क्या उन्हें किसी और ने कोई और चीज दी थी ?"

विल० । नहीं ॥

डाक्टर०। क्या उन्हें कोई ऐसी चीज दी गई जिसको मैंने नही देखा ?

विल० । नहीं ॥

डाक्टर० । क्या कोई उनका दुश्मन है ?

विल० । मेरी जानकारी मे नहीं ॥

डाक्टर० । क्या उनकी मौत से किसी का कुछ फायदा है ?

विल० । नहीं—ओह डाक्टर ! मेरी वेलेण्टिन ही उनकी वारिस है और शुरू से थी और उसपर ऐसा शक करने के पहिले मैं अपनी गरदन काट डालना बेहतर समझूँगा ॥

डाकूर०। नहीं मेरे दोस्त! मैं किसी पर यह जुर्म नहीं लगाया चाहता सिर्फ तुम्हें इसकी खबर कर देना चाहता हूं। मुमकिन है कि यह किसी की गलती से हो गया हो! कोशिश करो! जांच करो! पता लगाओ!!

विल०। क्या? किससे? कैसे?

डा०। शायद मि० नोटीर के नौकर बोरिस ने भूल से अपने मालिक की दवा मैडम को दे दी हो—क्योंकि मि० नोटीर को आज कल दवा में मैं ब्रूसीनही देरहा हूं जिसकी मिकदार इतनी है कि यद्यपि मि० नोटीर उसे मालूम भी नही कर सकते तथापि औरों के लिये काफी है॥

विल०। नहीं ऐसा भी नहीं हो सकता। मि० नोटीर के कमरे हम लोगों से बिल्कुल अलग हैं और उनके नौकर इधर कभी नहीं आते। सच तो यह है डाकूर कि यद्यपि मुझे तुम्हारे ऊपर बड़ा भारी विश्वास और भरोसा है तथापि मेरा दिल अभी तक तुम्हारी बातें कबूल नही करता—वह अभी तक कहता है—सम्भव है तुम भूल कर रहे हो?

डाकूर०। क्या कोई और ऐसा डाकूर है जिस पर तुम उतना ही विश्वास रखते हो जितना मुझ पर?

विल०। क्यो? क्या काम है?

डाकूर०। तुम उसे बुलाओ और तब हम दोनों मिल कर जांच करेंगे कि मेरा खयाल कहां तक सही है॥

विल०। और उस जहर का पता लगा लोगे?

डाक्टर०। यह मैं निश्चयतः नहीं कह सकता पर फिर भी उस जांच के बाद यह कह सकेंगे कि विलफोर्ट ! अगर यह बात भूल से हुई है तो अपने नौकरों पर निगाह रक्खो—और अगर शत्रुता के कारण हुई है तो दुश्मनों से होशियार हो॥

विलफोर्ट ने लाचारी की मुद्रा से कहा, "असंभव! डाक्टर असम्भव ! जैसेही कोई दूसरा उस भयानक भेद से जानकार होगा जिसे तुम कह रहे हो वैसेही यह बात चारो तरफ फैल जायगी ! डाक्टर ! तुम मेरे पद से वाकिफ हो ! तुम जानते हो कि मुझे प्रोक्योरर बने आज चौबीस वर्ष हो गये और इस बीच में मेरे हजारो ही दुश्मन बने और गये ! इस समय अगर यह बात मेरे दुश्मनों के कानों तक पहुंची तो फिर क्या होगा ? क्या वे बिना तूफान उठाये रहेंगे ? कभी नही ! जरूर मेरे घर पर जांच आवेगी—और तब मैं कही का न रहूंगा ! सब जगह मेरी बदनामी होगी। मेरी स्त्री और लड़की शर्म से मर जावेंगी—खुद मुझे लज्जा से सिर उठाना मुश्किल हो जायगा—क्या तुम स्वयम् यह नहीं सोच सकते कि एक प्रोक्योरर—मैजिस्ट्रेट—के घर पर खून की घटना होना कैसी भयानक बात है !!"

डाक्टर०। वह सब मैं भी सोचता हूं और इसी से—तुम्हारी दोस्ती के लिहाज से—मैं इस मामले को किसी तरह पर तूल नही दिया चाहता ! तुम विश्वास रक्खो कि यह भयानक भेद मेरे दिल के बाहर अब नही निक-

लेगा मगर फिर भी यह मैं जरूर कहूंगा कि होशियार रहो! खूब होशियार रहो! मुमकिन है कि यह बात यहीं तक न रहे आगे बढ़े और मुजरिम का दूसरा वार तुम्हारे किसी और नजदीक वाले पर हो—अगर तुम्हारी खोज मे तुम्हें उस मुजरिम का पता लग जाय तो फिर तुम मैजिस्ट्रेट की हैसियत से जो मुनासिब समझो करो!!"

विलफोर्ट खुशी से उछल पड़ा और डाक्टर का हाथ पकड़ कृतज्ञता भरे शब्दों मे बोला, "डाक्टर! मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं! तुमसे बढ़ कर मेरा और कोई दोस्त नहीं है॥"

इतना कह विलफोर्ट तेजी के साथ डाक्टर को लिये हुए अपने मकान की तरफ बढ़ गया और मारल वहां अकेला रह गया—उसने चारो तरफ देखा और तब एक गहरी सास लेकर कहा, "ईश्वर ने वेलेंटिटन को बचाया पर कैसी भयानक रीति पर!!"

मारल की निगाह घूमती हुई सामने के महल की खिड़कियो पर गई जिनमें से एक के सामने इस समय कोई रोशनी थी क्योंकि पर्दे के ऊपर किसी की छाया आ कर पड़ी। मारल के बिगड़े हुए दिमाग को ऐसा मालूम हुआ मानो वह वेलेण्टिनही की छाया है और वह उसे बुला रही है। वेलेण्टिन से मैक्स मिलियन इतनी दफे उसके मकान का हाल सुन चुका था कि बिना एक बार भी अन्दर गये वह उसके सब दर्वाजो और कमरों से वाकिफ हो चुका था अस्तु इस समय कुछ विचार करते

ही वह जान गया कि यह रोशनी वेलेण्टिनही के कमरे में हो रही है । उसने अपनी हालत और खतरे का कोई विचार न कर मकान के अन्दर जाने और वेलेण्टिन से मिलने का निश्चय कर लिया और सामने का सब्जी का टुकड़ा पार कर एक सीढ़ी के पास पहुंचा जो बाहरी हिस्से में खास कर नौकरों केही इस्तेमाल के लिये बनी हुई थी। इस सीढ़ी के रास्ते होता हुआ मारल एक कमरे में पहुंचा और उसे पार कर एक दूसरी छोटी कोठडी में पहुंचा। उसने इसे भी पार किया और तब एक दर्वाजे के सामने पहुंचा जो खुला हुआ था और जिस के भीतर हलकी रोशनी हो रही थी। इसमें झांक कर देखतेही मारल झिझका क्योंकि कमरे के बीचोबीच में सुफेद कपड़े से ढंकी लाश पड़ी हुई थी। वह एक कदम पीछे हटा मगर उसी समय उसे एक आह की आवाज सुनाई पड़ी और उसने वेलेण्टिन को देखा जो एक आराम कुर्सी पर बैठी हाथ से मुंह ढांके रो रही थी। कमरे में दो मोमबत्तियें हलकी रोशनी फैला रही थीं और एकखुलीखिड़कीकीराहचन्द्रमा की भी रोशनी आकर उस गमगीन जगह को और भी गम से भर सी रही थी। वेलेण्टिन धीरे धीरे रोती हुई ईश्वर से कुछ प्रार्थना कर रही थी। उसके स्वर ने मैक्सिमिलियन का कलेजा हिला दिया और उसके दुख ने मैक्सिमिलियन की आंखों से भी आंसू गिरा दिये। उसके मुंह से एक आह निकली जिसे वेलेण्टिन ने भी सुन लिया और अपना सिर उठाया

दोनों की चार आंखें हुईं। एक दुःख मे भरे दो दिल एक हो ही जाते हैं मारल ने अपना हाथ वेलेंटिन की तरफ बढाया, उसने मानों अपने न आने का सबब बताते हुए उस लाश की तरफ इशारा किया और तब पुनः सिर नीचा कर रोने लगी। कुछ देर तक दोनों मे से किसी की बोलने की हिम्मत न हुई। आखिरकार वेलेंटिन ने कहा,—"मैक्समिलियन! तुम कैसे यहां आये!"

मैक्स०। वेलेंटिन! मैं साढ़े आठ बजे से आ कर तुम्हारी राह देख रहा था, आखिर जब तुम नही आईं तो मैं अपने को रोक न सका और लाचारी के साथ बागीचे के अन्दर आया जहां कुछ बातचीत की आवाज सुन . ...

वेले०। किसकी बात चीत की आवाज?"

मारल कांप उठा क्योंकि डाकूर और विलफोर्ट की बात चीत का पूरा दृष्य उसकी आंखों के सामने गुजर गया और उसे ऐसा मालूम हुआ मानो उस चादर के भीतर से वह उस जहर से मारी गई हुई बेचारी बूढी मैडम मीरा का काला ओंठ और सूजा हुआ चेहरा देख रहा है। उसने सम्हल कर कहा, "तुम्हारे कई नौकरों की बातचीत से मुझे सब हाल मालूम हो गया॥"

वेले०। मगर यहां आने से सब चौपट हो जायगा॥

मारल०। माफ करो मैं अभी लौट जाता हूं॥

वेले०। नही, शायद कोई तुम्हे देख ले, ठहरो॥

मारल०। अगर यहां कोई आ गया तो?

वेले० । नहीं, यहां कोई नहीं आवेगा, वह लाश हमारा बचाव है * ॥

मारल० । अच्छा मि० एपिने का क्या हुआ ?

वेले० । वे ठीक उस समय यहां पहुंचे जब बेचारी नानी मर रही थीं ॥

मारल ने सोचा कि अब शायद शादी बहुत दिनों के लिये रुक जायगी, यह सोच उसे कुछ खुशीसी हुई पर उसी समय वेलेंटिन ने कहा, "मगर मैक्समिलियन ! मरते मरते भी मेरी नानी की अंतिम इच्छा और आज्ञा यही हुई कि मेरी शादी मि० फ्रान्सिस एपिने के साथ बहुत जल्दी कर दी जाय । अफसोस ! मेरी रक्षा का विचार करती हुई वे भी मेरे बर्खिलाफ ही रहीं ॥"

इसी समय बाहर किसी तरह की आहट सुनाई पड़ी । दोनों चुप होगये, वेलेंटिन ने गौर करके कहा, "मेरे पिता और डाक्टर हैं, शायद वे डाक्टर को दर्वाजे तक पहुंचाने जा रहे हैं ॥"

कुछही देर बाद सदर दर्वाज़ा बंद होने की आवाज आई, बागीचे की सीढ़ी वाला दर्वाज़ा भी बन्द होगया और अब विलफोर्ट ऊपर आया, जिस कमरे में ये दोनों

* अङ्गरेजों में जब कोई मर जाता है तो एक आदमी रात भर लाश के पास रहता है, फिर उस कमरे में उस रात कोई दूसरा आदमी नहीं आता ॥

ये उसके दरवाजे पर कुछ देर के लिये विलफोर्ट रुका। मारल झपट कर एक पर्दे की आड में हो गया मगर विलफोर्ट आगे बढ गया॥

वेलेंटिन ने कहा, "दोनों दर्वाजे बन्द कर बाबूजी अपने कमरे में चले गये, अब तुम बाहर कैसे जाओगे ? "अच्छा ठहरो अभी एक रास्ता है, आओ॥"

मारल०। कहां !

वेले०। मेरे दादा के कमरे में॥

मारल०। तुम्हारे दादा ! मि० नैाटीर ? क्या तुम मुझे उनके पास ले जाया चाहती हो ?

वेले०। हां॥

मारल०। क्या सचमुच ? खूब सोच लो !

वेले०। मैं सोच चुकी, अब मेरे दादाही इस दुनिया में ऐसे रह गये हैं जिन्हें मैं अपना 'दोस्त' कह सकती हूं. मैं कई बार अपना सब हाल उनसे कहने का इरादा कर चुकी हूं, आज वह मैाका आ गया है क्योंकि अब हम दोनों ही को उनकी मदद की जरूरत है, आओ॥

मारल०। (हिचकिचाते हुए) तुम जानो वेलेंटिन ! मैंने यहा आ कर पागलपन का काम किया, कहीं तुम भी वैसा ही न कर वैठना !!

वेले०। नहीं नहीं, तुम आओ॥

मारल को साथ लिये वेलेंटिन मि० नैाटीर के कमरे की तरफ बढी, दर्वाजे पर बूढा बोरिस मिला जिसे दरवाजा बन्द कर देने और भीतर किसी को न आने

देने का हुक्म दे मारल को लिये वेलेण्टिन भीतर आई॥

नौटीर कुरसी पर बैठा दरवाजे की तरफ देख रहा था, वेलेण्टिन को एक अजनबी के साथ आते देख उसने सवाल की निगाह उस पर डाली॥

वेले०। बाबा! तुमको मालूम है कि बेचारी नानी घण्टा भर हुआ मर गई और अब इस दुनियां में सिवाय तुम्हारे मेरा कोई दोस्त नहीं है॥

बूढ़े की आंखों से बड़ीही करुणा का भाव निकला। वेलेण्टिन रोती हुई बोली—"अस्तु बाबा अब केवल तुम्ही से मैं अपना दुःख दर्द कह सकती हूं॥"

बूढे ने इशारे से "हां" कहा। वेलेण्टिन ने मारल को बता कर कहा, "यह मि० मैक्समिलियन मारल हैं। आपने शायद इनके बाप का नाम सुना होगा जो मारसेलीज में सौदागर थे। ये अब पल्टन में हैं जिसमें इन्हों ने नाम पैदा किया है। (घुटनों के बल गिर और नौटीर का हाथ पकड़ कर) बाबा! मैं इन्हें प्यार करती हूं, सिवाय इनके मैं और किसी से शादी न करूंगी! मैं जान दे दूंगी मगर दूसरे से ब्याह न करूंगी॥

बूढे की आखों से तरह तरह के अद्भुत भाव झलकने लगे, वेलेण्टिन बोली, "बाबा तुम इनको पसन्द करते हो?" बूढ़े ने "हां" कहा। वेलेण्टिन बोली, "और तुम हम दोनो की रक्षा करोगे? मेरे पिता की जबर्दस्ती से हमें बचाओगे?"

बूढ़े की आंखें मानों कह रही थीं, "यह मैं जांच

कर कह सकूंगा।" मारल उसका भाव समझ गया और वेलेण्टिन से बोला, "वेलेण्टिन ! तुम अब जाओ क्योंकि मैं बाबा से कुछ बात किया चाहता हूं॥"

बूढ़े की आंखों ने भी यही कहा पर उसमें कुछ चिन्ता की झलक थी। वेलेण्टिन ने पूछा, "क्या तुम्हे डर है कि ये तुम्हारी बात समझेंगे नही ?"

नैाटीर०। हां॥

वेले०। नही इसका डर मत करो, हम दोनों में तुम्हारे बारे मे इतनी बार बाते हुई हैं कि इन्हें सब कुछ मालूम है॥

वेलेण्टिन ने मारल की तरफ देखा, उसने इसकी बात सकारी अस्तु बूढ़े की मर्जी समझ वेलेण्टिन वहां से चली गई। मारल ने मानो यह दिखाने के लिये कि वह उनसे बात करने का ढङ्ग जानता है एक कोष कागज कलम दावात सामने रख लिया और एक कुर्सी पर बैठ कर बोला, "बाबा ! सब के पहिले मैं आपको अपना परिचय दूंगा और बताऊंगा कि वेलेण्टिन को मैं कब से जानने लगा और अब कितना प्यार करता हूं तथा उसके विषय मे मेरे क्या खयाल हैं।" नैाटीर से हां का इशारा पा मारल ने अपने पिता का और अपना सब हाल तथा उसके बाद अपने धन, पद और मर्य्यादा, तथा बाद में इस प्रेम का सब हाल कह सुनाया। बूढ़े की आंखों में "अच्छा है, आगे कहो" का सा भाव देख उसने कहा—"अच्छा अब मैं अपना इरादा बयान

करूं ?" नौटीर ने कहा, "हां" और तब मारल बोला, "हम दोनों में यह तै हुआ था कि आज बाग के पिछवाड़े एक गाडी रहेगी जिसपर वेलेण्टिन को साथ ले मैं अपनी बहिन के पास जाऊंगा, वहां हम दोनों में ब्याह होगा और तब हम दोनों मि० विलफोर्ट से क्षमा पाने की राह देखेंगे॥"

नौटीर० । नहीं॥

मारल० । नहीं ? हमलोगों को ऐसा नहीं करना चाहिये ?

नौटीर० । नहीं ?

मारल० । तब एक और तर्कीब है॥

नौटीर० । क्या ?

मारल० । मैं मि० एपिने के पास जाऊं और सब हाल कहूं, अगर वह बुद्धिमान होगा तो आप से आप मेरी प्रेमिका से शादी करने का विचार छोड़ देगा और नहीं तो मैं उससे डूयेल लड़ूंगा। अगर मैं जीता तो वह वेलेण्टिन से शादी न कर पायगा और अगर मैं हारा तो मुझे विश्वास है वेलेण्टिन उससे शादी न करेगी॥

नौटीर बड़ी प्रसन्नता से इस नौजवान की बातें सुन रहा था जिसके सच्चे और साफ चेहरे पर यह बातें उसके दिल का भाव उसी तरह स्पष्ट कर रही थीं जिस तरह अच्छी और ठीक ठीक बनी हुई तस्वीर पर रङ्ग हो जाने से वह और स्पष्ट हो जाती है। जब मारल कह चुका तो उसने फिर कहा "नहीं॥"

मारल ने ताज्जुब से पूछा, "क्या आपको मेरी यह दूसरी तर्कीब भी नापसन्द है ?"

नौटीर०। हां॥

मारल०। मगर फिर किया क्या जाय! मैडम मीरां अन्तिम समय मे आज्ञा दे गई हैं कि वेलेण्टिन की शादी तुरत कर दी जाय॥

नैाटीर की आंखों ने कोई भाव प्रगट नहीं किया। मारल ने कहा, "क्या आपकी मन्शा यह है कि मैं कोई कार्रवाई न कर चुपचाप राह देखूं ?"

नैाटीर०। हां॥

मारल०। मगर बाबा! देर करने से हमलोग कहीं के न रहेंगे। वेलेण्टिन के कोई अधिकार नहीं है! उसे लाचार होना पड़ेगा। आज मैं भाग्य से ही यहां पहुंच गया हूं, ऐसा मौका अब नहीं मिलेगा! आप मेरी धृष्टता के माफ करेंगे पर सचमुच सिवाय उन दो तर्कीबों के अब और कोई चारा नहीं है! क्या मैं वेलेण्टिन को ले जाऊं ?

नैाटीर०। नहीं॥

मारल०। तो मि० एपिने के पास जाऊं ?

नैाटीर०। नहीं॥

मारल०। हे भगवान! आखिर फिर हमलोग क्या करें? कौन हमारी मदद करेगा? क्या भाग्य के भरोसे बैठे रहें ?

नैाटीर०। नहीं॥

मारल०। तब क्या आपसे मदद की उम्मीद करें?

नौटीर०। हां हां॥

मारल०। आप से? सचमुच?

नौटीर०। हां॥

नौटीर की इस 'हां' में ऐसी दृढ़ता थी कि उनकी ताकत के बारे में चाहे सन्देह हो मगर उनकी इच्छा के समझने में किसी तरह सन्देह नहीं हो सकता था॥ मारल ने कहा, "मगर बाबा! तुम कैसे हमारी मदद कर सकते हो? जब तक कोई विचित्र घटना द्वारा आप को हिलने डुलने और बात करने की ताकत वापस न आवे तब तक कैसे आप हमारी मदद कर सकते हैं?"

बूढ़े के चेहरे पर एक विचित्र मुस्कुराहट दौड़ गई। नौजवान ने कहा, "तो फिर मैं ठहरूं?"

नौटीर०। हां॥

मारल०। मगर शादी? वह तो तै हो चुकी है? क्या आप मुझे विश्वास दिलाते हैं कि वह न होगी?

नौटीर०। हां॥

मारल०। (अविश्वास से) शादी न होगी? मेरे अविश्वास को माफ करिये पर क्या आप शादी रोक सकेंगे?

नौटीर०। हां॥

बूढ़े का इशारा पाकर भी मारल विश्वास करने से हिचकता था, उसके दिल में खयाल उठता था कि क्या यह बूढ़ा—मरने के बराबर पहुंचा हुआ बूढ़ा—हमारी

मदद कर सकेगा? कदाचित् नौटीर उसका भाव समझ गया या उसे यह सन्देह हुआ कि शायद मारल मेरी बात न माने उसने स्थिर निगाह उसके चेहरे पर डाली॥

मारल०। आप क्या चाहते हैं? क्या मैं शान्त रहने का वादा करूं?

नौटीर की आंखें स्थिर रहीं, माना यह सूचित किया चाहती थी कि सिर्फ वादे से नहीं होगा। उसने अपनी निगाह मारल के हाथो पर डाली॥

मारल०। क्या मैं कसम खाऊं?

नौटीर०। हां॥

मारल समझ गया कि नौटीर उसे अपनी बात पर कायम रहने के लिये मजबूर किया चाहता है उसने हाथ उठा कर कहा, "मैं कसम खाता हूं कि जब तक आपकी आज्ञा न होगी मैं मिस्टर एपिने के विषय मे कुछ न करूंगा॥

बूढ़े की आंखों ने कहा, 'ठीक है।' मारल ने पूछा, "ता अब मैं जाऊं?"

नौटीर०। हां॥

मारल०। बिना वेलेण्टिन से मिले?

नौटीर०। हां॥

मारल ने नौटीर को अदब से सलाम किया और कमरे के बाहर आया। बाहर बोरिस खड़ा उसकी राह देख रहा था जिसे वेलेण्टिन बता गई थी। उसने मारल को मकान के बाहर कर दिया और वह शीघ्रही दीवार

नोटरी उठकर खड़ा हुआ और अपने हाथ में एक कागज ले फ्रान्सिस की तरफ देख बोला, "क्या आप का नाम बेरन फ्रान्सिस किसनल एपिने है?" फ्रान्सिस के "हां" कहने पर वह बोला, "तो आज का काम शुरू करने के पहिले मुझे यह कहने की आज्ञा हुई है कि मि० नौटीर इस शादी को ठीक न समझ इसके बखिलाफ हैं और इस सबब से वे अपनी पोती वेलेण्टिन को जो कि उनकी वारिस थी खारिज करते हैं। अब वे अपना बिल्कुल रुपया दूसरे २ कामों में खर्च कर देंगे। (रुक कर) मगर मैं इतना अपनी तरफ से कह दिया चाहता हूं कि उनकी जायदाद मौरूसी है और इस कारण उन्हे वैसी वसीयत करने का कोई अधिकार नहीं है, मुकदमा चलने पर वह वसीयत जरूर खारिज हो जायगी॥"

विल०। (फ्रान्सिस से) मगर यह मैं इसी जगह कह देता हूं कि मेरी जिन्दगी भर मेरे पिता की वसीयत मानी जायगी। मैं उनकी इच्छा के खिलाफ कुछ होना पसन्द न करूंगा॥

फ्रान्सिस०। महाशयो! मुझे इस बात का दुःख है कि ऐसी बात मिस वेलेण्टिन के सामने उठाई गई है। मैने कभी उनकी दौलत के विषय में कुछ जानने की इच्छा प्रगट नहीं की जो कि चाहे कितनी भी कम हो जाय फिर भी मेरी दौलत से बहुत ज्यादे है। मेरा घराना मि० विलफोर्ट के घराने से रिश्ता कायम किया चाहता है और मैं केवल सुख चाहता हूं॥

फ्रान्सिस की इस बात से वेलेण्टिन के पीले चेहरे पर दो बूंद आंसू के ढलक पड़े। उसने मन ही मन फ्रान्सिस को धन्यवाद दिया॥

विल०। (फ्रान्सिस से) इसके साथ ही मैं यह भी कहा चाहता हूं कि मेरे पिता का कमजोर दिमाग अब स्वार्थी हो गया है और वेलेण्टिन को अपने से दूर नहीं किया चाहता, सिर्फ इसी खयाल से कि जिसमें उसका व्याह न हो उन्होंने वह नया वसीयतनामा बनाया है, खास आप से उन्हें कोई चिढ़ या नफरत नहीं है॥

अभी विलफोर्ट यह कह ही रहा था कि दरवाजा खुला और नोटीर का नौकर बोरिस अन्दर आया। उसने एक दफे सभों को सलाम किया और तब कहा, "महाशयो! मि० नोटीर विलफोर्ट इसी समय बैरन फ्रान्सिस किसनल एपिने से कुछ बाते किया चाहते हैं

विलफोर्ट चौंक उठा, मैडम विलफोर्ट ने एडवर्ड को गिरा दिया। वेलेण्टिन चिहुंक कर खड़ी हो गई। अलवर्ट ने एक भेद भरी निगाह पेट्रू रेनाड पर डाली, नोटरी विलफोर्ट की तरफ देखने लगा जो ताज्जुब के साथ बोला, "यह असम्भव है। बैरन एपिने इस समय नहीं उठ सकते॥"

बोरिस०। परन्तु मेरे मालिक इसी समय उनसे कुछ बातें किया चाहते हैं॥

इस समय बोरिस के स्वर में कुछ ऐसी कड़ाई थी जैसी कि कभी किसी नौकर ने अपने मालिकों से बात

लेंगे कि आपका वेलेण्टिन की शादी के बर्खिलाफ होना कैसा अनुचित है ॥"

नोटीर ने जवाब में ऐसी निगाह अपने लड़के पर डाली कि उसका खून सर्द हो गया, इसके बाद उसने वेलेण्टिन को आंख का इशारा किया जिससे वह समझ गई कि वे कुछ चाहते हैं। उसने उनकी आंखों की सीध में देखा तो एक दराज दिखाई पड़ा जिसे खोलने पर एक ताली मिली, ताली देख बूढ़े ने अपनी आंख एक पुराने बक्स की तरफ फेरी जो कभी खोला नहीं जाता था ॥

वेलेण्टिन० । क्या मैं इस ताली से उस बक्स को खोलूं ?

बूढ़ा० । हां ॥

वेलेण्टिन ने वह बक्स खोला, अन्दर बहुत से पुराने कागज भरे थे जिनमे से उसने एक बंडल निकाला और दिखा कर कहा, "क्या इसकी जरूरत है ?"

बूढ़े के इशारे से 'नहीं' कहने पर उसने दूसरा बंडल फिर तीसरा इस तरह कई बंडल निकाले पर नोटीर सब के जवाब में 'नहीं' ही कहता गया, यहां तक कि सन्दूक बिल्कुल खाली हो गया। तब वेलेण्टिन ने कहा, "अब तो इसमें कोई कागज नहीं है ॥"

बूढ़े की निगाह डिक्शनरी (कोष) की तरफ गई। वेलेण्टिन ने उसे उसके सामने रख कर एक एक पन्ना उलटना शुरू किया। 'ग' अक्षर के पृष्ट पर उन आंखों

ने उसे रोका और तब वह उस पेज के सब शब्दों को कहने लगी 'गुप्त' शब्द पर बूढ़े ने उसे रोका। वेलेण्टिन ने पूछा, "क्या उस सन्दूक में कोई गुप्त जगह है?"

बूढ़ा०। हां॥

वेले०। उसका भेद किसे मालूम है?

बूढ़े की निगाह दर्वाजे की तरफ घूमी, वेलेण्टिन ने पूछा, "क्या बोरिस?"

बूढ़ा०। हां॥

वेले०। क्या मैं उसे बुलाऊं?

बूढ़ा०। हां॥

वेलेण्टिन ने बोरिस को पुकारा और आने पर उससे कहा, "बाबा कहते हैं कि उस सन्दूक में कोई गुप्त जगह है जिसका भेद तुम्हे मालूम है॥"

फ्रान्सिस बड़े ताज्जुब के साथ यह सब हाल देख रहा था। वेलेण्टिन की बात सुन बोरिस ने नौटीर से पूछा, "क्या मैं उसे खोल दूं?"

बूढे से 'हां' सुन बोरिस उस सन्दूक के पास गया। एक गुप्त खटका दबाते ही लकड़ी का एक टुकड़ा अलग हो गया और भीतर एक जगह दिखाई पड़ने लगी जिसमें काले फीते से बँधा कागजों का एक बण्डल था। बोरिस ने बण्डल निकाल पूछा, "क्या इसी की आप को जरूरत है?"

नौटीर०। हां॥

बोरिस०। इसे मैं किसको दूं? मिस वेलेण्टिन को?

नौटीर०। नहीं॥

वोरिस०। मि० विलफोर्ट को?

नौटीर०। नहीं॥

वोरिस०। मि० फ्रान्सिस को?

नौटीर०। हां॥

फ्रान्सिस ने यह सुन ताज्जुब के साथ आगे बढ कहा, "क्या मुझे?" बूढ़े ने कहा, "हां॥"

फ्रान्सिस ने वह बण्डल लिया। ऊपर एक कागज चिपका था जिसपर उसने पढ़ा—"मेरे मरने के बाद जनरल ड्यूराण्ड को दिया जाय जो इसे अपने लडके को यह कह कर सोंप दें कि इसमें बहुत जरूरी कागज हैं॥"

फ्रा०। मैं इसे क्या करूं?

विलफोर्ट०। रख छोड़िये॥

नौटीर०। नहीं नहीं॥

फ्रा०। तो क्या मैं इसे पढ़ू?

नौटीर०। हां॥

विलफोर्ट ने मुंह बना कर कहा, "तो फिर कम से कम बैठ जाइये क्योंकि यह थोड़ी देर का काम नही है।" वह एक कुर्सी पर बैठ गया पर वेलेण्टिन अपने दादा की कुर्सी के पीछे खड़ी रही। फ्रान्सिस भी सामने खडा रहा॥

ताज्जुब करते हुए फ्रान्सिस ने तागा तोड वह बंडल खोला। पहिले कागज पर उसने पढ़ा:—

"बोनापार्टिस्ट क्लब की ५ फरवरी १८१५ की
एक मीटिङ्ग का अंश।"

फ्रान्सिस रुका, "फरवरी ५ सन् १८१५! उसी दिन तो मेरे पिता मारे गये थे!!"

वेलेरिटन ओर विलफोर्ट चुप थे, सिर्फ बूढ़े की आंखें ही कह रही थी—"पढ़ो! पढ़ो!!" फ्रान्सिस बोला—"मगर मेरे पिता इस क्लब से बाहर आने बाद मारे गये हैं!!" बूढ़े ने पुनः कहा, 'पढ़ो' फ्रान्सिस पढ़ने लगा:—

"हम लोग—लूई ब्योरपेर—तोपखाने का कप्तान, एटिन ड्यू शेम्पी—ब्रिगेडियर जनरल और क्राडलिशारपल—महकमे जङ्गलात का अफसर—ये तीनो सचाई के साथ नीचे का हाल लिखते हैं —

चार फरवरी को हमें एलबा से एक चीठी मिली जिसमें लिखा था कि जनरल किसनल हमलोगो के पक्ष में हैं और उनसे काम लेना या उनकी मदद करना मुनासिब होगा। इसके अनुसार बोनापार्टिस्ट क्लब की तरफ से जनरल के पास चीठी भेजी गई जिसमें दूसरे दिन अर्थात् ५ तारीख को क्लब में हाजिर होने को लिखा गया था। क्लब का पता ठिकाना कुछ न लिख केवल यही लिखा था कि अगर वे नौ बजे रात को तैयार रहें तो क्लब का एक मेम्बर उन्हें बुला ले जायगा। ठीक नौ बजे क्लब का प्रेसिडेण्ट जनरल किसनल से मिला। जनरल चलने को तैयार था पर प्रेसिडेण्ट ने उससे कहा कि चलने के पहिले उसे एक वादा यह करना होगा कि अपनी आखो पर पट्टी बाध कर चलना होगा-क्योकि क्लब की जगह किसी को बताई नहीं जाती। जनरल ने इस बात को मजूर किया और प्रेसिडेण्ट उन्हें ले उस गाडी पर सवार हुआ जिसपर वह स्वयम् आया था, जनरल की आखें बाध दी गई और गाडी रवाना हुई। रास्ते में एक बार जनरल ने अपनी पट्टी हटाने की कोशिश की पर अपने वादे की याद दिलाने पर हाथ हटा लिया॥

सब कोई क्लब पहुंचे। वहां जनरल की आंखों की पट्टी हटाई गई और उन्होंने ताज्जुब के साथ चारों तरफ देखा क्योंकि अपने चारों तरफ खड़े क्लब के मेम्बरों में उन्होंने बहुत सी जानी पहिचानी सूरतें देखीं। प्रेसिडेण्ट ने तब उनसे एलबा वाली चीठी का हाल कहा और पूछा, "आपका मत क्या है? क्या आप हमारे बादशाह नेपोलियन को फिर से यहां के तख्त पर देखा चाहते हैं या इस लूई का रहना पसन्द करते—"

फ्रान्सिस ने रुक कर कहा, "मेरे पिता लूई के तरफदार थे यह तो सभी जानते थे, उनसे यह सुवाल करना व्यर्थ था॥"

विलफोर्ट०। और इसी से तो मैं आपके पिता को चाहता था क्योंकि हमारा उनका मत ठीक एक सा था॥

बूढ़े की आंखें कह रही थीं—"पढ़ो।" फ्रान्सिस पुनः पढ़ने लगा—

जनरल ने सभापति की बात का कोई साफ जवाब न देकर कहा, "मेरे मत का हाल आपको एलबा की चीठी से ही मालूम हो चुका होगा, पहिले आप बताइये कि मुझसे चाहते क्या हैं?" इसपर उसे वह चीठी पढ़कर सुनाई गई जिसका मतलब यह था कि बादशाह नेपोलियन जल्दी ही एलबा से आने वाले हैं जिसका खुलासा हाल एक दूसरी चीठी में जो मारसेलीज के महाजन 'मारल', के 'फरन' जहाज के कप्तान की मारफत आवेगी मालूम होगा॥

सभापति ने चीठी पढ़ कर पुनः जनरल किसनल से पूछा—"कहिये अब आपका क्या इरादा है?" इसपर जनरल ने कुछ देर चुप रह कर कहा—"मैं अपने को लूई का तरफदार कह कर अब यकायक उसका विपक्षी कैसे बन सकता हूं।" सभापति ने कहा, "हमलोग लूई को बादशाह मानते ही नहीं, हमारा सच्चा बादशाह नेपोलियन ही है जो दगाबाजी और जबर्दस्ती के साथ फ्रान्स से

निकाल दिया गया है !" जनरल ने यह सुन कर कहा-"मगर लूई ने मुझे वैरन और फील्ड मार्शल बनाया है, मैं तो उसी का पक्षपाती हूं ॥"

इस जवाब से स्पष्ट हो गया कि जनरल की रुचि किस तरफ थी। सभापति ने कड़ाई के साथ जनरल से कहा, "महाशय ! आप की बातों से स्पष्ट है कि आपके बारे में एलवा वालों ने धोखा खाया है ! आपके ऊपर विश्वास करके हमलोगों ने उस चीठी का सब हाल आपको सुनाया पर अब मालूम हुआ कि एक पदवी और ओहदे ने आपको उस राजा का पक्षपाती बनाया हुआ है जिसको हमलोग हटाया चाहते हैं। और हमलोग आपको अपना साथी होने के लिये ज़ोर नहीं देंगे क्योंकि हम किसी को उसकी मर्जी के खिलाफ़ अपना साथी नहीं किया चाहते मगर आपको अवश्य अपनी ईमानदारी के साथ रहना पड़ेगा चाहे इसके लिये हमें ज़बर्दस्ती ही क्यों न करनी पड़े ॥"

जनरल ने यह सुन कहा, "क्या आपलोग इसे ईमानदारी कहेंगे कि मैं आपके षड्यन्त्र का हाल जानकर भी किसी से न कहूं ? ऐसा करने पर तो मुझे अपने को आपका साथी ही समझ लेना पड़ेगा ॥"

फ्रान्सिस ने यह पढ़ कहा, "ओह ! अब मैं समझ गया कि मेरे पिता की जान क्यों ली गई !!" वह फिर पढ़ने लगा—

सभापति ने जनरल की बात के जवाब में कहा, "जब मैंने आप को आंखें बन्द करके और छिपा कर यहां लाने को कहा तभी आप समझ गये होंगे कि यह कोई लूई के तरफदारों की सभा नहीं होगी जहां आप चले हैं, अस्तु उस समय यहां आ और हमलोगों का भेद जान अब ऐसा कहना आपको मुनासिब नहीं है ! नहीं नहीं अब ऐसा नहीं हो सकता कि हमलोगों को धोखे में डाल अब आप हमारा सत्यानाश करने की कोशिश करें ! आप साफ साफ कहिये कि आप लूई के तरफदार हैं या नेपोलियन के ?" जनरल ने यह सुन कहा, "मैं लूई का तरफदार हूं ॥"

बस इतना सुनते ही चारों तरफ के लोगों में हलचल हो गई। मेम्बर लोग उठ खडे हुए और आपुस में कहने लगे कि जनरल को उनकी नासमझी का दण्ड जरूर देना चाहिये। सभापति ने सभो को शान्त कर कहा, "जनरल किसनल! आप बुद्धिमान आदमी हैं अगर लूई के ही तरफदार रहा चाहते हो तो रहिये पर ऐसी हालत में हमलोगों के सामने कसम खाइये कि आज की मीटिङ्ग में जो कुछ आपने देखा सुना है उसका कोई जिक्र किसी से न करेंगे।" जनरल ने गुस्से के साथ तलवार की मूठ पर हाथ रखकर कहा, "मैं कसम नही खाऊगा।" सभापति ने जवाब दिया—"तब आपको मरना होगा।" इसके साथ ही चारो तरफ के मेम्बरो ने अपनी अपनी तलवारें निकाल लीं। जनरल ने सब तरफ देखा, उनका चेहरा कुछ पीला हो गया—सभापति ने जोर से कहा, "दर्वाजे बन्द कर दो॥"

कुछ देर के लिये सन्नाटा हो गया जिस बीच में जनरल किसनल कुछ सोचते रहे। सभापति ने पुन. उनसे कहा—"आपने हमलोगो का भेद पा लिया है जब तक उसे लौटा न देंगे आप जाने न पावेंगे।" जनरल ने कहा, "मुझे अपनी परवाह नही है पर मेरा लडका अकेला रह जायगा उसका ध्यान है—अच्छा मैं कसम खाता हु कि आप लोगो का भेद किसी पर प्रगट न करूगा।" सभापति ने कहा—"बहादुर आदमी के वचन पर हमलोगो को विश्वास है अब आप जा सकते हैं॥"

दो आदमी और वह सभापति जनरल के साथ हुए और उनकी आखो पर पट्टी बाध उन्हें गाडी पर सवार कराया। कुछ देर के बाद सभापति ने जनरल से पूछा, "आप कहा उतरेंगे?" जनरल ने कहा, "किसी जगह, तुम हत्यारो से दूर!!" सभापति ने गुस्से से कहा, आप अपनी जुबान सम्हालिये, नही अच्छा न होगा।" जनरल बोले, "क्यो नहीं, क्योंकि आप तीन और मैं अकेला हू!!" यह सुनते ही सभापति ने गाडी रोकने का हुक्म दिया। जनरल ने पूछा, "क्यो यहा क्यो रुकते हैं?" सभापति बोला, "आपने मेरी बेइज्जती की है! इसी जगह उसका फैसला होगा!!" जनरल बोले, "हत्या का

क्या सहज ढङ्ग निकाला है!” सभापति ने जवाब दिया, “शोर न कीजिये! आपके पास तलवार है, मेरी छडी में भी एक गुप्ती है इसी जगह अकेली अकेला फैसला हुआ जाता है।” जनरल ने आंखो पर का कपडा फाडते हुए कहा, “तब कम से कम मैं यह तो जान लूं कि ये हत्यारे कौन कौन हैं!” दरवाजा खोला गया, चारो आदमी उतरे॥

फ्रान्सिस ने रुक कर अपने माथे पर हाथ फेरा जिस पर पसीना आ गया था। लडके का इस तरह अपने बाप की मौत का हाल पढना बेशक एक भयानक बात थी। वेलेंटिन हाथ जोड़े हुए मानों ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। नैाटीर ने विलफोर्ट पर एक तुच्छता और घमण्ड की निगाह डाली। फ्रान्सिस पढने लगा—

जैसा कि हमलोग ऊपर लिख आये हैं—इस दिन फरवरी की ५ वीं तारीख थी। तीन दिन से बडी बर्फ गिर रही थी, जिस जगह वे लोग थे वह नदी का किनारा था, पर सब बर्फ से ढका हुआ था। एक आदमी एक कोयले की नाव से लालटेन माग लाया जिसकी रोशनी में दोनो के हथियार देखे गये। जनरल की उम्दी तलवार से सभापति की गुप्ती वाली तलवार पांच इञ्च छोटी थी। उन दोनो आदमियो में से एक आदमी ने अपनी तलवार सभापति को देनी चाही पर उसने इन्कार किया और कहा, “नहीं, झगडा हम दोनो के बीच का है और हम दोनो अपने ही अपने हथियारो से उसे तै करेंगे॥”

लालटेन एक तरफ रख दी गई और जनरल किसनल तथा सभापति के बीच में ड्युयेल होने लगा। रात बडी अंधेरी थी ऊपर से बर्फ गिर रही थी, सिवाय तलवारो की मद्धिम चमक के और कुछ नहीं दिखता था। जनरल किसनल तल्वार के हुनर में फ्रान्स के सब सिपाहियो में अौवल समझा जाता था पर सभापति उससे भी तेज था। उसने जनरल को यहा तक दबाया कि उसका हाथ रुक गया

और वह गिर गया। बर्फ पर उसका पैर फिसल गया था। सभापति ने तुरत अपना हाथ रोक उसे सहारा देकर उठाया। इस बात से जनरल का गुस्सा और भी बढ़ गया और वह पागलो की तरह अपने विपक्षी पर टूटा पर सभापति पहिले हो की तरह शान्ति के साथ मुकाबला करता रहा। अब तलवार के वार कारी होने लगे। दोनो को कई जख्म लगे और अन्त में सभापति की तलवार का एक जख्म खा जनरल पुनः गिर गया। पहिले तो खयाल हुआ कि शायद पुन: उसका पैर फिसल गया है पर नही—जब दोनो आदमियो ने उसे उठाने के लिये हाथ नीचे डाला तो गरम खून हाथ में लगा। जनरल बेहोश हो गया था पर कुछ देर के लिये होश में आया, उसके मुह से हाय की एक आवाज आई और उसने कराह कर कहा, "ओफ! उन सभो ने मुझे मारने के लिये कैसे आदमी को भेजा!!" सभापति ने यह सुन अपना कोट उतार डाला और तब लालटेन की रोशनी में सभो ने देखा कि उसकी कमीज खून से तर है। उसे तीन गहरे घाव लगे थे—दो बांह में और एक पसली में—पर उसने अपने मुह से 'ओफ' भी नहीं निकाला था। पाच मिनट के बाद जनरल ने दम तोड़ दिया॥

फ्रान्सिस ने ये आखिरी शब्द ऐसे भर्राये हुए गले से कहे कि सुनाई तक न पडे। उसने अपने माथे पर इस तरह हाथ फेरा मानों किसी बोझ को हटाया चाहता हो, पर एक ही सायत के बाद पुनः पढ़ने लगा—

सभापति ने अपनी तलवार गुप्ती में डाल ली और गाडी की तरफ चला गया, उसके पीछे खून की एक लकीर पडती गई। उसके दोनो साथियो ने जनरल की लाश उठा कर नदी में फेंक दी॥

इस प्रकार जनरल की मौत अत्याचारियो के हाथ नहीं बल्कि साफ डुयेल में हुई। इसलिये कि अगर कभी इस विषय पर कोई शक पैदा हो तो काम आवे—हम तीनो ईमान को सामने रख यह सच्चा सच्चा हाल लिखते हैं जिसमे यदि कभी इस भयानक दृश्य में भाग

लेने वालों को प्रगट होना पड़े तो उनकी इज्जत पर किसी तरह का धब्बा न लगे॥"

"लुई व्योरपेर"
"एटिन ड्यूशेम्पी"
"क्लाड लिशारपल"

जब फ्रान्सिस ने अपने पिता की मौत का यह भयानक हाल पढ़ लिया, जब वेलेंटिन ने अपने आंसू पोंछ लिये, जब कांपता और डरता हुआ विलफोर्ट इस बात की व्यर्थ चेष्टा अपनी आजिज़ी की आंखों से बूढ़े से करता हुआ हार गया-कि वह इस भयानक भेद को न खोले—तब एपिने ने नोटीर से कहा, "महाशय! जब कि आपको यह हाल बहुत दिनों से मालूम है जो कि इज्जतदार आदमियों का लिखा हुआ है तब यद्यपि अभी तक आपने मुझे दुःख ही की बातें कही हैं तथापि कृपा कर एक दया मुझपर और कीजिये जो यह है कि कम से कम यह तो मुझे बता दीजिये कि मेरे पिता की मौत किसके हाथों से हुई अर्थात् उस क्लब का सभापति कौन था?"

विलफोर्ट धीरे २ दर्वाजे की तरफ खसकने लगा। वेलेंटिन जिसने अपने दादा की बांह पर दो जख्म कई बार देखे थे नोटीर की कुर्सी के पीछे हट गई। नोटीर स्थिर दृष्टि से फ्रान्सिस को देख रहा था। उसके चेहरे का भाव समझना कठिन था। फ्रान्सिस ने वेलेंटिन को सम्बोधन कर कहा—"कृपा कर इस समय

मेरी मदद कीजिये, किसी तरह से मिस्टर नैाटीर से समझिये कि मेरे पिता के किसने मारा ॥"

वेलेंटिन चुप थी! केवल विलफोर्ट ने एक बार आखिरी कोशिश की और कहा, "ओह महाशय! मेरे पिता के खुद यह बात नहीं मालूम है और अगर मालूम हो भी तो वे बता नहीं सकते क्योंकि कोप में आदमियों के नाम नहीं लिखे रहते ॥"

नैाटीर ने अजीब निगाह विलफोर्ट पर डाली और तब आंख के इशारे से कई बार "हां" कहा। फ्रान्सिस यह देखते ही बोल उठा—"क्या आप जानते हैं?" नैाटीर ने फिर "हां" कहा और डिक्शनरी की तरफ देखा। फान्सिस ने कांपते हाथों से उसे नैाटीर के सामने रक्खा और पन्ने उलटने शुरू किये। 'म' अक्षर के पन्ने पर नैाटीर की आंखो ने उसे रोका। तब फ्रान्सिस एक एक शब्द पढ़ने लगा यहां तक कि वह 'मोई' (मैं) पर पहुंचा। यहां उन चमकती आंखों ने पुनः रोका और कहा—"हां॥"

फ्रान्सिस के रोएं खड़े हो गये, उसने उद्वेग के साथ पूछा, "आप! आपने मेरे पिता की जान ली?"

नैाटीर ने कहा, "हां॥"

फ्रान्सिस एक कुर्सी पर गिर गया। विलफोर्ट दरवाजा खोल कमरे के बाहर भाग गया क्योंकि उसके मन में यह भयानक इच्छा उठी कि इस बूढ़े का गला दबा उसकी बची खुची जान को भी निकाल बाहर करे॥

पाँचवां बयान।

प्रभाव-विस्तार।

इस बीच में मारक्विस केवेलकण्टी लौट गये थे—आष्ट्रियाके वादशाही फौज की मेजरी करने नही बल्कि लुक्का के जूएखाने को आबाद करने के लिये क्योंकि एन्ड्रिया के पिता का पद जिस खूबी से उन्होंने पूरा किया था उसके लिये उनको काफी रकम मिली थी। उनके सुपुत्र एन्ड्रिया को सब जरूरी कागजात मिल गये थे जो इस बात को साबित कर सकते थे कि वे मारक्विस बारटोलोमियो और ओलिवा कार्सनारी के लडके हैं अस्तु अपने बनावटी बाप के जाते ही एन्ड्रिया ने पैरिस की सोसाइटी में प्रवेश कर लिया था और हफ्ते ही भर मे नामवरी भी हासिल कर ली थी क्योंकि उसके पिता की अगाध दौलत का हाल न जाने किस तरह लोगों मे फैल गया था॥

यही हाल था जब एक दिन मौण्ट क्रीटो मिस्टर दङ्गली के घर पर पहुंचा। वैङ्कर तो था नही पर उसकी स्त्री थी जो उससे मुलाकात करने को तैयार थी अस्तु काउण्ट उसी के पास गया। यद्यपि जिस दिन काउण्ट के मकान पर वह अद्भुत दावत हुई थी और काउण्ट ने वे भयानक बाते सुनाई थी उस दिन से मैडम दङ्गली काउण्ट से कुछ डरने लगी थी पर काउण्ट की बात-चीत का ढङ्ग और उसकी खुशमिजाजी ऐसी थी कि

कोई उसके बारे में यह नहीं सोच सकता था कि वह भीतर भीतर दगा देता होगा। अस्तु मैडम दङ्गली ने भी अपने खयालातों को दूर कर दिया और इस समय काउएट से वे बड़े तपाक से मिलीं। इस समय उस जगह एण्ड्रिया तथा मिस यूजिनी भी थी जिनके साथ काउएट ने हाथ मिलाया और तब इधर उधर की बातें होने लगी॥

बातें करते हुए कौएट ने यूजिनी की तरफ एण्ड्रिया के भाव को लक्ष किया जो बार बार उसकी तरफ कभी हसरत भरी और कभी कटीली मारू निगाहे डालता और आहें लेता था मगर यूजिनी का भाव वही था—ठण्ढा और कठोर—वह एण्ड्रिया की सब बातें देखती थी पर उसपर असर किसी का नहीं होता था। जब उसने सभों को बात में फँसे पाया तो धीरे से उठ कर अपने कमरे में चली गई और कुछ देर बाद गाने और पियानो की आवाज से काउएट को मालूम हो गया कि मिस यूजिनी उसकी या केवेलकएटी की सोहबत की बनिस्बत अपने पियानो और गाने का साथ ज्यादा पसन्द करती है। उधर एण्ड्रिया ने जब अपने प्रेम के निशान को हट गये हुए पाया तो अब वह उस गाने की आवाज को ही उसी भाव से सुनने लगा जो पास के कमरे से आने लगी॥

इसी समय बैरन दङ्गली वहां आ पहुंचे, काउएट को उसने सलाम किया और एण्ड्रिया को बड़े आव-

भगत से लिया। जब उसे बार बार यूजिनी के कमरे की ओर देखते कान लगाते और गाना सुनते देखा तो वह बोला, "क्या यूजिनी और उसकी उस्तादिन लूसी ने आपको बाजा सुनाने के लिये नहीं बुलाया?" एन्ड्रिया ने यह सुन एक लंबी आह के साथ जो पहिले की आहों से भी स्पष्ट थी कहा, "अफसोस! नहीं!" जिसे सुनते ही दङ्गली ने आगे बढ़ यूजिनी के कमरे का दरवाजा खोल दिया। अपने को गाना सिखानेवाली मिस लूसी के साथ यूजिनी एक ही स्टूल पर बैठी हुई थी और दोनों एक एक हाथ से पियानो बजा और साथ साथ गा रही थीं। दङ्गली ने पूछा, "क्या हमलोग गाना न सुन पावेंगे?" और तब एन्ड्रिया को लिये हुए वह भीतर चला गया। कमरे का दर्वाजा पुनः शायद आप से आप या और किसी तरह बन्द हो गया और थोड़ी ही देर बाद काउण्ट ने एन्ड्रिया के गाने की आवाज सुनी जो एक कार्सिकन गीत गा रहा था। काउण्ट यह गीत सुन मुस्कुरा उठा क्योंकि इसने थोड़ी देर के लिये एन्ड्रिया की सूरत हटा बेन्डेटो की सूरत उसकी आंखों के सामने खड़ी कर दी, पर उसे शीघ्र ही अपना ध्यान उधर से हटाना पड़ा क्योंकि मैडम दङ्गली अपने पति की तारीफ करती हुई कह रही थी "आपने बैरन को देखा! उनके चेहरे पर जरा भी सिकुड़न नहीं है पर अभी अभी उन्हें 'मिलन' के एक महाजन के दिवाले की खबर मिली है जिसके नीचे इनका कई लाख रुपया दबा हुआ

है ।" काउएट ने यह सुन कर मन में कहा—'हूं ! एक महीना पहिले वह अपने घाटों पर घमण्ड करता था ! अब वह उन्हें छिपाने लगा !!' और तब सन्तोष दिलाने के ढङ्ग पर कहा, "कोई हर्ज नहीं मैडम ! वे एक दिन मे अपना घाटा पूरा कर सकते हैं क्योंकि वे अपने काम मे बड़े ही होशियार हैं ॥"

मैडम० । नहीं, आप शायद समझते हैं कि बैरन फाटका खेलते हैं, पर वास्तव में ऐसा नहीं है ॥

काउएट० । क्या ऐसा ? ओह हां ठीक है । मिस्टर डिब्रे ने एक दफे मुझसे कहा था . हां यह तो कहिये कि वे आजकल दिखाई नही पडते क्या मामला है ?

मैडम० । (स्वभाविकता के साथ) हां मैंने भी उन्हें कई रोज से नहीं देखा—पर आप अपनी बात पूरी कीजिये ॥

का० । मैं क्या कहता था ?

मैडम० । कि मि० डिब्रे ने एक बार कहा था

का० । हां, उन्होने एक बार कहा था कि आपको फाटके का कुछ शौक है ॥

मैडम० । (सिर नीचा करके) हां पहिले था पर अब तो नहीहै । मैने सुना कि यह शौक बहुतही बुरा है अस्तु मैंने इससे

का० । नही आपका खयाल गलत है, द्रव्य बडा चञ्चल है और इसके लिये भाग्य सब से बडी चीज है । अगर मैं किसी अमीर की स्त्री होता तो चाहे मेरा पति

कितना ही होशियार क्यों न होता मैं उसके भरोसे न रह अपने भाग्य का जरूर इम्तिहान लेता चाहे इसके लिये मुझे अपना लेन देन किसी अजनबी के ही हाथ क्यों न देना पडता ॥

मैडम दङ्गली के ढंग से मालूम हुआ कि उसने काउण्ट की बातों को बडे गौर से सुना है पर ऊपर से हँस कर टालने की नीयत से उसने कहा, "खैर इन बातों को जाने दीजिये यह कहिये कि आपने मि० विलफोर्ट के घर का हाल सुना ?"

का० । क्या ?

मैडम०। मारक्विस मीरां और उनकी स्त्री एक दूसरे के कुछ ही दिन भीतर मर गये !!

काउण्ट० । हां यह तो मुझे मालूम है ॥

मैडम०। उसके बाद उनकी लड़की वेलेण्टिन की शादी टूट गई !!

काउण्ट० । शादी टूट गई, वह तो मि० फ्रान्सिस एपिने से लगी थी ?

मैडम० । हां, कल मालूम हुआ कि फ्रान्सिस ने शादी से इन्कार कर दिया ॥

का० । सबब ?

मैडम० । कुछ मालूम नहीं ॥

का० । बड़े ताज्जुब की बात है । मि० विलफोर्ट इन दुःखों को कैसे बर्दाश्त करते होगे ?

मैडम० । वही, फिलासफरों की तरह ॥

इसी समय दङ्गली अकेला लौटा, काउएट की तरफ देख उसने कहा, "प्रिन्स (राजकुमार) केवेलकएटी बड़े ही अच्छे आदमी हैं। सचमुच वह प्रिन्स ही हैं न ?"

का०। सो मैं नहीं जानता, मैं तो उसे मारक्विस का लड़का और इस कारण काउएट समझता हूं। अगर वह प्रिन्स हो भी तो अपने को ऐसा कहता तो नहीं॥

दङ्गली०। जब है तो जरूर कहना भी चाहिये। अपनी मर्यादा क्यों छोड़ना !!

का०। आप तो साधारणतन्त्र-वादी हैं, आप तो पद मान मर्यादा कुछ मानते नहीं !!

इसी समय मैडम ने पूछा, "केवेलकएटी है कहां ? क्या आप उसे यूजिनी के पास अकेला छोड़ आये हैं ?"

दंगली०। अकेला नहीं लूसी भी वहां है॥

मैडम०। पर यह अच्छा नहीं किया, यदि अलबर्ट इस समय यहां आ जाय तो उस कमरे में जिसमें वह कभी जाने नहीं पाता एन्ड्रिया को देखकर क्या खयाल करे ?

दंगली०। वह हमारे यहां इतना कम आता है कि इसका खयाल नहीं किया जा सकता॥

मैडम०। तौ भी अगर वह आ जाय तो अपनी यूजिनी के पास दूसरे नौजवान को देख उसे जरूर डाह होगा॥

दंगली०। कभी नहीं वह यूजिनी को इतना प्यार ही नहीं करता। काउएट मारफर्फ के जलसे में यूजिनी

उसके साथ एक ही बार नाची और केवेलकएटी के साथ तीन दफे, क्या उसने इसका कुछ खयाल किया?

अचानक दर्वाजा खुला और नौकर ने अलवर्ट के आने की इत्तला दी। मैडम और दंगली की बात यकायक बन्द हो गई जब उन्होंने सुन्दर और साफ सुथरे नौजवान अलवर्ट को मुस्कुराहट के साथ अन्दर आते पाया। अलवर्ट ने वैरन और वैरोनेस को सलाम किया और काउएट के साथ बड़े प्रेम से मिला, इसके बाद वैरोनेस की तरफ घूम कर उसने पूछा, "मिस यूजिनी अच्छी तरह हैं?"

दगली तुरत बोल उठा, "हां वह बहुत अच्छी है, इस वक्त केवेलकएटी के साथ गा बजा रही है॥"

कदाचित् अलवर्ट को यह बात सुन कुछ बुरा लगता पर वह जानता था कि मौएट क्रीटो की तेज निगाह बराबर उसके ऊपर है अस्तु उसने अपने चेहरे पर किसी तरह का बल न आने देकर कहा—"केवेलकएटी की आवाज बड़ी मधुर है और मिस यूजिनी अव्वल नम्बर की बजाने वाली हैं सचमुच उनका गाना बजाना सुनने लायक होगा॥"

दंगली०। वे एक दूसरे को बड़े मौज़ं हैं॥

अलवर्ट ने इस बात पर भी ध्यान न दिया जो कि इतनी भूंडी थी कि मैडम दंगली को सिर नीचा करना पड़ा। दंगली ने पुनः कहा, "प्रिन्स और यूजिनी की कल बड़ी तारीफ हुई थी॥"

अलबर्ट०। कौन प्रिन्स?

दंगली०। प्रिन्स केवेलकएटी॥

अलबर्ट०। क्षमा कीजियेगा, मुझे नहीं मालूम था कि वे प्रिन्स हैं। अच्छा तो कल उनके गाने और मिस यूजिनी के बजाने की बड़ी तारीफ हुई थी (कुछ देर रुककर) क्या मैं उनसे मिल सकता हूं?

दंगली०। अभी जरा ठहरो (सुनते हुए) वाह देखो क्या अच्छी तान आ रही है! वाह वाह वाह!!

अलबर्ट०। वाह वाह क्या बात है, क्यों न हो॥

दंगली की तरह अलबर्ट ने भी इन गवैयों की तारीफ की बौछार कर दी। दंगली उसका यह ढंग देख मन ही मन कुछ तरद्दुद में पड़ गया और सोचने लगा कि क्या अलबर्ट यह बातें बनावटी तरह पर कह रहा है। आखिर उससे न रहा गया और उसने मौएट क्रीटो को अलग लेजा कर उसके कान में कहा, "आप यूजिनी के प्रेमी के बारे में क्या खयाल करते हैं?"

काउएट०। प्रेम तो अवश्य कुछ ठएढा मालूम होता है पर आप अपना वचन दे चुके हैं॥

दंगली०। बेशक मैं अपनी बेटी को ऐसे के हाथ देने का वादा कर चुका हूं जो उसको प्यार करता हो। पर उसे नहीं जो परवाह ही न रखता हो, दूसरे केवेलकएटी का एक पासङ्गा भर दौलत न होने पर भी अलबर्ट को उससे दस गुना घमण्ड है॥

का०। मगर यह तो मैं जरूर कहूंगा कि अलबर्ट

बहुत चतुर और बुद्धिमान है जो आपकी लड़की को बहुत सुख देगा, दूसरे उसके पिता का रुतबा भी बहुत अच्छा है ॥

दंगली०। शायद !!

का०। क्या आपको शक है ?

दंगली०। काउण्ट मारकर्फ का गुजश्ता हाल ठीक ठीक किसी को मालूम नहीं है ॥

काउण्ट०। तो उससे क्या, बाप के गये दिनों से लड़के को क्या ?

दंगली०। हां यह तो है मगर...

का०। अभी एक महीना पहिले आप इस शादी के लिये उत्सुक थे, अब उसका उलटा है। मैं तो बड़े तरद्दुद में पड़ गया हूं क्योंकि मेरे ही घर पर आपने केवेलकण्टी को देखा जिसके बारे में मैं पुनः कहता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता ॥

दंगली०। मगर मैं तो जानता हूं ॥

का०। क्या आपने कुछ जांच की थी ?

दंगली०। उसकी जरूरत ? क्या सूरत से आदमी नहीं पहिचाना जा सकता ? पहिले तो वह अमीर है ॥

का०। इसका भी क्या ठीक ?

दंगली०। क्यों ? आप ही तो उसके जामिन बने हैं !!

का०। सिर्फ पचास हजार के—जो कि एक अति तुच्छ रकम है ॥

दंगली०। दूसरे उसकी शिक्षा बहुत अच्छी हुई है,

अलबर्ट०। कौन प्रिन्स ?

दंगली०। प्रिन्स केवेलकराटी ॥

अलबर्ट०। क्षमा कीजियेगा मुझे नहीं मालूम था कि वे प्रिन्स हैं। अच्छा तो कल उनके गाने और मिस यूजिनी के बजाने की बडी तारीफ हुई थी (कुछ देर रुककर) क्या मैं उनसे मिल सकता हूं ?

दंगली०। अभी जरा ठहरो (सुनते हुए) वाह देखो क्या अच्छी तान आ रही है! वाह वाह वाह !!

अलबर्ट०। वाह वाह क्या बात है, क्यों न हो ॥

दंगली की तरह अलबर्ट ने भी इन गवैयों की तारीफ की बौछार कर दी। दंगली उसका यह ढंग देख मन ही मन कुछ तरद्दुद में पड गया और सोचने लगा कि क्या अलबर्ट यह बातें बनावटी तरह पर कह रहा है। आखिर उससे न रहा गया और उसने मौएट क्रीटो को अलग लेजा कर उसके कान में कहा, "आप यूजिनी के प्रेमी के बारे मे क्या खयाल करते हैं ?"

काउएट०। प्रेम तो अवश्य कुछ ठएढा मालूम होता है पर आप अपना बचन दे चुके हैं ॥

दंगली०। बेशक मैं अपनी बेटी को ऐसे के हाथ देने का वादा कर चुका हूं जो उसको प्यार करता हो। पर उसे नही जो परवाह ही न रखता हो, दूसरे केवेलकराटी का एक पासङ्गा भर दौलत न होने पर भी अलबर्ट को उससे दस गुना घमण्ड है ॥

का०। मगर यह तो मैं जरूर कहूंगा कि अलबर्ट

दंगली०। हां, क्योंकि महाजन को अपने वादे का पाबन्द होना चाहिये, नही तो मुझे कुछ ऐसी इच्छा नही है ॥

इतना कह दंगली ने वैसी ही सांस ली जैसी कि एन्ड्रिया ने कुछ देर पहिले ली थी। इसी समय अलवर्ट उत्साह से बोला—"वाह ! क्या स्वर्गीय तान है !" दंगली ने शक की निगाह उसपर डाली पर इतनेही में एक आदमी ने आ उसके कान में कुछ कहा जिसे सुन वह काउएट से ठहरने को कह कमरे के बाहर चला गया॥

पति के चले जाने बाद बैरोनेस ने अपनी लड़की के कमरे का दर्वाजा खोला और एन्ड्रिया जो यूजिनी के साथ पियानो के पास बैठा था चैांक कर खड़ा हो गया। अलवर्ट ने उसपर एक कडी निगाह डाली और तब यूजिनी से बातें करने लगा॥

कुछ देर बाद सब कोई चाय पीने के लिये दूसरे कमरे में गये। जैसे ही इस काम से छुट्टी मिली काउएट ने दंगली को देखा जो घबराया हुआ उसकी तरफ आ रहा था। उसने दंगली की तरफ देखा और दंगली ने पास आकर कहा, "ग्रीस से मेरा दूत अभी लैाटा है॥"

का०। ओह तभी आप चले गये थे !!

दंगली०। हां॥

अलवर्ट०। बादशाह 'ओथो' तो अच्छी तरह है ?

दंगली ने इस बात का कोई जवाब न दे एक विचित्र दृष्टि अलबर्ट पर डाली। मोएट क्रीटो ने अपने

तीसरे वह गाता अच्छा है॥

का०। सब इटालियन ऐसे होते हैं॥

इंगली०। सचमुच काउण्ट आपको उस नौजवान से कुछ चिढ़ सी है?

का०। नही, पर आपका और मारकर्फ का सम्बन्ध जानते हुए उसका इस तरह बीच में फाँद पड़ना मुझे गढ़ाता है क्योंकि काउण्ट मारकर्फ भी इस शादी के लिये उत्सुक हैं॥

इंगली०। सचमुच?

का०। अवश्य॥

इंगली०। तब आप उनको इशारा दीजिये कि इस मामले को जल्दी तै कर डालें क्योंकि आप उस घराने के दिली दोस्त हैं॥

का०। मैं!! यह आप कैसे समझे?

इंगली०। वाह इसमें भी कोई शक है! क्या उस दिन उस बाल में मरियम—घमण्डी मरियम—जो अपने पुराने दोस्तों से बात भी नही करती—आपका हाथ पकड़ बागीचे में नही लेगई और आधे घण्टे तक नही रही? क्या आप मारकर्फ से मेरी बात कहेंगे?

का०। अवश्य यदि आपकी इच्छा हो तो॥

इंगली०। मगर ऐसा करिये कि इस बार यह मामला तै ही हो जाय। या तो हमलोग एक ही हो जायँ या अलग ही हो जायँ! समझे न, अब देर का काम नही॥

का०। बहुत अच्छा, मैं इधर ध्यान दूंगा॥

छठवां बयान।

हैदरी।

काउण्ट की गाड़ी दंगली का दर्वाजा छोड़ थोड़ा ही हटी थी कि अलबर्ट बड़े ज़ोर से हँसा और बोला, "क्यों मेरा पार्ट अच्छा हुआ न ?"

काउण्ट ने पूछा, "क्या पार्ट ?"

अल०। यही अपनी जगह पर एक दूसरे को महाजन के यहां स्थापित करने का॥

का०। मैं समझा नहीं॥

अल०। वाह! अपनी जगह प्रिन्स केवेलकण्टी को मैंने जामातृ पद पर स्थापित कर दिया! आप समझे नही !!

का०। क्या एन्ड्रिया मिस यूजिनी से व्याह किया चाहता है ?

अल०। ज़रूर॥

का०। मगर मि० दङ्गली तो तुम्हें अपना वचन दे चुके हैं॥

अल०। कहां की बात, मैं शर्त लगाता हूं कि एक हफ्ते के अन्दर मेरा उनके घर के अन्दर जाना रोक दिया जायगा। भला प्रिन्स केवेलकण्टी के आगे मैं कुछ हूं !

काउण्ट०। नही नहीं वाई काउण्ट मैं साबित कर सकता हूं कि तुम भूलते हो॥

अल०। कैसे !

चेहरे को घुमा लिया क्योंकि एक दया का भाव उसके चेहरे पर दौड़ गया था, जो तुरत ही गायब भी हो गया॥

अलबर्ट ने काउण्ट से पूछा—"मैं जाता हूं, आप भी चलते हैं?"

काउण्ट ने "जैसी मर्जी" कहा, अलबर्ट यूजिनी और उसकी मां से बिदा होने लगा। इस बीच में दंगली ने काउण्ट से कहा, "आपकी राय बहुत अच्छी निकली, 'फरनन्द' और 'जनीना', इन शब्दों में एक भयानक रहस्य छिपा हुआ है!!"

का०। सचमुच!!

दंगली०। हां, मैं आपको वह सब हाल सुनाऊंगा पर इस समय आप अलबर्ट को मेरे सामने से हटाइये॥

काउण्ट०। हां वह मेरे साथ जाता है, अच्छा तो मैं उसके पिता को भेज दूं?

दंगली०। हां अब तो और भी जरूरी है (इतना कह उसने पुनः अलबर्ट पर वही निगाह डाली)॥

काउण्ट ने "अच्छा" कहा और तब अलबर्ट को इशारा किया, दोनों कमरे के बाहर आये। बाहर आते ही अलबर्ट ने पूछा, "मि० दङ्गली ने मेरी तरफ जिस निगाह से देखा सो आपने खयाल किया?"

काउण्ट०। हां, मगर उसमें कोई खास बात तो नहीं थी॥

अलबर्ट चुप हो गया। दोनों मकान के बाहर आये॥

छठवां बयान।

हैदरी।

काउण्ट की गाड़ी बंगले का दर्वाजा छोड़ थोड़ा ही हटी थी कि अलबर्ट बड़े जोर से हँसा और बोला, "क्यों मेरा पार्ट अच्छा हुआ न?"

काउण्ट ने पूछा, "क्या पार्ट?"

अल०। यही अपनी जगह पर एक दूसरे को महाजन के यहां स्थापित करने का॥

का०। मैं समझा नहीं॥

अल०। वाह! अपनी जगह प्रिन्स केवेलकण्टी को मैंने जामातृ पद पर स्थापित कर दिया! आप समझे नहीं!!

का०। क्या एन्ड्रिया मिस डूजिनी से व्याह किया चाहता है?

अल०। जरूर॥

का०। मगर मि० दङ्गली तो तुम्हें अपना वचन दे चुके हैं॥

अल०। कहां की बात, मैं शर्त लगाता हूं कि एक हफ्ते के अन्दर मेरा उनके घर के अन्दर जाना रोक दिया जायगा। भला प्रिन्स केवेलकण्टी के आगे मैं कुछ हूं!

काउण्ट०। नहीं नहीं वाई काउण्ट मैं साबित कर सकता हूं कि तुम भूलते हो॥

अल०। कैसे?

का०। ऐसे कि बैरन ने आज मुझे तुम्हारे पिता से यह कहने का काम सौंपा है कि वे आवें और तुम्हारे ब्याह की निस्बत सब कुछ ते कर जायँ ॥

अलबर्ट०। सचमुच! (गिड़गिड़ा कर) मगर आप अपना सँदेसा पूरा न करियेगा?

का०। सो कैसे हो सकता है, मैं वादा कर आया हूं॥

अलबर्ट ने निराशा की सांस लेकर कहा, "मालूम होता है आप मेरा ब्याह करके ही छोड़ेंगे!!"

का०। भाई मैं किसी से बुरा नहीं रहा चाहता, मैं सब को खुश रक्खा चाहता हूं। हां यह तो कहो आज कल बैरन के यहां मि० डिब्रे नहीं दिखाई पड़ते॥

अल०। हां कुछ लड़ाई हो गई है॥

का०। बैरोनेस से?

अल०। नहीं बैरन से॥

का०। क्या बैरन को कुछ सुनगुन लग गई?

अल०। (हँसकर) अच्छी कही!! आप कहां रहते हैं जो आपको पता नहीं!!

का०। (बड़ी सिधाई से) मगर बैरन और डिब्रे तो एक दूसरे को अच्छी तरह समझते थे! उनमें झगड़ा क्यों हो गया?

अल०। अब यह आप एन्डिया से तब पूछियेगा जब वह उस घर का एक पात्र हो जायगा॥

गाड़ी रुकी, काउण्ट ने कहा, "लो घर आ गया, अभी ग्यारह नहीं बजा, आओ कुछ देर बातें करेंगे॥

अल०। खुशी से ॥

दोनों उतरे। काउण्ट के कमरे में रोशनी हो रही थी और बेप्टिस्टिन वहां मौजूद था। काउण्ट ने उससे कहा, "हमलोगों के लिये चाय बनाओ।" बिना जवाब दिये बेप्टिस्टिन चला गया और तुरत ही एक तश्तरी में बनी बनाई चाय लिये इस तरह हाजिर हुआ मानो सब चीजें जादू के जोर से तुरत तैयार हो गई हों ॥

अलबर्ट०। सचमुच काउण्ट मैं आपकी दौलत या चतुराई की उतनी तारीफ नहीं करूंगा जितनी आपके नौकरों की कारगुजारी की ! वे लोग ऐसी तरह से काम करते हैं मानो आपके मन की बात समझते हो और उन सब चीजों को तैयार रखते हों जिनकी आपको जरूरत पड़ सकती है ॥

का०। आपका कहना कुछ कुछ ठीक है, वे लोग मेरी आदतों को जानते हैं—मसलन् चाय पीते वक्त आप क्या पसन्द करते हैं ?

अल०। मैं तमाखू पीना पसन्द करता हूं ॥

काउण्ट ने घण्टी उठाई और एक दफे बजाई। तुरत ही एक भीतरी दर्वाजा खुला और अली दो उम्दे हुक्के लिये हुए हाजिर हुआ। अलबर्ट आश्चर्य्य के साथ काउण्ट का मुंह देखने लगा ॥

का०। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है। अली जानता है कि चाय पीती समय मैं तमाखू भी पीता हूं, यह उसे मालूम है कि मैंने चाय मँगाई है और यह भी

वह जानता है कि आप मेरे साथ हैं अस्तु वह दो हुक्के तैयार किये रहा॥

अल०। आपके कहने से तो यह बिल्कुल मामूली बात मालूम होती हैं पर वास्तव में . . . हैं!!

अलबर्ट रुक गया क्योंकि एक दर्वाजे के अन्दर से उसने किसी बाजे के बजने की आवाज सुनी॥

काउण्ट०। सचमुच आज आपके भाग्य में गाना बजाना सुनना ही बदा है। सिस इंगली के पियानो से बच अब आप हैदरी की गज़ल के चङ्गुल में पड़ गये॥

अल०। हैदरी!! कैसा अद्भुत नाम है!! क्या यह नाम किसी औरत का है?

का०। हां, फ्रान्स में यह नाम नहीं सुनाई पड़ता पर अलबानिया या इपाइरस में यह साधारण है॥

अल०। यह कौन है?

का०। मेरी बांदी!!

अल०। बांदी!! क्या खरीदी हुई लौंडी?

का०। हां!!

अल०। क्या अभी तक बांदी और गुलाम होते हैं! सचमुच काउण्ट आप दूसरों से बिल्कुल अलग हैं!! 'काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो की बांदी!' यह भी फ्रान्स के लिये एक रुतबा है। आप अपनी बांदी पर कै लाख रुपया खर्च करते हैं?

काउण्ट०। वह बेचारी किसी जमाने में क़रोड़ों की मालिक थी॥

अल०। तो क्या कही की शाहजादी थी?

का०। हां, एक बहुत बड़े राज्य की॥

अल०। तो ऐसी शाहजादी बांदी क्योंकर हो गई?

का०। क़िस्मत का फेर!!

अल०। उसका नाम क्या है? वह कहा की शाहजादी है? क्या यह कोई गुप्त भेद है?

का०। वेशक दुनिया के लिये गुप्त ही है पर तुम्हारे लिये नहीं अगर तुम इस भेद को किसी से न कहो।

अल०। मैं कसम खाने को तैयार हूं॥

का०। जनीना के पाशा का हाल तुम्हे मालूम है?

अल०। अली तवलिन! वेशक उसका हाल मुझे मालूम है क्योंकि उसी की नैाकरी मे मेरे पिता ने अपनी दौलत पैदा की॥

का०। हां मैं यह भूल गया था॥

अल०। अच्छा तो यह हैदरी अली की कैान है?

का०। लडकी॥

अल०। क्या! अली तवलिन जनीना के पाशा की वेटी!! ग्रैार आपकी बादी!!

काउण्ट०। हां॥

अल०। मगर यह कैसे हुआ?

का०। कैसे? मैं कुस्तुनतुनिया के बाजार मे घूम रहा था वहां मैंने उसे देखा ग्रैार खरीदा॥

अल०। ताज्जुब है। अच्छा काउण्ट एक प्रार्थना मैं कर सकता हू?

काउण्ट०। कहो॥

अलवर्ट०। आप अपनी इस बांदी को बाहर तथा ओपेरा और थियेटरों में ले जाते हैं, बहुत पर्दे में नहीं रखते—अस्तु क्या आप मेरी भी उससे मुलाकात करा सकते हैं?

का०। हां, मगर दो शर्तों पर॥

अल०। मैंने दोनों मंजूर की॥

काउण्ट०। एक तो यह कि तुम किसी से यह जिक्र न करो कि मैंने तुम्हारी मुलाकात उससे कराई और दूसरे यह कि उसके सामने यह कभी मत कहो कि तुम्हारे पिता उसके बाप के नौकर थे॥

अलवर्ट०। मैं दोनों बातों की कसम खाता हूं॥

काउण्ट०। देखो अपनी कसम भूलना मत!!

इतना कह काउण्ट ने घण्टी बजाई, अली आया जिससे उसने कहा, "हैदरी से कहो कि मैं आज उसके साथ कहवा पीऊंगा और यह भी कहो कि एक महाशय को उससे मुलाकात कराने को लाऊंगा॥"

अली चला गया। काउण्ट ने अलवर्ट से कहा—"देखो! हैदरी से कोई सवाल मत करना, अगर तुम्हें कुछ पूछना हो तो मुझसे कहना मैं पूछ दूंगा॥"

अलवर्ट०। मंजूर॥

अली फिर आया और इस बार उस दर्वाजे के सामने का पर्दा हटा दिया, मानो यह बात जाहिर कर दी कि हैदरी काउण्ट से मुलाकात करने को तैयार है। काउण्ट

उठ खड़ा हुआ और अलबर्ट अपने बाल तथा कपड़े दुरुस्त कर और मोछों को उमेठ उसके पीछे चला ॥

हैदरी अपने कमरे में मोटे रेशमी गद्दों पर बैठी काउण्ट और उस अजनबी का आसरा कुछ उत्सुकता के साथ देख रही थी क्योंकि आज यह पहिला मौका था कि काउण्ट किसी को उससे मिलाने लाया था। काउण्ट को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और मुस्कुराते हुए उसने उसका स्वागत किया तथा इज्जत के साथ उसके हाथों को चूमा ॥

अलबर्ट पूर्वी ढङ्ग पर सजे हुए इस कमरे तथा इस अपूर्व सुन्दरता को देख ठिठका हुआ सा दर्वाजे ही पर रुक गया था। हैदरी ने उसे देख काउण्ट से रोमन भाषा में पूछा, "आज आप किन महाशय को लाये हैं? किसी दोस्त, भाई, मुलाकाती या दुश्मन को?"

काउण्ट०। दोस्त को, उसका नाम काउण्ट मारकर्फ है। यह वही आदमी है जिसे मैंने रोम में डाकुओं के पंजे से छुड़ाया था॥

हैदरी०। मैं किस भाषा में उससे बात करूं?

काउण्ट०। इटालियन में॥

हैदरी अलबर्ट की तरफ घूमी और बहुत ही मधुर इटाली बोली में अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ा कर बोली, "अपने मालिक के दोस्त का मैं स्वागत करती हूं, आइये बैठिये॥"

अली कहवा के प्याले लेकर आया और एक टेबुल

पर सजा कर चला गया। हैदरी, काउण्ट और अलबर्ट उस टेबुल के पास बैठ गये और कहवा तथा तरह तरह के खुशबूदार शर्वत और वर्फ पीते हुए बातें करने लगे। अलवर्ट ने जिसे हैदरी की सुन्दरता और उस कमरे की सजावट तथा वेशकीमती असबावों ने चौंधिया दिया था धीरे से काउण्ट से पूछा, "मैं किस विषय पर इनसे बातें करूं ?" काउण्ट ने भी धीरे ही से जवाब दिया, "जिस विषय पर चाहें। वह ग्रीस देश की है, अगर आप चाहें तो उसके मुल्क का हाल पूछे, नहीं पैरिस, रोम या फ्लारेन्स के बारे में बातें करें॥"

अलवर्ट हैदरी की तरफ घूमा जो बड़े ध्यान से उसकी तरफ देख रही थी। अलवर्ट ने पूछा, "आपको अपना देश छोड़े कितने दिन हुए ?"

हैदरी०। मैं पांच वर्ष की थी जब मैंने जन्मभूमि छोड़ी॥

अलवर्ट०। तो क्या आपको उस समय तक की बातें याद हैं ?

हैदरी०। हां, मैं बहुत ही बच्ची थी और अपनी मां का हाथ पकड़ कर घूमा करती थी जिसका नाम 'वसीलिकी' या जिसका अर्थ है 'शाही' (इतना कह हैदरी ने घमण्ड से अपना सर ऊंचा किया) मुझे याद है कि उस समय हम दोनों बुरके डाल डाल कर गलियों में भिक्षा मांगने निकलते थे और जो कुछ मिलता था उसे मेरी मां गरीबों को दे देती थी तथा इस बात का मेरे

पिता से कुछ जिक्र नहीं करती थी। उस समय शायद मैं तीन बरस की हूंगी॥

अल०। तो क्या आपको उस समय तक की बात याद है?

हैदरी०। हां?

अल०। (धीरे से काउण्ट से) क्या मैं इनसे इनकी जीवनी का कुछ हाल पूछूं। शायद ये मेरे पिता का भी जिक्र करें जो इनके पिता के नौकर थे॥

काउण्ट हैदरी की तरफ घूमा और ऐसे भाव से जिसमें मुलायमियत के साथ हुकूमत भी मिली हुई थी ग्रीक भाषा में बोला, "इस नौजवान को अपने पिता का हाल सुनाओ पर उस दगाबाज का नाम और उसकी दगाबाजी का कोई जिक्र मत करो॥"

हैदरी ने एक गहरी सांस ली और किसी गहरे दुःख की छाया उसके चेहरे पर घूम गई। अलबर्ट ने यह देख काउण्ट से पूछा, "आप ने इनसे क्या कह दिया?"

का०। मैंने कहा कि तुम हमारे दोस्त हो, तुमसे कुछ छिपाने की जरूरत नहीं॥

अलबर्ट०। (हैदरी से) अच्छा तो गरीबों के लिये इस पुण्यकार्य के लिये घूमने की आपको याद है, इसके बाद क्या याद आता है?

हैदरी ने कहना शुरू किया:—

इसके बाद मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे कल की बात हो कि मैं एक झील के किनारे हूं जहां गद्दों पर लेटे हुए मेरे पिता हैं, मेरी

मा उनके पैताने बैठी है और मैं कभी अपने पिता की लम्बी सफेद दाढी से खेलती हू और कभी उनकी हीरे जडी तलवार की मूठ से। कभी कभी कोई गुलाम मेरे पिता के सामने आ कुछ अर्ज करता है जिसकी तरफ मैं कुछ ध्यान नहीं देती पर जिसके जवाब में मेरे पिता सिर्फ यही कहते हैं "माफी" या "मौत!"

हैदरी ने काउण्ट की तरफ देखा जिसने उसी भाषा में धीरे से कहा, "कहे चलो।" अलबर्ट ने भी कहा—"हां तब क्या याद आता है?"

हैदरी ने फिर कहना शुरू किया:—

इसके बाद मुझे उस समय की घटना याद आती है जब मैं शायद चार वर्ष की हूगी। रात के समय यकायक मेरी मा ने मुझे जगाया था, हमलोग उस समय जनीना के महल में थे। उसने मुझे रेशमी गद्दों पर से उठा लिया जिनपर मैं पडी थी और जब मेरी आख खुली तो मैंने देखा कि उसकी आखो में आसू भरे हैं। वह मुझे कहीं ले चली पर जब मैंने उसे रोते देखा तो मैं भी रोने लगी। उसने कडाई से कहा, "चुप रह!" जिससे मैं एक दम चुप हो गई क्योंकि अभी तक कभी उसने मुझे ऐसा डाटा ही न था और इस समय खुद उस की आवाज से ऐसा डर जाहिर हो रहा था कि जिसे मैं उस उम्र में भी समझ गई। वह मुझे ले सीढियां उतरने लगी और तब मैंने देखा कि बहुत से, नौकर और लौंडी गुलाम सन्दूक, असबाब या जेवर और अशर्फियो की थैलियें लिये उतरे जा रहे हैं। उनके पीछे महल की औरतें थीं और सब के पीछे बन्दूक लिये सिपाही थे। इस तरह सभो को भागते हुए देख मेरे दिल पर क्या असर हुआ होगा यह आप खुद ही सोच सकते हैं॥

नीचे से किसी की आवाज आई, "जल्दी करो!" जिसके साथ ही हमलोग काप गये क्योंकि यह मेरे पिता की आवाज थी। जब सब कोई सीढियो के नीचे आ गये तो मेरे पिता सब के पीछे हो लिये और हमलोगों को इस तरह ले चले जैसे कोई गडेडिया अपने मवेशी हाक रहा हो। (अपना सिर घमण्ड से तान कर) मेरा पिता वह

आदमी था जिसे यूरोप वाले "अली तबलिन—जनीना का पाशा" करके जानते थे और जिसके नाम से तुर्किस्तान कांपता था॥

हैदरी ने यह ऐसे स्वर से कहा कि अलबर्ट बेमालूम तौर पर कांप गया और उसे ऐसा मालूम हुआ मानो कोई सिंहनी गरज उठी हो क्योंकि अपने पिता की भयानक मौत का हाल याद कर हैदरी की आंखों से अद्भुत चमक निकली थी। वह कुछ रुक कर फिर कहने लगी—

थोडी देर बाद हमलोग एक झील के किनारे पहुंचे। मेरी मा मुझे छाती से दबाये हुई थी और मेरे पिता कुछही दूर पर घबडाहट से चारो तरफ देख रहे थे। सङ्गमर्मर की चार सीढ़ियां पानी तक गई हुई थीं जिनके सामने एक नाव बंधी हुई थी, सामने की तरफ झील के बीचोबीच में एक काला ढूहा सा दिख रहा था जो वास्तव में जल में बना हुआ महल था और वहीं हम लोग भाग रहे थे। मेरी मा, पिता, औरतें और लौंडी गुलाम नाव पर सवार हुए और नाव उधर चली। पीछे के सिपाही सीढ़ियो पर तीन लकीर बांध बन्दूक लिये खडे हो गये मानो अगर कोई हमारा पीछा करे तो उसे मारने को तैयार हो। नाव खेने वाले बडी तेजी मगर बडी ही निःशब्दता से नाव खे रहे थे। मैंने मा से पूछा, "नाव इतनी तेज क्यों जाती है।" उसने कहा, "चुप बेटा! हमलोग भाग रहे हैं।" मेरी समझ में कुछ नहीं आया। हम भाग रहे हैं? मेरे पिता भाग रहे हैं? जिनके आगे जमाना सिर झुकाता था और सिजदा करता था!! पर बाद में सब कुछ मालूम हुआ। वास्तव में हमलोग भाग रहे थे क्योंकि जनीना का किला

हैदरी ने काउण्ट की तरफ देखा जिसकी आंखें एकटक उसके चेहरे की तरफ पड रही थी। उसके बाद उसने धीरे से कहा—

जनीना के किले के सिपाहियो ने बहुत दिनो तक घिरे रहने बाद हार कर सरस्की खुरशेद से सन्धि कर ली थी। हम लोगो ने एक फ्रान्सीसी अफसर को जिसपर मेरे पिता को बड़ा विश्वास था सधि के लिये कुस्तुनतुनिया भेजा था और खुद उस जल के महल में छिपते जा रहे थे॥

अलबर्ट०। (उत्सुकता से) इस अफसर का नाम क्या था?

मौएट क्रीटो ने एक तेज निगाह हैदरी पर डाली जिसे अलबर्ट नही देख पाया। हैदरी ने सिर नीचा कर कहा, "मुझे इस समय उसका नाम याद नही आता, अगर याद आ गया तो कहूंगी॥"

अलबर्ट अपने पिता का नाम लिया ही चाहता था कि काउएट ने उसका हाथ पकड़ कर दबाया, अपना वादा याद कर अलबर्ट रुक गया। हैदरी कहने लगी—

हमलोग उस मकान मे पहुचे। यह मकान ऊपर से तो एक ही मञ्जिल मालूम होता था पर इसके नीचे तहखाने की तरह जल के अन्दर ही अन्दर बहुत बड़ी जगह थी जहा हमलोग भेजे गये। उस जगह साठ हजार थैलिया और दो सौ पीपे रक्खे हुए थे। थैलियो में पचीस करोड रुपया था। पीपो में तीन सौ मन बारूद थी॥

बारूद के इन पीपो के पास मेरे पिता का वफादार गुलाम सलीम एक मशाल हाथ मे लिये खडा था और उसको यह हुक्म था कि जब मेरे पिता का इशारा हो तो पीपों में आग लगा उस महल, सिपाही औरतो बेगमो यहा तक कि खुद मेरे पिता को भी उडा दे। मुझे अच्छी तरह याद है कि सब लौडी गुलाम अपनी भयानक दशा देख अपना दिन और रात जमीन पर पडे सिर्फ रोने और ईश्वर से प्रार्थना करने में ही बिताते थे केवल वह नौजवान सलीम चुपचाप मशाल लिये अपनी जगह पर अपने भयानक काम की निगरानी में खड़ा

रहता था। मेरी निगाहों में वह मौत के दूत की तरह मालूम होता था॥

हम लोगों को उस अंधेरे तहखाने में कई दिनों तक रहना पड़ा। कभी कभी मेरे पिता ऊपर के हिस्सों में जाते और दालान में जल के किनारे गलीचा विछा बैठते। कभी ही कभी वे मुझे तथा मेरी मा को भी बुला भेजते और कुछ देर तक बातें करते। मेरे लिये वे कुछ सायतें बड़ी ही खुशी की होती थीं जो कि सिवाय उस अंधेरे तहखाने या सलीम को बलती हुई मशाल के और कुछ देखती ही नहीं थी। मैं अपने पिता के पैरों के पास खेलती हुई कभी अपनी मा को देखती कभी सामने की झील को और कभी आकाश से मिले हुए 'पिण्डस' को देखती, कभी कभी जनीना के डरावने किले की तरफ भी मेरी निगाह जाती जिसकी तरफ मेरे पिता बैठे घण्टों देखा और न जाने क्या क्या सोचा करते थे॥

एक दिन पिता ने हमें बुला भेजा, वे शान्त थे पर उनका चेहरा रोज से कुछ ज्यादा पीला था। उन्होंने मेरी मा से कहा, "वसीलिकी! आज वह फरमान आने वाला है जिससे मेरी किस्मत का फैसला होगा। अगर मुझे माफी मिली तो हम लोग खुशी खुशी जनीना पहुचेंगे, और अगर इसके बखिलाफ हुआ तो हमें आज ही यहा से भी भागना होगा।" मेरी मा ने पूछा, "अगर दुश्मनों ने भागने का मौका न दिया?" मेरे पिता ने मुस्कुरा कर कहा, "तब सलीम और उसकी मशाल हमारे काम आवेगी॥"

मेरी मा ने एक लम्बी सास ली इसके बाद वह मेरे पिता की सेवा करने लगी, कभी उनका सिर दबाती, कभी दाढी में इत्र और खुशबूदार चीजें लगाती और कभी बर्फ मिली शर्बत का गिलास उन्हें देती क्योंकि यहा आने के बाद से मेरे पिता को बेहद गर्मी और प्यास मालूम होने लगी थी। कभी २ मेरी मा उन्हें हुक्का भर कर देती जिसका नय मुह में डाले वे घण्टों बैठे रहा करते थे। बहुत देर बीत गई॥

यकायक मेरे पिता चौंके और दूरबीन हाथ में लेकर देखने लगे मैंने देखा कि उनका हाथ कांपने लगा और मेरी मा का चेहरा जर्द

हो गया। उन्होंने भारी आवाज से कहा, "एक-दो-तीन-चार!!" और तब अपनी पिस्तौल और बन्दूक की तरफ हाथ बढाया। कुछ देर तक उधर देखते रहे और तब मेरी मा से बोले, "वर्सालिकी! अब आधे घण्टे में बादशाह की इच्छा मालूम हो जायगी! तुम नीचे जाओ।" मेरी मां ने रोकर कहा—"अगर आपको मरना है तो मैं भी आपके साथ मरूगी।" मेरे पिता ने चिल्ला कर कहा—"सलीम के पास जाओ।" मेरी मा ने झुक कर उनका पैर छूआ, उन्हो ने गुलामो से कहा, "वसीलिकी को ले जाओ।"

इस झगडे में मुझे लोग भूलही गये थे। मैं दौड कर अपने बाप के पास गई उन्होने मुझे गोद में ले लिया और मेरा मुह चूमा! ओह! उनका वह आखिरी प्यार था! मुझे वह चुम्बन अभी तक अपने माथे पर गर्म २ मालूम होता है। हमलोग एक जाली के पास आये जहा बीस सिपाही बन्दूक भरे तैयार खडे थे पर आड मे। मुझे दूर पर चार धब्बे दिखाई दिये। देखते ही देखते पास आने पर मालूम हुआ कि चार नावें हैं जो हमारी ही तरफ बडी तेजी से आ रही हैं। मेरे पिता ने घडी निकाल कर देखी और तब बड़ी बेचैनी से इधर उधर टहलने लगे—मुझे उन्होने नीचे मेरी मा के पास भेज दिया मैं और मेरी मां उस अन्धेरे तहखाने में सलीम के पास जा बैठे जो चुपचाप मशाल हाथ में लिये मूरत की तरह खडा था। उस कच्ची उमर में भी मैं अच्छी तरह समझ रही थी कि हमलोगो पर कोई भारी मुसीबत आने वाली है॥

अलबर्ट ने अपने बाप से तो नहीं क्योंकि वह यह जिक्र कभी उठाता ही न था, पर और लोगों के मुंह जनीना के पाशा अली तबलिन की मौत का दास्तान सुना था। इस बारे में तरह तरह की बातें उसके सुनने में आई थीं पर इस समय इस लड़की के मुंह से उसका सच्चा सच्चा हाल सुन उसका दिल भर आया। उधर हैदरी जिसे अपने पुराने किस्से की याद ने एक तरह पर बदहवास

सा कर दिया था कुछ देर के लिये चुप हो गई। उसका चेहरा कुछ जर्द हो गया और आखें इस तरह सामने की तरफ देखने लगी मानों इस समय जनीना की वह झील और पिन्डस का पहाड देख रही हों। उसका सिर हाथ के ऊपर इस तरह झुक गया मानो कोई सुन्दर फूल हवा के झोंके से एक तरफ को लटक गया हो। मौएट क्रीटो ने उसकी तरफ प्यार और स्नेह की नजर डाली और धीरे से रोमन में कहा, "हां कहो॥"

हैदरी ने इस तरह चौंक कर सिर उठाया मानो मौएट क्रीटो के शान्त और गम्भीर स्वर ने उसे किसी स्वप्न से जगाया हो और तब कहने लगी :—

उस समय सन्ध्या के चार बजे होंगे, बाहर बडा सुन्दर दिन था पर हमलोग उस भयावने तहखाने के अँधेरे में पडे थे जहा तारे की तरह टिमटिमाती हुई सिर्फ एक रोशनी थी, सलीम के मशाल की। मेरी मा ईसाई थी, वह ईश्वर की प्रार्थना कर रही थी और सलीम कभी कभी कह उठता था 'अल्लाहो अकबर!' पर मेरी मा को फिर भी कुछ उम्मीद उस फ्रान्सीसी अफसर पर थी जो हमारे बादशाह और मेरे पिता के बीच समझौता करने के लिये गया था—क्योंकि उसने कुछ देर तक गौर करके कहा था, "वे लोग आ रहे हैं, शायद हमलोगों की जान बच जाय।" सलीम ने इसपर कहा, "वसीलिकी! आप क्या डरती हैं, अगर वे लोग सुल्ह के साथ नहीं आते तो हम लोग उनसे लडेंगे, अगर हमलोगों की जान बचाने नहीं आते तो हम लोग उन्हें मार डालेंगे॥" इतना कह उसने अपनी मशाल को तेज किया जिसकी रोशनी में उसका शान्त और दृढ यद्यपि कुछ कठोर चेहरा और उसका स्वर मुझे ऐसा भयानक मालूम हुआ कि मैं डर कर हट गई॥

मेरी मा भी डर से कांप रही थी, मैंने उससे पूछा, "मा! क्या

हमलोग मरने वाले हैं ?" उसने कहा, "बेटी ! ईश्वर तुझे उस मैात की इच्छा से बचावे जिससे तू आज इतना डरती है ।" तब उसने सलीम से धीरे से पूछा, "पाशा ने तुम्हें क्या हुक्म दिया है ?" सलीम बोला, "अगर वह अपना कटार मेरे पास भेजेगा तो उसका मतलब यह होगा कि बादशाह की मर्जी नही हुई और मैं बारूद में आग लगा दूं और अगर अपनी अंगूठी भेजी तो उसका मतलब होगा कि बादशाह ने माफी दी मैं मशाल बुझा दूं और बारूद को न छेड़ूं ।" मेरी मा ने कहा, "सलीम ! जब तुम्हारे मालिक का हुक्म आवे और वह अपना कटार भेजे तो इस भयानक तौर पर मारने के बदले तुम दया कर हम दोनो को उसी कटार से मार देना ।" सलीम ने शान्त भाव से कहा, "अच्छा ।" यकायक जोर जोर से आवाजें आने लगीं, वे खुशी की आवाजें थी । उस फ्रान्सीसी अफसर का नाम सब तरफ खुशी के साथ सुनाई पडने लगा, यह स्पष्ट हो गया कि वह बादशाह का हुक्म लेकर लौट आया और वह हुक्म हमलोगों के पक्ष में था॥

अलबर्ट ने पूछा, "और क्या उस फ्रान्सीसी अफसर का नाम अभी तक तुम्हे याद नही आता ?" मैाण्ट क्रीटो ने उसे सावधान रहने का इशारा किया, हैदरी बोली, "नहीं मुझे याद नही आता ।" इसके बाद वह पुनः कहने लगी :—

शोर गुल बढने लगा और तहखाने की सीढी पर से कुछ आदमियो के आने की आहट आई । सलीम ने अपनी मशाल सम्हाली और उसी समय एक आदमी की खाकी शक्ल दर्वाजे के सामने नजर पडी । सलीम ने कडक कर कहा—"कैान है ! खबरदार एक कदम आगे मत बढना ।" उस शक्स ने कहा, "बादशाह की जय हो ! उसने हमारे पाशा को सिर्फ माफ ही नही किया बल्कि उसे पुन. अपने राज्य पर बैठने की आज्ञा दी है ।" मेरी मा खुशी से चीख उठी और उसने मुझे कलेजे से लगा लिया । उसने बाहर जाना चाहा पर सलीम ने रोक कर कहा, "ठहरो ! अभी तक मुझे अंगूठी नहीं मिली है ।" "ठीक है ।" कहकर मेरी मां अपने घुटनों के बल बैठ गई और मुझे

दोनों हाथों से ऊपर की तरफ उठा ईश्वर से इस तरह प्रार्थना करने लगी मानो मुझे उसके पास पहुंचाया चाहती है॥

यह कहती हुई हैदरी पुनः चुप हो गई क्योंकि उसे इतना उद्वेग हुआ कि वह पसीने से भर गई और उसके मुंह से आवाज निकलना कठिन हो गया। मौण्ट क्रीटो ने ठंढा पानी एक गिलास में उडेल कर उसे दिया और साथ ही मुलायम स्वर में जिसमे कुछ हुकूमत भी थी कहा, "हिम्मत करो।" हैदरी ने अपनी आंखें पोछी और कहने लगी—

इस बीच में हमलोगो की आखें उस अंधेरे में कुछ देखने योग्य होगई थीं और हमने उस खबर लाने वाले आदमी को पहिचान लिया था जो हमारा दोस्त था। सलीम ने भी उसे पहिचान लिया था पर वह नौजवान सिर्फ एक बात जानता था—अपने मालिक का हुक्म! उसने कहा, "तुम किसकी तरफ से आते हो?" आगन्तुक ने कहा, "अली की तरफ से।" सलीम बोला, "क्या तुम्हें कोई चीज सौंपी गई है?" वह बोला, "हा यह अगूठी!" इतना कह उसने अपना हाथ ऊंचा किया पर अंधेरे में कुछ दिखा नहीं इससे सलीम ने कहा— "तुम उसे वहा पर रख पीछे हट जाओ जिसमें मैं जाच लू, यहा से मैं ठीक देख नहीं सकता।" उस आदमी ने ऐसा ही किया और वह अंगूठी जमीन पर रख पीछे हट गया॥

ओह! हमलोगो के दिल उस वक्त किस तरह उछलने लगे थे! क्या वह चीज अगूठी ही थी? क्या वह पाशा ही की अँगूठी थी? सलीम अपनी मशाल लिये आगे बढा और उस अगूठी को उठा उसने गौर से देखा, इसके बाद उसे चूमते हुए बोला, "बेशक यह मेरे मालिक की ही अंगूठी है।" उसने मशाल जमीन पर फेंक दी और पैर से कुचल उसे बुझा दिया। यह देखते ही उस आगन्तुक ने एक खुशी की चीख मारी और ताली बजाई, खुरशेद के चार सिपाही वहा आ पहुचे और सलीम पाच तलवारो से छिद कर जमीन

पर गिर पडा। हरएक आदमी ने उसपर कारी हमला किया था और उसको मुर्दा पाने बाद वे खुशी से पागल होकर तहखाने में चारो तरफ कूदने और अशर्फियो की थैलियो को फाडने लगे॥

मेरी मा जो यह हाल देख भौचक सी हो गई थी अब कुछ होश में आई और मेरा हाथ पकडे हुए कई गुप्त राहो और सीढियो से जिसकी सिर्फ उसे ही खबर थी वह उस तहखाने के भीतर ही भीतर एक दूसरे कमरे में पहुची। जैसे ही उसका दर्वाजा खोल वह भीतर जाया चाहती थी कि उसे पाशा की आवाज सुनाई पडी और वह एक छेद की राह दूसरी तरफ देखने लगी, मुझे भी उस दर्वाजे का एक छोटा छेद मिल गया और मैं भी उधर का हाल देखने लगी। मेरे पिता बीचोबीच में खडे थे और सामने कुछ आदमी उन्हें एक कागज दिखा रहे थे। मेरे पिता ने पूछा, "तुमलोग क्या चाहते हो?" एक आदमी ने कहा, "हमलोग अपने बादशाह का हुक्म तुम्हें जताया चाहते हैं, यह फरमान देखते हो?" पाशा ने कहा, "हा" वह आदमी बोला, "तो इसे पढ़ो, इसमें तुम्हारा सिर काटने का हुक्म हुआ है॥"

मेरे पिता जोर से हँसे। उनकी हँसी इस समय बडी ही भयानक थी, साथ ही पिस्तौल की भी दो आवाज हुई जो उन्हीं ने छोडी थी। दो दुश्मन जमीन पर गिर गये मेरे पिता के पैर के पास कई गुलाम थे जो अब खड़े हो गये और बन्दूकें चलाने लगे—जवाब में दूसरी तरफ से भी गोलियें चलने लगीं और कमरा धूए से भर गया! ओह उस समय मेरे पिता का कैसा स्वरूप था, एक हाथ में कटार, दूसरे में पिस्तौल लिये—दुश्मनों की गोली खाते हुए जख्मी होकर भी वे दुश्मनो को डरावने मालूम पड रहे थे यहां तक कि उनकी सूरत देख कर कोई उनकी तरफ बढने की हिम्मत नही करता था। इसी समय पीछे की तरफ से भी गोलियें चलने और वह दर्वाजा फोड हम दोनों के चारो तरफ आकर गिरने लगी—दुश्मनो ने दूसरी तरफ से भी आ कर पाशा को घेर लिया था। मेरे पिता ने कड़क कर कहा—"सलीम! अपना काम पूरा करो!!" इसके जवाब में एक आवाज आई, "सलीम मारा गया और तुम भी अब चले!" इसके साथ ही भयानक आवाज आई और उस कमरे की सतह फट गई, दुश्मनो ने

बारूद लगा वह कमरा उड़ा दिया था, चारो तरफ आग ही आग फैल गई, जख्मियों और मरते हुओं की चिल्लाहट में बन्दूकों का शब्द छिपने लगा। चारो तरफ से आग की लपटो ने बढ़ कर मेरे पिता को घेर लिया। वे घबड़ा कर हटे मगर उसी समय दो बन्दूकों की आवाज हुई जिसके साथ ही भयानक स्वर से चीखने की आवाज मेरे कानो में पड़ी, इन गोलियो ने मेरे पिता को कारी चोट पहुंचाई थी और उन्हीं ने वह भयानक चीख मारी थी। वे गिरने लगे पर गिरते गिरते एक खिड़की का पल्ला थाम वे कुछ सम्हले। मेरी मा दरवाजे को जोर जोर से धक्का देने लगी कि जिसमे वह भी उनके साथ जाकर मर सके पर दर्वाजा अन्दर से बन्द था। पिता की रक्षा करने वाले करीब २ सभी गुलाम मारे जा चुके थे या उस भयानक आग की लपटो में पड़े तड़प रहे थे। इसी समय कमरे की छत ने जवाब दे दिया और अन्दर को धंस पड़ी, और चारो तरफ से भी दुश्मन अन्दर घुस गये और छुरे, तलवार, कटार और भालो से मेरे बेचारे पिता को टुकड़े टुकड़े करने लगे। मेरा सिर घूमने लगा और मैं बेहोश हो गई॥

हैदरी की बाहें दोनों बगल मे लटक गई, गर्दन एक तरफ को गिर गई और मुह से कलेजा कँपाने वाली एक आवाज निकली, बहुत ही संभव था कि वह बेहोश हो जाती पर काउण्ट ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए उसे दिलासा दिया और कहा—"शान्त हो शान्त हो बेटी! विश्वास रक्खो कि दुनिया मे एक ईश्वर भी है जो सब दगाबाजों को सजा देगा॥"

अलबर्ट हैदरी की हालत देख और यह भयानक दास्तान सुन घबड़ा गया, उसने काउण्ट की तरफ देख कर कहा, "मुझे अब अफसोस होता है कि क्यो मैंने यह जिक्र छेड उसके नाजुक कलेजे को चोट पहुचाई!!"

काउण्ट बोला—"नहीं नहीं उसका खयाल मत कीजिये, मेरी हैदरी बडी हिम्मत वाली है और कभी कभी तो उसे अपनी मुसीबतों का बयान करने में ही धीरज मिलता है॥"

हैदरी ने यह सुन कहा—"सो इसलिये कि उन्हें कहने से मुझे आपकी दया की याद आ जाती है॥"

अलबर्ट ने हैदरीकी तरफ विचित्र निगाह से देखा, वह जानना चाहता था कि हैदरी काउण्ट की बांदी क्योंकर हुई। हैदरी उसकी सूरत देख उसके मन का भाव समझ गई और अपने को चैतन्य कर ऊंची आवाज मे पुनः कहने लगी :—

जब हम दोनो होश में आये तो हमने अपने को खुरशेद के सामने पाया। मेरी मा रोकर बोली—"तुम मुझे मार डालो पर अली की विधवा की इज्जत न लो।" इसके जवाब में खुरशेद ने कहा, "यह प्रार्थना तुम उससे करो जो अब तुम्हारा मालिक है।" मेरी मा ने पूछा—"वह कौन है ?" खुरशेद ने इसपर उस आदमी की तरफ इशारा किया—यह वही फ्रान्सीसी अफसर था जिसने हमलोगो का सत्यानाश किया था!!

यह कहते हुए हैदरी की आंखों से भयानक गुस्से की चमक निकलने लगी। अलबर्ट ने पूछा, "तब तुम दोनों उसकी बादी हुईं ?" हैदरी ने कहा—

नहीं, उसकी यह हिम्मत नहीं हुई कि हमें रख सके, उसने हमें कुछ गुलामो के सौदागरों के हाथ बेच दिया। हम दोनो को समूचा ग्रीस पार करना पडा और अन्त में अधमुई हालत में एक दिन हम लोग बादशाही महल के फाटक पर पहुचे। उस समय फाटक पर हजारों आदमियो की भीड इकट्ठी थी पर हम दोनो को देख भीड ने

हमारे लिये रास्ता कर दिया, हमलोग चढे पर यकायक मेरी मा की निगाह फाटक के एक कगूरे पर पडी और वह एक चीख मार जमीन पर गिर गई । मैंने भी उधर देखा, कगूरे पर एक कटा हुआ सिर रक्खा था जिसके नीचे लिखा था—"यह अली तबलिन जनीना के पाशा का सिर है ॥"

मैं जार जार रोने और अपनी मा को उठाने की कोशिश करने लगी पर वह कहा ! वह तो मर चुकी थी। मैं गुलामो के बाजार में लाई गई जहा एक अमीर आरमेनियन ने मुझे खरीदा । उसने मेरे लिये पढाने वाले रक्खे, अच्छी तरह पढाया लिखाया और विद्याए सिखाई और जब मैं तेरह बरस की हुई तो उसने मुझे सुल्तान महमूद के हाथ बेच दिया ॥

काउण्ट०। जिसके हाथ से मैंने इसे वही पन्ना देकर खरीद लिया जिसके जोड का एक पत्थर मैंने खोखला कर अपनी हशीश की गोलियां रखने की शीशी बनाई है ॥

हैदरी ने काउण्ट का हाथ प्रेम और इज्जत से चूमते हुए कहा,"मेरे बड़े सौभाग्य थे कि मैं तुम्हारे ऐसे मालिक के हाथ पहुंची ॥"

अलबर्ट यह सब दास्तान सुन बिल्कुल भौंचक सा हो रहा था । मैरण्ट क्रीटो ने उससे कहा—"अपना कहवा खतम कीजिये, कथा समाप्त हो गई !!"

सातवां बयान।

जनीना की खबर।

फ्रान्सिस के अपने पिता की मौत का वह हाल सुन कर घबराए हुए चले जाने के थोडी ही देर बाद विलफोर्ट को उसकी एक चीठी मिली जिसमे लिखा था—

"आज मि० नोटीर विलफोर्ट द्वारा जो हाल मुझे मालूम हुआ है उससे अब हमारा आपका संबंध होना असम्भव है। मुझे और भी आश्चर्य इस बात पर होता है कि जब आप (जैसा कि मुझे गुमान होता है) उस भयानक भेद को जानते थे तो आपने यह सम्बंध करने की कोशिश क्यों की॥"

इस चीठी ने विलफोर्ट के घमण्ड पर भारी धक्का मारा और उसे बदहोश सा कर दिया। उसे यह कभी विश्वास नही था कि इस शादी के तोड़ने की नीयत से उसके पिता यहां तक कर गुजरेंगे और वह सुस्त सा हो कर अपने कमरे में बैठा तरह २ की बातें सोचने लगा। इसी समय उसकी स्त्री वहां पहुंची जो अभी तक नीचे के कमरे में नोटरी और दूसरे मेहमानों के साथ बैठी बैठी घबरा कर यह देखने के लिये उठी थी कि आखिर मामला क्या है और वेलेंटिन विलफोर्ट और फ्रान्सिस वगैरह मि० नोटीर के पास क्या कर रहे हैं। विलफोर्ट की सूरत देख के उसका मन खटका और वह सब हाल जानने के लिये उतावली हो उठी मगर विलफोर्ट ने

सिवाय इसके और कुछ न कहा कि "हमलोगों के बीच में कुछ बातें ऐसी हुईं जिनसे यह शादी टूट गई है, जो लोग आये हुए हैं उनसे जाने को कह दो।" मैडम ने असल मामला जानने की बहुत कोशिश की पर जब विलफोर्ट ने कुछ न बताया तो लाचार वह नीचे आईं। मेहमानों से उसने नहीं कहा कि शादी टूट गई बल्कि यह कह दिया कि मि० नोटीर को यकायक मूर्छा आ गई इससे आज का काम दो तीन दिन के बाद होगा। इस खबर पर आश्चर्य करते हुए जब लोग चले गये तो मैडम उठीं और मि० नोटीर के कमरे में पहुचीं, उसे गुमान था कि शायद वेलेण्टिन वहीं होगी पर वेलेण्टिन वहां कहां, वह तो अपने दादा से छुट्टी ले बागीचे वाले फाटक पर आ पहुची थी और इस समय मारल के साथ घुल घुल कर बातें कर रही थी जिसे इस खबर ने कि दादा नोटीर की मदद से यह शादी हमेशे के लिये टूट गई, खुशी के मारे पागल कर दिया था॥

मैडम विलफोर्ट को अपने कमरे से आते देख नोटीर को बड़ा ताज्जुब हुआ और उसने उसके ऊपर कड़ाई की वही नजर डाली जो वह खास तैार पर मैडम ही के लिये रखता था पर मैडम ने उसपर खयाल न किया और अदब से कहा, "आपसे यह कहना तो फजूल ही है कि वेलेण्टिन की शादी टूट गई क्यांेकि उसका सूत्रपात तो यहीं से हुआ पर एक बात मैं कहा चाहती हूं जिसकी शायद आपको खबर न होगी॥"

बूढ़े ने सवाल की नजर डाली, मैडम बोलीं, "वह यह कि यह शादी मेरी मर्जी के भी बिल्कुल खिलाफ थी और बिना मेरी रजामन्दी के तै हुई थी॥"

नौटीर की आंखों से प्रगट हुआ कि वह इस बात का मतलब समझा चाहता है पर मैडम कहने लगी— "अस्तु अब जब यह शादी जो आपको इतनी नापसन्द थी टूट गई है तो मुझे आप से एक ऐसी प्रार्थना करनी है जिसे न तो मि० विलफोर्ट और न वेलेण्टिन ही आप से कर सकती थी। वह प्रार्थना यह है कि इस शादी के कारण ही रञ्ज होकर आपने अपनी वसीयत वेलेण्टिन के बर्खिलाफ की थी, अब जब रंज का सबब जाता रहा तो आपको पुनः वेलेण्टिन को अपना वारिस बनाना मुनासिब है॥"

बूढ़े की आंखों से कुछ सन्देह सा झलका। वह अवश्य यह समझने की कोशिश कर रहा था कि मैडम का असल मतलब इस बात से क्या है॥

मैडम०। क्या मैं इस बात की आशा करूं कि मेरी प्रार्थना आपको स्वीकार होगी?

बूढ़ा०। हां॥

मैडम०। और वेलेण्टिन को आप पुनः अपना वारिस बनावेंगे?

बूढ़ा०। हां॥

मैडम ने बड़ी खुशी और कृतज्ञता जाहिर करते हुए नौटीर से बिदा मांगी और कमरे के बाहर चली

आई, इसके दूसरे ही दिन मि० नैाटीर ने अपने नोटरी के बुलवाया—पहिले का वसीयतनामा रद्दी कराया और दूसरा लिखा कर वेलेण्टिन के इस शर्त पर अपना वारिस बनाया कि वह कभी उनसे अलग न की जाय। अस्तु अब वेलेण्टिन केवल अपने नाना और नानी के जायदाद की मालिक ही नही रही बल्कि अपने दादा की दौलत की भी पुनः मालिक हो गई॥

उधर काउण्ट की ज़ुबानी दङ्गली का सँदेसा सुन काउण्ट मारकर्फ (अलबर्ट के पिता) ने दङ्गली से मिलने का निश्चय किया। उसने अपनी सब से भड़कदार पोशाक पहिनी और सब तमगे वगैरह लगाये दङ्गली के घर पहुंचा। उस समय दङ्गली अपने माहवारी हिसाब का जोड़ लगा रहा था अस्तु यह कोई अच्छा मैाका नही था। मारकर्फ को देखते ही वह अकड़ कर बैठ गया पर मारकर्फ ने इसका कुछ खयाल न कर तुरत ही वह बात शुरू कर दी जिसके लिये वह आया था और कहा, "बैरन ! लो मैं आ पहुंचा, अब वह सब मामला तै हो जाना चाहिये जिसके बांधनू हमलोग बहुत दिन से बांध रहे थे॥"

मारकर्फ को आशा थी कि उसकी बात सुनते ही दङ्गली का चेहरा खुशी से खिल उठेगा पर उसके विपरीत दङ्गली के कुछ कड़ा और ठण्ढा पा उसे ताज्जुब हुआ, खास कर तब जब कि उसने ऐसा भाव दिखाते हुए मानों काउण्ट का मतलब ही नही समझा उससे

पूछा, "आप किस विषय मे कह रहे हैं?"

मारकर्फ ने हँस कर कहा, "ओह मैं देखता हू कि आप नियमानुसार मेरे मुंह से पूरी तरह पर सब बात कहलाया चाहते हैं (उठकर और बैरन को सलाम करके) बैरन महाशय! मैं आपकी लडकी मिस यूजिनी को अपने लडके वाई-काउएट अलबर्ट मारकर्फ के लिये मांगता हूं॥"

इस तरह पर भी दङ्गली खुश न हुआ बल्कि उसके माथे पर कुछ बल पड गये और उसने रुकते रुकते कहा, "काउएट महाशय! इस मामले पर बिना विचार किये मैं कोई जवाब नही दे सकता।"

मारकर्फ ने और भी ताज्जुब के साथ कहा, "विचार करके! क्या आपको उन आठ वर्षों में इसपर विचार करने का मौका नहीं मिला जब से कि इस शादी का विचार हमलोग कर रहे हैं?"

दङ्गली०। काउएट महाशय! इस संसार में ऐसी घटनाए हुआ करती हैं जिनके कारण हमें अपने विचार नित्य बदलने पडते हैं। इस पिछले महीने मे कुछ ऐसी बातें हो गई है जिनके कारण

मार०। माफ कीजियेगा, पर हमलोग कोई नाटक नही कर रहे हैं आप कृपा कर साफ साफ अपना मतलब बताइये। क्या आपने काउएट आफ मौएट क्रीटो द्वारा मुझे कोई संदेसा कहलाया था?

दङ्गली चुप रहा, मारकर्फ बोला—"उन्हीं का

इशारा पा इस समय मैं यहां हाजिर हुआ हू ॥"

फिर भी दङ्गली चुप रहा, अब मारकर्फ ने कुछ कड़े स्वर में कहा—"तो क्या आपने इतनी जल्दी अपना विचार बदल दिया या आप मेरी बेइज्जती करने पर उतारू हुए हैं ?"

दङ्गली ने देखा कि अब अगर वह अपना ढङ्ग नही बदलेगा तो यह मामला ऐसा रुख पकड़ेगा जो उसके अनुकूल न होगा अस्तु उसने कहा, "काउण्ट महाशय! मेरे ढग पर आपको जरूर ताज्जुब होता होगा पर मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि मुझे मजबूरन ऐसा करना पड़ता है ॥"

मारकर्फ०। ओह यह सब फजूल बातें हैं। यह सब आप अपने किसी मामूली मुलाकाती से कह सकते हैं पर काउण्ट मारकर्फ को यह जवाब सन्तोष नही दे सकता, आपको अपनी बात का सबब बताना होगा ॥

दंगली डरपोक था मगर अपने को ऐसा जाहिर नही किया चाहता था साथ ही मारकर्फ ने अब जो कड़ाई का ढग अख्तियार किया था उससे उसे चोट भी लगी थी, उसने जवाब दिया, "जरूर कोई भारी सबब होगा तभी तो मैं ऐसा कह रहा हूं ॥"

मारकर्फ०। तो आखिर वह सबब क्या है ?

दंगली०। उसे बयान करना बड़ा मुश्किल है ॥

मारकर्फ०। मगर मैं आपकी मुश्किल का कोई सबब नही देखता, खैर तो क्या मैं यह समझ लू कि आप मेरे

घराने से सम्बन्ध करने से इन्कार करते हैं?

दंगली०। नही नहीं इन्कार नहीं, सिर्फ कुछ समय के लिये स्थगित रक्खा चाहता हूं॥

मार०। श्रैार श्राप समझते हैं कि मैं श्रापकी सब फजूल वाहियात बातें के नम्रतापूर्वक स्वीकार करता रहूंगा श्रैार इस बात की राह देखा करूंगा कि श्राप कब मेरे ऊपर मेहरबान होंगे॥

दंगली०। श्रगर श्राप कुछ दिन ठहर नहीं सकते हैं तो ऐसी हालत मे हमे यही समझ लेना पड़ेगा कि यह जिक्र कभी उठा ही नहीं था॥

मारकर्फ ने श्रपने क्षण क्षण में बढ़ते जाने वाले क्रोध के दबाने के लिये होठें के इतना कसके दांतें से दबाया कि खून निकल श्राया। पर इस समय श्रैार ऐसी हालत मे क्रोध करने से श्रपनी ही हँसी होगी यह सोच उसने कुछ कहा नहीं श्रैार चुपचाप उठकर दर्वाजे की तरफ बढ़ा पर दे चार कदम जाने बाद कुछ समझ कर रुका, उसके माथे पर एक तरह की छाया सी श्रा पड़ी जिसने उसके घमण्ड श्रैार गुस्से के हटा कुछ घबराहट के चिन्ह छोड़ दिये श्रैार उसने दंगली के पास जा धीमी श्रावाज में कहा—"मेरे प्रिय दंगली! हम दोनें एक दूसरे के बहुत दिन से जानते हैं श्रैार इसलिये एक दूसरे के मामले मे कुछ तरह भी दे सकते हैं श्रस्तु क्या तुम बता नही सकते कि मेरे लड़के से श्रपनी लड़की की शादी करने तुम्हें क्या रुकावट है?"

मारकर्फ के कुछ दबा और ढीला पाते ही दंगली फिर अकड गया और अपने पहिले ढंग से बोला, "मुझे वाई कौन्ट के बर्खिलाफ कोई कारण नही मिला है ॥"

मारकर्फ०। (कुछ पीला हो कर) तब किस के बर्खिलाफ?

काउण्ट के चेहरे का भाव दंगली की तेज आंखें से छिपा न था, उसने और भी धृष्टता की नजर काउण्ट पर डाली और कहा, "अगर मैं इस मामले मे और कुछ न कहू तो शायद आपको ज्यादा संतोष होगा ॥"

एक तरह की कपकपी-जो अवश्य गुस्से के कारण थी, काउण्ट के सारे बदन पर दौड गई,जिसने बडी मुश्किल से अपने को सम्हाल कर कहा, तो क्या मेरी स्त्री से आप नाराज हैं, या मेरे द्रव्य की कमी से खफा हैं, अथवा मेरे विचार आपके स्वतन्त्र विचारों से नही मिलते इस कारण आप रुष्ट हैं?

दंगली०। नही काउण्ट अगर इनमे से कोई बात होती तो दोषी मैं था क्योंकि यह सब मैं शादी की बात उठने के पहिले से जानता था। नही, सबब कुछ दूसरा ही है जिसे इस समय उठाना व्यर्थ है, कुछ दिन सब्र कीजिये, अभी जल्दी ही क्या है, मेरी लड़की सत्रह वर्ष की है आपका लडका इक्कीस वर्ष का-अस्तु हमलोग ठहर सकते हैं और इस बीच में बहुत सी बातें ऐसी हो सकती हैं जिनसे सब मामला एक दम बदल सकता है, शाम के अंधेरे मे जो चीज काली और डरावनी मालूम

होती है वही सुबह के उजाले में सुन्दर लगती है। कभी कभी एक ही दिन में बुरे से बुरे अभियोग मिट जाते हैं॥

काउण्ट०। (पीला हो कर) अभियोग! क्या कोई मेरी शिकायत करता था?

दंगली०। मैं कह चुका हूं कि इस मामले पर और बहस करना मुझे पसंद नहीं॥

काउण्ट०। अच्छा तो मैं जाता हूं॥

यह कह गुस्से से होंठ चबाता मारकर्फ कमरे के बाहर चला गया॥

उस दिन शामको कई दोस्तों के बीच में बहुत देर तक कुमेटी होती रही और प्रिन्स केवेलकंटी ने सब के बाद महाजन का मकान छोड़ा॥

दूसरे दिन सवेरे उठने के साथ ही दंगली ने अखबार मांगे। कई अखबार नौकर ने ला कर दिये, दंगली ने और सभों को फेक कर 'इम्पार्शल' नामक अखबार खोला जिसका ब्यूशेम्प संपादक था। जल्दी जल्दी पन्ने उलटते हुए वह उस जगह पहुंचा जहां खबरें दी हुई थीं। उस जगह एक खबर थी जिसमें 'जनीना से एक संवाद दाता लिखता है' आदि दस बारह लाइनें थीं, दंगली बड़ी खुशी खुशी उसे पढ़ गया और तब मन ही मन बोला? "बस ठीक है कर्नल फरनन्द के विषय में यह छोटी खबर अब मुझे काउण्ट मारकर्फ को सब सबब बताने के तरद्दुद से बचावेगी॥"

उसी समय अर्थात् करीब नौ बजे के लगभग अलबर्ट

जिसकी सूरत से घबराहट और परेशानी जाहिर हो रही थी काउण्ट मौन्ट क्रीटो के घर पर पहुंचा। दरियाफ़ करने पर मालूम हुआ कि आधा घण्टा हुआ काउण्ट कहीं बाहर चले गये हैं। उसे इस जवाब से सन्तोष न हुआ और उसने बैप्टिस्टिन को बुलवाया जिसके आते ही उसने जल्दी से पूछा, "बैप्टिस्टिन! क्या काउण्ट सचमुच घर में नहीं हैं?"

बैप्टिस्टिन ने अदब से कहा, "जी हां आधा घंटा हुआ वे कहीं बाहर गये हैं॥"

अल०। क्या बहुत देर में लौटेंगे?

बैप्टिस्टिन०। जी, नहीं ऐसा तो शायद न करें क्योंकि उन्होंने दस बजे भोजन करने को कहा है॥

अलबर्ट०। अच्छा तो मैं जाता हूं कुछ देर तक इधर उधर घूम फिर कर दस बजे फिर लौटूंगा, इस बीच में अगर काउण्ट आजाय तो मेरी तरफ से प्रार्थना करना कि बिना मुझसे मिले न जायँ॥

बैप्टिस्टिन०। बहुत अच्छा मैं जरूर कह दूंगा॥

अलबर्ट ने अपनी गाडी वही छोडी और पैदल टहलता हुआ चला--कुछ ही दूर गया होगा कि एक अखाडे के सामने उसने काउण्ट की जोडी खडी देखी, इस अखाडे में लोग बन्दूक चलाने का अभ्यास करने आते थे अस्तु शायद काउण्ट भी इसी लिये यहां आया हो यह सोच उसने कोचवान के पास जा पूछा, "क्या काउण्ट महाशय भीतर अखाडे में हैं?" कोचवान के

जी हां कहने पर वह भी भीतर चला॥

अलबर्ट इस जगह बराबर आया करता था अस्तु अन्दर घुस वह उस कमरे में जाने लगा जिसमें लोग निशाने बाजी करते थे पर दर्वाजे पर बैठे दरवान ने रोक कर कहा, "जरासा ठहर जाइये" उसने ताज्जुब से पूछा "क्यों फिलिप क्या है?" नौकर ने कहा, "भीतर जो महाशय हैं उन्हें अकेले ही मे निशाने बाजी करना अच्छा लगता है। उसके सामने और कोई नहीं रहता॥"

अलबर्ट०। तो उसकी पिस्तौल कौन भरता है?

फिलिप०। उसका हबशी गुलाम॥

अलबर्ट०। ओह अली! तब तो ठीक काउएट ही भीतर है॥

फिलिप०। क्या आप उन्हें जानते हैं?

अलबर्ट०। हां बहुत अच्छी तरह, मैं उन्हीं को खोजता हुआ यहां आया हूं॥

फिलिप०। तब दूसरी बात है, मैं अभी जाकर आपकी खबर करता हूं॥

यह कहता हुआ फिलिप अन्दर गया और कुछही देर बाद मैाण्ट क्रीटो दर्वाजे पर नजर आया, उसे देखते ही अलबर्ट ने आगे बढ़ कर कहा, "माफ कीजियेगा काउएट एक बहुत जरूरी काम होने के सबब से मुझे आपको खोजते हुए यहां आना पड़ा, मगर यह मैं कहे देता हूं कि इसमें आपके नौकरों की कोई गलती

नही है बल्कि मैं खुद यह सुन कर कि आप दस बजे भोजन के लिये लैाटियेगा बीचका समय इधर उधर बिताने के खयाल से इधर चला और दर्वाजे पर आप की गाडी देख यहा चला आया॥

काउएट०। तब तो अवश्य ही आप मेरे साथ भोजन करेंगे ?

अलवर्ट०। नही, माफ कीजिये, इस समय भोजन की बात मुझे नही सूझती मैं किसी दूसरी ही दु:खदाई बात के फेर में हूं॥

काउएट०। आखिर आप का मतलब क्या है !!

अलबर्ट०। आज मैं डूयेल लडने वाला हू ?

काउएट०। डूयेल लडने वाले हैं ? क्यों ?

अलवर्ट०। अपनी इज्जत के लिये॥

काउएट०। इज्जत के लिये, तब तो कुछ टेढ़ा मामला मालूम होता है ?

अलवर्ट०। बेशक ! और इसी से मैं आपके पास आया हूं जिसमे आपको अपना साथी बना सकूं॥

काउएट०। यह विषय यहां बहस करने लायक नही है, घर चलने पर बाते होगी। अली ! पानी लाओ॥

अली पानी लाया और काउएट हाथ धोने चला गया। इस बीच में फिलिप अलबर्ट के पास आया और दबे स्वर में बोला, "भीतर आइये एक चीज दिखाऊं !" अलबर्ट भीतर गया और सामने की दीवार पर जिधर निशाना रहता था निगाह उठाते ही उसे ऐसा मालूम

हुआ मानों ताशका पूरा सेट दीवार से लगा हुआ हो क्योंकि अलवर्ट को इक्के से दहला तक वहां नजर आया। इतने ही में काउएट वहां आया जिससे अलवर्ट ने पूछा, "आप यहां ताश खेलने की तैयारी कर रहे थे?"

काउएट०। नहीं मैं ताश बना रहा था॥

अलबर्ट०। सो क्या?

काउएट०। आपके सामने सिर्फ इक्के और दुक्के हैं मगर मेरी गोलियों ने उन्हें तिक्का पंजा सत्ता अट्ठा नहला और दहला बना दिया है॥

अलबर्ट ताज्जुब करता हुआ नजदीक गया और तब उसे मालूम हुआ कि काउएट का कहना ठीक है काउएट की गोलियों ने उन इक्के दुक्कियों को ठीक उसी जगह से छेद के तिक्का पंजा आदि बनाया था जहां कि वास्तव में उसकी बूटियें होतीं। अलबर्ट ने वहां दे तीन चिड़ियायें भी गिरी हुई देखी जो मैात की मारी काउएट की पिस्तौल की पहुंच के अन्दर आई थीं। काउएट की निशाने बाजी पर ताज्जुब करता हुआ वह उसके साथ लैाटा, दोनों काउएट के घर पर आये। काउएट उसे अपनी बैठक में ले गया और तब बोला- "अच्छा अब शान्ति के साथ बताओ क्या मामला है! तुम किससे लड़ा चाहते हो?"

अलबर्ट०। ब्यूशेम्प के साथ॥

काउएट०। वह तुम्हारे दोस्तों में से है?

अल०। हां, दोस्तों ही के साथ तो लोग लड़ते हैं॥

काउएट०। लड़ाई का सबब ? व्यूशेम्प ने क्या किया है ?

अलबर्ट०। कल उसके अखबार में एक खबर छपी है . मगर ठहरिये आप खुद ही पढ़ ले॥

अलबर्ट ने अखबार काउएट के हाथ में दिया और एक जगह पढने को कहा, काउएट पढने लगा:—

"जनीना से एक संवाद दाता लिखता है–हमलोगों को एक ऐसी खबर मालूम हुई है जिसका अभी तक किसी को पता न था। वह किला जो शहर की रक्षा के लिये था तुर्कों के हाथ मे एक फ्रांसीसी अफसर फरनन्द ने दे दिया था जिस पर अली तबलिन को बड़ा विश्वास था॥"

काउएट०। (पढ़ कर) अच्छा तो इसमें आप को अपने बर्खिलाफ क्या मिला है ?

अलबर्ट०। मुझे क्या मिला है ?

काउएट०। हां, यानी जनीना का किला अगर किसी फ्रांसीसी अफसरने तुर्कों को देही दिया तो आप को क्या ?

अलबर्ट०। मेरे पिता का नाम फरनन्द है॥

काउएट०। क्या आपके पिता अली तबलिन के नौकर थे ?

अलबर्ट०। हां, यानी वे ग्रीकों की स्वतन्त्रता के लिये लडे थे इसी से यह बदनामी उठी है॥

काउएट०। ओह यह सब फजूल बात है जरा कायदे

की बात करो ॥

अलबर्ट० । हां मैं वैसाही किया चाहता हूं ॥

काउण्ट० । भला आप सोचिये तो सही कि जनीना वाला मामला हुए आज बीसों बरस हो गये अब किसको इस बात की फिक्र पड़ी है कि वह फरनन्द और आपके पिता एक ही हैं या दो ॥

अलबर्ट० । इसीसे तो उन दुष्टों का पाजीपन जाहिर होता है । उन सभों ने इतना समय बीत जाने दिया है और अब यकायक यह बदनामी का ठीकरा मेरे पिता के ऊपर फोड़ा है जो ऐसे बहादुर और सच्चे सिपाही हैं। मैं व्यूशेम्प के पास जाकर उसे इस खबर का प्रतिवाद करने को कहूंगा ।

काउण्ट० । वह कभी नही करेगा ॥

अलबर्ट० । तो मैं लड़ूंगा ॥

काउण्ट० । अगर वह कह दे कि फरनन्द नाम के पचासों फ्रान्सीसी अफसर हैं तुम्हारे पिता ही का नाम तो फरनन्द नही है तब ?

अलबर्ट० । मैं ऐसी बातें नहीं सुनूंगा ॥

काउण्ट० । तो गलती करोगे ॥

अलबर्ट० । यानी आप वह मदद करने से इन्कार करते हैं जो आपसे मैं चाहता हूं ॥

काउण्ट० । डूयेल के बारे मे मेरी जो राय है वह तुम जानते ही हो ॥

अलबर्ट० । मगर उस राय के बखिलाफ आज मैंने

आपको निशानेबाजी करते हुए पाया था!!

काउण्ट०। इसका सबब यह है मेरे दोस्त कि अगर किसी की किस्मत ने उसको बेवकूफों के बीच में पटक दिया है तो उसे बेवकूफी ही सीखना चाहिये। शायद मुझे किसी दिन किसी ऐसे कुन्दजेहन लौंडे से वास्ता पड जाय जिसे मुझसे झगडा खरीदने का शौक हो और जो इसीसे मेरी बेइज्जती कर डाले—तो ऐसी हालत में मुझे उसे मारना ही पड़ेगा॥

अल०। तो क्या आप उससे लड़ेंगे?

का०। जरूर॥

अल०। तब फिर मुझे क्यों लडने से रोकते हैं?

का०। मैं रोकता नहीं, सिर्फ यही कहता हूं कि खूब सोच समझ कर तब कुछ करो॥

अल०। क्या उसने समझ बूझ कर मेरे पिता की बेइज्जती की थी!!

का०। अगर मान लिया जाय कि उसका लिखना सही हो?

अलबर्ट०। लडके को अपने पिता के बारे मे ऐसा सोचना ही नहीं चाहिये॥

का०। आजकल के जमाने मे बहुत कुछ सोचना पडता है॥

अल०। यह जमाने की गलती है॥

काउण्ट०। तो क्या तुम जमाने को दुरुस्त करने का बीडा उठाते हो?

अल० । खास अपने हक में 'हां' ॥

का० । सचमुच तुम बड़े सख़्त हो ?

अल० । हां मैं जानता हूं ॥

का० । तो क्या तुम किसी की राय नहीं मानोगे !

अलवर्ट० । अगर वह किसी दोस्त की हो तो क्यों नहीं ॥

का० । तो मुझे दोस्त समझते हो ?

अल० । जरूर ॥

का० । तो फिर व्यूशैम्प से लड़ने जाने के पहिले इस मामले का कुछ और पता लगाओ ॥

अल० । किससे ?

का० । किसी से—हैदरी से यदि इच्छा हो ॥

अलवर्ट० । ओह इस मामले में किसी औरत को घसीटने से क्या फायदा ?-वह क्या कह सकती है ?

का० । शायद वह कह सके कि तुम्हारे पिता को अली तबलिन और जनीना के मामले में कोई दखल नहीं था या अगर कुछ था भी तो

अल० । मेरे दोस्त मैं कह चुका हूं कि मैं ऐसी बात सोचूंगा भी नहीं ॥

का० । तब तुम पता पाने का यह रास्ता नापसन्द करते हो ?

अल० । बेशक ॥

का० । अच्छा एक बात और है ॥

अल० । क्या ?

का०। तुम ब्यूशेम्प के पास जाओ मगर अपने साथ और किसी को मत ले जाओ ॥

अलबर्ट०। सो क्यों ? ऐसा तो कायदे के खिलाफ होगा ॥

का०। ऐसा करने से मामला सिर्फ तुम्हारे और ब्यूशेम्प के बीच तक ही रहेगा। अगर ब्यूशेम्प ने अपना लिखना वापस लिया तो ठीक ही है तुम्हारा सन्तोष हो जायगा और उसके घमण्ड पर धक्का नहीं लगेगा और अगर उसने इन्कार किया तब तुम अपने इस भेद मे दो अजनबियो को शामिल कर सकते हो ॥

अल०। वे दोनो अजनबी नही दोस्त ही होगे ॥*

का०। पर आज के दोस्त ही कल के दुश्मन हो जाते हैं जैसे ब्यूशेम्प। इसी से मैं कहता हूं कि अभी अकेले ही उसके पास जाओ और देखो वह क्या कहता है फिर पीछे जैसा जी मे आवे करना॥

अलबर्ट०। अच्छा मैं ऐसा ही करूंगा पर यदि सब कुछ करने पर भी अन्त में लडना ही पड़ा तो क्या आप मेरे सेकेण्ड होगे ?

का०। मेरे दोस्त ! मैं और सब तरह पर तुम्हारी सेवा के लिये हाजिर हू जैसा कि तुम खुद जानते हो पर इस मामले में लाचार हू ॥

* डूयेल लडने का कायदा है कि दो दोस्तों की मारफत डूयेल का पैगाम भेजा जाता है और उन्हीं के सामने लडा जाता है। ये लोग 'सेकेण्ड' कहलाते हैं ॥

अल० । क्यो ?

का० । यह फिर कभी तुम्हें मालूम हो जायगा पर इस बीच मे न पूछो ॥

अल० । खैर मेरे दोस्त फ्रान्सिस और शेटू रेनाड इस काम को कर देंगे ॥

का० । हां वे दोनों ठीक होगे ॥

अल० । अच्छा अगर मैं लड़ूं तो आप कम से कम पिस्तौल या तलवार चलाने के कुछ हुनर तो मुझे बतावेंगे या वह भी नहीं ?

का० । नहीं उसके लिये भी माफ करो ॥

अलबर्ट० । आप भी कैसे विचित्र आदमी हैं ? क्या आप मेरे मामले में किसी तरह का दखल ही नही देंगे ?

का० । ठीक कहते हो मैं ऐसा ही किया चाहता हूं ॥

अल० । खैर तो मैं इस मामले में फिर और कुछ न कहूंगा, अच्छा बन्दगी ॥

मारकर्फ ने अपनी टोपी उठा ली और कमरे के बाहर निकल गया, दर्वाजे पर उसकी गाडी खडी थी जिसपर चढ़ वह अपने क्रोध को पचाता हुआ ब्यूशेम्प के घर पर पहुंचा । वह इस समय अपने दफ़्तर में बैठा हुआ काम कर रहा था और जब नौकर ने अलबर्ट का नाम लिया तो उसको ऐसे बेमौके आते देख उसे बड़ा ताज्जुब हुआ और उसने अलबर्ट से जो बेदर्दी के साथ अखबारों और कागजों को कुचलता मसलता उसकी तरफ बढ़ रहा था कहा, "अरे तुम इस वक्त ! मगर हैं

यह तुम्हें हो क्या गया है? पागल तो नहीं हो गये हो? कहीं जगह पाओ तो बैठ जाओ। देखो उस करोटन के पास एक कुर्सी है जिसकी पत्तियें देखकर ही मुझे याद आया करता है कि इस दुनिया में कागज के पत्तों के अलावा और भी पत्ते होते हैं॥"

अलवर्ट०। मैं तुम्हारे अखबार के बारे में कुछ कहने आया हूं॥

ब्यूशेम्प०। तुम? सो क्या?

अल०। मैं चाहता हू कि एक बात जो उसमें कही गई है वापस ली जाय॥

ब्यूशेम्प०। तुम किसके बारे में कह रहे हो? मगर बैठ तो जाओ!!

अल०। धन्यवाद, माफ कीजिये!!

ब्यूशेम्प०। वह बात किस तरह की है जिसने तुम्हें रञ्ज कर दिया है?

अलवर्ट०। उससे मेरे एक रिश्तेदार की इज्जत पर धब्बा लगता है॥

ब्यू०। (ताज्जुब से) ऐसा! नहीं नहीं, तुम गलती करते हो!!

अल०। वह जनीना के बारे में है॥

ब्यूशेम्प०। जनीना?

अल०। हां, तुम उससे बिल्कुल अनजान मालूम होते हो?

ब्यूशेम्प०। हां भाई अपनी कसम मुझे कुछ खबर

नहीं ! बैपटिस्ट ! कल का अखबार तो मुझे दो !!

अल०। यह लो मैं अपने साथ लाया हूं॥

व्यूशेम्प ने कागज ले लिया और पढ़ने लगा, "एक सम्वाद दाता जनीना से लिखता . . ." जब वह पढ़ चुका तो अलबर्ट बोला, "देखो, कैसी तरद्दुद की बात है?"

व्यूशेम्प०। यह फरनन्द क्या तुम्हारा कोई रिश्तेदार है?

अलबर्ट०। (सिर नीचा करके) हां॥

व्यूशेम्प०। (मुलायमियत से) तो अब तुम क्या चाहते हो?

अलबर्ट०। तुम इसका प्रतिवाद करो॥

व्यूशेम्प ने ऐसी निगाह अलबर्ट पर डाली जिसमें दया भरी हुई थी, और कहा, "ठहरो, यह मामला सहज नहीं मालूम होता। प्रतिवाद कोई मामूली बात नहीं है। बैठ जाओ, मैं इसे फिर से पढ़ता हूं॥"

अलबर्ट बैठ गया और व्यूशेम्प पहिले से भी ज्यादा ध्यान के साथ उस खबर को फिर पढ़ गया। अलबर्ट ने कहा, "तुमने देखा! मेरे एक रिश्तेदार की बेइज्जती की गई है और मैं इसका प्रतिवाद कराऊंगा॥"

अलबर्ट ने इसे इतनी कड़ाई के साथ कहा कि व्यूशेम्प को कुछ बुरा लगा, उसने कहा—"तुम प्रतिवाद कराओगे!!"

अलबर्ट बोला—"हां तुम मेरे दोस्त हो और मेरे

स्वभाव के जानते हो, मैंने ऐसा करने का निश्चय कर लिया है और उसे पूरा करके ही छोड़ूंगा॥"

व्यू०। अगर मैं तुम्हारा दोस्त होता तो तुम्हारा इस समय का ढङ्ग मुझे वह भूल जाने पर मजबूर करता! पर ठहरो, हमलोगों को रञ्ज मानने की जरूरत नही है, कम से कम अभी नही—तुम बेचैन और घवडाये हुए हो। बताओ यह फरनन्द तुम्हारा कौन है?

अलवर्ट०। वह मेरे पिता 'फरनन्द मडेगू काउण्ट मारकर्फ' हैं जो कि एक पुराने और बीसों लड़ाई लडे हुए सिपाही हैं और जिनके इज्जतदार जख्मो के दाग ये पाजी लोग अब नल के कीचड उछाल कर छिपाया चाहते हैं!!

व्यू०। क्या वे तुम्हारे पिता हैं? तब दूसरी बात है और तुम्हारा तरद्दुद करना ठीक है। अच्छा मैं इसे फिर पढता हूं॥

उसने तीसरी दफे और हर एक शब्द को तौलते हुए उस खबर को पढा और कहा—"मगर इस फरनन्द से यह तो कहीं जाहिर नही होता कि वह तुम्हारे पिता हैं॥"

अल०। नहीं, मगर दूसरे लोग तो यह समझ लेगे न, और इसी से मैं इसे हटवाऊंगा ही॥

"हटवाऊंगा ही" सुनकर व्यूशेम्प ने अपनी निगाह इस नौजवान के चेहरे की तरफ उठाई और तब फिर नीची कर कुछ सोचने लगा। अलवर्ट ने अपने

बढ़ते हुए गुस्से को दबाते हुए कहा, "तुम इस बात का प्रतिवाद करोगे ?"

व्यूशेम्प० । हां ॥

अलबर्ट० । अभी ?

व्यूशेम्प० । जब मुझे विश्वास हो जायगा कि यह गलत है ॥

अलबर्ट० । क्या ?

व्यूशेम्प० । मैं इस मामले की जांच करूंगा ॥

अल० । मगर इसमे जांच करने की क्या बात है ? अगर तुम समझते हो कि यह मेरे पिता के बारे में नही है तो वैसा कहो, अगर यह समझते हो कि वही है तो वैसा कहो ॥

व्यूशेम्प ने एक विचित्र मुस्कुराहट के साथ अलबर्ट की तरफ देखा, इसके बाद कहा—"सुनिये महाशय ! आपकी अजूल फजूल बातें मैं आधे घण्टे से सुन रहा हूं । क्या मैं उनका यह अर्थ लगाऊं कि आप मुझ से चाहे जैसे हो अपना सन्तोष कराया ही चाहते हैं ?"

अलबर्ट०। हां अगर आप उस खबर को काटें नही तो ॥

व्यूशेम्प० । ठहरिये अलबर्ट मंडेगू वाई काउण्ट मारकर्फ ! कृपा कर मेरे सामने धमकी की बाते न निकालिये जो मै अपने दुश्मनों से कभी नहीं सुनता और दोस्तों से और भी कम सुना चाहता हू । आप चाहते कि मैं कर्नल फरनन्द के बारे की वह खबर काट दू जिसके

बारे में मैं सच कहता हूं कि मुझे कोई खबर नहीं थी॥

अलवर्ट०। बेशक॥

ब्यू०। और अगर मैं इन्कार करूं तो? लडेंगे?

अलवर्ट०। हां॥

ब्यू०। अच्छा तो मेरा जवाब सुनिये। उस खबर को मैंने नहीं लिखा न मुझे उसके छपने की खबर हुई मगर आपने मेरा ध्यान उसकी तरफ दिलाया है अस्तु वह तब तक बनी रहेगी जब तक कि यह निश्चय न हो जाय कि वह बिल्कुल गलत है या बिल्कुल सही है॥

अल०। (खडा होकर) महाशय! मैं अपने सेकेण्ड आपके पास भेजूंगा जिन्हें आप कृपा कर लड़ाई का स्थान और हथियार बता दीजियेगा॥

ब्यूशेम्प०। बहुत अच्छा॥

अलवर्ट०। और आज शाम को या कल हमलोग मिलेंगे!!

ब्यूशेम्प०। नहीं! मैं लडने के लिये तैयार हूं पर अभी नहीं, मेरी समझ में अभी उसका समय नहीं आया है, तुम बहादुर हो, मैं भी हिम्मतवर हूं, अस्तु हम दोनों का डूयेल मामूली चीज नहीं होगा! मैं तुम्हें मारा नहीं चाहता और न अपना सिर तुडवाने की ही मेरी इच्छा है, मैं एक सवाल तुमसे करता हूं। क्या अपने निश्चय पर तुम यहां तक अटल रहोगे कि मेरे मार डालने से भी न हिचकिचाओगे? यद्यपि मैं कसम खाकर कह चुका हूं कि मुझे उस खबर के छपने का पता तक न था और

जिसके बारे मे मुझे विश्वास है कि फरनन्द के नाम से कोई भी काउण्ट मारकर्फ को नहीं समझेगा?

अलबर्ट०। मैं अपने इरादे पर कायम हूं॥

व्यूशेम्प०। बहुत अच्छा तो मैं भी आपके साथ खून खराबा करने को तैयार हूं। मगर मुझे तीन हफ्ते की मोहलत चाहिये, इतने समय के बाद आकर या तो मैं यही कहूंगा कि 'वह खबर झूठी है मैं उसे काटता हूं' या यही कहूंगा कि 'वह खबर ठीक है' और तुमसे लडूँगा॥

अल०। तीन हफ्ता! जब कि मैं बेहुर्मती के नीचे दब रहा हूं तब तीन हफ्ता मेरे लिये तीन सदी की तरह मालूम होगा!!

व्यू०। अगर तुम मेरे दोस्त बने रहते तो मै कहता "सब्र करो दोस्त!!" मगर तुमने मेरा दुश्मन बनना मंजूर किया इससे मैं कहता हू "मुझे क्या!"

अलबर्ट०। खैर तीन हफ्ता ही सही, पर याद रखिये कि इसके बाद फिर किसी तरह का हीला हवाला या बहानेबाजी

व्यूशेम्प ने उठते हुए कहा, "अलबर्ट मारकर्फ! तीन हफ्ते या चौबीस दिनो तक न तो मैं तुम्हे उठा कर खिड़की के नीचे फेंक सकता हूं न तुम्ही मेरा सिर फोड़ सकते हो!! आज उन्तीस अगस्त है, इक्कीस सितम्बर के रोज यह मियाद पूरी होगी और इस बीच मे एक भले आदमी की तरह पर मैं राय देता हूं कि एक दूसरे

की पहुच के बाहर पर सामने बँधे हुए कुत्तो की तरह भूँकने और चिल्लाने की कोई जरूरत नही ॥

यह कह ब्यूशेम्प ने अलवर्ट को सलाम किया और पीठ मोड अपने छापने के कमरे में चलागया। अलवर्ट ने अपना गुस्सा अखबारो के एक ढेर पर निकाला जिन्हें अपनी छडी से उछाल उसने इधर उधर उडा दिया। इसके बाद वह चला गया मगर जाने के पहिले भी वह कई दफे उस कमरे के दर्वाजे की तरफ गया जिसमे ब्यू-शेम्प गया था, मानों वह उसके अन्दर जाया चाहता हो ॥

जिस समय अलवर्ट अपनी गाडी के घोड़े को उसी तरह पीट रहा था जैसे उसने अखबारो की ढेरी को उडाया था उसी समय उसने मैक्समिलियन मारल को देखा जो खुशी खुशी लम्बे डग बढ़ाता हुआ जा रहा था। अलवर्ट ने एक लम्बी सांस लेकर कहा, "वह एक वास्तव में सुखी आदमी जा रहा है !!"

॥ दसवां हिस्सा समाप्त ॥

॥ श्रीः ॥

मोतियों का खजाना।

ग्यारहवां हिस्सा।

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

अनुवादित

और

प्रकाशित।

LAHRI PRESS DEVAKI NANDAN KHATRI BENARES CITY

PRINTED BY
PANNA LAL ROY
AT THE LAHARI PRESS, BENARES CITY.

प्रथम बार १०००]   १९२० ई०   [मूल्य ॥=) आ०

॥ श्रीः ॥



मोतियों का खजाना।

ग्यारहवां हिस्सा।

पहिला बयान।

लेमोनेड।

मारल सचमुच बहुत सुखी था। नोटीर ने उसको बुलवा भेजा था और वह इसका सबब जानने के लिये इतनी जल्दी मे था कि किराये की गाडी के घोड़े के चार पैरों की बनिस्बत अपनी दो टांगों पर ज्यादा भरोसा कर पैदल ही चल खड़ा हुआ था और जिस समय वह विलफोर्ट के मकान पर पहुंचा उस समय बेचारा बोरिस आधा रास्ता भी नही तै कर पाया था जो उसे बुलाने के लिये भेजा गया था॥

घर मे घुसते ही वेलेण्टिन पर उसकी निगाह पड़ी जो उसी की राह देख रही थी। इस समय काली मातमी पोशाक में वह उसे ऐसी सुन्दर मालूम पड रही थी कि वह देर तक सिर्फ उसके नखसिख को ही देखता रहा॥

आखिर वह मि० नोटीर के पास पहुंचाया गया जिसकी आंखों में से मारल को देखते ही प्रेम और दया की झलक निकली । मारल ने उसे कृतज्ञता के साथ सलाम किया और तब पूछा कि आज उसके बुलवाये जाने का क्या सबब है । नोटीर ने अपनी निगाह वेलेंटिन की तरफ फेरी जो एक टेबुल के पास डरती हुई बैठी उस समय की राह देख रही थी जब उसकी जरूरत पड़ती। नोटीर का भाव समझ उसने पूछा, "क्या आपने मुझे जो कुछ बताया है वह मैं इनसे कहूं ?"

नोटीर० । हां ॥

वेलेंटिन० । (मारल की तरफ घूम कर) बाबा को आपसे बहुत कुछ कहना है जिसे मेरे द्वारा कहलाने के लिये उन्होंने आपको बुलाया है ॥

मारल० । मैं बड़ी उत्कण्ठा के साथ सुना चाहता हूं कि उनका हुक्म क्या है ॥

वेलेंटिन० । (आंखें नीची करके) मेरे दादा यह मकान छोड़ा चाहते हैं और बोरिस कोई नया मकान ढूंढ रहा है ॥

मारल० । मगर तुम ? तुम कहां रहोगी ? तुम्हारे बिना बाबा

वेले० । मैं अपने दादा को नहीं छोड़ूंगी उन्ही के साथ रहूंगी । मेरे पिता या तो बाबा के साथ जाने की आज्ञा देंगे या जाने से रोक देंगे। पहिली हालत में तो मैं तुरत ही यह मकान छोड़ दूंगी, दूसरी हालत में दस

महीने तक यहां ही रहूंगी और उसके बाद जाऊंगी क्योंकि मेरे बालिग होने मे सिर्फ दस ही महीने हैं। दस महीने बाद मैं स्वतन्त्र हो जाऊगी, मेरी निज की काफी आमदनी हो जायगी और

मारल०। और?

वेलेण्टिन०। अपने बाबा की आज्ञानुसार मैं वह वादा पूरा कर सकूंगी जो मैं आपके साथ कर चुकी हूं॥

यह आखिरी बात वेलेण्टिन ने इतने धीमे स्वर में कही कि अगर मारल का मन और कान दोनों उसी तरफ लगे न होते तो वह कभी सुन न सकता। वेलेण्टिन ने नौटीर की तरफ देखा और कहा—"बाबा! यही बात न इनसे कहने को तुमने कहा था?"

नौटीर ने इशारा किया, "हां।" वेलेण्टिन फिर बोली—"जब मैं अपने बाबा के साथ रहने लगूंगी तो आप वहां आकर मुझसे मिल सकेंगे, पर इस बीच में कोई जल्दीबाजी का काम या बिना सोचे विचारे कुछ ऐसा काम करने का ध्यान आप छोड़ देंगे जो मेरी बेइज्जती का सबब हो॥"

मारल ने अपने कलेजे पर हाथ रक्खा। नौटीर इन दोनो प्रेमियों पर एक विचित्र प्रकार की दया और अनुकम्पा की निगाह डाल रहा था। वेलेण्टिन की निगाह बोरिस पर पडी जो वहां आ पहुंचा था और जिसके चेहरे से पसीना चू रहा था। वह बोली, "तुम्हें क्या बहुत गर्मी मालूम होती है बोरिस!!"

बोरिस बोला—"जी हां, मुझे बड़ा तेज चलना पड़ा, मगर मि० मारल मुझसे भी तेज आये ॥"

नैाटीर ने एक तश्तरी की तरफ इशारा किया जिस पर उसके पीने के लिये उम्दा लेमोनेड एक शीशे के गिलास में रक्खा था । गिलास करीब करीब भरा हुआ था क्योंकि नैाटीर ने उसमें से बहुत थोड़ा ही पीया था। वेलेंटिन अपने दादा का मतलब समझ कर बोली, "लो तुम उस गिलास का लेमोनेड पी लो, वह ठण्ढक देगा ॥"

बोरिस ने इज्जत के साथ वह गिलास उठा लिया श्रोर बाहर चला गया । मारल श्रोर वेलेंटिन में कुछ श्रोर बातें हुई श्रोर मारल उससे बिदा हुआ चाहता था कि नीचे दर्वाजे का कुण्डा खटकने की आवाज से मालूम हुआ कि कोई आया है । वेलेंटिन ने अपनी घड़ी देखी श्रोर कहा—"आज सनीचर है श्रोर दस बजा है, मालूम होता है डाक्टर साहब बाबा को देखने आये हैं। मैक्समिलियन को चले जाना चाहिये।" नैाटीर ने भी आंख के इशारे से 'हां' कहा श्रोर वेलेंटिन ने उसको बाहर तक पहुंचाने के लिये बोरिस को पुकारा। बोरिस भीतर आया श्रोर वेलेंटिन ने उससे पूछा, "कौन आया है ?"

बोरिस ने कांपते श्रोर लड़खड़ाते हुए कहा—"डाक्टर एवरानी" श्रोर तब एक कुरसी को पकड़ कर खड़ा हो गया। वेलेंटिन उसकी यह हालत देख ताज्जुब

से बोली, "बोरिस ! यह तुम्हारी क्या हालत है ?"

बूढ़े नौकर ने कुछ कहा नहीं और लाल २ आंखों से मालिक की तरफ देखा, उसका चेहरा एक दम पीला हो गया था और नसें इस तरह से ऐंठ रही थीं मानो मिरगी आने वाली हो। उसकी हालत से साफ मालूम होता था कि वह बड़ी तकलीफ में है। बड़ी मुश्किल से उसके मुंह से निकला, "हे परमेश्वर ! मुझे क्या हो गया !! मैं देख नहीं सकता ! मेरे सिर में आग की चिनगारियें सी क्यों लग रही हैं ओह ! छूओ मत ! छूओ मत !!"

उसकी आंखें और भी बाहर निकल आई और पथराने लगीं, सिर पीछे लटक गया, बदन अकड़ने लगा॥

वेलेण्टिन डर के मारे चीख उठी, मारल ने इस तरह उसे पकड़ लिया मानों किसी अदृश्य से उसे बचाया चाहता है। वेलेण्टिन कमजोर आवाज में बोली--"डाक्टर एवरानी ! डाक्टर एवरानी !!"

बोरिस घूमा और बड़ी कोशिश करके दो एक कदम चला पर सम्हल न सका और लड़खड़ा कर जमीन पर नौटिर के पैरों के पास गिर पड़ा, उसके भर्राये गले से निकला--"मालिक ! मेरे अच्छे मालिक !! मुझे बचाओ॥"

इसी समय विलफोर्ट यह शोर गुल सुन वहां आ पहुंचा, उसकी आहट पाते ही वेलेण्टिन को छोड़ मारल

दूर हट गया और एक कोने में जा पर्दे की आड में छिप कर खड़ा हो गया मगर उसकी निगाह बार बार उस बेचारे नौकर के ऊपर पड़ रही थी॥

नौटीर डर और घबराहट के साथ अपने उस बेचारे नौकर को देख रहा था जिसे वह नौकर नहीं बल्कि अपना दोस्त समझता था और जिसकी कुछ भी मदद करने से वह बिल्कुल लाचार था। इस समय उसके मन के भीतर जो कुछ गुजर रहा था इसका कुछ पता उसके चेहरे से लग सकता था, बेजान शरीर के भीतर की चैतन्य आत्मा की विकलता माथे की फूली हुई नसों और आंख के चारो तरफ की सिकुड़न से मालूम हो सकती थी। बोरिस उसी तरह पड़ा तकलीफ से अकड़ रहा था और उसके मुंह से कुछ फेन सा निकलता नजर आ रहा था॥

विलफोर्ट भौंचक सा हो इस घटना को देखने लगा थोड़ी देर के लिये वह बदहवास सा हो गया और तब "डाक्टर! डाक्टर! दौड़ो, दौडो!" कहता हुआ वह बाहर की तरफ लपका। वेलेण्टिन ने अपनी सौतेली मां को उधर से जाते देख कहा, "मैडम, मैडम! जल्दी यहां आओ, अपने सूंघने वाली दवा की शीशी लेती आइये॥"

मैडम ने कुछ कड़ी और तनी हुई आवाज में पूछा, "क्या हुआ है?"

वेलेण्टिन०। आइये देखिये॥

विलफोर्ट इसी समय "आखिर डाक्टर है कहां?" कहता हुआ लौटा, मैडम भी एक हाथ में रूमाल जिससे शायद वे अपना मुंह पोंछ रही थी और दूसरे मे दवा की शीशी लिये अन्दर आईं। उनकी पहिली निगाह नौटीर पर पड़ी जिसके चेहरे से सिवाय इस उत्तेजना के और कोई खराबी जाहिर नही होती थी और दूसरी निगाह उस मरते हुए आदमी पर पडी। मैडम की निगाह झटके के साथ वहां से हटकर फिर नौटीर की तरफ लौटी॥

विलफोर्ट ने मैडम से पूछा, "आखिर डाक्टर कहां है? वह गया कहा? बेरिस को मिरगी आ गई है अगर अभी नशतर दिया जाय तो शायद इसकी जान बच जाय॥"

मैडम ने इसका जवाब न दे पूछा—"क्या इसने कुछ खाया है?"

वेलेंटिन०। कुछ नही, अभी तो वह दौडा दौडा एक काम करके आया है, यहां सिर्फ उसने एक गिलास लेमोनेड पीया है॥

मैडम०। ओह लेमोनेड उसके हक में बहुत खराब था, वह शराब पीता तो अच्छा था॥

वेले०। उसे बड़ी गर्मी लग रही थी और प्यासा था, बाबा का लेमोनेड का गिलास पड़ा था वही मेरे कहने से उसने पी लिया॥

मैडम यह सुनते ही चौंक सी गईं, नौटीर की कड़ी

निगाह उसके चेहरे पर घूमने लगी। इसी समय विलफोर्ट ने फिर पूछा, "मैं पूछता हूं डाक्टर कहां है? अगर तुम्हें मालूम हो तो ईश्वर के वास्ते बताओ॥"

जब मैडम किसी तरह बचाव न कर सकी तो लाचार उन्होंने कहा—"डाक्टर एवरानी मेरे एडवर्ड के कमरे में हैं, उसकी तबीयत कुछ खराब है॥"

विलफोर्ट बाहर की तरफ दौड़ा, मैडम भी यह कहती हुई चली गईं कि "डाक्टर जरूर इसकी फस्द खोलेगा और मैं खून देख नही सकती जाती हूं।" उसके जाते ही मारल अपनी छिपी जगह से निकला, वेलेण्टिन ने कहा, "जल्दी भागो!" नौटीर की आंखों ने भी यही जाहिर किया अस्तु वह दोनों का हाथ दबा छिपता हुआ निकल गया॥

मारल के जाते ही विलफोर्ट डाक्टर के साथ कमरे के अन्दर आया। बोरिस के होश मे आने के कुछ लक्षण दिखाई पड रहे थे, खतरा बीता हुआ मालूम होता था। उसके गले से कुछ कराहने की आवाज निकली, उसने एक हाथ टेक अपने को उठाया जिसे देख विलफोर्ट और डाक्टर ने मिल उसे एक कोच पर उठा कर लेटा दिया। विलफोर्ट ने डाक्टर से पूछा, "आपको कोई दवा चाहिये।" "हा" कहके डाक्टर ने कुछ चीजे बताईं जिन्हें लाने के लिये नौकर भेजा गया। इसके बाद डाक्टर ने सभों को वहां से हट जाने को कहा, वेलेण्टिन ने पूछा क्या मैं भी हट जाऊं जिसके जवाब में वह कुछ

रुखाई से बोला, "हां तुम तो जरूर ही हट जाओ।" जब वह ताज्जुब करती हुई चली गई तो डाक्टर ने सब दर्वाजे बन्द कर दिये। उसी समय बोरिस ने आंखे खोलीं जो पथराई हुई थीं। डाक्टर ने उसके पास जा कर पूछा, "बोरिस! अब तबीयत कैसी है?"

बोरिस०। कुछ अच्छी है॥

डाक्टर०। (दवा का गिलास उठा कर जो नौकर ले आया था) यह दवा पी सकते हो?

बो०। कोशिश करूंगा पर मुझे छूइयेगा मत!!

डाक्टर०। क्यों?

बो०। मुझे ऐसा मालूम होता है कि कोई अगर मुझे छूएगा तो मुझे फिर गश आ जायगा॥

डाक्टर०। अच्छा पीओ॥

बोरिस ने गिलास लेकर अपने नीले होठों से लगाया और थोडी दवा पी। डाक्टर ने पूछा, "तुम्हें कहां तकलीफ हो रही है?"

बोरिस०। सब जगह, तमाम बदन मेरा अकड़ रहा है॥

डा०! आंख के आगे चमक सी मालूम होती है?

बोरिस०। हां॥

डाक्टर०। कान में कुछ आवाज मालूम होती है?

बोरिस०। हां बड़े जोर ज़ोर से!!

डाक्टर०। ऐसा कब से है?

बोरिस०। अभी से, यकायक शुरू हो गई है॥

डा० । कल परसों या इसके पहिले भी कभी ऐसा हुआ था ?

बोरिस० । नहीं कभी नहीं ॥

डाकूर० । आज तुमने खाया क्या है ?

बोरिस० । कुछ नहीं, सिर्फ एक गिलास लेमोनेड पीया है जो मेरे मालिक के लिये बना था ॥

इतना कह बोरिस मि० नोटीर की तरफ घूमा जो अचल रूप से कुर्सी में बैठा इस भयानक दृष्य को देख रहा था ॥

डाकूर० । वह लेमोनेड कहां है ?

बोरिस० । नीचे के घर में ॥

विलफोर्ट० । मैं जाकर वह गिलास ले आऊं ?

डाकूर० । नही आप यहीं रहिये और यह बाकी की दवा भी पिलाने की कोशिश कीजिये । मैं खुद जा कर उसे लाता हूं ॥

एवरानी दौड़ता हुआ नीचे के कमरे में पहुंचा। वह इतना बेतहाशा आया था कि रास्ते में सीढ़ी पर से आती हुई मैडम विलफोर्ट को उसका धक्का भी लग गया जो चिल्ला उठी मगर उस तरफ कुछ ध्यान न दे डाकूर ने लेमोनेड का वह गिलास उठा लिया जो एक चैाकी पर पड़ा हुआ था और जिसमें अब भी थोड़ा लेमोनेड बचा हुआ था। इसे लिये वह हांफता हुआ ऊपर पहुंचा और बोरिस को वह गिलास दिखा कर बोला, "क्या यही गिलास है ?"

वोरिस०। हां॥

डाकृर०। इसी लेमोनेड मे से तुमने पीया था?

बोरिस०। हां॥

डाकृर०। इसका स्वाद कैसा मालूम हुआ?

बोरिस०। बडा कडुआ॥

डाकृर ने थोडा सा लेमोनेड हथेली पर उलटा, वडे गैार से देखा श्रोर तब पी लिया। मुंह में कुछ देर तक उसे रख उसने थूक दिया श्रोर कहा, "वेशक यही होगा।" इसके वाद नैाटीर की तरफ घूम कर उसने पूछा, "क्या श्रापने भी इसमें से पीया था?"

नैाटीर०। हां॥

डाकृर०। श्रापको भी यह कडुआ मालूम हुआ?

नैाटीर०। हां॥

इतने ही में वोरिस चिल्ला उठा—"श्रोह डाकृर! बचाश्रो, बचाश्रो! मेरी फिर वही हालत होने लगी है।" डाकृर दोड कर श्रपने मरीज के पास पहुंचा जिसके दांत बैठ गये थे श्रोर बदन कांप रहा था। डाकृर लाचारी के साथ उसकी हालत देखने लगा जिसे दूर करने का कोई इलाज न था। यह हमला पहिले हमले से कही ज्यादा कडा था श्रोर श्राखिर यह निश्चय करके कि वह कुछ कर नही सकता डाकृर वोरिस के पास से हट कर नैाटीर के पास पहुंचा। नैाटीर से उसने धीरे से पूछा, श्रापकी तबीयत श्राज कैसी है? श्रच्छी है?"

नैाटीर०। हा॥

डाक्टर०। क्या आपको छाती पर कुछ बोझ मालूम होता है या आपका पेट खूब हलका है॥

नैाटीर०। हां॥

डाक्टर०। यानी आपको वैसा ही मालूम होता है जैसा उस दवा के खाने बाद मालूम होता है जो मैं हर हफ्ते आपको देता हूं?

नैाटीर०। हां॥

डा०। आपका लेमोनेड किसने बनाया था? बोरिस ने?

नैाटीर०। हां॥

डा०। आपने उसे लेमोनेड पीने को कहा था?

नैाटीर०। नहीं॥

डाक्टर०। मि० विलफोर्ट ने?

नैाटीर०। नही॥

डाक्टर०। मैडम ने?

नैाटीर०। नही॥

डा०। तो जरूर वेलेण्टिन ने कहा होगा?

नैाटीर०। हां॥

बोरिस के मुंह से एक आह की आवाज निकलती सुनाई दी, डाक्टर नैाटीर को छोड़ तुरत उसके पास पहुंचा और बोला—"बोरिस! क्या तुम बोल सकते हो!" बोरिस ने कुछ कहा जो समझाई नहीं पड़ा। डाक्टर ने कहा, "कोशिश करो और जो मैं पूछता हूं उसे बताओ।" बोरिस ने अपनी लाल आंखें खोली॥

डा०। लेमोनेड किसने बनाया था?

बोरिस०। मैंने॥

डा०। बनाते ही उसे तुम यहां ले आये थे?

बोरिस०। नही॥

डाक्टर०। तो क्या उसे कुछ देर के लिये कही छोड दिया था?

बोरिस०। हां, क्योंकि मुझे दूसरे काम को जाना पड़ा॥

डा०। तब उसे यहां कौन लाया?

बोरिस०। मिस वेलेण्टिन॥

डाक्टर ने अपना माथा हाथ से ठोंका और कहा, "हे परमेश्वर!" इतने ही में बोरिस को तीसरी दफे गश आता मालूम हुआ और वह चिल्लाया, "डाक्टर! डाक्टर! क्या मैं इसी तरह तकलीफ भोगता रहूंगा?"

डा०। नही अब तुम जल्दी ही इस तकलीफ से छूट जाओगे॥

बोरिस०। ओह मैं समझ गया! ईश्वर मुझपर दया करे!!

इतना कहकर एक भयानक चीख मार बोरिस इस तरह गिर गया मानो उसे बिजली ने मार दिया हो। एवरानी ने अपना हाथ उसके कलेजे पर रक्खा। विलफोर्ट ने पूछा, "क्या हाल है?" डाक्टर ने कहा, "आप नीचे जाकर वायोलेट का शर्बत ले आवे, मैं इसे उस बगल वाले कमरे में ले चलता हू॥"

विलफोर्ट चला गया, डाकृर ने बोरिस को बगल मे दबा कर उठा लिया और बगल वाले कमरे में लेजा कर सुला दिया। इसके बाद तुरत ही वह लौटा और उस लेमोनेड के गिलास को उठा ले गया जिसे नीचे से लाया था। इसी समय विलफोर्ट लौटा और बोरिस की तरफ देख उसने पूछा, "क्या यह अभी तक गश में है?"

डाकृर ने जवाब दिया, "नहीं यह मुर्दा है॥"

विलफोर्ट कांप कर यह कहता हुआ दो कदम पीछे हट गया—"मुर्दा! यह मर गया!! इतनी जल्दी!! यकायक!!"

डाक्टर बोला, "हां यह यकायक मर गया न! मगर इससे आपको ताज्जुब नहीं होना चाहिये क्योंकि आप के घर में लोग इसी तरह यकायक मरा करते हैं। मैडम मीरां भी ऐसे ही मरी थीं॥"

विल०। (डर और घबराहट के साथ) लड़खड़ाती हुई आवाज से तुम फिर अपने उसी खयाल पर लौटे?

डा०। हां हमेशः लौटूंगा! क्योंकि इस खयाल ने कभी मेरा साथ नही छोड़ा है। और जिस में इस बार आपको भी विश्वास हो जाय कि जो कुछ मैं कह रहा हूं वह गलत नहीं है इस लिये आप मेरी बातो को गौर से सुनें॥

विलफोर्ट कांप उठा। डाकृर कहने लगा, "यह एक जहर है जो बिना कोई निशान छोड़े कारी असर कर जाता है। मै इसे अच्छी तरह जानता हूं क्योकि मैंने

खास तैार पर इसकी जांच की है। इस जहर का असर मैंने मैडम मीरां के वक्त भी देखा था और इस वक्त भी देख रहा हूं। इसकी जांच का एक जरिया है। यह जहर लाल लिटमस पेपर का नीला कर देता है और वायो-लेट के शर्बत का रङ्ग हरा कर देता है। लिटमस पेपर ता यहां नहीं है पर वायोलेट का शर्बत है, देखिये॥"

डाकृर ने उस शर्बत का दे। चम्मच एक प्याले में उलटा। इसके बाद उस गिलास में से थोडा लेमोनेड यह कहते हुए उसपर छोडा, "अगर यह लेमोनेड साफ है ता शर्बत का रङ्ग नहीं बदलेगा, अगर इसमें वह जहर मिला हुआ है ता यह हरा हो जायगा; ले। देखो॥"

धीरे धीरे शर्बत का रङ्ग बदलने लगा। एक तरह की सफेद सफेद मैल सी तह में बैठने लगी। यह कुछ देर बाद नीले रङ्ग की हुई तब हलका लाल और अन्त में हरी हो गई। हरा होने बाद उसकी रङ्ग फिर नहीं बदला। इस इमतिहान के बाद फिर कोई शक न रह गया। डाकृर ने गम्भीर स्वर से कहा, "बेचारा बेरिस 'सन्गुस्टुरा' और 'इगनेशिया बीन' देकर मारा गया और मैं इस बात की ईश्वर और समाज के आगे गवाही दूंगा॥"

विलफोर्ट ने कुछ कहा नहीं, बल्कि हाथ बांधे हुए दृष्टिहीन आंखों के साथ वह बदहोश सा होकर एक कुर्सी में गिर गया॥

दूसरा बयान।

जुर्म की नालिश।

किसी तरह डाक्टर विलफोर्ट को होश में लाया जो उस मौत के घर में एक दूसरी लाश की तरह मालूम पड़ने लगा था; उसने होश में आते ही कहा, "मेरे घर में मौत ने पैर रख दिया है!!"

डाक्टर०। मौत नही जुर्म कहो॥

विलफोर्ट०। डाक्टर! इस समय मैं डर और रञ्ज से पागल हो गया हूं॥

डाक्टर०। मगर यह काम करने का वक्त है, अब इस मौत की बाढ़ को रोकने का वक्त है, मैं अब इसे बर्दाश्त करने लायक नही हूं।

विलफोर्ट ने डर की निगाह चारो तरफ डालते हुए कहा—"मेरे घर मे! मेरे घर मे!!" डाक्टर बोला— "मेजिस्ट्रेट! होश में आओ, तुम न्याय के लिये अफसर बनाये गये हो स्वार्थ को भूलकर इस समय अपना फर्ज याद करो!!"

विल०। क्या तुम्हें किसी पर शक है?

डाक्टर०। शक नहीं है पर फिर भी मौत के रास्ते को मैं देख रहा हूं, जिन जिन दर्वाजों पर वह रुक रही है उन्हें देख रहा हूं, एक कहावत कहती है "जुर्म से जिसे फायदा पहुचा उसे खोजो!!"

विल०। डाक्टर! डाक्टर!! मैं नहीं कह सकता कि

क्यों, पर यह जुर्म...

डाक्टर० । तब तुम मानते हो कि यहां एक जुर्म हुआ है ?

विलफोर्ट० । हां यह तो अब साफ़ ही है । मगर मैं समझता हूं कि असल निशाना मैं हूं वे लोग नहीं जो गये ॥

डाक्टर० । क्यों आप समझते हैं कि जो लोग गये उनकी जान की कुछ कीमत ही नहीं थी । क्या रईस मीरां, उनकी स्त्री, मि० नौटीर...

विल० । मि० नौटीर क्यों ?

डाक्टर० । हां मि० नौटीर । क्या आप समझते हैं कि उस बेचारे नौकर को मारने की कोई जरूरत थी ? नही, वह बेचारा दूसरे के लिये मारा गया । लेमोनेड मि० नौटीर के लिये बनाया गया था और बेरिश ने उसे धोखे से पी लिया, चाहे बेरिश मारा गया मगर वार मि० नौटीर पर ही था ॥

विल० । तब उनकी जान क्यों नही गई ?

डाक्टर० । क्योंकि इस घर से किसी को नहीं मालूम कि मि० नौटीर को उनकी गठिया दूर करने के लिये मैं बराबर वही जहर दवा के तौर पर दे रहा हूं जो इस्तेमाल किया जा रहा है । उस जहर को अपना मर्ज दूर करने के लिये खाते रहने के सबब से वे उसके आदी हो गये इसी से उनकी जान बच गई ॥

विल० । हे परमेश्वर !!

डाकृर०। देखो, मुजरिम पहिले रईस मीरां को मारता है ॥

विल०। ओह डाकृर !!

डाकृर०। मैं इसपर कसम खाने को तैयार हूं क्योंकि उनके भी मौत का जो बयान मैंने सुना है वह वैसा ही था जैसा इन दोनों का। अस्तु मुजरिम पहिले रईस मीरां को मारता है; तब उनकी पत्नी को, जिससे दूनी दौलत मिले; इसके बाद मि० नौटीर ने आपके और आपके घर भर के बर्खिलाफ़ एक वसीयत लिख कर अपना रुपया गरीबों को दे दिया, वह छोड़ दिये गये क्योंकि फिर उनसे कोई आशा नहीं रही, पर ज्यों ही उन्होंने अपना पहिला वसीयतनामा रद्दी कर दूसरा बनाया वैसे ही उनपर हमला हुआ, जिसमे वे तीसरा न बना सकें। तुम सुन रहे हो न?

विल०। हाय ! मैं सब सुन रहा हूं। दया करो दया करो !!

डाकृर०। नहीं महाशय ! डाकृर को इस संसार में एक पवित्र कर्तव्य पूरा करना रहता है जिसके लिये वह जिन्दगी के आरंभ से मौत की अँधेरी छाया तक घूमता रहता है। जब कोई जुर्म करा जाता है और जब ईश्वर क्रोध के साथ अपना मुँह फेर लेता है तब डाकृर का काम है कि वह मुजरिम को सजा दिलावे ॥

विल०। ओह डाकृर ! मेरी बेटी पर दया करो !!

डाकृर०। देखो तुम्हारे मुँह से आप से आप मुज-

रिम का नाम निकल गया॥

विल०। डाक्टर! वेलेण्टिन पर दया करो, सुनो, जो तुम कहते हो वह असम्भव है, मैं अपने को मुजरिम मान लूंगा पर वेलेण्टिन को नहीं जो पवित्र, निरपराध निर्दोष कली है॥

डाक्टर०। नहीं मोक्येोरर! जुर्म साफ है। वेलेण्टिन अपने हाथ से उन दवाओं को भेजती थी जो रईस मीरां के लिये मैं देता था। अपने हाथ से वह मैडम मीरां को दवा पिलाती थी, अपने हाथ से उसने यह लेमोनेड लाकर मि० नौटीर को दिया। जरूर वही मुजरिम है, वही जहर देने वाली है, मोक्येोरर! मैं वेलेण्टिन पर यह जुर्म लगाता हूं, तुम अपना कर्तव्य करो॥

विल०। डाक्टर! मैं तुम्हारी बात मानता हूं, अब मैं अपना बचाव नहीं देखता, पर फिर भी दया करो, मेरी जान बचाओ, मेरी इज्जत रक्खो!!

डाक्टर०। (कड़ाई से) मिस्टर विलफोर्ट! अगर तुम्हारी लड़की ने सिर्फ एक खून किया होता तो मैं कहता कि उसे किसी कन्वेण्ट (मठ) में बन्द कर दो, जहां वह अपनी जिन्दगी रोने और पछताने में बितावे; अगर दो जुर्म किये होते तो मैं तुम्हें एक ऐसा जहर देता, जिसे कोई नहीं जानता—जिसका असर बिजली की तरह होता है और जिसे तुम अपनी इज्जत और जान बचाने के लिये उसे खिला देते क्योंकि वह तुम्हारी जान और इज्जत पर वार करती, तुम्हारे बीमारी के

पलङ्ग पर मुस्कुराहट और प्रेम दिखाती हुई जहर का प्याला लिये आती और उसके कातिल हाथों से बचने के लिये तुम्हें पहिले वार करना ही पडता। यह मैं तब करता जब उसने सिर्फ दो खून किये होते, पर उसने तीन मौते देखीं, तीन लाशें निकाली—अब उसे फाँसी पडना ही होगा। तुम अपनी इज्जत का खयाल करते हो, हिम्मत करो—बस अमरत्व तुम्हारी राह ही देख रहा है॥

विल०। (घुटनों के बल गिर कर) मुझमें वह दिली ताकत नहीं है जो तुममें है अथवा जो तुममें भी नहीं होती अगर इस समय मेरे वेलेरिटन की जगह तुम्हारी लडकी मेडलिन होती। (डाक्टर का चेहरा पीला हो गया।) डाक्टर! हर एक औरत का जाया दुःख उठाने और मरने के लिये पैदा हुआ है, मैं भी इन दोनो के लिये तैयार हूं॥

डाक्टर०। होशियार रहो, शायद वह जल्दी ही आवे॥

विलफोर्ट ने डाक्टर का हाथ पकड़ कर कहा—"सुनो, दया करो, मेरी मदद करो, मेरी लडकी कभी दोषी नही है। मेरे घर में कोई जुर्म नही हुआ। क्योंकि जुर्म मौत की तरह है मगर अकेला नही आता। सुनो! तुम्हें इससे क्या अगर मैं मारा जाऊं? क्या तुम मेरे मित्र हो? क्या तुम आदमी हो? क्या तुम्हें कलेजा है? नही, तुम डाक्टर हो!! खेर मैं तुम्हें कहता हूं कि मैं अपनी

बेटी को कभी अदालत के सामने नहीं जाने दूंगा, कभी जल्लाद के हाथों में नहीं पड़ने दूंगा, केवल इस बात का खयाल भी मुझे मार डालेगा, मुझे पागल कर देगा, मुझे अपने नाखून से अपना कलेजा चीर कर दिल को बाहर निकाल डालने पर मजबूर कर देगा, और फिर अगर तुम्हारा खयाल गलत हुआ, अगर मेरी बेटी बेकसूर हुई और तुम्हारे कहने से अगर मैंने उसे मरवा डाला और तब मुझे इस बात का पता लगा, कि वह बेकसूर थी, तो डाकृर मैं सच कहता हूं कि यद्यपि मैं खूनी हूं पर मैं तुम्हारे सामने अपनी जान दे दूंगा॥

डाकृर ने एक सायत तक रुक कर कहा,—"खैर मैं कुछ समय तक और ठहरूंगा, पर याद रक्खो अब अगर कोई आदमी तुम्हारे घर में बीमार पड़े, अब अगर किसी की जान तुम्हारे घर में जाने लगे, तो तुम मुझे मत बुलवाना, मैं नहीं आऊंगा क्योंकि यद्यपि तुम्हारे इस भयानक भेद का मैं साथी बनता हूं पर मुझे धर्म और पछतावे के बोझ को उस तरह अपनी छाती पर दबने देना मंजूर नहीं जैसा कि जुर्म और मातम को तुम अपने घर में॥

विल०। तब तुम मुझे त्यागते हो?

डाकृर०। हां क्योंकि अब मैं और आगे तुम्हारा साथ नहीं दे सकता। बन्दगी॥

विल०। एक बात, एक शब्द और, तुम मुझे ऐसी हालत में छोड़ कर तो जा रहे हो मगर मैं अपने नौकर

दङ्गली की बेटी से शादी करने वाले हो?

एन्ड्रिया०। किसकी! दङ्गली की बेटी से शादी!!

कदरू०। हां हां, क्या मैं बैरन दङ्गली कहूं? वह मेरा पुराना दोस्त था मैं कई बार उसके और कांउण्ट मार्कर्फ के साथ गपशप और भोजन कर चुका हूं, उस समय वे लोग उतने घमण्डी नहीं थे। अब भी अगर मैं कुछ कोशिश करूं तो उनके साथ बराबरी पर मुलाकात कर सकता हूं, अच्छा बैठो तो सही॥

कदरू ने खाने को परोसा और एन्ड्रिया को शुरू करने का इशारा कर आप भी खाने लगा। एन्ड्रिया भूखा था अस्तु उसने भी और बातों को खयाल छोड़ भोजन पर हाथ साफ करना शुरू किया। थोड़ी देर तक दोनो में किसी तरह की बात न हुई इसके बाद कदरू ने पूछा, "क्यो भोजन स्वादिष्ट बना?"

एन्ड्रिया०। स्वादिष्ट! अजी मुझे तो इतना अच्छा मालूम हो रहा है कि मुझे ताज्जुब होता है कि जब तुम ऐसी ऐसी चीजें बना और खा सकते हो तो फिर कुड़कुड़ाते क्यों हो?

कदरू०। सिर्फ एक सबब से—इसी लिये कि मुझे इसके लिये दूसरे के आगे हाथ फैलाना पड़ता है जिससे मुझे इतनी शर्म मालूम होती है जिसका हिसाब नहीं यहां तक कि कल मैं तुम्हारे दो सौ रुपये न ले सका॥

एन्ड्रिया०। क्यों?

कदरू०। मुझे एक बात सूझी॥

एन्डिया कांप गया, कदरू की सूझनों से वह बहुत डरा करता था। कदरू बोला, "तुम जानते हो कि एक महीने तक ठहरना कैसा बुरा होता है॥"

एन्डिया० (बड़े ध्यान से उसे देखते हुए) ठहरना सभी को पडता है मैं भी तो अपने मुआहरे के लिये ठहरा रहता हूं॥

कदरू० बेशक मगर तुम पांच हजार बल्कि शायद दस हजार रुपये के लिये ठहरते होगे और मुझे एक तुच्छ दो सौ की रकम के लिये राह देखनी होती है॥

एन्डिया० अब लगे फिर तुम लालचियों की सी बात करने॥

कदरू० नहीं बल्कि मैं यह कहने को था कि अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो अपनी छः महीने की तनखा पेशगी ले लेता और तब किसी दिन चम्पत हो जाता। छः महीने की रकम से बड़े आराम से जिन्दगी कट सकती है॥

एन्डिया० तो तुम ही क्यों नहीं ऐसा करते, छः महीना छोड तुम साल भर की तनखा मुझसे ले लो और कहीं चले जाओ॥

कदरू० वाह हजार दो हजार रुपये से थोड़े ही ऐसा किया जा सकता है॥

एन्डिया० दो महीना पहिले तो तुम भूखे मर रहे थे और अब दो हजार को कुछ नहीं समझते!!

कदरू ने चीते की तरह हँसी हँस कर कहा, "ज्यों

ज्यों आदमी खाता है त्यों त्यों उसकी भूख बढ़ती है। मगर मेरी बात तुम पूरी सुनो भी तो—मुझे एक बात सूझी है॥

एन्ड्रिया०। आखिर कहो भी तो क्या विचित्र बात तुम्हें सूझ गई है॥

कदरू०। मैं यह कहता हूं कि अगर तुम्हारा कुछ खर्च न हो तो क्या तुम मेरे तीस हजार पाने की कुछ तर्कीब कर सकते हो?

एन्ड्रिया०। (रुखाई से) नहीं॥

कदरू०। मैं कहता हूं कि बिना तुम्हारा एक पैसा खर्च हुए!!

एन्ड्रिया०। तो मैं क्या तर्कीब करूंगा, तुम्हारे लिये क्या चोरी करूं या डाका डालूं—और पकड़ा जा कर फिर चक्की पीसूं॥

कदरू०। अगर ऐसा भी हो तो भी मुझे कोई परवाह नहीं क्योंकि मैं तो अकेला हूं ही और दूसरे अपने पुरानें साथियों से मिलने के लिये कभी कभी तबीयत भी करती है क्योंकि मैं तुम्हारी तरह नही हूं जो उन्हें दिल के अन्दर भी लाया नहीं चाहते॥

कदरू की बातों ने एन्ड्रिया को कँपा ही नहीं दिया बल्कि उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसने बेचैनी से कहा, "देखो कदरू! बेवकूफी मत करो!!"

कदरू०। नही नहीं बेन्डेटो घबड़ाओ मत! मगर साथ ही मुझे तीस हजार रुपया कहीं से दिलाने की

बात भी मत भूलो और जब तक वैसा न कर सको तब तक के लिये मेरी तनखा पांच सौ कर दो॥

एन्ड्रिया०। पांच सौ! खैर मैं दूंगा, मगर कदरू तुम इस समय मुझे कब्जे में पा कर दबा रहे हो?

कदरू०। वाह जब तुम्हारे को बेअन्दाज दौलत मिल सकती है तो तुम पाच सौ से घबराते हो?

एन्ड्रिया०। हां यह तो ठीक है मेरा वली मुझ पर बड़ा मेहरबान है॥

कदरू०। क्यों नहीं! वह तुम्हें कितना महीना देता है?

एन्ड्रिया०। पांच हजार॥

कदरू०। पांच हजार!! क्या करते हो तुम इतना रुपया!!

एन्ड्रिया०। अरे कुछ पूछो नहीं बड़ी जल्दी खतम हो जाता है। इससे मैं भी चाहता हूं कि मुझे एक मुश्त थोक रकम मिल जाय॥

कदरू०। क्यों नहीं, सभी ऐसा चाहते हैं॥

एन्ड्रिया०। मगर मैं तो पा लूंगा?

कदरू०। कैसे, कौन देगा? वह शाहजादा?

एन्ड्रिया०। हां वही काउण्ट। पर मुझे ठहरना पड़ेगा, उसके मरने पर मुझे मिलेगा॥

कदरू०। कितना?

एन्ड्रिया०। पांच लाख॥

कदरू०। ओहो, बहुत थोड़ा!!

एन्ड्रिया० । मैं ठीक कहता हूं। अच्छा तुम किसी से कहो नहो तो मैं एक बात बताऊं ॥

कदरू० । हां हां कहो ॥

एन्ड्रिया० । कोई सुनता तो नहीं ॥

कदरू० । कोई नहीं तुम बेखटके कहो ॥

एन्ड्रिया० । मुझे मेरे पिता मिल गये हैं ॥

कदरू० । तुम्हारे पिता! असली पिता?

एन्ड्रिया० । हां असली पिता ॥

कदरू० । वह केवेलकएटी नहीं?

एन्ड्रिया० । नहीं असली बाप जी! वह बुड्ढा तो नकली है ॥

कदरू० । कौन है?

एन्ड्रिया० । (धीरे से) मौएट क्रीटो!!

कदरू० । धत्त ॥

एन्ड्रिया० । मैं ठीक कहता हूं, वह खुलेआम मुझे अपना बेटा मंजूर नहीं करता है और इसी कारण उसने बूढ़े केवेलकएटी की मदद ली है जिसे मेरा बाप बनने के लिये पचास हजार रुपया मिला है ॥

कदरू० । पचास हजार! तुम्हारा बाप बनने के लिये? अरे मैं तो उसके आधे क्या चौथाई में वह काम कर देता! तुमने मुझे क्यों नहीं ऐसा काम दिला दिया!!

एन्ड्रिया० । मुझे मालूम ही क्या था कि यह सब हो रहा है ॥

कदरू० । हां ठीक, अच्छा तो यह तुम्हारा असली

बाप...

एन्डूया०। उसने एक वसीयतनामा लिखा है जिसमें उसने मुझे पांच लाख रुपया अपनी मौत के बाद देने को कहा है और साथ ही मुझे अपना लड़का भी करार कर लिया है॥

कदरू०। (कुछ सोचता हुआ) ठीक बहुत ठीक (रुककर) तो यह काउंट बहुत अमीर है?

एन्डूया०। हां, उसके पास इतना रुपया है कि वह खुद नहीं जानता कि कितना है। अभी कल ही एक बङ्क वाला पचास हजार रुपये उसे दे गया और एक दूसरे महाजन के यहां से एक लाख रुपये की अशर्फियें उसके यहां आईं॥

कदरू के ताज्जुब का हद्द न था। एन्डूया की बातों में उसे रुपयों की झनझनाहट सुनाई पड़ रही थी सोने की चमक आखों के सामने आ रही थी। उसने पूछा, "क्या तुम उसके मकान पर जाते हो?"

एन्डूया०। हां जब चाहूं और जै बार चाहूं॥

कदरू चुप रहा। इसमें कोई शक नहीं कि वह अपने मन में कोई मनसूबा गांठ रहा था। यकायक वह बोला, "ओह उसका महल कैसा अच्छा होगा?" एन्डूया ने जवाब दिया, "सचमुच वह बादशाही मकान है॥"

कदरू०। चेम्पस एलिसीज में उसका मकान है तो?

एन्डूया०। हां तीस नम्बर वाला—उसके एक तरफ बगीचा है दूसरी तरफ नजरबाग—बड़ी आली-

शान इमारत है तुमने जरूर वह मकान देखा होगा॥

कदरू०। शायद देखा हो पर मुझे बाहर का हाल नहीं चाहिये मैं भीतर का ढङ्ग जानना चाहता हूं वह भीतर से कैसा है?

एन्ड्रिया०। तुमने राजा का महल देखा है?

कदरू०। नहीं॥

एन्ड्रि०। काउण्ट का मकान उससे भी अच्छा है॥

कदरू०। उसमें बड़ी कीमती चीजें होंगी?

एन्ड्रिया०। श्रोह कुछ पूछना है? और रुपया अशरफी तो वहां बिखरा रहता है॥

कदरू०। किसी दिन मुझे ले चल के दिखाओ॥

एन्ड्रिया०। मगर कैसे, किस बहाने से, उसके घर में बड़े बड़े अमीरों का जाना मुश्किल है॥

कदरू०। हां सो तो होहीगा, खैर मैं अपने मन ही में उसका ध्यान करके सन्तोष करूंगा, तुम कम से कम उसका कुछ अन्दाजा तो मुझे करा दो कि कैसा बना हुआ है॥

एन्ड्रिया०। सो बिना देखे कैसे समझ में आवेगा? या फिर कागज कलम दो तो मैं कुछ बता सकूं॥

"हां हां लो" कह कर फुर्ती से कदरू ने वह सब सामान एन्ड्रिया के सामने रक्खा। एक हलकी मुस्कुराहट के साथ एन्ड्रिया उस मकान का नक्शा खींच कर बताने लगा, "देखो यह इस तरफ बगीचा है और इधर नजरबाग, इस तरफ साईसों के रहने और घोड़ों

का अस्तबल है और सामने फाटक है। बीच में यह मकान है॥"

कदरू०। दीवालें खूब ऊँची ऊँची हैं?

एन्डि०। नहीं सिर्फ आठ नौ फिट ऊँची होंगी॥

कदरू०। यह तो बड़ी गलती की है, अच्छा बगीचों में कोई चोरों के पकड़ने के लिये गुप्त कद्दा वगैरह तो नहीं लगा है॥

एन्डिया०। नहीं नहीं सो सब नहीं है। उसको चोरों का डर नहीं है। अच्छा इधर देखो—यह मकान की निचली मंजिल मे यह भोजन का कमरा, यह दो बैठने के और यह बड़ा कमरा है जिसमें से ऊपर सीढ़ी गई है॥

कदरू०। खिड़कियें?

एन्डिया०। बहुत सी और खूब बड़ी इतनी बड़ी कि एक २ खाने में से तुम्हारे से मोटा आदमी निकल जाय अगर शीशा न हो तो—और फिर वे बन्द भी नहीं की जातीं क्योंकि काउण्ट का हुक्म है कि वे खुली रहें जिसमें रात को भी आस्मान दिख सके॥

कदरू०। नौकर?

एन्डिया०। वे सब अलग रहते हैं, इस मकान से कोई वास्ता नहीं। और न इसमें रात को कोई नौकर रहता है, काउण्ट को अकेला रहना पसन्द है यहा तक कि एक कुत्ता भी जो रात को खुला घूमा करता था अब आर्टविल वाले मकान में भेज दिया गया—यही

जहां तुम मुझसे मिले थे॥

कदरू०। हां ठीक है॥

एन्ड्रिया०। काउण्ट, बडा लापरवाह है एक दिन मैंने उससे कहा था, कि आप जब नौकरों को ले कर आटविल चले जाते हैं तो यह मकान बिल्कुल खुला पड़ा रहता है, अगर चोर घुस आवे तो मुश्किल होगी॥

कदरू०। तब वह क्या बोला?

एन्ड्रिया०। ओह उसने कह दिया कि "मेरा क्या? चोर चुरा ही ले जायँगे तो मेरा क्या बिगड़ेगा॥"

कद०। एन्ड्रिया जरूर उस मकान कोई ऐसी अलमारी है जो चोरों को पकड़ लेती है। मैंने सुना कि अब ऐसी अलामारिये बनी हैं जिनको कोई छूये तो वह हाथ पकड़ लेती हैं और घण्टी बजने लगती है, ऐसी ही कोई वहां होगी॥

एन्ड्रिया०। नही ऐसी वहां कोई चीज नहीं है, वहां सिर्फ महोगनी की आलमारियें हैं जो बडी नाजुक हैं, और उसका रुपया पैसा एक सुन्दर, टेबुल में, रहता है जिसकी ताली उसी मे लगी रहा करती है॥

कदरू०। कोई चुरा नहीं लेता?

एन्ड्रिया०। नही उसके नौकर सब उसे प्यार करते हैं॥

कदरू०। उस टेबुल में बहुत रुपया होगा?

एन्ड्रिया०। सो मैं नही कह सकता? किसी को नही मालूम उसमे क्या है॥

कदरू०। और है वह कहां पर?

एन्ड्रिया०। ऊपर वाली मञ्जिल में॥

कदरू०। वहां का भी नक्शा खींच के मुझे बताओ॥

एन्ड्रिया०। देखो-यह तो लाइब्रेरी और पढ़ने का कमरा है इस तरफ बैठके और आराम करने की जगह है यह सोने का कमरा है और यह कपड़ा पहिनने का घर है, इसी घर में वह टेबुल है॥

कदरू०। इसमें कोई खिड़की है?

एन्ड्रिया०। दो; एक यहां एक यहां॥

एन्ड्रिया ने दो खिड़कियां नक्शे पर खींच कर बता दीं, कदरू ने कुछ सोचते हुए पूछा, "काउण्ट आटविल बहुत जाया करता है?"

एन्ड्रिया०। हफ्ते में दो तीन दफे। अभी कल ही वह जाने वाला है और रात को भी वहीं रहेगा॥

कदरू०। तुम्हें ठीक मालूम है?

एन्ड्रिया०। हां जी, उसने मुझे वहां खाना खाने को बुलाया है॥

कदरू०। और तुम जाओगे?

एन्ड्रिया०। शायद! कह नहीं सकता!!

कदरू०। जब तुम वहां खाते हो तो वहीं सोते भी हो?

एन्ड्रिया०। अगर मेरा दिल चाहे तो, मुझे कोई रोकने वाला तो है नहीं!!

कदरू ने गौर से एन्ड्रिया को देखा मानों उसके

वह नीचे उतर गया तो कुछ भुनभुनाता हुआ अपनी जगह लौट आया॥

चौथा बयान।

चोरी।

ऊपर लिखी बातचीत के दूसरे दिन कौएट मोएट क्रीटो आटविल को चला गया। उसके साथ में अली और कुछ नौकरों के सिवाय कई घोड़े भी थे जिनकी वह जांच किया चाहता था। काउएट के यकायक आटविल जाने का कारण जिसका दो दिन पहिले उसको ध्यान भी न था—वर्टशियो की वापसी थी जो उन कामों को पूरा करके लौट आया था जिसके लिये काउएट ने उसे भेजा था। समुद्र के किनारे मकान लें लिया गया था और जहाज भी खरीदा जो कर मकान के पास ही एक छोटी खाड़ी में आ गया था तथा जहाज के लिये कई होशियार मल्लाह भी मुकर्रर हो चुके थे। काउएट ने वर्टशियो से सब हाल सुन उसकी तारीफ की और कहा कि अब मेरे जाने की ... क्योंकि अब मुझे एक महीने में ... । पैरिस में ... ।

चुका हूं। मैंने खुद उन्हें खरीद कर मुनासिब जगहों अर्थात् ऐसे गावों में रखवा दिया है जहां मामूली तौर पर मुसाफिर नहीं रुकते ॥

काउरट ने कहा, "बहुत ठीक, मैं यहां दो एक दिन रहूंगा मुनासिब इन्तजाम कर लो ॥"

बर्टूशियो सलाम करके बाहर जा ही रहा था कि बैपटिस्टिन अन्दर आया जो चांदी की तश्तरी पर एक चीठी लिये हुए था। उसे धूल से भरा देख काउरट ने पूछा—"तुम यहां क्यों आये? मैंने तो शायद बुलाया नहीं !!"

बैपटिस्टिन ने अदब से वह चीठी आगे बढ़ा दी और कहा, "बहुत जरूरी है," काउरट ने चीठी खोली और पढ़ा, यह लिखा था:—

फाउन्ट महोदय को सूचना दी जाती है कि आज रात को एक आदमी उनके चेम्पस एलिसीज़ वाले मकान में कुछ कागज़ चुराने की नीयत से घुसेगा जो उनके टेबुल में हैं। काउण्ट की बहादुरी के कारण पुलिस को बुलाने की जरूरत न पडेगी जिसके आजाने से इस चीठी लिखने वाले पर मुसीबत आ सकती है। काउण्ट अपने सोने के कमरे या और किसी जगह से छिप कर अपनी चीज की रक्षा कर सकते हैं और मुमकिन है कि वे अपने किसी दुश्मन को वहां देखें। अगर कुछ पहरे वगैरह का प्रबन्ध होगा तो सम्भव है कि चोर डर जाय या किसी दूसरे मौकेपर यह कार्रवाई करे जब कि खबर देना इस चीठी लिखने वाले के लिये असम्भव हो ॥"

चीठी पढ़ काउरट को पहिला ख्याल यही हुआ कि यह चोरों की चाल है, वे उसे झूठे खतरे का डर दिला यहां से हटाया चाहते हैं जिसमें बेखौफ कोई कार्रवाई

वह नीचे उतर गया तो कुछ भुनभुनाता हुआ अपनी जगह लौट आया ॥

चौथा बयान।

चोरी।

ऊपर लिखी बातचीत के दूसरे दिन कौएट मौएट क्रीटो आर्टविल को चला गया। उसके साथ में अली और कुछ नौकरों के सिवाय कई घोड़े भी थे जिनकी वह जांच किया चाहता था। काउएट के यकायक आर्टविल जाने का कारण जिसका दो दिन पहिले उसको ध्यान भी न था—बर्टशियो की वापसी थी जो उन कामों को पूरा करके लौट आया था जिसके लिये काउएट ने उसे भेजा था। समुद्र के किनारे मकान ले लिया गया था और जहाज भी खरीदा जा कर मकान के पास ही एक छोटी खाडी में आ गया था तथा जहाज के लिये कई होशियार मल्लाह भी मुकर्रर हो चुके थे। काउएट ने बर्टशियो से सब हाल सुन उसकी तारीफ की और कहा कि अब मेरे जाने की तैयारी करो क्योंकि अब मुझे एक महीने से ज्यादा पैरिस में रहना न पड़ेगा। साथ ही यहां से तुम घोडों का ऐसा इन्तजाम करो कि मैं तीन सौ मील ट्रेपोर्ट बन्दर तक रात भर में जा सकूं॥

बर्टशियो अदब से बोला—"हुजूर ने यह बात पहिले ही कही थी और मैं इसका भी इन्तजाम कर

चुका हूं। मैंने खुद उन्हें खरीद कर मुनासिब जगहों अर्थात् ऐसे गावों में रखवा दिया है जहां मामूली तौर पर मुसाफिर नहीं रुकते ॥

काउण्ट ने कहा, "बहुत ठीक, मैं यहां दो एक दिन रहूंगा मुनासिब इन्तजाम कर लो ॥"

बर्टूशियो सलाम करके बाहर जा ही रहा था कि बैपटिस्टिन अन्दर आया जो चादी की तश्तरी पर एक चीठी लिये हुए था। उसे धूल से भरा देख काउण्ट ने पूछा—"तुम यहां क्यों आये ! मैंने तो शायद बुलाया नहीं !!"

वैपटिस्टिन ने अदब से यह चीठी आगे बढ़ा दी और कहा, "बहुत जरूरी है" काउण्ट ने चीठी खोली और पढ़ा, यह लिखा था:—

काउन्ट महोदय को सूचना दी जाती है कि आज रात को एक आदमी उनके चेम्पस एलिसीज वाले मकान मे कुछ कागज चुराने की नीयत से घुसेगा जो उनके टेबुल में हैं। काउण्ट की बहादुरी के कारण पुलिस को बुलाने की जरूरत न पडेगी जिसके आजाने से इस चीठी लिखने वाले पर मुसीबत आ सकती है। काउण्ट अपने सोने के कमरे या और किसी जगह से छिप कर अपनी चीज की रक्षा कर सकते हैं और मुमकिन है कि वे अपने किसी दुश्मन को वहा देखें। अगर कुछ पहरे वगैरह का प्रबन्ध होगा तो सम्भव है कि चोर डर जाय या किसी दूसरे मौके पर यह कार्रवाई करे जब कि खबर देना इस चीठी लिखने वाले के लिये असम्भव हो ॥"

चीठी पढ़ काउण्ट को पहिला खयाल यही हुआ कि यह चोरों की चाल है वे उसे झूठे खतरे का डर दिला यहा से हटाया चाहते हैं जिसमें बेखौफ कोई कार्रवाई

कर सकें। चीठी लिखने वाले की हिदायत के खिलाफ बल्कि उसी सबब से उसने सोचा कि चीठी पुलिस में भेज दें पर फिर तुरत ही उसे खयाल हुआ कि शायद यह कोई खास उसी का दुश्मन हो और सिर्फ वही उसे देख कर पहिचान सकता हो। काउण्ट के स्वभाव से हम लोग अच्छी तरह परिचित हो गये हैं कि वह कैसा निर्भय, साहसी और दृढ़ स्वभाव का था अस्तु उसके दिल में यह खयाल उठना कोई ताज्जुब की बात नहीं थी कि वह अकेला ही जाये और देखे कि चीठी वाले का लिखना कहां तक सही है॥

काउण्ट ने बैपटिस्टिन को बुलवाया और कहा, "अभी पैरिस जाओ और वहां मेरे जितने नौकर हैं सभों को ले कर यहां आ जाओ, मैं अपने सब नौकर यहां मौजूद पाया चाहता हूं॥"

बैपटिस्टिन०। मगर हुजूर क्या मकान में कोई नहीं रहेगा?

तरद्दुद नही होगा जितना मेरी आज्ञा पूरी न होने से होगा॥

वैपटिस्टिन ने सलाम किया। काउएट ने कहा, "तुम समझे न? अपने सब साथी यहां ले आओ, और कुछ परिवर्तन मत करो सिर्फ नीचे के मन्जिल की खिड़किये वन्द कर देना॥

वैपटिस्टिन०। और ऊपर की?

काउएट०। जैसी खुली रहा करती हैं वैसी ही रहेंगी। जाओ॥

काउएट ने भोजन किया और सन्ध्या होने के कुछ बाद सिर्फ अली को साथ लिये वह पैरिस में अपने मकान के सामने आ पहुचा। जैसा कि वैपटिस्टिन ने कहा था सारे मकान मे अन्धेरा था सिर्फ दरवान की कोठड़ी में हलकी रोशनी हो रही थी। काउएट ने अपनी तेज आंखों से जो कभी धोखा नही देती थी अपने चारो तरफ, सड़क पर, और बाग की चार दिवारी पर गौर किया और जब विश्वास हो गया कि कोई उसे देख नही रहा है तो एक छोटे दरवाजे की राह धीरे से अली को ले एक गुप्त सीढ़ी से होता हुआ मकान के अन्दर पहुंच गया। उसने यह ऐसी होशियारी से किया कि दरवान तक को मालूम न होने पाया कि मकान में जिसे वह खाली समझता है असल मालिक ही मौजूद है॥

पहिले तो काउएट ने अपने सारे मकान का चक्कर लगाया पर कही कोई शक की वात दिखाई न पड़ी

तब उसने अपने उस टेबुल के पास जा के उसे देखा, वह ज्यों का त्यों बन्द था पर ताली लगी थी। काउएट ने उसका एक गुप्त खटका लगा उसे और भी मजबूती से बन्द किया और ताली निकाल जेब में रख ली। इसके बाद उस कोठड़ी के दरवाजे की सिटकिनी जिस में गिरती थी वह अंकुड़ा उसने होशियारी से निकाल डाला और तब बगल वाले घर में जा कर एक ऐसी जगह जा बैठा, जहां से वह नीचे सड़क पर तथा सामने वाली कोठड़ी का भी हाल एक गुप्त छेद की राह देख सकता था। काउएट को शक था कि उसके दुश्मन उस का रुपया नहीं बल्कि जान चाहते हैं अस्तु उसने दो दुनाली पिस्तौल और एक बन्दूक भरी हुई अपने पास रख ली थी तथा अली एक तेज फरसा लिये हुये था॥

इस तरह चुपचाप बैठे राह देखते हुये दो घण्टे बीत गये। गिरजाघर की घडी में बारह बज गये और काउएट घबड़ा कर उठ खड़ा हुआ। उसी समय उसे ऐसा मालूम हुआ मानों कपड़ा पहिनने वाले घर की तरफ से किसी तरह की आवाज आई। काउएट ने आवाज पर गौर किया और तुरतही मालूम कर लिया कि कोई आदमी उस कमरे की खिडकी का शीशा हीरे से काट रहा है। मौएट क्रीटो का मजबूत कलेजा भी एक दफे धड़क गया, उसे मालूम होगया कि आ पहुचा॥

बैठा था अस्तु उसने देखा कि किसी अभ्यस्त हाथ ने शीशा काट कर इस होशियारी से अलग कर दिया कि जरा भी जमीन पर न गिरा और तब उस छेद की राह हाथ डाल सिटकिनी हटा खिड़की खोल दी। हलकी रोशनी कमरे के भीतर आई और एक आदमी भी नजर आया। इसी समय अली ने कुछ इशारा किया और काउण्ट ने बाहर वाली खिड़की में से झांक कर देखा एक आदमी चार दिवारी पर खड़ा इधर ही देख रहा था। काउण्ट बोला, "अच्छा! दो हैं! एक भीतर घुसता है दूसरा पहरा देता है !!" उसने अली से उस आदमी को देखते रहने को कहा और आप फिर उस पहिले आदमी की तरफ घूमा जो अब अन्दर आकर और टटोल टटोल कर कमरे के सामान का अन्दाजा ले रहा था। कमरे के दो दर्वाजे थे दोनों की सिटकिनी उसने चढ़ा दी मगर उसे यह क्या खबर थी कि काउण्ट अपनी कार्रवाई पहिले ही कर चुका है और अँकुड़ा हट जाने के कारण अब दर्वाजा बन्द नहीं हो सकता॥

दर्वाजे की तरफ से अपनी समझ में निश्चिन्त हो उस आदमी ने एक चोर लालटेन अपने पास से निकाली और उस टेबुल पर रक्खी। लालटेन की रोशनी बहुत ही हलकी थी फिर भी काउण्ट की तेज निगाह ने इस आदमी को पहिचान ही लिया और उसके मुंह से आश्चर्य के साथ निकला, "ओ हो यह तो... "

काउण्ट ने अली से बहुत ही धीरे से कुछ कहा,

जिसके साथ ही वह दबे पांव बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद वह एक पादड़ी की पोशाक लिये हुए लौटा। काउएट ने अपना कोट और कमीज उतार डाला और अब मालूम हुआ कि उसने अपने बदन पर बहुत ही महीन तारों का बुना हुआ एक मजबूत जिरह पहना हुआ है जिस पर कोई हथियार काट नहीं कर सकता। काउएट ने इसके ऊपर से पादड़ी की वह पोशाक पहिन ली॥

उधर वह आदमी टेबुल के दराज में ताली लगी हुई न पा एक झब्बे में से कुछ तालियें लगा ताला खोलने की कोशिश कर रहा था। काउएट जिसे अपने गुप्त खटके पर भरोसा था मुस्कुरा कर धीरे से बोला, "लगाया कर ताली!" और तब खिड़की की तरफ गया। वह आदमी जिसे उसने पहिले देखा था अब नीचे सड़क पर टहल रहा था मगर निगाह उसकी इधर ही थी॥

काउएट ने अली से कहा, "तुम इसी जगह रहो और चाहे कुछ हो और किसी तरह का शोर गुल हो, जब तक मैं न बुलाऊं यह जगह न छोड़ना।" अली ने सिर झुकाया और काउएट एक मोमबत्ती जला हाथ में लिये हुए उस कोठड़ी की तरफ चला जिसमें वह चोर था। कमरे का दर्वाजा इतनी आहिस्तगी से खुला कि चोर को बिल्कुल आहट मालूम न हुई पर यकायक रोशनी हो जाने से उसने चौंक कर अपना हाथ रोक लिया और पीछे की तरफ देखा। मौएट क्रीटो ने कहा,

"मि० कद्दरू! वन्दगी !! आप इस समय यहां क्या कर रहे हैं?"

कद्दरू के मुंह से वेतहाशा "ऐबी वसूनी!" निकल गया और वह इतना घबड़ा गया कि तालियों का झव्वा हाथ से छूट जमीन पर गिर गया क्योंकि उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि सिटकिनी गिरी रहने पर भी दर्वाजा कैसे खुल गया। काउण्ट दर्वाजे के सामने खड़ा होगया जिसमें वह भाग न सके और तब बोला—"जी हां मैं वसूनी ही हूं और मुझे प्रसन्नता है कि आप मुझे पहिचान गये क्योंकि आज मेरी आप की मुलाकात को करीब करीब दस बरस के गुजर चुके होंगे॥"

घबराहट और डर के मारे कद्दरू के मुंह से आवाज नही निकली। नकली ऐबी ने पुन. कहा—"तो आप काउण्ट मौण्ट क्रीटो के घर में चोरी करने आये हैं!!"

कद्दरू धीरे धीरे खिड़की की तरफ घसकता हुआ कांपते हुए शब्दों में बोला, "पादड़ी साहब! पादड़ी साहब! माफ कीजिये! मैं कसम खा कर कहता हूं ..."

कद्दरू का दम घुटा जा रहा था, वह कहीं किसी कोने में छिप जाया चाहता था। काउण्ट ने फिर कहा, "नही नहीं, मैं देखता हूं कि अभी तक तुम्हारी आदत नहीं गई, अब भी तुम वही हो—खूनी, चोर!!"

कद्द० । नही पादड़ी साहब मैं खूनी नही हूं, अदालत में जाहिर होगया कि मेरी स्त्री ने वह खून किया, मुझे सिर्फ कालेपानी की सजा हुई थी॥"

पादडी०। तो क्या तुम्हारी सजा पूरी हो गई जो तुम यहां दिखाई पड रहे हो?

कद०। नहीं पादडी साहब! मुझे किसी ने रिहाई दिलाई॥

पादडी०। तो किसी ने समाज का बड़ा उपाकर किया!!

कदरू०। जी मैंने वादा किया था....

पादडी०। और वह वादा तोड भी दिया!!

कदरू०। (अफसोस से) जी.....

पादडी०। कुछ नही, मैं देखता हूं कि तुम्हारे लिये कालेपानी ही उपयुक्त जगह है॥

कदरू०। मैं बडी गरीबी में पडा था॥

पादडी०। फजूल बात! सभी खूनी और चोर ऐसा ही कहा करते हैं। गरीबी या भूख किसी को दो रोटी चुरा लेने या भीख मांग लेने पर मजबूर कर सकती है पर यही नही कर सकती कि किसी के मकान में चोरी से घुस टेबुल तोडने को मजबूर करे!!

कदरू०। माफ करिये, माफ करिये, आपने एक दफे मेरी जान बचाई है एक दफे और बचाइये॥

पादडी०। मगर कैसे? क्या देख कर?

कदरू०। क्या आप मेरे पकड़ने के लिये सिपाही साथ लाये हे?

पादडी०। नहीं मैं बिलकुल अकेला हूं और इस बार भी मैं तुम्हें छोड़ने को तैयार हूं चाहे मेरी इस कस-

जोरी से कुछ भी क्यो न हो बशर्ते कि तुम मुझे जो कुछ मै पूछूँ साफ साफ बता दो ॥

कद०। (खुशी से हाथ जोड कर और मैारट क्रीटो की तरफ बढ़ कर) मैं सब कुछ बताने को तैयार हूं ॥

पादड़ी०। तुम्हें कालेपानी से किसने छुडाया?

कदरू०। एक अङ्गरेज ने जिसका नाम लार्ड विलमोर था ॥

पादडी०। मैं उसे जानता हूं, मैं पूछ लूंगा कि तुम सच कहते हो या झूठ! अच्छा तो लार्ड विलमोर ने तुम्हे बचाया!!

कदरू०। जी हां मुझे और मेरे एक साथी वेण्डेटो को भी ॥

पादडी०। अच्छा तो उसने दो आदमियो को कैद से छुडाया! किस तरह?

कदरू०। उसने हमलोगों को कई रेतियें दी जिन की मदद से अपनी वेडी काट हमलोग भाग निकले ॥

पादडी०। अब वेण्डेटो कहा है?

कदरू०। मुझे नही मालूम ॥

पादडी०। जरूर मालूम होगा ॥

कदरू०। (पादडी की तरफ और घसक कर) जी नही मुझे सचमुच नही मालूम!!

पादडी०। तुम झूठे हो, तुम्हे जरूर मालूम है ॥

कदरू०। जी मैं सच कहता हूं मुझे नही मालूम ॥

पादडी० (हुकूमत के साथ दुबारा) तुम झूठे हो?

कदरू०। पादड़ी साहब! मुझे....

पादड़ी०। (कड़क कर) झूठा! तुझे जरूर मालूम है कि वह कहा है बल्कि मैं समझता हूं तू उससे मदद लेता होगा। सच बता क्या तूने उससे रुपया नहीं पाया है?

कदरू०। (डर कर) जी.. जी ..हां॥

पादड़ी०। उससे तुम्हें रुपया मिला है, अच्छा उस को रुपया कहां से मिला?

कदरू०। वह एक बड़े भारी अमीर का लड़का हो गया है॥

पादड़ी०। (ताज्जुब से) अमीर का लड़का! किसका? कैसे?

कदरू०। काउएट मौएट क्रीटो का॥

पादड़ी०। "बेण्डेटो, काउएट का लड़का!" काउएट क्रीटो के ताज्जुब का हद्द न रहा, कदरू उसी समय बोला, "हां, क्योंकि ऐसा न होता तो क्यों काउएट उसके लिये एक नकली बाप बनाता, चार हजार रुपया महीना देता और मरने पर पांच लाख की सम्पत्ति देता!!"

(अब नकली पादड़ी की समझ में कुछ कुछ आने लगा। उसने पूछा, "और इस समय उसका नाम क्या है?" कदरू बोला, "एण्ड्रिया केवेलकएटी।" पादड़ी ने कहा, "ओ हो यह तो वही आदमी है जिसे मेरे दोस्त काउएट, मौएट क्रीटो ने अपने दोस्तो मे समझा है

ग्रैार जो महाजन दङ्गली की लड़की से शादी करने वाला है ?”

कदरू०। जी हां वही ॥

पादड़ी०। तब जब तुम जानते हो कि वह ऐसा आदमी है तो तुम उसका ठीक ठीक भेद खोल क्यों नही देते ?

कद०। मुझे अपने दोस्त की बुराई करने से वास्ता ?

पादड़ी०। ठीक है, तुम नही बल्कि मैं तुम्हारे इस साथी का भण्डा फोड़ूंगा ॥

कदरू०। (पादड़ी की तरफ ग्रैार घसक के) क्यों ग्राप क्या करेंगे ?

पादड़ी०। मैं मिस्टर दङ्गली से एण्ड्रिया का ग्रसल हाल कह दूंगा ॥

कदरू०। (पादड़ी की तरफ झपट के ग्रैार एक छूरा निकाल उसकी छाती में मारते हुए) नही पादड़ी साहब ! ग्राप ऐसा करने नही पावेंगे !!

कदरू को बड़ाही ताज्जुब हुग्रा जब उसने देखा कि उसके छूरे का कोई ग्रसर नही हुग्रा बल्कि छूरा टूट कर झन्नाटे की ग्रावाज देता हुग्रा जमीन पर गिर गया। उसी समय काउण्ट ने भी हत्यारे की कलाई पकड़ ली ग्रैार बड़े जोर से उमेठी, उसके हाथों में इतनी ताकत थी कि कदरू के हाथ से छूरे की मूठ गिर गई, पर काउण्ट ने उमेठना बन्द न किया बल्कि यहां तक उमेठा कि जोड़ पर से कलाई टूट गई ग्रैार कदरू जमीन

पर गिर कर चिल्ला उठा। काउएट ने अपने पैर से उसका सिर ठुकरा कर कहा, "कमीने! न जाने कौन मुझे तेरी जान लेने से रोकता है!"

कदरू चिल्ला उठा, "दया! दया!!" पर काउएट ने उस पर ध्यान न दे कड़ी आवाज में कहा, "उठ!" वह अपनी टूटी कलाई को दूसरे हाथ से पकड़े हुए डरता हुआ उठा, काउएट ने कलम दावात और कागज उसके सामने रक्खा और कहा, "जो मैं कहता हूं सो लिख!"

कदरू ने डरते डरते कलम हाथ में ली, काउएट लिखाने लगा:—

"महाशय,

जिस आदमी के साथ आप अपनी लड़की की शादी करने का इरादा कर रहे हैं वह कालेपानी से भागा हुआ क़ैदी है। मैं और वह एक साथ ही कैद हुए थे। उसका नम्बर ५९ और मेरा ५८ था और वह "वेएडेटो" कहलाता था। अपना असल नाम उसे मालूम नहीं॥"

चीठी लिखा काउएट ने कदरू से उस पर दस्तखत करने को कहा, डरते हुए कदरू ने वह भी किया, उसके बाद काउएट ने चीठी पर "मिस्टर दङ्गली, रोडी चासी एण्टिन, पैरिस" यह पता उससे लिखवाया और तब चीठी हाथ से ले कर जेब में रखते हुए कहा, "जा मैं तुझे छोड़ देता हू जहां से आया तहां ही चला जा!!"

कदरू को विश्वास नहीं हुआ कि काउएट उसे यों

छोड़ देगा, उसने कहा, "मालूम होता है आपका कोई गुप्त मतलब है, आप मुझे किसी आफत में फँसाया चाहते हैं॥"

काउण्ट ने डपट कर कहा, "हरामजादे! यह तो नहीं कहता कि मैं तुझे थाने में न भेज भागने का मौका दे रहा हूं उलटा मुझ पर शक करता है। चल निकल यहा से!!"

कद्दू उठा, काउण्ट ने खिड़की की तरफ इशारा किया, कद्दू ने डरते हुए पूछा, "मुझे आप ऊपर से ढकेल तो नही देंगे!! आखि० आप मेरे साथ किया क्या चाहते है!"

काउण्ट ने घृणा से उसे देखते हुए कहा, "दुष्ट! मैं तुझे बचाना चाहता था पर तू हत्यारा का हत्यारा ही रहा॥"

कद्दू०। पादड़ी साहब! एक दफे मुझ पर और रहम कीजिये!!

काउ०। खैर एक दफे और सही, अच्छा तू जानता है न कि मैं अपनी बात का सच्चा हूं॥

कद्दू०। जी हां, जी हां!

काउण्ट०। अगर तू सही सलामत अपने घर पहुंच गया .

कद्दू०। मुझे सिवाय आपके और डर किसका है?

काउण्ट०। अगर तू सही सलामत घर पहुंच गया तो मैं समझूंगा कि ईश्वर ने तुझे माफ किया! तू घर

पहुंचते ही पैरिस के बाहर चला जाइयो, फ्रान्स छोड़ दीजियो । अगर तेरी चाल चलन ठीक रहेगी तो मैं बराबर तुझे महीना भेजा करूंगा ! बस अब चला जा !!

कदरू खिड़की के पास पहुंचा और जिस राह आया था उसी राह बाहर निकला । काउगट ने अपनी मोमबत्ती उठा ली जिसकी रोशनी कदरू पर इस तरह पड़ी कि अगर सड़क पर कोई आदमी उस समय होता तो साफ देख लेता कि कोई खिड़की में से उतर रहा है । कदरू डर के बोला, "आप यह क्या कर रहे हैं अगर कोई देख ले तो !" काउगट ने बत्ती बुता दी और कदरू नीचे उतर गया । जमीन पर पैर रखके तब उसकी जान मे जान आई ॥

काउगट अपने सोने के कमरे में गया जहां की खिड़की से बागीचा और सड़क साफ दिखाई देती थी । उसने कदरू को एक हलकी सीढ़ी उठाये (जिसकी मदद से वह ऊपर चढ़ा था) चारदीवारी की तरफ जाते देखा और साथ ही यह भी देखा कि सड़क पर का एक आदमी (जो शायद वही था जिस पर पहिले काउगट की निगाह पडी थी) दौड़ कर उस तरफ बढ़ा जिधर कदरू जा रहा था । कदरू ने सीढ़ी दीवार के साथ लगाई और दीवार पर चढ़ गया, उसने एक निगाह चारो तरफ यह देखने के लिये डाली कि कही से कोई उसे देख तो नही रहा है और जब कोई दिखाई न पड़ा तो सीढ़ी उठा दीवार के दूसरी तरफ रक्खी और उतरने

लगा। उसी समय यकायक दीवार के अन्धेरे में से निकल कर कोई उसकी तरफ झपटता हुआ आया। उसने एक हाथ ऊपर उठते हुए देखा, जब तक वह बचने की कोशिश करे उसके पहिले ही एक लम्बे छूरे ने उसकी पीठ पर इतना गहरा घाव किया कि वह सीढ़ी छोड़ नीचे गिर गया, उसके मुंह से 'मरे' की आवाज निकली साथही बगल में दूसरा वार लगा जो पहिले से भी कारी था। उसने बेहोश होते हुए कहा "मरे! बचाओ!!" और तब जमीन पर लेट गया। उसके दुश्मन ने उसका बाल पकड़ कर एक तीसरा वार उसकी छाती पर किया और दस्ते तक छूरा घुसेड़ दिया। कदरू ने अपनी रही सही ताकत काम मे ला कहा, "पादड़ी साहब दौड़िये! खून! खून!!" और तब बेहोश हो गया॥

खूनी ने जब समझ लिया कि वह मर गया तो उसे एक लात मारी और भाग गया। उसी समय मकान का दर्वाजा खोलते हुए बसूनी ने अली के साथ लालटेन लिये हुए बागीचे में पैर रक्खा॥

पांचवां बयान।

ईश्वर का हाथ।

काउण्ट और अली बेहोश खून चूते हुए कदरू को उठाये घर के अन्दर ले गये, वह एक दम बेहोश था, काउण्ट ने उसे जमीन पर लेटा दिया और अली से उस का कपड़ा हटाने को कहा, तीन भयानक जख्म देखते ही काउण्ट के मुंह से निकला, "ईश्वर! तू कभी कभी बदला लेने में देरी करता है पर सिर्फ इसी लिये कि तेरा हाथ और भी कड़ाई से गिरे!!"

काउण्ट ने अली को एक डाक्टर तथा प्रोक्योरर को बुला लाने के लिये भेजा। अब वह अकेला कदरू के साथ रह गया। कदरू यद्यपि बेहोश था पर अभी उस में जान बाकी थी। थोड़ी देर बाद उसके मुंह से कुछ बे सिलसिले शब्द निकले और तब उसने आंखे खोल कर इधर उधर देखा! पादड़ी को सामने देख उसने कहा, "डाक्टर! डाक्टर बुलाइये!!"

पादड़ी०। मैंने बुलवाया है॥

कदरू०। मैं जानता हूं कि वह मेरी जान नहीं बचा सकेगा फिर भी कुछ ऐसा उपाय अगर कर सका जिससे मुझ में थोड़ी ताकत आजाय तो मैं अपना बयान लिखा सकूंगा!!

पादड़ी०। बयान? किसके खिलाफ?

कदरू० । अपने खूनी के !!

पादड़ी० । क्या तुम उसे पहिचानते हो ?

कदरू० । हां, वह बेरडेटो था ॥

पादड़ी० । तुम्हारा साथी ?

कदरू० । हां, उसीने मुझे इस मकान का नक्शा बताया था । जरूर उसने समझा होगा कि या तो मुझे काउण्ट मार डालेगा और वह मेरे चंगुल से छूटेगा या मैं काउण्ट को मार डालूंगा और वह पांच लाख रुपया पा सकेगा । जब ऐसा नहीं हुआ तो उसी ने मुझे मार डाला !!

पादड़ी० । मैंने प्रोक्योरर को भी बुलाया है ॥

कदरू० । पर वह समय पर नहीं आवेगा, मेरी जान जा रही है, अब मैं कुछ ही मिनटों का मेहमान हूं ॥

काउण्ट बाहर चला गया और थोड़ी ही देर में एक छोटी शीशी लिये हुए लौटा जिसमें किसी तरह का अर्क था । उस अर्क की तीन या चार बून्द उसने मरते हुए कदरू के होठों पर डाली जिसकी आंखे बन्द हो चुकी थी । बून्दे मुंह में जाने के साथ ही उसने आंखें खोल दीं और कहा, "यह दवा नई जान दे रही है, और दीजिये, और ॥"

पादड़ी० । दो बून्द और देने से तुम मर जाओगे ॥

कदरू० । ओह अगर कोई मेरा बयान सुनने वाला होता !!

पादड़ी० । कहो तो मैं लिख लूं तुम उस पर दस्त-

खत कर देना ॥

मरने के बाद भी बदला ले सकने के खयाल ने कदरू की आखें में चमक पैदा कर दी, उसने कहा, "हां हां आप लिखिये" काउण्ड ने उसके बोलने पर लिखा, "मेरी जान वेण्डेटो ने ली है जो टूलन के जेलखाने में ५९ नं० का कैदी और मेरा साथी था।" लिख कर काउण्ट ने कागज उसके सामने किया और उसने कलम ले दस्तखत किया, इसके बाद वह पुनः बेहोश होगया पर काउण्ट ने अपनी दवा की शीशी उसे सुंघाई जिससे उसे फिर कुछ होश हुआ और उसने पूछा "पादड़ी साहब ! आप मेरी सब बातें मेजिस्ट्रेट से कहियेगा जिसमें वेण्डेटो को जरूर सजा मिले ॥"

पादड़ी०। हां हां मैं जरूर कहूंगा बल्कि इतना और कहूंगा कि उसने तुमको काउण्ट के मकान का नक्शा बता कर यहां भेजा, तुम्हारा पीछा करता २ यहां तक आया और जब मेरे सबब से तुम्हें लौटना पड़ा तो उसने दीवार की आड से निकल कर तुम्हे जख्मी किया ॥

कदरू०। क्या आपने यह देखा था ?

पादड़ी०। मैं तुमसे कह चुका था कि अगर तुम सही सलामत घर पहुच गये तो मैं समझूंगा कि ईश्वर ने तुम्हें माफ किया ॥

कदरू०। और आपने सब जान के भी मुझे मौत के मुंह मे जाने दिया !!

पादड़ी०। हां, क्योंकि ईश्वर ने तुम्हारा न्याय

घेएडेटो के हाथ में दिया था और मैं उसकी इच्छा में बाधक नही हुआ चाहता था ॥

कदरू०। ईश्वर ! न्याय ! यह सब फजूल शब्द हैं, अगर इनमे से कोई भी वास्तव में होता तो आज बहुत से आदमी जेलखाने में पड़े सड़ते जो मसनद और गद्दों पर मचलते हैं ॥

पादड़ी०। (गम्भीर स्वर में) घबड़ाओ मत, धीरज धरो ॥

कदरू०। क्या आप ईश्वर को मानते हैं ?

पादड़ी०। अगर न भी मानता होता तो आज तुम्हारी हालत देख जरूर मानना पड़ता ॥

कदरू ने सन्देह की मुद्रा से सिर हिलाया, काउण्ट ने कहा, "सुनो, जिस ईश्वर के होने का तुम्हें मौत के समय में भी यातबार नही होता उसने तुम्हारे साथ क्या किया था ? उसने तुम्हे जिन्दगी दी, रोजगार दिया, तन्दुरुस्ती दी, पर इनका लाभ उठाने की जगह तुमने बदचलनी का साथ किया और नशे की हालत में अपने एक बड़े दोस्त के नाश में मददगार बने ॥

पादड़ी०। (घबड़ाहट के साथ) ओह मुझे डाक्टर की जरूरत है पादड़ी की नही, शायद मेरे जखम कारी न हों, शायद मैं अब भी बच जाऊं !!

पादड़ी०। इसका तो तुम ख्याल भी न करो, अगर मेरी तीन बून्दों का असर न होता तो तुम कभी के मर गये होते, मेरी बात सुनो ॥

कदरू० । ओह आप कैसे पादड़ी हैं जो मरते हुए को शान्ति देने के बदले और घबड़ा रहे हैं ॥

पादड़ी० । सुनो सुनो ! जब तुमने एक दोस्त के साथ घात किया तो ईश्वर ने तुम्हें होशियार करना चाहा और तुम पर गरीबी का धावा हुआ । उसी हालत में आश्चर्य रीति से मेरे जरिये एक गहरी रकम तुम्हें मिली, इतनी बड़ी रकम जो कभी तुमने देखी और सोची भी न होगी, पर क्या तुम्हें सन्तोष हुआ ? नहीं तुम्हें उस रकम को दूना करने की सूझी और तुमने एक खून कर डाला ! लाचार हो ईश्वर ने वह रुपया छीन लिया और तुम्हे सजादी ॥

कद० । मैंने खून नहीं किया ! मैंने उसे नही मारा ! वह मेरी औरत का काम था ॥

पादड़ी० । (उसकी बात पर ध्यान न दे कर) पर फिर भी ईश्वर ने तुम पर दया की और तुम्हें फांसी न होकर सिर्फ काले पानी की ही सजा मिली ॥

कदरू० । वाह कैसी दया की ! जिन्दगी भरके लिये कैद !!

पादड़ी० । कायर ! उस वक्त तैने ऐसा नही सोचा था, उस वक्त तू अपनी जान बचने पर खुश हुआ था, सभों की तरह तैने भी सोचा था कि कालेपानी का एक दर्वाजा है, कब्र का तो कोई भी नही ! और तेरा सोचना ठीक भी निकला क्योंकि एक अङ्गरेज को तेरे और तेरे एक साथी पर दया आई और उसने तुम दोनों को छु-

डाया ही नहीं बल्कि रुपया भी दिया जिसमें भविष्य में इज्जत और आराम के साथ रह सको! पर क्या तुम्हे कुछ होश आई! तुम्हें फिर भी सन्तोष न हुआ और तीसरी बार एक जुर्म करने की ठानी! आखिर ईश्वर को लाचार होना पड़ा! उसने तुम्हे सजा दी!!

कद्रू अब मौत के किनारे ही पर था, उसने कमजोर आवाज में पानी मांगा, काउण्ट ने पानी दिया, उसने पी कर गिलास लौटाते हुए कहा—"मैं तो मर रहा हूं पर वह पापी बेण्डेटो फिर भी बच जायगा॥"

काउण्ट बोला, "मैं कहता हू न कि कोई न बचेगा, बेण्डेटो भी सजा पायेगा॥"

कद्रू०। तब तुम भी सजा पाओगे क्योंकि तुमने पादड़ी का धर्म नहीं किया, तुम्हे मुनासिब था कि बेण्डेटो से मुझे बचाते॥

काउण्ट के होठों पर एक ऐसी हँसी दिखाई पड़ी जिसने इस मरते हुए आदमी का खून सुखा दिया। काउण्ट बोला "अगर तुमने मुझ पर वार न किया होता, अगर तुम्हें अपने काम पर शर्म आती, अगर तुम आगे के लिये सुधरने का इरादा दिखाते—तो मैं तुम्हें बचाता पर जब तुम मेरी ही जान लेने पर उतारू हो गये तो मैंने भी तुम्हें ईश्वर के हाथों में सौंप दिया॥

कद्रू०। (बेचैनी के साथ चिल्ला कर) ओह! ईश्वर कुछ नहीं है, मैं उसे नहीं मानता॥

पादड़ी०। चुप रह नहीं तेरी नसों से खून की आ-

खिरी बूंदें भी निकल जांयगी । क्या तुझे अभी तक ईश्वर पर विश्वास नही होता ! क्या तू उसे नही मानता जो एक शब्द, एक बून्द आंसू, एक प्रार्थना, पर माफी देता है ! जो यदि चाहता तो तुझे इसी दम मार सकता था पर जिसने फिर भी तुझे कुछ मिनटों का मौका दिया है जिसमें तू सोच सके, पश्चात्ताप कर सके, माफी मांग सके !!

कदरू० । ओह—मैं पश्चात्ताप नहीं करता, मेरे लिये कोई ईश्वर नहीं है, भाग्य नहीं है ॥

पादड़ी० । (कड़ी आवाज में) ईश्वर है, भाग्य है, और इसका सबूत यह है कि तुम यहां मौत के मुंह में पड़े ईश्वर के न होने का विश्वास कर रहे हो और मैं तन्दुरुस्त खुश स्वतन्त्र और अमीर बना हुआ तुम्हारे सामने हूं ॥

कदरू० । मगर आखिर तुम हो कौन ?

पादड़ी० । (रोशनी अपने चेहरे के पास करके) देखो और पहिचानो ॥

कदरू० । पादड़ी बसूनी ही तो हो ॥

मौण्ट क्रीटो ने नकली बाल और पादड़ी की टोपी हटादी जिससे उसकी सूरत में फ़र्क मालूम होने लगा। कदरू ने ताज्जुब से कहा, "अगर तुम्हारे ये काले बाल न हों तो मैं कहूंगा कि तुम लार्ड विलमोर हो ॥"

काउण्ट० । मैं न तो बसूनी हूं न विलमोर, गौर करो और सोचो, अपने दिमाग को और पीछे ले जाओ ॥

कद्रू०। बेशक यह तो मालूम होता है कि मैंने तुम्हें कभी देखा है॥

फाउएट०। हां कद्रू तुमने मुझे देखा है, किसी जमाने में मेरी तुम्हारी दोस्ती थी॥

कद्रू०। आखिर तुम हो कौन? अगर तुम मेरे दोस्त थे तो तुम मुझे मरने क्यों दे रहे हो?

फाउएट०। अगर तुम बचने के लायक होते तो मैं इसे भी ईश्वर की कृपा का एक सबूत समझता और अपने मरे हुए पिता की कसम खाकर कहता हूं कि तुम्हे जरूर बचाता॥

"मरे पिता की कसम!" कद्रू को ये शब्द कुछ परिचित से मालूम हुए! उसने बड़ी मुश्किल से अपने को कोहनी के बल उठाया और अपनी आंखों को जिन में मौत की सफेदी आ गई थी उसके चेहरे पर गड़ाया, पर फिर भी वह पहिचान न सका॥

काउएट ने उसकी हालत देखी, वह समझ गया कि अब मौत बिल्कुल पास आगई और यह उसकी आखिरी टिमटिमाहट है। उसने अपना शान्त मगर उदास चेहरा कद्रू के पास किया और कन्धे पर हाथ रख धीरे से कहा, "मैं हू, मैं हूं—" उसने कोई नाम ऐसे धीरे से लिया मानो वह खुद उसके सुनने से डरता हो। कद्रू पर उस नाम का विचित्र असर हुआ वह यकायक पीछे गिर गया फिर उठा और हाथ जोड़ ऊंचे की तरफ उठा बोला, "हे परमेश्वर, माफ कर! मैंने तेरी बहुत अवज्ञा

की ! माफ कर, दया कर !!" उसकी आंखें बंद हो गईं और वह गिर गया । ज़ख्मों से खून निकलना बंद हो गया । कद्रू मर चुका था ॥

काउण्ट ने विचित्र निगाह उस पर डाली और कहा, "एक !!" दस मिनट बाद डाक्टर और प्रोक्योरर को लिये अली आ पहुंचा । उस समय पादड़ी बसूनी लाश के पास बैठा ईश्वर की प्रार्थना कर रहा था ॥

छठवां बयान ।

सफर ।

काउण्ट के घर में चोरी की कोशिश और खून होने का यह हाल पैरिस भरमें फैल गया । लोगों को यह भी मालूम हो गया कि मृत कद्रू ने अपना खूनी किसी 'वेन्डेटो' को बताया है जिसकी पुलिस खोज में है । यह मुकद्दमा विलफोर्ट के हाथ में दिया गया था और वह उसकी खोज में दिलोजान से लगा हुआ था । काउण्ट ने इसके बारे में यही मशहूर किया था कि वह उस दिन पैरिस में नहीं था हां उसका दोस्त पादड़ी बसूनी भाग्यवश मौजूद था जो उसकी लाइब्रेरी की कुछ पुस्तकें देखने के लिये आया था ॥

तीन हफ़्ते बीत गये मगर खून या खूनी का भेद कुछ मालूम न हुआ । धीरे धीरे इस घटना का ध्यान भी लोगों के दिल से उतरने लगा क्योंकि प्रिन्स एन्ड्रिया

केवेलकएटी और यूजिनी दंगली की शादी होने की खबर लोगों में फैल गई थी। एण्ड्रिया के बाप मेजर केवेलकएटी को चीठी भेजी गई थी पर उन्होंने शादी पर खुशी जाहिर करते हुए लिख भेजा कि मेरी तबीयत अच्छी नहीं है इससे उस मौके पर आ न सकूगा पर यह शादी मुझे दिल से पसन्द है और मैं इस मौके पर उतना रुपया देनेको तैयार हूं जिससे डेढ लाख रुपया साल सूद की आमदनी हो सके। यह भी तै होगया था कि यह रुपया एण्ड्रिया अपने ससुर दंगली को रोजगार में लगाने के लिये दे देगा। यद्यपि एण्ड्रिया के कुछ दोस्तों ने उसे होशियार करने की नीयत से कहा था कि दंगली की कोठी इस समय डावांडोल में है जिसे इधर बराबर घाटे पर घाटा हुआ है पर एण्ड्रिया ने इन सब बातों को हवा में उड़ा दिया था। वह यूजिनी से शादी करने ही की खुशी में भरा हुआ था पर यूजिनी उसकी तरफ से बिल्कुल ही उदासीन थी, उदासीन क्या वह इससे नफरत सी करती थी और शादी के नाम से चिढ़ती थी॥

ब्यूशेम्प ने जितने दिन की मोहलत मांगी थी वह समय करीब करीब बीत चुका था। जैसा कि मारकर्फ को काउएट ने कहा था, किसी ने अखबार की छपी उस खबर पर ध्यान न दिया था और वह ज्यों की त्यो दबी रह गई थी पर फिर भी अलबर्ट का गुस्सा शान्त न हुआ था, वह अपनी बेइज्जती हो गई हुई समझता था,

दूसरे जिस ढङ्ग पर उससे व्यूशेम्प ने बातें की थीं उससे भी उसके दिल में चोट आई थी और वह मौका देखता था कि वह मीयाद पूरी हो और वह व्यूशेम्प के दफ़र में जाय॥

एक दिन सुबह को सो कर उठते ही अलबर्ट को मालूम हुआ कि व्यूशेम्प नीचे मौजूद है और उसकी राह देख रहा है। वह ताज्जुब के साथ जल्दी जल्दी तैयार हुआ और अपनी बैठक में पहुंचा जहां व्यूशेम्प इधर से उधर टहल रहा था। अलबर्ट को देख वह खड़ा हो गया और अलबर्ट बोला, "तुम्हारे यहां आ पहुंचने से मुझे आशा होती है कि तुम्हें अपनी भूल मालूम हो गई और तुम माफ़ी मांगने को तैयार हो। बताओ मैं तुम्हे दोस्त समझ तुमसे हाथ मिलाऊं?"

व्यूशेम्प के चेहरे पर दुःख की आभा देख अलबर्ट चौंका। व्यूशेम्प बोला, "यह मामला उतना सहज नहीं है जितना हमलोग समझे हुए हैं। यह लेफ्टिनेण्ट जनरल काउण्ट मारकर्फ, फ्रान्स के पीयर (रईस) के इज्जत से सम्बन्ध रखता है और सहजही में उड़ाया नहीं जा सकता!!"

अलबर्ट०। तब?

व्यूशेम्प०। मैंने सोचा कि केवल शक ही शक पर दोस्त के सामने तलवार खींचना मुनासिब नहीं, पहिले यह निश्चय करना ही होगा कि असल बात क्या है और यह जानने के लिये तकलीफ, समय या रुपया

किसी का ख्याल, करना मुनासिब नहीं, क्योंकि यह मामला एक पूरे कुटुम्ब के दुःख सुख से सम्बन्ध रखता है ॥

अलबर्ट० । आखिर !

ड्यूशेस्प० । आखिर यह कि मैं अभी अभी जनीना से लौटा आ रहा हूं ॥

अलबर्ट० । जनीना से ? असम्भव !!

ड्यू० । यह मेरी राहदारी मौजूद है, इसमें रास्ते भर के नाकों की मोहरे हैं—जनेवा, मिलन, वेनिस, ट्रीस्ट, डेलविनो और जनीना, देखो ॥

अलबर्ट ने अपनी निगाह उस कागज पर डाली और ताज्जुब से कहा, "तुम जनीना से आ रहे हो !"

ड्यू० । हां, अलबर्ट ! अगर तुम मेरे दोस्त न होकर कोई अजनबी होते तो मैं यह सब तरद्दुद न उठाता और सीधा तुमसे लड़ जाता, सिर्फ तुम्हारे लिये मैंने इतना किया । सात दिन जाते सात दिन आते, चार दिन क्वेरेनटीन और एक रोज जांच में लगा कल शाम को मैं लौटा और इस समय यहां हूं ॥

अलबर्ट० । ओह तुम जल्दी बताते क्यों नहीं कि इसका नतीजा क्या निकला !

ड्यू० । अलबर्ट ! मेरे दोस्त ! मैं डरता हूं ॥

अलबर्ट० । क्या ! किस लिये ! क्या इसलिये कि तुम्हें अपने सम्वाददाता को झूठा कहना पड़ता है !

ड्यू० । (दुःख के साथ) नहीं मेरे दोस्त, वैसा होता

तो मैं खुशी खुशी तुमसे माफी मांगता पर अफसोस....

अलबर्ट०। क्या ?

व्यूशेम्प० । दोस्त ! वह खबर सच है !!

अलबर्ट०। क्या ? क्या ? क्या वह फ्रान्सीसी अफसर, वह फरनन्द........

व्यूशेम्प० । हां ॥

अलबर्ट०। वह दगाबाज जिसने अपने मालिक का किला उसके दुश्मनों के हाथ..... ...

व्यूशेम्प० । माफ करना मेरे दोस्त ! वह आदमी तुम्हारा पिता था !!

भयानक रूप से अलबर्ट व्यूशेम्प की तरफ झपटा पर व्यूशेम्प का भाव देख उसे रुकना पड़ा जिसने एक दूसरा कागज निकालते हुए कहा, "यह मेरी बात का सबूत है ॥"

अलबर्ट ने कागज लेकर पढ़ा, उसमें लिखा हुआ था कि कर्नल फरनन्द मरडेगूं ने जो अली तबलिन का नौकर था चालीस लाख रुपये पर जनीना का किला खोल दिया था। इस बात की गवाही में जनीना के चार रईसों के दस्तखत थे और उनके दस्तखत की शिनाख्त में फ्रांसीसी राजदूत के दस्तखत थे। अब शक की कोई जगह न थी। अलबर्ट के पांव लडखड़ाने लगे और वह एक कुर्सी पर गिर गया, उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया ॥

दोस्त की हालत देख व्यूशेम्प का दिल सहानुभूति से भर गया। उसने अलबर्ट की तरफ बढ़कर कहा—

"दोस्त ! मैं इस आशा में जनीना गया था कि इस कम्बख़्त अफवाह को झूठ साबित कर सकूंगा उल्टे जब मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारे पिता ने जिसपर अली ने यहां तक विश्वास किया था कि अपना गवर्नर जेनरल बना दिया था वास्तव में यह काम किया तब फिर तुम्हारी दोस्ती के लिहाज से मुझे तुम्हारे पास आना पड़ा। अलबर्ट ! अब वह जमाना नहीं है कि बाप की गलती का फल लड़का उठावे, आजकल कोई ऐसा नहीं है जो बेदाग होने का घमण्ड करे। अब जब मुझे यह सबूत मिल गया है तो मैं तुमसे लड़ा नहीं चाहता। उल्टे मैं यह सब कागजात तुम्हे देने को तैयार हूं। क्या तुम चाहते हो कि यह सब नष्ट कर दिये जायँ? क्या तुम चाहते हो कि यह भयानक भेद हमलोगो के कलेजे के अन्दर ही रह जाय? अगर तुम चाहो तो यह भेद मेरी जुबान से बाहर नहीं निकलेगा। बोलो अलबर्ट क्या तुम ऐसा चाहते हो?"

अलबर्ट के मुंह से आवाज नहीं निकली। उसने कृतज्ञता की दृष्टि उसपर डाली और आखों से आंसू बहाता हुआ ब्यूशेम्प से चिमट गया। ब्यूशेम्प ने वे कागज उसके हाथ में दे दिये और उसने उन्हें फाड कर टुकड़े टुकडे कर डाला, केवल इतना ही नहीं एक मोमबत्ती की मदद से जो सिगार पीने वालों के लिये हमेशः टेबुल पर बलती रहा करती थी उसने उसका एक एक टुकड़ा जला डाला। उसके कृतज्ञ हृदय से केवल इतना

ही निकला, "मेरे दोस्त, मेरे दोस्त !!"

व्यूशेम्प०। अब इन बातों को एक बुरे सपने की तरह भूल जाओ और कभी इनका ध्यान भी न लाओ॥

अलबर्ट०। हां हां, सिवा उस दोस्ती और कृतज्ञता के जो मेरे पुश्त दर पुश्त के लिये तुम्हारे लिये दिलों में रह जायगी और याद दिलाती रहेगी कि मेरी जिन्दगी और मेरी इज्जत तुम्हारे सबब से बची और अब कुछ मैं नही सोचूंगा। ओह मेरे दोस्त ! तुमने मेरी ही जान नहीं बल्कि मेरी मां की भी जान बचाई, मेरी हालत सुन वह बेचारी भी जरूर जान देदेती। मगर व्यूशेम्प! अब मैं अपने पिता की तरफ किस निगाह से देखूंगा? क्या वह प्रेम वह इज्जत अब फिर मेरे दिल में रहेगी?

व्यूशेम्प०। (अलबर्ट का दोनों हाथ दबा कर) हिम्मत, हिम्मत करो दोस्त !!

अलबर्ट०। (कुछ देर चुप रह कर) लेकिन यह कुछ मालूम हुआ कि तुम्हारे अखबार में वह पहिली खबर क्योंकर छपी। क्या इस मामले के पीछे कोई गुप्त हाथ है?

व्यूशेम्प०। कुछ नहीं कह सकता, और न मैं यही कह सकता हूं कि यह मामला यही तक रह जायगा। अलबर्ट तुम्हें अभी .. ..

अलबर्ट०। (डर कर) क्या तुम समझते हो कि अभी इस आफत का अंत नही हुआ?

व्यूशेम्प०। मैं सब समझता हूं और कुछ नहीं सम-

झता, मगर यह तो बताओ तुम्हारी शादी का क्या हुआ, क्या मिस दङ्गली से शादी पक्की हो गई?

अलबर्ट०। यह तुम क्यों पूछते हो?

व्यू०। क्योंकि मुझे भास होता है कि इस मामले और तुम्हारी शादी से जरूर कुछ सम्बन्ध है॥

अलबर्ट०। (जिसका चेहरा लाल हो गया) कैसे? क्या मि० दङ्गली

व्यूशेम्प०। तुम सिर्फ यह बताओ कि क्या शादी पक्की हो गई, मेरे पूछने से और कोई मतलब न समझ बैठो॥

अलबर्ट०। खैर–वह शादी टूट गई॥

व्यूशेम्प कुछ देर के लिये चुप हो गया फिर यह देख कर कि अलबर्ट फिर गमगीन होने लगा है वह बोला, "चलो कही घूमफिर कर दिल बहला आवें॥"

अलबर्ट बोला "खुशी से" और दोनों बाहर सडक पर आये। ठंढी सडक पर कुछ समय तक घूमने बाद व्यूशेम्प बोला, "कहो तो थोडी देर के लिये काउण्ट मौण्ट क्रीटो के यहां चले। गम दूर करने के लिये वह बडा अच्छा आदमी है क्योंकि वह कभी किसी का भेद जानने के लिये सवाल नहीं करता और मेरी समझ में ऐसे आदमी बहुत अच्छे होते हैं!!"

अलबर्ट खुशी खुशी बोला, "हां हां चलो॥"

सतवां बयान ।

सफर ।

दोनें नैाजवानों का एक साथ देखते ही मैाएट क्रीटो खुशी से बोला, "ओहो ! मैं समझता हूं वह सब मामला तै हो गया !" व्यूशेम्प ने कहा, "हां काउएट! वे सब बेहूदी अफवाहें झूठ साबित हो गईं और अब अगर कोई उन्हें उठावेगा तो सबके पहिले मैं उसकी खबर लूंगा ॥"

काउएट बोला, "ठीक यही बात मैंने अलबर्ट से कही थी, फिर भी मुझे इसकी बड़ी खुशी है । (टेबुल से उठ कर जिस पर बैठा था) ओह ! कैसा कम्बख़्त काम है ॥"

अलबर्ट० । क्या है ? क्या अपने कागज पत्र दुरुस्त कर रहे हैं ॥

काउएट० । नहीं, ईश्वर की दया से मेरा कोई कागज पत्र है ही नहीं, यह मैं केवेलकएटी का काम कर रहा हूं ॥"

व्यूशेम्प० । केवेलकएटी ?

अलबर्ट० । क्या तुम एन्ड्रिया केवेलकएटी को नहीं जानते, वही नैाजवान जिसे काउएट यहां लाये हैं ॥

काउएट० । गलत बात, मैं किसी को नहीं लाया ॥

अलबर्ट० । (मुस्कुरा कर) तब कैान मिस डंग्लर्स से ब्याह करने वाला है ?

व्यूशे०। क्या केवेलकण्टी यूजिनी से व्याह करेगा !

काउण्ट०। वाह आपने यह खबर नहीं सुनी ?

व्यूशेम्प०। नही, तो क्या आपने ही यह शादी पक्की की है !

काउण्ट०। मैंने ! खूब कही, मैंने तो इसे पक्की न होने देने की कोशिश की थी बल्कि इसी सबब से मुझे ससुर और दामाद दोनें ही से कुछ बुरा भी बनना पड़ा था॥

व्यूशेम्प०। सो क्यों ?

काउण्ट०। बात यह है कि इस एण्ड्रिया के बारे में कुछ अफवाह मेरे सुनने में आई, लडकपन में दस बरस के लिये उसे अपने मा बाप से बिछुडना पडा था, चोर चुरा ले गये या क्या हुआ सो मुझे नही मालूम पर यह दस बरस उसके कैसे बीते यह कोई नही जानता और यही बात मैंने मि० दङ्गलो से कही पर वे एण्ड्रिया पर कुछ ऐसे मोहित होगये हैं कि उन्हें कुछ विश्वास न हुआ। शादी तै हो गई और मुझे मेजर केवेलकण्टी से जरूरी कागजात मँगवा देने का हुक्म हुआ। मैंने मँगवा दिये हैं पर अब मैं इस मामले से बिल्कुल हाथ धो लेता हूं। मगर अलबर्ट ! तुम्हे मैं बहुत सुस्त देखता हूं क्यो !?

अलबर्ट०। नहीं कुछ नही॥

काउण्ट०। कुछ न कुछ तो जरूर है॥

अलबर्ट०। मेरे सिर मे दर्द है॥

काउएट०। मुझे इसका बड़ा अच्छा इलाज मालूम है, सफर॥

अलबर्ट०। सफर!!

काउएट०। हां आबहवा और सीनसीनरी की तबदीली से आदमी के मन को बड़ी शान्ति मिलती है। मेरा भी वही हाल हो रहा है और मैं घबड़ा कर कुछ दिन के लिये बाहर जा रहा हूं, क्या तुम भी चलोगे?

ब्यूशेम्प०। आप घबड़ा गये हैं! ताज्जुब है!!

काउएट०। क्या आपको सबब नहीं मालूम? मेरे घर के पास जो कदरू नामक किसी आदमी का खून हो गया था इसी की जांच ने मुझे घबड़ा दिया है। आपके प्रोक्योरर मि० विलफोर्ट शायद उसका नाम सुन चुके हैं और मिस्टर दङ्गली से शायद मारसेलीज में उसकी देखा देखी हुई थी अस्तु पुलिस बड़ी सरगर्मी से इसकी जाच में लगी है, फ्रान्स भर के खूनी डकैत और चोर कदरू के खूनी बताकर मेरे पास भेजे जाते हैं, अगर तीन महीने तक यही हाल रहा तो मेरे घर का रत्ती २ हाल फ्रान्स भर के चोरों को मालूम हो जायगा और मेरा रहना मुश्किल हो जायगा, इसी से घबड़ा कर मैं भागा चाहता हूं। बोलो अलबर्ट! मेरे साथ चलोगे?

अलबर्ट०। बड़ी खुशी से। मगर कहां चलियेगा?

काउएट०। जहां साफ हवा है, साफ मैदान है, जहां शान्ति है, जहां घमण्डी का घमण्ड दूर होता है, उस जगह अर्थात् समुद्र के किनारे॥

अलबर्ट०। चलिये मैं तैयार हूं॥

काउण्ट०। आज शाम को मेरे फाटक पर एक सफरी गाडी रहेगी जिसमें मुसाफिर वैसा ही आराम पा सकता है जैसा अपने बिस्तर पर। हम लोग उसी पर सफर करेंगे। उसमें चार आदमी खुशी से चल सकते हैं, मि० व्यूशेम्प! क्या आप भी चलेंगे?

व्यूशेम्प०। नहीं काउण्ट मुझे माफ कीजिये दूसरे मैं अभी अभी समुद्र की हवा खाये आ रहा हूं॥

काउण्ट०। कहां से?

व्यूशेम्प०। यही बरोमी टापू तक गया था॥

अलबर्ट०। तो क्या हुआ, चलो न!!

व्यूशेम्प०। नही दोस्त इस वक्त माफ करो। (उठता हुआ, धीरे से) इस वक्त मेरा यहां रहना और अखबारों पर निगाह रखना जरूरी है॥

अलबर्ट०। तुम बहुत ठीक कहते हो, रहो, यहीं रहो और उस दुश्मन का पता लगाओ जिसने यह भयानक भेद खोला है॥

दोनों दोस्त एक दूसरे से विदा हुए; उनके हाथ के दबाव ने वह बातें प्रगट कर दीं जो एक अजनबी के सामने जुबान निकाल नही सकती थी॥

व्यूशेम्प के चले जाने पर काउण्ट ने कहा, "व्यूशेम्प बड़ा भला आदमी है।" अलबर्ट बोला, "हां, और सच्चा दोस्त है। मैं उसकी दिल से इज्जत करता हूं, अच्छा यह तो बता दीजिये कि आपका इरादा किधर जाने

का है॥"

काउएट०। नारमण्डी में, जाने पाओगे?

अलबर्ट०। क्यों नहीं, मैं जहां चाहूं जा सकता हूं मुझे रोकने वाला कौन है॥

काउएट०। हां ठीक है, मैंने तुम्हें इटली में देखा था, पर मेरे पूछने का मतलब यह कि क्या अद्भुत काउएट मैंाएट क्रीटो के साथ जाने पावोगे!!

अलबर्ट०। काउंट आप यह भूल जाते हैं कि मेरी मां आपको बडी श्रद्धा की निगाह से देखती है॥

काउएट०। फ्रान्सिस ने कहा है—औरतें अस्थिर होती हैं, शेक्सपीयर कहता है—औरतें समुद्र की लहर की तरह है, एक बडा भारी बादशाह था और एक कवि, अस्तु दोनों ही औरतों की प्रकृति पहिचानते थे॥

अलबर्ट०। हा पर उनका कहना औरतों के बारे में है और मेरी मां एक औरत है॥

काउएट०। मैं मतलब नहीं समझा॥

अलबर्ट०। मेरी मां उन औरतों में नहीं है, वह बहुत ही गम्भीर प्रकृति की है और उसकी प्रकृति अच्छी तरह समझने के कारण ही मैं कहता हूं कि आप कोई विचित्र आदमी हैं क्योंकि जब कभी मेरा उसका सामना होता है वह आप ही का ज़िक्र छेडती है॥

काउएट०। और मुझ पर भरोसा न करने का उपदेश देती है॥

अलबर्ट०। नही बल्कि कहती है कि अलबर्ट!

काउएट बड़े ऊंचे दिल का आदमी है उसकी कृपा अपने ऊपर बनाने की चेष्टा करो॥

मैारट क्रीटो ने अपना मुह फेर लिया और एक ऊंची सास ली, अलबर्ट बोला, "अस्तु जब उसे मेरे इस सफर का हाल मालूम होगा तो वह खुश होगी॥"

काउएट०। अच्छा तो बन्दगी, ठीक पाच बजे यहां आ जाना, उस समय चलने से हमलोग बारह एक बजे तक ट्रेपोर्ट पहुंच जायगे॥

अलबर्ट०। क्या आठ घण्टे मे आप पौने तीन सौ मील का सफर कर लेगे?

काउएट०। क्यों नहीं, बड़े सहज में॥

अलबर्ट०। सचमुच आप विचित्र आदमी हैं, अगर आप इतनी तेजी से सफर कर सक्ते हैं तो रेल से ही जल्दी नहीं (जो फ्रान्स में कुछ मुश्किल नहीं है) बल्कि तार से भी तेज पहुचेगे॥

काउएट०। खैर चूं कि इससे जल्दी हमलोग नही पहुंच सकते अस्तु आप ठीक वक्त पर आइयेगा॥

अलबर्ट बिदा हुआ। काउएट कुछ देर तक गहरी चिन्ता में डूबा रहा, इसके बाद उसने अपनी घण्टी दो दफे बजाई, बर्टूशियो हाजिर हुआ, काउएट ने उस से कहा, "मैं आज शाम को नारमेण्डी के लिये रवाना हुआ चाहता हूं। पहिले मुकाम पर के आदमियों को होशियार करने के लिये अभी आदमी भेज दो। मेरे साथ अलबर्ट मारकर्फ भी रहेंगे॥"

बर्टू शियो 'जो हुक्म' कह लौट गया और उसी समय उसने एक सवार को रवाना कर दिया, पहिले मुकाम पर उसके पहुंचते ही वहां से दूसरा आदमी दूसरे मुकाम वालों को होशियार करने के लिये दौड़ गया और इस तरह देखते देखते रास्ते के सब घोड़े तैयार हो गये। ठीक समय पर अलबर्ट भी आ पहुंचा ॥

रवाना होने के पहिले काउण्ट हैदरी से मिलने गया और उससे कुछ देर बातें कर सब इन्तज़ाम उसको सैाप बाहर आया। गाड़ी तैयार थी जिस पर दोनों सवार हुए और सफर शुरू हुआ ॥

शहर से बाहर निकलने बाद घोड़ों की चाल तेज हुई। गाड़ी सड़क पर गड़गड़ाती हुई जाने लगी। अलबर्ट की उदासी धीरे धीरे कम होने लगी उसने कहा, "काउण्ट! आपके घोड़े बड़े तेज हैं, ये क्या किसी खास मुल्क के हैं?"

काउण्ट बोला, "हां, छः बरस हुआ हँगेरी में मैंने एक घोड़ा खरीदा था जो अपनी तेजी के लिये मशहूर था, क्या दाम था यह तो मुझे मालूम नहीं क्यों कि बर्ट शियो ने दिया था पर आज के बत्तीसों घोड़े उसी की नसल के हैं ॥"

काउण्ट ने अपना सिर गाड़ी के बाहर निकाला और सीटी बजाई, अली ने उसे सुनते ही लगाम और कस कर पकड़ी और घोड़ों की चाल और भी तेज हुई, गाड़ी बिजली की तरह दौड़ी, सड़क के आने जाने

वाले ताज्जुब के साथ गरदन घुमा घुमा कर गर्द के इस गुब्बार की तरफ देखते थे जो आंधी की तरह उनके बगल से निकल जाता था। अलबर्ट कुछ देर तक इस तेजरफ्तार का आनन्द देखता रहा, अभी तक कभी उसने इतनी तेजी से सफर नहीं किया था। थोड़ी देर बाद उसने काउण्ट से पूछा, "काउण्ट! आपकी सब चीजों की तरह आपके घोड़े भी अद्भुत हैं पर आप इतने घोड़े क्या करेंगे?"

काउण्ट०। मैं उनसे काम लेता हूं॥

अलबर्ट०। पर जब उनकी जरूरत न रहेगी तब?

काउण्ट०। तब मैं उन्हे बेचने का हुक्म दूंगा, बर्टूशियो को उम्मीद है कि बिक्री से तीस चालीस हजार मुनाफा होगा॥

अलबर्ट०। तो मैं समझता हूं कि यूरप का कोई बादशाह आपके ये जानवर न खरीद सकेगा॥

काउण्ट०। तो बर्टूशियो किसी पूरबी नवाब के हाथ उन्हे बेचेगा जो इनके लिये अपना खजाना खाली कर देगा और तब अपनी रिआया को मार मारके फिर भर लेगा॥

अलबर्ट०। मैं एक बात कहूं॥

काउण्ट०। क्या?

अलबर्ट०। मेरी समझ में आपके बाद यूरोप में सब से अमीर आपका यह वेलेट बर्टूशियो होगा॥

काउण्ट०। नहीं तुम्हारा सोचना गलत है, जहां

तक मैं समझता हूं अगर बर्टूशियो का सन्दूक देखा जायगा तो उसके पास दस रुपया भी न निकलेगा ॥

अलबर्ट०। काउएट! अगर आप ऐसी ऐसी विचित्र बातें और कहियेगा तो मैं उन्हें गलत समझूंगा !!

काउएट०। मैं कोई विचित्र बात नहीं कहता, तुम बताओ, नौकर अपने मालिक का पैसा क्यों चुराता है?

अलबर्ट०। क्योंकि यह उनकी आदत होती है ॥

काउएट०। नहीं बल्कि इस लिये कि उसके स्त्री है, लड़के हैं, कुटुम्ब है, और वह उनकी बेहतरी चाहता है दूसरे उसे हमेशः अपनी नौकरी के छुट जाने का डर है और इसी लिये भविष्य की कमी पूरी करने की इच्छा है। बर्टूशियो दुनिया में बिल्कुल अकेला है, उसे जो कुछ रुपया वह खर्च करता है उसके लिये मुझे हिसाब नहीं देना पड़ता, उसे कभी नौकरी से बरतरफ होने का डर नहीं है ॥

अलबर्ट०। क्यों ॥

काउएट०। क्योंकि मुझे ऐसा अच्छा नौकर कभी नहीं मिलेगा जिसकी मौत और जिन्दगी मेरे हाथ में हो ॥

अलबर्ट०। क्या आपको बर्टूशियो पर ऐसा अधिकार है ॥

काउएट०। हां ॥

काउएट की इस "हां" ने लोहे के दर्वाजे की तरह बातचीत के सिलसिले को बन्द कर दिया और फिर दोनों

में कुछ बातचीत न हुई। रास्ते के आठ मुकामों मे बत्तीस घोड़े बदले गये और पौने तीन सौ मील का यह सफर आठ घण्टे के भीतर ही खतम हो गया। आधी रात के समय अलबर्ट ने अपने को एक आलीशान मकान में पाया जो समुन्द्र के किनारे एक बाग के अन्दर बना हुआ था। भोजन तैयार था, दोनों ने खाना खाया और तब अपने २ कमरों मे जा बिस्तरो पर आराम किया॥

खूब गहरी नीद लेकर जिस समय अलबर्ट उठा उस समय अच्छी तरह सवेरा हो गया था, अलबर्ट एक खिडकी खोल उसके सामने जा खडा हुआ। अनन्त समुद्र उसके सामने हिलोडे ले रहा था और पीछे एक घना और सुहावना जङ्गल तथा बाग था। एक छोटा जहाज लंगड़ डाले सामने खडा था जिसपर मौण्टक्रीटो का झण्डा फहरा रहा था और उसके चारो तरफ छोटी छोटी बहुत सी किश्तिये बधी थीं। चारो तरफ शान्ति थी, सौन्दर्य था, आराम था॥

दो रोज तक काउण्ट के साथ अलबर्ट ने शिकार और समुद्र की हवा खाने में बिताया। तीसरे दिन जब अलबर्ट इस मेहनत से बिल्कुलही थककर एक बरामदे में आराम कुर्सी पर झपकिये ले रहा था और माउण्ट क्रीटो अपने सरबराह से एकग्रीन हाउस का नक्शा ठीक करवा रहा था उस समय तेजी से आते हुए एक घोडे के टापों की आवाज ने दोनो को चौकाया। अलबर्ट की नीद खुल गई और उसने ताज्जुब के साथ देखा कि

तक मैं समझता हूं अगर बर्टूशियो का सन्दूक देखा जायगा तो उसके पास दस रुपया भी न निकलेगा॥

अलबर्ट०। काउण्ट! अगर आप ऐसी ऐसी विचित्र बातें और कहियेगा तो मैं उन्हें गलत समझूंगा!!

काउण्ट०। मैं कोई विचित्र बात नहीं कहता, तुम बताओ, नोकर अपने मालिक का पैसा क्यों चुराता है?

अलबर्ट०। क्योंकि यह उनकी आदत होती है॥

काउण्ट०। नहीं बल्कि इस लिये कि उसके स्त्री है, लड़के हैं, कुटुम्ब है, और वह उनकी बेहतरी चाहता है दूसरे उसे हमेशः अपनी नोकरी के छुट जाने का डर है और इसी लिये भविष्य की कमी पूरी करने की इच्छा है। बर्टूशियो दुनिया में बिल्कुल अकेला है, उसे जो कुछ रुपया वह खर्च करता है उसके लिये मुझे हिसाब नहीं देना पड़ता, उसे कभी नोकरी से बरतरफ होने का डर नहीं है॥

अलबर्ट०। क्यों॥

काउण्ट०। क्योंकि मुझे ऐसा अच्छा नोकर कभी नहीं मिलेगा जिसकी मैात और जिन्दगी मेरे हाथ में हो॥

अलबर्ट०। क्या आपको बर्टूशियो पर ऐसा अधिकार है॥

काउण्ट०। हां॥

काउण्ट की इस "हां" ने लोहे के दर्वाजे की तरह बातचीत के सिलसिले को बन्द कर दिया और फिर दोनों

में कुछ बातचीत न हुई । रास्ते के आठ मुकामों में बत्तीस घोड़े बदले गये और पौने तीन सौ मील का यह सफर आठ घण्टे के भीतर ही खतम हो गया । आधी रात के समय अलबर्ट ने अपने को एक आलीशान मकान में पाया जो समुन्द्र के किनारे एक बाग के अन्दर बना हुआ था । भोजन तैयार था, दोनों ने खाना खाया और तब अपने २ कमरों में जा बिस्तरो पर आराम किया ॥

खूब गहरी नींद लेकर जिस समय अलबर्ट उठा उस समय अच्छी तरह सवेरा हो गया था, अलबर्ट एक खिड़की खोल उसके सामने जा खड़ा हुआ । अनन्त समुद्र उसके सामने हिलोड़ें ले रहा था और पीछे एक घना और सुहावना जङ्गल तथा बाग था । एक छोटा जहाज लंगड़ डाले सामने खड़ा था जिसपर मौउण्टक्रीटो का झण्डा फहरा रहा था और उसके चारो तरफ छोटी छोटी बहुत सी किश्तिये बंधी थीं । चारो तरफ शान्ति थी, सौन्दर्य था, आराम था ॥

दो रोज तक काउण्ट के साथ अलबर्ट ने शिकार और समुद्र की हवा खाने में बिताया । तीसरे दिन जब अलबर्ट इस मेहनत से बिल्कुलही थककर एक बरामदे में आराम कुर्सी पर झपकियें ले रहा था और माउण्ट क्रीटो अपने सरबराह से एकग्रीन हाउस का नक्शा ठीक करवा रहा था उस समय तेजी से आते हुए एक घोड़े के टापों की आवाज ने दोनों को चौकाया । अलबर्ट की नींद खुल गई और उसने ताज्जुब के साथ देखा कि

उसका खिदमतगार फ्लोरेन्टिन घोडे पर से उतर कर आ रहा है। उसने घबड़ा कर सोचा "हैं! यह यहां क्यों! क्या मेरी मां की तबीयत तो कुछ खराब नहीं हुई।" उसी समय वह नौकर पास आ पहुंचा और कागज का एक पुलिंदा उसकी तरफ बढ़ा बोला, "मि० व्यूशेम्प ने भेजा है॥"

अलबर्ट ने आश्चर्य से पूछा, "व्यूशेम्प ने ?"

नौकर०। जी हां, उन्होंने ये कागज मुझे दिये, सफर खर्च के लिये रुपया दिया और एक घोड़ा किराये दिला कहा कि जहां तक जल्दी हो इन्हें आप तक पहुंचाऊं। मैं पन्द्रह घण्टों में यहां आया हूं॥

अलबर्ट ने वह कागज जिनके साथ एक चीठी भी थी ले लिया। कांपते हाथों से चीठी खोल कर पढ़ने के साथ ही उसका चेहरा पीला होगया बदन कांपने लगा और अगर नौकर पकड़ न लेता तो वह जरूर जमीन पर गिर पड़ता॥

माउण्ट क्रीटो बाहर से यह हालत देख रहा था, उसके मुंह से दर्द के साथ धीमी आवाज में निकला, "बेचारा नौजवान! अपने बाप के पापों का फल इसे भोगना पड़ रहा है॥"

इस बीच में अलबर्ट सम्हल गया था और बाकी के कागज पढ़ रहा था। सब पढ़ उसने अपने माथे का पसीना पोंछते हुए नौकर से पूछा, "फ्लोरेण्टिन! तुम्हारा घोड़ा सफर करने लायक है?"

फ्लोरेष्टिट०। जी नहीं वह एक दम थक गया है॥

अलबर्ट०। घर पर क्या हाल है?

फ्लोरेष्टिन०। और तो सब शान्ति है पर यहां के लिये रवाना होने के पहिले मैंने मैडम को रोते हुए देखा था। मुझे देख उन्होंने आपके बारे में पूछा कि कब लौटेंगे। मैंने कहा कि मि० व्यूशेम्प मुझे आपके पास भेज रहे हैं। उन्होंने पहिले तो मुझे रोकने के लिये हाथ बढ़ाया पर फ़िर कहा, "अच्छा जाओ और अलबर्ट को जल्दी यहां भेज दो॥"

अलबर्ट बोला—"हां मां! मैं आता हूं और उस कम्बख़्त का . .मगर पहिले काउण्ट से इजाजत ले लूं॥"

बेचैनी की हालत में पीले चेहरे और कांपते पैरों के साथ डरावनी आंखें किये हुए अलबर्ट मौण्ट क्रीटो के पास पहुंचा और बोला, "काउण्ट! मुझे अभी पैरिस लौटना है॥

काउण्ट०। क्यों क्यों क्या हुआ?

अलबर्ट०। एक बड़ी भारी मुसीबत आ गई है, आप मुझसे सवाल न करें बल्कि सवारी के लिये एक घोड़ा दें॥

काउण्ट०। मेरा अस्तबल तैयार है पर आप घोड़े पर जाने से बिल्कुल पस्त हो जांयगे, गाड़ी ले लें॥

अलबर्ट०। नहीं मैं बहुत जल्दी पहुंचा चाहता हूं, वह थकावट जिसके लिये आप डरते हैं मेरा फायदा ही करेगी॥

अलबर्ट दो कदम चला और फिर उस आदमी की तरह चक्कर खाकर जिसे गोली की कड़ी चोट पहुंची है एक कुर्सी पर गिर गया। मौएट क्रीटो ने पुकार कर कहा, "अली! वाई-काउएट के वास्ते एक घोड़ा लाओ! जल्दी!!"

बात की बात में घोड़ा आ मौजूद हुआ। अलबर्ट चढ़ा और अपने नौकर से यह कहता हुआ कि 'जहां तक जल्दी हो तुम लौटना' जीन पर बैठ गया। कुछ हिचकिचाहट के साथ उसने काउएट से कहा, "मेरे इस तरह जाने से आप शायद कुछ ताज्जुब करेंगे। आप नहीं जानते कि एक अखबार में छपी कुछ मामूली सतरें किस तरह आदमी को दुःख में डुबा सकती हैं (वे कागज काउएट के सामने फेंकते हुए) इन्हें पढ़ियेगा पर जब मैं आंखों की ओट हो जाऊं तब, जिसमें मेरी शर्म आप देख न सकें।" अलबर्ट ने घोड़े को एक एड़ मारी और तीर की तरह निकल गया॥

काउएट ने वह कागज जो वास्तव में एक अखबार था उठा कर देखा, एक खबर यह थी—तीन हफ्ते पहिले "इम्पार्शल में एक फ्रान्सीसी अफसर का हाल छपा था जिसने जनीना के पाशा अली का नौकर होकर भी दुश्मनों से घूस ले उसका किला दे दिया था। इस अफसर का नाम फारनन्द है और हमें मालूम हुआ है कि यह वही आदमी है जो अपने को काउएट मारकर्फ कहता है और फ्रान्स का पीयर बनाया गया है॥"

इस प्रकार यह भयानक भेद जिसे व्यूशेम्प ने दवा दिया था, पुनः उभड पडा और एक दूसरे अखवार ने इसकी खबर पा इसे जाहिर कर दिया ॥

आठवां वयान।

जाच।

सुबह के आठ बजे एक हांफते हुए घोडे की पीठ से अलवर्ट व्यूशेम्प के दर्वाजे पर उतरा। नौकर को मुनासिब हुक्म मिल चुका था अस्तु अलवर्ट के आते ही वह व्यूशेम्प के पास पहुंचा दिया गया जो नहा रहा था। अलवर्ट को देखते ही उसने सहानुभूति भरे हुए स्वर से कहा, "आ गये! मैं तुम्हारी राह ही देख रहा था॥"

अलवर्ट०। हां मैं आया, और अव तुम विना कुछ भी देर लगाये, यह वताओ कि यह भयानक वज्रपात क्योंकर हुआ क्योंकि यह तो मुझे निश्चय ही है कि तुम्हारे मुंह से इस भेद का एक शब्द भी निकलने न पाया होगा॥

व्यूशे०। मैं इस खड्यन्त्र का सब हाल कहता हूं॥

व्यूशेम्प ने हाल सुनाना शुरू किया॥

आज के दो दिन पहिले भोजन करते हुए व्यूशेम्प ने अपने विपक्षी एक अखवार में वह खबर पढी। पढने के साथही वह सन्न हो गया। भोजन छोड वह उठ खडा

हुआ और तुरत उस अखबार के आफिस में पहुंचा जिसने वह खबर छापी थी और जिसके सम्पादक से व्यूशेम्प की जान पहिचान थी ॥

सम्पादक उस समय अपना लिखा हुआ एक लेख बड़े चाव से पढ़ रहा था जब व्यूशेम्प वहां पहुंचा तो इसे देख उसे ताज्जुब हुआ और उसने आने का सबब पूछा, इसने कहा—"मैं उस लेख के विषय में आया हूं जो काउण्ट मारकर्फ के बारे में तुम्हारे अखबार में निकला है॥"

सम्पादक० । हां, देखो तो सही कैसे ताज्जुब की बात है ॥

व्यूशेम्प० । इतने ताज्जुब की कि आपके ऊपर मानहानि का मुकद्दमा चलाया जा सकता है॥

सम्पादक हँस कर बोला, "नही मेरे पास इस बात का सबूत है और ऐसा पक्का सबूत है कि मारकर्फ मेरे मुकाबिले में जुबान नही हिला सकता ॥"

व्यूशेम्प ठक हो गया, क्या वह भयानक भेद खुल ही गया! आखिर धीरे धीरे बातचीत करके उसने पता लगा लिया कि एक आदमी सम्पादक के पास वे सब कागजात ले कर पहुंचा और जब उसे विश्वास होगया तो उसने वह खबर छाप दी। व्यूशेम्प लौटा और आते ही उसने अलबर्ट को बुलाने को आदमी भेजा ॥

छपने के साथ ही बिजली की तरह वह खबर चारो तरफ फैल गई । चेम्बर आफ पीयर्स में उस दिन बड़ी

उत्तेजना दिखाई पडी। सभी पीयरों (रईसों) के हाथ में वह अखबार दिखाई देता था और सभी इस मामले मे बातें कर रहे थे। मारकर्फ से कोई खुश न था क्योंकि उसका स्वभाव बडा घमण्डी था इसके इलावे सभी को पीयरों की सभा की बेइज्जती और बदनामी का खयाल हो रहा था॥

मारकर्फ के एक नये घोड़े की जाच में लगा हुआ होने के कारण उसे वह अखबार पढने का मौका नही मिला था जिसमे उसके बर्खिलाफ वह भयानक खबर छपी थी अस्तु आज जिस समय घमण्ड से तना हुआ वह पीयर सभा मे पहुंचा उसे कुछ भी खबर नही थी कि उसके ऊपर कैसा भारी तूफान टूटा चाहता है। वह मामूली तरह पर आकर अपनी जगह पर बैठ गया मगर बाकी के पीयरों की निगाह बराबर उस पर पड रही थी और सभी के हाथ में वह अखबार दिखाई दे रहा था। कुछ समय तक सभा की मामूली कार्रवाई होती रही पर आखिर एक मेम्बर ने भण्डा फोड ही दिया और वह अखबार हाथ में ले खडा हो कर कहा, "इस अखबार में हमारी इस सभा के एक मेम्बर के खिलाफ बडी भयानक बात छपी है जिसकी तरफ सभा का ध्यान मैं दिलाया चाहता हूं॥"

सब कोई एकदम चुप होगये और उसने वह अखबार पढ़ना शुरू किया। पहिले तो मारकर्फ ने उधर ध्यान नहीं दिया पर जनीना और फरनन्द का नाम

सुनते ही वह चौंक गया और यकायक उसका चेहरा पीला हो गया। जिगरी जख्मों की यही खासियत है वे छिप जाते हैं पर कभी अच्छे नहीं होते, हमेशः दर्द करते हैं हमेशः खून बहाने को तैयार रहते हैं ऊपर से मुंदे रहने पर भी भीतर से हमेशः खुले रहते हैं॥

गहरे सन्नाटे के बीच में वह खबर पढ़ी गई, चारों तरफ गुरगों होने लगी और कई मेम्बर बोल उठे "शर्म शर्म !!" मारकर्फ इतना घबड़ा गया कि उसके मुंह से साफ आवाज नहीं निकली। सभापति ने लोगों से पूछा, "क्या आप लोग चाहते हैं कि इस मामले की जांच हो!" लोगों ने जोर से कहा, "हां" सभापति ने निश्चय किया कि उस दिन शाम को जांच करने के लिये कमेटी बैठेगी जिसमें काउण्ट मारकर्फ को अपने बचाव के सब कागजात ले कर आना चाहिये।" मारकर्फ ने अस्पष्ट अक्षरों में कुछ कहा और जांच करने के लिये बारह आदमी चुन कर सभा बन्द हुई। मारकर्फ अपने घर आया/ बाकी मेम्बर भी बिदा हुए॥

यहां तक का हाल कह कर व्यूशेम्प कुछ रुका। अलबर्ट ने कहा, "हां हां कहो, रुको मत!" व्यूशेम्प बोला, "मुझे बड़ी दुखदाई बात कहनी पड़ेगी!" अलबर्ट बोला, "ठीक है पर औरों की बनिस्बत तुम्हारे ही मुंह से सुनना अच्छा है॥"

व्यूशेम्प०। तो फिर हिम्मत के साथ सुनो॥

अलबर्ट ने मानो अपनी पस्तहिम्मती को दूर करने

के लिये अपने माथे पर हाथ फेरा, उसका भाव वैसे आदमी की तरह था जो लड़ाई मे जाने के पहिले अपनी ढाल को जांचता और तलवार की धार देखता है। ब्यूशेम्प कहने लगा॥

"सन्ध्या हुई, पैरिस उत्कण्ठित हो गया, बहुत से कहते थे कि तुम्हारा बाप बिल्कुल बेकसूर है, बहुत कहते थे कि नही वह दोषी है और सन्ध्या के पहिले ही भाग जायगा। मैंने उस कमेटी के मौके पर मौजूद होने के लिये बडी कोशिश की और आखिर एक पीयर की मदद से समय से बहुत पहिले ही कुमेटी के स्थान पर पहुच एक मोटे खम्भे की आड में मैं जा खड़ा हुआ जहां से सभी की निगाहों से छिपा हुआ मैं सब कुछ सुन और देख सकता था। आठ बजे के पहिले ही कुमेटी के सब मेम्बर और सभापति आ पहुचे और ठीक आठ बजे तुम्हारे पिता ने वहां पैर रक्खा। उस समय उन्होने फौजी पोशाक पहिनी हुई थी, भाव स्थिर था, कदम मजबूत थे, और आंखे तेज थी, उनके हाथ में कुछ कागजात भी थे। उनके इस तरह आने का मेम्बरो पर बहुत अच्छा असर पडा और कई ने उनसे हाथ भी मिलाया॥

अलबर्ट का दिल यह हाल सुन भर उठा, जिन लोगों ने ऐसी मुसीबत में उसके पिता पर भरोसा किया था वे अगर इस समय उसके सामने होते तो वह उन्हें गले लगा लेता। ब्यूशेम्प कहने लगा :—

" सब कोई बैठे और कुमेटी की कार्रवाई शुरू हुई

काउण्ट मारकर्फ को बोलने का हुक्म हुआ और उन्होंने खड़े होकर अपना बचाव कहना शुरू किया। इसमें कोई शक नहीं कि जो कुछ बातें उन्होंने कहीं वे बड़े मार्के की थीं। जो कागजात उन्होंने पेश किये उनसे साबित होता था कि अली को मरते दम तक उनपर पूरा विश्वास था और उसने एक बड़े ही मुसीबत के मौके पर जिन्दगी और मौत के मामले का एक नाजुक सन्देसा उन्हें दे बादशाह के पास भेजा था, उन्हें अपनी खास अंगूठी दी थी जिससे अली मोहर किया करते थे और जिसे दिखा कर वे तुम्हारे पिता दिन रात में जब चाहें महल के अन्दर तक जा सकते थे, अली को उन पर यहां तक विश्वास था कि मरती समय उसने अपनी स्त्री और बेटी को उन्हें सौंप दिया था॥

ये बातें सुनते ही अलबर्ट चौंका और उसे 'हैदरी' का किस्सा याद आ गया जिसने इस अंगूठी और अपनी तथा अपनी मा के फ्रान्सीसी अफसर के हाथ में जाने का कुछ और ही हाल सुनाया था। उसने उद्वेग के साथ ब्यूशेम्प से पूछा, "तब, क्या हुआ?"

ब्यूशेम्प०। काउण्ट मारकर्फ की बातों का केवल मुझ पर ही नहीं बल्कि सभों पर गहरा असर पड़ा और हमलोगों को विश्वास होने लगा कि वह बेकसूर हैं। उसी समय एक नौकर ने एक चीठी लाकर सभापति को दी जिस पर उन्होंने लापरवाही से निगाह डाली पर पहिली ही लाइन पढ़ कर चौंके और तब कई बार उस

छोटी चीठी को उन्होंने पढा इसके बाद काउएट से पूछा, "आप कहते हैं कि अली ने अपनी स्त्री और बेटी को आपके हवाले करदिया था!" काउएट ने जवाब दिया, "हां, पर मेरी बदकिस्मती से वसीलिकी और हैदरी कहीं गायब हो गईं।" सभापति ने पूछा, "क्या आप उन्हें पहिचानते थे!" काउएट ने कहा, "हां, अली को मुझ पर इतना विश्वास था कि और नहीं तो बीस दफे मुझे उनकी प्यारी बेगम को देखने का मौका मिला होगा।" सभापति ने पूछा, "क्या आप कह सकते हैं कि उनकी क्या दशा हुई!" काउएट ने जवाब दिया, "हां, मैंने सुना कि रञ्ज और मुसीबत और शायद गरीबी ने उन्हें अपना शिकार बना लिया और उन्होंने जान से हाथ धोया। मैं खुद उस समय गरीब था, मेरी जान खतरे में थी, मैं बहुत इच्छा होने पर भी उन्हें खोज न सका।" सभापति ने पूछा, "क्या आप अपनी इस बात का कोई गवाह दे सकते हैं!" काउएट ने कहा, "बहुत अफसोस है कि एक भी नहीं। उस समय जो जो मेरे या अली के साथी थे सभी मर गये या भाग गये, उस भयानक लड़ाई में मेरे मुल्क वालों में से शायद अकेला मैं ही जीता बचा। मेरी सच्चाई के सबूत में मेरे पास सिर्फ ये चीठियां और यह अंगूठी है जो आपके सामने हाजिर है, और सबसे भारी बात जो मैं कह सकता हूं यह है कि मेरे ऊपर इतना बुरा अभियोग लगा कर भी कोई मेरा प्रतिद्वन्दी सामने आने की हिम्मत नहीं करता॥"

सभों के ऊपर इस बात का बहुत अच्छा असर पड़ा और अलबर्ट! अगर उस कुमेटी की कार्रवाई वहीं तक खतम हो जाती तो इसमें कोई शक न था कि तुम्हारे बाप बेकसूर कहकर छोड़ दिये जाते पर ऐसा नहीं हुआ। सभापति ने वह चीठी जो उन्हें दी गई थी दिखाते हुए कहा, "आपलोगों की इजाजत हो तो मैं वह चीठी पढ़ कर सुनाऊँ।" सभों की रजामन्दी पा उन्होंने चीठी पढ़ी, यह लिखा था:—

"प्रेसीडेण्ट महोदय! लेफ्टिनेन्ट जेनरल कौण्ट मारकर्फ की एपिरस और मेसीडोनिया की कार्रवाइयो की जाच करने के लिये जो कुमेटी बैठी है उसे मैं कुछ बहुत ही जरूरी बातें बता सकती हू। मैं अली पाशा की मौत के समय पर मौजूद थी, और मुझे वसीलिकी और हैदरी की हालत मालूम है, मैं अपनी गवाही सुनाने को तैयार ही नहीं हूं बल्कि इसका हक रखती हू। इस समय मैं बाहर मौजूद हूं॥"

चीठी पढ़ कर सभापति रुके। सभों की निगाह काउण्ट की तरफ घूमी जिनका चेहरा यकायक पीला हो गया था। सभापति ने मेम्बरों से पूछा, "क्या मैं इस गवाह को बुलवाऊं?" सभों ने कहा "हां" और वह औरत बुलवाई गई। थोड़ी ही देर में नौकर के पीछे २ वह आई। उस समय उसका चेहरा और तमाम बदन बुरके से ढँका हुआ था तौ भी यह मालूम हो गया कि वह कोई कमसिन नाजुक औरत है। सभो की निगाहें उस तरफ घूम गईं और सभापति ने उसे चेहरा खोलने का हुक्म दिया। उसने बेउज्र अपना बोरका हटा दिया

और तब सभों ने ग्रीक देशीय पोशाक पहिरे एक बड़ी ही सुन्दर औरत को अपने सामने पाया॥

अलबर्ट बोल उठा, "बेशक यही होगी!"

ब्यूशेम्प०। कौन?

अलबर्ट०। हैदरी॥

ब्यूशेम्प०। तुम्हें किसने कहा?

अलबर्ट०। (लम्बी सांस के साथ) मैं समझता हूं। कहे चलो ब्यूशेम्प, तुम देखते हो कि मैं शान्त हूं॥

ब्यू०। काउण्ट मारकर्फ ने इस औरत की तरफ डर और घबराहट से देखा। कुमेटी के मेम्बर भी ताज्जुब के साथ उसे देखने लगे। सभापति ने उसके बैठने के लिये कुर्सी का बन्दोबस्त करना चाहा पर उसने इन्कार कर दिया। तब सभापति ने पूछा, "आप कहती हैं कि जनीना की उस दुर्घटना के मौके पर आप खुद मौजूद थी?" उस औरत ने कहा, "जी हां" जिसपर सभापति ने कहा, "मगर उस समय तो आप बहुत ही छोटी रही होगी?" वह बोली, "हां मैं उस समय [illegible] थी लेकिन उस मामले से मुझे बड़ा गहरा सम्बन्ध है। जिसके कारण मुझे वह सब हाल अच्छी तरह याद है।" सभापति ने पूछा, "आपको उस घटना से क्या सम्बन्ध था और आप कौन हैं?" वह बोली, "मेरा नाम हैदरी है मैं अली तबलिन जनीना के हाकिम और उसकी वसीलिकी की लड़की हूं।"

यह कहते हुए उस नौजवान लड़की ने

और घमंड मिले हुए भाव के कारण लाल हो आया। उस का ढंग, उसके आंखों की चमक, उसके रतबे, और उस की बातों ने कुमेटी पर गहरा असर किया और का-उण्ट की तो ऐसी हालत हो गई मानों उसपर बिजली गिर पड़ी हो। सभापति ने अदब से झुक कर हैदरी से पूछा, "मैं सिर्फ एक आखिरी सवाल और करूंगा, क्या आप इन बातों का कोई सबूत भी दे सकती हैं जो अभी आपने कही हैं?"

"हां महाशय!" कह हैदरी ने एक रेशमी खरीता निकाला और कहा—"मेरी मां ईसाई थी और मैं भी उसी मजहब में पाली गई। यह मेरी पैदाइश की सनद है। इसपर मेरे पिता और उसके दर्बार के और रईसों की मुहरें हैं। एपिरस और मेसीडोनिया के बड़े पादरी का दस्तखत भी है। दूसरा सबूत यह एक रसीद है जो आरमेनिया के गुलामी सौदागर अलकोबीर ने उस फ्रान्सीसी अफसर को दी थी जिसने मुझे और मेरी मां को चार लाख रुपये पर उसके हाथ बेचा था।" यह बात हैदरी के मुंह से सुनते ही काउण्ट का चेहरा मुर्दा की तरह हो गया और आंखें डरावनी हो गईं। कुमेटी के मेम्बरों ने भी यह सब अच्छी तरह और गहरे सन्नाटे के साथ देखा और सुना॥

हैदरी ने वह रसीद बढाई जो अरबी भाषा में लिखी हुई थी। यह समझ कर कि शायद अरबी या फारसी के कुछ कागजात पेश हों और उनके पढ़े जाने की जरूरत

कुमेटी में पढ़े इन भाषाओं का जानने वाला एक दुभाषिया मौजूद रक्खा गया था अस्तु वह इस कागज को पढ़ने लगा और एक पीयर जिसे वह भाषा मालूम थी देखने लगा। कागज में यह लिखा था—

"मैं—'अलकोवीर' गुलामों का सौदागर मंजूर करता हू कि मैंने फ्रान्सीसी लार्ड काउण्ट आफ मैाण्ट क्रीटो से एक पन्ना जिसकी कीमत आठ लाख रुपया है एक बादो की कीमत में पाया है जिसका नाम हैदरी है और जो अनीना के पाशा अली तबलिन और उनकी प्यारी बेगम वसीलिकी की बेटी है जिन दोनो को आज से दस बरस पहिले मैंने एक फ्रान्सीसी अफसर कर्नल फरनन्द मडेगू से खरीदा था जो उस समय अली पाशा का नोकर था॥

आज की तारीख १२४७ हिजरी को बादशाही मोहर सनद के साथ यह रसीद मैं लिखे देता हू —

द० अलकोवीर—बा० खुद॥"

सौदागर के दस्तखत के बगल में बादशाही मोहर थी और इस रसीद में किसी तरह का शक नही किया जा सकता था। एक भयानक सन्नाटा उस कुमेटी के ऊपर छा गया और सभों की छिपी निगाहें मारकर्फ के ऊपर पड़ीं जिसकी सूरत ऐसी हो गई थी माना मुर्दा हो। सभापति ने पूछा, "मैडम ! क्या काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो से इस मामले में मैं कुछ पूछ सकता हू जो मैं सुनता हू आज कल पैरिस ही मे हैं ?" हैदरी ने कहा, "नहीं, आज तीन दिन हुए वे नारमण्डी चले गये, यहां नही हैं।" सभापति ने पूछा, "तब आप किसके कहने से आज यहा आई हैं?" हैदरी ने जवाब दिया, "सिर्फ अपने

दिल का हुक्म पाकर! अपने पिता की मौत का ध्यान हर दम मुझे बंधा रहता था और मैं बराबर उस निमकहराम से बदला लेने का मौका ढूंढा करती थी जिसने मेरे पिता के साथ दगा की। यद्यपि मैं काउएट मौएट क्रीटो के मकान में रहती हूं जो मुझे अपनी बेटी की तरह रखते हैं फिर भी मुझे सब बातों की खबर रहती है। मैं जानती थी कि वह दगाबाज आज कल पैरिस ही में है अस्तु जैसे ही मुझे आज सवेरे यह हाल मालूम हुआ मैं यहां आ गई।" सभापति ने पूछा, "तो क्या काउएट मौएट क्रीटो को आपके यहां आने का इरादा मालूम नहीं है?" हैदरी बोली, "नही बिल्कुल नहीं और मुझे यही डर है कि वे कही यह हाल सुन मुझ पर नाराज न हों (आस्मान की तरफ आंख उठा कर) पर आज का दिन मेरे लिये बड़े सौभाग्य का है जब कि अपने पिता के खून का बदला लेने का मौका मुझे मिला है॥"

मारकर्फ ने इस बीच में एक बात भी कही न थी। सच तो यह है कि उसकी सारी हिम्मत और ताकत हवा में मिल गई सी मालूम होती थी, यहां तक कि कइयों को तो उसकी किस्मत पर रहम भी मालूम हुआ जिसे एक कमसिन औरत के होठो से निकली दो बातों ने कुचल दिया था। सभापति ने पूछा, "काउएट मारकर्फ! क्या आप इस लेडी को पहिचानते हैं जो अपने को अली पाशा की लड़की कहती हैं?" मारकर्फ ने कुर्सी से उठने की कोशिश करते हुए लड़खड़ाती आवाज से कहा,

"नहीं यह सब दगा है; यह मेरे दुश्मनों की कार्रवाई है जो मेरा नाश किया चाहते हैं।" हैदरी जिसकी आंखें दरवाजे की तरफ इस तरह घूमी हुई थीं मानों किसी की राह देख रही हो यह सुनते ही पलटी और मारकर्फ को देख जोश से बोली, "तू मुझे नहीं पहिचानता! फरनन्द मण्डेगू! मेरे बाप का गुलाम और नौकर! मैं तुझे जानती हूं, तूही वह दगाबाज है जिसने जनीना का किला दुश्मनों के हाथ सौंपा! तू ही वह निमकहराम है जिसे मेरे बाप ने बादशाह के पास अपना दूत बना कर भेजा था पर तू एक झूठा कागज ले कर लौटा! तुझे ही पाशा ने वह अंगूठी दी थी जिसकी मदद से तू ने सलीम को धोखा देकर मारा! तूने ही मुझे और मेरी मां को कोबीर के हाथ बेचा, खूनी, हत्यारे! तू मुझे नहीं जानता मगर मैं तुझे जानती हूं!! पापी! अभी तक तेरे माथे पर तेरे मालिक का खून है! महाशयो देखिये!!"

हैदरी ने ये बातें ऐसे जोश और उत्तेजना के साथ कहीं कि सभों की निगाहें मारकर्फ की तरफ घूम गईं जिसने इस तरह अपने माथे पर हाथ फेरा मानों अभी तक उसे वहां अली का गर्म खून मालूम हो रहा हो। सभापति ने हैदरी से पूछा, "आप फरनन्द मण्डेगू को अच्छी तरह पहिचानती हैं।" हैदरी बोली, "हां, बहुत अच्छी तरह, आह मेरी मा! क्या तैंने इसे बता कर मुझ से नहीं कहा था कि बेटी! इस दगाबाज की सूरत खूब

याद रख! इसी की बदौलत तू जो किसी दिन शाहजादी होती आज बांदी है, यही वह आदमी है जिसने तेरे बाप का सर अपने भाले की नोक पर उठाया था, इसी ने हम लोगों को कोबीर के हाथ बेचा, देख उसके दाहिने हाथ को अच्छी तरह देख रख जिस पर एक जख्म का लम्बा दाग है जिसमें अगर तू उसकी सूरत भूल भी जाय तो उस हाथ के दाग की मदद से उसे पहिचान सके जिसमें कोबीर की दी हुई अशर्फियां पड़ी थीं। क्या मैं इसे नहीं जानती? खूब जानती हूं, अच्छी तरह पहिचानती हूं॥"

हैदरी का एक एक शब्द मानों मारकर्फ का खून चूस रहा था, उसमें उठने बोलने तक की ताकत रह नहीं गई थी। आखिरी बात सुनते ही उसने अपना दाहिना हाथ जिसमें सचमुच एक लम्बे जख्म का दाग था अपने कोट के भीतर दबा लिया। मेम्बर लोग उसकी यह हालत देख ताज्जुब में हो गये। सभापति ने उससे पूछा, "मारकर्फ! तुमने इस लेडी की बातें सुनी? क्या तुम्हें जवाब में कुछ कहना है? क्या तुम चाहते हो कि इस मामले की जांच करने दो आदमी जनीना जांय? क्या और कुछ सबूत तुम दिया चाहते हो? क्या चाहते हो बोलो, बिल्कुल डरो मत कि हमलोग पक्षपात करेंगे, नहीं हमलोग ईश्वर और राजा की तरफ से यहां न्याय करने के लिये बैठाये गये हैं और न्याय करेंगे? बोलो तुम्हें क्या कहना है॥"

बडी मुश्किल से मारक्फ के गले से निकला, "मुझे कोई जवाब नहीं देना है।" मेम्बरों ने सिर हिला२ कर एकदूसरे की तरफ देखा, सभापति ने पुनः पूछा, "तो क्या अली तबलिन की बेटी का कहना ठीक है? क्या तुमने वे सब भयानक कार्रवाइयां करी हैं जिनका इल्जाम तुम पर लगाया जा रहा है?" काउण्ट ने सभापति और मेम्बरों की तरफ ऐसी दीन दृष्टि से देखा जो शेरों का कलेजा पिघला देती पर कुमेटी पर उसका कोई असर न हुआ, तब काउण्ट ने छत की तरफ निगाह की पर तुरत ही हटा ली मानो वहां देखने की सामर्थ्य न हो। फिर पागलो की तरह कुर्सी से उठ उसने अपना कोट फाड डाला जो उसे गला घोंटता सा मालूम हुआ और तब एक दम उस कमरे के बाहर भाग गया। कुछ देर तक दौडते जाते हुए उसके पैरो की आहट सुनाई पडी और तब उसकी गाडी के रवाना होने की आवाज आई। सभापति ने पूछा, "महाशयो! क्या काउण्ट मारकर्फ दगाबाजी और बेईमानी का कसूरवार है?" सभों ने एक स्वर से कहा "हां"

हैदरी ने यह फैसला चुपचाप सुना, उसके चेहरे से न तो खुशी मालूम हुई न दया ही, तब अपना बोरका फिर से पहिना और सभापति तथा मेम्बरों को सलाम कर वह घूमी और धीरे धीरे बाहर निकल गई॥

नौवां बयान।

इलजाम।

व्यूशेम्प बोला—उस वक्त अन्धेरे और सन्नाटे में मौका पा मैं भी अपनी जगह से हटा और छिपता हुआ उस कमरे के बाहर निकल आया, दर्वाजे पर पहुच मैंने एक बार भीतर की तरफ देखा और तब दुःख और खुशी मिली हुई हालत मे मैं अपने घर लौटा! दुःख मुझे तुम्हारे कारण हुआ और खुशी उस बहादुर औरत की हिम्मत पर हुई जिसने इस तरह अपने बाप का बदला चुकाया। परन्तु अलबर्ट! इसमें कोई शक नहीं कि यह भेद चाहे किसी तरह से भी खुला हो पर इसमे हाथ किसी गुप्त शक्ति का जरूर है॥"

अलबर्ट ने हाथो से अपना मुंह छिपाया हुआ था, व्यूशेम्प की बात सुन उसने अपना चेहरा जो शर्म से लाल और आंसुओ से तर होरहा था उठाया और कहा, "मेरे दोस्त! मेरी जिन्दगी खतम होगई! मगर तुम्हारी तरह मैं भाग्य की बात सोच चुप बैठा नहो रह सकता! मैं उस आदमी को खोजूँगा जिसने यह भेद खोला, और जब मैं उसे पाऊँगा तो या तो उसे मार डालूगा या मैं खुद मर जाऊँगा। व्यूशेम्प! अगर घृणा ने तुम्हारा भाव बदल नही दिया है तो मैं समझता हूं तुम मेरी मदद करोगे!"

व्यूशे०। घृणा! क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे

बापकी इस बेइज्जती से तुम्हारी बेइज्जती हुई? नही नही वह जमाना कभी का बीत गया! अब हर एक आदमी सिर्फ अपनी कार्रवाइयों का जिम्मेदार है। अलबर्ट! तुम्हारी जिन्दगी अब शुरू हुई है, मेरी बात माने, तुम नौजवान हो, कुछ दिन के लिये पैरिस छोड दो! यहां सब घटनाए बडी जल्दी भूल जाती हैं। दो चार बरस के बाद जब तुम किसी रूसी शाहजादी को अपनी स्त्री बनाकर यहां लौटोगे तो किसी को यह सब याद भी नहीं रहेगा॥

अलबर्ट०। व्यूशेम्प! तुम्हारे और मेरे विचारों में बडा फर्क है, तुम इसे भाग्य समझते हो, मैं इसे किसी दुश्मन की कार्रवाई समझता हू। मैंने निश्चय कर लिया है कि जैसे हो सकेगा उस दुश्मन को खोजूंगा और उससे लडूंगा, चाहे तुम मेरी मदद करो या न करो मैं अपने बापकी बेइज्जती का बदला लूगा ही॥

व्यूशेम्प०। जब तुम्हारा यही ख्याल है तो ऐसा ही सही! खोजो, उस दुश्मन को खोजो, मैं तुम्हारे साथ हूं॥

अलबर्ट०। तो देर की जरूरत नही, मैं अभी यह काम शुरू किया चाहता हूं। एक एक मिनट मेरे लिये एक युग की तरह है॥

व्यूशेम्प०। मैं तुमसे एक बात कहता हू जो जनीना से लौटने पर तुमसे कह न सका था॥

अलबर्ट०। क्या? जल्दी कहो॥

व्यूशेम्प०। जनीना पहुचते ही मैं वहां के एक महा-

जन के पास इस बातका भेद जानने के लिये गया, मेरे मुंह से दो ही लफ्ज सुनते ही वह बोल उठा, "ओह! मैं समझ गया कि तुम क्यों आये हो?" मैंने ताज्जुब से पूछा "आप क्या और कैसे समझे?" वह बोला, "दस बारह रोज पहिले एक और आदमी ने भी यह सब बातें दरियाफ्त की थीं। मैंने पूछा, 'किसने?' वह बोला— "पैरिस के एक महाजन ने, जिससे मेरा कारबार है और जिसका नाम है—दङ्गली॥"

अलबर्ट चौंक कर बोला, "ठीक है ठीक है, बेशक यह उसी का काम है, मेरे पिता के पीयर बनाये जाने से वह जल उठा, इसी से उसने इस तरह अपना बदला लिया, शादी के भी यकायक टूटने का यही सबब है। बेशक इस भेद के खुलने का कारण वही है॥

व्यूशेम्प०। गुस्से में मत आओ, खोजो, जांचो, और अगर यह सच निकले...

अलबर्ट०। अगर सच निकले तो उसे अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा॥

व्यूशेम्प०। अलबर्ट! तुम जानते हो, वह अब बूढ़ा हो गया है॥

अल०। मैं उसकी उम्र की उतनी ही इज्जत करूंगा जितनी उसने मेरे खान्दान के नेकनामी की की है, अगर मेरे बाप ने उसका कुछ बिगाड़ा था तो वह सामना सामनी मुकाबला करता!!

व्यूशेम्प०। मैं तुम्हें मना नहीं करता पर बहुत सोच

विचार कर काम करने को जरूर कहता हूं॥

अल०। तुम घबडाओ मत मैं सब कुछ सोच चुका, आज का दिन खतम होने के पहिले अगर दङ्गली कसूरवार है तो वह जीता न बचेगा या मैं न रहूंगा! क्या तुम इसी समय चलने को तैयार हो?

ब्यूशेम्प उठ खडा हुआ, दोनों ने बाहर आ कर गाडी किराये की। महाजन के दर्वाजे पर पहुंच उन्होंने एण्ड्रियां केवेलकण्टी की फिटन और उसके नौकर को देखा, अलबर्ट बोला, "अच्छा है, अगर महाजन नही लड़ेगा तो मैं उसके दामाद को मारूंगा!!"

नौकर ने अलबर्ट के आने की इत्तला की पर दङ्गली ने कल की घटना याद कर अलबर्ट से मिलना नामंजूर किया और दर्वाजा बन्द करने का हुक्म दिया। मगर उसी समय अलबर्ट जो बाहर खडा यह बात सुन रहा था धक्का दे नौकर को हटा ब्यूशेम्प को लिये कमरे के अन्दर घुस आया। उसका यह ढङ्ग देख दङ्गली जोर से बोला, "वाह, क्या खूब है कि अपने घर के अन्दर भी मैं जबरदस्ती होती हुई देखता हूं, तुम्हें क्या होगया है?"

अल०। पहिले आप मेरी बात सुन ले तब यह सब कहते रहियेगा॥

दङ्गली०। आप क्या चाहते हैं कहिये॥

अलबर्ट०। (आगे बढ़ता हुआ) मैं चाहता हूं कि आप दस मिनट के लिये किसी ऐसी निराली जगह में मुझसे मिले जहा दो आदमी जांय मगर एकही लौटे॥

दङ्गली का चेहरा पीला पड़ गया, एरिङ्गया जो अभी तक एक कोने में खडा था और जिसकी तरफ देख कर भी अलवर्ट ने कोई ध्यान न दिया था एक कदम आगे बढ़ा, अलवर्ट ने यह देख उसकी तरफ घूम कर कहा, "और महाशय आपसे भी मेरी यही प्रार्थना है क्योंकि आप भी अब एक तरह पर इस घराने के ही माने जाने लगे हैं॥"

एरिङ्गया ने ताज्जुब के साथ दङ्गली की तरफ देखा। अलवर्ट के एरिङ्गया से यह कहने से दङ्गली का शक कुछ बदला और उसने सोचा कि शायद यह किसी दूसरे ही सबब से आया है। वह उठ कर खडा होगया और बोला, "देखिये हजरत! अगर आप इस नौजवान से इस लिये बदला लिया चाहते हैं कि आपकी जगह मैंने इसे पसन्द किया है तो दूसरी बात है और मुझे पुलिस को इसके लिये लिखना पड़ेगा॥"

अलवर्ट०। आपका सोचना गलत है, मेरा मतलब इस समय उस शादी से बिल्कुल ही नहीं है। मैं तो सिर्फ आपका मुकाबिला करने आया हूं। इन्होंने इस मामले में कुछ दखल देना चाहा इससे इनसे भी मैंने वह बात कह दी। इन से ही क्यों मैं इस वक्त तमाम दुनिया से लड़ने को तैयार हू॥

दङ्गली०। (गुस्से और डर से पीला होकर) देखो मैं तुम्हें कहे देता हूं कि जब मैं कभी किसी पागल कुत्ते को देखता हूं तो तुरत उसे गोली मार देता हू और अपने

को किसी तरह पर कसूरवार समझने के बदले मैं यह खयाल करता हू कि मैंने समाज के साथ एक उपकार किया। अगर तुम पागल हो गये हो तो मैं बिना रहम तुम्हे भी मार डालूंगा। क्या यह मेरा कसूर है कि तुम्हारे बाप की बेइज्जती हुई है ?

अल०। (गुस्से से) हा ! तुम्हारा कसूर है॥

दङ्ग०। (पीछे हट कर) मेरा कसूर ! मेरा क्या कसूर है ? क्या मैं फौज में भरती हुआ ? क्या मैंने जनीना का किला

अल०। (डपट कर) चुप रहो, फजूल बात मत करो ! मैं खूब जानता हू कि अगर तुम्हारे सबब से न होता तो ये बाते हमेशः के लिये दबी रहतीं, तुम्हों ने यह भण्डा फ़ोडा !!

दङ्गली०। मैंने ? मैंने क्या किया ?

अल०। तुमने अखबार में वह खबर भेजी ! तुमने जनीना से वह खबर मॅगवाई !!

दङ्गली०। जरूर मैंने जनीना लिखा था और तुम्हारे पिता के बारे में दरियाफ्त किया था। जब मैं तुम्हारे साथ अपनी लडकी की शादी करनेवाला हू तो तुम्हारे घराने के बारे में अच्छी तरह जाच करने का क्या मुझे अधिकार नही है ?

अल०। जनीना चीठी भेजने के पहिले ही तुम्हे वह सब हाल मालूम था॥

दङ्गली०। नही बिल्कुल नही, मुझे तो तुम्हारे पिता

ग्रैर ग्रली के सम्बन्ध तक का हाल नही मालूम था॥

ग्रल०। तब तुमने जनीना चीठी ही क्यों लिखी? यया किसी ने लिखने की सलाह दी?

दङ्गली०। बेशक॥

ग्रल०। किसने? कैसे? कब?

दंगली०। ग्रोह यह तो बिल्कुल मामूली बात है। एक महाशय से बात ही बात मे तुम्हारे पिता का जिक्र ग्राया, मैंने कहा कि उनके पास इतना रुपया न जाने कहां से ग्राया, उसने कहा कि ग्रपनी जवानी में उन्होंने जहा काम किया होगा वहीं से रुपया भी पैदा किया होगा। मैंने कहा कि जवानी मे तो उन्होने फौज में भरती हो कर मिश्र में कहीं नैाकरी की थी। उसने कहा—तो फिर मिश्र या जनीना में दरियाफ्त करो, बस मैंने जनीना को लिखा ग्रैार वह विचित्र हाल सुना!!

ग्रल०। तुम्हारे किस दोस्त ने जनीना लिखने की सलाह दी?

दंग०। वही जो ग्रापका दोस्त है, काउएट मैाएट क्रीटो॥

ग्रल०। मैाएट क्रीटो ने तुम्हे जनीना लिखने को कहा!!

दंगली०। हां मैाएट क्रीटो ने॥

ग्रलबर्ट ग्रैार दंगली ने एकदूसरे [illegible] ताज्जुब मे देखा, ब्यूशेम्प [illegible] "क्या [illegible] जवाब ग्राया वह ग्राप [illegible]। दिख [illegible]

दंगली०। हां, मैंने उन्हें दिखा दिया था। उसके बाद ही काउएट मारकर्फ मेरी लड़की इस अपने लड़के के वास्ते मांगने आये, मैंने साफ इन्कार कर दिया यद्यपि कोई सबब नहीं बताया, और बताने की जरूरत ही क्या थी? मारकर्फ की इज्जत या वेइज्जती से मुझे वास्ता ही क्या!!

अलबर्ट का चेहरा लाल हो गया, अब शक करने की कोई जरूरत नहीं थी। वह समझ गया कि यह सब कार्रवाई मौएट क्रीटो ही की थी। उसने हैदरी की जुबानी यह सब हाल पहिले ही से मालूम कर रक्खा था अस्तु मौका मिलने पर दंगली को जनीना लिखने की सलाह दी, जब वह जवाब मालूम हो गया तो मुझसे (अलबर्ट से) हैदरी से मुलाकात कराई पर उस फ्रांसीसी अफसर का नाम छिपाने को कह दिया। इसके बाद जब भंडा फूटने को हुआ तो मुझे सैकड़ों कोस दूर लिवा ले गया। वेशक यह सब कार्रवाई मौएट क्रीटो की ही है, वह जरूर मेरे दुश्मनों से मिला हुआ है॥

अलबर्ट ने यह सब बातें बड़ी तेजी से सोचीं और ब्यूशेम्प से अपना शक बयान किया। उसने सब सुन कर कहा, "वेशक मुझे तुम्हारा खयाल ठीक मालूम होता है तुम्हें मौएट क्रीटो से जवाब तलब करना चाहिये॥"

अलबर्ट ने दंगली की तरफ घूम कर कहा, "महाशय! मैं काउएट मौएट क्रीटो के पास जाता हूं, पर आप यह न समझें कि मैं आपको आखिरी सलाम कर रहा हूं।"

उसने दंगली को सलाम किया और ब्यूश्रेम्प को साथ लिये बाहर चला गया॥

दसवां बयान।

बेइज़्ज़ती।

महाजन के घर से बाहर होते ही ब्यूश्रेम्प ने अलबर्ट का हाथ पकड़ उसे रोका और कहा, "पहिले मेरी बात सुन लो! तुम कहां जा रहे हो?"

अल०। काउण्ट मौण्ट क्रीटो के यहां। तुमने भी तो कहा है कि उसी से जवाब मांगना होगा॥

ब्यूश्रेम्प०। हां कहा तो है, पर तुम ज़रा फिर से सोचो। दंगली के पास आने में तो कोई डर न था क्योंकि वह लालची है, दौलत का भूखा है, रुपये को जान समझता है, पर काउण्ट के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता, वह हिम्मतवर और बहादुर है, मुझे पूरी तरह से विश्वास है कि वह तुम्हारी बातें सुन तुमसे सिर्फ लड़ने को ही नहीं तैयार हो जायगा बल्कि तुम उसे अपने से बहुत मजबूत भी पाओगे॥

अल०। तो यह और भी उत्तम होगा, मैं भी यही चाहता हूं कि मारा जाऊं और मेरे बाप के शिर से कलङ्क का धब्बा हटे, मेरे मरने से सब ठीक हो जायगा॥

ब्यूश्रेम्प०। अपनी मां की तरफ देखो, वह रञ्ज से जान दे देगी॥

अरा०। आह ! प्यारी मां !! (चिन्ता से माथे पर हाथ फेरते हुए) जरूर तू अपनी जान दे देगी ! पर शर्म से मरने से ऐसे मरना अच्छा ही होगा !!

व्यूशे०। तब तुम सब सोच चुके ? काउण्ट के पास हम लोग चलें ?

अल०। हां चलो ॥

दोनों उसी किराये की गाड़ी पर चढ़े और काउण्ट के घर पहुंचे। दर्वाजे ही पर वैपटिस्टिन दिखाई पड़ा अलबर्ट ने उससे पूछा, "काउण्ट हैं ?"

वैप०। हां, पर वे अभी नारमण्डी से लौटे हैं इससे कुछ आराम कर रहे हैं और हुक्म दे गये हैं किसी की इत्तला न की जाय ॥

अलबर्ट०। आखिर कब आदमी उनसे मिल सकता है ?

वैप०। कुछ देर बाद स्नान करेंगे, तब भोजन करेंगे फिर घण्टा भर सोयेंगे उसके बाद रात को थियेटर देखने जायेंगे ॥

अल०। तुम्हें ठीक मालूम है ?

वैप०। हां, उन्होने आठ बजे गाड़ी तैयार रखने का हुक्म दिया है ॥

अलबर्ट ने कहा, "अच्छा तो ठीक है।" और तब लौटा। रास्ते में वह व्यूशेम्प से बोला, "व्यूशेम्प ! अगर तुम्हे कोई जरूरी काम करना हो तो उसे निपटा लो, आठ बजे मैं तुम्हारे साथ थियेटर जाऊंगा। अगर हो

सके तो शेटू रेनाड को भी लेते आना ॥"

पौने आठ बजे आने का वादा कर ब्यूशेरप बिदा हुआ और अलबर्ट अपने घर लौटा। वहां से उसने फ्रान्सिस, डिब्रे और मारल को चीठियें लिखीं और शाम को थियेटर मे आने को कहा। इसके बाद वह अपनी मां से मिलने गया जो दुःख सें भरी एकान्त में बैठी हुई थी। अलबर्ट को देख उसका अपने आंसुओ का रोकना असम्भव होगया और अलबर्ट की भी आंखें भर आईं, कुछ देर तक आंसू बहाने के बाद जब मरियम कुछ शांत हुई तो अलबर्ट ने उससे पूछा, "मां! तुम्हे मालूम है कि काउएट मारकर्फ का कभी कोई गहरा दुश्मन भी था ?"

अपने बेटे के मुंह से 'मेरे पिता' की जगह काउएट मारकर्फ सुन मरियम चिहुंक गई पर धीरे से बोली— "बेटा! तुम्हारे पिता का रतबा ऐसा था कि उनके बहुत से गुप्त दुश्मन हो सकते हैं, जिन दुश्मनों को हम जानते हैं उनसे भयानक वे दुश्मन हैं जिन्हें हम नहीं जानते॥"

अलबर्ट०। हां, और इसी से तो मैं तुमसे पूछता हूं क्योंकि तुम्हारी अक्ल बहुत तेज है और तुम बहुत कुछ समझ सकती है॥

मरियम०। तुम्हारा क्या मतलब है ?

अलबर्ट०। शायद तुम्हे याद हो कि जब हमारे यहां बाल नाच हुआ था तो मौएट क्रीटो ने कुछ खाया नहीं था॥

एक दम चौंक कर मरियम बोली, "मौण्ट क्रीटो ! इस मामले से उसे क्या सम्बन्ध ?"

अलबर्ट०। शायद तुम्हें मालूम हो कि पूर्वी मुल्कों में यह चाल है कि वहां दुश्मन के घर में जाने पर लोग कुछ खाना नहीं खाते जिससे बदला लेती दफ्त निमक का खयाल न हो। मौण्ट क्रीटो भी एक तरह पर पूरबी ही है॥

मरियम का चेहरा पीला हो गया। वह कांपती आवाज में बोली, "मौण्ट क्रीटो और हमारा दुश्मन! अलबर्ट तुम पागल तो नहीं हो गये हो ? वह तो हमारा बड़ा भारी दोस्त है, उसने तुम्हारी जान बचाई है ! ओह अलबर्ट क्या तुम उसे अपना दुश्मन समझते हो ? नहीं बेटा! मैं राय देती हूं नहीं नहीं मैं प्रार्थना करती हूं कि यह गलत खयाल जाने दो और उसकी मेहरबानी अपने ऊपर बनाये रक्खो॥"

अलबर्ट०। क्यों ? किस लिये ? क्या इसको कोई खास सबब है ?

मरियम के गालों पर यह सुनते ही एक गुलाबी रंगत दौड़ गई पर फिर वह पहिले ही की तरह पीली होगई। अलबर्ट बोला, "शायद इसलिये कि वह आदमी हमें नुक्सान पहुंचा सकता है ?"

मरियम०। (कांप कर) अलबर्ट ! आज तुम कैसी बातें कर रहे हो ? काउण्ट ने क्या किया है ? अभी तीन दिन हुआ तुम उसके साथ नारमण्डी में थे ! तीन दिन

पहिले उसे तुम अपना दिली दोस्त समझते थे !!

अलबर्ट के होठों पर एक हंसी दौड़ गई। मरियम ने उसे देखा और समझा भी, पर कुछ कहना या पूछना मुनासिब न समझा सिर्फ इतनाही कहा, "अलबर्ट! मेरी तबीयत अच्छी नहीं है, अकेले बैठने से मेरा जी घबराता है। तुम मेरे ही पास बैठो, आज कहीं जाओ मत॥"

अलबर्ट०। मैं बड़ी खुशी से ठहरता पर आज एक बड़ा जरूरी काम है इससे रुक नहीं सकता॥

मरियम ने एक लम्बी सांस ले कर कहा, "तब जाओ! मा की भक्ति अपने काम से ज्यादा जरूरी नही है!!"

मानों उसने सुनाही न हो इस तरह अलबर्ट घूम पड़ा और कमरे के बाहर निकल गया। उसके जाते ही मरियम ने एक विश्वासी नौकर बुलाया और उसे हुक्म दिया कि अलबर्ट के पीछे पीछे जाय और वह कहां जाता या क्या करता है इसका हाल आ कर सुनावे। इसके बाद वह कपड़ा इत्यादि पहिन तैयार हो कर बैठ गई॥

अलबर्ट अपने कमरे में चला गया। आठ बजे के कुछ पहिले व्यूशेम्प आया और दोनों आदमी थियेटर को रवाना हुए। शेटूरेनाड वहां मौजूद था, डिब्रे और मारल अभी आये न थे पर अलबर्ट को विश्वास था कि समय के पहिले जरूर आ पहुंचेंगे। उसे आशा थी कि मौरट

कौटो खेल शुरू होने के पहिले ही आ जायगा पर खेल का आरम्भ हो भी गया और वह कहीं नजर न आया। अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ बेचैनी के साथ अलबर्ट बार बार उस बौक्स की तरफ देखता था जिसे काउएट ने किराये लिया हुआ था। आखिर पहिला सीन खतम हुआ और उसी समय मारल के साथ काउएट को आते हुए अलबर्ट ने देखा॥

अपनी जगह पर बैठ काउएट ने चारों तरफ देखा, अलबर्ट की तरफ उसकी निगाह गई पर उसका गुस्से से तमतमाया चेहरा और लाल आंखें देख उससे आंख मिलाना मुनासिब न समझ उसने अपनी निगाह फेर ली और दूसरी तरफ देखने लगा पर फिर भी उसने अलबर्ट पर नजर जरूर रक्खी और जब दूसरे सीन के आखीर में उसने अलबर्ट को उठते और अपनी तरफ आते देखा तो समझ लिया कि अब तूफान फटा चाहता है। आखिर ऐसा ही हुआ, काउएट मारल से हँस २ कर बातें कर रहा था कि उसके बक्स का दरवाजा जोर से खुला और व्यूशेम्प और ब्यू रेनाड को लिये हुए अलबर्ट भीतर आया॥

बड़ी प्रसन्नता दिखाते हुए काउएट ने अपना हाथ उनकी तरफ बढाया और कहा, "आइये! बड़ी खुशी की बात है कि मेरी याद तो आई!!" यद्यपि भीतर ही भीतर काउएट सब कुछ समझता था पर उसको अपने ऊपर इतना काबू था कि सिवाय दोस्ती के उसके स्वर

से और कुछ प्रगट नही होता था॥

अलबर्ट०। इस जगह हमलोग मीठी २ बातें करने और झूठी दोस्ती का दावा करने नहीं आये हैं बल्कि आप से एक बात का जवाब तलब करने आये हैं॥

काउएट०। जवाब तलब करने! और इस जगह थियेटर में!!

अलबर्ट०। तो फिर किया क्या जाय? अगर कोई अपने को घर के अन्दर बन्द कर ले और दूसरे से इस लिये न मिले कि वह नहा रहा है सो रहा है या खा रहा है तो फिर लाचारी के साथ जहां मौका मिले वहीं उस से बात करनी होगी॥

काउएट०। मगर मुझसे मिलना तो वैसा कठिन नही था! अगर मैं भूलता नहीं हूं तो अभी कल ही आप मेरे मेहमान थे॥

अलबर्ट०। (आवाज ऊंची करके जिसमें और लोग भी सुने) कल मैं आपका मेहमान इस लिये था कि तब तक मुझे यह पता नहीं था कि आप कौन हैं॥

काउएट०। (शान्त स्वर में) आपको क्या होगया है? मुझे आपकी बुद्धि ठिकाने नही मालूम होती॥

अल०। (गुस्से के साथ) क्यो मालूम होगी क्योंकि अब मैं आपको बेईमानी समझ गया और आप से बदला लेने को तैयार हू॥

काउएट०। महाशय! आप मेहरबानी करके आदमियत से काम ले, यह मेरी जगह है और सिर्फ मुझेही

इस जगह अपनी आवाज दूसरे से तेज करने का अख़्तियार है! आप अभी बाहर निकल जांय॥

अलबर्ट०। (अपना दस्ताना उतारकर और हाथ में ले कर *) मैं तुम्हे घर से बाहर निकालने की तर्कीब जानता हूं॥

काउंएट०। (उस दस्ताने की तरफ देखते हुए) खैर मैं समझ गया कि तुम मुझसे लड़ा चाहते हो। पर मैं एक राय देता हूं उसे याद रक्खो! जब किसी को मुकाबिले के लिये ललकारो तो इसकी नुमाइश मत करो। क्योंकि अलबर्ट मारकर्फ! नुमाइश हर एक को अच्छी नहीं लगती॥

मारकर्फ के नाम के साथ ही चारो तरफ खलबली पड़ गई क्योंकि चारो तरफ उसी के मामले की धूम मची हुई थी। अलबर्ट भी काउएट की बात का मतलब समझ गया, उसने अपना दस्ताना काउंएट पर फेंकना चाहा पर मारल ने उसका हाथ पकड़ लिया और शेटू तथा व्यूशेम्प ने यह देख कि अलबर्ट अब बहुत ज्यादती कर रहा है उसे पीछे से रोका, मगर काउएट ने उठ कर वह दस्ताना अलबर्ट के हाथ से ले लिया और कहा, "मैं आपके इस दस्ताने को अपने ऊपर फेंका हुआ मान लेता हूं और अब इसमें मैं गोली लपेट कर वापस करूंगा!

*जब एक आदमी दूसरे को डूयेल लड़ने के लिये ललकारता है तो किसी आम जगह में उसकी बेइज्जती करने की नीयत से अपना दस्ताना उतार कर उसके ऊपर फेंकता है॥

पर अब आप चले जांय नहीं मैं नौकरों को हुक्म दूंगा कि आपको गरदन में हाथ दे कर निकाल दें॥

गुस्से से बफरता हुआ अलबर्ट बाहर चला गया और मारल ने दर्वाजा बन्द कर काउण्ट की तरफ देखा जिसका कलेजा लोहे का और चेहरा पत्थर का सा था क्योंकि वह पहिले की ही तरह शान्त भाव से दूरबीन उठा इधर उधर देखने लगा था। मारल ने उससे पूछा, "आपने उसके साथ क्या किया है?" काउण्ट ने जवाब दिया, "कुछ नहीं, कम से कम इस नौजवान के साथ कुछ नहीं॥"

मारल०। आखिर इस पागल पन का कोई सबब तो होहीगा॥

काउण्ट०। काउण्ट मारकर्फ के मामले ने उसे बद-हवास कर दिया है॥

मारल०। पर उससे और आपसे क्या सम्बन्ध?

काउण्ट०। हैदरी ने ही उस कुमेटी को असल भेद बताया था॥

मारल०। सचमुच! हां, मैंने सुना कि वह बांदी जो आपके घर पर रहती है अलीपाशा की लड़की है, बड़े ताज्जुब की बात है!!

काउण्ट०। हां, पर बहुत ठीक है॥

मार०। पर अब आप अलबर्ट के साथ क्या करेंगे॥

काउण्ट०। अलबर्ट के साथ क्या करूंगा! मारल, मैं तुमसे सच कहता हूं कि कल दस बजे के पहिले मैं

उसे मार डालूंगा॥

नारल०। (दुःख से) आह फाउरट! उसका बाप उसे बहुत चाहता है॥

फाउ०। (यकायक गुस्से के साथ) ओह उस कम्बख़्त का ज़िक्र मेरे सामने मत करो, मैं उसे अच्छी तरह कह दूंगा॥"

फाउरट का भाव देख नारल ताज्जुब में हो गया और फिर उसने कुछ पूछना या कहना मुनासिब न समझा। फाउरट भी इस तरह चैन देखने में लग गया जैसे कुछ हुआ ही न था॥

खाना भी न समाप्त हुआ और कुछ देर के लिये चैन हुआ। फाउरट के कमरे का दर्वाज़ा किसी ने खटखटाया और फाउरट के "कौन है, भीतर आओ" कहने पर रूबेन्स भीतर आया। फाउरट ने उसे देखते ही मुस्कुरा कर बैठने का इशारा किया। वह बोला, "फाउरट! मैं कुछ देर हुआ यसदर्ट के साथ यहां आया था॥"

फाउ०। (हंस कर) हां हां, और शायद आपने उस के साथ भोजन भी किया या दिन भी बिताया होगा। मुझे यह देख खुशी है कि आप उसकी बनिस्बत बहुत शान्त हैं॥

रूबेन्स। मुझे दुःख है कि यसदर्ट के द्वारा दिखाया और बेहद बदनामी की, मैं उसकी तरफ सिर्फ उसकी तरफ से, इसके लिये आपसे माफ़ी मांगता हूं और इस बात की आशा करता हूं कि आप

पर अब आप चले जांय नहीं मैं नौकरों को हुक्म दूंगा कि आपकी गरदन में हाथ दे कर निकाल दें॥

गुस्से से बफरता हुआ अलबर्ट बाहर चला गया और मारल ने दर्वाजा बन्द कर काउण्ट की तरफ देखा जिसका कलेजा लोहे का और चेहरा पत्थर का सा था क्योंकि वह पहिले की ही तरह शान्त भाव से दूरबीन उठा इधर उधर देखने लगा था। मारल ने उससे पूछा, "आपने उसके साथ क्या किया है?" काउण्ट ने जवाब दिया, "कुछ नहीं, कम से कम इस नौजवान के साथ कुछ नहीं॥"

मारल०। आखिर इस पागल पन का कोई सबब तो होहीगा॥

काउण्ट०। काउण्ट मारकर्फ के मामले ने उसे बदहवास कर दिया है॥

मारल०। पर उससे और आपसे क्या सम्बन्ध?

काउण्ट०। हैदरी ने ही उस कुमेटी को असल भेद बताया था॥

मारल०। सचमुच! हां, मैंने सुना कि वह बांदी जो आपके घर पर रहती है अलीपाशा की लड़की है, बड़े ताज्जुब की बात है!!

काउण्ट०। हां, पर बहुत ठीक है॥

मार०। पर अब आप अलबर्ट के साथ क्या करेंगे॥

काउण्ट०। अलबर्ट के साथ क्या करूंगा! मारल, मैं तुमसे सच कहता हूं कि कल दस बजे के पहिले मैं

उसे मार डालूंगा ॥

मारल०। (दुःख से) आह काउण्ट! उसका बाप उसे बहुत चाहता है ॥

काउ०। (यकायक गुस्से के साथ) ओह उस कम्बख़्त का ज़िक्र मेरे सामने मत करो, मैं उसे अच्छी तरह कष्ट दूंगा ॥"

काउण्ट का भाव देख मारल ताज्जुब में हो गया और फिर उसने कुछ पूछना या कहना मुनासिब न समझा। काउण्ट भी इस तरह खेल देखने में लग गया जैसे कुछ हुआ ही न था ॥

चौथा सीन समाप्त हुआ और कुछ देर के लिये खेल रुका। काउण्ट के बक्स का दर्वाजा किसी ने खट खटाया और काउण्ट के "कौन है, भीतर आओ" कहने पर ब्यूशेम्प भीतर आया। काउण्ट ने उसे देखते ही मुस्कुरा कर बैठने का इशारा किया। वह बोला, "काउण्ट! मैं कुछ देर हुआ अलबर्ट के साथ यहां आया था ॥"

काउ०। (हंस कर) हां हां, और शायद आपने उस के साथ भोजन भी किया या दिन भी बिताया होगा। मुझे यह देख खुशी है कि आप उसकी वनिस्वत बहुत शान्त हैं ॥

ब्यूशेम्प०। मुझे दुःख है कि अलबर्ट ने बहुत गुस्सा दिखाया और बेहद ज्यादती की, मैं अपनी तरफ से, सिर्फ अपनी तरफ से, उसके लिये आपसे मांफी मांगता हूं और इस बात की आशा करता हूं कि आप जनीना

और हैदरी के बारे में दो चार सवालों का जवाब देंगे जिससे यह मामला सहज ही में तय हो जाय॥

काउण्ट०। (हंस कर) वाह आपने तो मेरी आशा ही तोड़ दी॥

व्यूशेरूप०। सो क्या?

काउण्ट०। अभी तक तो आप लोगों ने मुझे कोई अद्भुत, विचित्र, भयानक, आदमी बना रक्खा था। आप लोग मुझे 'लारा' 'मेनफ्रेड' 'रथवेन' आदि बनाये हुए थे और यकायक अब आप मुझे फिर मामूली आदमी की सतह पर लाया चाहते हैं! मुझसे मेरे कामों का सबब जाना चाहते हैं! वाह क्या कहना है!!

व्यूशेरूप०। (कुछ गर्म आवाज में) फिर भी कभी कभी यह मुनासिब है........

काउण्ट०। मि० व्यूशेरूप! काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो पर सिर्फ काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो ही हुक्म चला सकता है। अस्तु उस विषय पर आप कृपा कर कुछ न कहें। मेरे जो जी में आता है सो मैं करता हूं और हमेशः ठीक ही करता हूं॥

व्यूशे०। (गुस्से से) महाशय! इज्जतदार आदमियों से ऐसा बर्ताव आपको न करना चाहिये! हमारी इज्जत कुछ जमानत भी चाहती है॥

काउण्ट०। (रूखे और डरावने ढङ्ग से) महाशय! मैं जीता जागता जामिन मौजूद हूं। हम दोनों की नसों में खून है और हम उसे बहाया चाहते हैं, यही हमारी

जमानत है। जाइये वाईकाउण्ट से कह दीजिये कि कल मैं देखूंगा कि उसका किस रङ्ग का है॥

ब्यूशेम्प०। तो फिर मैं डूयेल का बन्दोबस्त करूं?

काउण्ट०। बडी खुशी से, और इतनी मामूली बात के लिये मुझे थियेटर मे तङ्ग करना महज फजूल था। फ्रान्स में लोग तलवार या पिस्तौल से लडते हैं, अरब में कटार से, अफ्रिका में बन्दूक से, मैं सभी से लडने को तैयार हू केवल यही नही बल्कि अपनी विचित्रता दिखाने के लिये मैं पासा फेंक कर भी जीत हार करने को तैयार हू जो कि महज बेवकूफी है पर मेरे लिये नहीं क्योंकि मुझे अपनी जीत का पूरा विश्वास है॥

ब्यूशेम्प०। पूरा विश्वास है!!

काउण्ट०। (लापरवाही से) बेशक! नही तो मैं उससे लडता ही नहीं!! आपको विशेष सोच विचार या देर करने की जरूरत नही, कल सुबह एक लाइन लिख कर मुझे खबर दे दीजियेगा कि अस्त्र कौन होगा और जगह क्या रहेगी॥

काउण्ट की बातें और उसका ढङ्ग देख ब्यूशेम्प बिल्कुल घबडा गया, उसकी समझ में नहीं आता था कि वह किसी पागल से बात कर रहा है या किसी देव से। आखिर वह बोला, "खैर तो फिर कल सुबह आठ बजे, विन्सेनिस के मैदान में, पिस्तौल से!!"

काउण्ट उसी लापरवाही के ढङ्ग से बोला, "बहुत ठीक, अस्तु अब आप कृपा कर जांय और मुझे तमाशा

देखने दें॥"

व्यूशेम्प चला गया। काउण्ट ने मारल से पूछा, "मैं तुम पर भरोसा करूं? तुम मेरे सेकेण्ड * बनोगे?"

मारल०। खुशी से पर.......

काउण्ट०। क्या?

मारल०। यह मुनासिब होगा अगर मुझे लड़ाई का असल सबब मालूम हो जाय॥

काउण्ट०। अर्थात् तुम इन्कार करते हो?

मारल०। नहीं नहीं मैं सिर्फ असल बात जानना चाहता हूं॥

काउण्ट०। असल बात! मारल, वह नौजवान खुद अन्धा होकर काम कर रहा है और असल बात नहीं जानता जो सिर्फ परमेश्वर को या मुझको मालूम है पर यह मैं कहता हूं कि परमेश्वर जो सब जानता है हमारी तरफ होगा॥

मारल०। इतनाही बहुत है, अच्छा दूसरा आदमी कौन होगा?

काउण्ट०। सिवाय तुम्हारे और मैनुयल के मैं और किसी को पैरिस में नहीं जानता, क्या मैनुयल मेरा साथ देगा!!

मारल०। बड़ी खुशी से॥

* जब दो आदमियों में ड्येल होता है तो दोनों अपने अपने दो दोस्तों को बतौर गवाह और मददगार के ले जाते हैं, ये दोनों सेकेण्डस कहलाते हैं॥

काउएट०। तो कल सुबह सात बजे मैं तुम्हारी राह देखूंगा॥

मारल०। हमलोग जरूर आवेंगे॥

काउएट०। बस ठीक है। अच्छा देखो पर्दा उठा! वाह क्या मनोहर गीत है, मारल गौर से सुनो!!

॥ ग्यारहवां हिस्सा समाप्त ॥

॥ श्री ॥

मोतियों का खजाना ।

बारहवां हिस्सा ।

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

अनुवादित

और

प्रकाशित ।

LAHRI PRESS DEVAKI NANDAN KHATRI BENARES CITY

PRINTED BY
PANNA LAL ROY
AT THE LAHARI PRESS, BENARES CITY

प्रथम बार १०००] १९२१ ई० । [मूल्य ॥=) आ०

॥ श्रीः ॥



मोतियों का खजाना।

बारहवां हिस्सा।

पहिला बयान।

'रात'

थोड़ी देर और तमाशा देख काउण्ट मौण्ट क्रीटो उठा, दर्वाजे पर मारल उससे सुबह सात बजे मिलने का वादा कर अलग हुआ और काउण्ट अपनी गाड़ी पर चढ़ घर पहुंचा। पहुंचते ही उसने अली को आवाज दी—"मेरी पिस्तौल और एक हाथी दांत का सलीब (क्रास) लाओ॥"

अली ने एक बक्स लाकर दिया और काउण्ट ने उसमें से दो पिस्तौलें निकाली। ये पिस्तौलें बहुत ही बेशकीमत और सुन्दर थीं और इनके छोड़ने में बहुत कम आवाज होती थी। काउण्ट ने उनकी बड़े गौर से अच्छी तरह जांच की जो कि उस आदमी के लिये जो थोड़े लोहे और बारूद पर अपनी जान न्योछावर करने वाला है मुनासिब ही था। जांच कर लेने बाद काउण्ट

ने एक पिस्तौल भरी और निशाना लगाने के लिये ऊंची की ही थी कि कमरे का दर्वाजा खुला और बैपटिस्टिन दिखाई पडा । खुले हुए दर्वाजे में से हो कर काउण्ट की निगाह एक औरत पर भी पड़ी जो बैपटिस्टिन के साथ २ आई थी । काउण्ट के हाथ में पिस्तौल और टेबुल पर पड़ी कई तलवारें देखते ही वह औरत जो नकाब डाले हुई थी झपट कर कमरे के अन्दर घुस आई। बैपटिस्टिन ने अपने मालिक की तरफ देखा, उसने बाहर जाने का इशारा किया और जब वह दर्वाजा बन्द करता हुआ चला गया तो काउण्ट उस औरत की तरफ घूम कर बोला, "मैडम ! आप कौन हैं ?"

नकाबपोश औरत ने अपने चारों तरफ देखा और जब किसी को न पाया तो घुटनों पर गिर और अपने हाथ काउण्ट की तरफ उठा बड़ निराशा भरे शब्दों में बोली, "एडमण्ड ! मेरे लड़के को मत मारो !!"

काउण्ट के मुंह से ताज्जुब की आवाज निकली, पिस्तौल उसके हाथ से छूट कर गिर गई और उसने एक कदम पीछे हट कर कहा, "मैडम मारकर्फ ! आप ने क्या नाम पुकारा !!"

मरियम ने अपनी नकाब उलटते हुए कहा, "तुम्हारा ! तुम्हारा एडमण्ड !! जिसे सिर्फ मैं ही नहीं भूल सकी हूं । एडमण्ड ! यह मैडम मारकर्फ तुम्हारे पास नहीं आई है बल्कि मरियम आई है !!"

काउण्ट० । मैडम ! मरियम मर गई ! अब मैं उस

नाम को किसी औरत को नहीं जानता॥

करि०। मरियम जीती है, और उसे याद है, क्योंकि उसने तुम्हें देखते ही पहिचान लिया, देखने के पहिले सिर्फ तुम्हारी आवाज ही सुन कर, एडमण्ड! सिर्फ तुम्हारी बोली सुन कर, उसने तुम्हें जान लिया और उसी सायत से वह तुम्हारी कार्रवाइयों को देख रही है। वह खूब जानती है कि वह हाथ किसका है जिसने काउण्ट मारकर्फ पर यह आफत ढाई है॥

काउ०। फरनन्द!! मैडम! काउण्ट मारकर्फ नहीं!! अब जब कि हमलोग पुराने नाम याद कर रहे हैं तो सभी को याद करिये!!

मौण्ट क्रीटो ने यह 'फरनन्द' नाम ऐसी घृणा की आवाज से लिया कि मरियम डर से कांप गई। मुश्किल से उसके गले से निकला, "तभी तो मैं कहती हूं कि मेरे बेटे की जान छोड़ दो॥"

काउण्ट०। यह किसने कहा कि मैं तुम्हारे लड़के से लड़ने वाला हूं॥

मरियम०। किसी ने नहीं, पर मां की नजर दुगुनी होती है, मैं सब समझ गई, मैं उसके साथ थियेटर गई, मैंने सब अपनी आंखों से देखा॥

काउण्ट०। तब आपने यह भी देखा होगा कि उस फरनन्द के लड़के ने एक आम जगह में मेरी बेइज्जती की। अगर मेरे एक दोस्त ने न रोका होता तो वह अपना दस्ताना मेरे ऊपर मार देता॥

मरियम०। दया करो दया, मेरा बेटा भी कुछ कुछ समझ गया है कि तुम कौन हो। वह अपने बाप की मुसीबतों का कारण तुम्हीं को समझता है॥

काउण्ट०। मैडम! यह मुसीबत नहीं सजा है। मारकर्फ को मैं नहीं मार रहा हूं दैव मार रहा है॥

मरियम०। तो तुमको दैव की जगह लेने की क्या जरूरत थी? जनीना और अली से तुमको क्या वास्ता था? जब वह भूल रहा है तब तुम याद क्यों करते हो? फरनन्द मण्डेगू ने अगर अली पाशा से दगा किया हो तो तुम्हारा क्या?

का०उ०। आपका कहना ठीक है, यह सब झगड़ा फरनन्द और वसीलिकी की लड़की में है, मुझे इससे कोई मतलब नहीं और न मैंने उस फ्रान्सीसी कप्तान या काउण्ट मारकर्फ से बदला लेने की कसम ही खाई है। मुझे तो उस मछुहे फरनन्द से बदला लेना है जो कातलूनी की 'मरियम' का पति है॥

मरियम०। (रोकर) आह! उस छोटी सी भूल के लिये जो दुर्दैव ने मुझसे कराई-यह क्या भयानक बदला है!! एडमण्ड! अगर तुम्हे किसी से बदला लेना ही है, तो मुझसे लो क्योंकि कसूरवार मैं हूं जो तुम्हारी जुदाई और अपनी असहाय अवस्था बरदाश्त न कर सकी॥

का०उ०। मगर मैं क्यों तुमसे जुदा हुआ? तुम क्यों ऐसी असहाय हुई?

मरियम०। क्योंकि लोगों ने तुम्हें पकड़ कर कैदी

बना लिया ॥

काउ० । क्यों मुझे पकड़ा ! किस लिये मुझे कैदी बनाया ?

मरियम० । सो मुझे नहीं मालूम ॥

काउण्ट० । नहीं मालूम, कम से कम मैं आशा करता हूं कि तुम्हें नहीं मालूम । अच्छा अब मैं बताता हूं—मैं इस लिये पकड़ा गया क्योंकि कतलूनी की सराय में बैठ कर मेरी शादी से एक दिन पहिले दङ्गली नामक आदमी ने यह चीठी लिखी जिसे खुद फरनन्द ने डाक में छोड़ा ॥

मौण्ट क्रीटो एक टेबुल के पास गया और उसका दराज खोल उसने एक कागज निकाला जो बहुत मुद्दत का होने के कारण असली रङ्ग छोड़ भूरा हो गया था और जिसकी स्याही फीकी पड़ गई थी । यह वही चीठी थी जिसे दङ्गली ने शाही जज-मारसेलिज के पास भेजा था और जिसे थामस एण्ड फ्रेंच का गुमाश्ता बन कर मौण्ट क्रीटो मि० बोविल-जेलखाने के दारोगा के यहां से एडमण्ड डेनटर की फाइल में से फाड़ लाया था । काउण्ट ने यह कागज मरियम के हाथ पर रख दिया जिसने कांपते हुए इसे पढ़ा ॥

चीठी पढ़ मरियम के माथे पर पसीना हो आया । उसने सिर पर हाथ फेर लड़खड़ाई आवाज में कहा, "हे परमेश्वर !" और तब काउण्ट से कहा, "क्या यह चीठी...?"

काउण्ट०। मैंने इसे दो लाख रुपये में खरीदा पर यह कोई बात नहीं हूँ कि अब इसे दिखा कर मैं अपनी सफाई आपके सामने कर सका ॥

मरियम०। और इस चीठी के सबब से ....!

काउ०। मैं पकड़ा गया जैसा कि आपको मालूम है। पर तुमको शायद नहीं मालूम कि मेरी वह कैद कितने समय तक रही। तुम्हें नहीं मालूम कि मैं चौदह बरस तक तुम्हारे से सिर्फ दो मील के फासले पर किले ऐफ के तहखाने में कैद रहा। तुम्हें नहीं मालूम कि इन चौदह बरसों के एक एक दिन मैंने उस बदला लेने की कसम के दोहराने में बिताये जो वहां बन्द होते ही मैंने खाई जब कि मुझे यह भी मालूम न था कि तुमने मेरे साथ दगा करने वाले फरनन्द से शादी कर ली और मेरा बाप भूखों तड़प तड़प कर मर गया !!

मरियम कांप उठी। काउण्ट फिर बोला ॥

"चौदह बरस के बाद जब मैं कैद से निकला तब मुझे यह मालूम हुआ। उस वक्त फिर उस मरियम के लिये जो जीती थी और अपने उस बाप के लिये जो भूखा मर गया था मैंने फरनन्द से बदला लेने की फिर से कसम खाई—और अब मैं अपनी कसम पूरी कर रहा हूं॥"

मरियम०। और तुम्हें निश्चय है कि फरनन्द ही ने यह सब किया ?

काउ०। हां मैडम ! मुझे पक्का विश्वास है ! और

फिर इसमें ताज्जुब ही क्या है। स्पेनिश हो के फरनन्द स्पेन वालों के खिलाफ लड़ा, फ्रान्स में रह कर उसने अङ्गरेजों का साथ दिया। अली का नौकर हो के उसने अली से दगा की! इन बातों के मुकाबले में यह तुच्छ चोरी थी ही क्या चीज़!! एक प्रेमी की चाल, जिसे वह औरत, जिसने उस आदमी से ब्याह कर लिया, माफ कर सकती है पर वह दूसरा प्रेमी नहीं माफ कर सकता जो उससे ब्याह करने वाला था। फ्रान्सीसी उस बेईमान से बदला न ले सके, स्पेन वाले उस दगाबाज को गोली न मार सके, अली उस नमकहराम को बिना सजा दिये क़ब्र में चला गया। सिर्फ मैं, धोखा खाया हुआ, दगा दिया हुआ, क़ब्र में पड़ा हुआ, मैं, बच गया और परमेश्वर ने उससे बदला लेने के लिये मुझे नई जिन्दगी दे यहां भेजा॥

बिचारी मरियम का सिर झुक कर, उसकी छाती से लग गया, हाथ पांव कांपने लगे और वह लड़खड़ा कर यह कहती हुई काउण्ट के पैरों पर गिर गई—"माफ करो! एडमण्ड, मेरे ऊपर रहम करके माफ करो॥"

मौण्ट क्रीटो ने झपट कर उसे उठाया और एक कुर्सी पर बैठा दिया। उसके चेहरे पर गुस्से और नफरत के सबब से ऐसी डरावनी आभा आ गई थी कि मरियम कांप उठी। काउण्ट बोला, "क्या! माफ कर दूं! इस खान्दान को छोड़ दूं! ईश्वर से धोखेबाजी करूं जिसने सिर्फ बदला लेने के लिये ही मुझे मुर्दे से जिन्दा किया!

असम्भव मैडम! असम्भव!!"

मरियम०। एडमण्ड! जब मैं तुम्हें एडमण्ड कहती हूं तो तुम मुझे मरियम क्यों नहीं कहते!!

काउण्ट०। मरियम! हां ठीक है, इस नाम में अब भी मिठास है, मरियम, मरियम! आज मुद्दत के बाद मैं इस नाम को मुंह के बाहर निकाल रहा हूं। मरियम! ठिठुरते हुए, जाड़े से कांपते हुए, तहखाने के फूस के बिछावन पर अकड़ते हुए, मैंने यह नाम लिया है। गर्मी में, जलते हुए, प्यास से तड़पते हुए, जेलखाने के पत्थरों पर लोटते हुए, मैंने यह नाम लिया है। नहीं नहीं मरियम! मैं नहीं छोड़ सकता! चौदह बरस, चौदह खतम न होने वाले बरसों तक मैं तड़पा हूं। मैं बदला लूंगा, जरूर लूंगा!!

जिसमें मरियम की आरजू मिन्नत उसका दिल पिघला न दे इसलिये काउण्ट अपनी पुरानी मुसीबतों को याद कर रहा था। मरियम बोली, "तब अपनी इच्छा पूरी करो, लो बदला, पर जिन्होंने तुम्हारा बुरा किया है उन्हीं से बदला लो, मेरे लड़के ने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा, उसे मत मारो॥"

काउण्ट०। हमारे शास्त्रों में ईश्वर ने कहा है कि आदमी के पापों का फल उसके पुश्त दरपुश्त वालों को भोगना पड़ेगा। जब परमेश्वर ऐसा कहता है तो मैं ऐसा क्यों न करूं॥

मरि०। ईश्वर अनित्य है अनन्त है, क्या तुम भी हो!

मैारट क्रीटो के मुंह से एक आह निकली, उसने उद्वेग के साथ अपने सुन्दर बाल नोच लिये—मरियम फिर बोली—"एडमण्ड! जिस दिन पहिले पहिल मैंने तुम्हें देखा उसी दिन से मैं तुम्हारी देवता की तरह पूजा करती रही हूं। एडमण्ड! तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हारे शुभ के लिये मैंने ईश्वर से कितनी प्रार्थना करी है। तुम्हारे मर जाने का जब मुझे विश्वास हो गया तब भी मैं तुम्हारी आत्मा के लिये प्रार्थना करती रही, रोती रही, बिलखती रही। एडमण्ड! दस बरस तक रोज मैं एक ही सपना देखती थी। मैं देखती थी कि तुमने भागने की कोशिश की, किसी दूसरे की जगह में तुम उसके कफन में जा घुसे, तुम्हारे जेलरों ने तुम्हें जीता ही समुद्र में फेंक दिया, और जब तुम्हारी डूबते समय की आखिरी चीख उनके कान में पड़ी तब उन्हें मालूम हुआ कि तुम जीते ही डुबा दिये गये। एडमण्ड! दस बरस तक तुम्हारी वह भयानक चीख बराबर मेरे कानों में पहुंचती थी, दस बरस तक मैं डरती, कांपती, बिलखती हुई, इस दृश्य को देखती रही हूं, मैं रोती थी, प्रार्थना करती थी, तुम्हारी आत्मा की शान्ति के लिये ईश्वर से आरजू करती थी! एडमण्ड! मैं सच कहती हूं—कसूरवार होने पर भी मैंने बड़ा दुःख उठाया है!!

मैारट क्रीटो०। (बेचैनी के साथ अपना बाल नोचते हुए) क्या तुमने अपने बाप को अपनी गैरहाजिरी में

भूखे मरते देखा है! क्या तुमने उस औरत को जिसे तुम जान से बढ़ कर चाहती थीं तुम्हें एक काल कोठड़ी में सड़ता हुआ छोड़ अपने दुश्मन से ब्याह करते देखा है!!

मरियम०। नहीं, पर मैंने उसको जिसे मैं प्यार कर चुकी हूं—अपने लड़के की जान लेने पर तुले हुए देखा है!!

मरियम के मुंह से ये शब्द ऐसे दुःख से भरे हुए स्वर से निकले कि मौण्ट क्रीटो बर्दाश्त न कर सका! शेर का गुस्सा ठण्ढा पड़गया! बदला लेने वाला हार गया! सब बांधनूं, सब विचार, मिट गये। मौण्ट क्रीटो उद्वेग से भर कर बोला, "अच्छा क्या चाहती हो,बोलो,अपने लड़के की जान! अच्छा, वह नहीं मरेगा!!"

मरियम के गले से खुशी की ऐसी चीख निकली कि मौण्ट क्रीटो की आंखे भर आई! पर ये आंसू तुरत ही सूख भी गये, कदाचित् विधाता ने उन्हें बटोरने के लिये अपना कोई दूत भेज दिया जिसने गुजरात और ओफीर के मोतियों से भी ज्यादा कीमती समझ उनमें से एक को भी जमीन पर गिरने न दिया। मरियम उसके पैर के पास गिर कर उसका हाथ चूमती हुई बोली—"धन्य हो धन्य हो एडमण्ड! मैंने अब भी तुम्हें वैसा ही पाया जैसा मैं सोचती थी! ऐसे ही एडमण्ड को मैं बराबर प्यार करती थी!!"

मौण्ट०। अब उस बेचारे एडमण्ड को प्यार करने की जरूरत न पड़ेगी। मुर्दा फिर कब्र में चला जायगा,

भूत फिर अन्धेरे में मिल जायगा ॥

मरियम०। सो क्या ? सो क्या एडमण्ड ?

मैाण्ट०। जब कि तुम आज्ञा दे रही हो, तो मुझे मरना ही पड़ेगा ॥

मरियम०। मरना पड़ेगा ! किसने मरने को कहा ? कैान मरने का जिक्र करता है ? मरने का खयाल तुम्हें क्यों ?

मैाण्ट०। क्या तुम समझती हो कि एक पूरे थियेटर के सामने, हजारो आदमियों की भीड़ में, तुम्हारे लड़के एक तुच्छ बालक द्वारा अपमानित हो कर अब मैं जीता बचने की इच्छा करूँगा ? मरियम ! तुम्हारे बाद अगर मैं किसी को प्यार करता था तो अपने को, अपनी इज्जत को, अपनी उस ताकत को जिसकी बदोलत मैं मामूली आदमियों से अपने को बड़ा समझता था। मरियम ! तुम्हारे एक शब्द ने वह सब मट्टी में मिला दिया ! अब मैं मरूगा !!

मरियम०। मगर एडमण्ड, जब तुम माफ कर रहे हो तो फिर यह डूयेल तो होगा नहीं ॥

मैाण्ट०। नहीं, डूयेल होगा, सिर्फ तुम्हारे लड़के के खून के बदले मेरा खून जमीन पर बहेगा ॥

एक चीख मार कर मरियम काउण्ट की तरफ लपकी, पर फिर यकायक रुक कर बोली, "एडमण्ड ! जब तुम जीते बचे हो, जब मैंने तुम्हें फिर देखा है, तो जरूर हमारे ऊपर कोई ईश्वर है ! मैं उस पर विश्वास करती

हूं! उससे मदद पाने की आशा करती हूं!! तुमने अपनी जुबान दी है कि मेरा लड़का नहीं मरेगा!!"

काउण्ट०। (ताज्जुब करता हुआ कि उसके इतने बड़े त्याग को मरियम ने विना उद्वेग के मान लिया) हां! मैडम, वह नहीं मरेगा॥

मरियम०। (रोती हुई काउण्ट का हाथ पकड़ कर) तुमने एक वेचारी, जमाने की सताई हुई, औरत पर दया की है, ईश्वर तुम्हारा भला करेगा! अफसोस! एडमण्ड! उम्र से ज्यादा रञ्ज और अफसोस ने मुझे बूढा कर दिया है। अब मैं वह मरियम नहीं रही जिसे कभी तुम घण्टों बैठे देखा करते थे। एडमण्ड! मैं सच कहती हूं कि मैंने बड़ा दुःख उठाया है, मुझे कोई खुशी नहीं, कोई सुख नहीं, कोई आशा नहीं, पर खैर, अब भी विल्कुल खातमा नहीं हुआ। मैं दिल से तुम्हारा शुक्रिया अदा करती हू॥

काउ०। मरियम तुम कहती तो हो पर अभी खुद तुम्हे नहीं मालूम कि मैंने कितना भारी स्वार्थ त्याग किया है। जरा सोचो तो कि यदि वह परम पिता, इस दुनिया को बनाते समय, अनन्त से से इस अणु को निकालते हुए, इसलिये अपना हाथ रोक ले कि इस पर के बसने वाले पाप करेंगे और मुझे उनके लिये आंसू बहाना पड़ेगा, समझ लो कि ऐसा सोच कर, सब कुछ बना लेने पर, सुन्दरता गढ़ चुकने पर, सौन्दर्य पैदा कर लेने पर भी वह सूरज को मिटा दे और दुनिया को पैर से फिर अन्धेरे

में ठुकरा दें, तब भी, तुम्हें उस बात का गुमान नहीं हो सकता जो मैं इस वक्त अपनी जान के साथ खो रहा हूं॥

मरियम ने ताज्जुब, अहसान और तारीफ की निगाह से एडमंण्ड को देखा जो अपने सिर को इस तरह दोनो हाथों से पकड़े हुए था मानों उसका दिमाग उस के खयालों का बोझ सम्हालने लायक नहीं है। वह उसकी तरफ बढ कर बोली, "एडमंण्ड! मैं सिर्फ एक बात तुमसे कहा चाहती हूं। तुम देखते हो मेरा चेहरा पीला है, मेरी आंखें भट्टी हैं, मेरी सुन्दरता गायब है, मैं वह मरियम नही जो पहिले थी, फिर भी तुम देखोगे, कि इसके अन्दर दिल वही है जो पहिले था। बस एडमंण्ड बिदा, अब मैं जाती हूं॥"

काउण्ट ने कोई जवाब न दिया, वह ऐसी चिन्ता में डूब गया था कि मरियम दर्वाजा खोल चली भी गई और उसे होश न हुआ। जब किसी गिरजे की घड़ी ने एक की आवाज की तब काउण्ट चौका और उसने अपना सर उठाया और कहा—"ओफ! मैं कैसा भारी बेवकूफ था जो बदला लेने का इरादा करती समय मैंने अपना कलेजा नहीं नोच डाला॥"

दूसरा बयान।

मुलाकात।

मरियम के चले जाने बाद एक तरह की उदासी सी चारो तरफ फैल गई। निराशा में डूबा हुआ रौबर्ट छोटे हाथ पर गाल रक्खे तरह तरह की बातें सोचने लगा। वह मन ही मन कह रहा था, "ओफ! इतनी कोशिश और मेहनत से जो किला मैंने तैयार किया था वह धूल में मिल गया! अब क्या मुझे अपनी जान देनी ही पड़ेगी! जान जाने का तो मुझे डर नहीं, अफसोस तो मुझे इस बात का है कि अपना बदला पूरा करने के सब बांधनू जो इतनी मेहनत से मैंने बांधे थे अधूरे ही रह जायगे। मर तो मैं उसी दिन चुका था जब किलेऐफ में ठूँसा गया था। सिर्फ अपना बदला लेने की उम्मीद ही मुझे जीता रक्खे थी। ओफ! मैं अपने को ईश्वर का दूत या विधाता का हाथ समझे हुए था! तो क्या वह मेरा खयाल ही था! क्या ईश्वर को मंजूर नहीं कि पापी सजा पावें! क्या मेरी चौदह वर्षों की निराशा और दस बरस की उम्मीदों का यही नतीजा निकला! क्या मेरा दिल जिसे मैं मर गया हुआ समझे था, सिर्फ सोरहा था, जो एक औरत के आंसू देख जाग उठा! मगर अफसोस तो मुझे यह है कि मरियम ने अब भी सिर्फ अपने स्वार्थ का और अपने बेटे की जिन्दगी का ही खयाल रक्खा, मेरी जान की परवाह न की! क्या अब वह

ऐसी हो गई ! मैं तो उसे बड़े ऊंचे दिल की समझता था, यह उसे क्या होगया कि मेरे मरने का भी उसे अफसोस नहीं, खयाल नहीं, सिर्फ अपने बेटे के जान की फिक्र ! नहीं नहीं वह ऐसी नहीं है, उसने जरूर कोई उपाय सोचा होगा ! शायद जब हमलोग गोली चलाने के लिये तैयार होंगे तो वह हमारे बीच में आकर खड़ी हो जायगी। मगर क्या यह मुनासिब होगा ! इससे तो मेरी और भी हंसी होगी। दुनिया मुझ पर उंगली उठावेगी कि एक औरत के सबब से इसकी जान बची ! ओफ ! क्या बेवकूफी थी ! वह दया नहीं बेवकूफी थी जिसने मुझे एक लड़के की गोली का निशाना बनाया ! अलबर्ट अपनी जान बचने का सबब यह नहीं समझेगा कि मैंने जान बूझ कर छोड़ दी, बल्कि अपनी खुशकिस्मती समझेगा। पर मुझे भी तो मुनासिब है कि दुनिया को यह खबर कर दूं कि मैंने अपने हाथों अपनी जान खोई थी ! मेरे जो हाथ दूसरों के मुकाबले में इतने मजबूत हैं उन्हीं से मैंने अपना खून किया है ! यह मुझे दुनिया को बता देना चाहिये, ऐसा करना घमण्ड नहीं होगा बल्कि अपने साथ न्याय करना होगा, जरूर ऐसा करना चाहिये ॥"

ऐसा सोचते ही काउण्ट ने अपने टेबुल का एक गुप्त दराज खोला और उसमें से एक कागज निकाला। यह उसका वसीयतनामा था। इसके नीचे उसने अपने मरने का सबब पूरा पूरा लिखा और तब ऊपर की तरफ

दूसरा बयान।

मुलाकात।

मरियम के चले जाने बाद एक तरह की उदासी सी चारों तरफ फैल गई। निराशा में डूबा हुआ मौरट कोहनी हाथ पर गाल रक्खे तरह तरह की बातें सोचने लगा। वह मन ही मन कह रहा था, "ओफ! इतनी कोशिश और मेहनत से जो किला मैंने तैयार किया था वह धूल में मिल गया! अब क्या मुझे अपनी जान दे देनी ही पड़ेगी? जान जाने का तो मुझे डर नहीं, अफसोस तो मुझे इस बात का है कि अपना बदला पूरा करने के सब बांधनू जो इतनी मेहनत से मैंने बांधे थे अधूरे ही रह जायगे। मर तो मैं उसी दिन चुका था जब किलेऐफ में ठूँसा गया था। सिर्फ अपना बदला लेने की उम्मीद ही मुझे जीता रक्खे थी। ओफ! मैं अपने को ईश्वर का दूत या विधाता का हाथ समझे हुए था! तो क्या वह मेरा खयाल ही था! क्या ईश्वर को मंजूर नहीं कि पापी सजा पावें? क्या मेरी चौदह वर्षों की निराशा और दस बरस की उम्मीदों का यही नतीजा निकला? क्या मेरा दिल जिसे मैं मर गया हुआ समझे था, सिर्फ सो रहा था, जो एक औरत के आंसू देख जाग उठा! मगर अफसोस तो मुझे यह है कि मरियम ने अब भी सिर्फ अपने स्वार्थ का और अपने बेटे की जिन्दगी का ही खयाल रक्खा, मेरी जान की परवाह न की! क्या अब वह

ऐसी हो गई! मैं तो उसे बड़े ऊंचे दिल की समझता था, यह उसे क्या होगया कि मेरे मरने का भी उसे अफसोस नहीं, खयाल नहीं, सिर्फ अपने बेटे के जान की फिक्र! नहीं नहीं वह ऐसी नहीं है, उसने जरूर कोई उपाय सोचा होगा। शायद जब हमलोग गोली चलाने के लिये तैयार होंगे तो वह हमारे बीच में आकर खड़ी हो जायगी। मगर क्या यह मुनासिब होगा! इससे तो मेरी और भी हंसी होगी। दुनिया मुझ पर उंगली उठावेगी कि एक औरत के सबब से इसकी जान बची! ओफ! क्या बेवकूफी थी! वह दया नहीं बेवकूफी थी जिसने मुझे एक लड़के की गोली का निशाना बनाया! अलबर्ट अपनी जान बचने का सबब यह नहीं समझेगा कि मैंने जान बूझ कर छोड़ दी, बल्कि अपनी खुशकिस्मती समझेगा। पर मुझे भी तो मुनासिब है कि दुनिया को यह खबर कर दूं कि मैंने अपने हाथों अपनी जान खोई थी! मेरे जो हाथ दूसरों के मुकाबले में इतने मजबूत हैं उन्हीं से मैंने अपना खून किया है! यह मुझे दुनिया को बता देना चाहिये, ऐसा करना घमण्ड नहीं होगा बल्कि अपने साथ न्याय करना होगा, जरूर ऐसा करना चाहिये॥"

ऐसा सोचते ही काउण्ट ने अपने टेबुल का एक गुप्त दराज खोला और उसमें से एक कागज निकाला। यह उसका वसीयतनामा था। इसके नीचे उसने अपने मरने का सबब पूरा पूरा लिखा और तब ऊपर की तरफ

आंखें उठा कर कहा, "ईश्वर! मैं अपनी ही नहीं बल्कि तेरी भी इज्जत के लिये लिखता हूं। दस बरस तक मैं अपने को तेरा दूत समझे रहा, तेरे न्याय का अस्त्र समझे रहा! मारकफ, दङ्गलो, विलफोर्ट को यह मत समझने दे कि मेरे मरने से उनका कसूर माफ हो गया, नहीं, उन्हें बता कि इस इरादे से उनकी सजा सिर्फ कुछ दिन के लिये टल गई है माफ नहीं हुई है, अगर इस दुनियां में वे बच जायेंगे तो दूसरी दुनिया में भोगेंगे! सजा उन्हें मिलेहीगी, सिर्फ समय को उन्होंने अनन्त के साथ बदल लिया है॥"

जिस समय इन दुखदाई विचारों में काउण्ट डूबा था उस समय पौ फटने लग गई थी, पांच बज गया था, एक हलकी रोशनी खिड़की में से आकर उसके चेहरे और सामने के कागज पर पड़ी और उसी समय एक ऊंची सांस की आहट उसे लगी। उसने चौंक कर इधर उधर देखा पर किसी को न पाया। फिर वैसीही आवाज आई, इस बार वह उठा और दरवाजा खोलने पर उसे हैदरी दिखाई पड़ी जो एक कुर्सी पर बैठी२ सो गई थी। वह वहां इस इरादे से बैठी थी जिसमें काउण्ट बिना उससे मिले बाहर न जाय पर नींद ने जिसे नौजवान बर्दाश्त नहीं कर सकते उसे लाचार कर दिया था और वह सो गई थी। वह ऊंची सांस की आवाज उसी के गले से निकली थी पर काउण्ट के दर्वाजे खोलने की आहट ने उसे जगाया नहीं। काउण्ट कुछ देर तक उसे

उदासी के साथ देखता रहा। इसके बाद यह कहता हुआ वह लौटा, "यह बेचारी इस लिये यहां बैठी थी कि मुझे बिना बात किये बाहर न जाने दे! जरूर इसे भी कुछ शक हो गया है। ओफ! मैं इससे बिदा हुए विना कैसे जा सकता हूं, इसे किसी के सपुर्द किये बिना कैसे छोड़ सकता हूं!!" काउण्ट अपनी जगह पर लौट आया और उस मजमून के नीचे उसने बढ़ाया:—

"मैं मारसेलिज के सौदागर अपने पहिले मालिक मारल के लड़के मैक्समिलियन को दो करोड़ रुपया देता हूं जो कि मेरी मौण्ट क्रीटो वाली गुफा में छिपा हुआ है जिसका भेद बर्टूशियो को मालूम है। इसमें से कुछ रुपया वह चाहे तो अपनी बहिन और उसके पति को भी दे सकता है बशर्ते कि यह बढ़ी हुई दौलत उनके सुख में बाधा न पहुंचावे। मैक्समिलियन का दिल अगर किसी के प्रेम से अभी तक खाली हो तो मेरी इच्छा है कि वह अली तबलिन जनीना के पाशा की लड़की हैदरी को अपनी स्त्री बनावे जिसे मैंने बड़ी इज्जत के साथ अपनी बेटी बनाकर अपने साथ रक्खा है। इस वसीयत नामे के द्वारा मैं हैदरी को अपनी बाकी जायदाद का जो कि इङ्गलेण्ड अस्ट्रिया, हालैण्ड आदि के मुल्कों में और मेरे महलों और मकानों के स्वरूप में है वारिस बना चुका हूं और जो मैक्समिलियन और मेरे नौकरों की रकम दे देने के बाद भी छ करोड़ रुपै से कम न होगी॥"

काउण्ट आखिरी सतरें लिख रहा था कि उसके पीछे की एक चीख ने उसे चौंका दिया। कलम उसके हाथ से गिर गई और उसने कहा, "हैदरी! क्या तुमने पढ़ लिया!!"

सूर्य की किरणें आंखों पर पड़ने से हैदरी की नींद खुल गई थी और वह जाग तथा काउण्ट के कमरे का

आंखें उठा कर कहा, "ईश्वर! मैं अपनी ही नहीं बल्कि तेरी भी इज्जत के लिये लिखता हूं। दस बरस तक मैं अपने को तेरा दूत समझे रहा, तेरे न्याय का अस्त्र समझे रहा! मारकर्फ, दङ्गली, विलफोर्ट को यह मत समझने दे कि मेरे मरने से उनका कसूर माफ हो गया, नहीं, उन्हें बता कि इस इरादे से उनको सजा सिर्फ कुछ दिन के लिये टल गई है माफ नहीं हुई है, अगर इस दुनियां में वे बच जायेंगे तो दूसरी दुनियां में भोगेंगे! सजा उन्हें मिलेहीगी, सिर्फ समय को उन्होंने अनन्त के साथ बदल लिया है॥"

जिस समय इन दुखदाई बिचारों में काउण्ट डूबा था उस समय पौ फटने लग गई थी, पांच बज गया था, एक हलकी रोशनी खिड़की में से आकर उसके चेहरे और सामने के कागज पर पड़ी और उसी समय एक ऊंची सांस की आहट उसे लगी। उसने चौंक कर इधर उधर देखा पर किसी को न पाया। फिर वैसीही आवाज आई, इस बार वह उठा और दरवाजा खोलने पर उसे हैदरी दिखाई पड़ी जो एक कुर्सी पर बैठी २ सो गई थी। वह वहां इस इरादे से बैठी थी जिसमें काउण्ट बिना उससे मिले बाहर न जाय पर नींद ने जिसे नौजवान बर्दाश्त नहीं कर सकते उसे लाचार कर दिया था और वह सो गई थी। वह ऊंची सांस की आवाज उसी के गले से निकली थी पर काउण्ट के दर्वाजे खोलने की आहट ने उसे जगाया नहीं। काउण्ट कुछ देर तक उसे

उदासी के साथ देखता रहा । इसके बाद यह कहता हुआ वह लौटा, "यह बेचारी इस लिये यहां बैठी थी कि मुझे बिना बात किये बाहर न जाने दे ! जरूर इसे भी कुछ शक हो गया है । ओफ ! मैं इससे बिदा हुए बिना कैसे जा सकता हूं, इसे किसी के सपुर्द किये बिना कैसे छोड़ सकता हूं !!" काउण्ट अपनी जगह पर लौट आया और उस मजमून के नीचे उसने बढाया:—

"मैं, मारसेलिज के सौदागर अपने पहिले मालिक मारल के लडके मैक्समिलियन को दो करोड रुपया देता हूं जो कि मेरी मौण्ट क्रीटो वाली गुफा में छिपा हुआ है जिसका भेद बर्टूशियो को मालूम है। इसमें से कुछ रुपया वह चाहे तो अपनी बहिन और उसके पति को भी दे सकता है बशर्ते कि यह बढी हुई दौलत उनके सुख में बाधा न पहुंचावे । मैक्समिलियन का दिल अगर किसी के प्रेम से अभी तक खाली हो तो मेरी इच्छा है कि वह अली तबलिन जनीना के पाशा की लडकी हैदरी को अपनी स्त्री बनावे जिसे मैंने बडी इज्जत के साथ अपनी बेटी बनाकर अपने साथ रक्खा है । इस वसीयत नामे के द्वारा मैं हैदरी को अपनी बाकी जायदाद का जो कि इङ्गलेण्ड अस्ट्रिया, हालैण्ड आदि के मुल्को में और मेरे महलो और मकानो के सरूप में है, वारिस बना चुका हूं और जो मैक्समिलियन और मेरे नौकरो की रकम दे देने के बाद भी छ करोड रुपे से कम न होगी ॥"

काउण्ट आखिरी सतरें लिख रहा था कि उसके पीछे की एक चीख ने उसे चौंका दिया । कलम उसके हाथ से गिर गई और उसने कहा, "हैदरी ! क्या तुमने पढ़ लिया !!"

सूर्य की किरणें आंखों पर पडने से हैदरी की नींद खुल गई थी और वह जाग तया काउण्ट के कमरे को

आंखें उठा कर कहा, "ईश्वर! मैं अपनी ही नहीं बल्कि तेरी भी इज्जत के लिये लिखता हूं। दस बरस तक मैं अपने को तेरा दूत समझे रहा, तेरे न्याय का अस्त्र समझे रहा! मारकफ, दङ्गली, विलफोर्ट को यह मत समझने दे कि मेरे मरने से उनका कसूर माफ हो गया, नहीं, उन्हें बता कि इस इरादे से उनकी सजा सिर्फ कुछ दिन के लिये टल गई है माफ नहीं हुई है, अगर इस दुनियां में वे बच जायेंगे तो दूसरी दुनिया मे भोगेंगे! सजा उन्हें मिलेहीगी, सिर्फ समय को उन्होंने अनन्त के साथ बदल लिया है॥"

जिस समय इन दुखदाई बिचारों में काउण्ट डूबा था उस समय पौ फटने लग गई थी, पांच बज गया था, एक हलकी रोशनी खिड़की में से आकर उसके चेहरे और सामने के कागज पर पड़ी और उसी समय एक ऊंची सांस की आहट उसे लगी। उसने चौंक कर इधर उधर देखा पर किसी को न पाया। फिर वैसीही आवाज आई, इस बार वह उठा और दरवाजा खोलने पर उसे हैदरी दिखाई पड़ी जो एक कुर्सी पर बैठी २ सो गई थी। वह वहां इस इरादे से बैठी थी जिसमें काउण्ट बिना उससे मिले बाहर न जाय पर नींद ने जिसे नौजवान बर्दाश्त नहीं कर सकते उसे लाचार कर दिया था और वह सो गई थी। वह ऊंची सांस की आवाज उसी के गले से निकली थी पर काउण्ट के दर्वाजे खोलने की आहट ने उसे जगाया नहीं। काउण्ट कुछ देर तक उसे

उदासी के साथ देखता रहा। इसके बाद यह कहता हुआ वह लौटा, "यह बेचारी इस लिये यहां बैठी थी कि मुझे बिना बात किये बाहर न जाने दे! जरूर इसे भी कुछ शक हो गया है। ओफ! मैं इससे विदा हुए बिना कैसे जा सकता हूं, इसे किसी के सपुर्द किये बिना कैसे छोड़ सकता हूं!!" काउण्ट अपनी जगह पर लौट आया और उस मजमून के नीचे उसने बढ़ाया:—

"मैं मारसेलिज के सौदागर अपने पहिले मालिक मारल के लड़के मैक्समिलियन को दो करोड़ रुपया देता हूं जो कि मेरी मौण्ट क्रोटो वाली गुफा में छिपा हुआ है जिसका भेद बर्टूशियो को मालूम है। इसमें से कुछ रुपया वह चाहे तो अपनी बहिन और उसके पति को भी दे सकता है बशर्ते कि यह बढ़ी हुई दौलत उनके सुख में बाधा न पहुंचावे। मैक्समिलियन का दिल अगर किसी के प्रेम से अभी तक खाली हो तो मेरी इच्छा है कि वह अली तबलिन जनीना के पाशा की लड़की हैदरी को अपनी स्त्री बनावे, जिसे मैंने बड़ी इज्जत के साथ अपनी बेटी बनाकर अपने साथ रक्खा है। इस वसीयत नामे के द्वारा मैं हैदरी को अपनी बाकी जायदाद का जो कि इङ्गलैण्ड अस्ट्रिया, हालैण्ड आदि के मुल्कों में और मेरे महलों और मकानों के स्वरूप में है वारिस बना चुका हूं और जो मैक्समिलियन और मेरे नौकरों की रकम दे देने के बाद भी छः करोड़ रुपै से कम न होगी॥"

काउण्ट आखिरी सतरें लिख रहा था कि उसके पीछे की एक चीख ने उसे चौंका दिया। कलम उसके हाथ से गिर गई और उसने कहा, "हैदरी! क्या तुमने पढ़ लिया!!?"

सूर्य की किरणें आंखों पर पड़ने से हैदरी की नींद खुल गई थी और वह जाग तथा काउण्ट के कमरे का

दर्वाजा खुला देख कर भीतर आ गई थी। काउण्ट की बात सुन उसने कातर स्वर से कहा, "मेरे मालिक! तुम इस वक्त क्यों लिख रहे हो? अपनी लौंडी के नाम तुम ने क्यों अपनी जायदाद लिख दी है! क्या तुम मुझे छोड़ने वाले हो?"

सैाएट०। (अपने दुःख को छिपाते हुए मुलायम स्वर में) मैं एक लम्बे सफर पर जा रहा हूं। शायद मेरे ऊपर कोई मुसीबत आ... ...

हैदरी ने हुकूमत के ढङ्ग पर पूछा, "तब!" काउण्ट उसका ढङ्ग देख चौंक गया। अब तक कभी उसने ऐसे ढङ्ग पर कोई बात नहीं कही थी॥

काउण्ट०। शायद मेरे ऊपर कोई मुसीबत आजाय इस लिये मैं इस बात का बन्दोबस्त किया चाहता हूं जिसमें मेरी बेटी सुख से रहे॥

हैदरी ने अफसोस के साथ सिर हिलाकर कहा— "मेरे मालिक! क्या तुम मौत की बात सोच रहे हो?"

काउ०। बुद्धिमान कहते हैं कि आदमी को हमेशः मौत की तरफ निगाह रखना चाहिये॥

हैदरी०। अगर यह बात है तो अपनी दौलत दूसरों के नाम लिखो! अगर तुम मरोगे तो फिर मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं रहेगी॥

तेजी से झटके के साथ वह वसीयतनामा उठा हैदरी ने चार टुकड़े कर डाला। इसके बाद वह गम और सदमे से बेहोश होकर जमीन पर गिर गई। काउण्ट ने उसे

उठाया। उसकी बन्द आंखें पीला चेहरा और मुरझाई हुई आकृति देख पहिले पहिल काउण्ट के मन में खयाल उठा कि शायद वह उससे बाप की तरह नहीं बल्कि किसी दूसरी ही तरह से प्रेम करती है। उसके मुंह से एक गहरी सांस के साथ निकला, "अफसोस! मैं अब भी सुखी हो सकता था!!"

हैदरी को उठा कर काउण्ट ने उसके कमरे में ले जा लौंडियों के सुपुर्द कर दिया। इसके बाद अपनी जगह पर वापस आ उसने पुनः वह मजमून जिसे हैदरी ने फाड़ डाला था लिखा और सब कागज लिफाफे में बन्द कर मोहर की। उसी समय बाहर से मैक्सिमिलियन और मैनुअल की आवाज आई और लिफाफा रख उसने कमरे का दर्वाजा खोला। सचमुच मारल बाहर खड़ा था, वह समय से बीस मिनट पहिले आ पहुंचा था। काउण्ट को देख वह बोला, "मैं बहुत जल्दी आ गया पर सच तो यह है कि चिन्ता के मारे मुझे और मेरे घर में किसी को भी नींद नहीं आई। सवेरा होते ही मैं मैन्युअल को ले यहां आ गया हूं॥"

मारल का अपने ऊपर गहरा प्रेम देख काउण्ट ने उसे गले से लगा लिया। तब वह मैन्युअल से मिला और उससे कुछ साधारण बातचीत की। इसके बाद उसने अली को बुलाया और यह वसीयतनामा उसे दे कहा, "यह मेरे वकील के पास ले जाओ" वह चला गया और तब काउण्ट ने मारल से कहा—"यह मेरी

वसीयत है । मेरे मरने बाद तुम मेरे वकील के पास जा इसे देखना ।" मारल यह सुनते ही चौंक कर बोला—
"आप के मर जाने पर ! आप यह क्या कहते हैं ॥"

काउ० । क्यों ! क्या मुझे सब बातों के लिये तैयार नहीं रहना चाहिये ? अच्छा यह बताओ, कल मुझसे अलग हो तुम कहां गये ॥

मारल० । हां यह एक जरूरी बात आपसे कहनी है। आपसे बिदा हो मैं ब्यूशेम्प और शेटूरेनाड से मिला। मैं चाहता था, कि डूयेल पिस्तौल के बदले तलवार से कराऊं क्योंकि गोली अन्धी होती है ॥

काउण्ट० । (कुछ उम्मीद के साथ) तो ऐसा हुआ ?

मारल० । नहीं, आपकी तलवार चलाने की होशियारी इतनी मशहूर है कि उन्होंने एक दम इन्कार कर दिया ॥

काउण्ट० । आह ! किसने यह भेद खोला ?

मारल० । इस फन के उन उस्तादों ने जिन्हें आप ने हरा दिया है ॥

काउ० । मारल ! क्या तुमने मुझे पिस्तौल चलाते कभी देखा है ?

मारल० । नहीं ॥

काउण्ट० । अभी तो समय है अच्छा देखो ॥

मौण्ट क्रीटो ने वह पिस्तौल उठा ली जिसे मरियम ने उसके हाथ में देखा था, इसके बाद दीवार के साथ लगे एक लोहे की चद्दर पर उसने ताश का एक

पत्ता लगाया। यह ईंट का इक्का था। काउंएट ने चार दफे पिस्तौल दागी हर बार में इक्के का एक कोना इस सफाई से कट गया मानों औजार से नाप कर काटा गया हो॥

मारल का चेहरा एक दम पीला होगया और उसने गिडगिडा कर कहा, "काउंएट! अलवर्ट की जान मत लेना! उसकी मां अभी जीती है॥"

काउंएट ने विचित्र ढङ्ग से कहा, "हां, और मेरी नहीं है।" जिसे सुन कर मारल बोला, "मेरा मतलब यह है कि उसने आपकी बेइज्जती की है इस लिये पहिले आपको गोली चलाने का हक है॥"

काउंएट०। क्या! पहिले मैं गोली चलाऊँगा?

मारल०। हां, यह कायदा ही है। और सो भी सिर्फ बीस कदम से! इसी से आपका निशाना देख मैं कहता हूं कि उसकी जान मत लीजियेगा, उसका हाथ तोड़ दें, जखमी कर दें, बेकार कर दें, पर मारें नहीं॥

एक दुख की आभा कालिमा की तरह काउंएट के चेहरे पर दौड गई। उसने कहा, "मारल! तुम्हारा मिन्नत करना फजूल है! मैंने उस नौजवान की जान छोड दी है, वह खुशी खुशी आज घर लौटेगा मगर मैं उठा कर आऊँगा! मुझे तुम लोग लाओगे!!"

मारल०। काउंएट! काउंएट!!

काउं०। मैं ठीक कहता हू, अलवर्ट मारकर्फ मुझे मारेगा॥

मारल०। आपको क्या हो गया है?

काउण्ट०। मारल! मैंने एक भूत देखा है, और उस भूत ने मुझसे कह दिया है कि तुम बहुत दिन जी चुके! पर अफसोस मत करो, जाने दो, चलो, देर होती है॥

दर्वाजे पर गाड़ी तैयार खड़ी थी। मैक्समिलियन मारल और मैनुअल को लिये काउण्ट गाड़ी पर सवार हुआ पर उसके पहिले वह हैदरी के कमरे के दर्वाजे पर कुछ सायत के लिये रुका, दोनों दोस्तों ने उसे भीतर की एक आह के जवाब में ठण्ढी सांस लेते सुना॥

ठीक आठ बजा था जब वे लोग मुलाकात की जगह पर पहुंचे। तीनों आदमी गाड़ी से उतरे। दूर पर एक दूसरी गाड़ी और दो तीन आदमी दिखाई पड़े। मारल उस तरफ बढ़ने लगा पर काउण्ट ने उसका हाथ पकड़ लिया और एक तरफ ले जा कर कहा, "मारल! मैं एक बात पूछता हूं ठीक जवाब देना, क्या तुम किसी को प्यार करते हो?"

मारल०। एक कमसिन लड़की को॥

काउण्ट०। क्या बहुत ज्यादे चाहते हो?

मारल०। अपनी जान से बढ़ कर॥

काउण्ट०। (लम्बी सांस ले कर) यह आशा भी टूट गई! अफसोस बेचारी हैदरी!!

काउण्ट ने मारल से फिर कुछ न कहा और मारल ने भी इस बारे में कुछ न पूछा। दोनों गाड़ी के पास

लौट आयेगा मारल उधर बढ़ा जिधर वह दूसरी गाड़ी थी। काउएट ने पुकार कर कहा—"देखो! मेल की बात मत करना!" जिसके जवाब से वह बोला, "इस का डर न रक्खें॥"

शेटूरेनाड और ब्यूशेम्प मौजूद थे, मारल ने उनके पास जा सलाम किया और पूछा, "क्या अलबर्ट मारकर्फ आये?" शेटू बोला, "नहीं, पर उन्होंने कहला भेजा था कि मैं यहीं मिलूंगा। आते ही होगे। वह देखो, एक गाड़ी आ रही है॥"

मारल ने उधर देखा जिधर से एक गाड़ी तेजी के साथ इधर ही आ रही थी और शेटूरेनाड से कहा—"आप लोगों के पास पिस्तौलें हैं? काउएट मौएट क्रीटो अपने हथियार इस्तेमाल नहीं किया चाहते॥"

ब्यूशे०। उनकी कृपा है, हमारे पास ये दो पिस्तौलें हैं जो मैंने आठ ही दस रोज हुआ खरीदी है, ये बिल्कुल नई हैं, कभी इस्तेमाल नहीं की गईं। आप इन्हें जांच सकते हैं॥

मारल०। जब ये आप ही की हैं और आप कहते ही हैं कि अलबर्ट मारकर्फ ने इन्हे नहीं देखा है तो मेरे जांचने की कोई जरूरत नहीं, आपकी बात काफी है॥

इतने ही में वह गाड़ी पास आ गई मगर उसमें से अलबर्ट के बदले फ्रान्सिस और डिब्रे उतरते हुए दिखाई पड़े। शेटू ने ताज्जुब के साथ इन दोनों से हाथ मिलाते हुए पूछा, "आप लोग यहां कैसे आ पहुंचे!!"

डिब्रे० । अलबर्ट ने हम दोनों को आठ बजे यहां आने को कहा था ॥

ब्यूशेस्प और शेटू ताज्जुब के साथ एक दूसरे को देखने लगे । जब यहां अभी अभी खून खराबा होने वाला है तो और आदमियों को व्यर्थ बुलाने की क्या जरूरत थी!! मारल उनका भाव समझ कर बोला, "मैं समझ गया कि अलबर्ट ने इन लोगों को यहां क्यों बुलाया है, जब इन लोगों को थियेटर में काउण्ट को ललकारते वक्त उसने बुलाया था तो आज लड़ाई के मौके पर भी इनका मौजूद रहना वह मुनासिब समझता है॥"

सब० । बेशक ऐसा ही है । मगर हम सभों को बुला कर वह खुद तो लापता है ॥

ब्यूशेम्प० । (चौंक कर) वह देखो आ रहा है, घोड़े पर, पीछे पीछे नौकर को लिये ॥

शेटू० । कैसा मूर्ख है मैंने समझा दिया था कि पिस्तौल से डूयेल लड़ना है, जिसमें दम फूले और हाथ स्थिर न रहे ऐसा कोई काम न करना, फिर भी घोड़े पर आ रहा है ॥

ब्यूशेम्प० । और ऊपर से खुला कोट और सुफेद वास्केट ! जिसमें ठीक कलेजे पर निशाना लगाया जा सके !!

इस बीच में अलबर्ट घोड़ा दौड़ाता हुआ पास आ पहुंचा और घोड़े से कूद लगाम नौकर की तरफ

फेंक इन नौजवानों की तरफ बढ़ा। इस समय उसका चेहरा उदास और पीला था और आंखें सूजी हुई और लाल हो रही थीं, वह आते ही बोला, "दोस्तो! तुम लोगों ने यहां आने की तकलीफ उठाई इसके लिये धन्यवाद! (मारल से जो उसे देख पीछे हट रहा था) तुमको भी मारल मैं धन्यवाद देता हूं॥"

मार०। आपको शायद मालूम नहीं कि मैं काउन्ट का साथी हूं॥

अलबर्ट०। मुझे मालूम नहीं था, पर इसकी आशा जरूर थी और यह अच्छा ही है, जितने इज्जतदार आदमी यहां हों, उतना ही अच्छा है॥

ब्रेटू०। मि० मारल! आप जायें, काउण्ट मौण्टक्रीटो को अलबर्ट के आने की खबर कर दें॥

मारल घूमा, ब्यूशेम्प ने दोनों पिस्तौलें निकालीं, अलबर्ट ने कहा, "ठहरिये! मुझे काउण्ट मौण्ट क्रीटो से कुछ बातें कहनी हैं॥

ब्रेटू०। अकेले में?

अल०। नहीं, आप लोगों के सामने ही!!

अलबर्ट के साथी ताज्जुब से एक दूसरे की तरफ देखने लगे, मारल खुशी खुशी काउण्ट की तरफ बढ़ा जो दूसरी तरफ मैन्युअल के साथ टहल रहा था॥

मौण्ट०। वह मुझे बुलाता है! क्यों!!

मारल०। सो तो मैं नहीं जानता, पर कुछ कहा चाहता है॥

मोरट०। आह! वह कोई नई शैतानी कर अपना अदृष्ट और भी बिगाड़ा तो नहीं चाहता!!

मैक्समिलियन मारल और मैन्युअल को लिये काउएट उधर बढ़ा जिधर अलबर्ट था। इसको आते देख अलबर्ट इसकी तरफ बढ़ा, दोनों एक दूसरे के पास पहुंच कर खड़े होगये। अलबर्ट ने औरों से कहा, "आप लोग भी मेहरबानी करके पास आ जांय क्योंकि मैं चाहता हूं कि मेरी बात जो इस समय मैं कहने वाला हूं सब कोई अच्छी तरह सुनें।"

काउ०। कहिये आप क्या कहा चाहते हैं।

अलबर्ट०। (भारी गले से) काउएट! मैंने आपको इस लिये भला बुरा कहा था कि आपने काउएट मारकर्फ की एपिरस की एक घटना प्रगट कर दी थी। इस बारे में मेरा खयाल था कि चाहे वे कितने ही कसूरवार हों पर आपको उन्हें सजा देने का कोई अख्तियार नहीं है, पर अब मुझे मालूम हो गया है कि आपको वैसा हक है। फ़रनन्द मगडेगू ने अलीपाशा के साथ जो दगा की उसके कारण मैं ऐसा नहीं सोचता बल्कि मैं यह सोच कर आपको माफ करता हूं कि उस मछुहे फरनन्द ने आपके साथ दगा की और आपको बहुत भयानक तकलीफ पहुचाई!! इसी से मैं समझता हूं और सबके सामने कहता हूं कि आपको मेरे पिता से बदला लेने का अधिकार है, बल्कि मैं, उसका लड़का, इसलिये आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने औरभी

ज्यादा कड़ाई नहीं दिखलाई !!"

अगर उन आदमियों के बीच में जो वहां मौजूद थे यकायक बिजली गिरती तो भी उतना ताज्जुब लोगों को न होता जितना अलबर्ट की इस बात से हुआ! मौएट क्रीटो ने अपनी कृतज्ञता पूर्ण दृष्टि आकाश की तरफ उठाई। उसे आश्चर्य हुआ कि अलबर्ट का वह गर्म मिजाज जिसका कुछ नमूना वह इटली के डाकुओं के सामने देख चुका था, यकायक इस नर्मी को कैसे पहुचा। उसे यह मरियम का असर मालूम हुआ, और वह समझ गया कि ऊंचे दिल की मरियम ने उसके स्वार्थ त्याग का हाल जान कर भी जो उसे नहीं रोका था उसका सबब यही था कि वह पहिले से जानती थी कि उसकी जरूरत नहीं पडेगी॥

अल०। महाशय! आपने मेरी माफी मञ्जूर की! अगर की हो तो मुझसे हाथ मिलाइये। मैंने आदमियत का ही काम किया पर आपने आदमी से बढ़ कर काम किया था। आज केवल कोई देवता ही हम में से एक को मरने से बचा सकता था, और वह देवता स्वर्ग से आया, यद्यपि वह हमें दोस्त नहीं बना सका (जो कि अफसोस ईश्वर नहीं चाहता) पर एक दूसरे की कद्र बता गया॥

मौएट क्रीटो ने जिसकी आंखे तर हो रही थीं अपना हाथ आगे किया और अलबर्ट ने डर मिले हुए इज्जत के साथ उसे दबाया। उसके बाद वह बोला, "महाशयो!

काउएट मैारट क्रीटो ने मेरी प्रार्थना मञ्जूर की! मैंने जल्दी बाजी की थी जो बड़ी बुरी चीज है, पर वह गलती मैंने सुधार ली। मैं समझता हूं जमाना इसके लिये मुझे डरपोक नहीं कहेगा! और अगर कोई कहे तो (तन-कर मानो वह दोस्त दुश्मन सभी से लड़ने को मैाजूद है) मैं उसकी भूल दूर करने को तैयार हूं॥

ब्यूशेरप०। (ताज्जुब के साथ धीरे से) आखिर यह रात भर में हो क्या गया?

भेटू०। अलबर्ट ने या तो इस समय कोई बडे ऊंचे दिल का काम किया है या बडी नीचता दिखाई है॥

डिब्रे०। (फ्रान्सिस से) मामला क्या है? मैारट क्रीटो मारकर्फ के साथ बुराई करता है और मारकर्फ का लडका कहता है कि तुमने ठीक किया!! अगर मेरे घराने में जनीना की घटना दस दफे हुई होती तो मैं दस दफे लोगों से लडता!!

मैारट क्रीटो यह सब नहीं सोच रहा था। चैाबीस बरस की बातों को याद करता हुआ वह इन नैाजवानों की बात नहीं सोचता था बल्कि उस बहादुर तबीयत औरत का खयाल कर रहा था जो अपने लडके की जान की भीख मांगने आई थी, जिसे उसने अपनी जान अर्पण करना चाहा था, और जिसने अब उसे इस तरह पर, अपने घर का एक ऐसा भयानक भेद खोल कर, बचाया था जिसके खुल जाने से वह अपने लड़के के प्रेम से सदा के लिये वञ्चित हो सकती थी!

काउएट के मुंह से निकला—

"अदृष्ट! केवल अदृष्ट! अब मुझे और भी पूरी तरह पर विश्वास हो गया कि ईश्वर ने मुझे अपना दूत बनाया है॥"

तीसरा बयान।

मां-बेटा।

मैक्सिमिलियन और मैन्युअल को साथ ले काउएट अपनी गाडी में बैठा और वहां से वापस हुआ। बाकी के नौजवान उसी जगह खड़े ताज्जुब के साथ अलबर्ट की सूरत देखने लगे॥

सबसे पहिले ब्यूश्चेम्प ने अपनी जुबान खोली और कहा, "मैं तुम्हें मुबारकबादी देता हूं कि ऐसी अच्छी तरह से तुमने इस दुखदाई मामले को तै किया॥"

ताने की इस बातको सुन कर भी अलबर्ट ने अपना सिर न उठाया। शैटूरेनाड ने यह देख कहा, "तो हम लोगों की अब यहां क्या जरूरत है? चलो घर चलें।" ब्यूश्चेम्प बोला, "हां, चलो, अलबर्ट की मुलायमियत के लिये उसको मुबारकबादी मैं दे ही चुका, अब चलो॥"

अलबर्ट ने सिर उठाया, और उदास आंखें चारो तरफ फेर कर कहा, "मैं समझता हूं कि आप लोग यह नहीं जान सके कि मेरे और काउएट के बीच में कोई बड़ी गूढ बात हो गई॥"

ब्यूप्रेस्प० । असंभव है, असंभव है, पर हर एक मूर्ख तो तुम्हारी इस बहादुरी की बात नहीं समझ सकता !! अच्छा मैं तुम्हें एक राय दूं ? तुम नेपल्स, हेग या सेण्ट-पीटर्स वर्ग चले जाओ, वे सब शान्त देश हैं, वहां इज्जत बेइज्जत का इतना खयाल नहीं किया जाता जितना यहां फ्रांस के गर्म मिज़ाज वाले करते हैं । कुछ दिनों के बाद सब शान्ति हो जायगी तब तुम यहां लौट आना ॥"

शेटू० । बेशक मेरी यही राय है ॥

अल० । (रूखी हंसी हंस कर) मैं ऐसा ही करूंगा, इसलिये नहीं कि आपलोग ऐसी सलाह दे रहे हैं, बल्कि इसलिये कि मैंने खुद पैरिस छोड़ देने का निश्चय कर लिया है । आप दोनों आदमियों ने मेरा सेकण्ड होने की जो दया की थी, उसके लिये धन्यवाद, आपकी बातें सुन कर अब केवल उसके लिये कृतज्ञता ही मेरे दिल में बच रही है ॥

दोनों दोस्तों ने ताज्जुब के साथ एक दूसरे की तरफ देखा, अलबर्ट की आखिरी बात में एक अजीब शान थी, अब वहां रुक कर बात बढ़ाना फजूल समझ ब्यूप्रेस्प ने कहा, "अच्छा, सलाम !" और अपना हाथ बढ़ाया पर अलबर्ट ने उसकी तरफ देखा नहीं, शेटू ने भी "बिदा" कह कर मिलाने के लिये हाथ बढ़ाया पर उससे भी अलबर्ट ने हाथ न मिलाया । उसके मुंह से बहुत ही धीरे से "बिदा" यह एक शब्द निकला जिस में दबा हुआ गुस्सा, घमण्ड, लाचारी सभी कुछ मिला

हुआ था। उसके दोस्त चले गये और तब कुछ देर के बाद वह भी अपने घोड़े पर सवार हुआ और अपने घर की तरफ लौटा॥

घर के दर्वाजे पर जिस समय वह अपने घोड़े से उतर रहा था उसे अपने पिता के पीले चेहरे की एक झलक दिखाई दी जो खिड़की का पर्दा सरका कर उस की तरफ देख रहे थे। अलबर्ट ने एक ठण्डी सांस ले अपनी गरदन दूसरी तरफ घुमा ली और अपने कमरे में चला गया। उसने वहां पहुंच एक दुख भरी निगाह उन ऐश और शौकीनी की चीजों पर डाली जिन्होंने अब तक उसकी जिन्दगी को सुखी बना रक्खा था, और तब एक सांस लेकर उधर देखा जिधर उसकी मा की तस्वीर लटक रही थी। इस तस्वीर को उसने उस सुनहरे चौखटे से अलग किया जिसमें वह जड़ी हुई थी और लपेट के एक तरफ रख लिया। इसके बाद अपने सब सुन्दर और क़ीमती सामान हथियार, खिलौने, सोने चांदी के बरतन, पीतल और चीनी मिट्टी की चीजें, वगैरह सरिया कर आलमारियों में बन्द की, जितने कीमती जेवर अंगूठियां घड़ी, चेन, जाकिट आदि थे उन्हे दराजों में बन्द किया और तब सभी की एक लिस्ट बनाई। अपने सब कागज पत्र दुरुस्त किये और जो फजूल थे उन्हें जला दिया इसके बाद सब तालों की तालियें खोज खोज उनमें लगा दी और उस लिस्ट को टेबुल पर रख उदासी के साथ चारो तरफ देखा। उसकी जेब में कुछ रुपया पैसा था, उसका

खयाल आ जाने से उसे भी एक दराज में डाल दिया।

इसी समय उसका नौकर कमरे में आया, अलबर्ट ने सुस्ती से उसकी तरफ देख के पूछा, "क्या है?"

नौकर०। आपके पिता ने मुझे बुलवाया है।

अलबर्ट०। तब?

नौकर०। उनको मालूम है कि आपके साथ मैं उस जगह गया था, शायद उसी बारे में कुछ पूछा चाहते हैं।

अलबर्ट०। मुमकिन है॥

नौकर०। तो मैं उन्हें क्या कहूंगा?

अलबर्ट०। जो ठीक हाल है बता देना॥

नौकर०। कह दूं कि डूयेल नहीं हुआ?

अल०। नहीं बल्कि यह कह देना कि मैंने काउएट मौएट क्रीटो से मांफी मांग ली॥

नौकर चला गया। अलबर्ट फिर अपने काम में लगा और बाकी का सामान और बेशकीमती कपड़े आदि ठिकाने से रखने लगा। इस काम से खाली हुआ ही था कि दर्वाजे पर गाड़ी की घड़घड़ाहट सुनाई दी, उसने खिड़की में से देखा उसके पिता घर से निकल गाड़ी पर सवार हुए और गाड़ी जोर से रवाना हुई। अलबर्ट कुछ देर तक खिड़की के पास खड़ा रहा इसके बाद एक लम्बी सांस ले वह कमरे के बाहर आया और अपनी मां के कमरे की तरफ गया, पर दर्वाजा खोलने के साथ ही जो कुछ उसने देखा उससे वह चौंक उठा।

मरियम भी इस समय वही काम कर रही थी जो अलबर्ट अभी अभी किये जा रहा था अर्थात् वह भी अपनी सब चीजें ठीक कर रही थी। सब कपड़े, जेवर, बर्तन, रुपया वगैरह अलग अलग रक्खा हुआ था, सब तालों में तालियें लगी हुई थीं, सब सामान ठिकाने से रक्खा हुआ था और मरियम उनकी एक सूची बना रही थी। अलबर्ट के मुंह से एक चीख के साथ निकला "मां! तुम भी!!" मरियम ने अपना उदास चेहरा उसकी तरफ फेरा॥

आह! इस समय इन दोनों दुखियों की क्या अवस्था थी? एक ही खयाल ने उन दोनों के दिल में घुस कर एक ही असर पैदा किया था। उनकी सूरतें क्या क्या भाव जाहिर कर रही थीं! अगर कोई कारीगर इस समय इन मां बेटे की तस्वीर बना सकता तो क्या ही सुन्दर तस्वीर बनती!!

अल०। मां, यह तुम क्या कर रही हो?

मरियम०। जो तुम कर रहे थे॥

अल०। (उद्वेग के साथ) तो मां क्या मेरी तुम्हारी एक ही बात है? मैं तो इस घर ही को इस्तीफा दे रहा हूं॥

मरियम०। और वही मैं भी कर रही हूं और इसमें तुम्हें अपना साथी बनाया चाहती हू॥

अल०। नहीं नहीं मां, यह नहीं हो सकता। मैं अपनी तकलीफ तरद्दुदों और मुसीबतों में तुम्हें शा-

मिल नहीं कर सकता, अब मैं पूरी गरीबी में पड़ूंगा, यहां तक कि जब तक मेरे पास अपना कमाया हुआ पैसा नहीं होगा तब तक के लिये भीख मांगूंगा मगर इस घरका एक पैसा न छूऊंगा। मैं अपने खर्च के लिये फ्राग्सिस से कुछ रुपया उधार ले रहा हूं॥

मरियम०। हाय मेरा प्यारा लड़का भूखा रहे और भीख मांगे! नहीं २ ऐसा मत कहो, नहीं मेरा निश्चय भी टूट जायेगा॥

अलबर्ट०। मगर मेरा नहीं टूटेगा, मैं नौजवान हूं, मजबूत हूं, समझता हूं कि बहादुर भी हूं। मां, मुझे उन आदमियों का हाल मालूम होगया है जो मुसीबत में पड़े हैं, अपनी सब आशाओं को टूटते देख चुके हैं, दुश्मनों के द्वारा सताये जा चुके हैं पर फिर भी, मर कर भी, जीते उठे हैं, और ईश्वर की दया से जीकर फिर इतने मजबूत हो सके हैं कि अपने दुश्मनों के सिर पर पैर रख कर उन्हें कुचल सके। मां, मैं भी अब गुजरे हुए का खयाल छोड़ देता हूं, सब कुछ यहां तक कि अपना नाम तक मैं छोड़ता हूं क्योंकि मा, मैं अब वह नाम नहीं चाहता जिसे दूसरे के आगे शर्मिन्दा होना पड़े॥

मरियम०। अगर मेरा दिल मजबूत होता तो मैं भी तुम्हें यही सलाह देती हूं! मेरी कमजोर आवाज के चुप हो जाने पर भी तुम्हारा दिल तुम्हें नेक सलाह दे रहा है, उसकी बात मानो और जो सोचा है वही करो। पर निराश कभी मत हो, तुम अभी लड़के हो मुश्किल

से बाइस बरस के हुए होंगे। अगर तुम बेदाग नाम चाहते हो तो मेरे पिता का नाम ग्रहण करो जिसपर कभी धब्बा नहीं लगा। उनका नाम 'हेरारा' था, अलवर्ट ! मेरा दिल कहता है कि तुम्हारी बदौलत मेरे पिता के नाम को इज्जत मिलेगी। अपने नये नाम के साथ तुम नई दुनियां में घुसो और नाम पैदा करो। अभी तुम्हारे सामने जिन्दगी है, उम्मीद है, यद्यपि मेरे आगे कुछ नहीं, क्योंकि इस घर से निकल मैं कब्र में पैर रक्खूगी॥

अलवर्ट यह सुन कर बोला, "मा ! तुम मेरे साथ रहोगी, मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूगा, आशा पर भरोसा कर मैं अपनी जिन्दगी की किताब का एक नया पन्ना उलटता हूं। मुझे विश्वास है कि मेरी वेकसूरी और तुम्हारी नेकी पर खयाल कर ईश्वर हमारी मदद करेगा। काउण्ट मारकर्फ इस समय कहीं गये हैं, हम लोगों के लिये यह अच्छा मौका है॥"

मरियम बोली, "बेटा ! मैं तैयार हूं॥"

अलवर्ट दौड़ा हुआ सड़क पर के गाड़ीखाने में चला गया और एक किराये की गाड़ी ले आया। उसे एक किराये के मकान का पता मालूम था जिसमें दो कोठड़ियां खाली थीं और जिसमें वे दोनों कुछ दिनों तक रह सकते थे। जिस समय अपने घर के दर्वाजे पर अलबर्ट गाड़ी से उतरा उसी समय एक आदमी उसके पास आया। अलबर्ट ने इसे पहिचाना, यह वर्टूशियो था, वर्टूशियो ने एक चीठी यह कहते हुए अलबर्ट को दी,

"काउण्ट ने भेजी है ।" अलबर्ट ने चीठी ले कर पढ़ा, तब घूम कर देखा पर बटूशियो चला गया था। अलबर्ट ने मकान के अन्दर आ धड़कती हुई छाती और डबडबाई हुई आंखों के साथ वह चीठी अपनी मां के हाथ पर रख दी। मरियम ने यह पढ़ा :—

"अलबर्ट! मैं जान गया कि तुम क्या करने का इरादा कर रहे हो! तुम स्वतन्त्र बना चाहते हो, यह घर छोड़ा चाहते हो और अपनी मां को भी साथ ले जाया चाहते हो, पर जरा गौर करो। तुम्हारा दिल बड़ा ऊंचा है, पर तुम्हारे सामने एक बड़ी गहरी लड़ाई है। तुम तकलीफ उठाओ, पर अपनी मा को उस गरीबी की आंच न दिखाओ जिसमें कुछ समय तक तो लड़ाई की पहिली हालत में तुम्हें पड़ना ही होगा क्योंकि यह मुझे मालूम हो गया है कि तुम इस घर का सब सामान छोड़ कर जा रहे हो। ईश्वर नहीं चाहता कि कसूर की सजा बेकसूर भोगे, और तुम्हारी मा बिलकुल बेकसूर है, अस्तु मेरी बात सुनो। चौबीस बरस हुआ जब कि एक दिन मैं घमण्ड और खुशी से भरा हुआ अपने घर लौटा था। मेरी एक सुन्दर लड़की के शादी होने वाली थी, और मेरे पास अढ़ाई सौ अशर्फियां थीं। इन अशर्फियों को मैंने उस मकान के बागीचे में गाड़ा हुआ था जिसमें मेरा बाप रहता था क्योंकि समुद्र बड़ा दगाबाज है। तुम्हारी मां उस मकान को अच्छी तरह जानती है। कुछ ही दिन हुए मैं मारसेलीज में गया था वहां उस मकान को देखा जिसने बहुत सी दुखदाई बातें मुझे याद करा दीं, मैंने एक फरसा लेकर उस अञ्जीर के पेड़ की जड़ में खोदा जिसे मेरे पैदा होने वाले दिन मेरे पिता ने लगाया था। मेरा खजाना किसी ने छूया नहीं था, वह लोहे का बक्स जिसमें अढ़ाई सौ अशर्फियां थीं ज्यों का त्यों पड़ा था। मैंने उसे फिर मिट्टी में दबा दिया। अलबर्ट! यही रुपया जिसे किसी समय मैंने अपनी प्रेमिका के सुख और प्रसन्नता की नीयत से रक्खा था, भाग्य के फेर से आज फिर उसी काम में लगाया जा सकता है। मेरी हालत

पर गौर करो, मैं करोड़ो दे सकता हूं, पर सिर्फ इतना ही देने की आज्ञा चाहता हूं। अलबर्ट कि मैं जानता हूं तुम्हारा हृदय उदार है पर यदि तुम घमण्ड या गुस्से के फेर में पड कर इस बात से इन्कार करोगे,या दूसरे से वह वस्तु मांगोगे जिसे देने का मुझे हक है,तो मेरे साथ अन्याय करोगे और तब मैं यह कहूंगा कि तुमने मुझे अपनी मा की सहायता न करने दे कर,उस आदमी के साथ और भी अत्याचार किया जिसका बाप तुम्हारे पिता की करतूतों से भूखो और लाचारी की हालत में मर गया॥

जब तक मरियम यह चीठी पढ़ती रही तब तक अलबर्ट चुपचाप खड़ा उसके जवाब की राह देखता रहा। मरियम ने एक विचित्र निगाह से आस्मान की तरफ देखा और कहा, "मैं मञ्जूर करती हूं, उसे यह दहेज देने का अख्तियार है, मैं इसे ले किसी कन्वेन्ट में चली जाऊंगी।" उसने वह चीठी अपनी कुर्ती में खोंस ली और अपने लड़के का हाथ पकड़े हुए मजबूत कदमों के साथ—जिसकी उसे आशा न थी—वह नीचे उतरी॥

चौथा बयान।

आत्म हत्या।

मैन्युअल और मैक्समिलियन के साथ काउण्ट मौण्ट क्रीटो अपने घर की तरफ लौटा। इस समय तीनों ही प्रसन्न थे। मैन्युअल और मारल तो इस झगड़े को इस तरह मिटते देख इतना खुश थे जिसका ठिकाना नहीं और काउण्ट इन लोगों की प्रसन्नता और अपने ऊपर प्रेम देख देख के खुश हो रहा था। चौमुहानी पर उन्हें बट्टूशियो दिखाई पड़ा जो सन्तरी की तरह चुपचाप खड़ा था। काउण्ट ने गाड़ी में से सिर निकाल उससे कुछ बातें की, बट्टूशियो तुरत ही चला गया और मैन्युअल ने भी गाड़ी से उतरते हुए कहा, "मैं भी इसी जगह उतरूंगा, मेरा मकान आ गया।" काउण्ट ने कहा, अच्छी बात है पर मारल तो मेरे साथ चलेंगे न!" मारल ने कहा, "हां थोड़ी दूर तक, मुझे भी उधर एक काम है।" मैन्युअल चला गया, काउण्ट और मारल को ले गाड़ी पुनः रवाना हुई। दोनों में आज सुबह की घटना और अलबर्ट के इस तरह के बर्ताव पर बातें होने लगी। अलबर्ट के माफी मांगने पर मारल को बहुत ही ताज्जुब था क्योंकि वह उसकी हिम्मत और बहादुरी अच्छी तरह जानता था, काउण्ट यद्यपि उसके माफी मागने का सबब समझता था पर मारल से कहा नहीं चाहता था, अस्तु वह भी उसके

बर्ताव पर ताज्जुब ही जाहिर करता रहा॥

काउण्ट के मकान पर पहुंच गाड़ी रुकी और दोनों उतरे, काउण्ट ने मारल से कहा, "चलो भोजन तैयार है, एक साथही खाना खांयगे", मगर मारल ने सिर हिलाकर जवाब दिया, "मुझे भूख नहीं है।" काउण्ट ने ताज्जुब से कहा, "भूख नहीं है! सुबह का वक्त और भूख नहीं! मुझे तो भूख पैदा न होने के दो ही सबब मालूम हैं! रञ्ज या इश्क!! तो रञ्ज तो इस समय तुम से कोसों दूर है, तो फिर क्या दूसरी बात माननी पड़ेगी!!"

मारल का चेहरा लाल हो आया, वह बोला, "मैं आज सुबह को... ..." काउण्ट बात काट कर बोला, "ओह हां ठीक है, तुमने मुझसे कहा था कि तुम किसी को प्यार करते हो, तो इस वक्त शायद उसी के पास जा रहे हो!!"

मारल बोला, "हां" काउण्ट ने प्यार के साथ उसकी तरफ देखते हुए कहा, "जाओ, खुशी से जाओ, मगर एक बात का वादा करके कि अगर कभी तुम्हें तकलीफ हो, किसी तरह की रुकावट पहुंचे, या कोई तरद्दुद हो, तो तुरत मुझे याद करना! मारल! मेरे हाथ में कुछ अद्भुत ताकत है, मैं अपनी ताकत अपने दोस्तों के भले के लिये खर्च किया चाहता हूं, और तुम मेरे दोस्त हो, समझे!!"

मारल बोला, "जरूर, जिस तरह स्वार्थी लड़के

काम पड़ते ही मां बाप के पास दौड़े जाते हैं उसी तरह मैं भी जरूरत पड़ने पर आपको याद करूंगा॥"

काउण्ट०। वादा करते हो?

मारल०। हां, अच्छा अब जाता हूं॥

काउण्ट०। खुशी से॥

मारल चला गया, काउण्ट दर्वाजे की तरफ घूमा पर उसी समय उसे बर्ट्रू चियो दिखाई पड़ा, उसने पूछा "क्या हुआ?" बर्ट्रू चियो बोला, "वह घर छोड़ रही हैं" काउण्ट ने पूछा, "और अलबर्ट?" बर्ट्रू चियो ने जवाब दिया, "उनका नौकर कहता है कि उनका भी यही इरादा है॥"

"अच्छा मेरे साथ आओ" कह काउण्ट उसे लिये हुए अपने कमरे में आया, यहां उसने वही चीठी लिखी जो पहिले आप अलबर्ट के हाथ में पढ़ चुके हैं और जल्दी से दे आने को कहा। बर्ट्रू चियो जा रहा था कि काउण्ट ने कहा, "हैदरी को खबर भेजवाते जाओ कि मैं आगया॥"

"मैं आगई" कहती हुई हैदरी कमरे के अन्दर घुस आई। बर्ट्रू चियो चला गया। हैदरी का चेहरा खुशी से भरा हुआ था, बेटी को खोया हुआ बाप मिलने से या प्रेमिका को अपना प्रेमी पाकर जैसी खुशी होती है वैसीही हैदरी को काउण्ट के वापस आने पर हुई थी। माउण्ट क्रीटो भी प्रसन्न था पर [illegible] खुशी जाहिरा नहीं थी। जो दुखी दिल बहुत [illegible] उठा चुके हैं

उनके लिये प्रसन्नता वैसीही है जैसी सूखी जमीन के लिये ओस, दिल और जमीन दोनों ही अपने ऊपर गिरने वाली उस मिठास को सोख लेते हैं। ऊपर कुछ भी नहीं रहने देते ॥

सचमुच माउण्ट क्रीटो इस समय वह बात सोच रहा था जिसे बरसों से सोचने की हिम्मत उसने नहीं की थी अर्थात् कि दुनिया में दूसरी मरियम भी है और वह अब भी सुखी हो सकता है। उसकी प्रसन्न दृष्टि हैदरी के आंसू से तर चेहरे पर दौड़ रही थी कि दर्वाजा यकायक खुला, काउण्ट ने भवें सिकोड़ कर आने वाले की तरफ देखा, वैपटिस्टिन बोला, "काउण्ट मारकर्फ!"!!

हैदरी चौंक और कांप कर बोली, "ओह क्या अभी सब तै नहीं हुआ !!" पर काउण्ट उसे दिलासा देकर बोला, "घबराओ मत, अब कोई खतरा नहीं है।"

हैदरी०। पर यही आदमी.... .....

काउ०। हां, पर वह अब हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

हैदरी०। तुम नहीं जानते कि इन दो घण्टों में मुझे कैसी तकलीफ हुई है॥

काउ०। (प्यार से उसे देख कर) तुम बिश्वास रक्खो कि अब अगर कोई मुसीबत आने वाली होगी भी तो वह मुझ पर नहीं किसी दूसरे ही पर आवेगी॥

हैदरी को काउण्ट पर इतना भरोसा था कि यह बात सुनते ही उसके चेहरे का रंज बिल्कुल दूर होगया

उसने अपना माथा काउण्ट की तरफ बढ़ाया जिसने स्नेह के साथ उसे चूम लिया और तब यह मेरपता हुआ वह उठा "ओह क्या मैं फिर भी प्यार कर सकूंगा!" और उधर चला जिधर काउण्ट मारकर्फ था॥

कदाचित् पाठक मारकर्फ के यहां आने का कारण जानना चाहते होंगे। जिस समय मरियम अपना घर छोड़ने के इरादे से अपनी चीजें दुरुस्त कर रही थी मारकर्फ उससे मिलने आया पर कमरे के अन्दर आने के पहिले शीशे के दरवाजे में से उसने मरियम की कार्रवाई देखी, मरियम का इरादा उसे मालूम हो गया। वहां से वह बिना कुछ कहे लौटा और कमरे में आ खिड़की के पास खड़ा हो कुछ सोचने लगा। दस मिनट के बाद उसने अपने लड़के अलबर्ट को घोड़े से उतरते देखा। वह जानता था कि अलबर्ट ने काउण्ट मौण्ट क्रीटो की बड़ी बेइज्जती की है और दुनिया के किसी मुल्क में इतनी बेइज्जती के बाद कातिल डूयेल हुए बिना नहीं रह सकता, अस्तु जब अलबर्ट सही सलामत लौटा है तो जरूर उसने अपने बाप का बदला चुका लिया है॥

उस पापी सूरत पर एक प्रसन्नता की झलक उस धूप की तरह दौड़ गई जो बादल के हट जाने से कुछ साइत के लिये खेतों पर ... है। काउण्ट ...

लगा कि अलबर्ट उसके पास क्यों नहीं आया ।

आखिर उसने अलबर्ट के नौकर को बुलाया, पाठकों को याद होगा कि अलबर्ट ने नौकर से कह दिया था कि कोई बात छिपावे नहीं अस्तु काउण्ट को मालूम हो गया कि उसके लड़के ने मौण्ट क्रीटो से माफी मांग ली ॥

दस मिनट के बाद मारकर्फ काली पौशाक पहिने और अपने ओवर कोट में दो तलवार छिपाये गाड़ी पर चढ़ा और माउण्ट क्रीटो के घर की तरफ चला । पांच ही मिनट में वह वहां पहुंच गया और वैपटिस्टिन उसे एक कमरे में ठहरा काउण्ट से इत्तला करने चला गया । मारकर्फ बेचैनी के साथ इधर से उधर घूमने लगा । थोड़ी ही देर बाद मौण्ट क्रीटो ने कमरे का दर्वाजा खोला और उसे देख कहा—"आह ! सचमुच काउण्ट मारकर्फ ही हैं, मैंने सब गलत नहीं सुना !"

"हां....मैं ...ही...हूं !" मारकर्फ के मुंह से साफ आवाज निकलना कठिन हो रहा था ॥

मौण्ट क्रीटो०। क्या मैं सुन सकता हूं कि इस समय आपके तकलीफ करने का क्या सबब है ॥

मार०। आपकी आज सुबह मेरे लड़के से मुलाकात हुई थी ?

मौण्ट०। आपको मालूम है ?

मार०। और मैं यह भी जानता हूं कि उसे आपसे लड़ कर आपको मार डालने का काफी सबब था ॥

मौएट०। ज़रूर होगा, मगर आप देखते हैं कि उस ने मुझे मारना तो दूर मुझसे लड़ना भी मञ्जूर न किया॥

मार०। और तिस पर भी उसे यह विश्वास था कि आप ही मेरी बेइज्ज़ती के सबब हैं और ही आप के कारण मुझ पर यह आफ़त आई!!

मौएट०। नहीं प्रधान कारण कोई दूसरा ही है॥

मारकर्फ़०। शायद आपने उससे माफ़ी मांग ली॥

मौएट०। नहीं उल्टा उसने मुझसे माफ़ी मांगी॥

मारल०। ताज्जुब की बात है, उसने ऐसा क्यों किया!!

मौएट०। कदाचित् उसे मालूम हो गया कि मुझ से भी बढ़ कर कोई दूसरा कसूरवार है॥

मार०। वह कौन?

मौएट०। उसका बाप!!

मार०। (पीला पड़ कर) हो सकता है, पर इस सबब से मेरा लड़का कायर हो जाय!!

मौएट०। अलबर्ट मारकर्फ़ कायर नहीं है॥

मार०। (गुस्से के साथ जोर से) जब आदमी के हाथ में तलवार है और उसका जानी दुश्मन उस तलवार की पहुंच के भीतर है तो उससे न लड़ना कायरता नहीं तो क्या है!

मौएट०। (शान्ति से) महाशय! यह सब बातें आपको कहनी हों तो अपने लड़के से कहिये। मुझे आपके घरेलू मामलों से कोई मतलब नहीं है॥

मार०। बेशक बेशक, और इसी से मैं उस मामले में आपसे कुछ न कह कर सिर्फ यह कहता हूं कि अगर मेरा लड़का लड़ने को तैयार नहीं तो मैं तैयार हूं....

मैाएट०। (तन कर) मैं भी तैयार हूं॥

मार०। (गुस्से से) और मैं तब तक आपसे लडूंगा जब तक हम में से एक मर न जाय॥

मैाएट०। (गहरी निगाह से देखता हुआ) एक मर न जाय॥

मार०। तो अभी, किसी गवाह की भी जरूरत नहीं॥

मैाएट०। कोई नहीं, हमलोग एक दूसरे को बखूबी जानते हैं॥

मार०। नहीं बल्कि बिल्कुल नहीं जानते॥

मैाएट०। (शान्ति से) वाह सो कैसे, क्या आप वही सिपाही फरनन्द नहीं हैं जो वाटरलू की लड़ाई के कुछ ही पहिले फौज से निकल भागे थे, वही लेफटिनेण्ट फरनन्द नहीं हैं जिन्होंने स्पेन में फ्रान्सीसी लोगों के गोइन्दों का काम किया था, वही कप्तान फरनन्द नहीं हैं जिन्होंने अपने मालिक अली के साथ दगा की थी, और क्या इन्हीं फरनन्दों ने मिल कर लेफटिनेण्ट जेनरल कौण्ट मारकर्फ को फ्रान्स का पीयर नहीं बनाया है!!"

मारकर्फ को ऐसा मालूम हुआ मानों मैाएट क्रीटो लाल लोहे से उसे दाग रहा है, वह गुस्से से दांत पीसकर बोला, "कम्बख़्त! इस मौके पर भी मेरी बेइज़्ज़ती से

याद नहीं आता ! शैतान ! मैं नहीं जानता कि किस तरह तूने बीती बातों को अन्धेरे में से खोज निकाला है, किस मशाल की मदद से तूने मेरी जिन्दगी के पन्ने उलटे और पढ़े हैं, बेशक तू मुझे जानता है पर मैं तुझे नहीं जानता, पाजी ! बेईमान ! दौलत की खाल पहिने हुए तू कौन है यह मैं बिल्कुल नहीं जानता !! यहां तू काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो बना है, इटली में सिन्दबाद जहाजी बना था, माल्टा में कुछ और था ! कम्बख़्त ! तू कम से कम अपना असल नाम तो बता दे कि तेरे कलेजे में तलवार भोंकते हुए मैं यह तो जान सकूं कि तू फलाना है !!"

मौण्ट क्रीटो का चेहरा पीला हो गया, उसकी आंखों से चिनगारियां निकलने लगी, वह झपट कर पास वाले कमरे में घुस गया, एक सायत में उसने अपने नक़ली बाल कोट और वास्केट उतार के फेंक दी और अपने काले लम्बे बालों को खुला छोड़ सिर पर जहाजी टोपी और बदन से मलाहों की जाकिट पहिन ली, इसके बाद छाती पर हाथ बांधे वह मारकर्फ के सामने आ खड़ा हुआ जो उसे देखते ही यकायक कांप उठा, उसके पांव उसका बोझ सम्हालने लायक न रह गये और वह पीछे हटता हटता दीवाल से जा लगा । मौण्ट क्रीटो गरज कर बोला:—

फरनन्द !!! मेरे हजारों नामों में से सिर्फ एकही तुझे बता देना काफी है, मगर नहीं, तू मुझे पहिचान गया,

तुझे मेरी शक्ल याद आ गई क्योंकि आज मैं तुझे वह सूरत दिखा रहा हूं जिसे तकलीफ और मुसीबत से भरा हुआ होने पर भी बदला लेने की खुशी ने फिर से नौजवान कर दिया है, जिसे तूने सपनों में प्रायः देखा होगा, और जिसे मेरी प्यारी मरियम से शादी करके भी तू अपने आखों के सामने से हटा न सका होगा॥"

जेनरल कुछ देर तक भयानक और डरी हुई सूरत से काउण्ट को देखता रहा इसके बाद यकायक चिल्ला कर "एडमण्ड डेन्टिस!!!" कहता हुआ वह लड़खड़ाता हुआ उस कमरे के बाहर निकल भागा, बड़ी मुश्किल से अपनी गाड़ी के पास वह पहुंचा और मुर्दों की सी आवाज में "घर चलो" कहता हुआ भीतर जा बैठा। गाड़ी तेजी से रवाना हुई और ठण्ढी हवा लगने से उस के होश कुछ ठिकाने आये, अपने मकान से कुछ इधर ही उसने गाड़ी रोक दी और उतर पड़ा क्योंकि अपने महल के दर्वाजे पर उसने एक किराये की गाड़ी खड़ी देखी, वह डर कर उस तरफ देखने लगा, उसके देखते ही देखते मरियम अलबर्ट का हाथ पकड़े नीचे उतरी और उस गाड़ी पर सवार हुई। चढ़ते समय के अलबर्ट के वे शब्द "मा, हिम्मत करो! अब यह हमारा मकान नहीं है।" बारीक होने पर भी उसके कानों तक पहुंचे, गाड़ी चली गई, काउण्ट के मुंह से दिल को तोड़ देने वाली एक आह निकली, उसकी किस्मत, खुशी, नेकनामी, स्त्री और लड़के ने एक साथ ही उसका साथ

छोड़ दिया था । वह झपटता हुआ घर के अन्दर जा एक खिड़की में से झांक कर उस गाड़ी की तरफ देखने लगा पर न तो अलबर्ट और न मरियम ही की सूरत दिखाई पड़ी, किसी ने भी उस आहत पति और त्यक्त पिता को अपनी सूरत न दिखाई ॥

जैसेही वह गाड़ी आंखों की ओट हुई एक पिस्तौल छूटने की आवाज आई, धक्के ने खिड़की का एक शीशा तोड़ दिया और उसमें से थोड़ा धूंआं निकल कर बाहर की हवा में मिल गया ॥

पांचवां वयान ।

वेलेण्टिन ।

कदाचित् पाठक समझ गये होंगे कि मारल कौन से जरूरी काम पर जा रहा था । वेलेण्टिन के दादा नौटीर ने मारल को हफ्ते में दो दफे अपने कमरे में आ कर वेलेण्टिन से मुलाकात कर जाने की इजाजत देदी थी अस्तु इस समय मारल वहीं जा रहा था। यह नौटीर के भोजन करने का समय था और इस समय नौटीर के पास सिवाय वेलेण्टिन के और कोई नही रहता था ॥

वेलेण्टिन बड़ी उत्कंठा और बेचैनी के साथ मारल की राह देख रही थी क्योंकि कल थियेटर वाली वारदात उसे भी मालूम हो चुकी थी और वह यह भी समझ गई थी कि डूयेल जरूर होगा और मारल ही मैाण्ट क्रीटो

का बेकेएड होगा अस्तु वह अपने प्रेमी के लिये बेचैन थी कि कहीं लड़ाई झगड़े में उसे भी शामिल न होना पड़े। मारल को सही सलामत देख उसकी बेचैनी दूर हुई, उसने कुल हाल पूछा, मारल ने खुशी २ बताया और तब दोनों आदमी नोटीर के पास बैठ बातें करने लगे॥

वेलेण्टि०। पहिले भी एक दफे बाबा ने यह मकान छोड़ दूसरी जगह रहने का इरादा किया था अब वे फिर वैसा करने का इरादा कर रहे हैं॥

मारल०। बहुत अच्छा, है बहुत ठीक है॥

वेलेण्टिन०। और सबब क्या बताते हैं सो जानते हो? (नोटीर ने वेलेण्टिन को चुप रहने का इशारा किया पर वह मारल की तरफ देखने में इतनी लवलीन थी कि उसने कुछ खयाल न किया)

मारल०। जो कुछ भी सबब हो ठीक ही होगा॥

वेले०। वे कहते हैं कि इस मकान में मेरी तन्दुरुस्ती ठीक नही रहती॥

मारल०। हां यह तो मैं भी कहूंगा कि इधर कुछ दिनों से तुम कुछ बीमार सी लगती हो॥

वेले०। नही बीमार तो नही हूं पर यह जरूर है कि भूख नही लगती और पेट में ऐसा मालूम होता है कि कोई कड़ी चीज हजम करने की कोशिश कर रहा है॥

मारल०। दवा क्या करती हो?

वेले०। विचित्र—मैं बाबा के खाने की दवा में से

एक चिम्मच रोज पीती हूं–एक नहीं, पहिले एक से शुरू किया था अब चार चम्मच खाती हूं॥

वेलेरिटन मुस्कुराई, पर उसका चेहरा सुस्त था, वह तकलीफ में मालूम होती थी। नैाटीर बड़े गैार से उसकी तरफ देख और उसकी बातें सुन रहा था॥

प्रेम से डूबा मारल एक टक उसकी तरफ देखने लगा वह कुछ पीली और दुवली हो रही थी और मालूम होता था कि किसी तरह की तकलीफ उसे हो रही है॥

मारल०। मिस्टर नैाटीर जो दवा खाते हैं उसी को तुम भी खाती हो?

वेले०। वही कडुई दवा है, ऐसी कडुई है कि उसे खाने बाद घण्टों तक जो कुछ चीज खाती हूं वह भी कडुई लगती है। अभी एक गिलास शरवत पीया मगर ऐसा कडुआ कि आधा ही पीकर छोड़ दिया॥

यह सुनते ही यकायक नैाटीर का चेहरा पीला हो गया। उसने इशारा किया "मैं कुछ कहा चाहता हूं" वेलेरिटन डिक्शनरी लेने उठी मगर यकायक लड़खड़ाई और तब एक कुर्सी का सहारा लेती हुई बोली, "ओह यह क्या! मेरा सिर क्यों चक्कर खाता है! आंख के आगे चमक सी क्या मालूम होती है!" उसका चेहरा और गाल एक दम लाल हो आये और वह कुर्सी पर गिर पड़ी॥

उसकी हालत से ज्यादा नैाटीर की घबराहट ने

मारल को बेचैन किया और वह वेलेण्टिन की तरफ झपटा। उसी समय वेलेण्टिन सम्हल गई और आंखें खोल कर बोली, "कुछ नहीं, अब सब ठीक है, घबड़ाओ मत मैक्समिलियन! अब कोई तकलीफ नहीं है। मगर यह क्या गाड़ी की आवाज है? शायद कोई मुलाकाती आया है!!" वेलेण्टिन उठी और एक खिड़की से से बाहर देख कर बोली, "मैडम दङ्गली और उनकी लड़की आई हैं! मुझे जाना पड़ेगा नहीं कोई खोजता हुआ यहीं आ जायगा। तुम मैक्समिलियन! बाबा के पास रहो, मैं खाली होते ही आऊंगी॥"

वह चली गई, मारल कुछ देर तक सीढ़ी की तरफ देखता रहा, इसके बाद नोटीर की तरफ घूमा, उसने डिकश्नरी की तरफ देखा। यह समझ कर कि वह कुछ कहा चाहता है मारल डिकश्नरी कलम दावात और कागज ले आया। वेलेण्टिन की बदौलत उसे भी नोटीर से बातें करने का ढङ्ग आ गया था। दस मिनट में उसने नोटीर का मतलब समझा कि "जो शरबत वेलेण्टिन ने पीया है उसका बचा हुआ मँगाओ॥"

बूढ़े बोरिस की जगह पर जो नया नौकर मुकर्रर हुआ था उसे बुला मारल ने यह काम बताया। वह गया और थोड़ी ही देर में बोला—"वह गिलास बिल्कुल खाली है उसमें और शरबत नहीं है।" नोटीर ने फिर कुछ कहना चाहा, डिकश्नरी की मदद से मारल ने समझा कि वह कहता है—वेलेण्टिन ने आधा ही गिलास

पीया था, बाकी कहां गया ? नौकर ने जवाब दिया— "मिस वेलेण्टिन जाती समय वह आधा बचा हुआ भी पीती गई ॥"

नोटीर की सूरत मुर्दो कीसी होगई, उसने आसमान की तरफ उस जुआरी की तरह निगाह फेरी जो अपना सब कुछ एक ही दांव पर लगा चुका है ॥

वेलेण्टिन जिस समय अपनी मां के पास पहुंची उस समय मैडम दङ्गली और यूजिनी वहां बैठ कर बातें कर रही थीं, वेलेण्टिन से भी साहब सलामत हो चुकने पर मैडम दङ्गली बोली—"मैं यहां आप लोगों को एक खुशखबरी सुनाने आई हूं—आपको यह जान खुशी होगी कि मेरी बेटी यूजिनी की शादी प्रिन्स केवेलकेन्टी से बहुत जल्द होने वाली है।" दङ्गली ने केवेलकेण्टी को प्रिन्स बना ही डाला था, उसकी देखा देखी सभी उसे प्रिन्स कहने लग गये थे ॥

मैडम विलफोर्ट०। वाह, यह तो बड़ी अच्छी खबर है ! प्रिन्स केवेलकण्टी !!

मैडम दङ्गली० । हां, वे इटली के बड़े अमीर और राजघराने के हैं, बहुत ही सुन्दर, होशियार, और लायक हैं—और उनकी दौलत तो बेइन्तहा है ॥

यूजिनी० । मां ! यह क्यों छोड़ देती हो कि मुझे यह नौजवान बहुत पसन्द है ॥

मैडम विलफोर्ट०। बेशक आप उन्हें प्यार करती ही होंगी ॥

यूजिनी०। मैं! जरा भी नहीं, रत्ती भर नहीं, मेरी यह बिल्कुल इच्छा नहीं है कि किसी एक उजड्ड के दाब में जिन्दगी भर पड़ी रहूं! मैं तो स्वतन्त्रता के साथ हुनर सीखने और गाने बजाने में अपना दिन काटा चाहती हूं॥

यूजिनी ने यह बात बिना किसी डर या लिहाज के इस दबङ्गता के साथ कही कि शर्मालू वेलेण्टिन की आंखें नीची हो गईं और उसका मुंह लाल हो गया। बेचारी डरपोक लड़की अपनी इस साथिन के उद्धत स्वभाव को बिल्कुल ही समझ नहीं सकती थी॥

यूजिनी फिर बोली, "परन्तु मेरी तबीयत हो या न हो पर ब्याह करना ही होगा इसलिये मुझे ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि अलबर्ट मारकर्फ के साथ का सम्बन्ध टूट गया नहीं तो मैं आज एक बेइज्जत घराने मे रही होती॥"

बैरोनेस०। हां, ईश्वर ने भी बड़ी कुशल की, हम लोग बाल बाल बच गये, काउण्ट मारकर्फ इस बात के लिये आये थे यारे बैरन ने इन्कार कर दिया॥

वेलेण्टिन०। (डरती हुई) पर मेरी समझ में अलबर्ट का तो इसमें कोई कसूर नहीं है अगर काउण्ट मारकर्फ ने कोई बुरा काम किया भी हो तो उनका लड़का इसके लिये जिम्मेदार नही हो सकता॥

यूजिनी०। नही यह बात नहीं है, अलबर्ट भी जरूर कसूरवार है, तुमने सुना नही कि कल काउण्ट मौण्ट-

क्रीटो को डूयेल के लिये ललकार कर भी आज उसने उससे माफी मांग ली !!

मैडम विल० । नहीं ऐसा नहीं हो सकता !!

बैरोनेस० । जी हां ऐसा ही हुआ, मि० डिब्रे उस जगह मौजूद थे और उन्होंने खुद यह हाल मुझसे कहा है ॥

वेलेण्टिन भी यह बात सुन चुकी थी पर उसने कुछ कहा नहीं, बल्कि इस जिक्र से उसे यह खयाल हो आया कि मारल उसकी राह देखता होगा। वह बात करना छोड़ मारल का ध्यान करने लगी, यकायक बैरोनेस के यह कहने ने उसे चौंकाया—"वेलेण्टिन ! तुम्हें क्या हुआ है ! क्या कुछ बीमार हो !"

सचमुच वेलेण्टिन को अपना माथा जलता हुआ मालूम हुआ और सिर चक्कर खाने लगा, यूजिनी बोली "हां तुम्हारा मुंह कभी पीला हो जाता है कभी लाल हो जाता है, मामला क्या है !" वेलेण्टिन कमजोरी के साथ बोली—"हां इधर तीन चार दिन से मेरी यही हालत है ॥"

वेलेण्टिन ने देखा कि रुखसत होने का यह अच्छा मौका है, मैडम विलफोर्ट भी बोली, "हा बेटी ! तुम जा कर जरा लेट रहो !" अस्तु वह उठ खड़ी हुई और यूजिनी तथा उसकी मां से बिदा हो कमरे के बाहर निकल कर नौटीर के कमरे की तरफ चली। दो तीन कमरे पार कर यह सीढ़ियां उतर ही रही थी कि यकायक उसके आंखों

केसामने फिर अन्धेरा छा गया और पैर लड़खड़ाने लगा। उसने सीढ़ी की लकड़ी पकड़नी चाही पर हाथ में ताकत न रही, पैर भी कांपने लगा और वह यकायक गिर कर आखिरी तीन चार सीढ़ियो पर से लुढ़कती हुई नीचे आ रही। नौटीर का कमरा सामने ही था और मारल वहां बैठा उसकी राह देख रहा था, किसी के गिरने की आहट लगते ही वह चौंक कर उठा और दर्वाजा खोल बाहर देखने लगा, वेलेण्टिन को देखते ही झपट कर उसने उसे गोद में उठा लिया और कमरे के अन्दर ले जा कर एक कुर्सी पर बैठाया। थोड़ी देर बाद वेलेण्टिन ने आंख खोल कर चारो तरफ देखा। मारल ने बेचैनी से पूछा, "कहीं चोट तो नहीं लगी।" नौटीर की आखों से भी बड़ा डर और घबड़ाहट प्रगट हो रही थी जिसे देख वह मुस्कुरा कर बोली, "कोई डर की बात नहीं है बाबा, मेरा पैर जरा रपट गया था, अब कुछ नहीं है, मैं एक नई खबर सुनाऊं, यूजिनी की शादी एक हफ़्ते में होने वाली है, और परसो दावत है, हम सभों को न्योता मिला है॥"

मारल०। (उद्वेग के साथ) वेलेण्टिन! हम लोगों की पारी क्या नहीं आवेगी! जब तक तुम मेरी नहीं होवोगी मुझे बराबर तुम्हें खो देने का डर बना रहेगा क्यों नहीं बाबा से कह कर इजाजत ले लेती!

वेलेण्टिन ने शर्मा कर आंख नीची कर ली और कुछ कहना चाहती थी कि यकायक फिर उसकी वही

पहिले की सी हालत हो गई। उसका मुंह लाल होकर पीला हो गया आंखों के आगे अन्धेरा छा गया और एक तरह की बेहोशी सी छा गई, सिर पीछे को लटक गया और आंखें बन्द कर वह मुर्दा सी हो गई। मारल यकायक चीख उठा और नौटीर को ऐसा मालूम हुआ मानों उसकी आंखें बाहर निकल आवेंगी। मारल ने नौकर बुलाने के लिये बड़े जोर से घण्टी बजाई, कई नौकर और मजदूरिनें एक दम दौड़ कर वहां आईं पर वेलेण्टिन की हालत देख चिल्ला कर कांपते हुए सब सब के कमरे के बाहर भाग गये॥

मैडम विलफोर्ट बैरोनेस दङ्गली और यूजिनी को बिदा कर रही थीं, वेलेण्टिन का यह हाल सुन उन्होंने उदास मुंह कर के कहा, "बेचारी वेलेण्टिन!!"

छठवां बयान।

रहस्य-भेद।

उसी समय विलफोर्ट अपने कमरे के बाहर निकला और इस बेचैनी और घबराहट को देख पूछने लगा "क्या हुआ ! क्या हुआ !" मारल ने नौटीर की तरफ देख कर इशारे में पूछा, "क्या करूं ?" नौटीर की आंखों ने उसे एक पर्दे की आड़ में छिपने को कहा और वह ऐसा मुश्किल से कर पाया था कि विलफोर्ट उस जगह आ पहुंचा, वेलेण्टिन की हालत देखते ही वह चिल्ला उठा और बेचैनी के साथ बोला, "डाक्टर ! डाक्टर को बुलाओ !!" फिर कुछ सोच यह कहता हुआ वह बाहर निकल गया, "मैं खुद जाता हूं।"

इसके जाते ही दूसरे दर्वाजे से मारल बाहर निकल गया। इस समय उसके दिमाग में एक डरावनी बात घूम रही थी। उसे उस रात की बात याद आ गई थी जब वेलेण्टिन की राह देखते हुए बगीचे में उसने विलफोर्ट और डाक्टर की मैडम मीरा के मौत के बारे में बातचीत सुनी थी, वेलेण्टिन का जो हाल था करीब करीब वैसे ही लक्षण बेरिस के मरने पर भी हुए थे और यही बात मारल का कलेजा मसोसने लगी। साथ ही में मौण्ट क्रीटो के वे शब्द भी उसके कानों में गूंजने लगे जो दो ही घण्टे पहिले उसने कहे थे "अगर कभी तुम्हें तकलीफ हो तो तुरत मुझसे कहना—मेरे हाथ में कुछ अद्भुत

ताकत है।" मारल लपकता हुआ काउण्ट के महल की तरफ बढ़ा ॥

इधर विलफोर्ट दौड़ा हुआ डाक्टर एवरानी के घर पहुंचा। उसकी घबड़ाई हुई सूरत और परेशान हालत देखतेही डाक्टरने पूछा, "क्या हुआ?" विलफोर्ट इधर उधर देख और किसी को न पा धीरे से लड़खड़ाती हुई आवाज में बोला, "डाक्टर! मेरे मकान पर ईश्वर का कोप हुआ है?" डाक्टरने बेचैनी के साथ पूछा "क्यों क्या और कोई बीमार पड़ा?" विलफोर्ट सिर के बाल नोचता हुआ बोला "हां!!"

डाक्टर की निगाह कह रही थी 'मैंने तुम्हें पहिले ही कहा था।' वह धीरे धीरे बोला—"अब कौन है? अबकी कौन तुम्हे कमजोरी का मुजरिम बना रहा है?"

विलफोर्ट के कलेजे को चीरती हुई एक आह निकली, उसने डाक्टर का हाथ पकड़कर कहा, "वेलेण्टिन! इस बार वेलेण्टिन पड़ी है॥"

डाक्०। (अफसोस और ताज्जुब मे) वेलेण्टिन!!!

विलफोर्ट०। हां वही, आओ डाक्टर देखो और मरती हुई वेलेण्टिन से उस पर शक करने के लिये माफी मांगो॥

डाक्०। तुमने जब जब कहा है देर ही करके कहा है फिर भी मैं चलता हूं। चलो! और देरी का मौका नही क्योंकि तुम्हारा दुश्मन बहुत भयानक है॥

विल०। डाक्टर! इस दफे मैं कमजोरी नही दिखा-

ऊंगा अबकी मैं खूनी को जरूर पकड़ूंगा और सख्त सजा दूंगा॥

डाकृर०। चलो पहिले उस बेचारी को बचाने की कोशिश हो तब उसका बदला लेने की बात सोचेंगे॥

जिस समय विलफोर्ट डाकृर को लिये घर लौट रहा था उसी समय मैक्समिलियन काउण्ट के कमरे मे घुस रहा था जो कोई कागज पढ़ रहा था जिसे बर्टूशियो अभी लाया था। दो घंटे पहिले जिस मारल को हसते हुए काउण्ट ने बिदा किया था उसे इस समय सुस्त और उदास तथा घबड़ाये हुए देखते ही काउण्ट चौंक कर बोल उठा, "मैक्समिलियन! क्या है? तुम्हारा चेहरा पीला क्यों? तुम उदास किस लिये?"

मारल एक कुर्सी पर गिर कर बोला, "मैं आपसे कुछ कहा चाहता हूं॥"

काउ०। तुम्हारी बहिन अच्छी तरह से है? मैन्यूअल अच्छा है?

मार०। हां वे लोग अच्छी तरह से हैं॥

काउ०। तब फिर क्या है? तुम क्या कहा चाहते हो?

मारल०। मैं अभी ऐसी जगह से आ रहा हूं जहां मौत ने अपना कदम रक्खा है॥

काउ०। क्या मारकर्फ के मकान पर से?

मार०। नहीं, क्या उन्हें कुछ हो गया है?

काउ०। हां उन्होने आत्महत्या कर ली है॥

मार०। आह! कैसी दुःख की बात है॥

काउ०। उसकी स्त्री या बेटे के लिये नहीं, बेइज्जत बाप या पति से मरा हुआ अच्छा॥

मार०। बेचारी काउण्टेस!!

काउ०। बेचारा अलबर्ट भी कहो, वह भी अपनी मां का योग्य लड़का है। मगर खैर तुम अपनी बात कहो, क्या मैं किसी काम में तुम्हारी मदद कर सकता हूं॥

मार०। हां, शायद, नहीं नहीं, मैं पागल होगया हूं जो ऐसे मामले में जिसमें सिर्फ ईश्वर कुछ कर सकता है आपकी मदद मांगता हूं॥

काउ०। आखिर है क्या? कुछ कहो भी!!

मार०। मैं एक गुप्त भेद कहता हूं जो किसी के आगे खोलने के लायक नहीं है पर जिसके बारे में मेरा दिल कहता है कि काउण्ट से मत छिपाओ॥

काउ०। तुम्हारा दिल ठीक कहता है, कहो!

मार०। मैं पहिले वैपटिस्टिन को किसी काम से भेजा चाहता हूं॥

काउ०। खुसी से भेजो, बुलाऊं॥

मार०। नहीं मैं खुद जा कर कहे देता हूं॥

मारल ने कमरे के बाहर निकल वैपटिस्टिन से कुछ कहा जिसे सुनते ही वह दौड़ा हुआ बाहर चला गया, मारल काउण्ट के पास लौट आया॥

काउ०। भेज दिया?

मार०। हां, अब मैं कुछ शान्ति से बात कर सकूंगा॥

काउ०। मैं सुनने को तैयार हूं, तुम शुरू करो ॥

मारल कहने लगा:—

"मैं अभी नाम नहीं बताऊंगा सिर्फ बातें सुनाता हूं। कुछ दिन की बात है कि रात के समय मैं एक बागीचे में छिपा खड़ा था। किसी को यह सन्देह नहीं था कि मैं वहां हूं इससे निराला समझ दो आदमी बातें करते हुए पास ही में आ पहुंचे। वे धीरे-धीरे बातें करते थे फिर भी मैं उनकी बातें समझ सकता था। एक तो उस जगह का मालिक था जहां मैं छिपा हुआ था दूसरा डाक्टर था। वह आदमी डाक्टर से अपना दुःख कह रहा था, महीने भर के अन्दर दो मौतें उसके घर में हो चुकी थीं, उसके घर पर मानों ईश्वर का कोप आ गिरा था ॥

काउण्ट के मुंह से एक "ओह" निकला और वह और भी गौर से मारल की बातें सुनने लगा ॥

मारल०। डाक्टर ने उसकी बातें सुन कर कहा कि ये मौतें स्वाभाविक नहीं हैं बल्कि जहर के असर से हुई हैं ॥

काउ०। (अपने उद्वेग को छिपाते हुए) जहर से !

मारल०। हां मैंने अपने कानों से डाक्टर को ऐसा कहते सुना साथ ही डाक्टर ने यह भी कह दिया अब अगर कोई मौत इस तरह पर हुई तो वह पुलिस में खबर देगा। काउण्ट ! तीसरा बार मौत का हुआ पर न तो मालिक मकान ही बोला न डाक्टर ने कुछ किया, और अब मौत ने चौथी दफे उस घर में पैर रक्खा है।

अब बताइये मैं क्या करूं? क्योंकि सिर्फ मुझे ही यह भेद मालूम है॥

काउण्ट यह सुन विचित्र स्वर में बोला—तुमने जो हाल कहा वह उस भेद में शामिल न होने पर भी मैं बखूबी जानता हूं। मैं उस घर को उसके मालिक को और उस डाक्टर को अच्छी तरह जानता हूं। मैं जानता हूं कि वहाँ तीन मौतें हो चुकी हैं। पर अपनी ही तरह तुम्हें भी राय दूंगा कि तुम इस बीच में मत पड़ो। इतना ही नहीं बल्कि मैं यह भी कहूंगा कि सचमुच वह घर शापित है, उस पर ईश्वर का कोप हुआ है, ईश्वर का एक दूत उस घराने से बदला लेने आया है। अभी तीन ही मौतें हुई हैं मुमकिन है और भी हों, तुम.........

मार०। (घबराहट से) और भी हो रही है काउण्ट! एक और आदमी वहां मर रहा है॥

काउ०। (आवाज बदल कर) तो तुम क्या चाहते हो! क्या मैं प्रोक्योरर को इत्तला दूं?

काउण्ट ने प्रोक्योरर शब्द इस तरह पर कहा कि मारल चौंक कर बोला, "तब क्या आपको मालूम है कि मैं किसका हाल कह रहा हूं?"

काउ०। अच्छी तरह, खूब अच्छी तरह, और मैं साबित करे देता हूं। तुम विलफोर्ट के बगीचे में थे, जिस दिन का हाल कहते हो वह शायद मैडमसेंटमेरां की मौत का दिन था और विलफोर्ट से डाक्टर एवरानी ने वह बात कही थी। क्यों ठीक है तो! मगर मारल!

मार०। वेलेण्टिन को, प्यार करता हूं, उसके लिये मरने को तैयार हूं, उसका एक बूंद आंसू बचाने को अपना सारा खून बहाने को तैयार हूं। मैं वेलेण्टिन को चाहता हूं जिसे इस समय हत्यारे मार रहे हैं, मैं प्यार करता हूं, वेलेण्टिन को जान से बढ़ कर चाहता हूं॥

मालूम होता कि रञ्ज और अफसोस से मारल पागल हो जायगा। काउण्ट की हालत भी अच्छी न थी, उसके गले से ऐसी आवाज निकल रही थी जैसी जखमी शेर के गले से निकलती है। वह अपना बाल नोचता हुआ बोला, "अभागे आदमी! तू वेलेण्टिन को चाहता है? उस आपित घराने की लड़की को प्यार करता है!!" मारल ने कभी ऐसा भाव नहीं देखा था, ऐसी डरावनी आंखे कभी उसने नहीं देखी थी, भयानक लड़ाइयों के बीच में भी ऐसा खौफ उसे नहीं मालूम हुआ था, वह डर कर पीछे हट गया॥

सोण्ट क्रीटो ने अपनी आंखें बन्द कर लीं। एक ही सायत में उसने अपने पर फिर काबू कर लिया। उसकी छाती का फूलना, आंखों का आग बरसाना, सब शान्त होगया। उसने थोड़ी देर बाद कहा, "ओफ! अभी तक मैं एक निर्दई आदमी की तरह यह सब हाल देख रहा था और कुछ बोलता नहीं था, उसी की यह सजा ईश्वर ने मुझे दी! खैर कोई हर्ज नहीं!! मारल! अब घबड़ाओ मत! मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा, उम्मीद करो, सब्र करो॥"

मोरल के गले से एक ठण्ढी आह निकली। काउण्ट बोला, "मैं कहता हूं न कि अब मत घबड़ाओ! देखो!! आज तक कभी मैंने झूठ नहीं बोला, और न कभी धोखा उठाया। अभी बारह बजा है, मोरल! अगर तुम दो घंटे बाद या शाम को आते तो कुछ नहीं हो सकता था, पर अभी दोपहर है। सुनो, अगर वेलेण्टिन अभी तक मर नहीं गई है—तो अब वह नहीं मरेगी॥"

मार०। यो कैसे! मैं उसे मरता हुआ छोड़ के आया हूं॥

मोण्ट क्रीटो ने अपने हाथों से अपने माथे को दबाया। इस समय उस भयानक भेदों से भरे हुए दिमाग के अन्दर क्या क्या बातें गुजर रही थीं यह कौन जान सकता था॥

मोण्ट क्रीटो ने फिर अपना सिर उठाया। इस समय वह बिलकुल शान्त था। उसने कहा, "मैक्समिलियन! अब तुम घर लौट जाओ, मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि जबतक मैं तुम्हें खबर न भेजूं, हिलो मत, घर से बाहर मत निकलो, कुछ मत करो, और न किसी से कुछ कहो, जाओ, अभी जाओ॥"

मारल०। ओह काउण्ट! तुम्हारा ढङ्ग देख मुझे डर लग रहा है! क्या तुम कोई देवता हो! ईश्वर हो! या यमदूत हो!! क्या मौत और जिन्दगी तुम्हारे हाथ में है!"

इतना कहता हुआ वह नौजवान जो मौत को

सामने देख कभी नहीं हिचका या डर कर पीछे हट गया । सैाएट क्रीटो ने उस पर स्नेह और प्यार से भरी ऐसी निगाह डाली कि उसका सब डर दूर होगया वल्कि उसकी आंखों में आंसू आगये । काउण्ट बोला, "मुझमें बहुत कुछ कुदरत है ! मैक्समिलियन ! तुम जाओ ! मैं एकान्त चाहता हूं ॥"

काउण्ट की बात का ऐसा असर हुआ कि मारल उसका हुक्म टाल न सका । काउण्ट से हाथ मिला कर वह चुपचाप कमरे के बाहर निकल गया । मकान के दरवाजे पर पहुंच वह कुछ देर रुका, क्योंकि उसने वैपटिस्टिन को दौड़ते हुए आते देखा ॥

इस बीच में, विलफोर्ट डाक्टर को लिये अपने घर पहुंचा । वेलेण्टिन अभी तक वेहोश पड़ी हुई थी । डाक्टर ने बड़े गौर से उसकी जांच शुरू की—विलफोर्ट और नौटीर चिन्ता और उद्वेग के साथ डाक्टर का मुंह देख रहे थे । आखिर डाक्टर ने कहा, "अभी तक जीती है ॥"

विलफोर्ट० । अभी तक !! क्या आपको........

डाक्टर० । हां, मुझे बहुत ताज्जुब है कि यह अभी तक जीती क्यों बची !!

विल० । खैर तो अब कोई डर तो नहीं है ।

डाक्टर० । हां जब अभी तक नहीं मरी है, तो अब कोई डर नहीं ॥

इसी समय डाक्टर की नजर नौटीर पर पड़ी । उस

की आंखों से प्रसन्नता के साथ ही कोई ऐसा भाव प्रगट हो रहा था कि डाक्टर का ध्यान उधर खिंच गया। उस ने बेहोश वेलेंटिन को जो बिल्कुल मुर्दा हो रही थी धीरे से लेटा दिया और विलफोर्ट से कहा—"जरा इस लड़की की मजदूरनी को बुलाइये।" कमरे में और कोई नहीं था अस्तु विलफोर्ट खुद उसे बुलाने को चला गया और निराला पा डाक्टर ने नोटीर से पूछा, "क्या आप को मुझसे कुछ कहना है?"

नोटीर ने आंखें बन्द की अर्थात् "हां" कहा, डाक्टर ने पूछा कोई गुप्त बात है? नोटीर ने फिर "हां" कहा, जिस पर डाक्टर बोला, "अच्छा मैं खाली होकर आप से बात करूंगा॥"

इसी समय मजदूरनी को लिये विलफोर्ट लौटा और उसके पीछे २ मैडम विलफोर्ट भी कमरे में आई। आंखों से आंसू गिराती और बनावटी प्रेम दिखाती हुई मैडम वेलेंटिन को देख कहने लगी, "हाय हाय! इस बेचारी को क्या हो गया!!" डाक्टर की निगाह नोटीर के चेहरे पर पड़ रही थी, उसने देखा कि मैडम विलफोर्ट को देखते ही नोटीर की आंखों से डर घबराहट और घृणा निकलने लगी, गाल पीले पड़ गये और माथे पर पसीना आ गया। डाक्टर ने चौंक कर उसकी आंख की सीध पर गौर किया और उसे मैडम पर जमा देख उसके मुंह से आप ही आप निकल पड़ा "ओफ" पर उसने तुरत ही अपने को सम्हाल लिया और वेले-

रिटन को उसके कमरे में लेजा कर पलङ्ग पर लेटा देने का हुक्म दिया॥

अबतक वेलेण्टिन को कुछ होश आ गया था, उस ने आंखें खोल दी थीं पर बोलने लायक वह नहीं हुई थी; जब लोगों ने उसे पलङ्ग पर लिटा दिया तो वह चुपचाप पड़ रही। डाक्टर ने दवा का नुसखा लिखा और विलफोर्ट के हाथ में देकर कहा, "आप खुद जांय और अपने सामने दवा बनवा कर खुद लेकर आवें।" विलफोर्ट चला गया और तब यह हुक्म देकर कि वेले-ण्टिन से किसी तरह की छेड़ छाड़ न की जाय और न उसे कोई चीज दी जाय, डाक्टर नौटीर के पास लौट आया। कमरे का दर्वाजा बन्द कर लिया और तब एक कुर्सी घसीट उस के पास बैठ कर बोला—"आप को वेलेण्टिन की बीमारी के बारे में कुछ कहना है?"

नौटीर०। हां॥

डाक्टर०। तो अच्छा होगा कि मैं पूछता चलूं और आप जवाब देते चलें क्योंकि समय बहुत कम है॥

नौटीर०। हां॥

डाक्टर०। आपको इस हमले का कुछ गुमान पहिले से था?

नौटीर०। हां॥

डाक्टर चौंका, इसके बाद कुछ धीरे से बोला, "माफ करियेगा, पर यह ऐस हम लोगों का डर

चाहिये, क्या आपने बोरिस की मौत देखी थी ?"

नौटीर०। हां ॥

डाकृ०। क्या आप समझते हैं कि वह अपनी मौत से मरा ?

नौटीर के होठों पर एक हलकी हंसी सी दिखाई पड़ी ॥

डाकृ०। तब आप समझते हैं उसे जहर दिया गया ?

नौटीर०। हां ॥

डाकृर०। क्या आप समझते हैं कि जिस जहर ने बोरिस की जान ली वह खास उसके लिये था ?

नौटीर०। नहीं ॥

डाकृर०। तब क्या आप समझते हैं जिस हाथ ने अनजानते में बोरिस की हत्या की उसी ने अब वेलेण्टिन पर वार किया है ?

नौटीर०। हां ॥

डाकृ०। (गौर की निगाह नौटीर के चेहरे पर जमा कर) तब क्या यह भी मर जायगी ?

बूढ़े की आंखों से फतहमन्दी की चमक निकली और उसने घमण्ड के साथ इशारा किया "नहीं" डाकूर ने ताज्जुब के साथ पूछा—"तब आपको अभी उम्मीद है ?"

बूढ़ा०। हां ॥

डाकृ०। किस बात की ? क्या आप समझते हैं कि खूनी अब वार करना छोड़ देगा ?

बूढा०। नहीं॥

डा०। तब क्या जहर अपना असर नहीं करेगा?

बूढा०। हां॥

डाकृ०। तब आपको क्या मालूम था कि वेलेण्टिन की जान पर हमला किया जायगा?

बूढा०। हां॥

डाकृर०। मगर यह आप कैसे समझते हैं कि इस जहर का असर उस नाजुक लड़की पर नहीं होगा?

बूढे ने कोई जवाब न देकर ठीक सामने की तरफ निगाह की। डाकृर ने भी उस तरफ देखा और तब उसे उस दवा की एक बोतल टेबुल पर रक्खी हुई दिखाई पड़ी, जिसे उसने नौटीर के लिये बनाया था। वह यकायक चौंक कर बोल उठा—"ओहो! तब शायद आप को........"

बूढा०। हां, हां!!

डाकृ०। यह सूझ गई कि वेलेण्टिन पर जहर का असर न हो इसके लिये......

बूढा०। (खुशी से) हां, हां, हां!!

डाकृ०। आप उसे थोड़ा थोड़ा अपनी दवा......

बूढा०। हां॥

डाकृ०। आप को यह मालूम था कि मैं आपका मर्ज दूर करने के लिये आप को दवा में एक तेज जहर दे रहा हूं और आपने वही दवा थोड़ा थोड़ा वेलेण्टिन को पिला उसे जहर का अभ्यासी कर दिया!!

बूढा०। (बडी ही खुशी से) हां॥

डाक्टर०। आपकी बुद्धिमानी काम कर गई, अगर आप ऐसा न किये होते तो वेलेरिटन कभी की मर गई होती, उसे बेहद कड़ा जहर दिया गया पर उसकी जान बच गई॥

बूढे की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और उसने कृतज्ञता की दृष्टि आकाश की तरफ उठाई। उसी समय विलफोर्ट वहां आ पहुंचा और बोला—"डाक्टर! मैं दवा बनवा लाया!!"

डा०। आपने अपने सामने इसे बनवाया?

विल०। हां॥

डा०। और किसी के हाथ में यह शीशी नहीं दी?

विल०। नहीं॥

डाक्टर ने शीशी ले थोड़ा सा हथेली पर डाल जबान पर रक्खा और निगल लिया। सन्देह दूर करने बाद उसने कहा, "अच्छा आप जाइये, मैं वेलेरिटन को यह दवा देता हूं। इलाज के बारे में और जो कुछ बताता हूं उसे भी आप गौर से सुनें! देखिये खबरदार! जो कुछ मैं कहूं, उसमें जरा भी फर्क न पड़े॥"

जिस समय डाक्टर विलफोर्ट को वेलेरिटन के इलाज के बारे में समझा रहा था उसी समय एक इटालियन पादड़ी ने जिसने अपना नाम ऐबी बसूनी बताया था विलफोर्ट के मकान से सटा हुआ मकान किराये पर लिया। न जाने किस तरह पर उस मकान के रहने वाले

पहिले किरायेदार दो घण्टे के अन्दर ही मकान खाली कर देने पर तैयार हो गये पर लोगों में यह बात मशहूर हो गई कि वह मकान कमजोर हो गया है और गिरने ही वाला है। फिर भी पादड़ी बसूनी ने उसमें अपना डेरा जमा ही लिया, इतनाही बल्कि उसने कई मज-दूर लगा कर उस कमजोर मकान की मरम्मत भी रातो-रात शुरू कर दी॥

सातवां बयान।

बाप और बेटी।

हम अब कुछ पीछे की तरफ लौटते और कई दिन पहिले का हाल सुनाते हैं॥

अपने बड़ी शान शौकत और अमीरी से सजाये हुए मुलाकाती कमरे में दङ्गली कुछ सोचता हुआ टहल रहा है। दस बज जाने पर भी वह अभी तक अपने आ-फिस में नहीं गया है और बार बार दर्वाजे की तरफ देखता और किसी के आने की आहट लेता हुआ वह बहुत सी बातें सोच और मनही मन उधेड़ बुन कर रहा है। बात यह है कि आज उसकी बेटी यूजिनी ने उससे कहला भेजा है कि दस बजे मुलाकाती कमरे में मेरी राह देखियेगा मुझे कुछ बातें करनी हैं। अस्तु वह घबराहट ताज्जुब और बेचैनी के साथ अपनी तुन्द-मिजाज लड़की की राह देखता हुआ सोच रहा है कि

उसे आज यहां पर और इस तरह पर मुझसे क्या कहना है॥

जब बहुत देर हो गई तो गुस्से से भुनभुनाते हुए उसने अपने नौकर को आवाज दी और कहा—"जा कर देखो यूजिनी क्या कर रही है, मैं देर से उसकी राह देख रहा हूं।" थोडी देर बाद नौकर ने लौट कर कहा, वे कपडा पहिन कर अभी आती हैं।" दङ्गली ने कुड़बुडा कर मन में कहा, "न जाने कम्बख़्त को मुझसे क्या कहना है।" और तब फिर उसकी राह देखता हुआ टहलने लगा मगर ज्यादा देर तक राह देखनी न पडी और कीमती तथा सुन्दर पोशाक पहिने यूजिनी वहां आ पहुंची। उसे देखते ही दङ्गली ने कहा—"क्या है यूजिनी! तुम्हें मुझसे क्या कहना है और यहां मुझे क्यों बुलाया है जब मेरे आफिस का कमरा इससे अच्छा और आरामदेह है?"

यूजिनी ने अपने पिता को बैठने का इशारा करते हुए कहा, "आपने जो दो सवाल किये उसी में वे सब बातें आ जाती हैं जो मैं इस समय करने वाली हूं। मैं दोनों का जवाब देती हूं मगर ज़रा उलट कर अर्थात् पहिले आपकी दूसरी बात का जवाब दूंगी, आपके आफिस में न जाकर मैंने यहां बुलाया इसका सबब यह है कि वहा के मोटे मोटे रजिस्टर, मैले कागजों के ढेर, हुण्डियो और नोटो के पुलिन्दे और किले के फाटकों की तरह बन्द सन्दूकों को देख मेरी तबीयत घबरा जाती

है, दूसरे इन चीज़ों मे घिरे हुए आदमी लोग यह भूल जाते हैं कि दुनियां मे दौलत से बढ कर भी कोई प्यारी चीज है। इसी लिये मैंने आपको उन चीजों मे दूर इस कमरे में बुलाया है जहां की सजावट और तस्वीरें शायद आपके दिल को कुछ मुलायम कर सकें॥"

दङ्गली सब कुछ चुपचाप सुनकर भी "अच्छा तो!" के सिवाय कुछ न बोला क्योकि वह मन ही मन इस उधेड़ बुन मे लग गया कि यूजिनी की बातों का असल मतलब क्या है। यूजिनी अपने बापको चुप देख बोली, "अस्तु आपकी दूसरी बात का जवाब तो मैंने दे दिया अब पहिली बात का सुनिये, आपने पूछा कि मुझे क्या कहना है—मुझे यह कहना है कि मैं मिस्टर एण्ड्रिया केवेलकेण्टी से शादी नही करूंगी!!!"

मानो सिर पर पहाड गिरने लगा हो इस तरह चौंक कर दङ्गली उछल कर खडा हो गया, यूजिनी उसकी तरफ कुछ खयाल न कर, शान्ति के साथ कहने लगी, "आपको मेरी बात पर ताज्जुब हुआ क्योंकि अभी तक, सब कुछ देखते और सुनते हुए भी मैंने किसी तरह पर अपनी इन्कारी नही जाहिर की थी, पर इसका सबब यह था कि मुझे अपने ऊपर यह भरोसा था कि जब चाहूं तब इसे रोक सकूंगी दूसरे पिता की इच्छा के विपरीत न करने की भी इच्छा थी, पर अब बिल्कुल लाचारी हो गई है॥"

दङ्गली०। क्या?

यूजिनी०। मैं देखती हूं कि अब मैं किसी तरह भी यह शादी नहीं कर सकती॥

दङ्गलो०। क्यों! शादी से तुम्हें क्या इन्कार हो सकता है? क्या तुम्हें प्रिन्स केवेलकेएटी पसन्द नहीं?

यूजि०। नहीं, पसन्द ना पसन्द की बात नहीं है, मैं सूरत शक्ल पर नहीं जाती, असल में मुझे इस गुलामी से नफरत है और इसमें कोई शक नहीं कि शादी कर लेना गुलामी की जञ्जीर पहिर लेना है। मैं स्वतन्त्र जिन्दगी बिताया चाहती हूं किसी के बन्धन में नहीं रहा चाहती॥

दङ्ग०। (इस अकस्मात की आफत से घबड़ा कर) तुम बदकिस्मत हो जो ऐसा सोचती हो! यह भी भला कोई बात है!!

यूजिनी०। मैं बदकिस्मत! वाह! मुझ से बढ़ कर खुशकिस्मत तो कोई हो ही नहीं सकता। लोग कहते हैं कि मैं खूबसूरत हूं, मुझे अपने लिये इसकी परवाह नहीं है पर मुझे खूबसूरत समझ दुनिया मेरी इज्जत करती है खातिर करती है इसलिये मैं अपनी खूबसूरती पर खुश हूं, मैं बातचीत में होशियार हूं अस्तु कोई मुझे उजड्ड नहीं कह सकता, मैं अमीर हूं क्योंकि पैरिस के सबसे बड़े अमीरों में आपकी गिनती है, और मुझे यह भी डर नहीं है कि अगर मुझे लड़का बाला नहीं हुआ तो आप मुझे अपना वारिस नहीं बनायेंगे जैसा बेवकूफ बाप किया करते हैं, और अगर आप ऐसा किया भी

चाहेंगे तो कानून मेरी मदद करेगा और मुझे आपकी दौलत दिलावेगा, अब आपही बताइये कि इन बातों के होते हुए भी आप मुझे बदकिस्मत कैसे कह सकते हैं॥

यूजिनी ने जिस तरह पर तेजी बल्कि घमंड के साथ ये बातें कहीं उनसे दङ्गली की बेचैनी बढ़ कर गुस्से के रूप में हो गई पर इस वक्त गुस्सा करना अपने ही पैर में कुल्हाडी मारना होगा यह सोच उसने शान्ति के साथ कहा, "हां बेटी तुमने जो कुछ कहा सो सब करीब करीब ठीक है सिर्फ एक बात तुमने गलत कही है॥"

यूजिनी ने ताज्जुब के साथ अपने बाप की तरफ देखा, वह बिल्कुल नहीं समझ सकी कि उसकी खुश-किस्मती के गुच्छे का कौन सा फूल टूटा चाहता है, दङ्गली कहने लगाः—

"तुमने अपने ब्याह से इन्कार करने का सबब तो ठीक ठीक बता दिया, अब मेरी भी बातें सुन लो कि क्यों तुम्हारा ब्याह कर देना मेरे लिये जरूरी है॥"

यूजिनी इस तरह से दङ्गली की तरफ देखने लगी मानो उससे बहस करने को तैयार है, दङ्गली बोला— "जब कोई पिता अपनी बेटी से शादी करने को कहता है तो उसका कुछ मकसद रहता है, यह कह देने में कोई हर्ज नहीं है कि तुम्हारी शादी कर देने से मुझे अपने नाती पोते देखने का वह शौक नहीं है जो तुमने कहा, तुम अपना बुरा भला सोचने लगी हो अस्तु ऐसा साफ

साफ कह देने में कोई हर्ज नहीं है कि मुझे गृहस्थी के सुख की इच्छा नहीं है॥"

गूजि०। ठीक है, आप साफ ही साफ कहें, किसी बात के छिपाने की कोई जरूरत नहीं॥

दङ्ग०। हां मैं साफ साफही कहूंगा, अस्तु तुम्हारी शादी कर देने से न तो मुझे तुम्हारे बच्चों की इच्छा है न तुम्हें गृहस्थी वाली देखने की लालसा,(अब मैं साफ साफ कहता हूं) तुम्हारी शादी करना मैंने इसलिये निश्चय किया कि वैसा करने से मुझे किसी रोजगार में फायदा होने की उम्मीद है (गूजिनी को कुछ कहते देख) ठहरो, मुझे साफ२ कहने पर तुमने मजबूर किया है इस से मेरी बात पूरी तरह से सुन लो, मैं तुम्हारी चित्तवृत्ति और शौक की बात नहीं करता पर फिर भी मेरे उसी आफिस में जिसमें जाते तुम्हें नफरत और डर होता है (और जिसमें अभी कल ही तुम वह हजार रुपया लेने अपनी मर्जी से गई थीं जिन्हें मैं हर महीने तुम्हें जेब खर्च के लिये देता हूं) बहुत सी ऐसी बातें होती हैं जिनसे सबक सीखा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर वहां तुम्हें यह पता लग सकता है कि एक महाजन के लिये उसकी साख ही सब कुछ है। साख ही उसकी जान है;खून है, सांस है और खुराक है। काउण्ट मोरट क्रौटो ने इस बारे में मुझसे एक दफे बहुत कुछ कहा था जो मैं अभी तक नहीं भूला हूं। उसने कहा था कि महाजन की साख चली जाना मानों बदन में से जान का

निकल जाना है और यही हालत अब कुछ दिनों में उस बाप की होने वाली है जिसे तुम्हारे ऐसी कानूनदां लड़की मिली है॥

यूजि०। (कड़ाई से) यानी आपका कारबार चौपट हो रहा है॥

दङ्कली०। हां, चौपट, यह बहुत ठीक शब्द तुमने कहा, मेरा काम बिल्कुल चौपट हो गया है और अब सिर्फ तुम्हारे ही ज़रिये से मैं इसे कुछ सुधार सकता हूं॥

यूजिनी०। (तन कर) अगर आपने यह सोचा है कि आपके गरीब हो जाने के खयाल से मैं डर जाऊंगी तो आपका सोचना गलत है। मुझे आपके रुपयों की परवाह नहीं है, आप मुंह बना कर, बिगड़ कर, बाईस बातें सुना कर, हज़ार रुपया महीना मुझे देते हैं और मुझे विश्वास है कि मैं अपने गाने बजाने और तस्वीर बनाने के हुनर से दस हज़ार रुपया महीना पैदा कर सकती हूं अस्तु आपके रुपयों की मुझे परवाह ही नहीं है! शायद आप सोचते हों कि मैं अपनी मां की तकलीफ सोच कर डर जाऊंगी तो यह भी ठीक नहीं है क्योंकि यह मुझे अच्छी तरह मालूम है कि उन्होंने अपने खाने खरचने लायक जुटा लिया है—चाहे आपको इस बात की खबर हो या न हो। अस्तु मुझे आपकी बात डरा नहीं सकती॥

दङ्कली०। (गुस्से से) तो तुम मेरा नाश करने की प्रतिज्ञा कर चुकी हो?

यूजिनी० । मैं ! मैं आपका नाश क्यों करूंगी ?

दङ्गलों० । इस तरह पर, मेहरबानी करके सुनिये, मिस्टर केवेलकेएटी आपके साथ व्याह करके अपना तीस लाख रुपया मुझे रोजगार में लगाने को दे देंगे॥

यूजि० । (घृणा के ढङ्ग से) बहुत ठीक !!

दङ्ग० । आप इससे न डरें कि मैं वे रुपे बरबाद कर दूंगा । उस तीस लाख से कम से कम एक करोड़ मैं पैदा करूंगा । आज कल फ्रान्स में रेलें बनाने की कोशिश सरकार कर रही है । मैंने गौर करके देखा है कि इस काम में बड़ा फायदा है, थोड़े ही दिनों में एक का दस हो जायगा अस्तु मैं और मेरा एक साथी मिल कर अस्सी लाख रुपे से काम शुरू करेंगे । एक हफ्ते के अन्दर मुझे अपने हिस्से का चालीस लाख देना पड़ेगा अस्तु केवेलकेएटी के तीस लाख से मैं मदद लूंगा । और यह मैं वादा करता हूं कि देखते देखते उस चालीस लाख का चार करोड़ कर दूंगा॥

यूजि० । मगर अभी कल ही आपने मुझे कहा था कि कोई आदमी पचपन लाख रुपया आपकी कोठी में जमा कर गया है॥

दङ्ग० । हां, अस्पताल वालों ने मुझ पर विश्वास कर के वह पचपन लाख मेरे पास जमा किया है । और कोई मौका होता तो मैं बिना सोचे विचारे उन्हें अपने काम में ले आता पर इधर मुझे जो लगातार घाटे पर घाटा हुआ है उससे मेरी साख कुछ बिगड़ गई है अस्पताल

वाले जब चाहें अपना रुपया वापस मांग सकते हैं और अगर मैं नही दे सकूंगा तो मुझे बुरी तरह पर दिवालिया बनना पड़ेगा। मुझे दिवाले बुरे नही लगते, मगर वे ऐसे हों जिनसे माल मिले, न कि ऐसे हों जिनसे कंगाल बनना पड़े। अस्तु अगर केवेलकेरटी का वह रुपया मैं इस्तेमाल कर सकों, इस्तेमाल क्या अगर लोगों को सिर्फ इतना मालूम होगया कि मेरे हाथ मे इतना रुपया आ गया है तो बस मेरी साख फिर से कायम हो जायगी और मेरी वह दौलत जो इधर कुछ दिनों से न जाने किन किन गड्हों में गिरती जा रही है फिर मुझे आ मिलेगी, अब आप समझी!

यूजि०। हां, अच्छी तरह! यानी आप तीस लाख पर मुझे गिरवीं रख रहे हैं!!

दङ्गली०। अच्छा, यही सही पर देखो तो सही, तुम्हारी कितनी बड़ी कीमत मैंने कर दी है?

यूजिनी०। धन्यवाद, अच्छा सुनिये, मैं आपको फायदा पहुंचाने को तैयार हूं पर दूसरों के नाशमें सहायता देने को नहीं, क्या आप उस तीस लाख को बिना खर्च किये अपनी साख कायम कर सकते हैं?

दंगली०। मगर मैं तुमसे कहता हूं न कि उसका मैं दस गुना ....

यूजि०। ओह! मैं पूछती हूं कि बिना उस रुपे को हाथ लगाये आप अपनी हालत दुरुस्त कर सकते हैं?

दंग०। हां अगर तुम्हारी शादी केवेलकेरटी से हो

जाय और लोगों को मालूम हो जाय कि वे तीस लाख मेरे पास आ गये हैं तो मुझे विश्वास है कि सब ठीक हो जायगा॥

यूजि०। आपने मेरे दहेज में पांच लाख रुपया देने को कहा था वह ...

दंग०। व्याह होते ही मैं वह रुपया केवेलकेण्टी के हाथ पर रख दूंगा॥

यूजि०। अच्छा अगर आप मुझे और किसी तरह के बन्धन में न बांधे तो मैं व्याह करना मंजूर करती हूं॥

दंग०। बस तुम सिर्फ व्याह कर लो और फिर जो जी मे आवे करो, मेरा काम हो जायगा॥

यूजिनी०। बहुत अच्छा मुझे मञ्जूर है॥

दंग०। केवेलकेण्टी से व्याह कर लोगी? कागजों पर दस्तखत कर दोगी? जहां जहां नेवता देना है वहां वहां जाओगी?

यूजि०। हां॥

दंग०। (कुछ सोचता हुआ) अच्छा तो ठीक है, मुझे भी मञ्जूर है॥

यूजिनी चली गई, और दंगली भी किसी फिक्र में डूबा हुआ अपने आफिस में लौट आया। इस बातचीत के बाद ही मैडम दंगली अपनी लड़की को ले सब जगह न्योता देने निकली थी और विलफोर्ट के मकान पर पाठकों ने उन्हें देखा भी है॥

आठवां बयान ।

दावत।

उपरोक्त घटना के तीसरे दिन सन्ध्या के समय काउण्ट कपड़ा पहिन कर हवा खाने जाने की तैयारी कर रहा था। उसकी गाड़ी दर्वाजे पर आ कर खड़ी थी और वह स्वयम् बाहर आही रहा था कि इसी समय एण्ड्रिया केवेलकेण्टी अपनी फिटन पर चढ़ा हुआ खूब सज धज के साथ वहां पहुंचा। उतरने के साथही अपनी आदत के मुताबिक वह बिना इत्तला कराये लपकता हुआ सीढ़ियां चढ़ काउण्ट के बैठक की तरफ बढ़ा पर रास्ते ही में काउण्ट से मुलाकात होगई जिसने उसे देख कुछ दिल्लगी के ढंग पर मुस्कुराते हुए कहा, "ओह एण्ड्रिया ! तुम यहां !! कैसे हो कैसे ?"

एण्ड्रि०। बहुत अच्छी तरह पर, मगर पहिले यह बताइये कि आप कहीं जा रहे हैं या अभी लौटे हैं॥

मौण्ट०। मैं जा रहा हूं॥

एण्ड्रि०। तब मैं भी आपके साथ चलता हूं रास्ते में बातें होगी॥

मौण्ट क्रीटो यह नहीं पसन्द करता था कि लोग ऐसे आदमी के साथ उसे देखें अस्तु वह सिर हिला कर बोला, "नहीं मुझे कोई जल्दी नहीं है तुम्हें जो कुछ कहना हो यहीं कह सकते हो। यहां कोई साईस या कोचवान हमारी बात सुनने वाला नहीं है॥"

एग्डिया को लिये हुए काउण्ट पुनः अपने बैठने के कमरे में लौट गया। दोनों आमने सामने बैठ गये और तब एग्डिया बोला, "काउण्ट! आज रात को नौ बजे बैरन दङ्गली के मकान पर मेरी शादी के कागजों पर दस्तखत होगा॥"

काउण्ट०। हां मुझे मालूम है और इसके लिये मैं तुम्हें मुबारकबादी देता हूं, क्योंकि मिस दगली खूबसूरत होने के साथ ही बहुत अमीर भी हैं॥

एग्डिया०। हां, सुनते तो ऐसा ही हैं॥

काउण्ट०। नहीं सचमुच ऐसा ही है मि० दंगली अपनी पूरी दौलत का पता नहीं दे रहे हैं, जितना है उसका आधा भी नहीं बताते॥

एग्डि०। (खुशी से फूल कर) और वह दो करोड़ बताते हैं!!

काउ०। बहुत कम बताते हैं और फिर आज कल वह रेलें बनवाने के काम को शुरू करने की फिक्र मे हैं, इंगलैण्ड और अमेरिका में जहां जहा रेलें बनी हैं वहा लोगो को बड़े मुनाफे हुए हैं अस्तु इनको भी कम से कम एक करोड़ जरूर मुनाफा होगा॥

एग्डि०। एक करोड़!! (काउण्ट की बातों में उसे अशर्फियो की झनझनाहट सुनाई पड़ रही थी)

काउ०। बेशक, और मिस युजिनी इस सब दौलत की मालिक होंगी। फिर आपकी भी तो दौलत उसके बराबर ही है॥

एरिड्या०। (सिर नीचा करके) हां, शायद॥

काउ०। शायद क्या जरूर ऐसाही है, खुद आपके पिता ने मुझ से कहा था। अस्तु ऐसे अच्छे सम्बन्ध के लिये मैं पुनः आपको मुबारकबादी देता हूं॥

एरिड्०। नही उल्टा मैं आपको धन्यवाद देता हूं क्योंकि आपने इसमे मेरी बडी मदद की !!

काउ०। मैंने !! नही नहीं प्रिन्स (प्रिन्स पर जोर दे के) मैंने कुछ नही किया सब कुछ आपके रुतबे मर्तबे और नाम ने किया॥

एरिड्०। मगर मैं तो यही कहूंगा कि आपके नाम ने इन सभों से ज्यादा काम किया है॥

काउन्ट०। (बातों के रुख से उसका मतलब समझ के) नहीं नही ऐसा समझना आपकी भूल है। आप के पिता के इज्जत और मर्तबे को जान के ही मैंने ऐसा किया—और उसका भी पता मुझे अपने दोस्त ऐबी वसूनी की जुबानी लगा। आपको भी मैं बिलकुल नहीं जानता था जबतक कि मेरे मित्र लार्ड विलमोर ने आप की सिफारिश नही की और इटली मे आपके घराने के रुतबे और दौलत का हाल कह मुझे आपकी मदद करने को नहीं कहा। यो तो मैं आपको जानता भी नही॥

काउण्ट के स्वर और ढंग ने एरिड्या को बता दिया कि इसके सामने उसकी बातें नही चलेंगी अस्तु उसने रुख पलट कर कहा, "तो मेरे पिता बहुत अमीर हैं?"

काउ०। हां मुझे तो ऐसा ही मालूम हुआ है॥

एरिडु०। उन्होने मेरी शादी पर तीस लाख रुपया देने को कहा या वह मुझे मिलेगा?

काउ०। जरूर, वह रुपये अब रास्ते में होंगे क्योंकि तुम्हारे पिता ने रवाना करने की खबर मुझे दी थी॥

खुशी के मारे एरिडूया फूल गया। कुछ देर तक आंखें बन्द कर वह मानों उन रुपयों की झनझनाहट सुनता रहा। फ़िर बोला, "काउण्ट महोदय! एक प्रार्थना मेरी है जो आपको माननी ही होगी॥"

काउ०। कहो॥

एरिडूया०। अपनी खुशकिस्मती से मेरी यहां के बहुत से रईसों से जान पहिचान हो गई है और इस शादी के मैाके पर तमाम पैरिस उमड़ आवेगा पर मेरे पिता शायद न आ सकेंगे॥

काउ०। हा उन्होने लिखा था कि अब वे बूढे हो चले और उनके जख्म उन्हें बड़ी तकलीफ देते हैं॥

एरिडु०। अस्तु ऐसी हालत में उनकी जगह पर आप होइये और मेरी शादी कराइये॥

काउ०। वाह, यह कैसे हो सकता है, तुम अच्छी तरह जानते हो कि मुझ इन सब झगडों से कैसी नफरत है और फिर वैसा ही करने को मुझ से कहते हो नही नही यह मै किसी तरह नही कर सकता। तुम्हारे सैकडों दोस्त हैं उन में से कोई भी यह काम कर सकता है॥

एरिडु०। तो आप इन्कार करते हैं?

काउ०। बेशक !!

एण्ड्रू०। आप ही ने तो मेरी शादी लगाई और अब आप ही ऐसा कहते हैं !!

काउ०। मैंने शादी लगाई ! वाह यह कैसी बात कह रहे हो !

एण्ड्रू०। आपही ने महाजन दंगली से मेरी जान पहिचान कराई ॥

काउ०। बिल्कुल नहीं, मेरे मकान की दावत में आपकी और उनकी मुलाकात हुई आप उनके घर आने जाने लगे और आप ही ने उनकी लडकी से प्रेम किया, मैंने इस बारे मे क्या किया !! मैं तो आपसे कह चुका न कि शादी ब्याह के झगडों में मैं पडता ही नहीं॥

एण्ड्रुया लाचारी के साथ अपना होठ चबाने लगा, आखिर थोडी देर बाद बोला, "खैर आप वहां आज आवेंगे तो !!"

काउण्ट०। क्यों आने को क्या हुआ, जब तमाम पैरिस वहा आवेगा तो मैं भी जरूर आऊंगा॥

एण्ड्रुया०। खैर इतनाही सही, मगर कम से कम एक बात तो बताइये ॥

काउ०। क्या ?

एण्ड्रुया०। क्या मेरी स्त्री को पाच लाख रुपै मिलेंगे ॥

काउण्ट०। हां मि० दङ्गली ने मुझसे कहा था कि ब्याह होतेही वे अपनी लडकी को इतना रुपया देंगे॥

एरिड०। मगर वे तो कहते हैं कि यह रुपया और मेरा तीस लाख सब रेल बनाने के काम में लगा देंगे॥

काउ०। तो बहुत ही अच्छा करेंगे, उनके हाथ मे यह रकम साल ही भर में चौगुनी हो जायगी॥

एक तरह का सन्तोष एरिडूया के चेहरे से झलकने लगा, उसने कुछ मामूली बाते और कीं और तब काउण्ट से बिदा हुआ॥

उस दिन शाम ही से बैरन दङ्गली के महल मे पैरिस के अमीरों, रईसो, नौजवानो और राजनीतिज्ञों का जमाव होने लगा क्योंकि इस शादी ने बडी धूम मचा दी थी। पैरिस का शायद ही कोई आदमी जो आदमी कहे जाने लायक था यहां न आया हो, हमारे पुराने साथी डिब्रे, ब्यूशेम्प, शेट्टू रैनाड, आदि सभी यहा मौजूद थे, रियासत के बड़े बडे ओहदेदार मन्त्री और मुखिया यहा जुटे हुए थे और उन्ही के साथ २ सुन्दर और सुघड लेडियो ने भी यहां चमन मचा रक्खा था। चारो तरफ हाहा ठीठी और हसी के फौवारे छूट रहे थे और नौ वजे के पहिले ही वहा इस कदर भीड होगई थी कि आदमियो के कन्धे छिलने लगे थे॥

जिस समय घडी ने नौ बजाया उसी समय नौकर ने "काउण्ट आफ़ मैाण्ट क्रोटो" की इत्तला की। इस नाम के साथ ही वहां एक सायत के लिये शान्ति हो गई सब कोई एकटक इस आदमी की तरफ देखने लगे जिसने कुछ ही दिनो मे अपनी दौलत और शाहखर्ची

की बदौलत पैरिस में तहलका मचा दिया था। जिसने उसे अभी तक नहीं देखा था वह उसे देखने के लिये आगे बढ़ने लगा, जो उसे देख चुके थे या उसके दोस्त कहला चुके थे वे उससे हाथ मिलाने को व्याकुल हो उठे और जो उसकी दौलत की खबर सुन चुके थे वे इस की सादगी पर गौर करने लगे क्योंकि काउण्ट इस समय बड़ी ही सादी यद्यपि सूफियानी पोशाक में था॥

काउण्ट ने दगली, उसकी स्त्री और लड़की से हाथ मिलाया और मुबारकबादी की बातें कहीं, इसके बाद खड़ा होकर चारो तरफ निगाह दौड़ाने लगा, इसी समय दो वकील शादी के मामले के सब जरूरी कागज ले कर आ पहुंचे और आज का काम शुरू हुआ, एक सुन्दर टेबुल के दोनों तरफ दोनो वकील बैठ गये और शादी के कण्ट्राकृ का कागज पढ़ा जाने लगा॥

लड़की का बाप लड़की को जो रुपया देगा या लड़के का बाप लड़के को जो रुपै देगा उसकी तायदाद सुन २ लोग ताज्जुब करने लगे, लाखों की ही आवाजें सुनाई पड़ती थीं और ऐसा मालूम होता था मानो ये दोनों पति पत्नि दौलत की खान हो जायंगे, यूजिनी को उसकी सहेलियां मुबारक देने लगीं और एण्ड्रिया को उसके नौजवान दोस्तों ने शाबाशी देना शुरू किया जो खुशी के मारे फूला नहीं समाता था। आखिर कागजों का पढ़ना समाप्त हुआ और उस पर दस्तखत होने लगे॥

दंगली ने सब से पहिले दस्तखत किया उसके बाद मेजर केवेलकेएटी की तरफ से आये हुए उनके एजेएट ने दस्तखत किया और अब बेरोनेस दंगली के दस्तखत की पारी आई जो मैडम विलफोर्ट से बातें कर रही थीं। अपनी पुकार देख बेरोनेस दस्तखत करने के लिये बढ़ी और दंगली की तरफ देख बोली—"मैडम विलफोर्ट कहती हैं कि काउएट मोएट क्रीटो के घर पर जो खून हुआ था उसके बारे में एक नई बात मालूम होने के कारण मि० विलफोर्ट उसकी जाच में लगे हैं और आज आ नहीं सकेंगे॥"

दंगली०। (लापरवाही से) सचमुच !!

काउएट मोएट क्रीटो०। (आगे बढ़ कर) मुझे यह सुन के अफसोस हुआ क्योंकि असल में उसका सबब मैं ही हूं॥

यह सुनते ही एंड्रिया के कान खड़े हुए, और लोग भी सुनने लगे काउएट पुनः बोला, "बात यह हुई कि उस दिन जो चोर मेरे घर मे घुसा था उसे उसी के एक साथी ने मार डाला था और उसे मेरे नौकर घरके अन्दर उठा लाये थे॥

दंगली०। तब ?

काउएट०। जख्म देखने के लिये नौकरों ने उसके कपड़े अलग किये और जब पुलिस आई तो उन कपड़ों को भी लाश के साथ लेती गई पर एक वास्केट भूल से छुट गई और पड़ी रह गई॥

एरिड्या को एक तूफान उठता हुआ नजर आया। उस के चेहरे पर कुछ पीलापन नज़र आने लगा और वह धीरे धीरे दर्वाज़े की तरफ खसकने लगा। काउण्ट बोला, "आज उस खून से तर वास्कैट का पता लगा जिसमें छूरे के दे। निशान थे। किसी को याद नही आया कि यह क्या है पर मैंने उसे देखते ही समझ लिया कि जरूर यह उस मरे हुए का कुपडा है। उसकी जांच करने से मुझे उसके जेब से एक चीठी मिली जिस पर (दंगली की तरफ देख कर) वैरन, आपका नाम और पता लिखा हुआ था॥

दंगली०। (चैांक कर) मेरा नाम!!

और लोग भी ताज्जुब करने लगे, काउण्ट बोला, "हां, यद्यपि खून से वह चीठी काली हो रही थी पर मैंने आपका नाम पहिचान लिया॥"

वैरोनेस०। पर इस सबब से मिस्टर विलफोर्ट यहां क्यों नही आ सके?

काउ०। इसी लिये कि मैंने वह वास्कैट और चीठी प्रोक्युरर के पास भेज दी क्योंकि इन मामलें। से अपना हाथ डालना ठीक नहीं होता॥

एरिड्या ने एक कड़ी निगाह काउण्ट पर डाली और उस कमरे से बाहर वाले कमरे मे हो रहा॥

दंगली०। ताज्जुब है कि उस मरे आदमी के जेब से मेरे नाम की चीठी निकली! उसका कुछ नाम अखबारें। में छपा था!!

फां०००। हां, वह एक भागा हुआ कैदी था, उसका नाम फदरू था॥

काउरट की बात सुन दङ्गली का चेहरा कुछ पीला पड गया। ऐरिड्रया ने वह कमरा भी छोड सबसे बाहरी कमरे मे पैर रक्खा। काउरट बोला, "खैर इन सब बातों का जिक्र इस खुशी के मौके पर करने की कोई जरूरत नहीं, आप लोग अपना काम शुरू करे॥"

वैरोनेस दङ्गली ने दस्तखत करके कलम रख दी, नोटरी ने पुकारा, "प्रिन्स केवेलकेरटी! आइये अब आप दस्तखत करियें! प्रिन्स कैवेलकेरटी आप कहां हैं?"

और भी कई आदमी केवेलकेरटी, केवेलकेरटी कर के पुकार उठे पर उसका कहीं पता न था। दङ्गली ने एक नौकर से कहा—"प्रिन्स को आवाज दो देखो कहां हैं, उनसे कहो आ कर दस्तखत करे॥"

पर इसी समय बाहरी कमरेमे फैले हुए मेहमान दौड़े और घबडाये उस बड़े कमरे मे इस तरह घुस आये मानों कोई उन्हे पकडने आ रहा हो, और तुरत ही इसका सबब भी मालूम होगया क्योंकि हर एक कमरे के दर्वाजे पर दो दो पुलिस के सिपाही खडे नजर आने लगे और एक अफसर पुलिस कमिशनर के साथ साथ दङ्गली की तरफ बढ़ा, यह देखते ही दङ्गली डर गया (कुछ आदमियों के दिल कभी शान्त नहीं रहते) और पीछे हटने लगा। मौरट क्रीटो यह हाल देख आगे बढ़ा और उस

यूजिनी०। क्या करें? वही जो पहिले से सोच चुके हैं, यहां से चल दें॥

लूइ०। मगर अब तो तुम्हारी शादी रुक गई, अब भागने की जरूरत?

यूजि०। रुक गई तो क्या हुआ, आज नहीं कल, कल नहीं परसों, यह बला तो मेरे पीछे लगी ही रहेगी, एक दफे अलबर्ट के माथे पड़ी दूसरी दफ़े कैवेलकेंटी के साथ जोड़ी गई अब शायद डिब्रे के गले मढ़ी जाऊं या और किसी नालायक के साथ व्याही जाऊं, कुछ नहीं अब मैंने इस घर से रहना ही नही, और ईश्वर ने यह मौका भी हमें बहुत अच्छा दे दिया है!!

लूइ०। तुम्हारा बड़ा मजबूत कलेजा है॥

यूजि०। हई है, अच्छा हमारा इन्तज़ाम तो सब ठीक ही है, सफरी गाड़ी .. ..

लूईसी०। खरीदी जा चुकी है और ठिकाने पर मौजूद है॥

यूजि०। राहदारी का पर्वाना?

लूई०। यह देखो तैयार है॥

लूईसी ने सरकारी कागज दिखाया जिस पर लिखा था—मिस्टर आर्मिली! उम्र बीस बरस—पेशा—गवैया, काले बाल, काली आंखें, बहिन के साथ सफर कर रहे हैं।" यूजिनी ने पढ़ कर कहा, "बहुत ठीक है, पर यह मिला कैसे?"

लूई०। बड़े सहज में, मैंने काउण्ट मोण्ट क्रीटो से

कहा कि 'मैं रोम में जा कर गाने बजाने का पेशा किया चाहती हूं मगर औरत होने से अकेले जाते डर मालूम होता है इसमें मर्द का भेष करके जाया चाहती हूं।' काउण्ट ने वहां के कई थियेटरों के मालिकों के नाम की चीठी लिख दी और यह पर्वाना भी मगवा दिया, मैंने अपने हाथ से उसमें इतना और बढ़ा दिया "बहिन के साथ सफर कर रहे हैं॥"

सूजि०। (खुश होकर) बस तो अब खाली सन्दूक तैयार करने की कसर है, मैंने शादी की रातको भागने का निश्चय किया था सो न कर दावत की रात को ही चली, बस इतना ही तो फर्क है॥

लूईसी०। खूब समझ बूझ लो सूजिनी, पीछे पछताना न पड़े!!

सूजि०। सोच लिया सोच लिया, दिन रात रुपयों की झनझनाहट, हुण्डियों की भुगतान, बाजार दर, चढ़ा उतरी, लेन देन, बस यही देखते देखते जी घबड़ा गया—अब हम लोग वहां चलेंगे जहां हवा है, स्वतन्त्रता है, चिड़ियों का चहकना है, सुन्दर नदियें हैं, वर्फ से ढके पहाड़ हैं, लहलहाते खेत हैं, लूईसी! इस समय कितना रुपया पास है?

लूई०। (एक पाकेट बुक खोल के) हजार हजार रुपै के तेईस नोट हैं॥

सूजि०। और उतने ही के अन्दाज मेरे पास हीरे मोती और जवाहिरात हैं। पचास हजार रुपयों से हम

लोग दो बरस तक अमीरी के साथ गुजरान कर सकते हैं और जरा हाथ रोक कर रहें तो चार बरस के लायक है,मगर छही महीने में हम दोनों अपने इल्म की बदौलत अमीर हो जायँगे। तुम वह रुपया अपने पास रक्खो मैं जवाहिरात रखती हूं जिससे एक के पास से माल जाता रहे तो दूसरे के पास का काम आवे। बस अब जल्दी करो सन्दूक निकालो॥

लूई०। कहीं कोई देख न ले!!

सूजि०। दरवाजा बन्द है! सब कोई अपनी अपनी फिक्र मे पड़े हैं, कोई इधर नहीं आता तुम अपना काम करो॥

लूईसी एक बड़ा सा चमड़े का सन्दूक निकाल लाई और दोनों कम उम्र औरतों ने उसमें काम में आने वाली चीजे और कपड़े भरने शुरू किये। देखते देखते सन्दूक भर गया। सूजिनी ने कहा, "लो मैं अपने कपड़े बदलती हूं, तुम सन्दूक का ताला लगा दो॥"

लूईसी ने अपने नाजुक हाथों से सन्दूक का पल्ला दबाया पर वह बहुत कसा हुआ था इससे बन्द न हुआ, वह हारकर बोली, "मुझसे तो बन्द नही होता आओ तुम बन्द करो" सूजिनी यह सुन हंसकर आई और संदूक पर घुटना रख और दबा ढकना बन्द कर दिया,लूईसी ने यह कहते हुए ताला लगा दिया "ओफ तुम्हारे बदन मे कितनी ताकत है!!"

अब सूजिनी ने एक दराज खोल उसमें से एक रेश-

भी लबादा निकाला और लूईसी को देकर कहा, "लो इसे पहन लो रास्ते में ठण्ढ नहीं लगेगी ॥"

लूई०। और तुम !

यूजि०। ओह मुझे ठण्ढ नही लगती, और फिर मेरी मर्दानी पौशाक में . . ..

लूई०। क्या तुम यही से मर्दानी पौशाक पहन कर चलोगी !

यूजिनी ०। हां, क्यों नही, तू डरती क्यों है, कोई देखने वाला नही, घबड़ा मत !!

यूजिनी ने उसी दराज में से मर्दानी पौशाक का एक पूरा सूट निकाला। कमीज वास्केट कोट पतलून कालर नेकटाई टोपी वगैरह सब चीजे निकाल उसने फुर्ती के साथ उन्हे पहिनना शुरू किया और देखते देखते एक अट्ठारह वरस का नौजवान लड़का बनकर खड़ी होगई। लूईसी ताज्जुब और तारीफ की निगाह से उसे देखती हुई बोली, "मगर तुम्हारे ये लम्बे बाल तो टोपी के नीचे छिपेंगे नहीं !!"

"देखो उसका भी इलाज करती हूं" कहकर यूजिनी ने एक लाम्बी कैंची निकाली और अपना सिर पीछे को लटका देखते २ उन खूबसूरत रेशम से मुलायम बालों को काट के अलग कर दिया। उसकी सूरत से अब और भी मर्दानापन झलकने लगा। लूईसी अफसोस के साथ उन गिरे हुए बालो और यूजिनी को देखने लगी मगर यूजिनी को उनका कोई रञ्ज न था, वह हंसती हुई बोली

लिये सजाये हुए थे, वहां पहुंच जो जो हलके और बेश-कीमत जेवर उसे नजर पड़े वह उन्हें पाकेट के हवाले करने बाद तब बाहर निकला था॥

बागीचे की छड़ दीवारी पार कर एक अंधेरी गली में पहुंच एण्ड्रिया ने अपनी चाल तेज की और आधे घण्टे तक वह लगातार चलता गया, भाग्यवश रास्ते में उसे कोई आदमी न मिला और आधे घण्टे के बाद उसने अपने को एक सुनसान सड़क पर पाया जो पैरिस के बाहिरी हिस्से में पड़ती थी। इस जगह वह एक पेड़ का सहारा ले खड़ा होगया और सोचने लगा कि अब क्या करना या किधर जाना चाहिये॥

एक किराये की गाड़ी सामने से जाती हुई नजर आई, एण्ड्रिया आड़ के बाहर आया और मजबूत आवाज से कोचवान से बोला, "गाड़ी किराया करेगा?" कोचवान ने इसकी तरफ देखा और भड़कीली पोशाक को देख कोई अमीर समझ कर बोला—"क्यों नहीं हुजूर!!"

एण्ड्रि०। मेरे एक साथी ने आज बारह बजे तक इसी जगह मेरी राह देखने को कहा था पर साढ़े बारह बज गया इससे मालूम होता है वह चला गया, मुझे लूवर तक जाना है अगर तुम्हारा घोड़ा तेज चल सके और तुम रास्ते में उसकी टमटम को पकड़ सको तो मैं बीस रुपया इनाम दूंगा॥

गाड़ीवान ने खुश होकर कहा, "हुजूर बैठ जांय

देखिये मैं कैसी तेज हांकता हूं" एण्ड्रिया यह कहता हुआ भीतर जा बैठा, "देखो उसकी टमटम हरे रङ्ग की है और मुश्की घोडा है, रास्ते में खयाल रखना" और कोचवान ने घोड़े को चाबुक फटकार चैतन्य किया। गाडी घडघडाती हुई पैरिस के बाहर की तरफ रवाना हुई॥

रास्ते में जो जो सराय पड़ती वहां एण्ड्रिया सिर निकाल निकाल कर हरे रङ्ग की टमटम और मुश्की घोड़े को दरियाफ़ करता, इस तरह की हजारों ही हो सकती थी अस्तु उसे बराबर यही जवाब मिलता "हां अभी गई है, थोडी ही दूर गई होगी" इत्यादि, यदि कोई ऐसी सवारी मिल भी जाती तो एण्ड्रिया देख कर कहता "नहीं यह नही" अस्तु नतीजा यह निकला कि लूवर आ पहुचा पर वह हरे रङ्ग की टमटम वाला दोस्त नही ही मिला, आखिर एण्ड्रिया ने कहा, "वह शायद किसी जगह अटक गया, खैर तुम अपना रुपया लो मैं यही किसी जगह उसे खोजूंगा।" गाड़ीवान के हाथ में दस रुपये का नोट रख वह जिस समय गाडी से नीचे उतर रहा था उसी समय एक सुन्दर सफरी गाड़ी जिसमें मजबूत घोड़े जुते हुए थे, तेजी से उसके बगल से निकल गई, इसमें लूईसी और यूजिनी थे पर एण्ड्रिया को उनका गुमान भी नही हो सकता था, उसने सिर्फ एक लम्बी सांस लेकर मन ही मन कहा, "आह अगर इस समय वैसी गाडी मेरे पास होती!!"

थोड़ी ही दूर पर एक होटल दिखाई पड़ रहा था, एरिड्रया उस तरफ बढ़ा और गाड़ीवान पैरिस की तरफ लौटा, जैसे ही वह गाड़ी आंखों की ओट होगई वैसे ही एरिड्रया ने अपना रुख पलटा और आगे की तरफ रवाना हुआ। तीन घंटों में उसके मजबूत पैरों ने बारह मील का रास्ता तै किया और पैरिस बहुत पीछे छूट गया, अब एरिड्रया का डर कम होने लगा और वह एक छोटे शहर के बाहिरी हिस्से में पहुंच कर रुक गया और सोचने लगा कि क्या करना चाहिये, थोड़ी ही देर में उसने एक तर्कीब सोच ली, जमीन पर से धूल उठा कर अपने कपड़ों पर डाली चेहरा और हाथ भी धूल से रङ्ग लिये और तब एक सराय के पास जा उसका कुण्डा खटखटाया॥

थोड़ी देर बाद जब सराय वाले ने दर्वाजा खोला तो एरिड्रया उससे बोला, "मैं 'कम्पीन' जा रहा था पर रास्ते में मेरे बदमाश घोड़े ने मुझे पटक दिया और खुद भाग गया, अगर मैं सवेरा होने के पहिले कम्पीन नहीं पहुचूँगा तो मेरे घर वाले बहुत घबड़ायगे अगर तुम्हारे पास कोई घोड़ा हो तो दो।" बहुत कुछ इनाम पाने की लालच से उस सराय वाले ने शीघ्र ही एक घोड़े और साईस का इन्तजाम कर दिया और एरिड्रया घोड़े पर चढ़ कर आगे को रवाना हुआ। पीछे पीछे दूसरे घोड़े पर साईस था॥

चार बजते बजते तक एरिड्रया ने बीस मील से

ऊपर का रास्ता तै कर लिया और एक होटल के सामने पहुच घोड़े से उतर पड़ा। साईस को भाड़ा और इनाम दे उसने बिदा किया, इसके बाद उसने होटल के अन्दर जा अपने सोने के लिये एक कमरा और कुछ भोजन तैयार करने का हुक्म दिया। थोड़ी ही देर मे यह सब इन्तजाम होगया और एक छोटे मगर सूफियाने कमरे मे भोजन करने बाद पलङ्ग पर लेट एण्ड्रिया अपनी थकावट दूर करने लगा। इस समय और पैरिस से इतनी दूर आकर उसका डर बहुत कुछ कम होगया था अस्तु उसे नींद आने लगी और थोड़ी ही देर मे वह खुर्राटे लेने लगा॥

जिस समय एण्ड्रिया की नींद खुली उस समय अच्छी तरह सवेरा हो चुका था और खिड़की की राह कमरे के अन्दर धूप आ रही थी। एण्ड्रिया चौंक कर उठ बैठा और साथ ही उसके मन ने गवाही दे दी कि उसने सोने में बहुत समय खराब कर दिया। वह पलङ्ग पर से उतर कर खिड़की के पास गया, सामने के मैदान मे एक सिपाही टहलता हुआ दिखाई पड़ा जिसे देखते ही वह चौंक कर बोल उठा, "सिपाही! क्यो?" मगर उसने यह कह अपने को धैर्य्य दिया, "बड़े होटलों में सिपाही आते जाते रहते ही हैं, चलूं कपड़े पहिनूं तब से वह चला जायगा।" एण्ड्रिया ने अपनी पूरी पोशाक पहिनी और तब पुनः खिड़की के पास आया, परदे की आड़ में से उसने देखा कि वह पहिला सिपाही तो वहां

हुई है, एक और भी होटल की सीढ़ियों के पास खड़ा हुआ है, तथा एक तीसरा घुडसवार होटल के बाहरी बड़े फाटक के सामने खड़ा है। उन सीढ़ियों और उस फाटक के इलावे और कोई रास्ता होटल से निकलने का नहीं था, एरिड्‌या के मुंह से बेतहाशा निकल गया, "ये लोग मुझे ही पकड़ने को आये हैं और रास्ता रोक के खड़े हैं॥"

एरिड्‌या के चेहरे पर पीलापन दौड़ गया और वह बेचैनी के साथ सोचने लगा, "अब क्या करना चाहिये!" पुलिस अदालत, जेल और फांसी का सीन उसकी आंखों के आगे दौड गया और थोडी देर के लिये वह बिल्कुल पागल सा होकर दोनों हाथों से अपना माथा पकड़ कर बैठ गया॥

कुछ देर बाद अपने को सम्हाल एरिड्‌या ने चारो तरफ देखा। पुराने जमाने का बना हुआ चौडा आतिशदान उसे नजर आया जिसे देखते ही उसके होठों पर एक मुस्कुराहट सी दौड़ गई। टेबुल पर कलम दावात और कागज मौजूद था, उसने फुर्ती के साथ लिखा—

"मेरे पास किराया देने लायक रुपया नहीं है, पर मैं बेईमान नही हूं, किराये से दसगुनी लागत का यह बटन रक्खे जाता हूं, सवेरा होने के पहिले ही मैं जाता हूं क्योंकि मुझे बड़ी शर्म लग रही है।" अपना सोने का बटन निकाल उसने इस कागज पर रख दिया और बन्द दर्वाजे को खोल वह उसी आतिशदान के अन्दर

जा छिपा। ऊपर की तरफ धूआं निकलने की जो चिमनी बनी हुई थी उसी की राह खसकता हुआ वह ऊपर को चढने लगा और इसी समय कई सिपाहियों ने उस कमरे के अन्दर पैर रक्खा॥

दर्वाजा खुला पातेही उन सिपाहियों के जमादार के मुंह से निकला, "दर्वाजा खुला! यह तो अच्छा सगुन नही है!" और सचमुच दर्वाजे का खुला रहना तथा टेबुल पर की चीठी और बटन जाहिर कर रहा था कि चिडिया उड गई। पर वह जमादार सहज में छोडने वाला नही था, सब तरफ टेबुल पलङ्ग तथा परदों की आड में देखता भालता वह उस चिमनी के पास पहुंचा और तब उसको चौडाई पर गौर कर तथा उसे भी निकल भागने लायक एक रास्ता समझ कर बोला, "यहां आग जलाओ॥"

थोडी ही देर मे बाकी सिपाहियो ने लकडियों का ढेर लाकर आतिशदान में जमा कर दिया और खूब आग सुलगाई पर बहुत देर तक राह देखने पर भी कोई आदमी चिमनी से न गिरा तब जमादार ने लाचारी की मुद्रा से गरदन हिलाकर कहा—"यहाँ तो नही है।" अच्छा पास वाले मकान पर चढ कर देखो होटल की छत पर तो नही चला गया॥"

वास्तव मे जमादार का खयाल ठीक था। एरिङ्या उस चिमनी की राह धीरे धीरे ऊपर को खसकता हुआ छत पर निकल गया था, जहा से वह नीचे के कमरे के

सिपाहियों की बातचीत सुन रहा था। जब जमादार ने पास के मकानों पर आदमी भेजने की बात कही तो वह डरा और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये पास ही में उसे किसी दूसरे कमरे के आतिशदान की चिमनी दिखाई पड़ी और उसे सिवाय इसके और कुछ न सूझा कि उसके अन्दर घुस कर छिप रहे। जैसे ही वह इस चिमनी में जाकर छिपा वैसेही बगल के एक मकान की खिड़की में से कई सिपाही झांकते नजर आये, कुछ देर तक वे होटल की छत को बड़े गौर से देखते रहे पर जब वहां कोई दिखाई न पड़ा तो लाचार हो लौट गये॥

होटल के फाटक पर अपने जमादार को देख उन सिपाहियों ने कहा, "छतपर तो कोई नहीं है हमलोगों ने अच्छी तरह देख लिया।" जमादार ने यह सुन कहा, "तब जरूर वह बदमाश रात को ही किसी तरह निकल भागा, अब चारो तरफ उसकी तलाश करनी पड़ेगी॥"

अभी वह कह ही रहा था कि होटल के अन्दर से किसी के बड़े जोर से चिल्लाने की आवाज आई, जिसे सुनते ही वह चौंक कर बोला, "हैं! यह क्या है?" फिर कई बार उसी तरह चीख की आवाज आई और जमादार सिपाहियों को लिये होटल के अन्दर की तरफ लपका। भीतर एक खानसामा दिखाई पड़ा जिससे उसने पूछा, "यह चीख की आवाज किधर से आई?" वह बोला, "नम्बर तीन के कमरे में से आती मालूम होती है।" जमादार ने पूछा—"उसमे कौन है?"

खानसामां बोला, "कल शाम को एक मुसाफिर अपनी बहिन के साथ आया है वही उसमें उतरा है।" जमादार उसी तरफ दौड़ा। इसी समय फिर चीख की आवाज आई॥

असल में बात यह हुई थी कि सिपाहियों के डर से जिस चिमनी में एण्डिया जा छिपा था वह एक दूसरे कमरे की ओर बहुत चौड़ी थी। जब वे सिपाही छत पर एण्ड्रिया को न पा लौट गये तो एण्डिया ने धीरे धीरे नीचे उतरना शुरू किया पर बदकिस्मती से उसका हाथ फिसल गया और वह एक दम धड़ाम से नीचे आतिशदान में आ गिरा। इस धमाके की आवाज ने उन दोनों औरतों को जगा दिया जो एक ही पलङ्ग पर सोई हुई थीं और वे तमाम बदन में कालिख मले एक आदमी को इस तरह चिमनी के बाहर निकलते देख डर कर चीख उठीं। एण्ड्रिया ने हाथ जोड़ गिड़गिड़ा कर कहा, "ईश्वर के लिये दया करो और चिल्लाओ नहीं, मैं तुम्हारा कोई नुक्सान नहीं करूंगा, मुझे कहीं छिपा लो॥"

औरतों ने यह सुन चौंक कर कहा, "हैं यह कौन! एण्ड्रिया केवेलकेण्टी! खूनी!!" एण्ड्रिया भी उन्हें पहिचान ताज्जुब से बोला—"अरे! यूजिनी! और लूईसी!!" लूईसी ने फिर एक चीख मारी और चिल्लाना शुरू किया। एण्ड्रिया फिर गिड़गिड़ा कर बोला, "दया करो दया करो, मुझे कहीं छिपाओ अगर मैं पकड़ जा-

ऊँगा तो मुझे फांसी हो जायगी !!" यूजिनी बोली—"अब कुछ नहीं हो सकता ! वे सब आ रहे हैं।" इसी समय कमरे के बाहर से जमादार ने कहा, "वह है ! वह है !! मैंने देख लिया ॥"

दर्वाजे के एक सूराख से एण्ड्रिया को जमादार ने देख लिया। देखते देखते बन्दूक के कुन्दों की मदद से कमजोर दर्वाजा तोड़ डाला गया और एण्ड्रिया ने कई बन्दूकों को अपनी तरफ सीधा हुए देखा। जमादार नङ्गी तलवार हाथ में लिये उसकी तरफ बढ़ा। एण्ड्रिया ने चारों तरफ देखा, बचाव की कोई सूरत नजर न आई, उसने लाचारी के साथ सिर हिलाया और तब बेहयाई की हंसी हंस कर जमादार से कहा, "आओ दोस्त ! मैं तुम्हारे लिये तैयार हू, कहां चलने को कहते हो ?"

देखते देखते उसे हथकड़ी बेड़ी पहिना दी गई, यूजिनी और लूईसी चुपचाप खड़ी यह हाल देखती रहीं, होटल के और आदमी जिन्होंने कल एक भाई को अपनी बहिन के साथ उस कमरे में जाते देखा था आज दोनों को औरतें ही पा ताज्जुब करने लगे। एण्ड्रिया उनकी तरफ देख कर बोला, "मिस दङ्गली ! मैं जाता हूं आपको कोई सन्देसा अपने बाप या मां को तो नहीं देना है !!" यूजिनी ने शर्मा कर सिर नीचा कर लिया, वह यह देख बोला, "नहीं नहीं शर्माओ मत चाहे तुम भी मेरी ही तरह क्यों न भागी हो पर मुझे कोई गुस्सा नहीं है, आखिर मैं करीब २ तुम्हारा

पति हो ही चुका था।" इसी समय सिपाहियों ने उसे धक्का दिया और घसीटते हुए बाहर ले गये॥

घण्टे भर के बाद यूजिनी और लूईसी भी अपनी सफरी गाडी पर सवार हुईं पर इस समय दोनो ही की पोशाक जनानी थी। उनका भेद पूरी तरह से खुल गया था और चारो तरफ लोग उनकी हसी उडा रहे थे। दूसरे दिन जिस समय ये दोनो ब्रुसेल्स पहुचीं उसी समय एण्ड्रिया पैरिस के जेलखाने में बन्द कर दिया गया॥

ग्यारहवां बयान।

फानून।

जिस समय यूजिनी और लूईसी भागने की तैयारी कर रही थी उस समय मैडम दङ्गली अपने कमरे मे बैठी तरह तरह की बाते सोच रही थी॥

जो बैरोनेस दङ्गली अपने बराबर पैरिस मे किसी लेडी को समझती ही नही थी और अपनी लडकी एक प्रिन्स के साथ व्याहने की बात को जिसने बडी शान से लोगो में फैलाया था उसका दमाद एक डाकू चोर और खूनी निकला इससे उसकी इज्जत में कैसा बट्टा लगा इसे वही सोच सकती थी। इस शादी से उन्हे बडी बडी आशाएं थीं जिनमे से एक यह भी थी कि उद्दण्ड और उद्धत यूजिनी को दूसरे के सपुर्द करके वे स्वतन्त्र हो सकेंगी, उन्हे यह भी डर था कि यूजिनी शायद उनके और

डिब्रे के अनुचित सम्बन्ध को जानती है अस्तु वे उस से डरती और दबती भी थीं और यह भी एक सबब था जिससे वे सूजिनी की शादी से प्रसन्न थी—ये सब आशाए एक पल में धूल से मिल गई हुई देख उनको एक बड़ा धक्का लगा जिसकी चोट सम्हालना कठिन होगया था। बड़ी देर तक वह एक मखमली कोच पर पड़ी गर्म आंसूओं की धार बहाती रही पर आखिर उठी और कमरे के बाहर आई, मजदूरनी से पूछने से उसे मालूम हुआ कि सूजिनी और लूईसी अपने कमरे के अन्दर हैं, उसने सोचा कि शायद वे भी उसी की तरह रो पीट रही होंगी अस्तु उनके पास जाना उचित नहीं, सोचते सोचते उसे अपने गुप्त प्रेमी डिब्रे का खयाल आया और वह उससे मिलने के लिये उतावली हो उठी। उसने एक काली पोशाक पहिन ली और चुपचाप मकान के बाहर निकल पैदल ही डिब्रे के मकान की तरफ रवाना हुई पर डिब्रे से मुलाकात न हुई क्योंकि वह उस समय अपने क्लबमें दोस्तों के साथ बैठा हुआ इसी घटना पर जो दङ्गली के यहां हुई बातचीत कर रहा था। घंटे भर तक उसकी राह देख वह लाचार वापस लौट आई और अपने कमरे में बैठ फिर तरह तरह की बाते सोचने लगी। सिवाय उसको मजदूरनी के और किसी को उस के जाने और लौटने का पता न लगा मगर इसी बीच में सूजिनी और लूईसी को निकल भागने का मौका मिल गया॥

पलङ्ग पर लेट जाने पर भी वैरोनेस को नींद नहीं आई, उसका मन तरह तरह की बातें सोचने लगा, कभी वह अपनी मुसीबत को सोचती, कभी यूजिनी की बेइज्जती का खयाल करती, कभी एण्डिया के पाजीपन पर क्रोध करती और कभी अपने पति की बेवकूफी पर हाथ मलती जिसने बिना अच्छी तरह जाच पड़ताल किये ही उसे प्रिन्स मान लिया और अपनी बेटी देने का वादा कर दिया था। जब इधर से उसका मन हटता तो वह अपने दोस्त विलफोर्ट की बेमुरौवती पर लंबी सांस खींचती जिसने इस बेदर्दी के साथ और ऐसे बेमौके यह भण्डा फोड़ा था। जब काउण्ट ने कद्रू की लिखी वह चीठी विलफोर्ट के पास भेज दी थी तो उसे तुरत ही मालूम होगया होगा कि एण्डिया ही खूनी है अस्तु ऐन दावत के मौके पर पुलिस को न भेज वह आगे या पीछे वह काम करा सकता था। ठीक उस वक्त जब कि हजारों मेहमान और पैरिस के चुने हुए लोग मौजूद हैं एण्डिया को गिरफ्तार करना, बेइज्जती बढाना नहीं तो क्या है। तब क्या विलफोर्ट वह पुराना प्रेमी, दोस्ती लिहाज मुलाहिजा बिल्कुल भूल गया ? ऐसा बेमुरौवत और निर्दई होगया ? नहीं नहीं उसको ऐसा करने का कोई और ही मतलब होगा। शायद उसने सोचा हो कि जब शादी के कागजों पर दस्तखत हो जायगे और दावत आदि हो चुकेगी तब इस भेद का खुलना और भी खराब होगा इसी से उसने जल्दी की, या यह सोचा

कि शायद पैरिस वाले यह सोचें कि दङ्गली ने अपना बिगड़ा हुआ कारबार बनाने और दगा देने के लिये जान बूझ कर एक फर्जी प्रिन्स बना कर भेज दिया है अस्तु जब मैं उनका दोस्त होकर इस तरह पर उस पाजी एरिड्या को गिरफ्तार कर रहा हूं तो कदापि दङ्गली का इस में कोई हाथ नहीं हो सकता। खैर जो कुछ भी हो कल मैं उस से मिलूंगी और पूछूंगी कि तुमने ऐसा क्यों किया और अब क्या उपाय होना चाहिये। इस खयाल से उसे कुछ शान्ति आई और वह सो रही॥

सवेरा होते ही मैडम दङ्गली उठी और बिना किसी से कुछ कहे या पूछे घर के बाहर निकल और किराये की गाड़ी कर विलफोर्ट के मकान की तरफ रवाना हुई॥

विलफोर्ट के दर्वाजे से कुछ इधर ही मैडम दङ्गली गाड़ी से उतर पड़ी और गाड़ी वाले से खड़ा रहने को कह दर्वाजे के पास पहुंची। यह देख उसे बड़ा ताज्जुब हुआ कि दर्वाजा बन्द है और मकान की सब खिड़कियां भी एक दम बन्द हैं, ताज्जुब के साथ तरह तरह की बातें सोचती हुई उसने कुंडा खटखटाया, थोड़ी देर बाद दर्वाजा खुला और एक नौकर ने झांक कर इसे देखा और पूछा, "कौन है, क्या है?"

मैडम०। दर्वाजा खोलो मैं भीतर आऊंगा॥

नौकर०। आपका नाम? आप कहां से आती हैं? यहां आपका क्या काम है॥

मैडम०। (ताज्जुब से) अजी तुम मुझे क्या जानते

नहीं जो यह सब पूछते हो ?

नौकर०। मैं किसी को नहीं जानता, आप या तो अपना नाम और काम बताइये नही तो लौट जाइये ॥

मैडम०। (गुस्से से) तुम क्या पागल हो गये हो? मुझे, वैरोनेस दङ्गली को नही जानते ? मैं तुम्हारे मालिक से तुम्हारे बर्ताव की शिकायत करूंगी ॥

नौकर०। मैडम यह उन्ही की आज्ञा है कि बिना ठाकुर एवरानी या उनकी इजाजत के कोई इस मकान में पैर न रखने पावे, आपको किससे काम है ?

मैडम०। मैं मि० विलफोर्ट से मिला चाहती हूं ॥

नौकर०। क्या कोई जरूरी काम है ?

मैड०। जरूरी न होता तो इतनी बेइज्जती बर्दाश्त कर मैं अभी तक यहां खडी रहती !! यह लो मेरा विजिटिङ्ग कार्ड अपने मालिक को दो !!

नौकर०। आप यहां खड़ी रहेंगी ?

मैडम०। हां॥

नौकर दर्वाजा बन्द करके चला गया और मैडम दङ्गली उसी तरह दर्वाजे के सामने खडी रही पर ज्यादा देर तक खड़ा न रहना पड़ा और उस नौकर ने लौट आकर दर्वाजा खोला और उनके अन्दर होते ही फिर बन्द कर लिया, मैडम के साथ साथ सीढ़ी तक जाकर उसने एक सीटी बजाई जिसे सुन सीढी पर एक दूसरा नौकर नजर आया जो मैडम को अपने साथ विलफोर्ट के कमरे तक पहुचा आया॥

मैडम को नौकरों के इस बर्ताव पर इतना क्रोध आ रहा था कि विलफोर्ट के सामने पहुंचते ही उसने उनकी शिकायत शुरू कर दी पर विलफोर्ट ने उसकी बातें सुन एक गमगीन मुस्कुराहट के साथ सिर्फ इतना ही कहा, "मैडम! मेरे नौकरों को माफ करो! वे बहुत डरे हुए हैं, उनके ऊपर शक होता है इससे वे दूसरों पर शक करते हैं॥"

अब मैडम को उन घटनाओं और मौतों का खयाल आया जो इधर कई महीनों के अन्दर विलफोर्ट के घर में हो चुकी थीं, उन्होंने विलफोर्ट का गम में डूबा हुआ चेहरा देखते हुए कहा, "तब तुम्हे भी दुःख है!"

विल०। हां॥

मैडम०। तब मुझ पर दया आती है?

विल०। दिल से॥

मैडम०। तुम्हें मालूम है मैं इस समय क्यों आई हूं॥

विल०। हां, जो कुछ तुम पर बीता है उसी के बारे में कुछ कहने शायद आई हो?

मैडम०। कैसी भारी आफत मुझ पर आई है!!

विल०। आफत नहीं, मुसीबत कहिये, आफत वही जिसका कोई इलाज न हो सके, जो भूली न जा सके॥

मैडम०। तो क्या यह घटना भूली जा सकती है?

विल०। सब कुछ भूला जायगा, आज नहीं कल कल नहीं महीने भर में आपकी लड़की की शादी हो जायगी, और जहां तक मैं समझता हूं आपको उस

आदमी के लिये अफसोस भी नहीं होगा जिससे शादी टूटी है ॥

मैडम ताज्जुब से विलफोर्ट का मुंह देखने लगी, उसे यह विश्वास नहीं था कि विलफोर्ट उसे इस तरह की बेदिली की बातें करेगा। उसने अफसोस के साथ पूछा, "क्या मैं अपने किसी दोस्त के पास आई हूं! या दुश्मन के !!"

विल०। (जिसके पीले चेहरे पर कुछ सुर्खी दौड़ गई) दोस्त के !!

मैडम०। दोस्त के !! तब फिर दोस्त की तरह बातें करो, देखो मैं कितनी भारी मुसीबत में पड़ के तुम्हारे पास आई हूं, इस समय मजिस्ट्रेट नहीं बल्कि मेरे दोस्त की तरह मुझसे बर्ताव करो और सलाह दो ॥

विल०। मेरी आफतों पर जब आप खयाल करेंगी तो अपनी मुसीबतों को भूल जायेंगी पर खैर उस विषय को ही जाने दीजिये, आप .. !!

मैडम०। मैं यह जानने के लिये आई हूं कि उस दगाबाज के साथ अब क्या होगा ?

विल०। दगाबाज ! दगाबाज नहीं उसे खूनी कहिये ! एण्ड्रिया केवेलकण्टी या बेन्डेटो दगाबाज नहीं बल्कि खूनी है !!!

मैडम०। ठीक है, वह खूनी ही है, पर हमारी मुसीबत की तरफ, हमारे खान्दान की बेइज्जती की तरफ, निगाह करके उसपर रहम करो, मेरे ऊपर मिहर्बानी

करके थोड़ी देर के लिये उसे भूल जाओ, उसे भाग जाने दो !!

विल०। नहीं अब कुछ नहीं हो सकता, अब बहुत देर हो गई, मैं गिरफ़ारी का हुक्म दे चुका ॥

मैडम०। तब क्या वह पकड़ जायगा !

विल०। हां मैं तो ऐसाही समझता हूं ॥

मैडम०। खैर पकड़ जाने पर भी तो वह भाग सकता है ॥

विलफोर्ट ने सिर हिलाया और कहा, "नहीं कायदा कानून भी तो कोई चीज है !"

मैडम०। कानून ! मेरे लिये भी कानून !!

मैडम ने तिरछी निगाह से विलफोर्ट की तरफ देखा पर उसने रञ्ज के साथ सिर हिला कर कहा, "नहीं कानून सब के लिये, मेरे लिये भी—है, कोई उससे बरी नहीं हो सकता ॥"

मैडम०। उह !!

विलफ़ोर्ट ने मैडम की तरफ एक तेज निगाह डाली और तब कहा, "हां मैं समझता हूं कि तुम्हारा क्या मतलब है, तुम उन कई मौतों के बारे में सोच रही हो जो इधर तीन महीने के अन्दर मेरे घर में हो चुकी हैं। दुनिया सोचती है कि ये मौतें स्वाभाविक नहीं हैं ॥

मैडम०। (जल्दी से) नहीं नहीं मैं यह नहीं सोचती थी ॥

विल०। तुम्हारे मन में जरूर यह खयाल था कि

दूसरों के जुर्म की तो तुम सजा दिलाते हो और अपने बारे में चुप्पी साधते हो। क्यों यही न तुम्हारा खयाल था।

मैडम चुप रही, विलफोर्ट अपनी कुर्सी उनके पास घसीट कर कांपती हुई आवाज में धीरे धीरे बोला, "मैडम! कुछ जुर्मों की सजा इस लिये नही दी जा सकती कि मुजरिम का पता नही लगता और कसूरवार के बदले में बेकसूर के सजा पाने का डर रहता है, मगर जब मुजरिम का पता लगजाता है—(विलफोर्ट ने अपना हाथ एक सलीब की तरफ बढा कर गंभीर स्वर में कहा) जब मुजरिम मालूम हो जायगा तो मैं कसम खाकर कहता हूं कि वह भी अपनी जान देगा। लो, इस कसम के बाद भी तुम उस कम्बख्त के लिये मुझसे माफी मांग सकती हो।

मैडम०। मगर तुम्हें क्या विश्वास हो गया कि वह सचमुच खूनी है॥

विलफोर्ट०। वह पुराना पापी है—सोलह बरस की उमर में जाल बनाने के लिये उसे पांच बरस की सजा हुई, वहां से वह भागा, तब उसने खून किया, जैसा शुरू वैसा ही आखीर॥

मैडम०। आखिर वह है कौन?

विल०। कार्सिकन है, उसके मां बाप का कुछ पता नही कि कौन है या वह किसका लड़का है॥

मैडम०। (हाथ जोड़ कर) फिर भी विलफोर्ट!

करके थोड़ी देर के लिये उसे भूल जाओ, उसे भाग जाने दो !!

विल०। नहीं अब कुछ नहीं हो सकता, अब बहुत देर हो गई, मैं गिरफ़ारी का हुक्म दे चुका॥

मैडम०। तब क्या वह पकड़ जायगा?

विल०। हां मैं तो ऐसाही समझता हूं॥

मैडम०। खैर पकड़ जाने पर भी तो वह भाग सकता है॥

विलफोर्ट ने सिर हिलाया और कहा, "नहीं कायदा कानून भी तो कोई चीज है!"

मैडम०। कानून! मेरे लिये भी कानून!!

मैडम ने तिरछी निगाह से विलफोर्ट की तरफ देखा पर उसने रञ्ज के साथ सिर हिला कर कहा, "नहीं कानून सब के लिये, मेरे लिये भी—है, कोई उससे बरी नहीं हो सकता॥"

मैडम०। ऊंह!!!

विलफ़ोर्ट ने मैडम की तरफ एक तेज निगाह डाली और तब कहा, "हां मैं समझता हूं कि तुम्हारा क्या मतलब है, तुम उन कई मौतों के बारे में सोच रही हो जो इधर तीन महीने के अन्दर मेरे घर में हो चुकी हैं। दुनिया सोचती है कि ये मौते स्वाभाविक नहीं हैं॥"

मैडम०। (जल्दी से) नहीं नहीं मैं यह नहीं सोचती थी॥

विल०। तुम्हारे मन में जरूर यह खयाल था कि

दूसरों के जुर्म की तो तुम सजा दिलाते हो और अपने बारे में चुप्पी साधते हो। क्यों यही न तुम्हारा खयाल था।

मैडम चुप रहीं, विलफोर्ट अपनी कुर्सी उनके पास घसीट कर कांपती हुई आवाज से धीरे धीरे बोला, "मैडम! कुछ जुर्मों की सजा इस लिये नहीं दी जा सकती कि मुजरिम का पता नहीं लगता और कसूरवार के बदले में बेकसूर के सजा पाने का डर रहता है, मगर जब मुजरिम का पता लगजाता है—(विलफोर्ट ने अपना हाथ एक सलीब की तरफ बढ़ा कर गंभीर स्वर से कहा) जब मुजरिम मालूम हो जायगा तो मैं कसम खाकर कहता हूं कि वह भी अपनी जान देगा! लो, इस कसम के बाद भी तुम उस कम्बख्त के लिये मुझसे माफी मांग सकती हो!

मैडम०। मगर तुम्हें क्या विश्वास हो गया कि वह सचमुच खूनी है॥

विलफोर्ट०। वह पुराना पापी है—सोलह बरस की उमर में जाल बनाने के लिये उसे पांच बरस की सजा हुई, वहां से वह भागा, तब उसने खून किया, जैसा शुरू वैसा ही आखीर॥

मैडम०। आखिर वह है कौन?

विल०। कार्सिकन है, उसके मा बाप का कुछ पता नहीं कि कौन है या वह किसका लड़का है॥

मैडम०। (हाथ जोड़ कर) फिर भी विलफोर्ट!

करके थोड़ी देर के लिये उसे भूल जाओ, उसे भाग जाने दो !!

विल०। नहीं अब कुछ नहीं हो सकता, अब बहुत देर हो गई, मैं गिरफ़ारी का हुक्म दे चुका॥

मैडम०। तब क्या वह पकड़ जायगा ?

विल०। हां मैं तो ऐसाही समझता हूं॥

मैडम०। खैर पकड़ जाने पर भी तो वह भाग सकता है॥

विलफोर्ट ने सिर हिलाया और कहा, "नहीं कायदा कानून भी तो कोई चीज है!"

मैडम०। कानून! मेरे लिये भी कानून !!

मैडम ने तिरछी निगाह से विलफोर्ट की तरफ देखा पर उसने रञ्ज के साथ सिर हिला कर कहा, "नहीं कानून सबके लिये, मेरे लिये भी—है, कोई उससे बरी नहीं हो सकता॥"

मैडम०। ऊंह !!!

विलफ़ोर्ट ने मैडम की तरफ एक तेज निगाह डाली और तब कहा, "हां मैं समझता हूं कि तुम्हारा क्या मतलब है, तुम उन कई मौतों के बारे में सोच रही हो जो इधर तीन महीने के अन्दर मेरे घर में हो चुकी हैं। दुनिया सोचती है कि ये मौतें स्वाभाविक नहीं हैं॥

मैडम०। (जल्दी से) नहीं नहीं मैं यह नहीं सोचती थी॥

विल०। तुम्हारे मन में जरूर यह खयाल था कि

दूसरों के जुर्म की तो तुम सजा दिलाते हो और अपने बारे में चुप्पी साधते हो। क्यों यही न तुम्हारा खयाल था?

मैडम चुप रही; विलफोर्ट अपनी कुर्सी उनके पास घसीट कर कांपती हुई आवाज मे धीरे धीरे बोला; "मैडम! कुछ जुर्मों की सजा इस लिये नहीं दी जा सकती कि मुजरिम का पता नहीं लगता और कसूरवार के बदले में बेकसूर के सजा पाने का डर रहता है, मगर जब मुजरिम का पता लगजाता है—(विलफोर्ट ने अपना हाथ एक सलीब की तरफ बढ़ा कर गंभीर स्वर मे कहा) जब मुजरिम मालूम हो जायगा तो मैं कसम खाकर कहता हूं कि वह भी अपनी जान देगा! सो, इस कसम के बाद भी तुम उस कम्बख्त के लिये मुझसे माफी मांग सकती हो?

मैडम०। मगर तुम्हें क्या विश्वास हो गया कि वह सचमुच खूनी है॥

विलफोर्ट०। वह पुराना पापी है—सोलह बरस की उमर में जाल बनाने के लिये उसे पांच बरस की सजा हुई, वहां से वह भागा, तब उसने खून किया, जैसा शुरू वैसा ही आखीर॥

मैडम०। आखिर वह है कौन?

विल०। कार्सिकन है, उसके मां बाप का कुछ पता नहीं कि कौन है या वह किसका लड़का है॥

मैडम०। (हाथ जोड़ कर) फिर भी विलफोर्ट!

मेरे ऊपर दया करो और............

विलफोर्ट-नहीं मैडम नहीं उसके लिये माफी मत मांगो, मैं कानून का पुतला हूं और कानून के आगे न मैं हूं न तुम, कानून को न तो तुम्हारा दुःख देखने के लिये आंखे हैं न तुम्हारी मीठी आवाज सुनने के लिये कान। मैडम ! कानून ने उसे पकड़ने और सजा देने का हुक्म चलाया है, और उसका हुक्म पूरा होगाही । तुम शायद कहोगी कि मैं कानून नहीं आदमी हूं, दिल, खून, और जिगर वाला हूं, पर आप यह भी तो देखें कि दुनिया ने मेरे साथ कैसा वर्ताव किया, बराबर मेरा पीछा ही किया, बराबर मुझ पर वार ही किया, क्या किसी ने मुझ पर भी वह रहम दिखाया जो आज तुम मुझसे मांग रही हो ? नहीं, दुनिया ने मुझपर वार किया, वार किया और वार किया ! तुमने मुझे अपने जाल में फंसाया, इस समय तुम्हारी निगाहें देख कर मुझे अपना सिर नीचा करना पडता है, खैर ऐसा ही सही, अपनी उन गलतियों के लिये जिन्हें तुम जानती हो, शायद और भी कुछ भूलों के वास्ते, मुझे अपना सिर नीचा करना पड़े तो पडे । पर खुद भूल करने बाद अब मुझे अपने साथियों की भूलों का पर्दा फाड़ने में ही सुख मिलता है, हर एक मुजरिम जिसका भण्डा मैं फोड़ता हूं, मुझे यह याद करा देता है कि अकेला मैं ही कसूरवार नहीं हूं । अफसोस !! यह दुनिया ही खराब है, अस्तु हमें खराबी ही पर वार करना चाहिये ॥

विलफोर्ट ने ये बातें ऐसे गुस्से और जोश से कहीं कि उसका चेहरा लाल हो आया और मैडम भी कुछ देर के लिये चुप हो रही पर फिर एक आखिरी कोशिश की नीयत से उसने कहा, "विलफोर्ट! प्यारे विलफोर्ट! यह खूनी बिल्कुल कमउम्र है, लड़का है, इसके मां बाप तक नहीं हैं!!"

विल०। तो अच्छा ही है, कोई इसके लिये रोएगा नहीं॥

मै०। उसकी सजा से मेरे घराने की बदनामी होगी॥

विल०। इन मौतों से मेरी बदनामी हो रही है॥

मैड०। विलफोर्ट, तुम दूसरों पर दया नहीं करते तो दूसरे फिर तुम्हारे पर क्यों रहम करेंगे!!

विल०। (ऊपर की तरफ देखते हुए) न करें॥

मैड०। खैर कम से कम इतना ही करो कि सेशन अदालत की इस बैठक में उसका मुकद्दमा न पेश कर अगली बैठक में करो, इस छः महीने में लोग इस घटना को भूल जायगे॥

विल०। नहीं मैडम, मेरा मुकद्दमा तैयार है और अभी अदालत बैठने में पांच दिन की देर है, इस पांच दिन में बाकी कसर भी मैं पूरी कर लूंगा॥

मैडम०। वह भाग गया है, भाग जाने दो, निकल जाने दो॥

विल०। वह भाग नहीं सकता आज सवेरे ही तार द्वारा उसकी गिरफ्तारी का हुक्म ...

इसी समय विलफोर्ट का नौकर एक बड़ा सा सरकारी लिफाफा लेकर आया और उसके सामने रखकर बोला—एक सवार यह चीठी लाया है॥

विलफोर्ट ने जल्दी जल्दी वह चीठी खोली और पढना शुरू किया, मैडम डर से कांप उठी, विलफोर्ट खुशी से उछल पड़ा और बोला—"पकड़ गया! आज सवेरे कम्पेन के एक होटल में पुलिस ने उसे गिरफ़ार कर लिया॥"

मैडम का चेहरा पीला होगया और उन्होंने कुर्सी से उठते हुए कहा, "अच्छा तो फिर मैं जाऊं?"

विलफोर्ट ने 'सलाम' कहके कमरे का दर्वाजा खोल दिया, जब वह चली गई तो वह खुशी खुशी अपने टेबुल के पास आया और चीठी पर हाथ मार कर बोला, "खूब हुआ! अबकी का सेशन मेरा बहुत मजेदार हुआ, एक जाल, तीन डाके, दो चोरियां हो चुकीं, सिर्फ एक खून की क़सर थी वह भी आ गया, वाह खूब हुआ!!!"

॥ बारहवां हिस्सा समाप्त ॥

॥ श्रीः ॥

मोतियों का खजाना।

तेरहवां हिस्सा।

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

अनुवादित

और

प्रकाशित।

LAHRI PRESS DEVAKI NANDAN KHATRI BENARES CITY

PRINTED BY
PANNA LAL ROY
AT THE LAHARI PRESS, BENARES CITY

प्रथम बार] १९२१ मूल्य ।=) आ०

॥ श्रीः ॥



मोतियों का खजाना ।

तेरहवां हिस्सा ।

पहिला बयान ।

भूत ।

बीमारी के हमले के हुए कई दिन बीत जाने पर भी अभी तक वेलेण्टिन अच्छी नहीं हुई थी । उसकी कमजोरी हद्द से ज्यादा थी और उसका दिमाग बिल्कुल ही कमजोर हो रहा था । पलङ्ग से उठने अथवा कमरे के बाहर आने की उसे इजाजत न थी परन्तु उसका दादा नौटीर दिन भर वहां बैठा रहता था और उसके इलावे अदालत से छुट्टी मिलने पर विलफोर्ट और कभी कभी उसकी सौतेली मां भी उसके पास आ बैठती थी अस्तु दिन भर वेलेण्टिन की तबीयत बहली रहती थी । पर रात होने पर जब कि सब कोई चले जाते थे और वहां कोई रह नहीं जाता था तो वेलेण्टिन की बेचैनी और घबराहट बढ़ जाती थी और वह मुश्किल से थोड़ी देर सो सकती थी ॥

मैक्समिलियन रोज सवेरे नोटीर के पास आता और वेलेण्टिन का हाल चाल पूछ जाता था। यह जान कर कि वह यद्यपि पूरी तरह पर अच्छी नहीं हुई है पर फिर भी अच्छी होती जा रही है उसकी परेशानी बहुत कुछ कम हो गई थी क्योंकि उसे मौण्ट क्रीटो की वह बात अच्छी तरह याद थी जो उसने वेलेण्टिन की बीमारी का हाल सुन कर कही थी कि "अगर अब तक वह मर नहीं गई है तो अब नहीं मरेगी॥"

वेलेण्टिन के कमरे की अच्छी तरह हिफाजत की जाती थी जिसमें कोई गैर आदमी उस तक पहुंच न सके। उसके कमरे में जाने के सिर्फ दो ही रास्ते थे एक तो मैडम विलफोर्ट के कमरे में से जो उससे सटा हुआ था और दूसरा सीढ़ी पर से। मैडम विलफोर्ट अपनी तरफ वाला दर्वाजा रात को भीतर से अच्छी तरह बन्द कर लिया करती थी और सीढ़ी वाले दरवाजे में वेलेण्टिन के सो जाने पर वह दाई जिसे डाकृर एवरानी ने बहुत विश्वासपात्र समझ कर मुकर्रर किया था रातको ताला बन्द करके ताली विलफोर्ट को दे जाती थी। इस तरह रात को कोई भी आदमी वेलेण्टिन तक जा नहीं सकता था पर फिर भी न जाने क्यों वेलेण्टिन को शान्ति की नींद नहीं आती थी, उसके परेशान दिमाग को यही मालूम होता रहता था कि कोई उस के कमरे में आया जाया करता है। कभी उसकी आंखों के सामने मारल की शक्ल खिंच जाती, कभी अपनी

सैातेली मां को वह देखती श्रैार कभी काउएट मैाएट क्रीटो जैसे अजनबियो को भी वह अपने पास खडे देखती। ऐसी हालत उसकी प्रायः तीन बजे रात तक रहती थी, उसके बाद उसे नीद आ जाती थी जिस से वह बहुत सुबह हो जाने पर ही उठती थी॥

आज वेलेएिटन ने मैडम विलफोर्ट की जुबानी यूजिनी के भागने श्रैार नकली प्रिन्स अर्थात् वेएडेटो के पकडे जाने का हाल सुना था अस्तु यह सब विचित्र बातें सोचते हुए उसका दिमाग रोज से ज्यादे परेशान हो रहा था। ग्यारह बज जाने पर भी उसे नीद नहीं आई थी, वह देर से आंख बन्द किये हुए पडी थी इससे उसकी धाय उसे सोया हुआ समझ दवा की आखिरी खुराक शीशे के गिलास में डाल उसके बगल के टेबुल पर रख कमरे का दर्वाजा बन्द करके चली गई थी पर आखे बन्द किये रहने पर भी वेलेएिटन वास्तव में जाग ही रही थी। कमरे में एक बहुत ही धीमी रोशनी जल रही थी श्रैार मकान भर में सन्नाटा छाया हुआ था॥

वेलेएिटन के कमरे से सटी हुई एक छोटी कोठडी थी जिसमे पढ़ने की कुछ किताबे रहती थी, यकायक वेलेएिटन ने उसका दरवाजा खुलते हुए देखा। उसने समझ लिया कि रोज की तरह आज भी उसके दिमाग में चक्कर आना शुरू होगया है श्रैार यह सब वास्तव में कुछ है नही। थोडी-देर बाद उसने किसी के पैरो की आहट सुनी श्रैार उसे ऐसा मालूम हुआ मानो कोई

आदमी उस कोठड़ी से निकल उसके पलङ्ग की तरफ आ रहा है। अगर वेलेण्टिन अच्छी तरह रहती तो जरूर डरती और घंटी बजा कर बाहर के नौकरों को होशियार करती पर इस हालत में उसे कोई डर न मालूम हुआ और यह सब रोज का मामूल समझ और यह सोच कर कि दवा की एक खुराक पीने से उसका दिमाग कुछ सुधरेगा, उसने अपना हाथ सिरहाने रक्खे हुए ग्लास की तरफ बढ़ाया । उसे ऐसा करते हुए देखते ही उस शख्स ने फुर्ती की और लपक कर उसके इतने पास आ गई कि वेलेण्टिन को उसके सांस लेने की आहट साफ सुनाई पड़ने लगी । वेलेण्टिन को बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि अभी तक उसे दिखाई देने वाली अद्भुत शक्लों में से किसी ने ऐसा बर्ताव नहीं किया था और जब कि उस सूरत ने उसके हाथ को पकड़ कर दबाया और उस गिलास के पास से हटाया तब तो उसे और भी ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगी कि शायद मैं बदहोशी की हालत में नहीं हूं पूरे होशहवाश में जाग रही हूं और वह वास्तव में कोई आदमी है जो अद्भुत रीति से उसके कमरे में आ पहुंचा है । यह सोचते ही वह कांप उठी और तब उसने अच्छी तरह आंख खोल कर उस 'भूत' की तरफ देखा जो उसके हाथ से गिलास ले कर खुद उसमें का अर्क पी रहा था, थोड़ा सा अर्क पीने बाद उस शख्स ने सिर हिलाया और 'ठीक है' कह वेलेण्टिन के पास पहुंच प्यार की आवाज से बोला, "लो बेटी

पीओ !!" उसकी सूरत देखते ही वेलेंटिन के मुंह से ताज्जुब के साथ निकला "काउण्ट मौण्ट क्रीटो !!"

काउण्ट ने (जो सचमुच वही था) होंठ पर उंगली रख चुप रहने का इशारा किया और तब धीमे स्वर में कहा, "डरो मत डरो मत! तुम्हारे सामने जो आदमी खड़ा हुआ है उसे अपने प्यारे पिता की तरह समझो जो तुम्हारा कोई नुक्सान अपने दिल में भी नहीं लावेगा॥"

वेलेंटिन कुछ जवाब न दे सकी, ऐसी जगह पर इस आधी रात के समय काउण्ट को देख वह बिल्कुल ही डर गई थी, मगर काउण्ट की सूरत से ऐसी शान्ति और प्रेम झलक रहा था कि उसका डर बढ़ नहीं सकता था। काउण्ट फिर बोला, "तुम मुझसे जरा भी न डरो, बल्कि मेरे चेहरे की तरफ देखो, मेरी सूरत मामूली से ज्यादा पीली हो रही है, आखें जागने से लाल हो रही हैं, आज चार दिन से मैंने उन्हें एक पल के लिये बन्द नहीं किया है चार दिन से मैं बराबर वहां खड़ा हुआ तुम्हारी इस लिये निगहबानी कर रहा था जिसमे मैक्समिलियन तुम्हें पा सके॥"

'मैक्समिलियन' का नाम सुनते ही इस लड़की का सब डर दूर हो गया बल्कि उसके गालों पर एक तरह की सुर्खी सी दौड़ गई और उसने ताज्जुब से पूछा— "मैक्समिलियन! क्या मैक्समिलियन ने आप से सच हाल कह दिया !!"

काउएट०। हां, उसने सब हाल पूरा पूरा मुझसे कह सुनाया है, और मैंने वादा किया है कि तुम्हारी रक्षा करूंगा और तुम्हें मरने नही दूंगा॥

वेले०। रक्षा करूंगा! मरने नहीं दूंगा!! तब क्या आप डाक्टर हैं?

काउएट०। हां, दुनियां में तुम्हारे लिये सब से अच्छा जो डाक्टर हो सकता है वह इस समय मैं ही हूं॥

वेले०। आप मेरी निगहबानी कर रहे थे!! कहां से? किस जगह से? मैंने तो आपको कभी नही देखा?

काउएट ने उस कोठडी की तरफ बता कर कहा, "उस दर्वाजे की आड से! उस कोठडी में से एक रास्ता बगल के मकान मे है जिसे मैंने किराये लिया हुआ है।"

वेलेण्टिन ने उस दरवाजे और तब काउएट की तरफ देखा—उसके चेहरे पर कुछ डर सा दौड़ गया जिस का मतलब समझ काउएट ने कहा, "मैं फिर कहता हूं कि तुम मुझे अपने पिता की जगह समझो। मैं वहां से बराबर देखता रहा हूं कि तुम्हारे पास कौन आता है तुम्हें क्या भोजन मिलता है या क्या दवा दी जाती है जब कभी यह खतरनाक मालूम होती थी मैं यहां आता था जैसे कि अब आया हूं और उस जहर को फेंक कर जो तुम्हारी जान लेने के लिये दिया जाता था, एक दूसरी दवा देता था जिससे तुम्हारी मौत होने के बदले तुम्हारे बदन में ताकत आती थी॥

वेले०। (डर कर) मौत! जहर!!

काउण्ट०। (फिर होंठ पर उंगली रख कर) हां, मौत! और जहर! मैंने ठीक कहा है, पर पहिले तुम यह दवा पीलो जो मैं देता हू॥

काउण्ट ने अपने जेब से एक छोटी शीशी निकाली जिसमें लाल रङ्ग का कोई अर्क था और ग्लास मे कई बूंदे डाल वेलेण्टिन की तरफ बढाया पर उसने ग्लास छूते ही डर कर फिर हाथ पीछे खींच लिया। काउण्ट ने यह देख स्वयम् उस ग्लास की आधी दवा पीली और तब फिर वेलेण्टिन की तरफ ग्लास बढाया, वेलेण्टिन ने इस बार मुस्कुराते हुए वह ग्लास ले लिया और दवा पीकर कहा, "ठीक है, इस दवा का ठीक वैसाही स्वाद है जैसा हर रात को मैं पाती थी और जिसके पीने से मेरे चक्कर खाते हुए दिमाग को शान्ति और ठण्ढक पहुचती थी॥

काउ०। इसी दवा के सबब से तुम अभी तक जीती रही हो। और मेरी क्या हालत थी? ओह मैं बयान नहीं कर सकता कि उस वक्त मेरी क्या दशा होती थी जब मैं तुम्हारे ग्लास में जहर उलटा जाता हुआ देखता और यह सोच सोच कर कांपता था कि कहीं मेरे आ कर उसे फेकने के पहिले ही तुम उसे पी न जाओ॥

वेले०। (डर से कांपती हुई) आपने मेरे ग्लास में जहर उलटा जाता हुआ देखा? तब जरूर उसे भी देखा होगा जो वह जहर उलटता था॥

काउण्ट०। हां, देखा॥

वेलेण्टिन कांपती हुई उठ कर पलङ्ग पर बैठ गई, उसका पीला चेहरा एक दम सुफेद होगया और उसने फिर पूछा, "आपने उस आदमी को देखा?"

काउण्ट०। हां॥

वेले०। ओह! आप कैसी भयानक बात कह रहे हैं! भला मेरे घर में मेरी ही जान लेने की कोशिश! नहीं नहीं नहीं, आप भूलते हैं, ऐसा नहीं हो सकता!!

काउण्ट०। क्या तुम्हारे ही ऊपर पहिले पहिल उस हाथ का वार हुआ है? क्या तुमने रईस मीरां, मैडम मीरां, और बोरिस को मरते हुए नहीं देखा और अगर उस जहर की तासीर को उस दवा के असर ने न तोड़ दिया होता जिसे आज बहुत दिनों से वे पी रहे हैं तो क्या मिस्टर नोटीर भी मर न जाते?

वेले०। ओह! तो क्या इसी लिये बाबा मुझे अपनी दवा में से रोज थोड़ा थोड़ा मुझे पिलाते थे!!

काउ०। क्या उसका स्वाद कडुआ कडुआ नारङ्गी के सूखे छिलके ऐसा होता था?

वेले०। हां, ठीक वैसाही॥

काउण्ट०। ओह अब मैं समझा, तुम्हारे बाबा भी समझ गये हैं कि इस घर में कोई जहर देने वाला है, शायद वे उसे पहिचान भी गये हों, तुम्हारी हिफाजत के लिये और उस जहर का तोड़ करने के लिये वे तुम्हारे शरीर को वही जहर खिला खिला कर मजबूत कर रहे थे। यही सबब है कि तुम अभी तक जीती बचीं और

उस कातिल ज़हर ने तुम पर असर न किया जो कि तुरत मार डालता है ॥

वेले०। मगर आखीर वह कातिल है कौन ?

काउण्ट०। मैं तुमसे एक बात पूछता हूं; क्या तुमने रात को किसी की आहट अपने कमरे में नहीं पाई है ?

वेले०। हां हां कई दफे मुझे ऐसा मालूम हुआ है कि कोई मेरे पलङ्ग के आस पास घूम फिर रहा है, पर मैंने यही समझा कि बीमारी के सबब से मेरा दिमाग खराब हो जाने से ऐसा मालूम होता है, आज आपको आते देख कर भी मैंने पहिले वैसा ही समझा था ॥

काउण्ट०। तब तुम्हें यह बिल्कुल नहीं मालूम कि तुम्हारी जान का ग्राहक कौन है ?

वेले०। नहीं, भला मुझे मारने से किसी को क्या फायदा होगा ?

काउ०। अच्छा तो तुम्हे अभी अभी मालूम हुआ जाता है, यह देखो बारह बज रहा है, और हत्यारे लोग इसी समय में अपना काम करते हैं ॥

वेले०। (माथे का पसीना पोछते हुए) ओह ! हे भगवान !!

घड़ी मे धीरे धीरे बारह बजा, घण्टे की एक एक आवाज मानों उस बेचारी लड़की के कलेजे पर चोट पहुंचा रही थी। काउण्ट ने कहा, "देखो ! अपनी पूरी हिम्मत से काम लो और आंख बन्द करके इस तरह पड़ रहो मानो गहरी नींद में हो। जरा सा आवाज मत

करना, बिल्कुल हिलना जुलना नहीं, तुम्हे अभी सब मालूम हुआ जाता है, मैं जाता हूं॥

वेलेरिटन ने डर कर काउएट का हाथ पकड़ लिया। काउएट के चेहरे पर उदासी मिली हुई एक मुस्कुराहट दौड़ गई और उसने भरोसा देते हुए कहा, "तुम जरा मत डरो, मैं तुम्हारे पास ही उस दर्वाजे की आड में रहूंगा। बस तुम हिलना जुलना नही और आंख बन्द किये पड़ी रहना। लोगों को यह नहीं मालूम हो कि तुम जागी हो नही तो शायद मेरे मदद कर सकने के पहिले ही तुम मार डाली जाओ॥"

काउएट पञ्जों के बल से चलता हुआ उस दरवाजे के पास गया जिसमें से वह निकला था। वहां से घूम कर उसने एक दफे फिर कहा, "होशियार!" और तब दरवाजा खोल कोठड़ी के भीतर चला गया। दरवाजा बन्द हो गया॥

दूसरा बयान।

काली नागिन।

वेलेण्टिन अकेली रह गई। इस समय उसका कलेजा बड़े जोर जोर से धड़क रहा था और वह चुपचाप पलङ्ग पर पड़ी हुई तरह २ की डरावनी बातें सोच रही थी। उस बेचारी सीधी लड़की की समझ ही में नहीं आता था कि खास अपने मकान में उसकी जान का ग्राहक कौन उठ खड़ा हुआ था, या उसकी मौत से किसे फायदा पहुंच सकता था। वह बड़े ध्यान से चारों तरफ की आहट लेती हुई रह रह के कांप उठती थी। उसकी निगाह बार बार घड़ी की तरफ उठती थी जिसकी चाल उसे बड़ी ही सुस्त मालूम हो रही थी॥

धीरे धीरे मिनट मिनट करके आधा घण्टा बीत गया और वेलेण्टिन कुछ बेचैन सी हो उठी पर उसी समय दर्वाजे के पीछे खड़े काउण्ट के चुटकी बजाने की आवाज से उसे मालूम हुआ कि वह उसे होशियार होने का इशारा कर रहा है। वह पुनः लेट गई, अपने ओढ़ने के कपड़े को खींच कर गर्दन तक कर लिया, तथा इस तरह की गहरी सांसें लेने लगी मानों घोर नींद मे पड़ी हो। इसी समय उसके सिरहाने वाले दर्वाजे के ताले मे ताली घूमने की आवाज सुनाई पड़ी और तुरंत ही दर-वाजा खुलने और किसी के दबे पांव अन्दर आने की आहट मिली। अपने को बड़ी मुश्किल से सम्हाले हुए

वेलेंटिन ज्यों की त्यों पड़ी रही॥

किसी नाजुक आवाज ने पुकारा 'वेलेंटिन!' थोड़ी देर बाद पुनः पुकारा 'वेलेंटिन!' पर वेलेंटिन ने कोई जवाब न दिया। पुकारने वाले को विश्वास होगया कि वेलेंटिन सोई हुई है अस्तु वह सिरहाने के टेबुल की तरफ बढ़ा। वेलेंटिन को जो अपना कान हर एक आवाज पर लगाये हुई थी, उस गिलास में जिसमें से अभी उसने काउएट की दी हुई दवा पी थी किसी अर्क की बूंदें टपकाये जाने की आवाज मिली। उसने आंखें जरा जरा खोली और देखा कि एक औरत का कोमल और सुफेद हाथ उसके पीने के गिलास में कोई अर्क टपका रहा है॥

मालूम होता है कि वेलेंटिन कुछ हिल गई या उसने किसी और तरह की हरकत की क्योंकि यह अर्क टपकाने वाला हाथ यकायक पीछे हट गया और तब वेलेंटिन के बगल में पहुंच वह और भी गौर से देखने लगी कि वह सोई है या जाग रही है। उसी समय वेलेंटिन ने अधखुली आंखों से उस जहर टपकाने वाली काली नागिन को देखा और पहिचाना, वह उस की सौतेली मां थी॥

मैडम विलफोर्ट को पहिचानते ही बहुत रोकने पर भी वेलेंटिन को कंपकपी आ गई जिससे उसका बदन और ओढ़ना हिल उठा। मैडम यह देखते ही चिहुंक कर पीछे हटती हुई एक दम दीवार के कोने में

जा खड़ी हुई, जहां से वह बक्से और से वेलेण्टिन की तरफ देखने लगी। वेलेण्टिन ने बड़ी कोशिश से अपनी आंखें बन्द कीं और फिर उसी तरह की गहरी सांसें लेना शुरू किया। कुछ देर राह देखने बाद मैडम विलफोर्ट को विश्वास होगया कि उनका शक व्यर्थ था और वेलेण्टिन गहरी नींद में सो रही है। उन्होंने आगे बढ़ कर हाथ की शीशी का बाकी अर्क भी ग्लास में उलट दिया और तब इतनी आहिस्तगी से उस कमरे के बाहर निकल कर दरवाज़ा बन्द कर लिया कि वेलेण्टिन को कुछ भी मालूम न हुआ कि वह कब चली गई॥

कोठड़ी का दर्वाजा खुला और काउण्ट उस कमरे में आया जिसकी आहट पा वेलेण्टिन उठकर बैठ गई। काउण्ट ने पास आ कर पूछा, "देखा? पहिचाना?" वेलेण्टिन ने एक लम्बी सांस के साथ कहा, "हां॥"

काउण्ट०। मेरे कहने का विश्वास हुआ?

वेले०। हां, पर अब भी मुझे निश्चय नहीं होता कि इस तरह पर मेरी जान लेने पर तुली हुई मेरी मा ही हैं हाय! इससे तो मेरा मरना ही अच्छा!!

काउ०। तब क्या तुम्हें मरना और मैक्सिमिलियन को भी मार डालना ही मञ्जूर है?

वेले०। मैक्सिमिलियन! हे परमेश्वर!! नहीं नहीं, मैं उसकी तकलीफ सोच भी नहीं सकती, क्या मैं किसी तरह बच नहीं सकती? यहां से भाग भी नहीं सकती?

काउण्ट०। वेलेण्टिन! जिस हाथ ने आज तुम्हारे

गिलास में जहर उलटा है वह हर जगह तुम्हारा पीछा करेगा। तुम्हारे नैाकरों को घूस दी जायगी, मैात कदम कदम पर तुम्हारा पीछा करेगी, चश्मे के पानी में तुम्हें जहर घुला हुआ मिलेगा, पेड़ के फल में जहर मिला हुआ रहेगा, तुम किसी तरह बच न सकोगी॥

वेले०। पर आप अभी कह चुके हैं कि बाबा की दवा खाने से अब जहर का असर मुझ पर न होगा॥

काउण्ट०। ठीक है पर वह सिर्फ थोड़ी खुराक के लिये है, मुमकिन है कि जहर की मिकदार बढ़ा दी जाय या कोई और जहर दिया जाय जिससे तुम बच न सको (गिलास उठा कर और उसकी एक बूंद ज़ुबान पर रख कर) लो ऐसाही हुआ है, अबकी तुम्हें ब्रूसीन नही दिया गया है बल्कि एक दूसरा ज़हर दिया गया है जिसकी महक मैं पहिचान सकता हूं। वेलेण्टिन! अगर तुमने इस गिलास मे का आधा भी पीया होता तो अब तक तुम मर गई होतीं!!

वेले०। (कांप कर) मगर मेरी जान लेने पर लोग इतने तुले हुए आखिर क्यों हैं?

काउण्ट०। क्या तुम इतनी सीधी हो कि इसका कारण नहीं समझ सकती?

वेले०। मैंने उनका कभी कुछ बिगाड़ा नही॥

काउण्ट०। पर तुम अमीर तो हो? तुम्हे दो लाख रुपै साल की आमदनी है, और तुम्हारे ही सबब से उस के बेटे को यह जायदाद नही मिल रही है॥

वेले०। सो क्यों ? यह उसकी तो नही है, यह मेरे नाना की जायदाद है और उनके मरने पर मुझे मिली है ॥

काउएट०। ठीक है, इसी सबब से तो तुम्हारे नाना और नानी मरे, इसी लिये तो जिस दिन मि० नैाटीर ने अपनी दैालत तुम्हारे नाम लिखी उसके दूसरे ही दिन उन पर वार हुआ, और इसी लिये तो अब तुम्हे जहर दिया जा रहा है, क्योंकि तुम्हारे मर जाने पर तुम्हारा भाई उसका बेटा तुम्हारी जायदाद पावेगा ॥

वेले०। मेरा भाई ! एडवर्ड ! क्या उस छोटे बच्चे के लिये यह सब पाप किया जा रहा है ?

काउएट०। हां, अब तुम समझीं ॥

वेले०। और एक औरत इतने खून कर रही है !

काउ०। क्या तुम्हें याद नही है कि जब तुम लोग पेरूसा के होटल में टिके थे तब तुम्हारी मां ने एक विचित्र आदमी से बहुत देर तक "एकुआ टोफाना" (एक कातिल जहर) के बारे में बातें की थीं। उसी समय से उसका दिमाग यह भयानक बांधनू बाधने लगा था॥

वेले०। (कांप कर) तब मुझे मरना ही होगा !!

काउ०। नही वेलेण्टिन, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा तुम अब नहीं मरोगी, पर अपनी जान बचाने के लिये तुम्हें मुझ पर पूरी तरह पर भरोसा करना पड़ेगा ॥

वेले०। मै सब तरह पर तैयार हूं, कहिये क्या करने को कहते हैं ॥

वेलेण्टिन के हाथ पर रख निगल जाने को कहा—वेलेण्टिन ने आंख बन्द कर के उस गोली को निगल लिया। काउण्ट बोला, "बेटी! अब तुम्हारी जान बच गई, मैं भी जाता हूं और थोड़ी देर आराम करता हूं क्योंकि अब तुम्हें कोई खटका नहीं है॥"

वेले०। जाइये, मैं वादा करती हूं कि डर को अपने पास आने न दूंगी॥

नौरट क्रीटो कुछ देर तक चुपचाप खड़ा इस कमसिन लड़की को देखता रहा जिसकी आंखें धीरे धीरे बन्द होने लगीं, यहां तक कि कुछ ही देर में उस अद्भुत गोली के असर से वह बिलकुल बेहोश होगई, तब काउण्ट ने उस गिलास का आधा अर्क फेंक दिया जिसमें देखने वाला यह समझे कि वेलेण्टिन आधा पी गई है, गिलास टेबुल पर रक्खा, वेलेण्टिन की तरफ एक निगाह डाली और तब चुपचाप वहां से उसी चोरदरवाजे की राह गायब होगया॥

तीसरा बयान।

वेलेण्टिन।

कई घंटे बीत गये और सुबह होने में थोड़ी ही देर रह गई। उस समय मैडम विलफोर्ट की कोठडी का दरवाजा फिर खुला और मैडम ने झांक कर वेलेण्टिन के पलङ्ग की तरफ देखा। गिलास को आधे से ज्यादा खाली था और वेलेण्टिन की तरफ से कोई आहट न देख वह दबे पांव कमरे के अन्दर चली आई, वह ग्लास टेबुल पर से उठा लिया और अंगीठी के पास जा बचा हुआ अर्क उसमें गिरा राख चला दी जिसमें उसे अच्छी तरह सोख ले। इसके बाद गिलास को धो और रूमाल से पोछ कर उसी ठिकाने रख दिया॥

अगर कोई इस समय उस कमरे में होता तो देखता कि किस हिचकिचाहट के साथ मैडम विलफोर्ट वेलेण्टिन के पलङ्ग की तरफ बढ़ी, धीरे२ पास जाकर मसहरी का पर्दा जो गिरा हुआ था उन्होने उठाया और वेलेण्टिन की तरफ देखा। वेलेण्टिन के बदन में किसी तरह की हरकत न थी, न तो सांस ही आती जाती थी न नथुने ही कांपते थे; अधखुली आंखों में कुछ अजीब मैलापन सा आ गया था, ओठ काले पड रहे थे; मैडम ने अपना हाथ वेलेण्टिन की छाती पर रक्खा जो बर्फ की तरह ठंढी थी, कलेजे की धड़कन बिल्कुल बन्द होगई थी। एक हाथ पलङ्ग के नीचे लटका हुआ था उसे उठा कर

नब्ज देखना चाहा पर वह कड़ा हो गया था और मुश्किल से हिला। नाखून काले हो रहे थे, अंगुलियां अलग अलग हो गई थीं। मैडम का मतलब पूरा हो गया था, उनका आखिरी भयानक काम समाप्त हो चुका था—वेलेरिटन मर गई थी॥

अब यहां कुछ करना नहीं था अस्तु मैडम विलफोर्ट ने मसहरी गिरा दी और दबे पांव लौट पड़ीं, दर्वाजे के पास खड़ी होकर कुछ सायत तक पलङ्ग की तरफ देखती रहीं तब दरवाजा बन्द कर लिया और अपने कमरे में चली गईं। इसी समय घड़ी में पांच घंटा॥

धीरे २ कुछ समय और बीता और बन्द खिड़कियों की झरियों की राह वेलेरिटन के कमरे में दिन की रोशनी पहुंचने लगी। दाई के आने का वक्त हो गया और सीढ़ियों पर उसके पैर की आहट आई। दर्वाजा खोल कर धाय कमरे के अन्दर पहुंची। लम्प बुझ चुका था और बन्द खिड़कियों के कारण वहां अच्छी तरह चांदना नहीं फैला था। दाई ने टेबुल के गिलास को देखा तो आधा भरा हुआ पाया, वेलेरिटन की तरफ़ एक निगाह देख उसे सोया हुआ समझा और जगाना उचित न समझ उसी तरह छोड़ वह एक आराम कुर्सी पर जा लेटी। अभी तक उसकी आंखों में नींद की खुमारी मौजूद थी, कुर्सी का आराम पा उसकी पलकें झपने लगी और वह कुछ ही सायत में खुर्राटे लेने लगी॥

लगभग एक घण्टे के बाद धाय की नींद टूटी और वह चौंक कर उठ बैठी, अपनी गफलत पर आप ही रञ्ज हो उसने फुर्ती से कमरे की खिड़कियें खोली और तब वेलेण्टिन के पलङ्ग की तरफ देखा पर रोशनी में वेलेण्टिन की हालत देखते ही उसका कलेजा धड़क उठा क्योंकि बहुत सी मौतें देखी हुई उसकी आंखों ने तुरत बता दिया कि वेलेण्टिन नींद में नहीं है। हाथ जो पलङ्ग के नीचे लटका हुआ था उठाने की कोशिश करते ही उसका रहा सहा शक भी जाता रहा और वह एकदम जोर से चिल्लाकर कमरे के बाहर की तरफ भागी। डाक्टर एवरानी के आने का वक्त हो गया था और वे सीढ़ियां चढ़ रहे थे, धाय को इस तरह चिल्लाते सुनते ही वे घबड़ा कर बोल उठे,—"क्या हुआ? क्या हुआ?" विलफोर्ट का कमरा पासही में पड़ता था वह भी दौड़ा दौड़ा आकर पूछने लगा, "क्या हुआ कौन चिल्लाया? डाक्टर? क्या हुआ?" डाक्टर ने कहा, "वेलेण्टिन के कमरे से आवाज आई है।" दोनों घबड़ाये हुए सीढ़ियां चढ़ वेलेण्टिन के कमरे में पहुंचे। मगर इन दोनों के पहिले ही कई नौकर और मजदूरनी उस कमरे में आ चुके थे और डरी हुई आंखों से पलङ्ग को देख रहे थे। डाक्टर यह कहता हुआ वेलेण्टिन की तरफ लपका "हाय हाय! क्या यह बेचारी भी?" वेलेण्टिन का हाथ छूते ही उसने छोड़ दिया और माथा पकड़ कर कहा, "परमेश्वर! तेरा पेट कब भरेगा!!!" विलफोर्ट ने

बेचैनी के साथ पूछा—"डाक्टर! क्या कह रहे हो!" डाक्टर भयानक स्वर में बोला, "मैं कहता हूं कि वेलेंटिन मुर्दा है।" विलफोर्ट ने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया और चक्कर खा उसी पलङ्ग पर गिर गया॥

डाक्टर की बात सुन और विलफोर्ट की हालत देखते ही वे नौकर सब जो वहां इकट्ठे होगये थे डर से चिल्लाते हुए वहां से भागे। फिर उन लोगों ने जरा भी दम न लिया और एकदम मकान के बाहर ही चले गये क्योंकि उन्हे यकीन होगया कि इस घर में मौत ने पैर रख लिया है और जो जो इसमें रहेगा वही अपनी जान से हाथ धोएगा। देखते देखते वह मकान नौकरों से बिल्कुल खाली होगया॥

इसी समय मैडम विलफोर्ट उस कमरे के बाहरी दरवाजे पर यह कहती हुई मौजूद हुई, "क्या हुआ क्या ...." पर उसी समय उनके मुंह से एक चीख सी निकल गई क्योंकि उसने देखा कि वह गिलास जिसका बाकी बचा हुआ अर्क फेंक के उसने खाली और साफ कर दिया था अब पुनः आधा भरा हुआ है और डाक्टर एवरानी बड़े गौर से उसे देख रहा है। इस समय अगर मरी हुई वेलेंटिन उसके सामने जीती जागती आकर खड़ी हो जाती तो उसे देख मैडम विलफोर्ट को उतना ताज्जुब और डर न होता जितना उस खाली गिलास से पुनः वह जहर भरा हुआ देख उसे हुआ, वह एक दम पत्थर की मूरत की तरह दरवाजे पर खड़ी उस

गिलास को देखने लगी ॥

. मिलफोर्ड कपड़ों में मुंह छिपाये पड़ा था अस्तु उसने तो यह हाल न देखा पर होशियार और जमाना देखे हुए डाक्टर एवरानी की निगाहों से मैडम का भाव छिपा न रहा, वह समझ गया कि उसके हाथ वाले गिलास में कोई ऐसी चीज़ ज़रूर है जिसने मैडम की यह हालत की है, उसने उस अर्क में से थोड़ा सा ज़ुबान पर रक्खा और साथ ही चौंक पड़ा, इसके बाद खिड़की के पास गया और बड़े गौर से उसका रङ्ग देखा, उसका शक बढ़ा और आश्चर्य्य के साथ उसके मुंह से निकल पड़ा, "ओहो! यह तो ब्रूसीन नहीं बल्कि उससे भी तेज़ एक दूसरा ज़हर है!!" दौड़ा दौड़ा एक आलमारी के पास गया जिसमें तरह तरह की दवाइयां रहती थीं, उसमें से शोरे के तेज़ाब की शीशी निकाल थोड़ा तेज़ाब उस ज़हर पर टपकाया, बूंदें गिरने के साथ ही उसका रङ्ग बदल कर एक दम खून की तरह सुर्ख हो गया जिसके देखते ही डाक्टर के मुंह से निकला "ओह!!" उसने उस ज़हर को पहिचान लिया था ॥

मैडम की बची हुई ताकत ने भी उसका साथ छोड़ दिया और वह एक दम लड़खड़ा कर ज़मीन पर गिर गई, डाक्टर जो अपनी छिपी निगाहें बराबर उन पर डाल रहा था लपक कर उनके पास पहुंचा और नब्ज़ देखने बाद दाई से बोला, "तुम मैडम के पास आओ देखो इन्हें गश आ गया है।" धाय बोली "पर

मिस वेलेण्टिन ...” डाक्टर कुछ उत्तेजना के साथ बोला, “मिस वेलेण्टिन को अब मदद की जरूरत नहीं, वह मर चुकी है॥”

डाक्टर की “वह मर चुकी है” यह बात लोहे के से कड़े दिल वाले विलफोर्ट के भी कलेजे को छेद गई और वह अपने बाल नोचता हुआ बोला, “मर गई! मर गई!!”

इतने ही में बाहर से किसी तीसरे स्वर ने कहा—“मर गई! कौन कहता है कि वेलेण्टिन मर गई!!” डाक्टर और विलफोर्ट ने ताज्जुब से घूम कर देखा और मैक्समिलियन को दरवाजे पर पागलों की तरह खड़े पाया॥

रोज की तरह आज भी मारल वेलेण्टिन का हाल पूछने नोटीर के पास आया था पर मामूल के खिलाफ सदर दरवाजा खुला और मकान में सन्नाटा पा उसका माथा ठनका, जब कई आवाज देने पर भी कोई नौकर नजर न आया तो उसका सन्देह और बढ़ा और वह नोटीर के कमरे में पहुंचा, वह लाचार बूढ़ा अपनी कुर्सी पर रोज की तरह हो बैठा हुआ था पर उसके चेहरे से परेशानी और आंखों से घबराहट जाहिर हो रही थी, मारल का शक और भी बढ़ा और उसने बेचैनी के साथ पूछा, “क्या है! क्या कोई नई बात हुई है? घर में आज कोई नौकर क्यों नहीं दिखाई पड़ता!”

बूढ़ा कोई जवाब न दे सका। मारल ने फिर पूछा

वेलेण्टिन कैसी है ? इसका भी कोई जवाब न मिला पर बूढे की आंखें दर्वाजे की तरफ घूमीं, मारल ने फिर पूछा, "वेलेण्टिन ! क्या उसकी तबीयत खराब है ? मैं जाकर दरियाफ्त करूं ?" आंखों ने कहा, "हां" मारल ने सीढ़ियों की तरफ इशारा किया बूढे ने कहा, "हां, हां" घबड़ाया हुआ मारल तेजी से सीढ़ियां चढ़ ऊपर वेलेण्टिन के कमरे के दर्वाजे पर ठीक उसी समय पहुंचा जब मैडम बेहोश होकर गिर गई थी और डाक्टर ने धाय की बात के जवाब में कहा था, "वेलेण्टिन मर गई है।" उसने विलफोर्ट को "मर गई ! मर गई !!" कहते सुना और वह खुद भी पागलों की तरह चिल्ला उठा, "मर गई ? कौन कहता है वेलेण्टिन मर गई ?"



चौथा बयान।

मैक्समिलियन।

विलफोर्ट ने ताज्जुब के साथ उधर निगाह की जिधर से यह दर्दनाक आवाज आई थी। एक अजनबी के सामने अपनी कमजोरी दिखाने में उसे शर्म मालूम हुई और वह अपने को सम्हाल कर मारल से बोला, "महाशय! आप कौन हैं? आपको शायद मालूम नहीं कि इस घर में एक मौत हो गई है। आपका यहां आना मुनासिब नहीं, आप चले जाइये॥"

मगर मैक्समिलियन अपनी जगह से न हिला, वह एकटक उस पलङ्ग और मुर्दा वेलेण्टिन के पीले चेहरे को देख रहा था। विलफोर्ट फिर बोला, "जाइये चले जाइये।" डाक्टर ने भी उसे चले जाने का इशारा किया उसने पागलों की तरह कमरे के चारों तरफ और इन दोनों आदमियों को देखा, कुछ कहने के लिये मुंह खोला पर आवाज न निकली इसके बाद यकायक इस तरह दौड़ता हुआ वहां से नीचे भागा मानो उसकी अकल ने उसका साथ एक दम छोड़ दिया हो॥

मगर कुछ ही सायत के बाद उन लोगों ने मारल को पुनः लौटते पाया, वह इस समय अमानुषिक बल खर्च कर बूढ़े नोटीर को उसकी कुर्सी समेत उठाये हुए लिये आ रहा था। कमरे के अन्दर उसने उस कुर्सी को कर पटक दिया और तब ढकेल कर वेलेण्टिन के

पलङ्ग के पास ले गया। इस समय उसकी हालत ठीक पागलों की सी हो रही थी, पर उससे भी दर्दनाक हालत उस बेचारे बूढ़े की थी जो बोल नहीं सकता था और अपने सामने अपनी सब से प्यारी चीज को मुर्दा देख रहा था। मारल ने वेलेण्टिन की तरफ हाथ बढ़ा कर रोते हुए कहा, "बाबा! देखो इन लोगों ने क्या किया!!"

इस समय उस बूढ़े की तमाम इन्द्रियां उसकी आखों में आगई थी जो खून की तरह सुर्ख हो रही थी, उसकी माथे की नसें फूल आई थी तथा गाल और माथा नीला हो रहा था, उसकी हालत देख यही मालूम होता था कि यह अभी चीख उठेगा! पर हाय उस बेचारे की जुबान बन्द थी! वह अपने दुःख को प्रगट भी नहीं कर सकता था॥

मारल ने बूढ़े का हाथ पकड़ लिया और भर्राये हुए गले से कहा—"ये लोग पूछते हैं तू कौन है? यहा क्यों आया? बाबा! इन्हे बताओ कि मैं कौन हूं! इन्हें बताओ कि वेलेण्टिन मेरी स्त्री होने वाली थी! इन्हें बताओ कि यह लाश मेरी है!!" मारल एक दम वेलेण्टिन की लाश के ऊपर पछाड़ खाकर जा गिरा॥

डाक्टर एवरानी ने मारल और नैाटीर के दुःख को न देख सकने के कारण मुंह फेर लिया। विलफोर्ट का भी कलेजा हिल गया, जिन लोगों का गम हम मना रहे हैं उनका अगर कोई प्रेमी दिखाई देता है तो उससे हाढ़स

होती है, विलफोर्ट भी वास्तव में बेचारी वेलेण्टिन को दिल से प्यार करता था । मारल का दुःख देख उसका कडा कलेजा भी पिघल गया और उसने उसका हाथ अपने हाथों में दबाया । पर मारल का ध्यान केवल वेलेण्टिन पर था, वह इस समय न रोता था न बिलखता था न आंसू बहाता था, एक टक वेलेण्टिन के सुफेद चेहरे को देख रहा था जो मौत की हालत में जीते से भी ज्यादा सुन्दर जॅच रही थी ॥

आखिर विलफोर्ट ने उससे कहा, "आप कहते हैं कि वेलेण्टिन को प्यार करते थे, मुझे इस प्रेम का हाल नहीं मालूम फिर भी मैं आपको क्षमा करता हूं क्योंकि मैं देखता हूं कि आपका प्रेम सच्चा है, और इस समय मेरा भी दिल गम से भरा हुआ है । पर आप देख रहे हैं कि जिसके पाने की आपको आशा थी वह अब इस दुनियां में नहीं रही, अब सुख दुःख प्रेम प्यार से वह अलग हो गई है अस्तु आप भी अब आखिरी बिदा लीजिये और हमेशा के लिये उससे अलग होइये । अब उसे अपनी आत्मा की शान्ति के लिये सिर्फ एक पादड़ी की जरूरत रह गई है ॥

मारल० । (जिसके कलेजे पर विलफोर्ट की बात ने छुरी का काम किया था) नहीं महाशय, आप भूलते हैं, वेलेण्टिन को सिर्फ पादड़ी ही की नहीं बल्कि एक बदला लेने वाले की भी जरूरत है !!

विल० ।(मारल की इस बात से डर कर) यह आपने

क्या कहा ?

मारल०। आप इस बेचारी के पिता हैं और इस शहर के मजिस्ट्रेट भी हैं, पिता अब बहुत रो चुका, अब मजिस्ट्रेट अपना काम करे॥

नोटीर की आंखें यह सुन चमक उठी, डाक्टर घबरानी उसकी तरफ घूम पड़ा, मारल ने फिर कहा—"क्योकि वेलेण्टिन अपनी मौत मे नही मरी बल्कि उसकी जान जबर्दस्ती ली गई है॥"

विलफोर्ट का सिर नीचे झुक गया, डाक्टर और पास आ गया, नोटीर की आखों ने कहा, "हा॥"

मारल०। मोक्योरर महाशय! मैं आपके सामने यह दावा करता हू कि वेलेण्टिन का जहर दिया गया है, आप इस खून की जांच करे॥

मारल की कड़ी निगाह न बर्दाश्त कर विलफोर्ट ने अपने पिता नोटीर और तब डाक्टर की तरफ देखा पर उसे तुरत ही मालूम होगया कि इन दोनों से सहानुभूति की आशा व्यर्थ है, बूढे नोटीर ने आखें बन्द करके कहा, "हा" डाक्टर ने कहा, "बेशक" पर फिर भी विलफोर्ट यह कहने से बाज न आया, "महाशय! आप को धोखा हुआ है, मेरे घर मे कोई जुर्म नही हुआ है, मेरी बदकिस्मती से मुझ पर ईश्वर का कोप हुआ है, पर मेरे घर में कोई खून नहीं हुआ है॥"

गुस्से से नोटीर की आखे चमक उठी, डाक्टर ने कुछ कहने को मुह खोला, पर मारल ने हाथ के इशारे

से रोक कर कहा, "आप गलत कहते हैं, मैं जोर देकर कहता हूं कि आपके घर में यह चौथा खून हुआ है !! मुझे अच्छी तरह मालूम है कि वेलेण्टिन को आज चार दिन हुए जहर दिया गया था पर मिस्टर नैाटीर की बुद्धिमानी से उसकी जान बच गई थी, आज जरूर या तो जहर की मिकदार बढ़ा दी गई है, या कोई उससे भी कारी जहर काम में लाया गया है जो अपना काम कर गुजरा है। इस बात के सबूत में मैं डाक्टर साहब को पेश करता हूं जो दोस्त और डाक्टर की हैसियत से आपको इसकी खबर कर चुके हैं॥

विलफोर्ट०। (घबराहट के साथ) आप पागल हो गये हैं॥

मारल०। मैं पागल होगया हूं !! (डाक्टर की तरफ घूमकर) अच्छा डाक्टर साहब ! क्या आपको उस दिन की बात याद है जब मैडम मीरां की मौत हुई थी और आप इन्हें लेकर बागीचे में चले गये थे जहां अकेला समझ आपने मैडम की मौत के बारे में कुछ कहा था ? (डाक्टर ने विलफोर्ट से निगाह मिलाई) बेशक आप को याद है ! उसके बाद नैाटीर के धोखे में बोरिस मारा गया और अब वेलेण्टिन की पारी आई ! हाय ! अगर मैं उसी समय यह खबर फैला देता तो आज क्यों प्यारी वेलेण्टिन की लाश देखनी पड़ती !! मगर नहीं ! वेलेण्टिन ! तू घबरा नहीं ! मैं तेरी मौत का बदला ले कर तब तेरे पास आऊंगा !! अगर तेरा बाप तुझे छोड़ता

है तो क्या हुआ, मैं तो हूं ! वेलेण्टिन ! तेरी लाश छू कर मैं कसम खाता हूं कि तेरे खूनी का बदला लूंगा !!"

इतना कहते कहते मारल की हालत बिलकुल ही खराब हो गई, उसका गला बन्द हो गया और कुछ अस्पष्ट बातें कहते हुए वह वेलेण्टिन की लाश पर गिर गरम गरम आंसू से उसे तर करने लगा। कुछ देर तक सिवाय उसके रोने के और कोई आवाज वहां न रही, ऐसा मालूम होता था कि मानो वह भी अपनी जान वहीं दे देगा। तब डाक्टर शवरानी ने आगे बढ़कर कहा, "मैं भी मि० मारल के बात की पुष्टि करता हूं ! मैं भी चाहता हूं कि वेलेण्टिन के खून का बदला लिया जाय।" विलफोर्ट यह सुन कातर स्वर में बोला—"हे भगवान !!"

मारल ने पुनः कुछ कहने के लिये सिर उठाया इसी समय उसकी निगाह नौटीर पर पड़ी और वह बोल उठा, "ठहरिये, मि० नौटीर शायद कुछ कहा चाहते हैं।" सब कोई चौंक कर बूढे नौटीर की तरफ देखने लगे जिनकी सब इन्द्रियें अब बेचारी आंखें ही थीं जो इस समय भयानक हो रही थीं, मारल की बात सुन उसने एक आंख बन्द की, मारल ने पूछा, "क्या आप खूनी को जानते हैं ?" नौटीर ने इशारा किया, "हां" मारल चौंक कर बोला, "आप जानते हैं डाक्टर साहब, मि० विलफोर्ट, इधर देखिये, बाबा खूनी को जानते हैं और हमें उसका पता बतावेंगे !!"

नौटीर की आंखों से उदासी की झलक निकली और तब उसने दर्वाजे की तरफ देखा। मारल ने ताज्जुब से कहा, "क्या मैं बाहर चला जाऊ?"

नौटीर०। हां॥

मारल०। अफसोस! क्या मैं उसका पता नही जान सकूंगा, दया कीजिये! मुझपर रहम कीजिये!!

बूढे की आंखें दरवाजे ही पर रुकी रही, लाचार मारल ने कहा, "खैर कम से कम मैं लौट तो सकूंगा?"

नौटीर०। हां॥

मारल०। मैं अकेला जाऊं?

नौटीर०। नही॥

मारल०। तो और कौन जाय? मि० विलफोर्ट?

नौटीर०। नही॥

मारल०। डाक्टर एवरानी?

नौटीर०। हां॥

मारल०। आप अकेले मि० विलफोर्ट से कुछ कहा चाहते है?

नौटीर०। हां॥

मारल०। मगर वे आपकी बातें समझ सकेंगे?

विल०। हां, हा, मैं अपने पिता को अच्छी तरह समझ सकता हू(वे वारे को यह जान कुछ खुशी हुई कि मि० नौटीर जो कुछ भी भण्डा फोर किया चाहते हैं यह कम से कम एकान्त में करेंगे)

और कमरे के बाहर चला गया। मकान में एक दम सन्नाटा था। पन्द्रह मिनट के बाद कोठडी के दरवाजे पर विलफोर्ट की सूरत दिखाई पड़ी जिसका चेहरा पीला हो रहा था और माथे पर पसीने की बडी बडी बूंदें आई हुई थीं, उसने भर्राये हुए गले से कहा, "आप लोग अन्दर आइये।" दोनों पुनः उस कमरे में लौटे, विलफोर्ट ने अपना हाथ प्रार्थना की तरह पर उनकी तरफ बढ़ा कर कहा, "आप लोग वादा करिये कि यह भयानक भेद हमेशा के लिये अपने दिल के अन्दर रक्खेंगे।" दोनों यह सुनते ही सिर हिला कर पीछे हट गये। विलफोर्ट फिर बोला, "मैं हाथ जोड़ कर आरजू करता हूं, मेरी "

मार०। मगर वह खूनी, वह हत्यारा, वह पापी

विलफोर्ट०। आप मत डरें, मेरे पिता ने उसका नाम मुझे बता दिया है और वह अपनी सजा को जरूर पहुंचेगा। मेरे पिता भी बदले के उतने ही भूखे हैं जितने आप लोग पर वे भी आप से इस भेद को गुप्त रखने की ही प्रार्थना करते हैं? क्यों पिता जी!!"

नौटीर ने दृढता के साथ कहा, "हां" विलफोर्ट ने मारल का हाथ पकड लिया और गिडगिडा कर कहा, "मिस्टर मारल! मेरे पिता इस भेद को छिपाना चाहते हैं सो भी सिर्फ इसी लिये कि वे जानते हैं कि इस खून का बदला लिया जायगा, पूरी तरह से लिया जायगा। वे मुझे जानते हैं और मुझसे इसकी प्रतिज्ञा करा चुके

हैं।(नौटीर ने "हां" कहा) आप लोग विश्वास रक्खे कि तीन दिन के अन्दर, उस समय के बहुत पहिले जितने मे कि न्याय और अदालत काम करेगी, मैं अपनी प्यारी बेटी की मौत का ऐसा बदला ले लूंगा जिसे सुन बहादुर भी कांप उठेगा। (यह कहते हुए उसने गुस्से मे अपना दांत पीसा और नौटीर का बेजान हाथ पकड़ कर दबाया)

मारल ने नौटीर की तरफ देख कर पूछा—"क्या यह बात पूरी होगी ?" नौटीर ने कहा "हां" विलफोर्ट ने तब डाक्टर और मारल का हाथ पकड़ कर कहा, "तब आप लोग कसम खाइये कि मेरे खान्दान की इज्जत रक्खेंगे और मुझे इस खून का बदला लेने के लिये छोड़ देंगे॥"

डाक्टर ने सिर घुमा बड़ी ही धीमी आवाज मे 'हां' कहा पर मारल अपना हाथ छुड़ा वेलेंटिन की लाश पर जा गिरा, उन ठंढे और काले होंठो पर उसने अपना होंठ दबाया और तब चीख मारता और पागलों की तरह दौड़ता हुआ बाहर निकल गया॥

हम कह चुके हैं कि इस घर के सब नौकर भाग गये थे अस्तु विलफोर्ट को डाक्टर ही के सपुर्द वह सब काम भी करने पड़े जो मौत और खास कर ऐसी शक बढ़ाने वाली मौत के होने पर करना जरूरी था। नौटीर को उसी जगह चुपचाप आंसू बहाते हुए छोड़ विलफोर्ट अपने आफिस में चला गया क्योंकि उसका मन भी

वहुत ही खराब हो रहा था श्रौर सिर्फ काम करनें से ही उसका दिल बदल सकता था। डाकृर एवरानी खुद जा कर उस डाकृर को वुला लाये जो सरकार की तरफ से हर एक मुर्दे की जाच करके दफन का हुक्म देता था, इस डाकृर ने जांच कर वेलेण्टिन को मुर्दा पाया श्रौर दफन का हुक्मनामा लिख दिया। उसे इस बात का शक नही हुश्रा कि यह लडकी जहर दे कर मारी गई है। श्रस्तु इस भारी काम के निपट जाने पर डाकृर श्रौर विलफोर्ट को शान्ति मिली श्रौर सिर्फ यही काम रह गया कि किसी पादडी को वुला कर मुर्दे की श्रात्मा की शान्ति की प्रार्थना कराई जाय। विलफोर्ट के कहने से डाकृर ही पादडी की तलाश में भी निकला। भाग्य-वश मकान के बाहर निकलते ही एक पादडी नजर श्रा गया जो बगल वाले मकान के दरवाजे पर खडा था। डाकृर ने उसे देख कहा, "पादडी साहब! शायद श्राप को मालूम हुश्रा होगा कि इस मकान के श्रन्दर एक मौत हो गई है।" पादडी ने जवाब दिया, "हां, मैं सुन चुका हूं श्रौर मैंने परमेश्वर से प्रार्थना भी की है कि मरने वाले का मोक्ष करे।" डाकृर ने यह सुन कहा— "तब श्राप ही कृपा कर श्राखिरी रस्में भी पूरी करें।" पादडी ने चलना मञ्जूर किया श्रौर डाकृर एवरानी उसे लिये हुए सीधा वेलेण्टिन के कमरे में श्रा गया। इस पादडी की पोशाक श्रौर स्वर कह रहा था कि यह इटालियन है॥

दङ्गली०। (टेढ़ी निगाह से देख कर कि काउण्ट क्या कोई दोमानी वात कह रहा है) हां अगर ऐसा है ते। मैं अमीर ते। जरूर हूं॥

काउ०। हई है ऐसा, आप खुद ही कह चुके हैं कि अगर तीन तीन राज्य चैापट हो जांय तब भी आपका पसंगा भर नुक्सान नहीं हो सकता अस्तु इतनी दैालत रहते हुए कोई आपको दुःखी कर सकता है?

दङ्ग०। (फूल कर) हां ठीक याद आया, अगर आप मुझे थोड़ी छुट्टी दें ते। मैं उन पांच मामूली चेकों पर दस्तखत कर लूं जिन्हें आपके आने के कुछ ही पहिले मैंने लिखा था॥

काउ०। हां हां बड़ी खुशी से॥

कुछ देर के लिये सन्नाटा होगया और सिर्फ दङ्गली के कलम की आवाज वहां सुनाई देती रही, जब वह लिख चुका ते। काउण्ट ने पूछा, "ये किस देश के चेक हैं?"

दङ्ग०। कहीं बाहर के नहीं पैरिस के खजाने पर ही हैं! अच्छा काउण्ट! आप अगर अमीरों के बादशाह कहे जा सकते हैं तो क्या इन छोटे पांच कागज के टुकड़ों को देख कर आप मुझे राजा नहीं कहेंगे? यह हर एक टुकड़ा दस लाख रुपे का है॥

इतना कह मुस्कुराते हुए दङ्गली ने [illegible] चेक काउण्ट के सामने रख [illegible]। काउण्ट [illegible] उठा कर पढ़ा॥

"गवर्नर साहब!

मेहरबानी करके अपने खजाने में जमा मेरे रुपयों में से दस लाख रुपया मेरे नाम लिख कर इस आदमी को दे दें॥"

द:—बैरन दङ्गली।

काउएट०। एक दो तीन चार पांच! पचास लाख रुपया!! इन कागजों की बदौलत कोई आदमी जा कर खजाने से पचास लाख रुपया पा सकता है!! ओफ ओह!! आपको तो कुबेर कहना चाहिये!!

दङ्ग०। देखा आपने, मेरी साख कैसी है?

काउएट०। मुझे विश्वास ही नही होता, क्या इन कागजों को देखने ही से गवर्नर पचास लाख रुपया दे देगा?

दङ्ग०। उसी दम!!

काउ०। ऐसी बातें खाली फ्रान्स में ही देखने में आ सकती हैं! पचास लाख रुपया! पांच टुकडे कागजो पर!!

दङ्ग०। क्या अब भी आपको शक है?

काउ०। (रुकते हुए) नहीं, नही॥

दग०। आपके स्वर से सन्देह टपकता है, अच्छा आप मेरे क्लर्क के साथ खजाने चले जाइये और खुद देख लीजिये॥

काउएट०। नही (चेकों को मोडते हुए) यह ऐसे ताज्जुब की बात है कि मैं खुद इसे करके देखा चाहता

दंग०। क्या आप सच कहते हैं !!

काउ०। (रुखाई के साथ) मैं महाजनों से हंसी नहीं करता॥

इतना कह यकायक काउण्ट उठ खड़ा हुआ और दंगली से हाथ मिला कमरे के बाहर निकल गया और ठीक उसी समय मि० बोविल ने दंगली के कमरे में पैर रक्खा। दंगली ने उसे देखते ही बड़े आव भगत के साथ हाथ मिलाते और मुस्कुराते हुए कहा, "आइये लहनेदार साहिब ! मैं समझता हूं आप अपना रुपया लेने ही आये हैं॥"

बोविल०। हां, आप को मेरी चीठी तो मिल गई होगी॥

दंग०। हां, और मैं अस्पताल की रकम देने को तैयार भी हूं पर आप से चौबीस घण्टों की मोहलत मांगता हूं क्योंकि काउण्ट मौण्ट क्रीटो ने—जिन्हें शायद आपने जाते देखा होगा—वे पचास लाख मुझ से ले लिये॥

बोविल०। सो क्यों ?

दंग०। रोम के मशहूर महाजन थामसन और फ्रेञ्च ने एक खाता काउण्ट की तरफ से मुझसे खोला है और कहा है कि वे जितना रुपया जब मांगे उन्हें बेखटके दिया जाय। सो वे अभी पचास लाख रुपया मुझ से मांगने आये और मैंने खजाने पर एक चेक पचास लाख का उन्हे दे दिया॥

बोविल०। (अविश्वास के साथ) पचास लाख रुपया !!

दंग०। हां, आपको विश्वास न हो तो यह रसीद देख लीजिये ॥

मिस्टर बोविल ने दङ्गली का दिया हुआ कागज पढा जिसमें लिखा हुआ था :—

"बैरन दङ्गली से एक्कावन लाख रुपया पाया जो थामसन एण्ड फ्रेञ्च की कोठी जब वे मांगे उन्हें वापस कर देगी—

द. फाउण्ट मौण्ट क्रीष्टो।"

बोविल ने ताज्जुब दिखाते हुए वह रसीद दङ्गली को लौटा दी, दंगली ने लापरवाही के साथ उस रसीद को एक दराज में फेंकते हुए कहा—"आप थामसन एण्ड फ्रेञ्च को जानते हैं ?

बोविल०। हां बहुत दिन हुए एक दफे मेरा उनका दो लाख रुपये का लेन देन हुआ था पर तब से फिर कुछ नहीं ॥

दंग०। वे लोग यूरोप के सब से बडे और मातबर महाजन माने जाते हैं ॥

बोविल०। यह काउण्ट बडा अमीर मालूम होता है ?

दंगली०। ओह इसका भी कुछ पूछना है, उसकी दौलत बेइन्तहा है ॥

बोविल०। तो मैं जरूर उनसे मिलूंगा, शायद वे अस्पतालों को कुछ खैरात करें ॥

दंगली०। जरूर मिलिये, वह बड़ा देने वाला है, महीने में बीस हजार से ऊपर फुटकर खैरात करता है॥

बोविल०। तो मैं उनसे मैडम मारकर्फ के दान का हाल कहूंगा॥

दंगली०। कैसा दान!!

बोविल०। उन्होंने अपनी सब जायदाद अस्पताल में दे दी है॥

दंगली०। सो क्यों?

बोविल०। क्योंकि वे ऐसी बुरी कमाई की रकम रक्खा नहीं चाहती॥

दंगली०। वाह यह खूब! कितना रुपया था?

बोविल० कुछ ज्यादा नहीं, यही कोई बारह तेरह लाख रुपया, खैर तो मेरे रुपयों की बाबत?

दंग०। हां, सो जैसा मैंने कहा कि वे पचास लाख तो काउंट ले गये। अब अगर मैं आज और रुपया खजाने में से मंगाऊंगा तो वहां शक होगा, अस्तु आप कल अपना रुपया मुझसे लें॥

बोविल०। मगर मुझे तो सख्त जरूरत है क्योंकि कल हमारे हिसाब की जांच होगी॥

दंगली०। कल कै बजे?

बोविल०। दो बजे॥

दंगली०। ओह तब तो बहुत समय है, आप बारह बजे किसी को भेज दीजिये रुपया तैयार रहेगा॥

बोविल०। मैं खुद ही आऊंगा॥

दग०। तो और भी अच्छा है, मुझे एक बार और दर्शन मिल जायंगे॥

बोविल०। तो कल तो जरूर मिल जायगा न?

दग०। वाह! क्या इसमें भी आपको कुछ शक है! कल ठीक बारह बजे आपका पचास लाख यहां मौजूद रहेगा॥

बोविन हाथ मिला कर दगली से बिदा हुआ, जो उन्हें दरवाजे तक पहुंचा गया,—मगर उसके जाते ही दगली ने अपने टेबुल के पास लौट और उस पर ज़ोर से हाथ पटक कर कहा—"बेवकूफ! लौटियो कल! उस समय तक मैं यहां से सैकड़ों कोस पर रहूंगा॥"

दंगली ने दराज में से नोट और नोटों की रसीद निकाल कर देखी और तब सावधानी से लपेट कर एक मनीबेग में रक्खी, इसके बाद उसने कमरे का दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया और अपने सब आलमारियों तथा दराजों को खोल खोल कर अशर्फियों, नोटों और कागजों का ढेर लगाने लगा, लगभग पचास हजार की नोट और अशर्फियां निकलीं जिन्हें उसने बेग में रक्खा, फिर उन कागजों में से कुछ को जला दिया और कुछ इधर उधर फेंक दिये और तब एक चीठी अपनी स्त्री के नाम लिखने लगा॥

चीठी लिखकर उसने उसे दोहराया और कहा—"आज रात में उसके टेबुल पर रख दूंगा।" इसके बाद अपनी जेब से एक राहदारी का पर्वाना निकाला और

उसे भी पढ़कर यह कहते हुए बेग में रख लिया, "बहुत ठीक है अभी मुद्दत पूरी नहीं हुई॥"

छठवां बयान।

दफन।

विलफोर्ट के मकान से निकल कर वेलेण्टिन का जनाजा कब्रिस्तान की तरफ रवाना हुआ॥

नाजुक खूबसूरत और कमसिन वेलेण्टिन के मरने की खबर ने एक तरह का तहलका सा पैरिस में डाल दिया था, विलफोर्ट के घर में लगातार मौतों के होने से लोगों का ध्यान उस तरफ खिचाही हुआ था अब इस कोमल लडकी के मरने से और भी लोग इस तरफ आकृष्ट हो गये थे अस्तु इस जनाजे के साथ पैरिस के करीब करीब सभी रईस और अमीर शामिल थे जिनकी शानदान सवारियों के पीछे पांच सौ के करीब और भी मुलाकाती तथा जान पहिचान वाले चल रहे थे जिन मे मिले जुले हमारे शेट्रेनाड आदि सब दोस्त लोग भी थे॥

जब यह दल विलफोर्ट के निजी कब्रिस्तान के पास पहुंच रहा था उस समय एक चौकडी बडी तेजी के साथ शहर की तरफ से आती हुई दिखाई पड़ी जिस पर काउण्ट आफ मोण्ट क्रीटो था। जलूस के पास पहुंच

गाड़ी रुकी और काउएट उतर कर पैदल चलने वालों में शामिल हो गया—पर उसकी निगाह चारों तरफ किसी की खोज में घूम रही थी। ड्यूग्रेम्प उसे पैदल देख अपनी गाड़ी से उतर उसके साथ हो गया और काउएट ने उसे देखते ही पूछा, "क्या आपने मारल को देखा है? वह यहां है या नहीं?" ड्यूग्रेम्प बोला, "मैं खुद उसे खोज रहा हूं पर अभी तक वह कहीं दिखाई नहीं दिया॥"

काउएट ने कुछ जवाब नहीं दिया पर उसकी निगाह चारो तरफ घूमती रही। जनाजा कब्रिस्तान में पहुंचा जहां कब्र पहिले से खुदी हुई तैयार थी। नियमानुसार सब कृत्य किये गये और लाश को कब्र में उतारने का मौका आ गया। उस समय काउएट की निगाह मारल पर पड़ी जो दूर पर एक वृक्ष की आड़ में छिपा खड़ा इसी तरफ देख रहा था। उसकी हालत देखते ही काउएट चौंक गया-क्योंकि मारल का चेहरा एकदम पीला हो रहा था- और वह बरसों का बीमार मालूम हो रहा था। काउएट ने अपने को भीड़ से अलग कर लिया और चक्कर काटता हुआ मारल के पीछे पहुंच और आड़ से छिपकर देखने लगा कि वह अपने साथ कोई हथियार तो नहीं लाये हुआ है, मगर मारल को इस बात का पता नहीं लगा कि काउएट उसके पीछे आ खड़ा हुआ है, वह एक टक अपनी प्यारी की लाश देख रहा था जो कब्र में उतारी जा रही थी। उसका बदन रह रह

कांप उठता था और वह दोनों हाथों से अपनी टोपी को इस तरह मल और दबा रहा था मानों वेलेण्टिन का खूनी वही टोपी हो। इसके सिवाय और सब तरह से वह शान्त था पर काउण्ट उसकी इसी शान्ति से डर रहा था। क्योंकि मारल के दिल पर जो कुछ गुजर रहा था इसे तो वह खूब अच्छी तरह समझता था॥

दफन का काम खतम हुआ, कब्र पर मट्टी डाल दी गई और लोग पैरिस की तरफ लौटे पर इन लौटने वालों में काउण्ट नहीं था वह अब भी अपनी जगह पर छिपा खड़ा मारल को देख रहा था॥

जब सब कोई चले गये और मजदूर वगैरह भी अपना काम खतम कर कब्रिस्तान खाली कर गये तो मारल धीरे २ वेलेण्टिन के कब्र की तरफ बढ़ा, काउण्ट भी पीछे पीछे चला। कब्र के पास पहुंच मारल ने घुटने टेक दिये और पत्थर पर सिर रख दिया। उसके मुंह से कलेजे को फाड़ देने वाले सिर्फ दो शब्द निकले—हाय वेलेण्टिन !! जिन्होंने काउण्ट के दिल को टुकड़े टुकड़े कर दिया। वह अपने को रोक न सका और उसने आगे बढ़ मारल के कन्धे पर हाथ रख कहा, "मेरे दोस्त !!"

काउण्ट समझता था कि मारल चौंकेगा चिहुंकेगा या उबल पड़ेगा पर यह सब कुछ न हुआ, मारल ने शान्ति के साथ घूमकर काउण्ट की तरफ देखा और कहा, "मैं प्रार्थना कर रहा था !!"

अपनी तेज निगाहों से काउण्ट ने मारल को सिर

से पैर तक अच्छी तरह देखा उसका सन्देह कुछ कम हुआ और उसने पूछा, "मैं शहर जाता हूं साथ चलोगे?" मारल के सिर झुकाकर, "नहीं मैं अभी प्रार्थना करूंगा" कहने पर वह वहां से हट गया पर थोड़ी ही दूर जाकर पुनः रुक गया और छिपे छिपे मारल की तरफ देखने लगा। थोड़ी देर बाद मारल उठा और विना आगे पीछे देखे सीधा पैरिस लौटा। काउएट भी पैदल ही उसके पीछे २ चला। उसके घर में पहुंचने के पांच ही मिनट बाद काउएट ने भी कुण्डा खटखटाया और जूलिया के दर्वाजा खोलने पर पूछा—"क्या मारल घर में है?" जूलिया ने बड़े प्रेम और प्रसन्नता के साथ उसे मकान के अन्दर करके कहा, "हां वह अभी आया है।" काउएट बोला, "मुझे एक जरूरी बात उससे कहनी है।" जूलिया बोली, "तो उसके कमरे मे चले जाइये" जिसे सुन काउएट तेज़ी के साथ सीढ़ियां चढ़ ऊपर की मञ्ज़िल मे पहुंचा जहां मारल के बैठने का कमरा था॥

मारल के कमरे के दरवाजे पर पहुंच उसने कान लगा कर सुना पर किसी तरह की आहट सुनाई न पड़ी। दर्वाजा यद्यपि शीशे का था पर भीतर पर्दा पड़ा रहने के कारण कुछ दिखाई न देता था, धक्का देने से मालूम हुआ कि भीतर से बन्द भी है। काउएट सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। जिस बात का उसे डर था अगर मारल वास्तव में वही कर रहा होगा तो इस समय उसे आवाज देना या पुकारना उसे और दृढ़ करना

होगा—उस की आवाज के जवाब में भीतर गोली से की आवाज आना बहुत सम्भव है, साथ ही इसके देर करना भी मुनासिब नहीं। बिजली की तेज़ी के साथ ये सब ख्याल काउण्ट के दिमाग में दौड़ गये और उसने तुरतही कुछ निश्चय भी कर लिया, कोहनी का धक्का मार यकायक काउण्ट ने दर्वाजे का एक शीशा तोड़ डाला और पर्दा हटा कर भीतर की तरफ देखा। मारल एक टेबुल के पास बैठा कुछ लिख रहा था पर शीशा टूटने की आवाज से चैांक कर खड़ा हो गया था॥

काउण्ट ने कहा, "माफ करना दोस्त! तुम्हारी सीढियें इतनी चिकनी हैं कि मैं फिसल कर गिर गया और धक्के से तुम्हारा शीशा टूट गया—" उसी छेद की राह हाथ डाल कर काउण्ट ने सिटकिनी हटा दर्वाज़ा खोल लिया और कमरे के अन्दर आ गया॥

मारल की आकृति से मालूम होता था कि यकायक काउण्ट को देख वह घबड़ा गया है; वह इस तरह आगे बढ़ा मानो काउण्ट को आगे बढ़ने से रोकेगा पर तुरत ही अपने को सम्हाल उसने पूछा, "कहीं चोट तो नहीं लगी॥"

काउण्ट०। नहीं कुछ नहीं; मगर आप क्या कर रहे हैं, आप की उंगलियों में इतनी स्याही क्यों लगी है॥

मारल०। मैं कुछ लिख रहा था॥

काउण्ट०। (गौर से देख कर) वे शायद पिस्तौलें

पडी हुई हैं ? टेबुल पर पिस्तौल रख कर आप लिख रहे थे ?

मारल०। (रुकते हुए) मैं एक सफर पर जाने वाला हूं॥

काउण्ट०। मेरे दोस्त ! मारल !! ईश्वर के लिये जल्दी बाजी मत करो !!

मारल०। (लापरवाही के साथ) क्यो ! इसमे जल्दी-बाजी की क्या बात है, सफर करना

काउण्ट०। (मारल का हाथ पकड़ कर) अब हम दोनो को ही अपनी बनावटी नकाब उतार कर साफ साफ बात करनी चाहिये, तुम्हारे दिल में क्या है यह मैं खूब समझ गया हूं—और मैं इस समय किस लिये आया हूं यह तुम समझ गये हो !! अस्तु मैं फिर कहता हू ! मारल ! आत्महत्या की चेष्टा मत करो॥

मारल०। वाह यह भी आप क्या सोच रहे हैं॥

काउण्ट०। मैं ठीक सोच रहा हू और इसका सबूत यह है॥

काउण्ट ने हाथ बढा कर टेबुल पर से वह कागज उठा लिया जो मारल लिख रहा था। मारल ने यह कागज काउण्ट के हाथ से छीनना चाहा पर काउण्ट ने उसे रोक लिया और कहा, "यह देखो तुम्हारा वसीयतनामा ! अगर तुम आत्महत्या नही करना चाहते तो इस तरह वसीयत लिखने की जरूरत !!"

मारल०। (यकायक क्रोध मे आकर) खैर अगर मैं

अपनी जान देना ही चाहता हूं तो इसमें किसी का क्या! कौन मुझे रोक सकता है! जब मेरी सारी उम्मीद चूर हो गई, मेरा दिल टूट गया, मेरी जान चली गई, दुनिया राख होगई, जब मेरे चारो तरफ गम और मातम छाया हुआ है, जब चारों तरफ से मुझे रोना ही सुन पड़ता है, जब हर एक आवाज मुझे चोट पहुंचा रही है, उस हालत में मुझे मरने देना ही मेरे साथ रहम करना है क्योंकि अगर मैं जीता रहूंगा तो जरूर पागल हो जाऊंगा—मुर्दे से बदतर हो जाऊंगा—अस्तु यह जान कर भी क्या आप मुझसे कह सकते हैं कि तू गलती कर रहा है। यह जानकर भी आप मुझे रोकने की हिम्मत कर सकते हैं॥

काउण्ट०। (गम्भीरता के साथ) हां! यह सब कुछ सोच समझ कर भी मैं तुम्हें रोकता हूं॥

मारल०। (बढते हुए गुस्से के साथ) आप! आप ऐसा करेंगे? जिसने मुझे झूठी उम्मीदें दिला कर धोखा दिया? जिसने गलत वादे कर कर के, झूठा विश्वास दिला कर—मुझे उस समय रोक रक्खा, जब कि मैं उसकी मौत रोक सकता था या कमसे उसे मरती समय अपनी गोद में देख सकता था? आप ऐसा करेंगे? जो कि सारी दुनिया का ज्ञान छांटने पर भी, दुनिया के गुप्त से गुप्त भेद जानने का दावा करने पर भी, अपने को अदृष्ट समझने और कहने पर भी—एक मामूली जहर का तोड़ नहीं कर सके जो एक कमसिन लड़की को

दिया गया !! महाशय ! आप को देख कर मुझे गुस्सा आता है ॥

काउण्ट०। मारल !!

मारल०। (उसी जोश के साथ) हां, आपने मुझ से बनावटी पन का नकाब हटा देने को कहा। विश्वास रखिये कि मैं वैसा ही करूंगा, जब आप कब्रिस्तान में मुझसे बोले, मैंने आपको जवाब दिया, जब वे पूछे यहां चले आये आने दिया, क्योंकि मेरा दिल टूटा हुआ था, पर अब जब कि आप और भी हाथ पांव फैलाने लगे हैं, मुझे यंत्रणा देने का और भी एक जरिया निकालने लगे हैं तब काउण्ट मौण्ट क्रीटो ! मेरे बनावटी मुरब्बी ! मेरे नकली दोस्त ! मैं अपने को और रोक नहीं सकता ! लो मेरी मौत भी देख लो ॥

यह कह पागलों की तरह हँस कर मारल पिस्तौलों की तरफ झपटा ॥

काउण्ट का चेहरा एक दम सुफेद होगया, आंखों से बिजली की तरह चमक निकलने लगी—उसने एक हाथ से मारल की कलाई पकड ली और दूसरा हाथ पिस्तौलों पर रख कर कहा, "मैं फिर कहता हूं कि मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा ॥"

"अच्छा रोको" कह मारल ने झटका मार अपना हाथ छुड़ाना चाहा पर एक लोहे के पंजे ने उसकी कलाई पकड़ी हुई थी जिसे वह किसी तरह छुड़ा नहीं सकता था। काउण्ट ने फिर कहा, "मैं तुम्हें रोकूंगा ॥"

मारल०। आपको ऐसा कहने का कोई हक नहीं है॥

काउएट० । है, जरूर है, मुझे सिर्फ मुझे ही आज यह कहने का हक है, कि "मारसेलीज के सौदागर मारल का लड़का मैक्समिलियन आज नहीं मर सकता॥"

इतना कह काउएट ने मैक्समिलियन का हाथ छोड़ दिया और उसके सामने तन कर खड़ा होगया। उसके चेहरे से इतना रोब जाहिर होने लगा कि मारल डर कर एक कदम पीछे हट गया और कुछ दब कर बोला— "आप इस मामले में मेरे बाप का नाम क्यों ले रहे हैं ?"

काउएट० । क्योंकि मैं ही वह हूं जिसने तुम्हारे बाप को आत्महत्या करने से रोका था, मैं ही ने तुम्हारी बहिन के पास थैली भेजी थी, मैं ही ने तुम्हारे बाप के पास "फरन" भेजा था, मैंने ही तुम्हे जब तुम छोटे बच्चे थे तब अपनी गोद में खिलाया था और मेरा ही नाम "एडमएड डोनर" है॥

मारल एक कदम और पीछे हट गया, उसकी हिम्मत बिल्कुल पस्त होगई, उसकी ताकत ने जवाब दे दिया और वह एक दम मौएट क्रीटो के पैरो पर गिर गया। उस ऊंचे दिल ने एकदम पलटा खा लिया, वह इस समय की सब बाते भूल गया और केवल काउएट के प्रति कृतज्ञता ही उसके दिल में रह गई। वह यकायक उठकर दौड़ा और कमरे का दरवाजा खोल कर जोर जोर से पुकारने लगा। जूलिया जूलिया ! मैन्युअल मैन्युअल ! दौड़ो ! जल्दी आओ॥

काउण्ट ने उसे रोकना चाहा पर वह कब मानने का था, तब काउण्ट ने कमरे के बाहर जाना चाहा पर उसे अपनी जान देना कबूल था पर काउण्ट को जाने देना नहीं कबूल था। उसने जबर्दस्ती काउण्ट को पकड़ रक्खा और उसी समय जूलिया मैन्युअल और कई नौकर दौड़ते हुए वहां आ पहुचे। मारल ने उन दोनों को भीतर कर दर्वाजा बन्द कर दिया और कांपती आवाज में कहा, "दण्डवत करो दण्डवत करो! यही हमारी जान और इज्जत का बचाने वाला है! इसी ने हमारे बाप की जान बचाई थी! यही .. .. "

मारल ने "एडमण्ड डेन्टिस" कह दिया होता पर काउण्ट ने उसके मुंह पर हाथ रख कर उसे रोक दिया, उधर जूलिया और मैन्युअल का तो अजीब ही हाल हो गया था। यह जानते ही कि काउण्ट ही ने उसके बाप की जान बचाई थी वे दोनों काउण्ट के पैरों पर गिर गये और आनन्द तथा कृतज्ञता के आसू बहाने लगे, मारल पुनः जमीनपर गिर अपना माथा उसके पैरों से रगड़ने लगा॥

अब इस लोहे के कलेजे वाले आदमी का दिल पिघल गया। उसकी छाती फूल उठी और उसके गले से उठ कर एक ज्योति सी उसकी आखों में आ गई और उसने खुद अपना सिर झुका लिया उसकी आंखों से आंसू गिरने लगे। थोड़ी देर तक सिवाय रोने के उस कमरे में और कोई आवाज न रह गई, इस समय इन

चारों के दिल स्वर्गीय भाव से भर गये थे॥

बड़ी मुश्किल से काउण्ट ने सभों को उठाया और अपने बेटे बेटी की तरह छाती से लगाया। मैन्युअल लड़खड़ाती हुई आवाज में बोला—"काउण्ट! आप बड़े निर्दई हैं! हम लोगों से रोज अपना जिक्र सुनकर और अपने रक्षक के प्रति इतनी कृतज्ञता जाहिर करने पर भी आप से कैसे चुप रहा गया। आपने हम लोगों के साथ बड़ा अन्याय किया, बहुत बड़ा अन्याय किया!!

काउण्ट०। मेरे दोस्त, तुम्हें शायद इस बात का शक भी न हुआ हो पर आज से नहीं बल्कि आज ग्यारह बरस से मैं तुम लोगों को अपना दोस्त समझ रहा हूं। ईश्वर जानता है कि मेरा निश्चय था कि यह भेद मेरे दिल के अन्दर ही मेरी मौत तक छिपा रहे, पर तुम्हारे मारल ने बड़ी भारी जबर्दस्ती करके इस भेद को मुझ से छीन लिया है जिसके लिये अब वह जरूर पछताता होगा (मारल की तरफ घूमने पर यह देख कर कि वह सिर नीचा किये एक कुर्सी पर बैठ गया है, मैन्यूअल से) उस पर निगहबानी रखना॥

मैन्यु०। (ताज्जुब से) सो क्यों?

काउण्ट०। यह मैं नहीं बता सकता पर होशियार रहो॥

मैन्युअल ने अपने चारों तरफ देखा और उसकी निगाह पिस्तौलों पर पड़ी उसने चौंक कर काउण्ट से इशारा किया और काउण्ट ने सिर झुका लिया, उसने

पिस्तौलें उठा लेनी चाहीं पर काउण्ट बोला—"रहने दो" और यह कह मारल की तरफ बढ़ा जो एक दम बदहवास की तरह पड़ा हुआ था। इसी समय जूलिया जो न जाने कब कमरे के बाहर चली गई थी वहां लैाटी। इस समय उसकी आंखें से खुशी के आंसू गिर रहे थे और वह हाथ में एक रेशमी थैली लिये हुए थी जिस पर निगाह पडते ही काउण्ट का चेहरा लाल हो गया और वह बोला, "बेटी! अब जब तुम खुद मुझे ही जान गई तो इस थैली की जरूरत नहीं रही यह मुझे लैाटा दो, मैं चाहता हूं कि मेरी याददाश्त सिर्फ मेरा प्रेम ही हो॥"

जूलिया०। (थैली को कलेजे से लगा कर) नहीं नहीं, दया करके यह थैली मेरे ही पास छोड दीजिये, शायद फिर कभी आप गायब हो जांय॥

काउण्ट०। हां यह तो ठीक है, एक हफ्ते बाद मैं यह यह मुल्क छोड़ दूंगा जहां मेरा बाप भूखा मर गया था पर पापी सुख उठाते रहे॥

काउण्ट ने मारल की तरफ देखा पर उसके इन शब्दों ने भी कि "एक हफ्ते में मैं यह मुल्क छोड दूंगा।" मारल की अवस्था न बदली जिससे काउण्ट समझ गया कि दुःख और शोक ने पूरी तरह पर उसे अपना शिकार बना लिया है। उसने जूलिया और मैन्युअल का हाथ पकड़ कर कहा, "थोड़ी देर के लिये मुझे मैक्समिलियन के पास अकेला छोड दो॥"

जूलिया ने देखा कि काउण्ट उस थैली की बात भूल गया, वह खुशी खुशी अपने पति का हाथ पकड़ यह कहती हुई बाहर ले गई, चलो इन्हें छोड़ दो। उन दोनों के चले जाने बाद काउण्ट मारल के पास गया और प्यार से उसका हाथ पकड़ कर बोला—"मैक्स-मिलियन! अब तुमारे होश में हुए?" वह बोला, "हां क्योंकि अब मैं पुनः कष्ट भोगने लगा॥"

काउण्ट बेचैनी के साथ बोला, "मैक्समिलियन! तुम यह सब बुरे खयाल छोड़ दो॥"

मैक्समिलियन०। घबड़ाइये नहीं, अब मैं अपनी जान न दूंगा॥"

काउण्ट०। तो अब तलवार पिस्तौल तो नही न छूओगे!!

मैक्स०। नही क्योकि उसकी जरूरत ही न पड़ेगी मेरा कष्ट ही मुझे मार डालेगा॥

काउण्ट०। (उदासी के साथ) मैक्समिलियन! सुनो, एक दिन लाचारी दुःख और अफसोस ने मेरी भी ठीक वही दशा कर दी थी जो आज तुम्हारी है, तुम्हारी तरह मैं भी अपनी जान देने का निश्चय कर चुका था। एक दिन तुम्हारे बाप ने भी अपनी जान देने का निश्चय कर लिया था। उस समय, जब कि तुम्हारे बाप ने पिस्तौल अपने माथे से लगाई थी, या जब कि मैंने तीन दिन भूखे रहने पर भी खाने की तश्तरी सामने से हटा दी थी, किसी ने हम दोनों से कहा होता

कि, "ठहरो ! तुम्हें अब भी सुख और प्रसन्नता मिलेगी ! जान मत दो !!" तो चाहे यह आवाज किसी की भी क्यो न होती, हम लोग उसे अविश्वास के साथ ही सुनते, फिर भी तुम्हारे पिता सुखी हुए, मैं ..

मारल० । आह ! आपने सिर्फ अपनी स्वतन्त्रता गंवाई थी, मेरे बाप ने अपनी दौलत गवाई थी, पर मैंने ? मैंने तो अपनी वेलेण्टिन ही गवा दी !!

काउण्ट० । मारल ! मै तुम्हे अपने बेटे की तरह चाहता हू, तुम्हे दुःखी देखकर मेरा कलेजा पिघल रहा है । मगर फिर भी मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि जिन्दगी की तरह दुःख भी एक ऐसी हालत है जिसके अन्त में किसी दूसरी अवस्था का आरम्भ होता है । आज जो मैं तुम्हे जीते रहने को कहता हूं वह इसी भरोसे पर कि तुम एक दिन मुझे अपनी जान बचाने के लिये धन्यवाद दोगे ॥

मारल० । काउण्ट ! आप क्या कह रहे हैं ? होशियार रहिये ! मगर नही, आपने शायद कभी किसी को प्यार ही नही किया ॥

काउण्ट० । लड़के !!

मारल० । मेरा मतलब यह है कि उतना जितना मैंने प्यार किया । आपको मालूम है कि मैं सिपाही हूं, उन्तीस बरस की उम्र तक मैं प्रेम का नाम भी नहा जानता था । तब मैंने वेलेण्टिन को देखा और उन दो बरसों ने जब तक कि मेरी उसकी प्रीति रही मुझे मता

दिया कि सुख क्या चीज है और किस प्रकार उसे पाकर मुझे स्वर्ग की भी इच्छा न रहेगी। परन्तु ईश्वर को मेरा सुखी होना अच्छा नहीं लगा। काउण्ट! वेलेण्टिन के जाने से अब मेरे हिस्से सिर्फ दुःख और सन्ताप ही रह गया !!

काउ०। मैं फिर कहता हूं उम्मीद करो !!

मारल०। काउण्ट सावधान! ऐसी बात न कहो जिससे मैं पागल ही हो जाऊं क्योंकि आपकी बातें मुझे वेलेण्टिन के पुनः देख पाने का भरोसा दिलाती हैं॥

काउण्ट सिर्फ मुस्कुराया, मारल उत्तेजित होकर बोल उठा, "मेरे दोस्त! मेरे पिता !! मैं फिर कहता हूं कि होशियार होकर कोई बात मुंह से निकालिये! अपने लफ्जों को तौल तौल कर मुंह से निकालिये, क्योंकि अभी से ही मेरी आखों में चमक आने लगी है, दिल में धडकन होने लगी है। मैं नहीं कह सकता कि आपका क्यों मुझपर इतना प्रभाव है कि आपकी एक एक बात मुझे व्याकुल करे डालती है॥

काउण्ट०। उम्मीद करो उम्मीद करो !!

मारल०। (यकायक सुस्त होकर) ओह आप तो मुझे बहलावा दे रहे हैं, मेरा आप पर भरोसा करना गलती था। खैर काउण्ट, घबराइये मत, मैं अपनी मुसीबत को अपने दिल के इतने गहरे परदे के अन्दर छिपाऊंगा कि आपको भी पता न लगेगा। अच्छा अब विदा॥

काउण्ट०। नहीं, विदा नहीं बल्कि आज से तुम्हें हमेशा मेरे साथ रहना होगा। एक हफ्ते के बाद हम दोनों एक साथ ही फ्रान्स छोड़ देंगे॥

मारल०। आप अब भी मुझे उम्मीद करने को कहते हैं?

काउण्ट०। बेशक और सो इस लिये क्योंकि मुझे तुम्हें अच्छा करने की एक तर्कीब मालूम है॥

मारल०। आप शायद समझते हैं कि मेरा यह रञ्ज और गम मामूली है और आप मामूली तर्कीबों से इसे दूर कर सकेंगे॥

काउ०। मैक्समिलियन! तुम्हें अभी नहीं मालूम है कि काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो में कितनी कुदरत है और वह क्या क्या करने की ताकत रखता है। तुम्हें नहीं मालूम कि बहुतसी ईश्वरीय शक्तियां मौण्ट क्रीटो के कब्जे में हैं। तुम्हें नहीं मालूम कि मौण्ट क्रीटो को ईश्वर पर इतना विश्वास है कि केवल उस विश्वास की मदद से वह असम्भव को सम्भव कर सकता है। अस्तु घबड़ाओ मत और मुझपर भरोसा रक्खो नहीं तो .. ..

मारल०। नहीं तो?

काउण्ट०। नहीं तो मैं तुम्हें अकृतज्ञ कहूंगा॥

मारल०। काउण्ट मुझपर दया करो!!

काउण्ट०। मारल! मुझे तुम पर इतनी दया आ रही है कि—गौर से सुनो—कि अगर एक महीने में ठीक आजही के दिन और वक्त पर यदि मैंने तुम्हें पूरी तरह

से अच्छा न कर दिया तो मैं अपने हाथ से तुम्हारे सामने भरी हुई पिस्तौल और हलाहल का प्याला रख दूंगा जो कि उस जहर से कहीं तेज होगा जिसने वेलेण्टिन की जान ली है॥

मारल०। आप इसका वादा करते हैं?

काउण्ट०। हां, और इस लिये कि मैं भी आदमी हूं और तकलीफ उठा चुका हूं मैं इस बात का सिर्फ वादा ही नहीं करता बल्कि कसम खाता हूं॥

मारल०। तो एक महीने के भीतर अगर मेरा दिल शान्त न हुआ तो आप मेरी जान मेरे हाथ में छोड़ दीजियेगा जिससे मैं जो चाहूं सो उसके साथ कर सकूं।

काउण्ट०। ठीक एक महीने में, आज ही के दिन इसी घड़ी! तुम्हें शायद याद न हो कि आज का दिन कैसा पुनीत दिन है। आज पांचवीं सितम्बर है, आज ही के रोज दस वर्ष पहिले मैंने तुम्हारे बापको बचाया था जब कि वे आत्महत्या किया चाहते थे॥

मारल ने काउण्ट का हाथ पकड़ लिया और इज्जत के साथ माथे से लगा कर चूम लिया। काउण्ट बोला—"मैंने वादा कर दिया, एक महीने के बाद तुम अपने सामने पिस्तौल और आरामदेह मौत पाओगे, पर साथ ही तुम भी वादा करो कि इस बीच में अपनी जान देने की कोशिश न करोगे॥

मार०। हां, मैं भी इस बात की प्रतिज्ञा करता हूं॥

मौण्टक्रीटो ने नौजवान को खींचकर अपने कलेजे

से लगा लिया और कुछ देर तक छाती से दवाये रहा, इसके बाद बोला, "अब कल से तुम मेरे घर पर आकर रहो, हैदरी चली गई है, तुम उसकी जगह रहना, लडकी के बदले मेरे पास मेरा लड़का रहेगा॥

मारल०। हैदरी कब गई?

काउएट०। वह कल चली गई, अच्छा तो कल मेरे मकान पर चलने को तैयार रहना। अब मुझे ऐसी तरह से मकान के बाहर कर दो कि किसी की निगाह मुझपर न पड़े॥

मैक्समिलियन ने सिर झुकाया और लड़के अथवा शिष्य की तरह काउएट की आज्ञा का पालन किया॥

सातवां बयान।

बटवारा।

अलबर्ट मारकर्फ ने अपने और अपनी मां के लिये जो जगह ली थी वह एक सूनसान महल्ले के बडे से मकान का सब से ऊपर का कमरा था। इस मकान के प्रायः सभी कमरे किरायेदारो के पास थे और इस समय हम अलबर्ट के पास न जाकर इन्हीं किरायेदारो में से एक के पास चलते हैं जिसके कब्जे मे एक बडा, सजा हुआ, और हवादार कमरा है जिसके सब दर्वाजे इस समय बन्द हैं॥

एक कोच के ऊपर लूशियन डिब्रे बैठा हुआ कुछ सोच रहा है। उसे अभी यहां आये पन्द्रह मिनट भी नही

हुश्रा है और उसके ढङ्ग से मालूम हो रहा है वह किसी की राह देख रहा है। पांच ही मिनट के बाद कमरे का दरवाजा खुला और एक औरत ने जिसका मुंह ढंका हुआ था अन्दर आकर दर्वाजा बन्द कर लिया। लूशियन डिब्रे उठकर खड़ा हो गया और वह औरत बेचैनी और घबड़ाहट के साथ यह कहती हुई उसकी तरफ बढ़ी, "आह प्यारे लूशियन॥"

डिब्रे ने उसे एक कुर्सी पर ले जाकर बैठाया और पूछा, "क्यों क्या बात है, जो आज वक्त के पहिले ही तुमने मुझे बुलवाया॥"

लेडी०। ओह प्यारे! बड़े ताज्जुब की एक घटना हो गई है॥

डिब्रे०। क्या?

लेडी०। मिस्टर दङ्गली मुझे छोड़ कर चले गये॥

डिब्रे०। मिस्टर दङ्गली तुम्हे छोड़कर चले गये!! कब? कहां? क्यों?

मैडम दङ्गली०। (क्योंकि यह वही थी) सो मैं नहीं कह सकती, कल रात को वे गाड़ी पर चढ़कर कहीं चले गये, सरहद पर पहुंचकर एक सफरी गाड़ी पर चढ़े और अपनी गाड़ी यह कह कर लैाटा दी कि वह कहीं दूसरे शहर में जा रहे हैं। मेरे लिये एक चीठी दे गये॥

डिब्रे०। चीठी?

मैडम०। (जेब से चीठी निकाल कर) हां यह चीठी, लो पढ़ो॥

डिब्रे ने वह चीठी लेली पर पढना शुरू करने के पहिले थोडी देर तक वह चुपचाप खडा दिलही दिल मे सोचता रहा कि हर हालत मे उसे अब क्या करना मुनासिब होगा । जल्द ही उसने अपना इरादा पक्का कर लिया और तब चीठी खोलकर पढने लगा, पहिली ही पक्ति पर वह चौका, यह लिखा था—

मेरी पतिव्रता स्त्री—

डिब्रे ने मैडम की तरफ आंख उठा कर देखा, उसने अपनी आखे नीची करली और धीरे से कहा, "पढो" डिब्रे पढ़ने लगा :—

"जब यह चीठी तुम्हारे हाथ में पहुचेगी उस समय तुम पति हीन रहोगी । मैं उस समय पैरिस से पचासो कोस पर रहुगा । शायद तुम मेरे इस तरह भागने का सबब पूछो, बात यह है कि कल यका यक मुझसे पचास लाख रुपया मागा गया । मैंने दे दिया पर इसके बाद फिर तुरत ही पचास लाख और मागा गया, इस लेनदार को मैंने कल के लिये टाल दिया और उसी कल से बचने के लिये जो मेरे लिये बडा दुखदाई होगा मैं भाग रहा हू । तुम मेरा मतलब समझ गई होगी क्योंकि मेरे सब मामलो की तुम्हें पूरी बल्कि मुझ से बढ कर जानकारी है । मुझे नहीं मालूम कि मेरी दौलत जो किसी जमाने में बहुत काफी थी क्या हुई, पर तुम्हें यह बात जरूर मालूम है । मैं नही कह सकता कि मेरी अशर्फियें कहा गल गई, मुझे तो सिर्फ आग दिखी शायद तुम्हें उसकी राख में से कुछ सोना मिल गया हो । मुझे तुम्हें छोडने का अफसोस नहीं है क्योंकि मुझे विश्वास है कि उस राख के इलावे तुम्हारे दोस्त भी तुम्हारी मदद करेंगे, अस्तु मैं तुम्हें पूरी तरह से स्वतन्त्र करता हू । जब मैंने तुमसे ब्याह किया उस समय अमीर होने पर भी तुम्हारी इज्जत नहीं थी । मेरे सबब में तुम्हारी दौलत और इज्जत दोनोही बढी । पिछले पन्द्रह बरस

बराबर हमारा धन बढता ही गया पर अब यकायक न जाने उसे क्या होगया है कि बिना मेरी किसी गलती या भूल के वह बहता जा रहा है। मुझे विश्वास है कि मेरे गरीब होने पर भी तुम अमीर हो रही हो अस्तु मैं तुम्हें ठीक वैसी ही हालत में छोडता हू जिसमें मैंने तुम्हें ग्रहण किया था, अमीर पर बेइज्जत ! मैं भी अब तुम्हारी नकल करूगा श्रोर अकेले काम करूगा ॥

तुम्हारा प्यारा पति—बैरम दङ्गली ॥

जब तक डिब्रे यह चीठी पढ़ता रहा, मैडम दङ्गली गैार से उसका चेहरा देखती रहीं जो पल पल पर रङ्ग बदल रहा था। चीठी समाप्त कर उसने गम्भीर भाव धारण किया श्रोर कुछ सोचने लगा तब मैडम ने पूछा, "क्यों क्या सोचते हो !"

डिब्रे०। मिस्टर दङ्गली को जरूर कुछ शक हो गया है ?

मैडम०। हां यह तो साफ है पर मेरे बारे में अब तुम क्या कहते हो ?

डिब्रे०। आपके बारे में क्या ?

मैडम०। उनके चले जाने से मैं स्वतन्त्र हो गई !!

डिब्रे०। नहीं नहीं ऐसा न सोचो !!

मैडम०। हां मैं ठीक कहती हूं वह कभी नहीं लैाटेगा, वह बड़ा भारी मतलबी है। अगर मुझे साथ रखने से उसका कोई मतलब सिद्ध होता तो वह मुझे पैरिस से न छोड़ जाता, श्रोर जब मुझे छोड़ गया है, तो अब उसे मेरी जरूरत नहीं, वह हमेशा के लिये गया श्रोर मैं अब स्वतन्त्र हूं ॥

मैडम के स्वर से विनय और प्रेम चू रहा था, पर डिब्रे ने अपने को एक दम ठण्ढा बना रक्खा था। जब उसने कोई जवाब न दिया तो मैडम ने उसका हाथ पकड-कर आजिजी से कहा—"बोलो न! अब क्या कहते हो?"

डिब्रे०। तुम मेरी राय पूछती हो?

मैडम०। (बड़ी आशा के साथ) हां॥

डिब्रे०। तब तो मैं यही कहूंगा कि तुम कुछ दिन के लिये घूमने फिरने को चली जाओ॥

मैडम०। मैं घूमने चली जाऊं?

डिब्रे०। जरूर! जैसा मिस्टर दङ्गली ने कहा है, तुम बहुत अमीर हो। तुम्हारे पति के चले जाने से तुम्हें खाने खर्चने में किसी तरह की तकलीफ नही हो सकती बल्कि तुम अमीरी के साथ गुजरान कर सकती हो, हां यहां रहकर वैसा करने से लोग जरूर बुरा मानेंगे क्योंकि एक दिवालिये की औरत अमीरी से रहे तो अच्छा नहीं मालूम होता। मेरी राय मानो और अपने पति का सब सामान उसके लेहनदारों के लिये छोड कर यहां से हट जाओ लोग समझेंगे कि तुमने गरीब होकर भी पावनेदारों का रुपया नहीं लिया यह बडी दियानतदारी का काम किया यह तो सिर्फ मुझे ही मालूम है कि तुम्हारे पास कितनी दौलत है और मैं ईमानदार हिस्सेदार की तरह तुम्हारे पूरा हिस्सा अभी बेबाक करने को तैयार हूं॥

मैडम जिस समय डिब्रे की ये बातें सुन रहीं थी उनका चेहरा एक दम पीला हो रहा था। डिब्रे ने उन की आशाओं का किस तरह खून किया था यह उनका दिल ही समझ रहा था। अब यह सुन कर भी उसकी प्रेम भिक्षा मांगना उस घमण्डी औरत को मञ्जूर न था, उसने अपने को बहुत ही सम्हाला और कलेजे की धड़कन को रोकते हुए उन आंसुओं को रोकने की कोशिश करने लगी जो वेतरह उसकी आंखों के बाहर आया चाहते थे। मगर बनावटी प्रेमी और मतलबी डिब्रे ने देख कर भी मैडम की हालत अनदेखी कर दी और कहने लगा, "मेरे और आपके साझे को आज छः महीने हुए। अप्रैल के महीने में आपने एक लाख रुपया मुझे काम करने को दिया। मई में हमे साढे-चार लाख मुनाफा हुआ, जून में नौ लाख हुआ; जुलाई मे स्पेनिश वौण्डों वाला मामला हुआ अस्तु इस महीने मे हमें सत्रह लाख फायदा हुआ, अगस्त के शुरू में तीन लाख घाटा हुआ पर बाद में पूरा हो गया अस्तु आज तक का हिसाब करने से हमें कुल मिला कर चौबीस लाख रुपया मिला। इसमें बारह लाख आपका हुआ, और बारह लाख मेरा। करीब अस्सी हजार रुपया सूद से मिला जो मेरे पास है। अस्तु इसमे से चालीस हजार भी आपका है तथा वह एक लाख जो आपने पहिले दिया था वह भी आपका है। इस तरह सब मिलाकर तेरह लाख चालीस हजार रुपये के आप हकदार हैं॥

मैडम कुछ बोल नहीं रही थीं वे चुपचाप डिब्रे की बातें सुन रही थी और अपने उद्वेग को दबा रही थी। जरा सा रुक कर डिब्रे फिर कहने लगा—"न जाने कब आप अपना हिसाब मांग बैठें यह सोच मैंने परसों सब हिसाब और रुपया मंगवा लिया था और वह इस समय मौजूद है, आपके हिस्से की रकम वह तैयार है। यह मैं इस लिये कहता हूं कि मेरा मकान महफूज न था, बङ्क में रुपया रखने से शक हो सकता था जायदाद खरीदने से लोगों पर प्रगट हो जाता और आपको अपने पति से अलग कुछ भी दौलत रखने का अख़्तियार नहीं है इससे यह सब रुपया नगद इस लोहे की पेटी में इसी जगह रक्खा हुआ है॥"

डिब्रे दीवार के पास गया जो लकड़ी के पालिशदार तख़्तों की थी, एक खटका दबाने से लकड़ी का एक टुकड़ा हट गया और एक लोहे का सन्दूक दिखाई देने लगा जिसे खोलकर डिब्रे ने नोटों के कई पुलिन्दे बाहर निकाले। मैडम के सामने उन पुलिन्दों को सरकाते हुए डिब्रे ने कहा, "मैडम, हजार हजार रुपये के ये बारह सौ नोट हैं, बाकी एक लाख चालीस हजार का यह चिक है, मेरे महाजन को यह चिक दिखाते ही वह रुपया गिन देगा क्योंकि वह मिस्टर दङ्गलो नहीं है॥

मैडम ने एक निगाह डिब्रे पर डाली और तब चुपचाप वे नोट और चेक उठा लिये। इन्हें अपने जेबों में रख वे उठ खड़ी हुई, उनके पीले और गमगीन चेहरे से

मालूम होता था कि वे अब भी अपने पिछले प्रेमी से सहानुभूति की आशा रखती हैं पर उनकी आशा व्यर्थ थी। डिब्रे ने दरवाजे के पास जाकर कहा, "एक अकेली औरत के लिये तेरह लाख रुपया बहुत है, और यदि आपको कभी और की जरूरत पड़े तो पिछली दोस्ती के लिहाज से मैं अपना बाकी रुपया भी उधार देने को तैयार रहूंगा॥

मैडम ने भर्राई आवाज से कहा, "आप कही चुके हैं कि अकेली औरत के लिये इतनी दौलत बहुत है अस्तु अब मैं आपको कष्ट न दूंगी॥"

डिब्रे को यह सुन कुछ ताज्जुब हुआ, पर वह सिर्फ इतना ही बोला—"जैसी आज्ञा।" और दरवाजा खोल कर खड़ा होगया, अगर अब तक मैडम को उससे कोई आशा हो तो अब वह बिल्कुल ही जाती रही, जो बरसो तक उनका आशिक होने का दम भरता रहा था उसकी ऐसी लापरवाही तथा बेदिली के वर्ताव ने उन का दिल एकदम तोड दिया और वे बिना कुछ कहे या डिब्रे की तरफ आंख उठा कर देखे दरवाजे के बाहर निकल गईं। डिब्रे ने भीतर से दर्वाजा बन्द कर लिया, टेबुल के पास जाकर अपनी नोट बुक देखते हुए कहा, "चलो सस्ते छूटे मेरे पास सोलह लाख बचे! क्या बतावें, विलफोर्ट की लड़की मर गई नहीं मैं जरूर उस से शादी करता, वह मेरे लायक थी।"

अगर हम डिब्रे को उसी कमरे मे छोड़ कर जिसमें

उसने मैडम दङ्गली के साथ लाखें रुपयो का बटवारा किया था उसके ठीक ऊपर वाली कोठडी में पहुंचें तो हमे वहां अपनी कहानी के दो मुख्यपात्र ग्रैार भी नजर आवेंगे। ये दोनें मरियम ग्रैार अलबर्ट हैं, जो इसी मकान में अपनी गरीबी ग्रैार मुसीबत के दिन काट रहे हैं॥

इन कुछ ही दिनें में मरियम की हालत एक दम बदल गई थी। महल से एक झोपडे में आ गिरी हुई रानी की तरह मरियम की वे चमकती हुई आंखे, दमकता चेहरा, मुस्कुराते होठ, ग्रैार दिल खुश करने वाली बातें सभी गायब हो गई थीं। यद्यपि अमीरी के दिनो में भी वह ग्रैाकीनी ग्रैार ऐयाशी से भागती थी पर फिर भी सूफियानेपन ग्रैार रईसी से रहती थी जिस का अब कही नाम निशान भी नहीं था। सोने ग्रैार चांदी के बरतनें से हटकर अब उसका हाथ मिट्टी ग्रैार टीन के बरतनें पर जमता न था ग्रैार उसे पलङ्ग से दूर हो कर वह काठ का तख़्ता आराम न देता था जो अब उसका बिस्तर था॥

मरियम ने अभी तक कभी मुसीबत देखी न थी। अपनी शादी से पहिले कतलूनी गांव में भी जब वह अपनी मामूली जिन्दगी बिता रही थी उस समय भी, हज़ारो इच्छाग्रो के होते हुए भी, उसे तकलीफ नही थी। जबतक जाल अच्छे थे, मछलियां पकडी ही जाती थी ग्रैार जब तक मछलिया मिलती थीं, नया जाल

बनाने लायक सूत मिलही सकता था। अस्तु खाने की उसे तकलीफ नहीं थी पर यहां इस अंधेरी गली के अंधेरे मकान में तो उसे दाने का भी मोहताज होने का मैाका आ रहा था और वह उस दिन को डर रही थी जब अलबर्ट कह देगा, "मां आज तो एक भी पैसा नही है॥"

अलबर्ट भी बहुत कुछ बदल गया था, अमीरी शैा-कीनी और ऐयाशीं के फेर में पडे हुए उसने जिस दैालत को मिट्टी समझा हुआ था वह न रहने से क्या गत होती है यह अब पहिले पहिल उसे मालूम हुआ था। फिर भी वह अपने दिल को बहुत मजबूती से सम्हाले हुए था और कभी रञ्ज या दुःख को अपनी सूरत पर फटकने नहीं देता था। यही सबब था कि मरियम को भी अपना दुःख छिपाना पडता था और होठो पर बनावटी हंसी रखनी पडती थी॥

-आज ठीक उस समय जब कि मैडम दङ्गली छिब्रे से बिदा होकर सीढ़ियां उतर रही थीं अलबर्ट अपनी मां से बातें कर रहा था॥

अल०। बिना काउण्ट का रुपया लिये अब काम नही चल सकता॥

मरि०। पर हमें वह रुपया लेना चाहिये?

अल०। जरूर, पर चूं कि वह मारसेलीज में मिस्टर डोनर के मकान के बगीचे में गडा है इस लिये पहिले मारसेलीज जाना होगा। सो भी कोई मुश्किल नही

है। मैंने सब खर्च जोड लिया है दो सौ रुपये मे हम दोनों वहां पहुच सकते हैं॥

मरि०। दो सौ मे ?

अल०। हां, इतने मे हो जायगा॥

मरि०। पर इतना आवेगा कहां से ?

अलबर्ट०। यह दो सौ के बदले चार सौ मौजूद हैं मैंने अपनी घडी और चेन चार सौ मे बेच दी, मुझे नही मालूम था कि वे इतनी कीमती थी। अस्तु दो सौ खर्च के भी दो सौ हमारे पास बच जायगा॥

मरि०। इस जगह का किराया कुछ बाकी है॥

अलबर्ट०। हां पैंतीस रुपया, वह मेरे पास अलग मौजूद है मैं दे दूंगा। इसके सिवाय और भी कुछ है॥

बड़ी सावधानी से लपेटा और भीतरी जेब मे रक्खा हुआ एक कागज अलबर्ट ने निकाला और खोला, मरियम ने देखा कि उसमे हजार रुपये का एक नोट है। उसने ताज्जुब से पूछा, "यह कहा से आया !!"

अल०। (सिर नीचा करके) अगर तुम घबडाओ नही तो मैं कहूं। यह मुझे सरकार से मिला है॥

मरि०। सो कैसे ?

अल०। अफ्रीका के लिये जो पलटन तैयार हो रही है उसमें भरती होनेवाले हर एक सिपाही को दो हजार रुपया मिलता है। एक हजार यह है, एक हजार साल भर बाद मिलेगा॥

मरि०। हाय ! अपनी जिन्दगी बेच कर !!

अल०। (बनावटी हंसी से) घबड़ाओ मत मैं मरूंगा नही। अच्छा तो अब ठीक निश्चय हो गया कि तुम मारसेलीज में जाकर मिस्टर डोनर के मकान में रहो और इन चार हजार रुपयों पर गुजारा करो जो दो बरस के लिये काफी है। तब तक मैं सिपाही हो कर अफ्रीका जाता हूं और कमाने खाने लायक लेकर आता हूं॥

मरि०। क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे बिना मैं दो बरस तक जीती रहूंगी?

अल०। (प्यार से उसका हाथ पकड़ कर) मां! घबड़ाने से काम नहीं चलता! आखिर अगर मैं कमाऊंगा नही तो तुम खाओगी क्या? और फिर अब तो मैंने नाम लिखा लिया!!

मरियम०। (ठण्ढी सांस ले कर) खैर तुम अपनी मर्जी के अनुसार करो, मैं ईश्वर की इच्छा के अनुसार रहूंगी॥

अल०। अपनी मर्जी नही, क्या तुम समझती हो कि मैं खुशी से यह काम कर रहा हू, नही, जरूरत मुझसे यह करा रही है। अफ्रीका में सिपाही को दौलत और रुतबा दोनों ही मिल सकता है। अगर मेरे भाग्य अच्छे हुए तो मैं दो बरस बाद अमीर और तगमों से ढंका हुआ लौटूंगा, अगर नही तो वहीं मर जाऊंगा और तब तुम भी अगर चाहना तो मर जाना। हमारी मुसीबतों की ज्यादती ही उनका खातमा कर देगी।

मैं जानता हूं कि तुम दिलेर और बहादुर हो तभी मैं यह कह रहा हूं॥

मरियम०। अच्छा फिर जो तुम कहते हो वैसाही सही॥

अल०। (खुश हो कर) अफ्रीका पहुंचकर मैं अमीर हो जाऊंगा मिस्टर डोनर के मकान में पहुंच तुम्हें शान्ति मिलेगी। अस्तु तुम आज रवाना हो जाओ,मैं दो तीन दिन बाद आऊंगा जिसमें हमें एक दूसरे से अलग होने की आदत पडे। इसके सिवाय मुझे यहां कुछ और काम भी हैं॥

थोडी देर और बातचीत कर अलबर्ट अपनी मां के साथ कोठडी के बाहर निकला। जिस समय वह सीढ़ियां उतर रहा था उसकी निगाह एक दूसरे आदमी पर पडी जो इनके पीछे पीछे सीढी उतर रहा था। अलबर्ट ने डिब्रे को पहिचाना और ऐसी जगह पर उसे देख ताज्जुब से कहा, "डिब्रे!" डिब्रे भी उसे देख कुछ ताज्जुब से बोला, "अलबर्ट तुम यहां!! यह तुम्हारे साथ और कौन है?"

अलबर्ट ने अपनी मां से कहा, "मां! यह मिस्टर डिब्रे हैं जो किसी समय मे हमारे दोस्त थे।" डिब्रे ने मरियम को सलाम कर कहा—"किसी समय में क्यो? क्या अब नहीं हू? मुझे आपका हाल सुन बहुत अफसोस हुआ,अगर मुझसे कोई काम चल सके तो मैं सब तरह से तैयार हूं॥"

अल०। अब हमारा कोई दोस्त नहीं है, आपने मुझे पहिचान लिया इसी के लिये मैं धन्यवाद देता हूं। हमें किसी चीज की जरूरत भी नहीं है क्योंकि हमारे पास अभी पांच हजार रुपया है और हम लोग आज पैरिस छोड रहे हैं॥

डिब्रे के चेहरे पर यकायक लाली आ गई जिसके जेब में इस समय सोलह लाख रुपया था। इच्छा न होने पर भी उसके दिल में यह खयाल दौड़ गया कि इस मकान में ऐसी दो औरतें थीं जिनपर एकही तरह की मुसीबत आई थी पर एक तेरह लाख रुपया होते हुए भी बेइज्जत और गरीब थी और दूसरी पांच हजार में इज्जतदार और अमीर थी। उसके दिल पर इस बात का कुछ ऐसा असर हुआ कि वह अलबर्ट से बात करना भी भूल गया और कुछ सोचता हुआ घर के बाहर निकल गया॥

जिस समय मारकर्फ अपनी मां को मारसेलीज के लिये रवाना करके सफरी गाड़ी में बैठा रहा था ठीक उसी समय सामने के एक मकान की खिड़की में खडा एक आदमी इन दोनों की तरफ देख रहा था। जब वे दोनों आंसू पोछते हुए एक दूसरे से अलग हुए और गाड़ी रवाना हुई उस समय इस आदमी के मुंह से भी एक आह निकल गई और उसने ठंढी सांस लेकर कहा, "हाय! मैं किस तरह इन दो बेकसूरों की छिनी हुई प्रसन्नता इन्हें लौटाऊं! ईश्वर! मेरी मदद कर!!"

आठवां बयान ।

कैदी ।

एण्ड्रिया केवेलकेण्टी का मुकद्दमा अभी तक शुरू नही हुआ है और वह जेल खाने में ही बन्द है ॥

न तो गिरफ्तार होती समय और न बाद को ही कभी उसने किसी तरह का फसाद या बावेला मचाया यहां तक कि अपने बचाव का भी उसने कोई बन्दोबस्त नही किया, न तो अपने किसी दोस्त ही को खबर दी न अपने मुरब्बी मैाण्ट क्रीटो ही से मदद मांगी। जब कभी अपनी भयानक हालत की तरफ उसका ध्यान जाता था तो वह मन ही मन सिर्फ यह कह कर रह जाता था "जरूर मुझ पर किसी ताकतवर आदमी का हाथ है। ऐसा न होता तो यकायक मेरी सब मुसीबतें इस तरह दूर हो मैं इतना अमीर न हो जाता, देखते देखते जो ऐसा नामवर घराना, ऐसे मानी पिता, इतने दोस्त मुरब्बी मेरे होगये यह, वेबुनियाद नहीं, मेरी शादी जैसी ऊंची जगह तै हुई थी, वह भी केवल किस्मत की निशानी नही थी। अब जो मेरे ऊपर यकायक यह आफत आ गई है उसका सबब, जरूर यही है कि मेरा मुरब्बी आज कल शायद यहां है नही, जैसे ही वह यहां पहुंचा या उसे मेरी हालत का पता लगा वैसे ही सब ठीक हो जायगा और मैं अपने को जेलखाने के बाहर पाऊंगा, फिर फजूल मेहनत करने से फायदा !-

इस समय भी अपने जेलखाने की काल कोठड़ी में बैठा एण्ड्रियो इसी तरह की बातें सोच रहा था जब कि यकायक कोठड़ी का दरवाजा खुला और जेलर ने कड़ी आवाज में उसे बाहर निकलने को कहा। वह धड़-कते हुए कलेजे के साथ बाहर आया और उस समय तो उसका कलेजा और भी उछलने लगा जब उसने देखा कि जेलर उसे लिये हुए उधर जा रहा है जिधर कैदियों से मुलाकात करने को आये हुए आदमी बैठाये जाते थे। इसके बाद जब उसने बटूशियो को बैठा पाया तब तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना ही न रहा और उसे विश्वास हो गया कि उसका मददगार आ पहुंचा और उसकी किस्मत अब पलटा खाया ही चाहती है॥

बटूशियो के पास एण्ड्रिया को छोड़ जेलर कुछ दूर हट गया और बटूशियो ने उठ कर कहा—"आओ वेण्डेटो! कहो अच्छी तरह तो हो?"

एण्ड्रिया०। धीरे धीरे, इतने जोर से नहीं!!

बटूशियो०। (हंस कर) क्यों डर किस बात का है?

एण्ड्रिया०। (पास मे बैठ कर) अच्छा कहो, क्या काम है? क्यों आये हो? और तुम्हें किसने भेजा है?

बटू०। अब इतनी जल्दी?

एण्ड्रिया०। फजूल बातों से क्या फायदा, आखिर तुम्हें किसी ने भेजा होगा तभी तो आये हो?

बटू०। नहीं मैं आपही आया हूं॥

एग्डि०। तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं जेलखाने में हूं॥

वट्रू०। किसी तरह पता लग गया!!

एग्डि०। अच्छा कुछ मेरे बाप का हाल सुनाओ?

वट्रू०। क्या तुमने मुझे पहिचाना नहीं? तुम्हारा बाप तो मैं हू और कौन है?

एग्डि०। तुम! तुम मेरे बाप थोडी हो हो? तुमने तो सिर्फ मुझे पाला है। क्या तुमने मुझे लाखों रुपये दे दिये? क्या तुमने मेरे लिये एक इटली का बुड्ढा बाप बना कर मंगवाया? क्या तुमने मुझे उस दावत मे बुलवाया जो आटविल के एक महल में हुई थी जिसकी याद अभी तक नही भूलती, जिस में पैरिस के सब चुने हुए लोग मौजूद थे और जिसमें वह मजिस्ट्रेट भी था जिससे दोस्ती न बढ़ा कर मैंने गलती की नही तो आज वह मेरे बहुत काम आता? बताओ यह सब क्या तुमने किया या क्या आज तुम मेरे लिये दस बीस लाख की जमानत देकर मुझे इस कम्बख्त जगह से छुडाओगे?

वट्रू०। तब यह सब किसने किया!

एग्डिया०। मेरे असली बाप—काउण्ट मौण्ट क्रीटो ने!!

वट्रू०। खबरदार! ऐसी बात भी जुबान पर न लाना!!

एग्डिया०। (वट्रू स्थियो के भाव से कुछ डर कर) वाह! क्यो!!

वटू०। उस आदमी पर जिसका तुमने अभी नाम लिया ईश्वर की बहुत भारी कृपा है, वह तुम्हारे ऐसे कमीने को कभी उसका लड़का बनाकर इस दुनिया में नहीं भेजेगा॥

एरिड्र०। ओह! फजूल बात! जो मैं कहता हूं वह बहुत ठीक है और मैं इसे साबित.... .. ....

वटू०। अबे चुप रह! क्या तू समझता है कि किसी नौसिखुए से तुझे वास्ता पड़ा है या अपने साथी कैदियों से काम पड़ा है। याद रक्खो कि तुम बड़े भयानक हाथों में पड़े हो। इस समय वे तुम्हारी मदद को उठे हैं, उन से मदद ले लो, उस बज्र से खिलवाड़ न करो जो उन हाथों ने थोड़ी देर के लिये हटा दिया है, अगर तुम उसकी मर्जी के बखिलाफ चलोगे तो वह फिर तुम्हारे सिर पर गिरेगा॥

एरिड्र०। (जिद्दी पन से) चाहे जो हो, मैं मरूं या जीऊं, पर अपने असली बापका नाम मैं जरूर जानूंगा। इज्जत बेइज्जत से मुझे क्या? इसके लिये अमीर झख मारें और परवाह करें जिनका इससे नुकसान है मेरा क्या बिगड़ेगा!! मैं तो ... ...

वटू०। अच्छा तो तुम अपने बाप का नाम जानना ही चाहते हो!

एरिड्र०। (खुशी से) हां हां!!

वटू०। अच्छा तो मैं बताता हूं सुनो ... .

इसी समय यकायक जेलर ने पास आकर कहा—

"बस अब समय बीत गया, कैदी को अब जांच करने वाले जज के पास जाना होगा ॥"

एण्डिया का चेहरा सुस्त होगया पर वटूंग्रियो ने धीरे से कहा, "अच्छा मैं कल फिर आऊंगा तब तुम्हें बताऊंगा ॥"

एण्डिया बोला—"हां जरूर, भूलना मत" वटूंग्रियो ने कहा, "कभी नहीं ।" और तब वह जेलखाने के बाहर चला गया । जेलर एण्डिया को लिये दूसरी तरफ चला गया । जाते जाते एण्डिया मन में कह रहा था, "देखो मैं कहता न था कि मेरा वह गुप्त मददगार जरूर मेरी मदद करेगा ॥"

नौवां बयान ।

न्याय ।

पाठकों को याद होगा कि वेलेण्टिन के मर जाने पर इटालियन पादड़ी एबी बसूनी ने उसकी लाश के पास प्रार्थना करने का भार लिया था और केवल वह तथा बूढ़ा नोटीर ही मृत वेलेण्टिन के पास रह गये थे । न जाने पादड़ी की प्रार्थना के फल से या उसकी ज्ञान देने वाली बातो और दयालुता के साथ समझाने बुझाने से मिस्टर नोटीर का कष्ट बहुत कुछ कम हो गया था और वे अपना सब खेद और दुःख भूल कर इतना शान्त हो गये थे कि वे लोग जो वेलेण्टिन पर उनके प्यार

का हाल जानते थे देख कर ताज्जुब करते थे॥

मिस्टर विलफोर्ट ने उस दिन के बाद अभी तक अपने पिता से मुलाकात नहीं की थी। मकान के सब नौकर बदल कर नये नौकर रख लिये गये थे और इन्हीं के जरिये विलफोर्ट का सब काम काज चलता था जो अपने घर के या बाहर के किसी भी आदमी से जुलता नही था। वह एक मन से उस खून के मुकद्दमे की जांच में लगा हुआ था जिसके साथ काउण्ट मौण्ट क्रीटो का नाम जुड़ा होने के कारण पैरिस में बड़ी हलचल मच गई थी। वेलेण्टिन के मरने से विलफोर्ट इतना दुखी था कि उसका किसी काम में मन ही नहीं लगता था सिर्फ अपने इस मुकद्दमें मे ही वह पड़ा रहता था, इसीमें रात दिन जुटे रहकर उसने वेण्डेटो के खिलाफ बहुत पक्का मुकद्दमा बना लिया था, और यही करने से उसका दिल भी कुछ बहलता था अस्तु कोशिश करके उसने अबकी के सेशन में यही पहिला मुकद्दमा रक्खा था। उसे विश्वास था कि इस मुकद्दमे में जीत होने और खूनी को फांसी होने से उसकी नामवरी और भी बढ़ेगी॥

इस बीच मे सिर्फ एक दफे उसके बाप ने उसको देखा देखी हुई थी। विलफोर्ट अपने बाग की एक कुर्सी पर बैठा हुआ अपनी स्त्री और लड़के की तरफ देख रहा था जो उस से थोड़ी दूर पर थे, उसकी स्त्री कुछ सी रही थी और लड़का गेंद खेल रहा था, लड़के का

फेंका हुआ गेंद मकान की एक खिड़की में चला गया और जब विलफोर्ट की निगाह उठी तो उसने नैाटीर को उस खिड़की के पास अपनी कुर्सी पर बैठे देखा। नैाटीर एक टक किसी की तरफ देख रहा था और उसकी निगाहों से इतना क्रोध और घृणा टपक रही थी कि विलफोर्ट चौंक उठा। उसकी निगाह की सीध में देखने से मालूम हुआ कि वह नजर मैडम विलफोर्ट के लिये थी और यह जानते ही विलफोर्ट कांप गया॥

मैडम से हटकर नैाटीर की निगाह एक बार विलफोर्ट पर पड़ी और फिर घूम कर दूनी आग बरसाती हुई मैडम पर गिरी। विलफोर्ट को अपने पिता का भाव समझने में देर न लगी और जब दूसरी दफे नैाटीर ने उसे देखा तब तो वह बिल्कुल ही बरदाश्त न कर सका और उसे उठ कर नैाटीर के पास जाना ही पड़ा। नैाटीर ने एक मतलब से भरी निगाह उसकी तरफ घुमाई और तब फिर उसकी स्त्री की तरफ देखा मानो उसे कोई भूला हुआ वादा याद करा रहा हो॥

बिलफोर्ट को इतनी ताकत न थी कि इस बिना जबान के तगादे को देखा अनदेखा कर सके। नैाटीर की निगाह मानों उसके कलेजे को छेद रही थी जिससे लाचार हो उसने खिड़की की तरफ मुंह उचा कर के कहा, "पिता! घबड़ाओ मत, एक दिन की और मोहलत दो मैं अपना वादा जरूर पूरा करूंगा।" नैाटीर ने इन बातों को गौर से सुना और तब अपनी निगाह

दूसरी तरफ घुमा ली। विलफ़ोर्ट का मानो दम घुट रहा था उसने अपने कोट के बटन खोल डाले और एक दम दौड़ता हुआ अपने कमरे में आ कुर्सी पर गिर गया ॥

दूसरे दिन सोमवार था और आज ही उस बड़ी अदालत की बैठक थी जिसमें एरिड्या का मुकद्दमा सुना जाने वाला था। रात भर विलफोर्ट सोया न था। यह समय उसने सबूनों और इजहारों के इकट्ठा करने और अपनी बहस तथा जिरह को दुरुस्त करने में बिताया था। सुबह को थोडी देर के लिये उसकी झपकी टूट गई थी पर सूर्य की पहिली किरणों ने उसे जगा दिया और वह यह कहता हुआ आराम कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ—"आज न्याय का छूरा खूनी की गर्दन पर गिरेगा" आप से आप उसकी निगाह नोटीर की खिड़की की तरफ उठ गई जहां उसने कल उसे बैठा देखा था। यद्यपि खिड़की पर पर्दा पड़ा हुआ था पर विलफोर्ट को ऐसा मालूम हुआ कि उस पड़दे की आड़ में से उसके बाप की निगाहें उसे देख रही हैं, वह उस तरफ हाथ उठाकर भर्राये गले से बोला, "हां, हां, आजही ! आज ही !!" उसका सिर उसकी छाती पर गिर गया और वह किसी गम्भीर और दुखदाई चिन्ता में डूब गया ॥

कमरे का दर्वाजा नैाकर ने खोला और आहट पा कर विलफोर्ट ने सिर उठाया, देखा कि नैाकर उसकी चीटिये और एक प्याला कहवा ला रहा है। उसने प्याले

की तरफ इशारा करके पूछा, "यह क्या है?" नैाकर बोला, "कहवा।" विलफोर्ट ने पूछा, "मैंने तो नहीं मांगा? किसने दिया है?" उसने जवाब दिया, मैडम ने दिया है श्रोर कहा है कि श्राज श्रापको बहुत बोलना होगा श्रोर मेहनत पड़ेगी, इससे इसे पीलें॥"

नैाकर वह प्याला श्रोर चीठियें टेबुल पर रख चला गया श्रोर विलफोर्ट उदासी के साथ उस तरफ देखता रहा यकायक वह उठा श्रोर कांपते हुए हाथों से उसने वह प्याला उठा एक ही सांस मे पी लिया। जो उसे देखता वही कह देता कि विलफोर्ट ने उस प्याले में जहर होने का गुमान करके ही उसने इस नीयत से पी लिया था कि जहर श्रपना काम करेगा श्रोर उसे एक दुःखदाई कर्तव्य के पूरा करने से बचावेगा। इसके बाद वह उठा श्रोर इधर से उधर टहलने लगा पर उस कहवे का कोई बुरा असर न हुश्रा। भोजन का समय होगया पर उसने कुछ खाया नहीं, नैाकर फिर कमरे में श्राया श्रोर बोला—"मैडम ने कहा है कि ग्यारह बजता है श्रोर श्रदालत बारह बजे से बैठेगी॥"

विल०। तब?

नैाकर०। वे कपड़ा पहिन कर तैयार हैं, श्राप जब जांय तो उन्हें साथ लेते जांय, वे भी श्राज का मुकद्दमा देखा चाहती हैं॥

विलफोर्ट ने कड़ी श्रावाज में कहा—"हां! वे श्रदालत जाया चाहती हैं!" नैाकर डर कर पीछे हट

गया और बोला, "यदि आप की इच्छा न हो तो मैं वैसा ही कह दूं।" विलफोर्ट कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, "उनसे कह दो अपने कमरे में रहें, मैं अभी वहीं आता हूं॥"

विलफोर्ट ने अदालती पोशाक पहिनी और कागज पत्र बगल में दबाये, इसके बाद दर्वाजे पर आकर खड़ा हुआ। उसका चेहरा पीला हो रहा था और ठण्ढे माथे पर पसीने की बूंदें आ गई थी, थोड़ी देर बाद एक गहरी सांस ले उसने उस पसीने को पोंछा और तेजी के साथ चल कर अपनी स्त्री के कमरे में पहुंचा अब उसके चेहरे से कड़ाई जाहिर हो रही थी और आंखों से दूढ़ता। मैडम खूब ठाठदार पोशाक पहिने अदालत जाने को तैयार बैठी अपने लड़के एडवर्ड से खेल रही थीं पर विलफोर्ट को इस तरह आते देख कुछ चौंक गई और तब बोली, "तुम्हारा चेहरा इतना पीला क्यों है क्या रात भर काम करते रहे? भोजन क्यों नहीं किया? मुझे अदालत ले चलोगे?"

मैडम इतनी बातें पूछ गई पर विलफोर्ट ने एक का भी जवाब न दिया बल्कि अपनी कड़ी निगाह एडवर्ड पर डाल कर कहा, "एडवर्ड तुम बाहर जाओ! मुझे तुम्हारी मां से कुछ बाते करनी है!!"

मैडम विलफोर्ट अपने पति का यह ढङ्ग देख कांप उठी। एडवर्ड ने अपनी मां की तरफ देखा पर जब उसने बाहर जाने के बारे में कुछ नही कहा तो वह

लापरवाही के साथ अपनी जगह पर ही बैठा रहा। विलफोर्ट गुस्से से गरज कर बोला, "एडवर्ड!! सुनता नहीं! जा बाहर अभी!!!"

लड़के ने अपने बाप के मुंह से इतनी कड़ी बात कभी सुनी ही न थी, वह एक दम पीला हो गया। विलफोर्ट ने यह देख अपना गुस्सा शान्त किया और तब एडवर्ड के बदन पर हाथ फेर और प्यार से चूमकर बोला, "जाओ बाहर जाओ।" वह चला गया और विलफोर्ट ने कमरे का दर्वाजा अन्दर से बन्द कर लिया॥

न जाने क्यों आज की बातें देख मैडम विलफोर्ट का कलेजा कांप उठा, पर उसने अपने भाव को खूबही छिपाया और मुस्कुरा कर टेढ़ी निगाह से देखते हुए कहा, "आज क्या मामला है॥"

उसकी मुस्कुराहट ने विलफोर्ट के दिल को और भी कड़ा कर दिया। वह अपनी स्त्री के सामने खड़ा हो कर बोला—"मैडम! पहिले यह बताओ कि जिस जहर से तुमने इतने लोगों को मारा वह रक्खा हुआ कहां है?"

मैडम की हालत ठीक उस चिड़िया की सी होगई जो अपने ऊपर बाज को उड़ते हुए देख रही हो। डर ने उस पर इतना कड़ा हमला किया कि मुंह से आवाज भी निकलना मुश्किल होगया। उसने उठने की कोशिश की पर उठा न गया, एक दम सकते की सी हालत हो गई और चेहरा मुर्दों की तरह पीला हो गया॥

विलफोर्ट ने फिर गरज कर पूछा, "मैं फिर पूछता हूं कि जिस जहर से तुमने मेरे ससुर, सास, नौकर और लड़की को मारा वह कहां रक्खा हुआ है॥"

मैडम अपने मुंह को ढांप कर रुकते गले से बोली, "ओह! आप क्या कह रहे हैं?"

विलफोर्ट०। तुम सवाल मत करो, जवाब दो!!

मैड०। यह बात मेरा पति पूछता है या मजिस्ट्रेट!!

विल०। मजिस्ट्रेट, मैडम मजिस्ट्रेट!!

डर के मारे उस औरत का तमाम बदन पत्ते की तरह कांपने लग गया, चेहरे पर मुर्दनी छा गई और सांस लेने में रुकावट पैदा होगई, उसके रुकते हुए गले से कुछ अस्पष्ट आवाज निकली जो समझ में नहीं आ सकती थी॥

विल०। तब तुम इस बात से इन्कार नहीं करतीं! तुम्हारे पास इस इलजाम का कोई जवाब नहीं है! तुमने खून किये! (हाथ बढ़ाकर मानो पकड़ा चाहता है) तुमने बड़ी चालाकी से काम किया पर फिर भी पहिली ही मौत के बाद मुझे मालूम होगया कि मेरे घर में कोई जहर देने वाला पैदा होगया। डाक्टर एवरानी ने मुझे होशियार कर दिया पर तुम्हारे प्रेम में डूबे हुए मुझ को तुम पर शक नहीं हुआ बल्कि मैंने एक देवी पर सन्देह किया (ईश्वर मुझे क्षमा करे) मगर जब खुद वेलेण्टिन ही मर गई तो सिर्फ मेरे ही दिल से नहीं बल्कि औरों के दिल का शक भी जाता रहा और सब

मैडम एक चीख मारकर उठ खड़ी हुई, उसके मुंह से फेन निकलने लगा । आस्मान की तरफ हाथ उठा कर वह बोली, "नहीं नहीं, क्या तुम मुझे अपने हाथ से जहर दिया चाहते हो !!"

विल० । मैं चाहता हूं कि तुम उस जहर का खुद भी जायका देखो जिससे चार चार बेकसूरों को तुमने मारा है और फांसी से भी बचो ॥

मैडम० । दया ! दया !!

विल० । न्याय ! न्याय !! मैं न्याय करने के लिये मजिस्ट्रेट बनाया गया हूं और मैं वही करूंगा । इस समय अगर कोई दूसरी औरत मेरे सामने होती तो चाहे वह फ्रान्स की रानी होती तो भी मैं उसे फांसी लटका देता ! तुम्हारे ऊपर सिर्फ यही दया करता हूं कि फांसी की तकलीफ से बचाकर खूब अच्छे, मीठे, कातिल जहर के असर से मरने को कहता हूं ॥

मैडम० । ओह ! अबकी माफ करो, एक बार दया करो ! सोचो, मैं तुम्हारी स्त्री हूं । मुझपर दया करो ॥

विल० । तुम खूनी हो ॥

मैडम० । ईश्वर के नाम पर रहम करो ॥

विल० । नहीं ॥

मैडम० । उस प्रेम के नाम पर जो कभी मेरे लिये तुम्हारे दिल में था मुझे माफ करो ॥

विल० । नहीं, नहीं ॥

मैडम० । हमारे लड़के एडवर्ड के नाम पर मुझे

मैडम०। सजा! सजा?

विल०। हां सजा! तुमने एक ही कसूर को चार दफे किया इस से क्या समझती हो कि तुम बच जाओगी! क्या तुम मजिस्ट्रेट की औरत हो इससे समझती हो कि बच जाओगी। नहीं मैडम नहीं अब कुछ नहीं हो सकता! तुमने अगर अपने लिये उस जहर की दस पांच बूंदें नहीं बचा रक्खी हैं तो तुम्हें फांसी चढना होगा॥

मैडम के मुंह से एक डरावनी चीख निकली, उसके चेहरे पर मुर्दनी छागई। विलफोर्ट बोला, "तुम फांसी का डर न करो तुम्हारी बेइज्जती से मेरी भी बेइज्जती होगी इससे अगर तुम मेरी बात मानोगी तो फांसी से बच जाओगी!!

मैडम०। (लड़खड़ाती आवाज से) आपका क्या मतलब है?

विल०। मैं चाहता हूं कि पैरिस के बड़े मजिस्ट्रेट की स्त्री अपनी करनी से अपने पति और लडके की नेकनामी पर बट्टा नहीं लगावे। उसके फांसी चढने से बडी बेइज्जती होगी!!

मैडम०। (घबड़ाहट से) नहीं! नहीं!!

विल०। बेशक, अगर तुम उस बेइज्जती से मुझे बचा दोगी तो मैं तुम्हें धन्यवाद दूंगा॥

मैडम०। धन्यबाद! किस लिये! किस बात पर!

विल०। यह जानने पर कि वह जहर तुम कहां रखती हो!

यह "बिदा" मैडम बिलफोर्ट के ऊपर फांसी के फन्दे की तरह गिरी, वह बेहोश हो गई। बिलफोर्ट दरवाजे में दोहरा ताला लगाता हुआ कमरे के बाहर निकल गया॥

दसवां बयान।

भण्डाफोर।

"प्रिन्स केवेलकरटी" का मुकद्दमा सुनने और देखने के लिये आज समूचा पैरिस अदालत में उमड़ा हुआ है॥

अपनी थोडे दिनों की खुश किस्मती में एण्ड्रिया इस तरह खुल खेला था कि उसके सैकड़ों ही दोस्त और हजारों ही जान पहिचान वाले हो गये थे। एक तो केवेलकरटी ऐसा मशहूर नाम दूसरे करोड़ों रुपये की जायदाद होने की सुन गुन अस्तु-ऐसों को दोस्तों की कमी ही क्या हो सकती थी। जो लोग उसे जानते थे वे कोशिश करके अदालत में पहुचे थे (जहा जगह की ज्यादती न थी) और जो नही जानते थे वे भी इस विचित्र खूनी का हाल सुनने को पहुंच गये थे जिसने काउण्ट मौण्ट क्रीटो के मकान में पहुच कर खून करने की जुर्रत की थी॥

हमारे दोस्त ब्यूशेम्प डिब्रे और शेटू रेनाड भी अदालत में मौजूद थे और मजाक मिले हुए ताज्जुब

इस बार छोड़ दो॥

विल०। नहीं, नहीं, नहीं, मैं फिर कहता हूं कि कभी नहीं। अगर मैं तुम्हें छोड़ दूंगा तो तुम मुझे और एडवर्ड को भी किसी दिन जहर दे दोगी॥

मैडम०। (पागलों की तरह चीख और हंस कर) मैं एडवर्ड को जहर दे दूंगी! हा, हा, हा!!

एक डरावनी हंसी ने उसके गले को रोक दिया और वह जमीन पर विलफोर्ट के पैरों के पास गिर गई। विलफोर्ट ने झुक कर कहा, "देखो! मैं अदालत जाता हूं! अगर मेरे लौटते तक न्याय नहीं हुआ तो मैं अपने हाथ से तुम्हें मुजरिम बना कर जेलखाने भेजूंगा॥"

मैडम के हवास ठिकाने नहीं थे, डर और घबराहट ने उसे अपना पूरा शिकार बना लिया था। वह बिल्कुल मुर्दा सी हो रही थी सिर्फ उसकी आंखों ही में चमक थी॥

विलफोर्ट फिर बोला, "सुना तुमने! मैं वहां एक खूनी को सजा दिलाने जा रहा हूं, अगर यहां लौटने पर इस खूनी को मैं जिन्दा पाऊंगा तो आज की रात तुम्हारी जेल में कटेगी॥"

मैडम विलफोर्ट के मुंह से एक आह निकली और वह फर्श पर गिर गई। विलफोर्ट को शायद उस पर कुछ दया आई, उसके चेहरे की कड़ाई कुछ कम हुई और उसने नीचे मुंह कर के धीरे से कहा—"बिदा! मैडम बिदा!!"

ग्रेटू०। तुम लोगों ने चाहे उसे प्रिन्स समझा हो पर मैंने तो सूरत देखते ही कह दिया था कि यह कभी किसी ऊंचे घराने का नही है॥

ब्यूशेम्प०। अब चाहे लोग कुछ कहें, पर जब तक भण्डा फूटा नही था तब तक तो वह सच्चा प्रिन्स बना हुआ था। मैंने उसे मन्त्रियों के घर पर देखा है॥

ग्रेटू०। ओह! मन्त्रियो को शाहजादों का हाल क्या मालूम? अच्छा यह तो बताओ मिस्टर विलफोर्ट से भी मिले हो?

ब्यूशेम्प०। भला यह सम्भव था? अपनी घरेलू मुसीबतों और खास कर लड़की की इस विचित्र मौत के बाद से...

डिब्रे०। विचित्र मौत क्यों?

ब्यूशेम्प०। वाह क्या तुम समझते हो कि इतनी मौतें एक साथ होना स्वाभाविक है! मगर यह क्या! वह कौन औरत है?

डिब्रे और ग्रेटू०। कहां? किधर?

ब्यूशेम्प०। वह दरवाजे के पास! अगर मैं धोखा नही खाता हू तो जरूर यह वही है?

डिब्रे०। कौन है?

ब्यूशेम्प०। मैडम दङ्गलो॥

डिब्रे०। ओह असम्भव! वह भला यहां क्यों आवेगी! वह जरूर कोई दूसरी ही होगी। काली जाली से मुंह ढांके कोई परदेशी शाहजादी है, सम्भव है

साथ एण्ड्रिया के बारे में बातें कर रहे थे। शायद पाठकों को उनकी बातें दिलचस्प मालूम पड़े इससे उसका बयान कर देना बुरा न होगा॥

ब्यूश्रे०। वह लो हथकड़ी बेड़ी पहिने हमारे प्रिन्स जेल से आ पहुंचे॥

डिब्रे०। इतनी कम उम्र में यह कैसा मक्कार और कांइया है॥

श्रेटू रेनाड०। एक दम रुच्चा प्रिन्स (शाहजादा) ही बन बैठा॥

डिब्रे०। इसे फांसी होगी!

ब्यूश्रे०। यह तो हमलोगों की बनिस्बत तुम अच्छी तरह जान सकते हो क्योंकि मन्त्रियों की बातचीत में शामिल रहते हो। कल की दावत में थे न?

डिब्रे०। हां॥

ब्यूश्रे०। वहां आज की अदालत के जज भी रहे होंगे? उनसे बातें हुईं?

डिब्रे०। हां॥

ब्यूश्रे०। कुछ इस बारे में कहते थे?

डिब्रे०। विशेष कुछ नहीं सिर्फ यही कि एण्ड्रिया जितना धूर्त और चालाक मालूम पड़ता है वैसा है नही उलटे बड़ा ही बेवकूफ और कमजोर दिल का आदमी है॥

ब्यूश्रे०। वाह क्या कहना है, ऐसा आदमी कभी वैसा अच्छा प्रिन्स बन सकेगा जैसा यह बना था?

दोनों०। वह नौकर क्या कहता है॥

ब्यूशेम्प०। वह कहता है कि एडवर्ड के हाथ में कहीं से एक जहर की शीशी आगई है। जो कोई उसे मारता या डांटता है उसे ही वह जहर की तीन बूंद दे देता है। पहिले मीरां और उनकी स्त्री को दिया तब एक दिन बूढ़े बोरिस ने उसे मारा उसे दिया और अन्त में वेलेण्टिन को भी खतम किया॥

दोनों०। ओह यह तुम कोई गप्प हांक रहे हो॥

ब्यूशेम्प०। गप्प! तुम उस नौकर से पूछ लेना, वह बेचारा डर के मारे उस घर में कुछ खाता नही था॥

दोनों०। इस बात पर विश्वास नही होता॥

ब्यूशेम्प०। क्यों अविश्वास की इसमे क्या बात है क्या तुम टिचल्यू के लडके का हाल भूल गये जो अपने भाई बहिनों की कान में सूई घुसेड़ कर उन्हें मार डालता था। आज कल के लडके कम्बख्त बड़े पाजी होते हैं॥

शेटू०। चाहे कुछ कहो, पर इसपर विश्वास नही होता! काउण्ट मौण्ट क्रीटो नही दिखाई पड़ता क्यों!

ब्यूशेम्प०। इस लौंडे ने उसे भी तो धोखा दिया न! कई लाख रुपया उससे झटक लिया इसी से वह मुंह दिखाना नही चाहता। दूसरे आज वह गवाहों में होगा क्योंकि उसी के मकान में से वह जाकेट निकली थी जो खून से भरी उस टेबुल पर रक्खी है और की जेब से वह मशहूर चीठी निकली, की बेटी की शादी रोक दी॥

एरिड्रया की मां ही हो ! खैर तुम वेलेंपिटन की मौत के बारे में कुछ कह रहे थे॥

व्यूश्रेम्प०। हां, मगर यह तो कहो मैडम विलफोर्ट आज क्यों नहीं दिखाई पड़ रही हैं॥

डिब्रे०। न जाने क्यों नहीं आई। शायद किसी दवा दारू मे लगी हो। उसे नई नई दवाइयें बनाने का बड़ा शौक है, मैं उसे बहुत पसन्द करता हूं॥

शेटू०। और मैं उससे घृणा करता हूं॥

डिब्रे०। सो क्यों ?

शेटू०। क्यों का तो जवाब नहीं है, दिल ही तो है लोग क्यों प्यार करते हैं, क्यों...........

व्यूश्रेम्प०। अच्छा मेरी बात सुनो, विलफोर्ट के घर में जो लोग इतनी तेजी से मर रहे हैं इसका सबब यह है कि उसमें एक खूनी है॥

दोनों०। खूनी ? कौन ?

व्यूश्रेम्प०। एडवर्ड !! वह विलफोर्ट का छोटा लड़का॥

दोनों खिलखिला कर हँस पड़े। मगर व्यूश्रेम्प उन की हँसी की तरफ ख्याल न करके बोला, "हां मैं ठीक कह रहा हूं, यह सब एडवर्ड की ही करतूत है, और यह मुझे उनके एक नौकर से मालूम हुआ है जिसे मैंने कल नौकर रक्खा है; पर आज निकाल दूंगा क्योंकि वह बे तरह खाता है और प्रोक्योरर के घर में भूखे रहने की कसर मेरे यहां मिटा रहा है॥"

दोनों०। वह नौकर क्या कहता है ॥

ब्यूश्नेम्प०। वह कहता है कि एडवर्ड के हाथ में कहीं से एक जहर की शीशी आगई है। जो कोई उसे मारता या डांटता है उसे ही वह जहर की तीन बूंद दे देता है। पहिले मीरां और उनकी स्त्री को दिया तब एक दिन बूढ़े बोरिस ने उसे मारा उसे दिया और अन्त में वेलेण्टिन को भी खतम किया ॥

दोनों०। ओह यह तुम कोई गप्प हांक रहे हो ॥

ब्यूश्नेम्प०। गप्प! तुम उस नौकर से पूछ लेना, वह बेचारा डर के मारे उस घर में कुछ खाता नहीं था ॥

दोनों०। इस बात पर विश्वास नही होता ॥

ब्यूश्नेम्प०। क्यों अविश्वास की इसमे क्या बात है क्या तुम टिचल्यू के लड़के का हाल भूल गये जो अपने भाई बहिनो की कान में सूई घुसेड कर उन्हें मार डालता था। आज कल के लड़के कम्बख़्त बड़े पाजी होते हैं ॥

ब्रेटू०। चाहे कुछ कहो, पर इसपर विश्वास नही होता! काउण्ट मौण्ट क्रीटो नही दिखाई पड़ता क्यो!

ब्यूश्नेम्प०। इस लौंडे ने उसे भी तो धोखा दिया न! कई लाख रुपया उससे झटक लिया इसी से वह मुंह दिखाना नही चाहता। दूसरे आज वह गवाहो में होगा क्योकि उसी के मकान में से वह जाकेट निकली थी जो खून से भरी उस टेबुल पर रक्खी है और जिस की जेब से वह मशहूर चीठी निकली थी जिसने दङ्गलो की बेटी की शादी रोक दी ॥

एण्ड्रिया की मां ही हो! खैर तुम वेलेण्टिन की मौत के बारे में कुछ कह रहे थे॥

ब्यूशेम्प०। हां, मगर यह तो कहो मैडम विलफोर्ट आज क्यों नहीं दिखाई पड़ रही हैं॥

डिब्रे०। न जाने क्यों नहीं आई। शायद किसी दवा दारू में लगी हो। उसे नई नई दवाइयें बनाने का बड़ा शौक है, मैं उसे बहुत पसन्द करता हूं॥

शेटू०। और मैं उससे घृणा करता हूं॥

डिब्रे०। सो क्यों?

शेटू०। क्यों का तो जवाब नहीं है, दिल ही तो है लोग क्यों प्यार करते हैं, क्यों... ....

ब्यूशेम्प०। अच्छा मेरी बात सुनो, विलफोर्ट के घर में जो लोग इतनी तेजी से मर रहे हैं इसका सबब यह है कि उसमें एक खूनी है॥

दोनों०। खूनी? कौन?

ब्यूशेम्प०। एडवर्ड!! वह विलफोर्ट का छोटा लड़का॥

दोनों खिलखिला कर हँस पड़े। मगर ब्यूशेम्प उन की हँसी की तरफ खयाल न करके बोला, "हां मैं ठीक कह रहा हूं, यह सब एडवर्ड की ही करतूत है, और यह मुझे उनके एक नौकर से मालूम हुआ है जिसे मैंने कल नौकर रक्खा है; पर आज निकाल दूंगा क्योंकि वह बे तरह खाता है और प्रोक्योरर के घर में भूखे रहने की कसर मेरे यहां मिटा रहा है॥"

एण्ड्रिया ने खुद कोई वकील नही किया था इस से अदालत ने अपनी तरफ से एक वकील मुकर्रर कर दिया जो उसके पास जा खडा हुआ, यह एक नौजवान शख्स था जिसके चेहरे पर कैदी से कहीं ज्यादा बेचैनी दिखाई पड रही थी॥

अदालत की कार्रवाई शुरू हुई और विलफोर्ट का लिखा हुआ दावा पढ़ा जाने लगा। इस दावे में विलफोर्ट ने अपनी तमाम अक्ल खर्च कर दी थी, खूब चलती फिरती और असर करने वाली भाषा में उसने कैदी के जुर्मों का पूरा हाल लिखा था। लडकपन ही से उसकी बदकारियों का हाल दिखाया था और किस तरह जुर्मों की सीढ़ी पर वह एक के बाद एक पैर उठाता ही गया यह अच्छी तरह दिखाया था। इस दावे के सुनने से ही लोगों का विचार एण्ड्रिया की तरफ से बदल गया और सभों को अदालत का फैसला सुनने के पहिले ही निश्चय हो गया कि उसे अवश्य फांसी होगी, मगर एण्ड्रिया का उस तरफ कुछ भी ध्यान न था। उसकी निगाह बार बार विलफोर्ट पर पडती थी जो एक टक उसकी तरफ कडी निगाह से देखता हुआ चाहता था कि मुजरिम की आंखे नीची हों और वह कसूरवार साबित हो, पर उसकी कोशिश बेकार थी, एण्ड्रिया के चेहरे पर उलटे एक तरह की मुस्कुराहट थी। आखिर दावा खतम हुआ और जज ने कैदी से पूछा, "मुजरिम! अपना नाम और उम्र बताओ॥"

डिब्रे०। ठीक है, अच्छा मारल क्यों नहीं आया!!

श्रेटू०। मैं उसके घर पर तीन दफे गया पर उससे मुलाकात नहीं हुई, उसकी बहिन मिली थी पर उसने भी कुछ नहीं बताया कि आज कल वह कहां रहता है या क्या करता है, हां यह कहा कि हैं अच्छी तरह॥

व्यूश्रेरूप०। अच्छा अब बात बन्द करो, जज साहब आ पहुंचे॥

अदालत के प्यादे ने गला साफ करके 'चुप रहो' की आवाज लगाई, धीरे धीरे शोर गुल कम हुआ और जज जूरी और विलफोर्ट के आकर अपनी अपनी जगह पर बैठ जाने पर और भी कम होकर बिल्कुल बन्द हो गया सभों की निगाह और ध्यान अदालत की कार्रवाई की तरफ घूम गया॥

कुर्सी पर बैठते ही जज ने हुक्म दिया, "कैदी को लाओ।" सभों की निगाहें उस तरफ घूम गईं जिधर से कैदी आने को था। थोडी ही देर में कई सिपाहियों से घिरा एण्ड्रिया कटघरे में आ कर खडा हो गया। एण्ड्रिया की सूरत से किसी तरह की बेचैनी या घबराहट नही जाहिर होती थी बल्कि एक तरह की लापरवाही जाहिर हो रही थी। न उसके हाथ पैर कांपते थे न चेहरे पर पीलापन था, इस समय भी वह सुन्दर और भड़कीली पोशाक पहिने हुए था। आते ही उसने निगाह उठाकर जज जूरी और मजिस्ट्रेटों की तरफ देखा और जिसपर सबसे ज्यादा उसकी निगाह रुकी वह विलफोर्ट था॥

एण्ड्रिया ने खुद कोई वकील नहीं किया था इस से अदालत ने अपनी तरफ से एक वकील मुकर्रर कर दिया जो उसके पास जा खड़ा हुआ, यह एक नौजवान शख्स था जिसके चेहरे पर कैदी से कहीं ज्यादा बेचैनी दिखाई पड़ रही थी॥

अदालत की कार्रवाई शुरू हुई और विलफोर्ट का लिखा हुआ दावा पढ़ा जाने लगा। इस दावे में विलफोर्ट ने अपनी तमाम अक्ल खर्च कर दी थी, खूब चलती फिरती और असर करने वाली भाषा में उसने कैदी के जुर्मों का पूरा हाल लिखा था। लड़कपन ही से उसकी बदकारियों का हाल दिखाया था और किस तरह जुर्मों की सीढ़ी पर वह एक के बाद एक पैर उठाता ही गया यह अच्छी तरह दिखाया था। इस दावे के सुनने से ही लोगों का विचार एण्ड्रिया की तरफ से बदल गया और सभों को अदालत का फैसला सुनने के पहिले ही निश्चय हो गया कि उसे अवश्य फांसी होगी, मगर एण्ड्रिया का उस तरफ कुछ भी ध्यान न था। उसकी निगाह बार बार विलफोर्ट पर पड़ती थी जो एक टक उसकी तरफ कड़ी निगाह से देखता हुआ चाहता था कि मुजरिम की आंखे नीची हों और वह कसूरवार साबित हो, पर उसकी कोशिश बेकार थी, एण्ड्रिया के चेहरे पर उलटे एक तरह की मुस्कुराहट थी। आखिर दावा खतम हुआ और जज ने कैदी से पूछा, "मुजरिम! अपना नाम और उम्र बताओ॥"

एण्ड्र०। (साफ आवाज में) जज साहब! माफ कीजियेगा पर आपका सवाल का क्रम ऐसा है जिसे मैं मान न सकूंगा क्योंकि मेरा कहना है और मैं इसे साबित कर दूंगा कि मेरा मामला गैर मामूली है। मैं आप के सब सवालों का जवाब दूंगा पर जरा उलट फेर के साथ॥

ताज्जुब के साथ जज ने जूरियों और जूरियों ने एण्ड्रया की तरफ देखा, अदालत में मौजूद सब लोग भी ताज्जुब करने लगे पर एण्ड्रया कुछ भी विचलित न था। जज ने फिर पूछा, "तुम्हारी उम्र ?"

एण्ड्र०। मैं बता दूंगा पर अभी नहीं॥

जज०। (दुबारा) तुम्हारी उम्र ?

एण्ड्र०। इक्कीस वर्ष कुछ दिन में पूरे होंगे क्योंकि मैं सत्ताईस सितम्बर को सन १८१७ में पैदा हुआ था॥

विलफोर्ट ने जो कुछ लिख रहा था-इस तारीख का जिक्र सुन सिर उठाया॥

जज०। तुम किस जगह पैदा हुए थे ?

एण्ड्र०। पैरिस के पास ही आटविल में॥

विलफोर्ट ने दूसरी दफे सिर उठाया और एण्ड्रया की तरफ इस तरह देखा मानो किसी प्रेत को देख रहा हो, उसका चेहरा सफेद पड़ गया और सूरत से घबड़ाहट जाहिर होने लगी। उधर बेण्डेटो एक सुन्दर रेशमी रुमाल निकाल मुंह पोछने लगा॥

जज०। तुम्हारा पेशा ?

एण्ड्रिया०। पहिले मैं जालिया, फिर चोर, अब खूनी हूं॥

इस जवाब ने अदालत में एक तरह का शोर पैदा कर दिया। जज और जूरियो के चेहरे से घृणा प्रगट होने लगी। मिस्टर विलफोर्ट ने अपना हाथ माथे पर फेरा जो पहिले पीला था पर अब लाल हो कर जलने लगा था। तब यकायक वह कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ और पागलों की तरह इधर उधर देखने लगा॥

एण्ड्रि०। (मुस्कुराहट के साथ) प्रोक्योरर साहब! क्या आप किसी को खोज रहे हैं॥

विलफोर्ट अपनी कुर्सी पर गिर गया और जज ने कुछ कड़ी आवाज में कहा—"क़ैदी! अब क्या तुम अपना नाम बताओगे? जिस सङ्गदिली और गरूर के साथ तुमने अपने जुर्म बयान किये हैं उसके लिये तुम्हे अदालत की डांट मिलनी चाहिये! तुम शायद समझते हो कि ऐसा करने से तुम्हारी नामवरी है!!

एण्ड्रि०। (मुलायमियत के साथ) बेशक आपका कहना बहुत ठीक है और इसी सबब से मैंने आपको सवालों का सिलसिला बदल देने को कहा था॥

कमरे मे मौजूद लोगों का ताज्जुब और भी बढ़ गया। सब लोग समझ गये कि एण्ड्रिया सिर्फ़ झूठे घमण्ड से ही ऐसी बातें नहीं कह रहा है बल्कि उस काले बादल से जल्दी ही बिजली निकलने वाली है॥

जज०। तुम्हारा नाम?

एण्ड्र०। मैं नहीं कह सकता क्योंकि मुझे मालूम नहीं, पर अपने बाप का नाम बता सकता हूं॥

विलफोर्ट की हालत और भी खराब हो चली, उस के माथे और गालों पर से होती हुई पसीने की ठण्ढी बूंदें उन कागजों पर गिरने लगी जिन्हें वह अपने कांपते हुए हाथों से इधर उधर हटा रहा था॥

जज०। अच्छा तुम अपने बापका ही नाम बताओ॥

किसी के मुंह से कोई आवाज नहीं निकल रही थी, अदालत में गहरा सन्नाटा था। सब का ध्यान एण्ड्रया की तरफ था॥

एण्ड्र०। प्रोक्योरर डू रोई ही मेरे बाप हैं॥

जज०। प्रोक्योरर तुम्हारे पिता हैं!!

एण्ड्रया०। जी हां, मैं आपके प्रोक्योरर मिस्टर विलफोर्ट का ही लड़का हूं॥

इस जवाब ने अदालत भर में तहलका डाल दिया, जज जूरी और दर्शक सब अचम्भे के साथ एक दूसरे की तरफ देखने लगे, इसके बाद यकायक एण्ड्रया के ऊपर गालियों और बुरे शब्दों की बौछार पडने लगी, सभी उसकी ऐसी बे सिर पैर की बात सुन उसे धिक्कारने लगे, आखिर बड़ी मुश्किल से सिपाहियों ने लोगों को शान्त किया और जज ने कड़ी आवाज में मुजरिम से कहा, "कैदी! क्या तुम्हारा इरादा इस अदालत की बेइज्जती करने का है जो तुम ऐसी बात मुंह से निकालते हो!!"

कई आदमी विलफोर्ट के पास जाकर उसे दिलासा

देने लगे जो एण्डिया की बात सुन कर एक दम बद-हवास हो गया था और कई पुनः एण्डिया की तरफ बुरे शब्दों की बौछार करने लगे मगर एण्डिया इस बात से कुछ भी न घबराया बल्कि उसके चेहरे पर एक तरह की हल्की मुस्कुराहट दिखाई पड़ने लगी और उसने तन कर ऊंची आवाज में कहा, "ईश्वर जानता है कि मेरी यह बिल्कुल इच्छा नहीं है कि इस अदालत की जरा भी तौहीन करूं। अदालत ने मेरी उम्र पूछी मैंने बता दी, मेरे पैदाइश की जगह पूछी मैंने बता दी, मेरा नाम पूछा मैं नहीं बता सका क्योंकि मुझे मालूम नहीं, मैं अपने मां बाप का त्यागा हुआ लड़का हूं। हां अपने बापका नाम जानता था सो बता दिया और पुनः बताया कि मिस्टर विलफोर्ट प्रोक्योरर डू रोई ही मेरे पिता हैं। और इस बातका मेरे पास पक्का सबूत मौजूद है॥

एण्डिया ने ऐसे जोश के साथ यह बात कही कि लोगों की निगाह खामखाह विलफोर्ट की तरफ घूम गई जो इस तरह अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था मानो उसके ऊपर बिजली गिर गई हो॥

जज०। (परेशानी के साथ) मगर तुमने अपने पहिले इजहार में कहा था कि 'मेरा नाम बेण्डेटो है मेरे मां बाप मर गये और मेरी पैदाइश कार्सिका की है॥'

एण्डि०। हां उस वक्त मेरे जो कुछ जी में आया

मैंने कह दिया क्योंकि अगर असल बात बता देता तो वह कभी अदालत के सामने लाई नहीं जाती बीच ही में दबा दी जाती। अब अदालत के सामने और इतने आदमियों के बीच में मैं फिर और जोर देकर कहता हूं कि मैं २७ सितम्बर सन् १८१७ की रात को आटविल में पैदा हुआ था। मेरा जन्म २८ नम्बर केरो डे ला फाएटेन महल्ले के मकान के एक लाल रेशम से मढ़े कमरे में हुआ था। मुझे पैदा होते ही मेरे बाप ने उठा लिया, मेरी मां से कह दिया कि मरा हुआ लड़का पैदा हुआ है, और मुझे एक तौलिये में लपेट कर जिस पर एक 'ह' और एक 'न' बना हुआ था अपने बगीचे में ले जा और गड़हा खोद कर उसमें जीता ही गाड़ दिया॥

सब लोगों के बदन में यह बात सुन कंपकपी आ गई। लोगों ने देखा कि ज्यों ज्यों एण्डिया की बातें खुलती जाती हैं विलफोर्ट की हालत खराब होती जा रही है॥

जज०। तुम्हे यह सब बातें कैसे मालूम हुईं?

एण्ड्रि०। मैं बताता हूं। एक आदमी जिसे मेरे बाप से दुश्मनी थी और जिसने उन्हें जान से मार डालने की कसम खाई थी उस रात को अपनी कसम पूरा करने का मौका समझ कर पहिले से उसी बागीचे में आ छिपा था जिसमें मेरे बाप ने मुझे गाड़ा था। उसने एक झाड़ी में छिपे छिपे मेरे बाप को गड़हा खोद जमीन में कुछ गाड़ते देखा और उसी हालत में छूरे से उनपर वार

करके उन्हें सख्त जख्मी किया। इसके बाद यह समझ कर कि शायद उन्होंने कुछ रुपया पैसा गाड़ा हो उसने मिट्टी हटाई और मुझे निकाला। उस समय तक मुझमे जान मौजूद थी अस्तु उसने मुझे एक अस्पताल मे रख दिया जहां मेरा ५७ नम्बर था। तीन महीने बाद उसकी बहिन आकर मुझे अपने घर कार्सिका को लेगई। अस्तु पैरिस में पैदा होने पर भी मेरा रहन सहन कार्सिका में ही हुआ॥

कैदी कुछ देर के लिये रुका, अदालत में ऐसा सन्नाटा था कि सूई गिरने की आवाज सुनी जा सकती थी। जज ने कहा, "हां कहो" एण्डिया बोला:—

एण्ड्र०। मैं उन सीधे सादे कार्सिकनो के बीच में आराम से रह सकता था पर मेरी बुरी खासियतों ने उस शिक्षा का कोई असर मुझ पर पड़ने न दिया जो मेरी दूसरी मा दिया चाहती थी। मेरी बुरी आदतें दिन पर दिन बढ़ने लगी और मैं पाप और जुर्म करने लगा। एक दिन जब मैं ईश्वर को इस लिये गालियें दे रहा था कि उसने क्यों मुझे ऐसा दुष्ट बनाया तो मुझे पालने वाली माता ने मुझसे कहा, "ऐसी बातें न कहो बेटा! ईश्वर ने तुम्हारे साथ बुराई नही की यह कसूर तुम्हारे बाप का है जिसने तुम्हे किसी लायक न छोड़ा अगर तुम मर जाते तो नर्क में गिरते, बच गये तो भी नर्क में गये।" उस दिन के बाद से ईश्वर को छोड मैं अपने उस बाप को कोसने लगा। यही सबब है कि आज मैंने वे बातें

कही हैं जिन्हें सुन आपलोग कांप उठे हैं अगर यह एक और कसूर है तो मुझे सजा दीजिये,पर यदि मेरी बातें सुन आप को विश्वास हुआ हो कि जन्म ही से मेरी किस्मत ने मुझे दुःखी, सन्तापित और भ्रष्ट किया तो आपलोग मेरी हालत पर पश्चात्ताप कीजिये॥

जज०। मगर तुम्हारी असली मां ?

एण्ड्रया०। मेरी मां ने मुझे मुर्दा समझा, उसका कोई कसूर नहीं है,मैंने उसका नाम जानने की कोशिश नहीं की और न मैं जानता ही हूं॥

उसी समय दर्वाजे के पास से किसी औरत के चीखने की आवाज आई। लोगों ने ताज्जुब के साथ देखा कि काली पोशाक पहिने एक औरत (जिसपर ब्यूशैम्प की निगाह पड़ी थी) बेहोश होगई है। लोगों ने उसे हाथो हाथ उठा लिया और कमरे के बाहर ले गये,उस समय वह नकाब जो उसने अपने चेहरे पर डाली हुई थी हट गई और लोगों ने पहिचान लिया कि वह मैडम दङ्गली है। विलफोर्ट ने भी उसे देखा और पहिचान कर उठ खड़ा हुआ। इस समय उसका दिमाग चक्कर खा रहा था और वह पागलों की सी हालत में हो रहा था॥

जज०। कैदी ! तुमने बड़ी भयानक बात कही है तुम्हारे पास इसका जो सबूत हो वह पेश करो॥

एण्ड्र०। (हंसकर) सबूत ! आप सबूत चाहते हैं। पहिले आप मिस्टर विलफोर्ट की सूरत देख लीजिये तब मुझ से सबूत मांगियेगा॥

सभों की निगाहें एक दम विलफोर्ट की तरफ उठ गईं जो इतने आदमियों की नजर वरदाश्त न कर सकने के कारण नाखूनों से अपना चेहरा और बाल नोचता हुआ अदालत के बीच में आ खड़ा हुआ। सभों के मुंह से उसकी हालत देख ताज्जुब की आवाज निकलने लगी॥

वेण्डेटो०। पिता! ये लोग मुझ से मेरी बातों का सबूत मांगते हैं! क्या आप चाहते हैं कि मैं सबूत पेश करूं?

विल०। (भर्राये हुए गले से) नहीं कोई जरूरत नहीं है, फजूल है॥

जज०। फजूल है! सो क्यों? आप क्या कह रहे हैं?

विल०। मैं यह कह रहा हूं कि इस बोझ से बचने की कोशिश करना बिल्कुल फजूल है जो मुझे पीस रहा है। मुझे अब विश्वास होगया कि ईश्वर मुझसे बदला ले रहा है। अब सबूतों की कोई जरूरत नहीं, इस नौजवान ने जो कुछ कहा सब ठीक है॥

जज०। मिस्टर विलफोर्ट! आप पागल तो नहीं होगये हैं, आप की अकिल तो ठिकाने है, आइये होश सम्हालिये और उस भारी इलजाम को अपने ऊपर से हटाइये जिसने आपको बदहवास कर दिया है॥

विलफोर्ट ने कुछ न कहकर अपना सिर नीचा कर लिया। उसका दांत इस तरह कट कटाने लगा मानों बहुत जोर से बुखार चढ़ आया हो। बड़ी मुश्किल से

वह बोला—"जज साहब ! मैं पूरे होश हवाश में हूं। सिर्फ अपने बदन पर मुझे बस नहीं रह गया है । मैं अपने को उन सब बातों का कसूर वार मानता हूं जो इस नौजवान ने मेरे खिलाफ कही हैं और इस समय से मैं अपने को उस प्रोक्योरर के आधीन समझता हूं जो मेरी जगह पर आवेगा ॥

यह कहते हुए उसकी हालत बहुत ही खराब हो गई और वह लड़खड़ाता हुआ बाहर की तरफ चला। अदालत के सब लोग अचम्भे के साथ यह सब हाल देख रहे थे। किसी के मुंह से कोई आवाज नहीं निकलती थी। आखिर जज ने कहा, "मामला आज मुलतवी किया जाता है । आज से एक दूसरे मैजिस्ट्रेट नये सिरे से इस की जांच करेंगे और दूसरे सेशन में यह सुना जायगा ॥"

लोग तरह तरह की बातें करते हुए उठ खड़े हुए। ब्यूशेकप ने डिब्रे से कहा, "हम लोगों ने आज बिचित्र नाटक देखा ।" जवाब में डिब्रे बोला, "हां देखो तो यह किसे बिश्वास हो सकता था कि विलफोर्ट ने ऐसा काम किया होगा ।" शेटू रेनाड बोला, "अब उसके लिये यही मुनासिब है कि मारकर्फ की तरह खुद भी गोली मार ले और मर जाय।" डिब्रे बोला, "मैं इसकी लड़की से शादी करने वाला था अच्छा हुआ जो बेचारी वेलेण्टिन पहिले ही मर गई ॥"

ग्यारहवां बयान ।

बदला ।

ठसाठस भीड़ होने पर भी विलफोर्ट के जाने के लिये लोगों ने रास्ता कर दिया । जब किसी के ऊपर कोई बड़ी भारी मुसीबत आ पड़ती है तो उसके कसूरों पर निगाह न डाल कर लोगों को उसके साथ सहानुभूति हो जाती है । अस्तु विलफोर्ट की हालत देख के भी बहुतों को उस पर रहम आ गया था और अपना कसूर स्वीकार कर लेने पर भी उसके दुःख ने उसका बचाव किया और किसीने जाने से उसे नहीं रोका ॥

विलफोर्ट की उस समय की हालत बयान करने लायक न थी । उसकी हर एक नस तनी हुई थी, बदन का हर एक हिस्सा अलग अलग दुःख दे रहा था आखें के आगे अंधेरा छाया हुआ था और उसे ऐसा मालूम हो रहा था मानो हजारों मुसीबतें एक साथ उस पर आ टूटी हो । उसने अपना मजिस्ट्रेटी का गौन नोच कर फेंक दिया क्योंकि वह उसका गला घोंट रहा था, अन्दाज से चलता हुआ वह अदालत के बाहर आया और वहा पहुंचा जहां उसकी गाड़ी खड़ी थी और कोचवान सोया हुआ था । दरवाजा खोल वह धम्म से गाड़ी के अन्दर जा बैठा । कोचवान चौंककर उठा, उससे उसने गाड़ी हांकने का इशारा किया और गाड़ी तेजी से रवाना हुई ॥

मुसीबत का जो पहाड़ विलफोर्ट के सिर पर आ गिरा था उसने उसे मसल दिया था। अब वह इस लायक भी नहीं रह गया था कि अपनी हालत की तरफ गौर करता या अपने बचाव की कोई तर्कीब खोजता। वह इस मुसीबत को ईश्वरीय समझ कर एक दम पस्त हो गया था और अब उसमें इतनी हिम्मत नहीं रह गई थी कि अपने को बचाता। बारबार उसके मुंह से "ईश्वर ईश्वर !!" निकल जाता था और जो कुछ हुआ उसमें वह ईश्वर ही का हाथ सब जगह देख रहा था॥

गद्दे पर वह स्थिर नहीं बैठा रह सकता था, कभी इधर कभी उधर पलटता, मगर आराम किसी तरह नहीं पाता था, यकायक उसे कोई चीज गड़ी, उसने हाथ बढ़ा कर उसे हटाया, देखा तो वह उसकी स्त्री का पट्टा था जिसे वह शायद कल भूल से गाड़ी ही में छोड़ गई थी। इस पट्टे ने उसे अपनी स्त्री की याद दिला दी और उसके खयालों ने एक दम पलटा खाया। वह मन ही मन कहने लगा :—

आह ! मैंने अपनी स्त्री के सामने अपने को मैजिस्ट्रेट बताया था। उसे मौत की सजा दी थी। उसने डर कर, पछता कर, शर्मा कर, अपना कसूर मञ्जूर कर लिया था, इस समय शायद वह मरने के लिये तैयारी कर रही हो ! बेचारी कमजोर निःसहाय औरत और कर ही क्या सकती है ! उसे छोड़े एक घण्टा हो चुका इस समय वह जरूर अपने किये हुए को सोचकर पछता

रही होगी। ईश्वर से अपने पापों के लिये मांफी मांग रही होगी। शायद अपने नीतिवान, धार्मिक, न्यायी पति को चीठी लिख कर उससे माफी की उम्मीद कर रही होगी। मौत की राह देख रही होगी। (विलफोर्ट को ऐसा मालूम हुआ मानो कोई लाल लोहे से उसके कलेजे मे छेद कर रहा हो) ओह ! वह अपने को बुरा और मुझे अच्छे का बादशाह समझती होगी पर असल में मेरे साथने ही उसे भी खराब किया। उसे मेरे पाप के कीटाणुओं ने खा लिया। प्लेग या हैजे की तरह मुझ पापी कुकर्मी ने उसे भी पापी और कुकर्मी बना दिया। और इस पर मैं उसे सजा देने की जुर्रत करता हूं। उस से यह कहता हूं कि अपनी करनी का फल भोग ! नही नही २ वह नहीं मरेगी, वह मेरा साथ देगी ! हमलोग भागेगें, फ्रान्स छोड़ देंगे, दुनिया के दूसरे सिरे पर चले जायगे। हैं ! मैंने उससे फांसी का जिक्र किया !! वाह ! फांसी तो मुझे भी होनी चाहिये !! फिर उसके सामने यह शब्द कहने की मेरी हिम्मत कैसे पडी ? मै उससे अपना सब कसूर कह दूंगा, रोज कहता रहूंगा कि मैंने भी जुर्म किया है। वाह ! क्या चीते और नागिन का जोड़ा हुआ है ! मेरे ऐसे पति को कैसी ठीक जोरू मिली है ! नही उसके मरने की कोई जरूरत नही, मेरा उसका कसूर एकसा है !! हम दोनों यहा से भागेंगे !" जोश में विलफोर्ट ने गाडी का अगला शीशा तोड डाला और जोर से कोचवान से कहा, "जल्दी, जल्दी।"

गाड़ी आंधी की तरह चलने लगी। विलफोर्ट फिर मन में कहने लगा॥

"हां, वह नहीं मरेगी, जीयेगी, पश्चात्ताप करेगी, और मेरे लड़के को पाले और पढ़ावेगी, क्योंकि इसमें कोई शक नहीं कि वह एडवर्ड को प्यार करती है, उसी प्यार ने ही उससे ये कुकर्म कराये हैं। जो स्त्री अपने लड़के को प्यार करती है उसका दिल अभी बिल्कुल खराब नहीं हुआ है वह जरूर सुधरेगी। कोई उसका कसूर नहीं जानेगा। मेरे घर में जो कुछ हुआ धीरे २ लोग उसे भूल जांयगे। और न भी भूलें तो क्या? मैंने इतने पाप किये हैं कि ये दो चार और भी शामिल हो जाय तो कोई हर्ज नहीं। वह बची रहेगी और अपने लड़के को प्यार करती हुई सुखी होगी। मैं उसे बचा कर एक पुण्य का ही काम करूंगा, मेरे दिल को कुछ शान्ति मिलेगी।" विलफोर्ट का दिल यह सोच कुछ शान्त हुआ और उसी समय गाड़ी उसके मकान के दरवाजे पर पहुंचकर रुकी। विलफोर्ट गाड़ी से उतरा। उस के नौकरों ने ताज्जुब के साथ दर्वाजा खोला क्योंकि उस के इतनी जल्दी लौटने की उन्हे उम्मीद नहीं थी, किसी ने उससे कुछ नहीं कहा, उसने भी किसी से कुछ न पूछा सीधा ऊपर की तरफ चला, अपने पिता के अधखुले दर्वाजे में से उसे कोई अजनबी आदमी भीतर दिखाई दिया, पर इस समय उसका ध्यान किसी तरफ नहीं था, वह सीधा अपनी स्त्री के कमरे की तरफ जा रहा था।

सीढी चढ़ कर उसने वहां का दरवाजा बन्द कर दिया जिससे कोई उसे छेड़े नहीं इसके बाद अपनी स्त्री के दर्वाजे को धक्का दिया, दर्वाजा खुल गया, उसने मन ही मन कहा, "खुला हुआ है, अच्छा लक्षण है।" वह कमरे के अन्दर गया पर कमरा खाली था वहां कोई नहीं था, वह भीतर वाले दूसरे कमरे की तरफ यह कहता हुआ चला, यहां नहीं है तो उसमे होगी मगर दर्वाजे पर पहुंच उसे रुकना पड़ा, क्योंकि वह भीतर से बन्द था। उसने धड़कते हुए कलेजे के साथ पुकारा, "हेलोसी! हेलोसी!!" भीतर से उसकी स्त्री ने कमजोर आवाज मे पूछा, "कौन है?" विलफोर्ट बोला, "मैं हूं! दर्वाजा खोलो!!"

पर उसके कहने ने भी, उसके दुःख से भरे स्वर ने भी, दरवाजा न खोला, तब विलफोर्ट ने जोर से धक्का मार दर्वाजा खोल दिया। उसकी स्त्री सामने ही खड़ी थी जिसकी आंखे निकली हुई थीं, चेहरा पीला हो रहा था, और आकृति से कष्ट प्रगट हो रहा था। विलफोर्ट ने घबड़ाकर पूछा, "हेलोसी! हेलोसी! क्या हुआ? बोलो? बोलो!"

बेचारी औरत ने अपना कांपता हुआ पीला हाथ उसकी तरफ बढ़ाया और भर्राये हुए गले से कहा, "आप का कहना होगया!! अब आप और क्या चाहते हैं?" यह कहते कहते वह जमीन पर गिर गई। विलफोर्ट ने झपट कर उसे सम्हालना चाहा पर वह मुर्दा थी। वह

गाडी आंधी की तरह चलने लगी ! विलफोर्ट फिर मन से कहने लगा ॥

"हां, वह नहीं मरेगी, जीयेगी, पश्चात्ताप करेगी, और मेरे लड़के को पाले और पढ़ावेगी, क्योंकि इसमें कोई शक नहीं कि वह एडवर्ड को प्यार करती है, उसी प्यार ने ही उससे ये कुकर्म कराये हैं। जो स्त्री अपने लड़के को प्यार करती है उसका दिल अभी बिल्कुल खराब नहीं हुआ है वह जरूर सुधरेगी । कोई उसका कसूर नहीं जानेगा । मेरे घर में जो कुछ हुआ धीरे २ लोग उसे भूल जांयगे । और न भी भूलें तो क्या ? मैंने इतने पाप किये हैं कि ये दो चार और भी शामिल हो जांय तो कोई हर्ज नहीं । वह बची रहेगी और अपने लड़के को प्यार करती हुई सुखी होगी ! मैं उसे बचा कर एक पुण्य का ही काम करूंगा, मेरे दिल को कुछ शान्ति मिलेगी ।" विलफोर्ट का दिल यह सोच कुछ शान्त हुआ और उसी समय गाडी उसके मकान के दरवाजे पर पहुंचकर रुकी । विलफोर्ट गाडी से उतरा। उस के नौकरों ने ताज्जुब के साथ दर्वाजा खोला क्योंकि उस के इतनी जल्दी लौटने की उन्हें उम्मीद नहीं थी, किसी ने उससे कुछ नहीं कहा, उसने भी किसी से कुछ न पूछा सीधा ऊपर की तरफ चला, अपने पिता के अधखुले दर्वाजे में से उसे कोई अजनबी आदमी भीतर दिखाई दिया, पर इस समय उसका ध्यान किसी तरफ नहीं था, वह सीधा अपनी स्त्री के कमरे की तरफ जा रहा था॥

कांपता हुआ उसे छोड़ अलग हट खड़ा हुआ थोड़ी देर तक वह खौफ के साथ उस लाश को देखता रहा इसके बाद उसे अपने लड़के का खयाल आया और वह चिल्ला उठा, "मेरा लड़का! मेरा लड़का!!" एडवर्ड एडवर्ड कहता हुआ वह बाहर आया। उसकी आवाज सुन कई नौकर दौड़े आये, विलफोर्ट ने पूछा, "एडवर्ड कहां है?" उन्होंने कहा, "नीचे कहीं नहीं है।" विलफोर्ट ने कांपते कांपते कहा, "देखो बगीचे में न हो।" पर नौकरों ने जवाब दिया, "नहीं आध घंटा हुआ मैडम ने उन्हे अपने कमरे मे बुलवाया था तब से वे नीचे नहीं आये॥"

विलफोर्ट के माथे पर ठण्ढा पसीना चू आया। पैर कांपने लगे और दिमाग में तरह तरह के खयाल उठने लगे। उसने माथे पर हाथ रखके कहा, "मैडम के कमरे में!!" और तब दीवार का सहारा लेता हुआ वह पुनः उस कमरे की तरफ लौटा। पर कमरे के अन्दर जाने के लिये उसकी स्त्री की लाश पर से जाना पड़ता, जो दरवाजे के ही सामने पड़ी हुई थी, एडवर्ड को बुलाने के लिये उस जगह के सन्नाटे को तोड़ना पड़ता जो उस की स्त्री की कब्र बना था। आखिर हिचकते और कांपते हुए उसने पुकारा—"एडवर्ड! एडवर्ड!!" पर कोई जवाब नही मिला! तब लड़का है कहां? विलफोर्ट ने गौर से चारो तरफ देखा। जिस कमरे मे उसकी स्त्री की लाश आँख खोले, डरावनी मुस्कुराहट होठो पर

लिये रखवाले की तरह पड़ी थी उसमें भी झांक कर देखा, एक कदम आगे रख कर झांका और तब एक बगल में रक्खे नीले मखमल से मढ़े सुन्दर कोच पर एडवर्ड को देखा, जरूर वह सोया हुआ होगा । दुखी विलफोर्ट के मुंह से प्रसन्नता की चीख निकल गई, उस के दुःखित आतंकित निराश और अन्धे हृदय में आशा की एक किरण पहुच गई, बिजली की तरह उसके मन में खयाल दौड़ गया कि बस एक कदम आगे रख उस लाश को लांघ लड़के को गोद में ले एक दम दूर किसी दूसरे मुल्क को भाग जाना चाहिये ॥

विलफोर्ट अब वह पापों का पुतला न था जिनकी ऊपरी सफाई उन्हें "सभ्य" कहती है । अब वह एक कातिल चोट खाया हुआ चीता था जिसके दांत टूट चुके थे । अब वह पत्ते पत्ते से डर रहा था । लाश के ऊपर से उसने इस तरह उछाल मारी मानों भट्टी के ऊपर से कूद रहा हो । एकही कुदान में कोच के पास पहुंच उस ने लड़के को उठा लिया, छाती से लगाया, प्यार किया हिलाया, पुकारा, पर लड़के ने आंख न खोली, विलफोर्ट ने अपना होठ उसके होठों से लगाया, वे ठढे और काले थे, दिल पर हाथ रक्खा, उसमें धड़कन न थी, हाथ पैर छूए, वे अकड़ गये थे, विलफोर्ट जमीनपर गिर पड़ा, मुर्दा लड़का उसके हाथों से छूट अपनी मरी मा के पास लुढ़क गया । जमीन पर गिरा हुआ एक कागज विलफोर्ट को दिखाई पड़ा । उसने उठा कर देखा, यही थी

लिखावट मालूम हुई, पढ़ा, यह लिखा था :—

"आप जानते हैं कि मैं अपने लड़के को कितना प्यार करती हूं, उसी के सबब से मैंने इतने पाप किये, बिना उसके मैं कहीं नहीं रह सकती, इससे उसे भी साथ लिये जाती हूं !!"

विलफोर्ट को अब भी विश्वास न हुआ। वह खसकता हुआ एडवर्ड के पास गया और उसकी लाश को इस तरह देखने लगा जैसे कोई बाघिन अपने मुर्दे बच्चे को देखती हो, तब उसके कलेजे को चीरती हुई चीख की आवाज निकली और उसने कहा, "ईश्वर ! ईश्वर की करनी !!"

ये दोनों लाशें उसे डराने लगीं, अब तक तो उसके गुस्से ने उसे सम्हाला हुआ था, निराशा, सन्ताप, यन्त्रणा पर उसने अपने दिल की मजबूती से काबू किया हुआ था पर अब वह बात भी जाती रही। गम ने उसकी गरदन झुका दी, वह उठ खड़ा हुआ और अपने सिर के बालों को झाड़ता हुआ जो पसीने से तर हो गये थे, कमरे के बाहर आया। अब इस आदमी को जिसने कभी किसी पर दया नहीं की थी, किसी के साथ सहानुभूति नहीं की थी, इन दोनों की जरूरत, किसी ऐसे की जरूरत हुई जिसके सामने वह बिलख सके, रो सके, अपनी मुसीबत बयान कर सके। वह अपने बापके पास चला॥

सीढ़ियां उतर वह नोटीर के कमरे में पहुचा जो उस समय बड़े ध्यान और प्रेम से एबी बूसोनी की बातें

सुन रहा था जो उसके सामने खड़ा था। विलफोर्ट पादड़ी को देख चौंका। उसे उस दिन की याद आई जब वह आटविल की दावत के बाद जासूस बन कर पादड़ी के घर पहुंचा था तथा दूसरी दफे जब वेलेण्टिन के मरने पर वह आप ही आप आ पहुचा था। विलफोर्ट ने घबराहट के साथ माथे पर हाथ फेरते फेरते कहा, "पादड़ी तुम फिर यहां? तब क्या तुम मौत के पेशखीमे की तरह ही आते हो?"

एबी बूसोनी घूम गया और विलफोर्ट की शकल और बदहवासी देख वह समझ गया कि अदालत वाला सीन हो गया। इसके बाद क्या हुआ इसकी उसे कोई जानकारी न थी। उसने जवाब दिया, "उस दिन मैं तुम्हारी लड़की की आत्मा की शान्ति के लिये आया था!!"

विल०। और आज किस लिये आये?

वसूनी०। यह कहने के लिये कि अब तुमने अपने कर्मों का पूरा फल पा लिया और आज से मैं तुम्हारी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करूंगा॥

विल०। (चौक कर और एक कदम पीछे हट कर) हैं! यह तो बसूनी की आवाज नही है!!

"नहीं" कह कर पादड़ी ने अपनी लम्बी टोपी और अबा फेंक दिया। उसके लम्बे बाल गरदन तक गिर आये और उसकी सूरत बदल गई। विलफोर्ट ने कांपते हुए कहा, "माउण्टक्रीटो!!"

लिखावट मालूम हुई, पढ़ा, यह लिखा था :—

"आप जानते हैं कि मैं अपने लड़के को कितना प्यार करती हूं, उसी के सबब से मैंने इतने पाप किये, बिना उसके मैं कहीं नहीं रह सकती, इससे उसे भी साथ लिये जाती हूं !!"

विलफोर्ट को अब भी विश्वास न हुआ। वह खसकता हुआ एडवर्ड के पास गया और उसकी लाश को इस तरह देखने लगा जैसे कोई बाघिन अपने मुर्दे बच्चे को देखती हो, तब उसके कलेजे को चीरती हुई चीख की आवाज निकली और उसने कहा, "ईश्वर ! ईश्वर की करनी !!"

ये दोनों लाशें उसे डराने लगीं, अब तक तो उसके गुस्से ने उसे सम्हाला हुआ था, निराशा, सन्ताप, यन्त्रणा पर उसने अपने दिल की मजबूती से काबू किया हुआ था पर अब वह बात भी जाती रही। गम ने उसकी गरदन झुका दी, वह उठ खड़ा हुआ और अपने सिर के बालों को झाड़ता हुआ जो पसीने से तर हो गये थे, कमरे के बाहर आया। अब इस आदमी को जिसने कभी किसी पर दया नहीं की थी, किसी के साथ सहानुभूति नहीं की थी, इन दोनों की जरूरत, किसी ऐसे की जरूरत हुई जिसके सामने वह बिलख सके, रो सके, अपनी मुसीबत बयान कर सके। वह अपने बाप के पास चला॥

सीढ़ियां उतर वह नोटीर के कमरे में पहुंचा जो उस समय बड़े ध्यान और प्रेम से एबी बूसोनी की बातें

सुन रहा था जो उसके सामने खड़ा था। विलफोर्ट पादड़ी को देख चौंका। उसे उस दिन की याद आई जब वह आटविल की दावत के बाद जासूस बन कर पादड़ी के घर पहुंचा था तथा दूसरी दफे जब वेलेण्टिन के मरने पर वह आप ही आप आ पहुचा था। विल- फोर्ट ने घबराहट के साथ माथे पर हाथ फेरते फेरते कहा, "पादड़ी तुम फिर यहां? तब क्या तुम मौत के पेशखीमे की तरह ही आते हो?"

एबी वूसोनी घूम गया और विलफोर्ट की शकल और बदहवासी देख वह समझ गया कि अदालत वाला सीन हो गया। इसके बाद क्या हुआ इसकी उसे कोई जानकारी न थी। उसने जवाब दिया, "उस दिन मैं तुम्हारी लड़की की आत्मा की शान्ति के लिये आया था!!"

विल०। और आज किस लिये आये?

वसूनी०। यह कहने के लिये कि अब तुमने अपने कर्मों का पूरा फल पा लिया और आज से मैं तुम्हारी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करूंगा॥

विल०। (चौक कर और एक कदम पीछे हट कर) हैं! यह तो बसूनी की आवाज नहीं है!!

"नहीं" कह कर पादड़ी ने अपनी लम्बी टोपी और लबा फेंक दिया। उसके लम्बे बाल गरदन तक गिर आये और उसकी सूरत बदल गई। विलफोर्ट ने कांपते हुए कहा, "माउण्टक्रीटो!!"

माउण्ट०। नहीं वह भी नहीं, ग्रीर पीछे जाग्रो!!

विल०। (घबडाहट से) यह ग्रावाज! यह ग्रावाज!! कब यह ग्रावाज मैंने सुनी है?

माउण्ट०। यह ग्रावाज पहिले पहिल ग्राज से तेईस बरस पहिले मारसेलीज में उस दिन तुमने सुनी थी जिस दिन रईस मीरां की लड़की से तुम्हारी शादी होने की खुशी में दावत थी॥

विल०। तुम बसूनी नहीं हो? तुम माउण्ट क्रीटो नहीं हो? तब कौन हो? हे परमात्मा! यह कौन मेरा गुप्त, भयानक, दुश्मन है! जरूर मैंने इसके साथ कुछ बुराई की होगी!! हाय!! ग्रफसोस!!

माउण्ट०। ठीक कहते हो, सोचो, सोचो!!

विल०। (जिसका दिमाग ग्रब बिगड़ रहा था) ग्राखिर मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था! तुम कौन हो?

माउण्ट०। मैं उस ग्रादमी का भूत हूं जिसको तुम ने किले 'ऐफ' के तहखाने में बन्द करा दिया था। उसी कब्रसे निकले भूत को विधाताने माउण्ट क्रीटो का रूप दिया, धन दिया, दौलत दी, जवाहिरात दिये, ताकत दी, जिसमें तुम उसे पहिचान न सको॥

विल०। ग्रोह! ग्रब मैंने पहिचाना तुम ...तुम....

माउण्ट०। मैं एडमंड डोनर हूं!

विल०। तुम एडमंड डोनर हो! (कलाई पकड़ कर) ग्रच्छा तो इधर ग्राग्रो!! विलफोर्ट काउण्ट को ग्रपनी स्त्री के कमरे में लेगया ग्रौर उन दोनों लाशों

को दिखा कर बोला, "एडमंड! देखो! आंखें खोल कर देखो! अब तुम्हारा बदला पूरा हुआ!!"

उन मां बेटे की लाशें देख काउएट पीला पड़ गया उसके दिल ने कह दिया कि वह बदले की हद के बाहर चला गया और अब वह यह कहने लायक नहीं रहा कि "ईश्वर मेरे साथ है" बड़े ही भयानक दुःख के साथ चीख कर उसने उस लड़के की लाश उठाली और दौड़ता हुआ वेलेन्टिन के कमरे में ले जा दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया॥

विलफोर्ट रोकर बोला, "हाय! वह मेरे लड़के की लाश भी लिये जाता है!! हाय! हाय!!" उसने काउएट क्रीटो का पीछा करना चाहा, पर उसके हाथ पांवों ने जवाब दे दिया। उसकी आंखें चमकने लगी, चेहरा लाल हो गया, अपने ही नाखूनों से अपनी छाती नोच कर उसने खून बहा लिया। माथे की नसे इस तरह फूल आई मानो अब फटाही चाहती हैं। यह हालत कई मिनट तक रही, यहां तक कि उसका दिमाग पूरी तरह पलट गया और वह पागल हो गया। चीखता और हँसता हुआ पागल विलफोर्ट सीढ़ियों से नीचे उतर गया॥

पन्द्रह मिनट के बाद वेलेन्टिन के कमरे का दर्वाजा खुला और एडवर्ड की लाश हाथो पर लिये काउएट आंसू बहाता हुआ बाहर निकला, उसकी किसी भी विद्या ने मरे लड़के की जान नहीं लौटाई। अदब के साथ झुक कर उसने उस लड़के को उसकी मां की छाती

पर रख दिया और दबे पांव कमरे के बाहर निकल आया । सीढ़ी पर एक नौकर को देख उसने पूछा । "मि० विलफोर्ट कहां हैं ?" नौकर ने कोई जवाब न दे बागीचे की तरफ इशारा किया ॥

माउण्ट क्रीटो दौड़ा २ बागीचे में पहुंचा । उसने देखा कि विलफोर्ट अपने नौकरों से घिरा एक पेड़ के नीचे खड़ा जोर जोर से फरसा चला कर जमीन खोद रहा है । "यहां नहीं है, यहां नहीं है" कह कर वहां से हटा और दूसरी जगह खोदने लगा, माउण्ट क्रीटो उसके पास पहुंचा, मुलायम आवाज में विलफोर्ट के कन्धे पर हाथ रख उसने कहा, "मि० विलफोर्ट ! आप का लड़का स्वर्ग गया पर उसके बदले में......" मगर विलफोर्ट ने उसे रोक दिया । उसमें अब किसी की बातें समझने की ताकत न थी । वह जोर से बोला, "मैं जरूर उसे खोजूंगा । तुम कहते हो वह यहां नहीं है !! वह जरूर यहीं गड़ा है, चाहे मुझे कितनाही खोदना पड़े मैं जरूर उसे खोज निकालूंगा ।" यह कह वह फिर जोर जोर से फरसा चलाने लगा ॥

माउण्ट क्रीटो डर कर यह कहता हुआ पीछे हट गया, "ओह ! यह तो पागल हो गया !!" यकायक माउण्ट क्रीटो वहां से हटा और इस तरह दौड़ता हुआ भागा मानों उस शापित मकान की दीवारें उसपर गिर पड़ेंगी "बस ! बस ! बहुत हो गया, बहुत हो गया !! बाकियों को बचाओ !!" कहते हुए वह अपनी गाड़ी

पर आ बैठा॥

घर मे घुसते ही उसे मारल दिखा जो प्रेतात्मा की तरह इधर से उधर घूम रहा था। काउएट ने उससे कहा, "तैयारी कर दो मैक्समिलियन ! हम लोग कल पैरिस छोड देंगे।"

मैक्समिलियन ने पूछा, "क्या आपको यहां अब और कुछ नही करना है॥"

काउएट ने जवाब दिया, "नही, मुझे जितना चाहता था उससे ज्यादा कर चुका ! ईश्वर क्षमा करे!!"

॥ तेरहवा हिस्सा समाप्त ॥

॥ श्रीः ॥

मोतियों का खजाना।

चौदहवां हिस्सा।

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

अनुवादित

—॥ और ॥—

प्रकाशित।

LAHRI PRESS DEVAKI NANDAN KHATRI BENARES CITY

PRINTED BY

PANNA LAL ROY

AT THE LAHARI PRESS BENARES CITY

प्रथम बार] १९२१ [मूल्य ॥-) आ०

॥ श्रीः ॥



मोतियों का खजाना।

चौदहवां हिस्सा।

पहिला बयान।

बिदा।

ऊपर लिखी घटनाओं ने समूचे पैरिस में तहलका मचा दिया, घर घर जिधर देखिये तिधर ही दङ्गली, मारकर्फ और विलफोर्ट का ही चर्चा छिड़ा रहता था और लोग ताज्जुब मिले हुए डर के साथ उनकी मुसीबतों का बयान करते हुए कहते थे, "जरूर इन तीनों घरानों पर ईश्वर का कोप हुआ!" अपने बाग में बैठे मैनुअल और जूलिया इसी का जिक्र कर रहे थे और उनके पासही उदासी में डूबा हुआ मैक्समिलियन भी बैठा हुआ था जो इनसे मुलाकात करने आया था॥

जूलिया०। मैनुअल! देखो ये तीनों ही कैसे अमीर रईस और मशहूर घराने थे कि पैरिस में इनकी टक्कर के कम लोग थे, और कितनी जल्दी इनकी कैसी दशा हो गई, मानों किसी देवता के कोप में ये लोग पड़ गये हों॥

मैनु०। यह तो हुई है! वेशक ईश्वर ही ने उनके साथ ऐसा किया है जिसे इन्हें सजा देते वक्त कोई भी इनका किया ऐसा सुकर्म नजर न आया जो इनकी मुसीबत को कुछ दूर कर सकता॥

जूलिया०। ऐसा मत कहो, जिस समय मेरे पिता पिस्तौल हाथ में ले आत्महत्या का इरादा कर रहे थे उस समय अगर कोई कहता कि 'इसे अपने किये का फल मिल रहा है' तो क्या यह उस कहने वाले की भूल न होती?

मैनुअल०। होती! परमेश्वर ने उन्हें आत्महत्या करने भी तो नहीं दी, उसने अपना एक दूत भेज कर मौत का साया उनके सिर से हटा दिया॥

मैनुअल की बात खतम नहीं हुई थी कि किसी के आने की आहट सुनाई पड़ी और घूम कर देखने पर काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो पर नजर पड़ी, दोनों खुशी से उछल पड़े। मैक्समिलियन ने भी अपना सिर उठा कर काउण्ट की तरफ देखा और फिर नीचा कर लिया। काउण्ट और लोगों की तरफ कुछ ध्यान न दे सीधा मैक्समिलियन के पास पहुंचा और बोला, "मैं तुम्हें ही खोजता आया हूं॥"

मैक्स०। (इस तरह चौंक कर मानों नींद से जागा हो) मुझे खोजने!!

काउण्ट०। हां, क्या मुझसे तुमसे तै नहीं हो गया था कि तुम मेरे साथ जहां मैं चलूंगा चलोगे? अपने

आज रवाना होने की इत्तला मैं कल ही तुम्हें दे चुका था॥

मैक्स०। मैं तैयार हूं, इन लोगों से विदा होने ही के लिये यहां आया था॥

जूलिया०। काउण्ट! आप कहां जा रहे हैं?

का०। सब से पहिले तो मारसेलीज॥

जूलिया और मैनुअल०। मारसेलीज!!

काउण्ट०। हां और तुम्हारे भाई को भी लेता जा रहा हूं॥

जूलिया०। काउण्ट! कोई ऐसी तर्कीब कीजिये जिसमें इसकी यह उदासीनता दूर हो जाय॥

मारल ने अपनी घबराहट छिपाने के खयाल से चेहरा घुमा लिया। काउण्ट बोला, "तो तुम्हे भी मालूम हो गया कि यह सुखी नहीं है?"

जूलिया०। हां, और मैं समझती हूं कि उसे यहां रहना भी अच्छा नहीं लग रहा है॥

काउण्ट०। मैं उसका दिलबहलाव करूंगा॥

मैक्समि०। मैं आपके साथ चलने को तैयार हूं। मैनुअल! जूलिया! विदा!!

दोनों०। यह क्या, इस तरह एकदम बिना सूचना के ही तुम चले जाओगे? तुमने सफर की कोई तैयारी भी नहीं की, परवाना भी नहीं मँगाया॥

मैक्स०। (शान्ति मगर उदासी के साथ) मेरे कपड़े बक्स में बन्द हैं परवाना ले चुका हूं॥

काउण्ट०। (मुस्कुरा कर) ठीक है! मुस्तैद सिपाही की तरह ही तुमने सब काम किया है॥

जूलिया०। मगर आप क्या इस तरह बिना कुछ खबर दिये, मोहलत दिये, एक दिन, एक घण्टे का भी मौका दिये हमलोगों को छोड़ कर चले जायँगे?

काउण्ट०। मुझे पांच दिन के अन्दर रोम पहुंचना है। मेरी गाड़ी दर्वाजे पर खड़ी है॥

मैनुअल०। तो क्या मैक्समिलियन भी आपके साथ रोम जायगा?

मैक्स०। (उदासी के साथ हँसकर) जहां काउण्ट ले जायँगे मैं वहां ही जाऊंगा। एक महीने तक वे मेरे मालिक हैं॥

जूलिया०। (उसका भाव देख कर घवराहट से) काउण्ट! मैक्समिलियन कैसी बातें कर रहा है!!

काउण्ट०। तुम विल्कुल मत घवराओ, वह बराबर मेरे साथ रहेगा और उसका कुछ भी अनिष्ट न होगा॥

मैक्स०। अच्छा तो जूलिया, मैनुअल, विदा!!

जूलिया०। (मैक्समिलियन का हाथ पकड़ कर) तुम जरूर मुझसे कोई बात छिपा रहे हो!!

काउण्ट०। ओह! कुछ नहीं, तुम्हें झूठा शक है, तुम थोड़े ही दिन बाद उसे खुश और हँसते हुए लौटता पाओगी॥

मैक्समिलियन ने काउण्ट की यह बात सुन हिकारत बल्कि गुस्से की निगाह उसपर डाली। उसपर कुछ

ध्यान न दे काउएट बोला, "अच्छा तो अब चलना चाहिये॥"

जूलिया ने प्रेम और आदर से काउएट का हाथ पकड़ कर कहा, "काउएट! आप जाना चाहते हैं तो जाइये! आपने हमलोगों के लिये जो कुछ किया "

काउएट ने उसका दोनो हाथ पकड़ कर कहा—"तुम्हारी ज़ुबान जो कुछ कह सकेगी उससे ज्यादा तुम्हारी आंखे कह रही हैं, तुम्हारे दिल का भाव मैं अच्छी तरह समझता हूं। किसी उपन्यास का उपकारी पात्र यदि मैं होता तो बिना तुमलोगों से भेट किये ही गायब हो जाता पर मैं आदमी हू और ऐसा करना मेरी सामर्थ्य के बाहर था क्योंकि सभी कमजोर आदमियों की तरह मेरा दिल भी प्यार, कृतज्ञता और स्नेह चाहता है। अब जाते हुए भी मैं बिना इतना कहे नही जा सकता कि दोस्तो! मुझे भूलना नही, क्योंकि शायद अब तुम मुझे कभी न देख सकोगे!!"

मैनुअल चौक कर बोल उठा—"कभी नहीं देख सकेंगे!" जूलिया के गालो पर दो बूंद आसू मोतियों की तरह गिर पड़े और उसने बिलख कर कहा, "कभी नही देखेंगे! तब आप मनुष्य नही बल्कि कोई देवता हैं जो हमारा उपकार करने के लिये ही आये थे और अब अपने लोक को लौट रहे हैं॥"

काउएट०। (जल्दी से) नही ऐसा न कहो, देवता कभी भूल नही करते। मै अपने कृत्य को

वही रोक सकते हैं! उनसे बढ़ कर किस्मत में भी ताकत नहीं है बल्कि वे किस्मत को भी दबा सकते हैं। मैं वह देवता नहीं, मैं आदमी ही हूं और तुम्हारा ऐसा कहना बड़ी भारी भूल है ॥

इतना कह काउण्ट ने जूलिया का हाथ चूमा और मैनुअल से हाथ मिलाया, तब इस सुख और शान्ति-निकेतन से बाहर हो उसने मैक्समिलियन को साथ आने का इशारा किया। जूलिया ने काउण्ट के कान में कहा—"मेरे भाई को जल्दी अच्छा करना!" और जवाब में काउण्ट ने उसका हाथ उसी भाव से दबाया जिस भाव से आज से ग्यारह बरस पहिले मारल के मकान की सीढ़ी पर (मारसेलीज में) दबाया था। उसने धीरे से पूछा—"तब क्या तुम्हें अभी तक 'सिन्दबाद जहाजी' पर भरोसा है?" जूलिया ने जोश के साथ कहा, "हां" जिसपर काउण्ट बोला, "तब कोई चिन्ता न करो और ईश्वर पर भरोसा रक्खो ॥"

बागीचे के दरवाजे पर काउण्ट की सफरी गाड़ी तैयार थी जिसके चार घोड़े उतावली के साथ टापों से जमीन खोद रहे थे और जिसके पावदान के पास पसीने में डूबा और हांफता हुआ अली खड़ा था जो शायद अभी ही कहीं दूर से दौड़ता हुआ आया था। काउण्ट ने अरबी भाषा में उससे पूछा—"तुम उनके पास गये थे?" अली ने "हां" कहा, काउण्ट ने फिर पूछा—"और मेरी चीठी तुमने उसके सामने उसी तरह रख दी

थी जैसा मैंने बताया था?" अली ने इसपर भी "हां" कहा, तब काउएट ने पूछा, "उसने क्या कहा, या क्या इशारा किया?"

अली ने अपने को गाड़ी की रोशनी के सामने किया और तब अपने चेहरे पर ठीक वही भाव लाकर जो बूढ़े नोटीर के चेहरे पर रहता था—उसने अपनी आंखें उस तरह पर बन्द की जिस तरह पर वह 'हां' कहने के वक्त बन्द करता था। शैाएट क्रीटो ने देख कर कहा, "ठीक है, उसे मंजूर है।" यह कह वह मैक्समिलियन के साथ गाड़ी के अन्दर जा बैठा और 'चलो' कहते ही गाड़ी तेजी से रवाना हुई॥

आधे घण्टे में वे लोग उस पहाड़ी 'विलजिफ' पर पहुंच गये जहां से वह पैरिस काले समुद्र की तरह निगाह के सामने फैला हुआ नजर आता है जिसकी लाखों रोशनियां तारों की छाया की तरह और तरह तरह की आवाजें लहरों की तरह मालूम होती हैं। यहां पहुंच काउएट ने वह रेशमी डोरी खींची जो अली की उंगली से बंधी हुई थी, गाड़ी तुरत रुक गई और अली ने उतर कर दर्वाजा खोला। काउएट उतर पड़ा और उसके हाथ का इशारा पा गाड़ी कई कदम आगे बढ़ गई, तब उसने अपनी निगाहें उस शहर की तरफ घुमाईं और गम्भीर स्वर में कहा—"महान् नगर! आज छः महीने से कम ही हुआ जब मैंने तेरे फाटक के अन्दर पैर रक्खा। मुझे विश्वास है कि परमात्मा की इच्छा ही मुझे

तेरे पास लाई और वही अब एक विजयी की भांति मुझे तेरे से दूर करती है। तेरी दीवारों के अन्दर आने का कारण केवल उसी से मैंने कहा है जो मेरे दिल की लिखावट पढ़ने की क़ुदरत रखता है। वह परमात्मा ही जानता है कि मैं आज बिना घमण्ड या घृणा के ही तुझे छोड रहा हूं, पर बिना दुःख के नहीं। वही जानता है कि उसकी दी हुई शक्ति को मैंने कभी अपने निजी काम या फायदे के लिये नहीं लगाया। महान् नगर!! तेरी धडकती हुई छाती के अन्दर मैंने वह पाया जिस की खोज से मैं था। खान खोदने वाले मजदूर की तरह मैंने तेरी तह के अन्दर से फोड़ कर बुराई का नाश किया है। अब मेरा काम पूरा हो गया, मेरा कर्तव्य समाप्त हो गया। अब तू न मुझे सुख ही दे सकता है न दुःख, बिदा! पैरिस! बिदा!!"

किसी अलौकिक व्यक्ति की आंखों की तरह उसकी दृष्टि सामने के मैदान में चारों तरफ घूमने लगी। उसने अपने माथे पर हाथ फेरा, और तब पुनः अपनी गाडी में आ बैठा। इशारा करते ही गाड़ी धूल और शोर के बादल मे छिपती हुई पहाड़ी के नीचे उतर गई॥

बारह मील तक दोनों में कोई बातचीत न हुई, मारल किसी चिन्ता में डूबा हुआ था और मौण्ट क्रीटो उसकी तरफ देख रहा था। इतना सफर कर लेने के बाद काउण्ट ने मारल का ध्यान तोड़ा और उससे पूछा, "मारल! क्या तुम्हें मेरे साथ आने का रञ्ज है?"

मारल०। नहीं काउएट पर पैरिस छोड़ते... ... ..

काउएट०। यदि मैं समझता कि पैरिस में तुम्हें सुख मिलेगा तो मैं तुम्हें यहीं छोड़ देता॥

मारल०। वेलेण्टिन पेरिस ही में शान्तिलाभ कर रही है, पैरिस छोड़ते मुझे ऐसा मालूम होता है मानों दुबारा उससे वियोग हो रहा हो॥

काउएट०। मैक्समिलियन! जिन दोस्तों को हम खो चुके हैं वे पृथ्वी के तले नहीं बल्कि हमारे दिलो के अन्दर रहते हैं। यह इसी लिये जिससे हमलोगों के पास वे हर दम रह सकें। मेरे भी ऐसे दो मित्र हैं जो कभी मेरा साथ नहीं छोड़ते, एक जिसने मुझे यह शरीर दिया, दूसरा जिसने इस शरीर को विद्या और बुद्धि दी। उनकी आत्माएं बराबर मेरे साथ रहती हैं। जब मुझे किसी बात में संदेह होता है मैं उनसे सलाह लेता हूं और उन्हीं की नेक राय मुझे भलाई की तरफ झुकाती रहती है। मारल! तुम भी अपने दिल की आवाज सुनो और उससे पूछो कि क्या तुम्हे मुझे यह मातमी सूरत दिखाते रहना मुनासिब है?

मारल०। मेरे दोस्त! मेरा दिल अफसोस में डूबा हुआ है। वह मेरे लिये सिर्फ मुसीबतें ही बता रहा है॥

काउएट०। कमजोर दिलों का बराबर यही हाल है कि वे काले पर्दे की आड़ से ही सब बातों को देखते हैं। आत्मा का मैदान अलग ही रहता है, तुम्हारी आत्मा पर दुःख की छाया पड़ी हुई है इसी से तुम्हे अपना-

चेहरे पर मालूम पड़ रहे हैं। और सिर्फ उसी के आंसू नहीं बहे थे, हजारों आदमी और भी थे जो हमारे साथ आंसू बहा रहे थे॥"

मोएट क्रीटो नर्मी के साथ मुस्कुराया और एक गली के कोने की तरफ बता कर बोला, "मैं उस समय वहां पर खड़ा था।" ठीक उसी समय और उसी जगह से जहां काउण्ट बता रहा था दुःख से भरी हुई एक 'आह' की आवाज सुनाई पड़ी और उसे एक औरत दिखाई पडी जो दूर होते हुए जहाज पर के एक मुसाफिर को हाथ हिला रही थी। मोएट क्रीटो ने ऐसे उद्वेग के साथ इस औरत को देखा कि अगर मैक्समिलियन दूसरी तरफ न देख रहा होता तो काउण्ट की हालत पर जरूर ताज्जुब करता॥

मारल०। (ताज्जुब से) अरे! यह क्या!! वह वर्दी पहिने नौजवान जो अपनी टोपी हिला रहा है अलबर्ट मारकर्फ है!!

मोएट क्रीटो०। हां वही है॥

मारल०। आपने कैसे जाना? आप तो दूसरी तरफ देख रहे थे॥

मोएंट क्रीटो सिर्फ मुस्कुरा कर रह गया और कुछ जवाब न दे उस औरत की तरफ देखने लगा जो अब वहां से हट कर किसी तरफ को जा रही थी, तब मारल की तरफ घूम कर बोला—"क्या तुम्हे यहां कोई काम नहीं है?"

मारल०। मैं अपने पिता की कब्र पर जरूर दो आंसू गिराया चाहता हूं॥

मौएट०। तब जाओ, वहीं मेरी राह देखना, मैं एक काम करके वहीं आता हूं॥

मौएट क्रीटो ने हाथ बढ़ाया और मारल ने अपना हाथ उससे मिला कर उदासी भरे हुए चेहरे के साथ पूरब की तरफ का रास्ता लिया। मौएट क्रीटो तब तक उसी जगह खड़ा रहा जब तक वह आंखों की ओट न हो गया और तब 'मीलन' मोहल्ले की तरफ उसने अपना कदम बढ़ाया॥

पाठक उस छोटे मकान को भूले न होंगे जिसमें मौएट क्रीटो का बाप बूढ़ा डोनर रहता था और जिसे अब काउण्ट ने मरियम को दे दिया था। वह औरत जिसपर काउण्ट की निगाह गई थी वास्तव में मरियम ही थी जो बन्दरगाह से हटकर सीधी इसी जगह आई। जैसे ही उसने दर्वाजा खोलकर बागीचे में पैर रक्खा वैसे ही काउण्ट भी गली के मोड़ पर आया। मरियम दर्वाजा भिड़का कर अन्दर चली गई और उसी पेड़ के नीचे एक पत्थर पर जाकर बैठ रही जहां खोदने पर उसे वह रुपया मिला था जिसके बारे में काउण्ट ने कह दिया था कि चौबीस बरस पहिले वहां गाड़ा था। यह जगह दर्वाजे पर से साफ दिखाई पड़ती थी अस्तु मौएट क्रीटो ने दर्वाजा खोलते ही मरियम को देख लिया जो सिर झुकाये और आहें भरती हुई गर्म गर्म आंसू गिरा

रही थी। अपने लड़के के जुदा हो जाने से अब उसको मौका मिला था कि अपने दिल के अन्दर भरे हुए उबाल को निकाल सके इसी से वह यहां अकेले में आकर रो रही थी। जब काउण्ट ने अपना कदम बढ़ाया और कड़ुड़ी की आवाज हुई तो मरियम ने चौंक कर सिर उठाया और एक आदमी को अपनी तरफ आते देख डर से चीख कर उठ खड़ी हुई ॥

काउण्ट०। मैडम ! मेरे में यह ताकत नहीं है कि आपकी खोई हुई प्रसन्नता आपको वापस दिला सकूं पर मेरा दिल आपके साथ है ॥

मरियम०। मैं बड़ी ही कम्बख्त हूं, दुनिया में मेरा अब कोई नहीं, एक लड़का था वह भी आज मुझे छोड़ के चला गया ॥

का०। वह बड़े ऊंचे दिल का है और उसने जो कुछ किया ठीक किया है। वह यह जान गया है कि हर एक मनुष्य का अपनी जन्मभूमि के प्रति कुछ कर्तव्य है। कुछ लोग अपनी विद्या देश के नाम पर अर्पण करते हैं, कुछ अपना शरीर। ये अपना खून बहाते हैं, वे अपना पसीना। अगर अलबर्ट आपके पास ही रहता तो उसकी जिन्दगी उसके लिये जबाल हो जाती और वह आपके दुःख को कुछ भी दूर करने लायक न रहता। अब अपने अभाग्य के साथ वह लड़ेगा, उसका बल और यश दोनो बढ़ेगा और वह धन भी कमावेगा। तुम बेखटके अपना भविष्य उसके ऊपर छोड़ दो, उससे बढ़ कर तुम्हारा

उपकार और कोई नहीं कर सकता ॥

मरियम०। (दुःख के साथ सिर हिलाकर) वह धन और यश जो आप उसके लिये बता रहे हैं और जिसके लिये मैं दिल से ईश्वर को मना रही हूं, वह मेरे भाग्य का नहीं है। मेरे दुर्भाग्य का प्याला लबालब भर गया है और अब मैं देख रही हूं कि कब्र मेरे से दूर नहीं है। काउण्ट! मैं तुम्हें इसके लिये धन्यवाद देती हूं कि तुम दया करके मुझे उस जगह ले आये हो जहां मेरे सुख के दिन कटे थे! मेरा विश्वास है कि आदमी को उसी स्थान पर मरना चाहिये जहा उसे सुख मिला है ॥

मौण्ट क्री०। आपकी बात सुन मेरा दिल घलनी हो रहा है क्योंकि मैं ही आपकी इन सब मुसीबतों का कारण हूं। पर यदि आप मुझपर करुणा न कर मुझे कसूरवार कहेंगी और मुझसे नफरत करेंगी तो मेरा दुःख और भी बढ़ेगा।

मरियम०। तुम्हें कसूरवार समझूंगी! तुमसे घृणा करूंगी! उस आदमी को जिसने मेरे लड़के की जान बख्शी? ओह! क्या मेरी सूरत गौर से देख कर भी तुम घृणा का कोई चिन्ह मुझमे पा सकते हो?

उद्वेग से भरी हुई मरियम ने खड़े होकर अपने दोनों हाथ काउण्ट की तरफ बढ़ा दिये। काउण्ट की नजर उसके चेहरे पर अड़ गई। वह बड़े ही उदासी भरे स्वर में कहने लगी—"मेरी तरफ देखो! मेरी आंखें अब अपनी चमक से चौंधियाती नही क्योकि उस समय

को अब एक जमाना बीत गया है जब मैं एडमण्ड को देख मुस्कुराती थी और वह इस मकान की (उंगली से बता कर) उस खिड़की में घण्टों खड़ा मेरी राह देखा करता था। बरसों के दुःख ने तब और अब के बीच में एक गहरी खाई खोद दी है। तुम्हे कसूरवार कहूं! तुम से नफरत करूं? नहीं, मैं तो अपने को कसूरवार कहती हू, अपने पर घृणा करती हू। (हाथ जोड़ कर आंखें आस्मान की तरफ उठा) आह! मैं कैसी कम्बख्त हूं! मुझे कैसी सजा मिली है! किसी समय मेरे पास पवित्रता, भक्ति और प्रेम—ये तीनों चीजें थी जो देवताओं को कठिनता से मिलती हैं, अपनी भूल से मैंने ये तीनों गँवाईं, उस पर भी यह पाप किया कि ईश्वर में भी अविश्वास कर बैठी!!"

मौण्ट क्रीटो ने उसके पास जा कर उसका हाथ पकड़ लिया और सहानुभूति से दबाया पर उसने धीरे से अपना हाथ खींच लिया और कहा, "नही एडमंड! मुझे मत छूओ! तुमने मुझे छोड़ दिया फिर भी उन सभों में जो तुम्हारे बदले की आग में गिरे मैं सब से ज्यादा कसूरवार थी। उन लोगों ने द्वेष, घृणा और स्वार्थ में पड़ कर तुम्हारे साथ बुराई की पर मैंने तो उन सभों से बढकर नीचता की और हिम्मत न होने के कारण अपने विवेक के विरुद्ध किया। नहीं एडमण्ड! मेरा हाथ न दबाओ! तुम मुझे दिलासा देने वाला, प्रेम प्रगट करने वाला शब्द कहा चाहते हो, पर मत

कहो, उसे दूसरे के लिये रख छोड़ो, मैं अब उसके योग्य नही हूं। (अपनी सूरत पूरी तरह दिखाकर) देखो! मुसीबत ने मेरे बालों को सफेद कर दिया है, मेरी आंखों ने इतने आंसू बहाये हैं कि उनके चारो तरफ नील पड़ गया है। फिक्र ने मेरे माथे को सिकोड़ दिया है। पर एडमण्ड तुम! तुम अभी तक नौजवान हो, सुन्दर हो, रोबीले हो, क्योंकि तुमने कभी ईश्वर पर अविश्वास नही किया और उसने तुम्हारी सब मुसीबतों में तुम्हें मदद और सहारा दिया है॥"

यह कहते हुए मरियम की आखें से आंसू की धार बहने लगी। उस दुखिनी का कलेजा पिछली बातों को याद कर करके फट रहा था। मौएट क्रीटो ने अदब से उसका हाथ पकड़कर चूम लिया पर वह खुद समझ गई कि इस चुम्बन में गर्मी न थी, उत्साह न था, यह वैसा था मानो किसी की सङ्गमर्मर की मूर्ति का लिया हुआ चुम्बन हो। मरियम बोली, "दुनिया में कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनके सारे जीवन को शुरू की एक भूल बिगाड़ देती है। मैंने तुम्हे मरा हुआ समझा! पर मैं जीती क्यों रह गई? अपने दिल के छिपे हुए कोने में तुम्हारी याद रखने और रोने से मुझे क्या फायदा हुआ? यही कि उन्तालीस की जगह मैं पचास बरस की मालूम होने लगी। जब कि मैंने तुम्हें पहिचान लिया! तब भी सिर्फ अपने लड़के की ही जान बचा कर मैं क्यों रह गई? क्या उसे भी बचाना मेरा कर्तव्य न था जिसे कसूर-

वार होने पर भी मैंने अपना पति बनाया था। मगर मैंने उसकी फिक्र न की। मुझे इसका खयाल नहीं हुआ कि सिर्फ मेरे ही कारण उसने दगा की, फरेब किया! और मैंने उससे नफरत करके, लापरवाही दिखा के उसे मर जाने दिया!! अपने लड़के को बचा के ही मैंने क्या पाया! आखिर अब तो उसे छोड़ना ही पड़ा, अफ्रीका के भयानक जङ्गलों में जाने देना ही पडा। ओह! असल में नीच मैं हूं! कसूरवार मैं हूं! अपने ही सबब से अपने साथियों पर भी मैं मुसीबत लाई हूं!!"

मौण्ट क्रीटो०। नहीं मरियम! अपने ऊपर ऐसी कडाई न करो! तुम बडी उदारहृदय हो, तुम्हारे दुःख ने मुझे लाचार कर दिया। पर आखिर मैं भी तो उस अदृष्य और कुपित विधाता का जो मेरे चलाये हुए वार को रोकना पसन्द नहीं करता था केवल एक हथियार मात्र था। मैं उस ईश्वर की कसम खा कर कहता हूं जिसके सामने आज दस बरस से मैं नित्य दण्डवत करता हूं कि मैं अपनी जान और जान के साथ साथ इतने दिनों के बांधनू भी तुम्हारे लिये दे देता पर ईश्वर को मेरी जान लेना मंजूर न था इससे उसने मुझको जीता रक्खा। गुजरे पर विचार करो, जो हो रहा है उसे देखो और जो आगे आवेगा उसपर भी गौर करो! क्या यह मालूम नही होता कि मुझको विधाता ने अपना दूत बनाया है। लड़कपन से मुझपर कैसी कैसी आफतें आईं, मेरे प्रेमी मुझसे जुदा किये गये, जिन्हे मैं जानता भी

न था उन्होंने मेरे साथ क्या कुछ न किया; क्या क्या भयानक कष्ट मुझे उठाने पड़े, क्या क्या आफतें मुझपर आईं पर इन सब से, मुसीबत, तनहाई, कैद, इन सब से, दूर होकर यकायक मैं स्वतंत्र हो गया, मेरे हाथ मोतियों का ऐसा बेइन्तहा खजाना लगा जिसकी कीमत का अन्दाजा भी नहीं किया जा सकता था, ऐसी बेशबहा और बेइन्तहा दौलत मुझे मिली। उसे पाकर भी अगर मैं यह न सोचता कि ईश्वर अपनी कोई भारी मन्शा मेरे जरिये पूरी कराना चाहता है तो बेशक मैं अन्धा ही कहलाता। उसी समय से मैंने अपनी उस जिन्दगी का बिल्कुल खयाल छोड़ दिया जिसकी कभी तुम भी एक हिस्सेदार थी। मैं खुद आपे में न रहा, मेरी शान्ति मुझसे कोसों दूर हो गई, मुझे ऐसा जान पड़ने लगा मानों शापित नगरों का सत्यानाश करने को मैं आग का बादल बनाया गया हूं। किसी फौज के सेनापति की तरह मैं अपनी रसद और गोला बारूद इकट्ठा करने लगा, हमले और बचाव के ढङ्ग सोचने लगा, अपने बदन को कड़ी तकलीफों का आदी बनाया, अपनी आत्मा को भारी से भारी सन्ताप सहने योग्य बनाया, हाथ को हत्या करना सिखाया, आंखों को असाध्य कष्ट देखने योग्य बनाया, मुंह को भारी से भारी दुःख पर भी हँसने योग्य बनाया। पहिले मैं शान्तस्वभाव, विश्वासी और दयालु था, अब मैं कृतघ्न, चालाक और दुष्ट हो गया, बल्कि यों कहना चाहिये कि भाग्य का प्रतिरूप

बन गया। सब रुकावटों को दूर कर मैं अपने मन्तव्य पर पहुंचा। जो मेरे रास्ते में पड़े उन्हें मैंने पीस दिया !!

मरियम०। बस एडमण्ड बस ! विश्वास रक्खो कि केवल मैं ही ने तुम्हें पहिचाना और समझा, अगर मैं भी तुम्हारे रास्ते में पड़ती और अगर मुझे भी तुम काम की तरह कुचल डालते तो भी मैं तुम्हारी प्रशंसा ही करती। मेरे और तुम्हारे दुःख के बीच में जैसी खाई पड़ गई है वैसी ही तुम्हारे और दुनिया के और आदमियों के बीच में है। इस दुनिया में कोई ऐसा नहीं है जिससे मैं तुम्हारा मुकाबला करूं। तुम्हारी कीमत, तुम्हारा बर्ताव, सिर्फ मैं ही समझती हूं, सो भी उसे कह नहीं सकती !! अच्छा एडमण्ड अब मुझे आखिरी सलाम करो, अब हमारे अलग होने की घड़ी आ गई है॥

मौण्ट०। हां मरियम ! अब मैं जाता हूं, पर क्या तुम्हें अब कोई बात मांगनी नहीं है ?

मरियम०। इस दुनिया में मुझे अब केवल एक चीज की आकांक्षा है—अपने लड़के का सुख !!

मौण्ट०। ईश्वर से प्रार्थना करो कि उसकी जान सलामत रक्खे, उसके सुख का मैं जिम्मा उठाता हूं॥

मरियम०। धन्य एडमण्ड धन्य !!

मौण्ट०। पर मरियम ! क्या तुम्हें अपने लिये किसी चीज की भी चाह नहीं है ?

मरियम०। नहीं कुछ नहीं, मैं तो अब मानों दो कब्रों के बीच में पड़ी हूं। एक तो उस एडमण्ड की जिसे

मैं प्यार करती थी—जिसे एक जमाना हुआ मैं गँवा चुकी! मैं उसे प्यार करती थी, प्यार करती थी! अब मेरे सूखे होठों पर यह शब्द अच्छा नहीं लगता पर वह याद मेरे दिल के अन्दर है और उसे मैं कभी भी नहीं भूलूंगी। दूसरी कब्र उसकी है जो एडमएड के हाथों मारा गया, जो हुआ वह ठीक ही हुआ पर मुर्दे के लिये मैं प्रार्थना करती ही रहूगी॥

मैाएट०। तुम्हारा लड़का सुखी रहेगा॥

मरि०। तब मैं भी उतना ही प्रसन्न रहूगी जितना अब हो सकती हू॥

मैाएट०। पर अब तुम्हारा इरादा क्या है?

मरि०। अगर मैं यह कहूं कि उस पिछली मरियम की तरह अब भी अपने मेहनत की कमाई रोटी खाकर रहूंगी तो यह फजूल है, अब मुझमें सिवाय ईश्वर की यादगारी करने के और किसी बात की ताकत नहीं रह गई है फिर मुझे मेहनत करने की भी जरूरत नही है, तुम्हारा गाड़ा हुआ वह रुपया जो मुझे मिल गया है मेरी परवरिश करने को काफी है। लोग मेरे रहन सहन बर्ताव आदि पर चाहे कुछ कहते रहें, मुझे उसकी परवाह न होगी॥

मैाएट क्रीटो०। मरियम! मैं शिकायत नही करता पर फिर भी मिस्टर मारकर्फ की तमाम दौलत खैरात कर तुमने फजूल का कष्ट उठाया, कम से कम उसका आधा तुम्हारी किफायत और बन्दोबस्त का नतीजा था॥

मरियम०। मैं समझ गई कि तुम क्या कहा चाहते हो पर नहीं, मैं उसे मंजूर नहीं कर सकती, मेरा बेटा इस बात को स्वीकार न करेगा ॥

मैारट०। अलबर्ट की मर्जी के विना मैं कुछ भी न करूंगा, मैं उसकी मर्जी जान कर उसी के अनुसार चलूंगा, पर यदि वह मेरी बात मंजूर कर ले तो तुम्हें तो कोई उज्र न होगा ?

मरियम०। तुम जानते हो एडमण्ड कि अब मेरे मे विचारशक्ति नही है, कोई इच्छा नहीं है, कोई आशा नही है। जो तूफान मेरे सिर पर से गुजरे हैं उन्होंने मुझे तोड़ दिया है और अब मैं उस सर्वशक्तिमान के सामने वैसी ही बेबस हूं जैसी बाज के पंजे में पड़ी हुई चिड़िया। मैं सिर्फ इसी लिये जी रही हूं कि मरने का हुक्म नहीं मिला है, अगर मुझे मदद मिलेगी तो मैं मंजूर कर लूंगी ॥

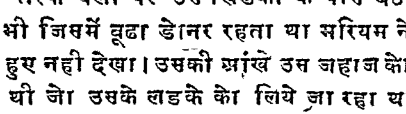
मैारट०। आह मैडम ! ईश्वर की पूजा इस तरह से नही होती। उसकी इच्छा रहती है कि मनुष्य उसकी इच्छाओं को समझे और झगड़े। इसी के लिये उसने मनुष्य को स्वतन्त्र इच्छा दी है ॥

मरि०। आह! मुझसे यह मत कहो, क्या मैं कभी यह सोच सकती हूं कि ईश्वर ने मुझे स्वतन्त्र बुद्धि दी थी और अगर मैं चाहती तो अपनी मुसीबतों को टाल सकती थी !!

मरियम के दुःख और निराशा के भाव ने मैारट

क्रीटो को हिला दिया, फिर वह कुछ कह न सका। उसने हाथ बढ़ा कर कहा, "अच्छा तो विदा!" मरियम ने अपना कांपता हुआ हाथ उसके हाथ में दिया और तब अस्पष्ट स्वर से "विदा" कहती हुई वह दौड़ कर मकान के अन्दर चली गई॥

मौण्ट क्रीटो धीरे धीरे बाग के बाहर निकला और बन्दर की तरफ चला पर उस खिड़की के पास बैठी रहने पर भी जिसमें बूढ़ा डोनर रहता था मरियम ने उसे जाते हुए नहीं देखा। उसकी आंखें उस जहाज को देख रही थीं जो उसके लड़के को लिये जा रहा था पर उसकी जुबान से निकल रहा था—"एडमण्ड! एडमण्ड! एडमण्ड!!"



दूसरा बयान।

याद।

मरियम को छोड़ काउण्ट दुखित चित्त से घर के बाहर निकला। छोटे बच्चे एडवर्ड की मौत के बाद से मौण्ट क्रीटो में बड़ा फर्क पड़ गया था। दुःखदाई और लंबे रास्ते से चढ़कर जब वह बदले की चोटी पर पहुंचा तो दूसरी तरफ उसे सन्देह की खाई नजर आई। क्या जितना उसने किया वह उचित था? फिर इस समय की मरियम की बातचीत ने उसके दिल में पुरानी बातों की याद जगा दी थी जिसका दूर करना जरूरी था। काउण्ट जैसे स्वभाव के आदमी को वह उदासी कभी बर्दाश्त नहीं हो सकती जो प्रायः कमजोर दिल वालों को आ घेरती है, वह सोचने लगा कि क्या मैंने भूल की? क्या इतने दिनों के सोच विचार के बाद जो रास्ता मैंने निकाला वह गलत था? क्या पिछले दस बरस तक मैं उलटे ही रास्ते पर चलता रहा? क्या अब इतना करके पश्चात्ताप ही मेरे हिस्से रह गया! नहीं नहीं ऐसा अगर मैं सोचूंगा तो मैं पागल ही हो जाऊंगा॥

मगर ऐसे विचार उठने ही का कारण क्या है? यही कि गुजरे हुए को मैं ठीक तरह पर नहीं विचार रहा हूं। गुजरी हुई बातें उस सीन की तरह जिसे हम सफर में पीछे छोड़ते जाते हैं अस्पष्ट होती जाती हैं। मेरी हालत उस आदमी की तरह हो रही है जिसने सपने में

जखम खाया है, जिसे दर्द तो मालूम हो रहा है पर यह नही याद आता कि कब चोट खाई। इस समय अगर मैं फिर अपनी उस भूखी और भ्रष्ट अवस्था की तरफ खयाल करू, कैद, मुसीबत और लाचारी के सीन को देखूं तो मेरे हवास ठिकाने आ जायें। उस शीशे में जिसमें मौएट क्रीटो 'डेगनर' को देखा चाहता है हीरे, मोती और पन्नों की छाया ने चकाचौंध मचा रक्खी है इसी से साफ सूरत नही दिखाई पडती, अपने जवाहिरात को छिपा डाल, सोने को दबा दे, अमीरी को गरीबी से बदल डाल, स्वतन्त्रता को कैद में डाल दे, जिन्दे की जगह कफन में सीया मुर्दा हो जा, तब तुझे वे मुसीबते याद आवेंगी जिनमें से तू गुजर चुका है॥

इस तरह की बाते सोचता हुआ मौएट क्रीटो समुद्र के किनारे बढा जा रहा था। जिस समय उसके खयालों का तांता टूटा उसने अपने को उसी ठिकाने पर पाया जहां आज से चौबीस बरस पहिले सिपाही उसे घसीट के लाये थे। जो मकान उस समय अंधेरे थे इस समय खुश और हँसते हुए दिखाई पड रहे थे, उन्हे देख काउएट बोल उठा, "पर ये मकान वे ही हैं, सिर्फ उस समय रात थी आज दिन है, उस समय मैं कैदी था आज स्वतन्त्र हू॥"

मौएट क्रीटो उन सीढियो पर पहुंचा जहां से वह नाव पर चढाया गया था। एक किराये की नाव सामने से जा रही थी, काउएट ने मलाह को आवाज दी। वह

नाव किनारे लाया, काउण्ट नाव पर चढ गया। रईस से काफी रुपया पाने की आशा मे खुश मलाह जोर जोर से डोंगी खेता हुआ किनारे किनारे जाने लगा। चारो तरफ का सीन बहुत ही अच्छा था, लाल सूरज समुद्र में डूब रहा था जो शीशे की तरह साफ और चमक रहा था। सिर्फ कभी कभी दुश्मनों से भागती हुई मछलियां उसपर लहर पैदा कर देती थीं, दूर पर सफेद पाल ताने जहाज और डोंगे पक्षियों की तरह उडते हुए नजर आ रहे थे। ठण्ढी,ठण्ढी हवा में समुद्री चिड़ियाए कोलाहल करती हुई इधर से उधर उड़ रही थीं॥

पर शान्ति और सुख के इस दृष्य में भी मौण्ट क्रीटो को वह भयानक रात का सफर ही याद आ रहा था। कतलूनी की पहाड़ी पर की अकेली रोशनी, किले ऐफ के उस ऊंचे कंगूरे की पहिली झलक, जिसने उसे बताया था कि वह कैसी भयानक जगह ले जाया जा रहा है, वह सिपाहियों के साथ झगड़ कर समुद्र में कूदने की कोशिश, माथे पर चुभती हुई सङ्गीन की तकलीफ जब सिपाहियों ने उसे बेवस कर दिया था, यह सब एक के बाद एक उसे याद आ रही थी, साफ और चमकते हुए आस्मान की जगह उसे अँधेरा और भयानक आकाश दिख रहा था जिसमे ऐफ का किला जानी दुश्मन की तरह सिर उठाये हुए खडा था। जिस समय नाव उस किले के पास पहुंची और मलाह ने कहा, "हुजूर किला

आ गया।" काउण्ट यकायक डर कर पीछे को तरफ हट गया। उसे वह दिन याद आ गया जब सिपाही उसे इन्हीं सीढ़ियों पर से सङ्गीन की नोकों से भोंकते हुए चढ़ा ले गये थे। डांनर को यह सफर बहुत लम्बा मालूम हुआ था पर मौण्ट क्रीटो बड़ी जल्दी यहा पहुंच गया॥

जूलाई के बलवे के बाद से अब किले ऐफ मे कैदी नही रक्खे जाते थे। अब उसमें सिर्फ थोडे से सिपाही रहते थे और वह परदेसियो के लिये एक 'देखने की चीज' भर रह गया था। मुसाफिरों को एक सिपाही उस भयानक तहखाने में लेजा सब कोठडिये दिखा देता था और वे जो कुछ दे देते उसे खुश होकर ले लेता था। आज भी एक सिपाही सीढ़ियों पर मौजूद था जो काउण्ट को देखते ही उसके आगे आगे हो लिया॥

जिस समय काउण्ट उस तहखाने में पहुंचा जिसमें उसने अपनी कैद के वे भयानक वर्ष बिताये थे, बहुत रोकने पर भी वह काप उठा और उसके माथे पर पसीना आ गया। वह एक दीवार के साथ लग कर खडा हो गया और जब उसका जी कुछ ठिकाने हुआ तो उसने सिपाही से पूछा, "क्या उस जमाने का कोई जेलर भी अब यहा है जब इसमें कैदी रहते थे?" सिपाही ने जवाब दिया, "नही वे सब मर गये, अब कोई नही है॥"

काउण्ट अपने कैदखाने की कोठडी में गया, उस छोटी खिडकी मे से मुश्किल से आती हुई रोशनी में उसने अपनी चारपाई देखी, खाट के बगल में कुछ नये

पत्थर उस जगह को घेरे रहे थे जहां ऐबी फिरिया की सुरङ्ग का मुहाना था। काउण्ट का बदन काँपने लगा, वह एक लकडी के कुन्दे पर बैठ गया जो वहां पड़ा था। सिपाही ताज्जुब के साथ उसकी हालत देखने लगा॥

जब उसका जी कुछ ठिकाने हुआ काउण्ट ने सिपाही से पूछा, "क्या इन भयानक कोठड़ियों में कैदी बन्द किये जाते थे?"

सिपाही०। हां भयानक और खूंखार कैदी इनमें रहते थे। खास इसी कोठड़ी में एक बडा ही भयानक कैदी था जिसकी कहानी एण्टोइन ने मुझे सुनाई थी॥

मौण्ट क्रीटो काँप गया। एण्टोइन उसका जेलर था। उसका नाम सुनते ही उसकी सूरत, उसकी दाढी, उसकी जैकेट, उसका तालियों का गुच्छा—सब काउण्ट की निगाह के सामने आ गया। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो गुच्छा खनखनाता हुआ एण्टोइन बाहर खड़ा है॥

सिपाही०। क्या हुजूर वह किस्सा सुनेंगे?

मौण्ट०। (अपने उछलते हुए कलेजे को हाथ से दबा कर) हां हां कहो॥

सिपा०। इसमें पहिले एक बड़ा ही भयानक और धूर्त कैदी रहता था। एक दूसरा कैदी भी उसी जमाने में एक दूसरी कोठडी मे रहता था पर वह बेचारा बड़ा ही सूधा एक पादडी था। लोग उसे पागल कहते थे क्योंकि जो उसे देखने आता उसी से वह कहता था कि मुझे कैद से छुडा दो तो मैं तुम्हें करोडों रुपये दूंगा॥

मौण्ट क्रीटो ने मन ही मन कहा—"हां, पागल था!! अरे कस्वख्तो! पागल और अन्धे तो वे थे जो उसे पागल समझते थे॥"

सिपाही०। लोग कहते हैं कि इस कोठड़ी मे रहने वाले कैदी ने भीतर ही भीतर अपनी कोठड़ी मे से उस पागल की कोठड़ी तक एक सुरङ्ग खोदी जिसका निशान वह देखिये अभी तक मौजूद है॥

मौण्ट०। इस कैदी ने?

सिपा०। हां, वह दूसरा तो बिल्कुल लाचार और पागल था, उसका दिमाग इस लायक नही था कि ऐसे भारी काम को कर सके!!

मौण्ट०। (मन मे) अन्धे! बेवकूफ!! (प्रगट) अच्छा तब?

सिपा०। इस सुरङ्ग की राह वे दोनों कैदी आपुस मे बातचीत और भागने की सलाह किया करते थे। कब तक यह कार्रवाई जारी रही यह नही कहा जा सकता पर यकायक एक दिन वह बूढ़ा पागल पादड़ी बीमार पड़ा और मर गया॥

मौण्ट०। ठीक है, तब?

सिपाही०। इस नौजवान कैदी ने उस बूढे को तो लाकर अपनी इस कोठड़ी में रख दिया और खुद जा कर उस बोरे मे छिप गया जिसमे उसकी लाश दफन के लिये सीयी गई थी। देखा आपने वह कैसा भयानक आदमी था॥

मैाएट क्रीटो ने कोई जवाब न दिया, उसकी आंखों के सामने उस समय का सीन घूम गया जब वह मौत के पसीने से ठण्ढे उस बोरे में घुसा था। सिपाही कहता रहा, "उसने शायद यह सोचा था कि इस किले के मुर्दे कहीं जमीन में गाडे जाते होंगे और जब लोग उसको गाड कर चले जायँगे तब वह कन्धों से जोर कर मिट्टी हटा बाहर निकल आवेगा पर वहां तो मामला ही कुछ दूसरा था। यहां के मुर्दे कभी जमीन में गाड़े ही नहीं जाते, उनके पैरों से एक लोहे का गोला बांध दिया जाता है और वे समुद्र में फेंक दिये जाते हैं। ऐसा ही उस कैदी के साथ भी किया गया और वह किले पर से नीचे समुद्र में फेंक दिया गया। दूसरे दिन जब उसकी कोठड़ी में से पागल पादड़ी की लाश निकली तो भंडा फूटा और उन लाश फेंकने वालों ने भी तब वह बात मंजूर की जो इसके पहिले डर के मारे उन्होंने मुंह से नहीं निकाली थी, अर्थात् जब लाश जल में फेंकी गई तो बोरे में से बड़ी जोर की चीख की आवाज निकली पर जल ने उसे दबा दिया॥"

काउण्ट की सांस मुश्किल से जा रही थी। उसके माथे पर से ठंढे पसीने की बूंदें चूने लगी थीं और दिल में उस वक्त की याद ने तकलीफ पैदा करती थी। उसने मन ही मन कहा, "नहीं! मुझे जो सन्देह पैदा हो रहा था वह भूलने की निशानी थी। अब वह जख्म फिर ताजा होता है, दिल फिर बदले की ख्वाहिश करता है!!

(सिपाही से) अच्छा उस कैदी का क्या हुआ? क्या फिर उसका कभी कोई पता लगा!"

सिपा०। उसका भला फिर क्या पता लगना था! इतने ऊंचे से अगर वह पट गिरा होगा तो उसका पेट फट वह तुरत मर गया होगा, और अगर खडा गिरा होगा तो वह गोला उसे तह में खींच ले गया होगा जहां वह बेचारा अभी तक पडा होगा॥

काउएट ने दाँत पीसकर धीरे से कहा, "विलफोर्ट! विलफोर्ट!" सिपाही बोला—"हुजूर और कुछ देखा चाहते हैं?"

मौएट०। क्या तुम उस बेचारे पादड़ी की कोठड़ी मुझे दिखा सकते हो?

सिपाही०। नम्बर २७ की? हां, मेरे साथ आइये॥

मौएट०। जरा सा ठहरो, मैं एक दफे इस कोठड़ी को अच्छी तरह देख लूं॥

सिपाही०। अच्छी बात है, मैं भी २७ नम्बर की ताली लेकर अभी आता हूं, मशाल छोडता जाऊं?

मौएट०। नहीं कोई जरूरत नहीं, मैं अँधेरे में देख सकता हूं॥

सिपा०। तब तो आप भी उस नम्बर ३४ की तरह ही हैं, लोग कहते हैं कि अँधेरे मे रहते रहते उसकी आंखे ऐसी तेज हो गई थी कि वह बारीक से बारीक चीज अँधेरे में देख सकता था॥

मौएट०। (धीरे से) ऐसा होने में उसे चौदह बरस

सैाएट क्रीटो ने कोई जवाब न दिया, उसकी आंखों के सामने उस समय का सीन घूम गया जब वह मैात के पसीने से ठण्ढे उस बोरे में घुसा था। सिपाही कहता रहा, "उसने शायद यह सोचा था कि इस किले के मुर्दे कही जमीन में गाड़े जाते होंगे श्रैार जब लोग उसको गाड कर चले जायँगे तब वह कन्धों से जोर कर मिट्टी हटा बाहर निकल आवेगा पर वहां तो मामला ही कुछ दूसरा था। यहां के मुर्दे कभी जमीन मे गाड़े ही नहीं जाते, उनके पैरों से एक लोहे का गोला बांध दिया जाता है श्रैार वे समुद्र में फेक दिये जाते हैं। ऐसा ही उस कैदी के साथ भी किया गया श्रैार वह किले पर से नीचे समुद्र मे फेंक दिया गया। दूसरे दिन जब उसकी कोठड़ी में से पागल पादड़ी की लाश निकली तो भंडा फूटा श्रैार उन लाश फेंकने वालों ने भी तब वह बात मंजूर की जो इसके पहिले डर के मारे उन्होंने मुंह से नहीं निकाली थी, श्रर्थात् जब लाश जल से फेकी गई तो बोरे में से बड़ी जोर की चीख की आवाज निकली पर जल ने उसे दबा दिया॥"

काउण्ट की सांस मुश्किल से जा रही-थी। उसके माथे पर से ठंढे पसीने की बूदें चूने लगी थीं श्रैार दिल में उस वक्त की याद ने तकलीफ पैदा करती थी। उसने मन ही मन कहा, "नहीं! मुझे जो सन्देह पैदा हो रहा था वह भूलने की निशानी थी। अब वह जख्म फिर ताजा होता है, दिल फिर बदले की ख्वाहिश करता है!!

(सिपाही से) अच्छा उस कैदी का क्या हुआ ? क्या फिर उसका कभी कोई पता लगा !"

सिपा०। उसका भला फिर क्या पता लगना था ! इतने ऊंचे से अगर वह पट गिरा होगा तो उसका पेट फट वह तुरत मर गया होगा, और अगर खड़ा गिरा होगा तो वह गोला उसे तह मे खीच ले गया होगा जहां वह बेचारा अभी तक पड़ा होगा॥

काउण्ट ने दाँत पीसकर धीरे से कहा, "विलफोर्ट! विलफोर्ट!" सिपाही बोला—"हुजूर और कुछ देखा चाहते हैं ?"

मौण्ट०। क्या तुम उस बेचारे पादड़ी की कोठड़ी मुझे दिखा सकते हो ?

सिपाही०। नम्बर २७ की ? हां, मेरे साथ आइये॥

मौण्ट०। ज़रा सा ठहरो, मैं एक दफे इस कोठड़ी को अच्छी तरह देख लूं॥

सिपाही०। अच्छी बात है, मैं भी २७ नम्बर की ताली लेकर अभी आता हूं, मशाल छोड़ता जाऊं ?

मौण्ट०। नही कोई जरूरत नहीं, मैं अँधेरे में देख सकता हूं॥

सिपा०। तब तो आप भी उस नम्बर ३४ की तरह ही हैं, लोग कहते हैं कि अँधेरे में रहते रहते उसकी आंखें ऐसी तेज होगई थी कि वह बारीक से बारीक चीज अँधेरे में देख सकता था॥

मौण्ट०। (धीरे से) ऐसा होने में उसे चौदह बरस

लगे थे ॥

सिपाही मशाल लेकर चला गया। काउण्ट ने ठीक कहा था, थोड़ी ही देर बाद उसे वहां की चीज़ें ऐसी साफ दिखाई पड़ने लगीं मानों वहां पूरा चांदना हो। वह चारों तरफ देख देख कहने लगा :—

"ठीक है, यही मेरी कालकोठड़ी है। यही वह पत्थर है जिसपर मैं बैठा करता था, मेरे कन्धों की रगड़ से दीवार में पड़ा गड़हा वह मौजूद है। जिस दिन मैंने अपना सिर दीवार से पटका था उस दिन का खून का दाग अभी तक वह मौजूद है। ओह! वे निशान मुझे अच्छी तरह याद हैं! मैंने अपने बाप और मरियम की उम्र का हिसाब रखने के लिये और यह जानने के लिये कि यहां से निकलकर मैं उन्हें जीता पाऊंगा या नहीं, उन्हें बनाया था। उन्हें जोड़ने के बाद मुझे एक तरह की आशा हुई थी! ओह! मुझे भूख और विश्वासघात का खयाल नहीं उठा था!" उसे अपनी आंखों के सामने अपने पिता के मरने और मरियम के शादी करने का सीन दिखाई पड़ गया। उसने दूसरी तरफ निगाह फेरी। दीवार की हरी काई पर उसके हाथ के लिखे ये सफेद अक्षर अभी तक मौजूद थे, "हे परमेश्वर! मेरी याददाश्त बनाये रख!!" पढ़कर वह बोला, "ठीक है! अन्त में मुझे सिर्फ एक यही भीख मांगनी रह गई थी! छुटकारे की प्रार्थना कर करके मैं हार चुका था! मैं याददाश्त बनी रहने की भीख मांगता था जिसमें मैं

सब कुछ भूल कर पागल न हो जाऊं। हे परमात्मा! तूने मेरी याददाश्त कायम रक्खी है! तू धन्य है! धन्य है!!"

इसी समय मशाल की रोशनी दीवार पर पड़ी। सिपाही लौट रहा था। मौण्ट क्रीटो उस कोठड़ी के बाहर निकल आया। सिपाही ने पीछे पीछे आने को कहा और कई रास्तों से घुमाता हुआ उस कोठड़ी में ले गया जिसमें पादड़ी रहता था। कोठड़ी खुलते ही तरह तरह के खयालों ने काउण्ट को घेर लिया। उसके सामने ही वह धूपघड़ी थी जो पादड़ी ने समय जानने के लिये बनाई थी, बगल में वह पलङ्ग था जिसपर बेचारा मरा था। पादड़ी के अन्त समय का दृश्य काउण्ट की आंखों के सामने घूम गया और उसकी आंखें डबडबा आईं॥

सिपा०। इसी खाट पर पागल पादड़ी सोता था और यह वह जगह है जहां उस नौजवान ने सुरङ्ग फोड़ी थी। (यह मुहाना अभी तक खुला ही था) एक विद्वान ने इस सुरङ्ग को देखकर पता लगाया था कि दोनो कैदी कम से कम दस बरस तक इस जरिये से आपुस में मिलते जुलते रहे होंगे। ओह उन बेचारों के ये दस बरस कैसे दुःख में कटे होंगे!!"

डोनर ने अपनी जेब से कुछ अशर्फियें निकाली और इस सिपाही के हाथ में दे दी जिसने बिना उसे जाने दो बार उसकी हालत पर रहम किया था। सि-

पाही ने उन्हें मामूली सिक्के समझ कर ले लिया पर जब मशाल की रोशनी उनपर पड़ी तो वह चौंक कर बोल उठा—"हुजूर आपने गलती की है, पैसों के बदले में आपने अशर्फियें दे दी हैं!" काउण्ट बोला, "हां, मैं जानता हूं!!" सिपाही ताज्जुब से उसका मुंह देखने लगा, थोड़ी देर बाद बोला, "आप बड़े उदार हैं!!"

काउण्ट०। बात यह है कि तुमने जो कहानी सुनाई उसने मेरे दिल पर बड़ा असर किया है॥

सिपा०। जब आप ऐसे दयालू हैं तो मैं कुछ और चीज भी आपको दिखाऊंगा॥

काउण्ट०। क्या चीज?

सिपा०। कुछ इस कहानी ही से सम्बन्ध रखने वाली चीज॥

काउण्ट०। (आग्रह से) हां! कौन चीज?

सिपाही०। एक दिन मेरे मन में यह खयाल उठा कि इस कोठडी में पन्द्रह बरस तक जो कैदी रह गया है वह शायद अपनी कोई निशानी भी इसमें छोड़ गया हो॥

काउण्ट०। (पादडी की दोनों गुप्त जगहों को याद कर) हां! हां!!

सिपाही०। मैं दीवारों को ठोकने लगा और तब मुझे इस खाट के सिर्हाने वाला पत्थर कुछ खोखला सा मालूम हुआ॥

काउण्ट०। हां!!

सिपाही०। मैंने उस पत्थर को हटाया, एक गड्हा नजर आया और उसमें से:

काउण्ट०। एक रस्सी की सीढ़ी और कुछ औजार निकले?

सिपाही०। (ताज्जुब से) आप कैसे जानते हैं?

काउण्ट०। मैं जानता नहीं सिर्फ सोचता हूं, क्योंकि कैदी लोगों के पास से ऐसी ही चीजें निकलती हैं॥

सिपाही०। हां तो एक सीढ़ी और कुछ औजार उससे से निकले॥

काउण्ट०। वे तुम्हारे पास अभी तक हैं?

सिपाही०। नहीं, उन्हें तो मैंने दूसरे मुसाफिरों के हाथ बेच दिया पर मेरे पास एक और चीज है॥

काउण्ट०। (बेचैनी से) आखिर क्या?

सिपा०। कपड़े के टुकड़ों पर लिखी हुई एक तरह की किताब॥

का०। जाओ जल्दी उसे ले आओ, जो मैं समझता हूं अगर वही चीज है तो तुम्हारी किस्मत बन गई॥

"मैं अभी लाया" कहता हुआ सिपाही दौड़ता हुआ बाहर चला गया और काउण्ट ने उस खाट के पास घुटने मोड़ कर कहा, "ओह मेरे दूसरे जन्मदाता! ओह मुझे स्वतन्त्रता, विद्या और धन देने वाले! ओह भले और बुरे के जानने वाले! अगर कब्र के अन्दर भी कोई ऐसी चीज रहती है जिसके जरिये से दुनिया पर छूटे हुए आदमियों से बातचीत हो सकती है, अगर

मौत के बाद भी आत्मा उन जगहों पर आ जा सकती है जहां वह जिन्दगी में रह चुकी है तो हे उदारहृदय! हे उन्नतात्मा! मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि अपने उस प्रेम को याद कर जो किसी जमाने में तेरा मुझपर था और मुझे कोई निशानी, कोई चिन्ह, कोई इशारा दे। मेरे दिल से उस सन्देह को दूर कर जो यदि बना रह जायगा तो पछतावे की तरह पर हो जायगा।" काउण्ट ने दोनों हाथ जोड़ कर सिर झुका लिया और पादड़ी का ध्यान करने लगा॥

पीछे से किसी ने कहा, "यह लीजिये।" काउण्ट चौंक कर उठ खड़ा हुआ। सिपाही ने उसके हाथ में कपड़े का वह पुलिन्दा दे दिया जिसपर ऐबी फिरिया ने अपनी सारी बुद्धिमानी और जानकारी खर्च की थी। यह ऐबी फिरिया द्वारा लिखित इटली के राजघराने का इतिहास था। काउण्ट ने पुलिन्दा ले लिया और खोला, पहिली ही दृष्टि पर उसे धर्मग्रन्थ का यह वाक्य लिखा हुआ मिला, "परमेश्वर ने उसे बरदान दिया—तू पिशाचों के दाँत तोड़ देगा और सिंहों को पैर के नीचे कुचलेगा॥"

गद्गद स्वर से काउण्ट बोला—"पिता! गुरुदेव! धन्य हो! तुमने मेरा संतोष कर दिया!!" उसने अपनी जेब में हाथ डाल एक बेग निकाला जिसमे हजार हजार रुपै के दस नोट थे, इसे उसने सिपाही की तरफ बढ़ा कर कहा, "लो॥"

सिपाही०। क्या आप यह मुझे दे रहे हैं ?

काउण्ट०। हां, मगर सिर्फ इसी शर्त पर कि जब मैं चला जाऊं तब इसे खोलना॥

काउण्ट ने बड़े ही बेशकीमती हीरों से भी कीमती उस पोथी को अपनी छाती के साथ दबा लिया और झपटता हुआ उस तहखाने के बाहर निकल गया। नाव पर पहुच उसने भारी स्वर से कहा, "लौटो।" और जब नाव घूमी तो उसने पीछे की तरफ घूम कर कहा, "उन लोगों का सत्यानाश हो जिन्हों ने मुझे इस कम्बख़्त जगह में भेजा ! उनका नाश हो जो भूल गये कि मैं इसमें बन्द हूं !!"

जिस समय वह कतलूनी की पहाड़ी के नीचे पहुंचा उसने कपड़ों में मुंह छिपाकर किसी रमणी का नाम लिया। अब उसका सब सन्देह दूर हो चुका था, उसे फतहमन्दी मिल गई थी। इस समय उसने प्रेम से भरा हुआ जो नाम लिया था वह हैदरी का था॥

बन्दरगाह पर पहुंच काउण्ट कब्रस्तान की तरफ चला जहां मारल के होने का उसे विश्वास था। दस बरस पहिले उसने भी इसी तरह एक कब्र की खोज की थी पर व्यर्थ हुई थी। अरबों रुपये का मालिक होकर लौटने पर भी वह अपने बाप की कब्र न पा सका था जो भूखा मर गया था। बूढ़े मारल ने उसपर एक 'क्रूस' गड़वा दिया था पर समय ने वह निशान भी मिटा डाला था और कब्र को जमींदोज कर दिया था। सैा-

दागर मारल डोनर के बाप से ज्यादा भाग्यवान था। वह अपने प्यारे बच्चों की गोद में मरा था और अपनी स्त्री की बगल में सोया था जो उससे दो बरस पहिले मर चुकी थी। चार घने पेड़ों के नीचे उन दोनों की सङ्गमर्मर की क़ब्र बनी हुई थी और चारो तरफ लोहे का जँगला लगा हुआ था। मैक्सिमिलियन इस समय इसी जँगले का सहारा लिये खड़ा एक टक निगाह से क़ब्रो को देखता हुआ अपने दु:ख में इतना डूबा हुआ था कि उसे दीन दुनिया की सुध न थी जब काउण्ट उसके पास पहुंचा॥

का०। मैक्सिमिलियन! तुम्हें उन क़ब्रों की तरफ नहीं बल्कि (ऊपर बता कर) उधर देखना चाहिये॥

मैक्स०। पैरिस छोड़ती समय आप ही ने कहा था कि मुर्दे सभी जगह हैं॥

काउण्ट०। तुमने रास्ते में मुझसे कहा था कि थोड़े दिन मारसेलीज में रहोगे। क्या अब भी तुम्हारी यहां रहने की इच्छा है?

मैक्स०। अब मुझे कोई भी इच्छा नहीं है, फिर भी मैं समझता हू कि और जगह की बनिस्बत यहां मैं कुछ कम कष्ट से दिन बिता सकूँगा॥

काउण्ट०। तो अच्छा ही है क्योंकि मैं कुछ दिन के लिये कहीं जाया चाहता हूं पर तुम्हारा वादा साथ लिये जाता हूं, भूलना मत॥

मैक्स०। ओह काउण्ट! मैं भूल जाऊंगा!!

का०। नहीं, नहीं भूलोगे, क्योंकि तुम जुबान दे चुके हो और अब मैं दुबारा तुमसे जुबान लूंगा॥

मैक्समि०। काउण्ट! मेरी हालत पर रहम करो। मुझपर कैसी आफत पड़ी है उसका खयाल करो॥

काउण्ट०। मैं तुमसे बढ़के एक मुसीबतजदे को जानता हूं॥

मैक्स०। कभी नहीं॥

का०। अफसोस! दुनिया के झूठे घमण्डों में से एक यह भी है कि हरएक आदमी अपनी बगल में रोते और तड़पते हुए आदमी की बनिस्बत अपने को भारी दुःख में पड़ा समझता है॥

मैक्स०। उस आदमी से बढ़कर दुःख किसपर पड़ा होगा जिसने अपनी सब से प्यारी चीज गँवा दी है॥

का०। सुनो और गौर करो। मैं एक आदमी को जानता हूं जिसने तुम्हारी ही तरह अपनी समस्त सुख और प्रसन्नता का मूल एक औरत को बनाया हुआ था। वह नौजवान था, उसका एक बूढ़ा बाप था जिससे उसे बड़ा ही स्नेह था और अपने प्रेमिका को वह जान से बढ़कर चाहता था। वह उससे ब्याह करने ही वाला था कि किस्मत के फेर से (ऐसे फेर से जिसे देख कर लोग ईश्वर पर भरोसा करना भी छोड़ने पर तैयार हो जायँ, यदि वह ईश्वर यह जाहिर न कर दे कि हर एक बात वह प्राणी के उपकार के लिये ही करता है) ऐसे किस्मत के फेर ने उसकी प्रेमिका उससे छीन

ली और उस भविष्य को जो उसने अपने लिये सोच रक्खा था (क्योंकि वह अन्धा यह भूल गया था कि आदमी को वर्तमान के पढ़ने की भी शक्ति नहीं है भविष्य तो दूर) मटियामेट कर उसे कालकोठड़ी का कैदी बना दिया ॥

मैक्समि० । कैदी हफ्ते दो हफ्ते महीने या साल में कालकोठड़ी के बाहर आ जाते हैं ॥

का० । (मैक्समिलियन के कन्धे पर हाथ धर कर) वह चौदह बरस उसमें बन्द रहा ॥

मैक्स० । (काँप कर) चौदह बरस !!

का० । हां चौदह बरस ! और इस बीच में उसने दुःख, मुसीबत और लाचारी के बड़े बड़े सपने देखे ! तुम्हारी तरह उसने भी अपने को संसार में सब से भारी दुखिया समझा और आत्महत्या करने का विचार कर लिया ॥

मैक्स० । तब ?

का० । तब !! बेबसी की हद्द पर जब वह जा पहुंचा तो ईश्वर ने एक मनुष्य के जरिये अपने को उसपर प्रगट किया । पहिले तो उसने ईश्वर की इस कृपा को नहीं समझा क्योंकि आंसुओं की ओट से आंखे स्पष्ट नहीं देख सकती पर अन्त में उसने सब्र और सन्तोष का सहारा लिया । आखिर एक दिन वह अद्भुत रीति से उस कैद के बाहर निकला, बाहर ही नही हुआ बल्कि अमीर और ताकतवर हो गया । उसे पहिले अपने बाप

की चिन्ता हुई पर उसका बाप मर चुका था॥

मैक्स०। मेरा बाप भी मर गया है॥

का०। हां, मगर तुम्हारा बाप मरती समय वृद्ध इज्जतदार, अमीर और प्रसन्न था, वह तुम्हारे हाथों, में मरा पर उसका बाप गरीब, निराश और ईश्वर पर अविश्वास करता हुआ मरा। दस बरस के बाद जब उसके लड़के ने उसकी कब्र खोजी तो कब्र भी गायब हो चुकी थी और कोई नहीं बता सकता था कि उस जगह तुम्हारा वह बूढ़ा बाप लेटा है जिसे तुम इतना प्यार करते थे॥

मैक्स०। ओह !!

का०। देखा तुमने, वह तुमसे बढ़कर दुखी था॥

मैक्स०। कम से कम उसको वह औरत तो मिली जिसे वह चाहता था॥

का०। नहीं इससे भी बुरा—वह विश्वासघात कर चुकी थी, और उसने उन्हीं आदमियों में से एक के साथ ब्याह कर लिया था जिन्हों ने उसके पहिले प्रेमी को उस हालत तक पहुचाया था। देखा तुमने! वह तुमसे भारी दुःखी था !!

मैक्स०। क्या उसे सन्तोष लाभ हुआ ?

का०। कम से कम शान्ति मिली॥

मैक्स०। और उसे कभी सुखी होने की आशा है ?

का०। हां है॥

नौजवान ने अपना सिर अपनी छाती की तरफ झुका दिया। एक मिनट के बाद उसने काउण्ट की तरफ

हाथ बढ़ा कर कहा—"मैं वादा करता हूं लेकिन याद रखना......"

काउण्ट०। मैक्समिलियन! पांचवीं अक्टूबर वाले दिन मैं तुम्हारी मौण्ट क्रीटो के टापू में राह देखूँगा। चार तारीख को 'यूरस' नामी एक जहाज बस्टिया के बन्दर में रहेगा, तुम उसके कप्तान को अपना नाम बता देना, वह तुम्हें मेरे पास पहुंचा देगा। समझ गये?

मैक्स०। हां समझ गया, जैसा आपने कहा है वैसा ही करूंगा पर आपको याद है कि उसी पांचवीं अक्टूबर.......?

काउण्ट०। लड़के! आदमी के जुबान की कद्र नहीं जानता!! मैं बीस दफे कह चुका कि अगर उस दिन तू मरना चाहेगा तो मैं खुद तुझे जहर दूंगा—अच्छा विदा!!

मैक्स०। आप जाते हैं?

काउण्ट०। हां मुझे इटली में कुछ काम है। मैं तुम्हें अपने दुःखों से लड़ते हुए छोड़ता हूं पर घबराना नहीं, ईश्वर मुसीबतो ही के द्वारा मनुष्य को ऊंचा बनाता है॥

मैक्स०। कब जाते हैं?

का०। अभी, जहाज खड़ा है, घण्टे भर में मैं तुमसे बहुत दूर रहूंगा। क्या तुम बन्दरगाह तक मेरे साथ चलोगे?

मैक्स०। चलिये॥

काउण्ट के साथ साथ मैक्समिलियन बन्दरगाह

तक गया। जहाज की काली चिमनी से पँख की तरह भाफ निकल कर फैल रही थी। काउएट के उसपर सवार होते ही उसने किनारा छोड़ दिया और घण्टे भर के अन्दर ही जैसा कि काउएट ने कहा था क्षितिज पर का एक धब्बा मात्र रह गया॥

तीसरा बयान

पेपिनो।

ठीक उसी समय जब कि काउएट मौएट क्रीटो का जहाज आंखों की ओट हो रहा था, एक सफरी गाड़ी जिसमें चार मजबूत घोड़े जुते हुए थे 'रोम' शहर के पास पहुंच रही थी॥

गाड़ी में एक मोटा आदमी बैठा हुआ था जिसकी पोशाक स्वर और आकृति साफ बता रही थी कि यह फ्रान्सीसी है। वह अकेला था, कोई नौकर या दोस्त भी उसके साथ न था। इटली देश की भाषा वह कुछ भी न जानता था क्योंकि जब कभी कोचवान या साईसों से उसे कुछ कहना होता था वह इशारे ही में कहता था॥

अब जिस जगह वह गाड़ी थी वहां से रोम साफ दिखने लगा था पर इस मुसाफिर को इस प्रसिद्ध नगर के देखने का वह चाव न था जो प्रत्येक नये आने वाले को दूर से इसकी शाही इमारतें देखकर होता है। इसने सिर्फ एक निगाह उस तरफ डाली और तब अपनी

लगा । दङ्गली जिसका चेहरा खुशी से दमक रहा था भीतरी दर्वाजा खोल वहां पहुंचा और विना किसी की तरफ निगाह फेरे बाहर चला गया । उसके बाहर होतेही पेपिनो भी माला जेब में रख उसके पीछे हुआ । दङ्गली की गाड़ी आकर दर्वाजे पर मौजूद थी, कोचवान दरवाजा खोले खड़ा था, बीस बरस के नौजवान की तरह उछलकर दङ्गली गाड़ी पर चढ़ गया और बोला, "होटल को चलो !!" गाड़ी रवाना हुई, पेपिनो पीछे लटक गया ॥

दस मिनट में दङ्गली होटल में पहुंच गया, वह थक गया था अस्तु पहुंचते ही अपने कमरे में चला गया और दर्वाजा भीतर से बन्द कर सो रहा । पेपिनो थोड़ी देर के लिये कहीं चला गया मगर फिर रात को आ दर्वाजे ही के पास पड़ रहा ॥

कई दिन से पूरी नींद न ले सकने के कारण जल्दी सो जाने पर भी दङ्गली की नींद बहुत देर करके खुली, मगर इस समय उसकी तबीयत बहुत साफ और खुश थी । उसनें उम्दी और स्वादिष्ट भोजन की चीजों पर अच्छी तरह हाथ साफ किया और तब सफरी गाड़ी तैयार कर लाने का हुक्म दिया मगर बहुत जल्दी करने पर भी पासपोर्ट आदि लेने देने में उसे दो बज गया और तब वह होटल को छोड़ बाहर आ सका । गाड़ीवान ने पूछा—"किधर ?" उसने कहा, "एन्कोना की तरफ !" और तब गाड़ी के अन्दर जाकर बैठ गया ।

गाड़ी तेजी के साथ रवाना हुई और दङ्गली ऊंघता और झोंके खाता हुआ तरह तरह की बातें सोचने लगा। उसका इरादा था कि वेनिस पहुंचकर उन हुण्डियों का रुपया कर ले और तब पीना जाकर वहीं आराम की जिन्दगी बसर करे। पचास लाख रुपयों की बदौलत क्योंकर वह अपनी जिन्दगी के बाकी दिन आनन्द में बितावेगा यह सोच सोच वह तरह तरह के हवाई किले बांध रहा था॥

रोम से बीस मील जाते जाते रात हो आई, दङ्गली का इरादा रात को सफर करने का न था। अगर वह यह जानता कि उसे रवाना होने ही में इतनी देर लग जायगी तो वह शायद आज रवाना ही न होता, फिर भी उसने निश्चय कर लिया कि अब सब से पहिला जो गाँव या शहर मिले उसी में ठहर कर रात काटेगा और सुबह सफर शुरू करेगा। उसने गाड़ी के बाहर सिर निकाल कर कोचवान से पूछा, "अब कितनी देर में दूसरा शहर आवेगा?" कोचवान ने इटली भाषा में कुछ जवाब दिया और दङ्गली ने सिर भीतर कर लिया। उम्दा अंगरेजी गाड़ी की मुलायम कमानियों और लचीले गद्दे पर पड़े पड़े उसने आंखें बन्द कर लीं, धीरे धीरे उसे कुछ झपकी सी आने लगी। ऐसी खूबसूरती के साथ दिवालिया बने हुए उस महाजन को अब परवाह या फिक्र ही किस बात की थी जिसकी जेब में इस वक्त पचास लाख रुपया मौजूद था। कभी कभी जब

कोई गहरा झटका लगता था वह आंख खोल देता था और इधर उधर देखकर फिर बन्द कर लेता था॥

कितनी देर तक ऐसी हालत रही यह खुद दङ्गली भी नहीं कह सकता, पर यकायक गाड़ी के झटके के साथ खड़े होने से उसकी नींद टूट गई। उसने समझा कोई गांव या शहर आया होगा अस्तु उसने खिड़की के बाहर सिर निकाला मगर गाँव के बदले अपने को बियाबान जङ्गल में एक खँडहर के सामने पाया जिसके सामने से दो चार आदमी अँधेरे में भूतों की तरह इधर से उधर आ जा रहे थे। उसी अँधेरे ही में उसकी गाड़ी के घोड़े खोल कर दूसरे जोते गये और गाड़ी फिर रवाना हुई। दङ्गली का ताज्जुब और भी बढ़ा और उसने टूटी फूटी इटालियन भाषा में पूछा, "आगे कोई शहर है?" किसी ने उसका जवाब न दिया बल्कि गाड़ी की चाल और भी तेज हो गई। दङ्गली का ताज्जुब और भी बढ़ा और उसने गाड़ी के बाहर सिर निकाल कर जोर से पूछा, "हम अब कहां जा रहे हैं?"

इस बार किसी ने कड़ी और भारी आवाज में कहा, "सिर भीतर करो!" दङ्गली का ताज्जुब डर से बदल गया, उसने सिर भीतर कर लिया मगर गौर के साथ बाहर की तरफ देखने लगा। उसने देखा कि एक आदमी घोड़े पर सवार गाड़ी के साथ साथ चल रहा है। उसका दिल धड़कने लगा, उसे खयाल हुआ कि यह शायद पुलिस का सिपाही है और मुझे गिरफ्तार किये

लिये जा रहा है, मालूम होता है फ्रान्स वालों ने रोम खबर भेजी है और वहां की पुलिस ने मुझे पकड़ा है। अपने डर का हेसनेस करने के लिये उसने लड़खड़ाती आवाज में उस सवार से पूछा—"मुझे कहां ले जा रहे हो ?"

उसने उसी तरह कड़े स्वर में कहा—"सिर भीतर कर !!"

दङ्गली दूसरी तरफ घूमा, इधर भी उसने एक सवार को देखा। अब उसका शक पक्का हो गया और उसने माथे के पसीने को पोछते हुए कहा, "बेशक मैं पकड़ा गया!" उसने आंखे बन्द कर ली और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये॥

थोड़ी देर बाद चन्द्रमा निकल आया और उसकी रोशनी में यह देख दङ्गली के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा कि अब वह फिर रोम शहर के पास आ पहुचा क्योंकि वे खंडहर और मकान जो रोम से कुछ ही दूर आने पर उसे बाईं तरफ मिले थे अब उसके दाहिनी तरफ दिखाई दे रहे थे। उसका रहा सहा शक भी दूर हो गया॥

गाड़ी उसी तेजी के साथ घंटे भर तक और चलती रही यहां तक कि रोम के बिल्कुल पास आ पहुंची। अब तक दंगली को यही विश्वास था कि रोम शहर के अन्दर जेलखाने के सामने पहुच कर ही गाड़ी रुकेगी पर यकायक जब एक आलीशान खंडहर के सामने

पहुंच कर गाडी की चाल कम हुई और उस सड़क को छोड़ घूमती हुई उस खँडहर के पीछे की तरफ चली तो उसे कुछ दूसरा ही खयाल पैदा हुआ और उसके मुंह से निकल गया, "ये लोग मुझे रोम नहीं लेजा रहे हैं, तब पुलिस ने मुझे नहीं पकड़ा है !! तब फिर किसकी यह कार्रवाई है ! कहीं डाकू ...."

डर के मारे उसके रोंगटे खड़े हो गये। वे कहानियें जो रोम शहर के डाकुओं के बारे में सुनकर भी वह झूठी समझता था अब उसकी आंखों के सामने फिरने लगीं। अलबर्टने जो क़िस्सा अपने लूगी वम्पा के हाथ में पड़ने का उसे सुनाया था वह भी उसे याद आ गया और जिस खँडहर में वह कैद किया गया था उसके बयान से इस खँडहर का मुकाबिला करने पर—जिसके पास उसकी गाडी थी—उसे कुछ भी शक न रह गया कि यह वही स्थान है और वह जरूर डाकुओं के कब्जे में पड़ गया है ॥

साथ वाले सवार के रोमन में कुछ कहते ही गाड़ी रुक गई, सवार ने हुकूमत के ढंग पर दङ्गली से उतरने को कहा, दङ्गली तुरन्त उतर पड़ा और कई आदमियों से उसने अपने को घिरा हुआ पाया। इस समय उसकी हालत मुर्दों से भी बदतर हो रही थी ॥

सवार घोड़े पर से उतर पड़ा और दङ्गली को पीछे आने का इशारा करके एक तरफ को बढ़ा। इन्कार करना फजूल बल्कि बेवकूफी समझ दंगली उसके साथ

हो लिया। कुछ दूर तक जाने बाद वह आदमी एक दर्वाजे के अन्दर घुसा जो किसी सुरंग का मुहाना सा मालूम हुआ, दङ्गली कुछ हिचकिचाया पर उसके पीछे पीछे जो आदमी आ रहे थे उन्होंने ऐसा धक्का दिया कि वह एकदम आगे वाले आदमी पर जा गिरा, उसने एक और धक्का दे इसे चैतन्य किया और तब फिर पीछे पीछे आने के लिये कड़ी आवाज में हुक्म दिया। लाचार दंगली उसके पीछे पीछे हुआ॥

सुरंग चौड़ी पर अँधेरी थी। कुछ दूर तक तो वह आगे जाने वाला आदमी अँधेरे ही में चला और डरता हुआ दंगली उसके पीछे चलता रहा पर अब उस आदमी ने सामान निकाल कर रोशनी पैदा की और एक मशाल बाली। मशाल की रोशनी चारो तरफ फैल गई और दंगली ने देखा कि वे लोग एक ऐसी जगह हैं जहां से चार सुरंग चारो तरफ चली गई हैं और उनका एक चौमुहाना सा बन गया है। सुरंगो में ऊपर नीचे बगल बगल चारो तरफ पत्थर ही दिखाई देता था और वह भयानक सी मालूम पड़ती थी। थोड़ी थोड़ी दूर पर सन्तरियों की तरह खड़े कई आदमी भी दंगली को दिखाई पड़े॥

एक सिपाही ने बन्दूक सीधी करके पूछा, "कौन है?" जवाब में उसने जो दंगली के आगे २ आया था कहा, "मैं हू! पेपिनो!! सरदार कहां हैं?" संतरी ने एक कमरे की तरफ इशारा करके जो पत्थर काट कर बनाया

हुआ था कहा, "उस तरफ हैं! जाओ!!" पेपिनो ने दंगली की गरदन पकड़ ली और खींचता हुआ उस कोठड़ी के दर्वाजे पर लेजा कर बोला, "सरदार! सरदार!! बड़ा मोटा असामी हाथ लगा है!!"

एक आदमी कुर्सी पर बैठा प्लुटार्क कृत सिकन्दर की जीवनी बड़े ध्यान से पढ़ रहा था। पेपिनो की आवाज सुन उसने घूम कर दंगली की तरफ देखा और पूछा, "यही आदमी है?" पेपिनो बोला, "हां सरदार यही है।" जिसपर उसने कहा, "मुझे अच्छी तरह सूरत दिखाओ॥"

पेपिनो ने मशाल दंगली के मुंह के इतने पास कर दी कि मूंछें जलने लगी और दंगली ने डरकर सिर पीछे कर लिया। सरदार ने उसकी घबड़ाई और डरी हुई सूरत को गौर से देखा और कहा—"यह आदमी थका हुआ मालूम होता है, इसे बिस्तर पर ले जाओ॥"

दंगली डर से कांपने लगा, उसकी जुबान में इतनी ताकत भी नहीं थी कि इस डाकुओं के सरदार से आरजू मिन्नत करता या कुछ कहता। उसकी सब ताकत और हिम्मत हवा हो गई थी और वह मुर्दों की तरह हो गया था। जब एक आदमी ने उसे पीछे से धक्का दिया तो वह चौंका और पेपिनो के पीछे पीछे जाने लगा। इस समय उसके सारे बदन से पसीना चू रहा था॥

कई सुरंगों, कोठड़ियों और दालानों में से होता हुआ पेपिनो दंगली को ले चला। रास्ते में जगह जगह

पत्थरों, पत्तियों या चमड़ों पर पचासों डाकू पड़े हुए थे जो इन दोनों की आहट पा सिर उठा कर इनकी तरफ देखते और फिर लापरवाही के साथ लेट रहते थे। मगर दंगली में इतना भी होश अब नहीं था कि वह उनकी तरफ ध्यान देता। वह चुपचाप केवल यही सोचता हुआ पेपिनो के पीछे पीछे जा रहा था—"ये लोग बिस्तर का बहाना करके मुझे किसी कूएं में ढकेल देंगे॥"

थोड़ी दूर चलने बाद पांच या छः सीढ़ियां चढ़नी पड़ीं और तब एक दर्वाजा नजर पड़ा। पहाड़ में काट कर बनाई हुई एक छोटी कोठड़ी थी जिसके अन्दर दंगली को जाना पड़ा। कोठड़ी यद्यपि छोटी और किसी सामान से बिल्कुल ही खाली थी फिर भी साफ थी और कोने में पत्तियों का एक बिस्तर बना हुआ था। दंगली को कोठड़ी में छोड़ कर पेपिनो पीछे हट गया, भारी जञ्जीरों के लगने की आवाज आई और उसे मालूम हो गया कि वह डाकुओं का कैदी हो गया। वह उसी घास के बिस्तर पर पड़ गया और अपनी बेबसी की हालत पर आंसू बहाता हुआ सोचने लगा कि देखें वह इन हत्यारों के फन्दे से जीता छूटता है या नहीं। उसे अगर कुछ आशा थी तो यही कि जब इन डाकुओं ने पकड़ते ही उसे मार नहीं डाला तो सम्भव है कुछ रुपया लेके उसे छोड़ दें। उसके जेब में उस पचास लाख के अलावा पचास हजार रुपया और भी मौजूद था।

उसने सोच लिया कि पचास हजार रुपया देकर भी वह यदि अपना पिण्ड इन डाकुओं से बचा सकेगा तो बाकी पचास लाख उसके जिन्दगी भर के लिये काफी होंगे। इस खयाल ने उसके दिल मे एक तरह का भरोसा पैदा किया और वह कुछ शान्त हो गया॥

हमारे पाठको को इस डाकू सरदार के पहिचानने में कोई तकलीफ नही हुई होगी जो पहिले इसे देख चुके हैं और इसका हाल बखूबी जानते हैं क्योंकि यह वही मशहूर 'लूगी वम्पा' था॥

चौथा बयान।

लूगी वम्पा का होटल।

जब दङ्गली की नीद खुली उसका पहिला ध्यान उन कागजों की तरफ गया जो उसकी जेब में थे। उसने अपनी जेब में हाथ डाला, सब कागजात ज्यों के त्यो मौजूद देखे। इसके बाद उसने अपने तमाम बदन पर हाथ फेरा और जोर से सांस ली, कही कोई जख्म भी नही था। वह धीरे से बोला—"डाकुओं ने मुझे लूटा भी नही, जख्मी भी नही किया, तब तो जरूर वे मुझसे कुछ रुपया ले मुझे छोड़ देंगे। कोई विशेष डर की बात नही है। अच्छा अब बजा क्या है!" उसका ध्यान अपनी सोने की बेशकीमती घड़ी की तरफ गया जो भीतरी जेब में थी, घड़ी और उसके साथ रक्खी अशर्फी और

नोट ज्यों के त्यों मौजूद थे, घड़ी निकाल कर खटका दबाते ही घड़ी ने 'टन टन' करके साढ़े पांच बजाये। यदि वह जेबी घड़ी बजने वाली न होती तो उस घने अँधेरे मे दङ्गली को यह भी पता लगना मुश्किल था कि अब दिन है या रात! खैर अब मालूम हुआ कि सवेरा हुआ ही चाहता है। वह अब दीवार के सहारे बैठकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये॥

डाकुओं के सरदार को बुला कर उससे बातें करना मुनासिब होगा या चुपचाप बैठे उसकी राह देखना? इस विषय पर बहुत कुछ सोच दङ्गली ने चुपचाप बैठे रहने का ही निश्चय किया। वह ठहरा रहा। धीरे धीरे बारह बजे मगर कोई उसकी खबर लेने न आया, कोठड़ी के दर्वाजे के तख्तो की दरार से से आती हुई रोशनी से मालूम होता था कि बाहर एक मशाल जल रही है। दङ्गली कभी कभी इसी दरार में आख लगा कर बाहर देखता था, एक पहरेदार वहां हमेशा मौजूद रहता था जो दो दो घण्टे पर बदल जाता था। जब बारह बज गया और कोई उसकी खोज खबर लेने वाला दिखाई न पड़ा तो दङ्गली ने फिर दरार मे आंखे लग दीं, पहिले वाला पहरेदार बदला गया और एक दूसरा खूब लंबा चौड़ा जवान उसकी जगह आकर बैठा जिसकी धँसी हुई आखे, मोटे होठ और चिपटी नाक तथा काला रंग देख दङ्गली घृणा के साथ बोला, "पिशाच है पिशाच! आदमी नहीं है!!" इसी समय माना यह साबित

करने के लिये कि वह पिशाच नहीं है आदमी है उस पहरेदार ने एक पोटली खोली जो साथ लाया था और उसमें से खाने पीने की चीजें निकाल खाना शुरू किया। दङ्गली उन चीजों को देख बोला, "न जाने कैसे लोगों से ऐसी सड़ी सड़ी चीजें खाई जाती हैं" और तब फिर अपनी जगह पर आ बैठा॥

मगर भूखे पेट को रूखी चीजों में भी स्वाद मालूम होता है। दङ्गली का पेट उस समय बहुत भरा हुआ न था, अस्तु दङ्गली की निगाहें बार बार उस दरार से लगने लगीं। धीरे धीरे वह पिशाच कम बदसूरत और रोटी कम काली होने लगी यहां तक कि उस प्याज की बदबू भी कम मालूम होने लगी जिसके साथ वह रोटी खा रहा था और जिस पर पहिले दङ्गली ने नाक भौं चढ़ाई थी। आखिर दङ्गली से रहा न गया। उसने दरवाजे को धक्का दिया। डाकू ने सिर उठाया, दङ्गली ने फिर धक्का दिया। डाकू ने पूछा, "क्या है?" दङ्गली बोला, "अरे भाई मुझे भी कुछ खाने वाने को मिलेगा या नहीं!!"

परन्तु क्या जाने उस डाकू ने दङ्गली की बात नहीं समझी या उसने दङ्गली के भोजन के विषय में कुछ हुक्म नहीं पाया था, डाकू ने दङ्गली की बात का कोई जवाब न दिया और न अपने भोजन से ही हाथ रोका। दङ्गली के घमण्ड को धक्का लगा। "इस जङ्गली से बात करना फजूल है" कह वह पुनः अपने बिस्तर पर आ लेटा॥

चार घण्टे बीत गये और इस बीच में दंगली ने जुबान न हिलाई, पर अब भूख के मारे उसके पेट में चूहे कूदने लगे। उसने फिर दरार से आंखें लगाईं और इस बार पेपिनो को वहां पाया जो अपने पैरों के बीच में एक टोकरी रक्खे—जिसमें उम्दा मांस, अंगूर और शराब की बोतल थी—भोजन की तैयारी कर रहा था। पक्के अंगूर और मास देख दंगली की जुबान से पानी टपक पड़ा। उसने अपने घमण्ड को ताक पर रक्खा और दर्वाजा खटखटाया॥

पेपिनो तुरत "आता हूं" कहकर उठ खड़ा हुआ। यह आवाज दंगली की पहिचानी हुई थी क्योंकि इसी ने रात गाड़ी में उसे हुकूमत के साथ 'सिर भीतर कर' कहा था। पर यह वक्त पिछली बातें याद करने का न था अस्तु उसने बड़ी नर्मी के साथ कहा, "भाई क्या तुमलोग मुझे खाने को न दोगे?"

पेपि०। क्या हुजूर को भूख मालूम होती है?

दंगली०। (मन में) भूख मालूम होती है! वाह क्या खूब! चौबीस घण्टे हो गये एक दाना अन्न का मुंह में नहीं गया यह कम्बख्त पूछता है कि भूख लगी है? (ऊपर) हां भाई! बड़ी जोर से भूख लगी है॥

पेपि०। और हुजूर भोजन ..

दंगली०। हां, अभी!! अगर सम्भव हो॥

पेपि०। कोई मुश्किल नहीं है। यहां हर वक्त हर एक चीज भोजन के लिये मिल सकती है बशर्ते कि

कोई दाम दे॥

दंगली०। यद्यपि तुमलोगों ने जब मुझे पकड़ा है तो खिलाना भी तुम्हारा फर्ज है फिर भी मैं दाम देने को तैयार हूं॥

पेपि०। यहां वैसी चाल नहीं है॥

दंगली०। खैर जैसी चाल हो वैसा ही करो मगर मुझे जल्दी कुछ खाने को दो॥

पेपि०। अभी हुजूर! क्या लाऊं?

दंगली०। क्या यहां रसोईघर और रसोइये भी हैं!

पेपि०। हां बहुत उम्दे!!

दंगली०। तो कोई चीज ले आओ! मुर्ग, मछली, मांस जो हो सो लाओ॥

पेपि०। जो हुजूर की मर्जी हो! मुर्ग लाऊं?

दंगली०। लाओ॥

पेपिनो ने पीछे मुंह फेर कर कहा—"एक मुर्ग!" उसकी आवाज अभी उस बन्द जगह में गूँज ही रही थी कि एक सुन्दर नौजवान अपने सिर पर एक तश्तरी लिये हुए आ पहुंचा। तश्तरी चांदी की थी और उसमें खूब उम्दा पका हुआ समूचा मुर्ग रक्खा हुआ था। दंगली यह देख ताज्जुब से बोल उठा, "वाह! मैं तो मानो पैरिस होटल मे आ पहुंचा॥"

पेपिनो ने आदमी के सिर से तश्तरी ले उस भद्दे टेबुल पर रख दी जो उस कोठड़ी के एक कोने में मौजूद था। दंगली ने काटा चाकू मांगा, वह भी उसने दिया।

दंगली कांटे से पकड़ चाकू से मुर्ग काटा ही चाहता था कि पेपिनो ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "हुजूर कसूर माफ हो पर यहां यह चाल है कि खाना खाने के पहिले उसका दाम चुका देना होता है॥"

दंगली ने मन में कहा—"पैरिस नहीं है, ये साले डांकू मेरा खून तक चूस डालेंगे, खैर लाचारी है।" ऊपर से हँसता हुआ वह बोला, "कोई हर्ज नहीं, पैरिस में यह बारह आने की जमा है यहां यह लो।" कह उसने एक अशर्फी जेब से निकाल फेंक दी॥

पेपिनो ने अशर्फी उठा ली, दंगली ने मुर्ग की तरफ हाथ बढ़ाया पर चाकू नहीं चलाया था कि पेपिनो ने फिर रोका, दंगली ने पूछा, "क्यों अब क्या है?"

पेपिनो०। अभी आपको कुछ और देना है। इस मुर्ग की कीमत की बाबत एक अशर्फी आपने दी, अब आपको ४९९९९ अशर्फी और देनी रह गई॥

दंगली०। क्या कहा? क्या कहा?

पेपिनो०। अब ४९९९९ अशर्फी और रह गई। इस मुर्ग की कीमत ५००० अशर्फी है॥

दंगली ने इस बात को मजाक समझा और जोर से हँसकर फिर मुर्ग की तरफ हाथ बढ़ाया पर पेपिनो ने उसका हाथ पकड़ लिया। दंगली ताज्जुब से उसका मुँह देखने लगा, फिर बोला—"खाने दो, खाने दो, दिल्लगी न करो॥"

पेपि०। नहीं हुजूर मैं दिल्लगी नहीं कर रहा हूं॥

दंगली०। क्या तुम्हारा मतलब यह है कि इस चिड़िया का दाम पांच हजार अशर्फी है॥

पेपिनो०। हां हुजूर! आपको मालूम नहीं कि इस कम्बख्त मुल्क में चिड़िया पालने में कितने तरद्दुद उठाने पड़ते हैं॥

दंगली०। वाह! क्या खूब! अच्छा अच्छा यह लो एक अशर्फी और लो और मुझको खाने दो, बड़ी भूख लगी है॥

पेपिनो ने दंगली की फेंकी अशर्फी उठा ली और फिर गम्भीरता के साथ कहा—"अब ४८८८ अशर्फी रह गई, धीरे धीरे सब दीजियेगा॥"

दंगली०। (उसकी बात पर रञ्ज होकर) तुम मजाक करना बन्द नहीं करते!!

पेपिनो०। मैं बिलकुल मजाक नहीं करता। बिना ४८८८ अशर्फी और दिये हुजूर खाना नहीं खा सकते!!

दंगली०। (गुस्से से उबल कर) यह बात है! अच्छा देखता हूं मैं तुम कैसे लेते हो! अभी तुम्हें मालूम नहीं कि किस आदमी से पाला पड़ा है! चलो दूर हो मेरे सामने से!!

पेपिनो ने कुछ इशारा किया और वह नौजवान तश्तरी उठा चम्पत हुआ। पेपिनो ने कोठड़ी का दरवाजा बन्द कर दिया और फिर अपनी जगह बैठ मांस और अंगूर खाना शुरू किया। अपनी जगह से दंगली उसे देख नहीं सकता था पर उसके दांतों की आवाज

साफ सुन रहा था। वह जरूर खा रहा था और गदहों की तरह आवाज कर कर के खा रहा था। दंगली ने गुस्से से दांत पीस कर कहा, "सूअर!" पर पेपिनो ने उसपर ध्यान नहीं दिया॥

एक घण्टे तक तो दंगली चुपचाप पड़ा रहा पर भूख ने उसे तंग कर दिया। पेट में ऐसा मालूम होता था मानो बरसों से अन्न नहीं गया है और वह अब कितना ही खाय पर पेट भरेहीगा नहीं। एक घण्टा उसे सौ बरस मालूम हुआ। लाचार हो घमण्ड और गुस्से को ताक पर रख वह दरवाजे के पास आया और बोला, "आखिर तुमलोग चाहते क्या हो सो कहो॥"

पेपिनो०। नहीं बल्कि हुजूर बतावें कि हमलोगों से क्या चाहते हैं। हुजूर का हुक्म हमलोग तुरत बजा लावेंगे॥

दंगली०। तो पहिले दरवाजा खोलो॥

पेपिनो ने फुर्ती से दरवाजा खोल दिया, दंगली चीख कर बोला, "मैं खाना खाऊंगा! खाना खाऊंगा! खाना खाऊंगा! सुना तुमने!!"

पेपिनो०। आपको भूख लगी है?

दंगली०। (कड़ी निगाह से देखकर) हां! हां!! हां!!!

पेपिनो०। हुजूर क्या खाया चाहते हैं?

दंगली०। रोटी! रोटी! इस कम्बख्त जगह में मांस इतना महँगा है तो रोटी ही खाऊंगा॥

पेपिनो०। बहुत खूब अभी! रोटी लाओ!!

और उसे मालूम हुआ कि इन डाकुओं का मतलब कितना गूढ है। उसने बहुत कुछ सोच विचार कर कहा, "अच्छा तो मैं पांच हजार अशर्फी दूं तो आराम से खाने पाऊंगा!"

पेपि०। बड़ी खुशी से॥

दंगली०। मगर दाम मैं कैसे चुकाऊंगा?

पेपिनो०। बड़े सहज में, आपका रोम के 'थामस एण्ड फ्रेञ्च' के साथ हिसाब है, आप उनके ऊपर ४८८८ की एक हुण्डी कर दीजिये, हमलोग रुपया ले लेंगे॥

दङ्गली ने सोच लिया कि इन पाजियों के साथ जिद्द करने का कोई नतीजा न निकलेगा अस्तु जितनी इज्जत बनी रहे उतनी ही सही। उसने पेपिनो की दी कलम, कागज और दावात उठा ली और थामस एण्ड फ्रेञ्च के नाम पर उतनी रकम की हुण्डी कर दी। एक लम्बी सांस के साथ कागज पेपिनो की तरफ बढाते हुए वह बोला, "यह लीजिये आपकी हुण्डी तैयार है॥"

पेपि०। हुजूर का मुर्ग हाजिर है॥

मुर्ग को देख दङ्गली के मुंह से ठण्ढी सांस निकल गई। इस दाम में वह बड़ा छोटा मालूम होता था॥

पेपिनो ने कागज पढ़ जेब के हवाले किया और पुनः अपने स्थान पर जा बैठा॥

वही नौजवान तश्तरी पर एक पावरोटी लिये हुए आया, दङ्गली ने पूछा, "क्या दाम ?"

पेपिनो०। ४८८८८ अशर्फी, दो आप दे चुके हैं॥

दंगली०। हैं ! रोटी के लिये भी ५००० अशर्फी !!

पेपि०। जी हां हुज़ूर !!

दंगली०। मगर यह तो मुर्ग़ की कीमत थी॥

पेपिनो०। हमलोगों के यहां सब चीज का एक ही दाम है। चाहे आप रोटी खाइये या मांस, थोड़ा खाइये या ज्यादा, दाम वही॥

दंगली०। (गुस्से से) अरे बेवकूफ अभी तक वही मसखरी किये जाता है। इस गदहपन का भी कोई ठिकाना है !! फिर यही क्यों नहीं कह देते कि मुझे भूखे ही मारा चाहते हो ?

पेपिनो०। नही नहीं हुज़ूर ऐसा कभी हो सकता है !! हां आप खुद ही आत्महत्या करना चाहें तो दूसरी बात है, नहीं तो दाम दीजिये—खाइये !!

दंगली०। (गुस्से से ताव पेच खाकर) अबे गधे! मेरे पास क्या इतना रुपया धरा हुआ है !! मैं कहां से दाम दूं ?

पेपि०। हुज़ूर की जेब में इस समय पचास लाख पचास हजार रुपया मौजूद है। एक लाख रुपये के हिसाब से पचास लाख में पचास मुर्ग़ और पचास हजार में आधा मुर्ग़ कुल साढ़े पचास मुर्ग़ आप खा सकते हैं॥

दङ्गली कांप उठा, अब उसके आंखों की पट्टी खुली

और उसे मालूम हुआ कि इन डाकुओं का मतलब कितना गूढ है। उसने बहुत कुछ सोच विचार कर कहा, "अच्छा तो मैं पांच हजार अशर्फी दूं तो आराम से खाने पाऊंगा ?"

पेपि०। बड़ी खुशी से॥

दंगली०। मगर दाम मैं कैसे चुकाऊंगा?

पेपिनो०। बड़े सहज से, आपका रोम के 'थामस एण्ड फ्रेन्च' के साथ हिसाब है, आप उनके ऊपर ४९९९ की एक हुण्डी कर दीजिये, हमलोग रुपया ले लेंगे॥

दङ्गली ने सोच लिया कि इन पाजियो के साथ जिद्द करने का कोई नतीजा न निकलेगा अस्तु जितनी इज्जत बनी रहे उतनी ही सही। उसने पेपिनो की दी कलम, कागज और दावात उठा ली और थामस एण्ड फ्रेन्च के नाम पर उतनी रकम की हुण्डी कर दी। एक लम्बी सांस के साथ कागज पेपिनो की तरफ बढाते हुए वह बोला, "यह लीजिये आपकी हुण्डी तैयार है॥"

पेपि०। हुजूर का मुर्ग हाजिर है॥

मुर्ग को देख दङ्गली के मुंह से ठण्ढी सांस निकल गई। इस दाम में वह बड़ा छोटा मालूम होता था॥

पेपिनो ने कागज पढ़ जेब के हवाले किया और पुनः अपने स्थान पर जा बैठा॥

पांचवां बयान।

माफी।

दूसरा दिन होते ही दङ्गली को फिर भूख ने घेरा। उस तहखाने की हवा में जरूर भूख लगाने की तासीर थी। दङ्गली ने सोचा था कि आज कुछ खर्च करने की जरूरत न पड़ेगी क्योंकि कल बड़ी चालाकी करके उसने थोड़ा मांस और रोटी आज के लिये बचा रक्खी थी पर इसको खाने के साथ ही उसे प्यास ने सताया। इस बात का उसने खयाल नहीं किया था। कुछ देर तक तो प्यास बर्दाश्त किये रहा यहां तक कि उसकी जुबान तालू से जा सटी और गला जलने लगा, अब और बर-दाश्त न कर सकने के कारण उसे आवाज देनी ही पड़ी। पहरेदार ने दर्वाजा खोला पर यह एक नया ही आदमी था। दङ्गली ने सोचा कि उस पुराने आदमी से बातचीत करने से शायद मामला सहज में तै हो सके अस्तु उसने पेपिनो को बुलवाया॥

आवाज सुनते ही पेपिनो आ हाजिर हुआ और बोला, "हुजूर क्या चाहते हैं?"

दंगली०। मुझे बड़ी प्यास लगी है॥

पेपिनो०। हुजूर जानते ही हैं कि रोम में शराब कितनी महँगी है॥

दंगली०। अच्छा तो फिर पानी ही दे दो!!

पेपि०। पानी मिलना तो और भी मुश्किल है

दो बरस से बड़ा सूखा पड़ा है॥

दंगली०। ओह फिर वही किस्सा!! अरे भाई! एक गिलास शराब देने में इतनी खींचातानी!! दो, दो, हँसी मत करो!!

दङ्गली के माथे पर पसीना चुचुआ आया था पर वह ऊपर से मुस्कुरा रहा था। मगर पेपिनो पर दोनों में से किसी का भी असर न पड़ा, वह चुपचाप खड़ा रहा। आखिर दंगली ने कहा, "खैर तो फिर जो सब से सस्ती हो उसी की एक बोतल ले आओ॥"

पेपिनो०। यहां सब का एक दाम है॥

दंगली०। क्या दाम?

पेपि०। पचीस हजार रुपये बोतल!!

दंगली०। (बिलख कर) हाय हाय!! तो फिर सीधे यही क्यों नही कह देते कि मेरा खून चूसा चाहते हो? मेरा सारा रुपया छीनने की ही इच्छा है तो फिर जरा जरा क्यों नोच रहे हो?"

पेपि०। हमारे सर्दार की आज्ञा॥

दंगली०। तुम्हारा सर्दार कौन है?

पेपि०। वही जिसके पास कल आप लिवाये गये थे॥

दङ्गली०। वह कहां है?

पेपि०। यहीं॥

दङ्गली०। अच्छा उसे मेरे पास बुलाओ॥

पेपि०। अभी॥

तुरत ही लूगी वस्पा दङ्गली के सामने आ खड़ा हुआ ॥

लूगी०। आपने मुझे बुलवाया है ?

दङ्गली०। क्या आप ही उन लोगों के मुखिया हैं जिन्होंने मुझे गिरफ़ार किया है ?

लूगी०। जी हां हुजूर !!

दङ्गली०। कितना रुपया पाने पर तुम मुझे छोड़ दोगे ?

लूगी०। तो वह कुल पचास लाख जो आपके पास हैं ॥

दङ्गली के दिल में भाले की तरह यह बात लगी। उसने कठिनता से कहा, "मगर मेरी बेइन्तहा दौलत में से अब यही तो मेरे पास बच गया है, सब लेने से तो यही अच्छा है कि मेरी जान ही ले लो ॥"

लूगी। हमलोगों को आपकी जान लेने का हुक्म नहीं है ॥

दङ्गली०। किसका हुक्म नहीं है ?

लूगी०। जो हमलोगों का हाकिम है ॥

दङ्गली०। तुम्हारे ऊपर हुकूमत करने वाला भी कोई है ?

लूगी०। हां, एक सरदार ॥

दङ्गली०। मगर मैंने तो सुना है कि तुम्ही इन लोगों के सरदार हो ॥

लूगी०। हां इन लोगों का तो मैं ही हूं पर वह मेरा

भी सरदार है॥

दङ्गली०। तो उस सरदार के ऊपर भी और कोई है?

लूगी०। हां॥

दंगली०। कौन?

लूगी०। परमेश्वर॥

दंगली कुछ देर चुप रहने बाद बोला, "तुम्हारी बातों का मतलब मेरी समझ मे नहीं आया॥"

लूगी०। सम्भव है॥

दंगली०। तो क्या तुम्हारे ऊपर वाले ने कह दिया है कि मेरे साथ ऐसा ही वर्ताव करना?

लूगी०। हां॥

दंगली०। ऐसा करने में उसका फायदा?

लूगी०। सो मैं नही जानता॥

दंगली०। लेकिन फिर तो मैं बिल्कुल कंगाल हो जाऊंगा॥

लूगी०। शायद॥

दंगली०। मान जाओ, मान जाओ, लो दस लाख रुपया मुझसे लेलो॥

लूगी०। नहीं॥

दंगली०। बीस लाख लोगे? तीस? चालीस? लो चालीस लाख लेलो! अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं चालीस लाख रुपया तुम्हें दे दूंगा॥

लूगी०। तुम पचास लाख की चीज के बदले में चालीस लाख मुझे देते क्यों हो! यह तो एक तरह की

बेईमानी है वो मेरी समझ में नहीं आती॥

दंगली०। अच्छा लेलो लेलो सब लेलो और मेरा खून भी कर डालो!!

लूगी०। शान्त रहो शान्त रहो, नहीं तो तुम्हारा खून गरम हो जायगा और फिर ऐसी भूख लगेगी कि दस लाख देने पर भी मुश्किल से कम होगी। फजूलखर्च न बनो॥

दंगली०। मगर जब मेरे पास तुम्हें देने को रुपया न बचेगा तब?

लूगी०। तब भूखे पड़े रहना॥

दंगली०। भूखे?

लूगी०। हां॥

दंगली०। मगर तुमने तो कहा था कि मेरी जान न लोगे!!

लूगी०। हां हमलोग तुम्हें नहीं मारेंगे॥

दंगली०। मगर भूखे मर जाने दोगे?

लूगी०। सो दूसरी बात है॥

दंगली०। अच्छा तो फिर कम्बख्तो मैं तुम्हें एक कौड़ी भी नहीं दूंगा। तुम्हारा सब सोचा बिचारा मैं धूल में मिला दूंगा। मुझे मर जाना कबूल है पर तुम हत्यारो को एक पाई देना कबूल नहीं, मुझे मारो, काटो बांधो—जो चाहे करो पर अब मैं एक कौड़ी देने का नहीं॥

लूगी०। जैसी हुजूर की मर्जी॥

लूगी चला गया, गुस्से से उबलता हुआ दंगली बिछौने पर गिर गया और सोचने लगा कि "ये लोग आखिर कौन हैं? वह गुप्त सरदार कौन है? मुझे इस तरह तकलीफ पहुंचाने से उसका क्या मतलब है? जब और सब कोई रुपया देने से छूट जाते हैं तो मैं क्यों नहीं छोड़ा जाता? अब यदि मैं अभी तुरत फुरत मर जाऊं तो इन कम्बख़्तों का सारा सोचा विचारा मट्टी में मिल जाय। मगर मर जाऊं! जान देदूं!!" आज जिन्दगी में शायद पहिले पहिल दंगली ने मौत की बात सोची। आज उसके लिये पहिले पहिल वह मौका आया जब कोई शक्ति आदमी के दिल के पर्दे के अन्दर छिपी हुई उसकी हर धड़कन के साथ कहती है, "अब तू मरेगा॥"

इस समय दङ्गली की हालत पीछा किये जाते हुए किसी डरपोक जानवर की सी हो रही थी जो पहिले भागता है फिर निराश हो जाता है और तब अपनी उसी निराशा के ही जोर से कभी कभी भाग कर बच भी जाता है। सब तरफ से निराश हो अब दंगली वहां से भागने की तर्कीब सोचने लगा मगर वह कोठड़ी पहाड़ काट कर बनाई गई थी—किसी तरफ खोदने या सेंध लगाने का दांव नहीं था, जिधर दर्वाजा था उधर एक पहरेदार बैठा हुआ था और उसके पीछे सुरङ्ग भर में हथियारबन्द डाकू और सिपाही भरे हुए थे जिनकी निगाह बचा कर एक चिड़िया भी जा नहीं सकती थी। दंगली ने भागने की आशा भी छोड़ दी॥

और रुपया न देने की उसकी प्रतिज्ञा दो रोज तक रही, और तब उसकी भूख ने उसे इतना बेबस कर दिया कि उसने सर्दार के पास कहला भेजा कि दस लाख लेलें मगर कुछ खाने को दें, उसकी जान जा रही है। डाकुओं ने एक से एक नफीस चीजें खाने की उसके पास भेज कर उससे दस लाख रुपया ले लिया॥

अब इस अभागे कैदी ने अपने को बिल्कुल डाकुओं के हाथ में छोड़ दिया, वह इतनी तकलीफ उठा चुका था कि और बर्दाश्त करने की ताकत उसमें नहीं बच गई थी, वह अब सब कुछ देने को तैयार था। बारह दिन उसने उसी ठाठ से गुजारे जैसा अपनी अमीरी के मौके पर रहता था, एक से एक बढ़ कर चीजें खाता पीता रहा, पर बारह दिन के बाद जब उसने अपनी रोकड़ सम्हाली तो कुल पचास हजार रुपया उसके पास बच रहा था, यह देख उसके दिमाग ने फिर पलटा खाया। वह आदमी जो पचास लाख खर्च कर चुका था अब इन पचास हजार की लालच में पड़ गया और यह आखिरी रुपये खर्च करने की बनिस्बत भूखे रहना उसे फिर पसन्द हुआ। उसे आशा की ऐसी ऐसी झलकें दिखने लगीं जो पागलों को ही सूझती होंगी। अब तक वह जो परमेश्वर को बिल्कुल ही भूला हुआ था, सोचने लगा कि असम्भव भी कभी कभी सम्भव हो सकता है, शायद पुलिस वालों को उस गुफा का पता लग जाय और वे उसे छुड़ा दें। अगर अब भी वह छुट जायगा तो

पचास हजार उसके पास बच रहेगा, वह भूखा नहीं मर सकेगा। वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि वह पचास हजार उसके पास बच जाय। तीन दिन इसी तरह बीते और इस बीच में ईश्वर का नाम बराबर उसके मन में नहीं तो कम से कम जुबान पर बना रहा, कभी कभी वह बदहवास सा हो जाता था और आधी नींद की हालत में किसी किसी समय उसे ऐसा मालूम होता था मानो वह एक गन्दी कोठड़ी में है और उसके सामने चौकी पर भूखा मरता हुआ एक बूढा पड़ा है॥

चौथे दिन वह आदमी नहीं बल्कि मुर्दा हो रहा था। अपने पहिले के भोजनों में से बचे हुए जरा जरा से टुकड़े भी वह जमीन पर से बटोर कर खा चुका था और अब उसने उस चटाई को खाना शुरू किया था जो वहां बिछी थी। उसने पेपिनो से एक टुकड़े रोटी की भीख मांगी, उसे हजार रुपया देने का वादा किया पर पेपिनो ने उसकी तरफ देखा भी नहीं। पांचवें दिन बड़ी मुश्किल से घसिटता हुआ वह कोठड़ी के दर्वाजे पर आया और कमजोर आवाज से बोला, "तुमलोग ईसाई हो या नहीं, तुम्हारे में जरा सी दया है कि नहीं, तुम उस आदमी को क्यों मार रहे हो जो तुम्हारी ही तरह ईश्वर ही का पैदा किया हुआ है!" कमजोरी के सबब वह जमीन पर लुढक गया पर फिर उठा और बोला, "सरदार! सरदार!!"

लूगी तुरत आ पहुचा और बोला—"क्या है!"

दंगली अपना मनीबेग उसकी तरफ बढ़ाकर बोला—"यह लो जो कुछ मेरे पास है सब ले लो पर ईश्वर के लिये मुझे जीता छोड़ दो, मैं इस गुफा के बाहर जाना भी नहीं मांगता, मुझे यहीं पड़ा रहने दो पर जीता रहने दो॥"

लूगी०। तब क्या तुम्हें बड़ा कष्ट है?

दंगली०। ओह भयानक कष्ट है, भयानक कष्ट है!!

लूगी०। मगर तुमसे भी ज्यादा कष्ट उठाने वाले दुनिया में हो चुके हैं—

दंगली०। नहीं कभी नहीं॥

लूगी०।—जिन्होंने भूखे जान दी है॥

दंगली को उस बूढ़े का ध्यान आ गया जिसे अपनी बदहवासी की हालत में वह भूख से छटपटाते और तड़पते देखता था। अपना माथा जमीन पर पटककर वह बोला—"हां हां, ऐसे भी हैं जिन्हें मुझसे ज्यादा दुःख उठाना पड़ा है!!"

यकायक एक गम्भीर स्वर में पास ही से आवाज आई, "अब तुम्हें पश्चात्ताप हुआ?" इस आवाज ने दंगली के रोंगटे खड़े कर दिये, उसकी कमजोर आंखें इधर उधर घूमने लगीं और थोड़ी देर बाद लूगी के पीछे खड़े हुए एक आदमी पर उसकी निगाह पड़ी जो एक काला लबादा ओढ़े हुए था। दंगली ने रुकते रुकते पूछा, "मैं किस बात पर पश्चात्ताप करूं?" आवाज ने जवाब दिया—"अपनी करतूतों पर!!" दंगली

ने अपनी छाती पर ज़ोर से मुक्का मार कर कहा, "हां हां पछताता हूं, अपनी करनी पर पछताता हूं!" उस आदमी ने अपना लबादा गिरा दिया और रोशनी मे आकर कहा, "तो मैं तुम्हे माफ करता हूं॥"

इस आदमी की सूरत देखते ही डर के मारे दंगली का चेहरा एक दम पीला पड गया, बडी मुश्किल से उसके मुह से निकला, "काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो!!"

मौण्ट०। नही भूलते हो मैं काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो नही हू॥

दंगली०। तब कौन हो?

मौण्ट०। मैं वह हूं जिसे तुमने दगाबाजी के साथ दुश्मनो के हाथ में सौंप दिया, मै वह हूं जिसकी प्रेमिका को तुमने खराब कर डाला, मैं वह हू जिसे तुमने इस लिये कुचल डाला जिसमें खुद बडे और दौलतमन्द हो सको, मैं वह हूं जिसके बाप को तुमने भूखे मार डाला, जिसने तुम्हे भी भूखे मारने का निश्चय कर लिया था, पर जो फिर भी तुम्हे माफ करता है क्योंकि उसे भी माफी की जरूरत है! मैं एडमण्ड डोण्टस हूं॥

दंगली एक चीख मारकर उसके पैरों पर गिर पड़ा। काउण्ट बोला—"उठो, खडे हो! तुम्हारी जान बच गई है! पर तुम्हारे दोनो साथियो को वैसी किस्मत नही हुई। एक पागल हो गया, दूसरा मर गया! जो पचास हजार तुम्हारे पास बचा है उसे रख छोडो, मैं उन्हें तुम्हे देता हूं। अस्पतालो का पचास लाख जो

तुमने लूट लिया था किसी गुप्त हाथों ने उन्हें लौटा दिया है। अब खाओ पीओ! आज तुम मेरे मेहमान हो! वरूपा! यह आदमी तृप्त हो जाय तो इसे छोड़ देना॥"

दङ्गली जमीन ही पर पड़ा रहा पर काउण्ट चला गया। जिस समय दङ्गली ने सिर उठाया उसे काउण्ट की सिर्फ छाया दिखी जो बाहर की तरफ जा रहा था और जिसके सामने सब डाकू अदब से झुक रहे थे॥

काउण्ट के हुक्म मुताबिक लूगी वरूपा ने स्वयम् खड़े होकर दङ्गली को भोजन कराया, इटली की बढ़िया से बढ़िया शराब तथा फल और उम्दी से उम्दी भोजन की चीजें उसे खिलाईं। तब अपनी गाड़ी पर उसे चढ़ा खुद सड़क तक पहुंचा एक पेड़ के सहारे उसे खड़ा छोड़ आया। रात भर दगली उसी तरह रहा, जब सवेरा हुआ उसने अपने से थोड़ी दूर पर एक नाला देखा और उसके पास गया। पानी पीने जिस समय वह नाले के साफ पानी में झुका उसने देखा कि उसके तमाम बाल सुफेद हो गये थे॥

छठवां बयान।

पांचवीं अक्टूबर।

सन्ध्या का छः बजा होगा। समुद्र की नीली लहरें डूबते हुए सूरज की आखिरी किरणों का सहारा ले लाल हो रही थीं। दिन भर की तपिश धीरे धीरे दूर हो रही थी और शाम की ठण्ढी हवा बहने लगी थी जो फूलों की सुगन्ध से भरी हुई थी॥

जिब्राल्टर से दरे दानियाल और ट्यूनिस से वेनिस तक फैले हुए पानी के उस बड़े टुकड़े पर एक सुन्दर छोटा और हलका जहाज सध्या के कोहासे को फाड़ता हुआ जा रहा है। धीमी हवा से इस जहाज का चलना ऐसा मालूम होता था मानो पानी पर हंस तैर रहा हो फिर भी जहाज की चाल तेज थी। अगले सिरे पर एक सुन्दर नौजवान खड़ा उस पहाड़ी की तरफ देख रहा था जो समुद्र के बीच में यकायक एक ऊंची टोपी की तरह दिख रहा था॥

थोड़ा देर बाद इस नौजवान मुसाफिर ने जो इस समय इस जहाज का हाकिम था उदास स्वर में कप्तान से पूछा, "क्या यही मौण्ट क्रीटो टापू है?"

कप्तान ने कहा, "जी हां, हमलोग आ पहुंचे॥"

नौजवान ने दुःख भरे स्वर में कहा, "आ पहुंचे! हां वह बन्दरगाह दिखाई देता है!!" और तब पुनः उन दुःखदाई विचारों में गोते खाने लगा जिनमें वह

बराबर डूबा रहता था। थोड़ी देर बाद होते ही बुझ जाने वाली एक रोशनी को चमक टापू पर दिखाई पड़ी और कुछ देर बाद बन्दूक की आवाज भी आई, कप्तान ने कहा, "टापू वाले इशारा कर रहे हैं क्या आप जवाब दीजियेगा?"

नौजवान ने सिर उठा कर पूछा, "कैसा इशारा?" कप्तान ने उस धूएं की तरफ उसका ध्यान दिलाया जो टापू पर से उठ रहा था। नौजवान ने मानों सपने से चौंक कर कहा, "हां हां! दो मुझे!" कप्तान ने भरी हुई एक बन्दूक उसके हाथ में दी जिसे उसने धीरे धीरे ऊपर की तरफ उठाया और छोड़ दिया। भारी आवाज चारों तरफ फैल गई॥

दस मिनिट बाद टापू से पांच सौ फीट पर पहुंच जहाज ने लङ्गड़ डाल दिया और पाल गिरा दिये। किश्ती पानी में उतारी गई जिसमें चार मल्लाह डाँड़ हाथ में लिये खेने को तैयार बैठे थे। नौजवान जहाज से उतर उस किश्ती पर आया जो उसकी इज्जत के लिये अच्छी तरह सजी हुई थी पर बैठने के बजाय छाती पर हाथ मोड़े बीच डोंगी में खड़ा रहा। पानी के ऊपर डाँड़े उठाये मल्लाह हुक्म का इन्तजार कर रहे थे॥

नौजवान ने कहा, "चलो!" आठ डाँड़े एक साथ बिना आवाज किये या पानी उछाले जल में गिरे और नाव आगे बढ़ी, लहमे भर के अन्दर ही नाव बन्दर के अन्दर पहुंच गई और बालू पर लग गई॥

दो मलाह उठ खड़े हुए और मुसाफिर से बोले—"हुजूर हमलोगों के कन्धे पर बैठ जायँ हमलोग किनारे पहुंचा देंगे पानी यहां बहुत ज्यादा है।" पर नौजवान ने लापरवाही के साथ सिर हिलाया और पानी में उतर गया जो उसके कमर कमर था। मलाह बोले—"आह यह क्या किया! मालिक खफा होंगे!!" और लाचारी के साथ मुसाफिर के आगे आगे रास्ता बताते चलने लगे। थोड़ी ही देर मे वे लोग खुश्की पर पहुंच गये। नौजवान अपने बदन का पानी झाड़ता हुआ इधर उधर देखने लगा मगर वहां इतना अन्धकार था कि कुछ दिखाई नही पड़ता था, यकायक उसके कन्धे पर किसी ने हाथ रक्खा और चौंका देने वाले ढङ्ग से कहा; "बन्दगी मैक्समिलियन! आये तो वादे पर!!"

नौजवान ने खुशी से काउण्ट का हाथ दबा कर कहा, "काउण्ट आप हैं!!"

काउण्ट बोला—"हां मै भी अपने कहे मुताबिक मौजूद हूं, मगर तुम तो तर बतर हो! पहिले कपड़े बदलो मैंने तुम्हारे लिये जगह ठीक कर रक्खी है जहां पहुच तुम सारी थकावट भूल जाओगे॥"

मैक्समिलियन ने पीछे की तरफ घूम कर ताज्जुब के साथ देखा कि जो मलाह उसे यहां तक लाये थे वे बिना उससे कुछ पाये या मांगे पीछे जहाज की तरफ लौट गये हैं। आवाज से मालूम होता था कि वे जहाज के पास पहुंच गये हैं॥

काउंट ने पूछा, "क्या तुम मल्लाहों को देखते हो?"

मैक्समि०। हां मैंने उन्हें कुछ दिया नहीं और वे लौट गये॥

का०। (हँसकर) कोई हर्ज नहीं, मेरा और मल्लाहों का समझौता हो गया है कि मेरे टापू पर जो आना चाहे उसे बिना किराया लिये यहां पहुंचा दें॥

मारल०। (ताज्जुब से काउण्ट की तरफ देख कर) काउण्ट आप अब वैसे नहीं हैं जैसे पैरिस में थे॥

का०। सो क्या?

मारल०। यहां आप हँसते हैं॥

काउण्ट के माथे पर चिन्ता की लकीरें पड़ गईं, वह बोला, "तुमने याद कराके अच्छा किया! मैं तुम्हें देखकर इतना खुश हुआ था कि थोड़ी देर के लिये यह भी भूल गया था कि प्रसन्नता क्षणिक होती है॥

मारल०। (काउण्ट का हाथ पकड़ कर) नहीं, नहीं काउण्ट! आप हँसिये और खुश होइये! अपनी लापरवाही दिखा मुझे बता दीजिये कि यह दुनिया उन्हीं के लिये खराब है जो तकलीफ़ से हैं!! आह आप कैसे दयालु और मेहरबान है! मुझे भरोसा देने के लिये अपने को प्रसन्न बनाये हुए हैं!!

का०। नहीं नहीं मारल! मैं सचमुच प्रसन्न हूं॥

मारल०। तब आप मुझे भूल गये हैं! खैर यह भी अच्छा ही है!!

का०। सो क्या?

मा०। मैं अब इस दुनिया को छोड़ने ही वाला हूं॥

क०। तो क्या अभी तक तुम्हें शान्ति नहीं मिली?

मारल०। शान्ति? क्या आप सोचते थे कि मैं कभी भूल सकूंगा?

का०। तुम मेरी बात का अर्थ नहीं समझे। तुम मुझे कोई मामूली आदमी या वह झुनझुना न समझो जो बेमतलब का शब्द करने के सिवाय और कुछ नहीं जानता। मैं मनुष्य के दिलों का सब भेद जानता हूं, मुझसे कुछ छिपा नहीं है मैं तुम्हारे दिल की गहराई की थाह लिया चाहता हूं। गौर करो और बताओ कि क्या अब भी तुम्हे वैसी ही तकलीफ, वही बेचैनी और वही घबराहट है जो इस मुसीबत के शुरू से थी और जिसकी याद आदमी को उसी तरह तड़पा देती है जिस तरह जख्म का छूना जख्मी शेर को। क्या अब भी तुम्हें वही भयानक प्यास है जो कब्र ही में पहुंच कर मिटती है? क्या अब भी तुम्हारा दिल तुम्हें इस दुनिया को छोड़ दूसरी दुनिया में जाने का ही हुक्म दे रहा है? या अब तुम्हे सिर्फ पस्तहिम्मती से पैदा हुआ दुःख ही रह गया है, निराशा से पैदा हुआ अन्धकार ही दिख रहा है। मेरे दोस्त! अगर तुम्हारी ऐसी हालत हो गई है कि अब तुम्हारा दिल ठण्ढा पड़ गया है और रोने की भी ताकत नहीं रह गई है तथा ईश्वर पर विश्वास पैदा हो गया है तो मैक्समिलियन! डरो मत! तुम शान्ति को पाया हुआ समझो॥

मारल०। (मजबूती के साथ) काउण्ट! मेरा शरीर यद्यपि अभी तक इसी पृथ्वी पर है पर मेरी आत्मा स्वर्ग को पहुंची हुई है। आपके पास मैं सिर्फ इसी लिये आया हूं जिसमें एक दोस्त के हाथों में मर सकूं। यद्यपि अभी कई ऐसे हैं जिन्हें मैं प्यार करता हूं, मेरी बहिन जूलिया है, उसका पति मैनुअल है, पर उनके सामने मरने की बनिस्बत मैं ऐसे की गोद में मरा चाहता हूं जो मजबूत हो और मेरे आखिरी मौके पर हँस कर मेरे दिल को भी मजबूत बना सके। मेरी बहिन मेरी वह हालत देख रोने और बिलखने लगती और मुझसे उसका वह दुःख देखा न जाता, मैनुअल मेरे हाथों से हथियार छीन लेता और चिल्ला चिल्ला कर घर भर को इकट्ठा कर लेता, पर मैं इस तरह पर अपना अन्त नहीं चाहता और इसी से मैं आपके पास आया हूं क्योंकि मुझको विश्वास है कि आप मुझे शान्ति के साथ मौत के दर्वाजे तक पहुंचावेंगे॥

का०। पर मुझे डर लगता है कि कहीं अब भी तुममें इतनी कमजोरी बाकी न हो कि अपनी मुसीबतों पर घमण्ड करते हो॥

मारल०। नहीं अब तो मेरा ध्यान भी अपनी मुसीबतों की तरफ नहीं जाता, अब तो मुझे सिर्फ मर जाने की इच्छा है। (काउण्ट के हाथ में हाथ देकर) आप देख लीजिये मैं बिल्कुल शान्त हूं, मेरी नब्ज में तेजी नहीं है, अब मुझे सिर्फ यही मालूम होता है कि

मैं हद्द पर आ पहुचा हूं और अब आगे नहीं जा सकता! आपने मुझे एक महीने ठहरने को कहकर कितना भारी बोझ मुझपर डाला इसे आप खुद नही समझ सकते! मुझे एक महीने तक व्यर्थ का ही कष्ट उठाने पर आपने मजबूर किया। यह महीने भर मैंने आशा के जाल मे पड़े हुए बिताया! किस बात की आशा? यह मैं खुद नहीं जानता। किसी अद्भुत, आश्चर्यजनक, असंभव बात के होने की आशा थी, पर क्या, यह शायद परमात्मा ही जानता होगा जिसने हमलोगों की बुद्धि के साथ न जाने क्यों वह मूर्खता जोड़ दी है जिसे लोग आशा के नाम से पुकारते है। काउण्ट मैं नहीं जानता कि किस बात की आशा ने मुझे रोक रक्खा—जीता रक्खा! पर इस समय की आपकी बातो ने मुझे असहनीय कष्ट पहुचाया है क्योंकि अब मुझे मालूम हो गया कि मेरे लिये अब कोई भी आशा नही है। ओह काउण्ट! अब मैं शान्तिपूर्वक, आनन्द के साथ मौत की गोद में लेटूंगा। (मारल ने यह बात इतने जोश से कही कि काउण्ट कांप उठा) मेरे दोस्त! तुमने मुझसे पांच अक्टूबर तक की मुद्दत मागी थी, आज पांचवी अक्टूबर है, (घड़ी निकाल कर) इस समय नौ बजा है! मुझे तीन घण्टे और जीना है!!

का०। ऐसा ही होगा! आओ॥

मारल काउण्ट के पीछे पीछे चला और अन्धकार मे थोड़ी ही दूर जाने बाद वह गुफा के अन्दर पहुंच

गया। उसके पैर मुलायम रेशमी गालीचों पर पड़ने लगे और चारों तरफ से तरह तरह की सुगन्ध की लपटें नाक में जाने लगीं। काउण्ट ने एक दरवाजा खोला जिसके साथ ही जगमगाती हुई रोशनी चारों तरफ फैल गई और उसकी आंखें चौंधियाने लगीं। एक ऐसा आलीशान और बेशबहा दौलत का सबूत देने वाले सामानों से सजा कमरा नजर आया कि मारल को पैर आगे बढ़ाते हिचकिचाहट मालूम होने लगी। काउण्ट ने उसका हाथ पकड़ कर मुलायमियत के साथ भीतर की तरफ खैंचा और कहा, "क्यों न हमलोग भी अपने आखिरी तीन घण्टे उन्हीं रोमन सरदारों की तरह बितावें जो अपने बादशाह 'नीरो' से मौत का हुक्म पाकर सुन्दर फूलों से लदे टेबुल के सामने बैठे कमल और गुलाब की सुगन्ध के साथ जहर सूंघते हुए मरते थे॥"

मारल मुस्कुरा कर बोला, "जैसी आपकी मर्जी, मौत तो मौत ही रहेगी यानी जिन्दगी और उसके साथ साथ रञ्ज और दुःख का अभाव, अर्थात् विस्मृति, शान्ति!!" वह एक मुलायम गद्दे पर बैठ गया और काउण्ट उसके सामने जा बैठा॥

मारल इधर उधर देखने लगा पर उसका दिल दूसरी ही तरफ था। थोड़ी देर बाद उसने कहा:—

मारल०। काउण्ट! आप बड़े भारी पण्डित और जानकार हैं। मुझे ऐसा मालूम पड़ता है मानो आप इस पृथ्वी से अधिक विज्ञ और उन्नत किसी और पृथ्वी

से यहां आये हो ॥

का०। (हँसकर) हां तुम्हारा कहना कुछ कुछ ठीक है, मैं उस नक्षत्र से आया हूं जिसे लोग 'दुःख' कहते हैं॥

मारल०। मैं आपकी बातों को बिना कुछ भी विचार किये मान लेता हूं, आपने मुझे जीने को कहा मैं अब तक जीता रहा, आपने मुझसे उम्मीद करने को कहा, मैं उम्मीद के करीब करीब पहुंच गया। अब मैं यह चाहता हूं कि अगर आपने कभी मौत का अनुभव किया हो तो मुझे यह बतावे कि क्या मौत दुःखदाई है?

काउएट०। (बड़े प्रेम और दयाभाव से मारल की तरफ देखते हुए) बेशक! बेशक दुःखदाई है। अगर तुम जबर्दस्ती उस बाहरी छिलके को फाड़ोगे जो हमेशा जीते रहने की प्रार्थना करता रहता है तो बेशक तुम्हें तकलीफ होगी। अगर तुम अपनी छाती में कटार घुसेड़ लोगे, अगर तुम गोली मार कर अपना दिमाग फोड़ लोगे जिसको जरा सा झटका भी तकलीफ पहुंचाता है, तो जरूर ही तुम्हे तकलीफ होगी, तुम बड़े ही गन्दे तौर पर जिन्दगी देोगे, और अपने अन्तिम कष्ट में तुम्हे खयाल होगा कि इस असह्य वेदना से तो वह कष्ट ही अच्छा था जिसके कारण जान देने की बेवकूफी की॥

मारल०। ठीक है, मैं समझ गया कि जैसे जिन्दगी में वैसे ही मौत में भी दुःख और सुख है। खाली उसे जानना जरूरी है॥

का०। तुमने बहुत ठीक कहा, मौत भी, जैसा भला

या बुरा बर्ताव हम उसके साथ करेंगे वैसा ही वह हमारे लिये बनेगी । वह हमें एक दोस्त की तरह आनन्द के झिलकोरे देती हुई आत्मा को शरीर से दूर करेगी या जानी दुश्मन की तरह जबर्दस्ती हमें आखिरी नींद सुला देगी। कभी जब कि दुनिया आज से कहीं ज्यादा उन्नत हो जायगी, और जब मानव-समाज नाश के सब तरीकों को जान कर उनके द्वारा संसार का उपकार करने योग्य हो जायगा तो मौत भी वैसी ही मीठी और आनन्ददाई हो जायगी जैसी अपने प्यारे की गोद में सो हुई नींद होती है ॥

मारल०। काउण्ट! अगर आप मरना चाहें तो क्या इस तरह पर मर सकते हैं जैसा आप कहते हैं?

काउण्ट०। हां॥

मारल०। (प्रसन्नता से हाथ बढ़ाकर) आहा! तभी आप मुझे समुद्र के बीचोबीच के इस निर्जन स्थान के इस महल में ले आये हैं! क्यों काउण्ट! मुझपर आप का प्रेम है इसी से न आपने ऐसा किया है! मुझे बहुत चाहने के कारण ही न आप मुझे वह मौत—बिना कष्ट की मौत—दे रहे हैं? वैसी मौत दे रहे हैं जो आपका हाथ पकड़े हुए मरती समय मुझे वेलेण्टिन का नाम कहते और मेरे कानों को वह प्यारा नाम सुनते हुए मरने देगी!!

का०। हां मैं यही सोचकर तुम्हें यहां लाया हूं॥

मारल०। इस बात के ध्यान से ही मेरे आनन्द का

ठिकाना नहीं रहा है कि कल से मेरे कष्टों का खातमा हो जायगा॥

काउण्ट०। तो क्या सिवाय मरने के तुम्हें किसी भी बात की इच्छा नहीं है?

मारल०। नहीं॥

का०। मेरी भी कोई फिक्र नहीं!

मारल की स्वच्छ आखों पर एक पर्दा सा आ गया और एक बड़ी सी आंसू की बूंद उसके गालों पर ढुलक पड़ी॥

मारल०। (कांपती हुई आवाज में) काउण्ट! मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि मेरा कष्ट न बढ़ाओ, इस बारे में एक शब्द न कहो॥

काउण्ट को ऐसा भास हुआ मानो मारल का विचार डिग रहा है। इस बात को सोचते ही काउण्ट के दिल को फिर उसी दुखदाई सन्देह ने आ घेरा जिसपर एक बार किले ऐफ में वह विजय पा चुका था। वह सोचने लगा—"मैं इस आदमी को सुखी बनाने की कोशिश कर रहा हूं। ऐसा करने से मेरे कर्मों का यह पलड़ा जो मेरे पापों के बोझ से दब गया है फिर बराबर हो जायगा। अब अगर मुझे धोखा हुआ हो, अगर यह आदमी उतना दुखी न हुआ हो कि प्रसन्नता को असम्भव समझता हो तो ऐसे आदमी को सुखी कर देने से क्या मेरे पाप का बोझ कुछ घटेगा? कुछ भी नहीं, तब तो फिर मैं कहीं का नहीं रह गया क्योंकि अभी तक मैं यही सोचे था

कि पुण्य से पाप काट सकूंगा ॥"

कुछ देर चुप रह कर काउण्ट बोला—"मारल! मैं देख रहा हूं कि तुम्हें बड़ा भारी दुःख हुआ है फिर भी तुम ईश्वर पर विश्वास करते हो और मुझे विश्वास है कि तुम आत्मघात कर अपनी आत्मा को नर्क में न डालोगे ॥

मारल०। (दुःख की हँसी हँस कर) काउण्ट! मैं क़सम खाकर कहता हूं कि मेरी आत्मा अब मेरी नहीं है ॥

काउण्ट०। मारल! तुम जानते हो कि इस दुनिया में मेरा कोई भी रिश्तेदार नहीं है। मैंने तुम्हे अपना लड़का मान लिया है, अपने लड़के को बचाने के लिये मैं अपनी जान तक देने को तैयार हूं, समूची दौलत देने को तैयार हूं ॥

मारल०। इसका क्या मतलब?

काउण्ट०। मेरा यह मतलब है कि तुम जो अपनी जान दिया चाहते हो उसका कारण यह है कि तुम्हें अभी मालूम नही कि दौलत क्या क्या आराम दे सकती है। मारल! मेरे पास इस समय करीब दस करोड़ रुपया है, मैं वह सब तुम्हें देता हूं। इतनी दौलत से तुम अपनी कठिन से कठिन इच्छा पूरी कर सकते हो। तुम्हे हौसला हो तो भारी से भारी काम कर सकते हो, दुनिया को उलट सकते हो, जमाने का रङ्ग पलट सकते हो, अपने पागल से पागल खयाल पूरा कर सकते हो, पाप कर

सकते हो, पुण्य कर सकते हो, खून, डाका, फरेब भी चाहे तो कर सकते हो, यानी दुनिया में जो कुछ चाहो सो कर सकते हो और कोई तुम्हारी तरफ उंगली उठाने का साहस नहीं कर सकता। अस्तु मेरो मत! जीओ और सुख करो॥

मारल०। (बेरुखी के साथ घड़ी निकाल कर) काउण्ट! आप वादा कर चुके हैं! अब साढ़े ग्यारह बज गया है॥

का०। मारल! क्या तुम मेरी निगाहों के सामने, मेरे मकान में, ऐसा काम किया चाहते हो?

मारल०। तो फिर मुझे जाने दीजिये नहीं तो मैं समझने लगूंगा कि आप मुझे मेरे लिये नहीं चाहते बल्कि अपने लिये चाहते हैं (यह कह वह उठ खड़ा हुआ)॥

मारल का भाव देख काउण्ट की आंखें प्रसन्नता से चमक उठीं, वह बोला, "खैर जब तुम ऐसा ही तुले हुए हो तो लाचारी है! ठीक है! तुम सचमुच दुखी हो, कोई अलख घटना ही अब तुम्हें अच्छा कर सकती है, अच्छा बैठो॥"

मारल बैठ गया। काउण्ट उठा और अपनी सुनहरी चेन के साथ लटकती हुई एक ताली से उसने एक अलमारी खोली, इसमें से उसने बड़ा ही सुन्दर गढ़ा हुआ एक चांदी का डिब्बा निकाला जिसे चारों तरफ से चार परियें सिर से ऊपर उठाये हुए थीं। उसने यह टेबुल पर

रखकर खोला, इसके अन्दर से एक सोने की डिबिया निकाली और कोई खटका दबा कर उसका ढक्कन खोला। इस डिबिया में एक तरह की जमी हुई चीज थी जिस पर डिबिया में जड़े हुए हीरे, पन्ने और लालों की ऐसी चमक पड रही थी कि उसके रङ्ग का पता नहीं लगता था। एक सोने के चिम्मच से काउएट ने उसमें से थोडा सा निकाला और तब मालूम हुआ कि उसका रङ्ग कुछ हरापन लिये हुए है। मारल की तरफ स्थिर दृष्टि से देखते हुए काउएट ने वह चिम्मच उसकी तरफ बढाया और कहा, "यही वह चीज है जिसे तुम चाहते हो और जिसके देने का मैंने वादा किया था॥"

मारल०। (काउएट के हाथ से चिम्मच लेकर) मैं तुम्हें हजार हजार धन्यवाद देता हूं॥

काउएट ने एक दूसरा चिम्मच उठाया और उस जड़ाऊ डिबिया में डुबाया। मारल ने चौंक कर उसका हाथ पकडते हुए कहा—"मेरे दोस्त! यह आप क्या करने लगे हैं?"

का०। ईश्वर मुझे क्षमा करे पर मैं भी जिन्दगी से उतना ही परेशान हो रहा हूं जितना तुम, अस्तु अब जब मौका मिल गया है

मारल०। नहीं नहीं, ठहरिये, आप प्यार करते हैं और प्यार किये जाते हैं! आपको विश्वास और आशा है। आप मेरी नकल मत कीजिये। आपका ऐसा करना पाप होगा, सिर्फ मैं ही ऐसा कर सकता हूं और करूंगा।

अच्छा मेरे दयालु मित्र! विदा! मैं जाता हूं और वेलेन्टिन से कहता हूं कि आपने मेरे लिये क्या क्या किया है!!

और तब सिर्फ काउएट का हाथ दबाने भर के लिये ठहर कर शान्ति के साथ, बिना डर या धड़कन के, मारल ने वह अद्भुत-पदार्थ अपने मुंह मे डाल लिया जो काउएट ने उसे दिया था। इसके बाद वे दोनों चुप हो गये। अली कहवा और तम्बाकू दे गया। धीरे धीरे सुन्दर मूर्तियों के हाथके वे लंप मद्धिम होने लगे और कमरे में फैली हुई सुगन्ध मारल की नाक में कम तेज मालूम होने लगी। उसके सामने छाया में बैठा हुआ काउएट उसे गौर से देख रहा था पर मारल को काउएट की सिर्फ आंखें ही दिखाई देती थी। एक तरह की कमजोरी ने मारल को घेर लिया, उसके हाथों की ताकत कम होने लगी, कमरे के चीजों की शक्ल और रङ्ग धीरे धीरे गायब होने लगे। उसकी बन्द होती हुई आंखों को ऐसा मालूम होने लगा मानो पत्थर की दीवार में कई पर्देदार दरवाजे खुल गये हो॥

उसने चिल्ला कर कहा, "दोस्त विदा! अब मैं मरता हूं। धन्यवाद!!" उसने हाथ बढाने की कोशिश की पर वह बेजान की तरह गिर गया। उस वक्त उसको ऐसा मालूम हुआ मानो काउएट हंस रहा है। यह क्रूर और डरावनी मुस्कुराहट नही जैसी वह कई मौकों पर उसके होठो पर देख चुका था बल्कि ऐसी मुस्कुराहट

तुम्हें मेरी कृतज्ञता पर विश्वास न हो तो मेरी प्यारी बहिन हैदरी से पूछ सकते हो जो बराबर मेरे साथ रह कर मुझे आज के दिन देखने का भरोसा दिलाती और आपकी दयालुता का जिक्र किया करती थी॥

हैदरी का नाम सुनते ही काउण्ट के दिल में एक विचित्र जोश सा पैदा हो गया। उसने इसे छिपाने की कोशिश करते हुए वेलेण्टिन से पूछा, "क्या तुम हैदरी को प्यार करती हो ?"

वेलेण्टिन०। हां, दिल से॥

काउण्ट०। तो वेलेण्टिन सुनो, मैं तुमसे एक बात मांगता हूं॥

वेले०। आहा! क्या मेरे ऐसे धन्य भाग हैं?

काउण्ट०। तुमने हैदरी को अपनी बहिन कहा है, वेलेण्टिन! उसे सचमुच अपनी बहिन बनाओ। मेरे ऊपर जितनी तुम्हारी कृतज्ञता हो उसका बदला हैदरी को प्यार करके अदा करो क्योंकि आज से वह दुनिया में अकेली रह जायगी॥

यकायक काउण्ट के पीछे से आवाज आई, "अकेली ? और क्यों ?"

काउण्ट चौंक कर घूमा और उसे हैदरी दिखाई दी जो एकदम पीली होकर पत्थर की मूर्ति की तरह दर्वाजे पर खड़ी थी। काउण्ट बोला, "क्योंकि कल से तुम स्वतन्त्र हो जाओगी और समाज मे जो तुम्हारा वास्तविक रुतबा है उसे ग्रहण करोगी। क्योंकि

मैं नहीं चाहता कि मेरा दुर्भाग्य तुम्हारे पर भी अपना असर डाले। शाह की बेटी! मैं तुझे तेरे बाप की हैसियत और हुर्मत वापस देता हू॥"

हैदरी का मुंह सूख गया, उसने अपनी सुफेद बाह काउण्ट की तरफ बढ़ाकर कहा, "मेरे मालिक! क्या तुम अपनी लौंडी को छोड रहे हो?"

काउण्ट०। हैदरी! हैदरी!! तुम नौजवान और सुन्दर हो! मेरा नाम भी भूल जाओ और सुखी बनो!!

हैदरी०। अच्छा, जो मेरे मालिक की मर्जी है वही होगा! मैं आपका नाम भी भूल जाऊंगी और सुखी होऊंगी। (इतना कह वह पीछे हट गई)॥

वेलेण्टिन०। (चीख कर) ओह काउण्ट! क्या तुम नही देखते कि वह कैसी पीली पड़ गई है! कैसा दुःख उठा रही है!!

हैदरी ने दिल को टुकड़े टुकड़े कर देने वाले स्वर में कहा, "बहिन उसे मेरी तरफ ध्यान देने की जरूरत क्या है? वह मेरा मालिक है! मैं उसकी लौंडी हूं। उसे यह अख़्तियार है कि सब कुछ देखकर भी कुछ न समझे॥"

काउण्ट के दिल के पर्दे को फाड़कर हैदरी की बात धँस गई और वह काँप उठा। उसने हैदरी की तरफ निगाह उठाई जिसके आंखो की चमक बर्दाश्त करना कठिन था। वह यकायक बोल उठा, "हे भगवान! क्या मेरा सन्देह ठीक है? हैदरी! क्या मेरे साथ रहने से तुम्हें प्रसन्नता होगी?"

हैदरी मुलायम आवाज में बोली—"मैं अभी नौ-जवान हूं! मैं उस जिन्दगी को प्यार करती हूं जिसको आपने मेरे लिये ऐसा मनोहर बना दिया है। मुझे मरने में दुःख होगा॥"

काउण्ट०। तो क्या तुम्हारा मतलब है कि अगर मैं तुम्हें छोड़ दूं तो

हैदरी०। तो मेरे मालिक! मैं अपनी जान दे दूंगी!!

का०। तो क्या तुम मुझे प्यार करती हो!

हैदरी०। ओह! वेलेंटिन! यह पूछता है कि क्या मैं इसे प्यार करती हूं? मेरी बहिन! इसे बता दे कि क्या तू मारल को प्यार करती है?

काउण्ट को अपना दिल उछलता और जोश मारता हुआ मालूम होने लगा। उसने अपनी बाहें खोल दीं और हैदरी एक चीख मार कर उनके अन्दर आ गई। उसने रुंधे हुए गले से कहा, "मैं प्यार करती हूं, तुम्हे प्यार करती हूं, तुम्हे जान से ज्यादा चाहती हूं, क्योंकि इस दुनिया के सब जीवों से तुम उदार और दयालू हो॥"

काउण्ट०। तो जैसा तू चाहती है वैसा ही होगा! ईश्वर जिसने मुझे दुश्मनों के साथ लड़ने योग्य बनाया और उनपर फतह दी, नहीं चाहता कि मैं अपनी विजय का अंत तपस्या में करूं। मैं अपने को सजा दिया चाहता था, पर वह मुझे माफ करता है!! हैदरी मुझे प्यार कर! प्यार कर! कौन जानता है? शायद तेरा प्रेम मुझसे ये

बातें भुला दे जिन्हें मैं याद नहीं रक्खा चाहता॥

हैदरी०। मेरे मालिक! इसका क्या मतलब?

काउण्ट०। मैं यह कहता हूं कि तुम्हारे एक शब्द ने मुझे उससे कहीं ज्यादा सिखा दिया जो मैंने बीस बरस के अनुभव में सीखा था। हैदरी! अब इस दुनिया में मेरे लिये बस तू ही है। तेरे ही जरिये से अब मैं पुनः इस दुनिया से रिश्ता जोड़ता हूं। तुझसे ही दुःख उठाऊंगा और तुझसे ही प्रसन्नता पाऊंगा॥

हैदरी०। वेलेण्टिन सुनती हो? ये कहते हैं कि तुझसे मैं तकलीफ उठाऊंगा! मुझसे!! जो इनके लिये अपनी जान खुशी से देने को तैयार है!!

काउण्ट कुछ देर तक चुप रहा, इसके बाद उसने कहा—"क्या मुझे ठीक पता लगा? खैर अब तो चाहे भले के लिये हो या बुरे के लिये, मैं मंजूर करता हूं आओ हैदरी आओ।" काउण्ट ने हैदरी को अपने बगल में दबा लिया और तब वेलेण्टिन से हाथ मिला वह गायब हो गया॥

एक घंटे तक व्याकुल वेलेण्टिन चुपचाप मैक्समिलियन के पास बैठी रही, आखिर धीरे धीरे उसका दिल धड़कता हुआ मालूम हुआ, होठों पर हलकी सांस की आहट मालूम हुई और जिन्दगी की सूचना देने वाली एक हलकी कँपकँपाहट उसके बदन पर दौड़ गई, तब मारल की आंखें खुल गईं पर अभी उनमें देखने की ताकत न थी। धीरे धीरे दृष्टि, स्पर्श और उसके साथ

ही साथ रञ्जु भी वापस आया। उसने बेचैनी के साथ लाचारी के स्वर में कहा, "ओह! काउण्ट ने मुझे धोखा दिया! मैं अभी तक जीता हूं।" टेबुल की तरफ हाथ बढ़ा उसने एक छुरा उठा लिया॥

इसी समय वेलेण्टिन ने मुस्कुरा कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "प्यारे! होश में आओ और मेरी तरफ देखो!!"

मारल के मुँह से आश्चर्य्य भरी चीख निकल गई, और सब सन्देह, आशा और प्रसन्नता से पागल हो वह वेलेण्टिन की तरफ झुक गया!!

* * * * * *

दूसरे दिन सवेरे वेलेण्टिन और मारल हाथ में हाथ दिये समुद्र के किनारे टहल रहे हैं। वेलेण्टिन मारल को वह सब हाल सुना रही है कि जिस तरह काउण्ट उसके कमरे में आया था और उसका पहरा देकर उसने सब भेद जाना और उसे बेहोश करके उसकी जान बचाई थी॥

इसी समय मारल की निगाह एक आदमी पर पड़ी जो पत्थरों के ढोकों के बीच में खड़ा इस बात की राह देख रहा था कि ये लोग बुलावें तो आगे बढ़े। उसने वेलेण्टिन को उधर दिखाया॥

वेलेण्टिन ने मारल से कहा, "यह

का कप्तान जकपू है!!"

जकपू पास आया। मारल ने उससे पूछा—"
तुम्हें हमसे कुछ कहना है?"

जकपू०। मुझे काउण्ट ने एक चीठी आपको
के लिये दी है॥

दोनों०। काउण्ट ने!!

जकपू०। हां॥

मारल ने जकपू से चीठी ले ली और पढ़ा:—

"प्यारे मैक्समिलियन!

तुम्हारे लिये छोटा जहाज मौजूद है जो तुम्हें लेगहार्न बन्दर
पहुंचा देगा जहां मि० नैारटीर अपनी पोती की राह देख रहे हैं औ
चाहते हैं कि तुम दोनों की शादी के पहिले वह तुम लोगों को अप
आशीर्वाद दें। मेरे मित्र! इस गुफा में जो कुछ है वह, मेरा चेम्प
एलिसीज का महल तथा ट्रेपोर्ट वाला बङ्गला, यह सब एडमण
डैनर अपने पुराने मालिक के लड़के की शादी में दहेज के तौर प
देता है। वैलेण्टिन इन्हें तुम्हारे साथ भोगेगी क्योंकि मेरी उस
प्रार्थना है कि वह उस भारी जायदाद को जो उसके पिता—जो पाग
हो गये हैं तथा भाई—जो गत सितम्बर में अपनी मा के साथ मर गय
है—की थी और अब उसे मिलेगी गरीबों को दे दे। उस देवी से
जो अब तुम्हारे भविष्य की रानी होगी मारल! कह देना कि कभी
कभी उस आदमी के लिये ईश्वर से प्रार्थना करे जो शैतान की तरह
अपने को ईश्वर ही मान बैठा था, पर जो अब नम्रता के साथ स्वीकार
करता है कि केवल ईश्वर ही में अनन्त शक्ति और अगाध ज्ञान है।
इन प्रार्थनाओं से शायद उसके दिल का पश्चाताप कुछ कम हो सके।
और तुम्हारे लिये मारल! मेरी यही शिक्षा है कि इस दुनिया में न
तो दुःख है और न सुख ही है। केवल एक अवस्था के साथ दूसरी
अवस्था की तुलना मात्र है। जिस पर बड़ा भारी कष्ट पड़ चुका है
केवल वही भारी सुख का अधिकारी है। हम लोगों के यह मालूम

हो चुका है कि मरना क्या है। इसी से हमलोग जीने का सुख समझ रहे हैं॥

अस्तु मेरे प्यारे लडके! जीओ और सुखी होओ! तुम इस बात को न भूलो कि जब तक परम त्मा अपने भेद को आपही नहीं खोलता तब तक दुनिया का जो कुछ ज्ञान है वह इन दो शब्दों में है—सब्र और उम्मीद!!

तुम्हारा दोस्त—

एडमण्ड डोनर

काउण्ट आफ मौण्ट क्रोटो।"

इस चीठी को सुन कर, जिसने पहिले पहिल उसे बताया कि उसका पिता पागल हो गया तथा भाई मर गया, वेलेण्टिन का चेहरा पीला हो गया, एक लम्बी सांस उसके मुँह से निकली और उसके गालों पर से होती हुई आंसू की बूंदें जमीन पर गिरने लगीं। अपनी प्रसन्नता का उसे बड़ा भारी दाम देना पड़ा था॥

मारल ने बेचैनी के साथ चारो तरफ देखा और कहा, "मगर काउण्ट की उदारता एक दम बेहद्द है! वेलेण्टिन मुझ गरीब की दौलत पर ही बसर करेगी। काउण्ट कहां है! तुम मुझे उसके पास ले चलो॥"

जकपू ने समुद्र की तरफ हाथ उठाया, वेलेण्टिन ने यह देख पूछा, "तुम्हारा क्या मतलब है? काउण्ट कहां है? हैदरी कहा है?"

जकपू बोला, "वह देखिये!!"

... की निगाहें उधर घूम गईं जिधर जकपू ...

रहा था। समुद्र के जल पर जहां एक नीली लकीर पानी और आस्मान अलग कर रही थी एक बड़ा सुफेद पाल दिख रहा था॥

मारल०। चले गये! मेरे दोस्त! मेरे पिता! बिदा!!

वेले०। गई! मेरी बहिन! मेरी सहेली!! बिदा!!

मारल०। (आंखों में आंसू भर कर) कौन कह सकता हैं कि अब हमलोग उनको फिर देखेंगे या नहीं!!

वेलेंटिन०। मेरे प्यारे! क्या काउण्ट ने अभी नहीं कहा है कि इस संसार की सारी विद्या इन दो शब्दों में हैं—सब्र और उम्मीद!!

॥ समाप्त ॥

हो चुका है कि मरना क्या है। इसी से हमलोग जीने का सुख समझ रहे हैं ॥

अस्तु मेरे प्यारे लड़के! जीओ और सुखी होओ! तुम इस बात को न भूलो कि जब तक परमात्मा अपने भेद को आपही नहीं खोलता तब तक दुनिया का जो कुछ ज्ञान है वह इन दो शब्दों में है—सब्र और उम्मीद!!

तुम्हारा दोस्त—

एडमण्ड डैान्टेस

काउण्ट आफ मौण्ट क्रीटो।"

इस चीठी को सुन कर, जिसने पहिले पहिल उसे बताया कि उसका पिता पागल हो गया तथा भाई मर गया, वेलेण्टिन का चेहरा पीला हो गया, एक लम्बी सांस उसके मुँह से निकली और उसके गालों पर से होती हुई आंसू की बूंदें जमीन पर गिरने लगीं। अपनी प्रसन्नता का उसे बड़ा भारी दाम देना पड़ा था॥

मारल ने बेचैनी के साथ चारों तरफ देखा और कहा, "मगर काउण्ट की उदारता एक दम बेहद्द है! वेलेण्टिन मुझ गरीब की दौलत पर ही बसर करेगी। काउण्ट कहां है! तुम मुझे उसके पास ले चलो॥"

जकपू ने समुद्र की तरफ हाथ उठाया, वेलेण्टिन ने यह देख पूछा, "तुम्हारा क्या मतलब है? काउण्ट कहां है? हैदरी कहां है?"

जकपू बोला, "वह देखिये!!"

दोनो की निगाहें उधर घूम गईं जिधर जकपू बता

रहा था। समुद्र के जल पर जहां एक नीली लकीर पानी और आसमान अलग कर रही थी एक बड़ा सुफेद पाल दिख रहा था ॥

मारल०। चले गये! मेरे दोस्त! मेरे पिता! बिदा!!

वेले०। गई! मेरी बहिन! मेरी सहेली!! बिदा!!

मारल०। (आंखों में आंसू भर कर) कौन कह सकता है कि अब हमलोग उनको फिर देखेंगे या नहीं!!

वेलेंटिन०। मेरे प्यारे! क्या काउण्ट ने अभी नहीं कहा है कि इस संसार की सारी विद्या इन दो शब्दों में है—सब्र और उम्मीद!!

॥ समाप्त ॥